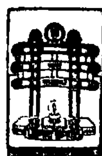
कथा एक प्रान्तर की

मूल उपन्यास

एस० के० पोट्टेक्काट

रूपान्तर

प्रो. पी० कृष्णन



भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित मलयालम कृति
'ओरु देशत्तिन्ते कथा' उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर

लोकोदय ग्रन्थमाला ग्रन्थांक 417
सम्पादक एव नियोजक
लक्ष्मीचन्द्र जैन
जगदीश



Lokodaya Series Title No 417
KATHA EK PRANTAR KI
(Novel)
S K Pottekkatt
First Edition 1981
Price Rs 50/-

कथा एक प्रान्तर की
(उपन्यास)
एस० के० पोट्टेक्काट

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
बी/45-47, कनॉट प्लेस, नयी दिल्ली-110001
प्रथम सस्करण 1981
मूल्य पचास रुपये

मुद्रक
मित्तल प्रिण्टर्स, शाहदरा, दिल्ली-32

प्रस्तुति

'कथा एक प्रान्तर की' श्री शकरनकुट्टि कुन्हीरमन पोट्टेक्काट के विख्यात मलयालम उपन्यास 'ओरु देशत्तिन्ते कथा' का हिन्दी अनुवाद है। भारतीय ज्ञानपीठ का सोलहवें वर्ष का एक लाख रुपये का साहित्य पुरस्कार श्री पोट्टेक्काट को समर्पित हुआ है, और उनकी यह कृति पुरस्कार हेतु विचार-गत कृतियो की श्रेणी मे श्रेष्ठ मानी गई है--उनकी उन दो समकक्ष कृतियो के साथ, जिनके शीर्षक है—'विषकन्यका' तथा 'ओरु तिन्ते कथा' (कथा एक मोहल्ले की।)

पोट्टेक्काट का जन्म 14 मार्च 1913 को कालीकट मे हुआ। कालीकट नाम तो बाद मे पडा जब वहाँ उद्योग धन्धो का विस्तार होना प्रारम्भ हुआ। इसका पुराना नाम अतिराणिप्पाट था। पोट्टेक्काट ने 'कथा एक प्रान्तर की' मे इसी अतिराणिप्पाट की अन्तरात्मा की कथा इस पुरस्कृत उपन्यास मे वर्णित की है। इसीलिए 'ओरु देशत्तिन्ते कथा, का हिन्दी रूप 'एक गाँव की कहानी' भी कर दिया जाता है, यद्यपि ओरु (एक) देशत्तिन्ते म देश शब्द न प्रदेश के अर्थ म है, न पूरे गाँव के अर्थ म। यह गाँव के छोर पर बसी बस्ती की कथा है—वहाँ के परिवर्तित परिवेश की, वहाँ के निवासियो की जिन्होने जीवन के अनेक उतार-चढाव देखे, अनेक प्रकार सुख-दुख सहे, अनेक प्रकार के कार्य-कलाप और पारस्परिक व्यवहार से उत्पन्न क्रिया-प्रतिक्रियाओ के मानवीय उद्वेगो के जो भोक्ता और द्रष्टा रहे। इन पात्रो मे स्वय पोट्टेक्काट है, कथा-नायक श्रीधरन के रूप मे। गाँव के सदाचारी, सात्विक निश्छल कृष्णन-मास्टर पोट्टेक्काट के पिता के ही प्रतिबिम्ब है। शेष पात्र भिन्न-भिन्न नामो के अन्तर्गत बस्ती के ही जीते-जागते व्यक्ति है। जिनके बीच पोट्टेक्काट के बचपन, लडकपन और तरुणाई के दिन बीते। छोटा-सा प्रान्तर, एक पूरा विश्व है। एक-एक पात्र पूरा इतिहास है, एक-एक का जीवन-वृत्त एक-एक उपन्यास है। पचासो पात्र है, सैकडो घटनाएँ है—छोटी-छोटी घटनाएँ, चर्चाएँ, अन्तराल जो जीवन के तानो-बानो को बुनतें चलते है।

एक गाँव। उसके पचास वर्षों का महाकाव्य। कुट्टिमालु जीवन को जिस सहजभाव और निष्ठा से जीती है और अपने परिवार के अधिष्ठान को सँभाले रहती है, वह पोट्टेक्काट की माँ ही तो है। फौज से रिटायर होकर गाँव मे लौट कर

आया है कुजप्पु। इतना जिन्दा दिल, क्रियाशील व्यक्ति जो अपने अनुत्तरदायी व्यवहार मे भी मन को मोहता है। वह गाव मे एक नयी हवा ले आता है। एक दिवालिया और शेखीखोर व्यक्ति है कुजिक्केलु। उसके कारनामे और उसके व्यवहार जगजाहिर है, किन्तु वह अपने स्वभाव की धुरी पर निर्बाध घूमता है, घुमाता भी है। एरुमा पोन्नम्मा-जैसी आवारा औरत अपने धन्धे को जिस तेजी से चलाती है, एक मानवी की शक्ति के सदर्भ मे वह गति अविश्वसनीय लगती है। कहाँ होता है उसका अन्त ? कैसे ? पटरी पार करते रेल का इजिन उसके ऊपर से गुजर जाता है, और वह टुकडो-टुकडो मे टूटकर बिखर जाती है। यह दृश्य स्वय लेखक का देखा हुआ है। इसकी प्रतिक्रिया का सवेदन उसका भोगा हुआ है।

अपाहिज गोपालन कितना निरीह है। कुछ भी तो कर-धर नही सकता। हम उसे जड-बुद्धि समझते है। किन्तु वही जीवन के अन्तिम क्षण मे आत्म-मन्थन से उपजे दर्शन का नवनीत श्रीधरन को दे जाता है "यदि कोई ईश्वर है तो वह तो दूर कही भी आकाश मे बैठा है। यदि उसे पुकारो, तो वह सुनेगा नही। किन्तु एक दूसरा ईश्वर भी है—एक महान शक्ति -जो गहरे दु ख के समय तुम्हारी पुकार आसानी से सुन लेती है और तत्काल तुम्हारे कान मे आवश्यक आदेश-उपदेश चुपके से कह देती है। जिससे तुम्हारी रक्षा हो सकती है। वह शक्ति तुम्हारे अन्दर है—तुम्हारी अन्तरात्मा। कुछ भी प्रारभ करने से पहले उस अन्तरात्मा की आवाज सुनो क्या जो कुछ भी मै करने जा रहा हूँ, वह मानवीय काम के सिद्धान्तो से समर्पित है ? क्या इस काम से मेरे ऊपर धब्बा तो नही आयेगा ? क्या इसका परिणाम मेरे साथी मानवो के लिए अहितकारी तो नही होगा ? यह सब अपनी अन्तरात्मा से पूछो। वह ठीक-ठीक तुमसे कान मे कह देगी। यदि आत्मा से छल करोगे तो तुम्हे पता भी नही लगेगा कि कब तुम्हारी नैया डूब जायेगी। इस ससार के सारे जीवधारी एक महान गतिशील शक्ति के छोटे-छोटे परमाणु है। जिस शस्त्र का प्रहार तुम एक साथी मानव पर जानबूझकर करने जा रहे हो, वह अपने लक्ष्य को आहत करे या न करे, वह कभी न कभी तुम्हे खोजता हुआ आयेगा और छाती पर वार करेगा। तुम्हे मालूम नही पडेगा कि कब वह प्रहार हुआ। आदमी असहाय है- उस चक्रायित और निर्णायक परम सत्ता के आगे।"

जीवन का यह इतना बडा सत्य है कि जब मैने भी पोट्टेक्काट से पूछा कि पुरस्कार समारोह के अवसर पर स्मारिका मे प्रकाशित होनेवाले उनके चित्र के साथ उनके जीवन-दर्शन को व्यक्त करनेवाली कौन-सी पक्तियाँ या उक्ति उद्धृत की जाए, तो उन्होने इसी उद्धरण को सर्वाधिक सार्थक बताया।

पोट्टेक्काट का अत्यन्त कोमल पात्र है गाँव की वह बालिका, जो एक दिन, आँधी-पानी के दिन श्रीधरन से मिलती है— एक कोपल अकुरा जाती है। पता भी नही उसे इस स्फुरण को क्या कहते हैं। बस, श्रीधरन ने उसे अपनी छतरी दी थी

कि वह बारिश से बच जाये। अगले दिन वह छतरी चुपके से लौटा भी दी गई थी। उसके बाद न मालूम वह मिल पायी या नही। लेकिन मन के स्फटिक पर खिची रेखा क्या कभी मिट सकती है ?

लगभग पैंतीस वर्ष बाद श्रीधरन जब लौटता है तो गाँव के स्थान पर एक भारी भरकम शहर को दानव की तरह हाथ-पाँव फैलाये पाता है। उस दानव ने अतिराणिप्पाट को निगल लिया था, और कालीकट को ला खडा किया था। बालिका अम्मुकुट्टि रात को चुपचाप प्रेम के गीत लिखती रही थी—और स्वय टी बी. रोग से समाप्त हो गई थी। उसके भाई ने श्रीधरन को वह कापी पकडाई थी। कलेजा धक हो गया था। तभी से मौत को श्रीधरन ने जीवन के सत्य के रूप म स्वीकार कर लिया था।

पोट्टेक्काट ने उपन्यास मे हर कही मृत्यु से निर्भय आँखें मिलाई है। आँसू कब मुस्कान बनकर फूटे और मुस्कान कब आँसुआ मे बह गई—यह पता ही नही चलता। दोनो ही सहज है, सम है। कभी-कभी मन मे प्रश्न उठता है, पोट्टेक्काट इतने क्रूर क्यो है कि एक पात्र को ममता से बनाते है और निर्ममता से विसर्जित कर देते है। किन्तु उत्तर अपने आप प्राप्त हो जाता है कि पोट्टेक्काट ने तो वही लिखा जो देखा-भोगा। जीवन भी तो इसी तरह बनता गुजरता रहता है। मौत कभी-कभी दबे पाँव आ जाती है और प्राय घुला-घुला कर मारती है। अति-राणिप्पाट के उन सारे पात्रो मे से अनेको को मौत निगल लेती है। ताडी बनाने-वाले, छोटे दुकानदार, अखबार बेचनेवाले, सपादक-अध्यापक, ज्योतिषी, बैरा, राजनैतिक नेता, स्वय-सेवको के साथ-साथ चोर-डाकू, लफगे, व्यभिचारी, ठग, बटमार—सभी अदम्य उत्साह से जीवन जीते है, उनकी सारी छीना-झपटी, उठा पटक, अतिराणिप्पाट - कालीकट को क्रिया प्रतिक्रियाओ से जीवन्त रखते है। वे सब समाप्त हो चुके है, 'ओरु देशत्तिन्ते कथा' उन्ही को समर्पित है।

पोट्टेक्काट की भ्रमण-वृत्ति तो अपरिहार्य है ही। कमाल की है उनकी स्मरण शक्ति ! पात्रो की बातचीत, उनके तमाम सजीव सदभ, स्थानीय भाषा के पूरे ओज और मुहावरे के साथ सहजगति से प्रतिध्वनित होती है।

उपन्यास म न पूरी कहानी है, न कुछ सिलसिले बार घटनाक्रम है। पूरा गाँव-देहात है, परिवेश है, वातावरण है, धरती की गध और पेड-पौधो की महक है। जैसे यही सब उपन्यास ही जीवन-शक्ति बनकर पात्रो को परिचालित कर रहे है।

पोट्टेक्काट ने कवि के रूप मे साहित्यक जीवन प्रारभ किया। 'प्रभात कान्ति' और 'प्रेम शिल्पी' पहली रचनाएँ है। फिर कहानी के क्षेत्र म प्रवेश किया तो मलयालम साहित्य को रोमाण्टिक कहानियो की नई शैली दे दी। चौबीस कहानी-सग्रह प्रकाशित हो चुके है। इनका 13 कहानियो का एक सग्रह रूसी भाषा मे अनूदित हुआ तो दो सप्ताह मे एक लाख प्रतियाँ बिक गई। यथार्थ की छाप और

शैली की सहजता ने पाठको के मन को लुभाया।

पोट्टेक्काट के दस उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। लेखन के साहस और धीरज की यह स्थिति है कि 'ओरु देशत्तिन्ते कथा' के भागो मे 75 अध्याय है। 'विषकन्या' इसी प्रकार का बडा उपन्यास है जिसमे एक जाति और कबीले ने मलयालम के दुरूह, भयानक प्रदेश को अद्भुत साहस के साथ, झाड-झकार हटा कर खूँखार पशुओ और बीमारियो से सघर्ष करके मनुष्य के कृतित्व और अन्तिम विजय का साक्ष्य प्रस्तुत किया—विजय जिसकी अन्तिम बिसात क्या है, यह दर्शन का विषय बन जाता है, जिसे पोट्टेक्काट खूब समझते है और समझाने का प्रयास करते है।

अत्यन्त सरल और विनम्र पोट्टेक्काट जानते है कब क्या बात साफ-साफ ढग से कह देनी चाहिए। वह एक नया उपन्यास लिख रहे हैं—'नॉर्थ एवेन्यू' जिसम इनके उस काल के अनुभवो की कथा है जब वह ससद सदस्य थे।

"ओरु देशत्तिन्ते कथा' के इस हिन्दी अनुवाद 'कथा एक प्रान्तर की' को नियोजित करना बहुत कठिन प्रमाणित हुआ। समय कम और उपन्यास बहुत बडा। प्रो पी कृष्णन, हिन्दी विभाग, श्रीनारायण कॉलेज, कण्णूर (केरल) के हम आभारी है कि उन्होने बहुत थोड़े मसय मे ही, इतनी विशाल कृति का अनुवाद पूरा कर देने का जो सकल्प लिया था उसे बडी कुशलता और तत्परता से निवाहा। इस जल्दबाजी मे शैली-शिल्प की सुरक्षा नही हो सकी है, फिर भी इस दिशा म स्वल्पावधि को ध्यान म रखते हुए यथासमव प्रयत्न किया गया और अब यह कृति पाठको को भेट है।

यह हिन्दी रूपान्तर लेखक के कृतित्व और उनकी विशिष्टता की एक रूप-रेखा है। वास्तविक सुरभि तो मूल मलयालम मे ही है।

लक्ष्मीचन्द्र जैन
सपादक, लोकोदय ग्रन्थमाला,
निदेशक, भारतीय ज्ञानपीठ

दिल्ली, 18 नवम्बर, 1981

समर्पण

अतिराणिप्पाट के उन दिवगत पूर्वजों को, जिन्होंने मुझे शैशव, कौमार्य और यौवन के प्रारम्भिक दिनों मे जीवन के अनेक-अनेक रूपों — सच्चाई, बेइमानी, चपलता, कौतुक, विस्मय, मूर्खता, आचार-सहिता और कटु सत्य—की पहचान करायी, और उनको, जिन्होंने इस उपन्यास के लिए त्याग किया।

चन्द्रकांतम्
कोषिक्कोड-4
14 मार्च, 1971

एस० के० पोट्टेक्काट

'रिज़र्वायर'

श्रीधरन ने सडक किनारे के उस कोने की तरफ आँखे फैलाकर देखा। सफेद रग पुता भारी-भरकम एक पेट्रोल ट्रक आसमान म सिर उठाये खडा है। ट्रक के फूले हुए पेट पर काले अक्षरो मे अकित है—कैपेसिटी टेन थाउजैण्ड गैलन्स'

यह वही नुक्कड है जहाँ अम्मुक्कुट्टि की छप्पर वाली झोपडी खडी थी उसकी युवावस्था के आरम्भ की प्रथम प्रेमिका अम्मुक्कुट्टि!

तिकोन आकृति के उस अहाते की बाड के ही निकट एक बडे बादाम का और एक मदार का पेड था—उनकी याद आज भी ताजा है। वे पेड अब कहाँ गये है। बाड की जगह अब सफेद पुती एक ऊँची पत्थर की दीवार नजर आती है। दीवार के पास लम्बे नुकीले पत्तो और छोटे लाल फूलोवाला एक नया पौधा लगाया गया है।

पौधे का एक-एक फूल अम्मुक्कुट्टि के नाक के लाल मणि का स्मरण कराता है।

पैतीस साल पहले श्रीधरन उस देश से बिदा ले प्रवास पर गया था। इन पैतीस सालो मे क्या-क्या परिवर्तन हो गये! परिवर्तनो का एक लम्बा सघर्ष ही वहाँ हुआ है।

प्रेम-कविता लिखने की प्रथम प्रेरणा उसे अम्मुक्कुट्टि ने ही दी थी। जीवित रहते नही, मृत्यु के बाद।

अम्मुक्कुट्टि के छोटे भाई ने वह नोटबुक उसके हाथो मे थमा दी थी।

उस शाम की याद अब भी ताज़ा है। उस लडके ने बताया था, "अम्मुक्कुट्टि दीदी ने यह पुस्तक आपको छिपाकर देने के लिए मुझे दी थी।"

नोटबुक ली और कुछेक पृष्ठ उलट-पलटकर दृष्टि दौडायी। सब की सब कविताएँ थी। ज़रा बायी तरफ को झुके छोटे अक्षरो मे जामुनी स्याही से लिखी गयी कविताएँ—गीत।

अपनी खुशी प्रकट किये बिना ही मैंने पूछा था, "तेरी अम्मुक्कुट्टि दीदी किस स्कूल मे काम कर रही है?"

लडके की आँखे भर आयी थी। बोला, "अम्मुक्कुट्टि दीदी चल बसी।"

"चल ब स् सस् ई !" हृदय पर बिजली-सी गिरी।

"एक सप्ताह बीत गया। राजयक्ष्मा था।" लडके ने आँखे पोछकर कही दूर दृष्टि डालते हुए कहा।

उस दिन रात भर उसने वे कविताएँ बार-बार पढी। शीर्षकहीन कविताएँ—तडपते प्राणो के प्रणय गीत—अकृत्रिम आत्मालाप।

चारो ओर घना अन्धकार
बन्द झोपडी मे बैठी हूँ मैं
अकेली।
सडक किनारे के आम से, लो
आधी रात की कोयल भी उड गई !
मेरे साथ है मात्र एकान्त
जिसमे सारी दुनिया जम गई है
ऊँघती-ऊँघती।
मेरी करुणाक्रान्त व्यथाएँ, मानो
प्रतिध्वनित हो रही हो अन्धकार मे।
पूजनीय प्रिय, तेरी प्रतीक्षा मे मैने
इतनी यह रात काट दी।
तू नही आयेगा, नही ही आयेगा—
नीहार सिंचित दूब के बिछे
रास्ते से मन्द-मन्द।
तू नही आयेगा, नही ही आएगा—
नारियल के पत्तो का मेरा द्वार खटखटाकर
पुकारने के लिए मेरा नाम।
तू नही आयेगा, नही ही आयेगा—
मेरे जूडे की मल्लिकाओ की सारी
सुगन्धी ही रिस गई है।
नही, तू मुझे पुकारेगा नही 'प्रिये !'
प्रेम से आर्द्र मेरी सवेदनाएँ है व्यामोह,
मेरे मूक प्रणय की आशाएँ है व्यर्थ,
यह मैं जान चुकी हूँ।
फिर भी हे देव !
कभी-न-कभी तेरा प्रेम
मेरी झोपडी को बना देगा स्वर्णमहल।

उस दिन आँसुओ से धोकर, पूरे
पदचिह्न तेरे, कहूँगी मै—
"धन्य हुई आज
सफल हुआ जीवन,
भोर के सोनल तारे से भी
हो गयी ऊँची ।"
नाथ ! चूम ले यह मेरी जीवन-ज्योति
ताकि निराशा न छू पाये उसे ।'

उस नोटबुक की एक कविता श्रीधरन के अन्तस् मे गूँज उठी ।

अम्मुक्कुट्टि से पहली मुलाकात की वह शाम । कॉलेज की पढाई पूरी करके महज़ म्यूनिसिपिल लाइब्रेरी की किताबो को अपना साथी बनाकर दिन गुजारनेवाला जमाना ।

रेल की पटरियो के नजदीकवाले विशाल मैदान के रास्ते से ही वह हमेशा लाइब्रेरी से घर वापस आता था । उस दिन वहाँ पहुँचने पर एकाएक बारिश आ गयी । हवा चल पडी—जोर की प्रचण्ड हवा, चाँदी के काँटो जैसी, और फूटकर बौछार मारनेवाली वर्षा की बूँदें !

ढेर सारी किताबो को एक हाथ से छाती मे दबाये हुए और दूसरे हाथ की छोटी-सी छतरी से बारिश की हवा का सामना करते हुए साडी पहने वह लडकी उस मैदान मे धीरे-धीरे कदम रखकर आगे बढ रही थी । साडी का निचला हिस्सा बरसात से भीगने के कारण पैरो मे लिपटा था । इस वजह से वह बडी मुश्किल से चल पा रही थी । अकस्मात् जोर की हवा आयी । वह छतरी उसके हाथ से छूटकर एक पतग की तरह आसमान मे उड गयी ।

पुस्तको के ढेर को दोनो हाथो से सभालते हुए उसने ऊपर की तरफ देखा । छतरी हवा मे दो-एक बार नटबाजी कर दस-बीस मीटर दूर जमीन पर औधे मूँह जा गिरी । फिर दो-तीन बार नर्तन-सी करती वह वहाँ से धीरे से उडकर मैदान के कोने मे कोयले के ढेर मे अटक गयी ।

श्रीधरन ने दौड कर कोयले के ढेर से छतरी उठा ली । शैतानी हरकतो के बीच बेचारी छतरी की चार-पाँच पसलियाँ टूट गयी थी ।

अपना नया छाता उसकी तरफ बढाते हुए श्रीधरन ने कहा, "इसे ले लो—बारिश से बचो ।"

वह हिचकती रही, उसको जरा शक भी हुआ । फिर श्रीधरन के चेहरे की तरफ देखा । छतरी ले ली, फिर भी शकित हो खडी रही—

"कोई बात नही । छतरी मुझे कल दे देना !" श्रीधरन ने उसे एडी से लेकर

चोटी तक एक बार देखने के बाद धीमी आवाज़ मे कहा।

वह सिर झुका कर हौले-हौले चली गयी।

उस लडकी को इसके पहले कभी देखा नही था। आम्र-पल्वल के रग की कृशगात्री। लाल लाल ओठ। खूबसूरत आखे। कान मे छोटा-सा गोलाकार कर्णफूल, नाक के छोर पर लाल पत्थर जडित टोरा और पैरो मे नूपुर। बिलकुल एक देहाती लडकी। एक शेल्फ मे आने लायक ढेर सारी पाठ्य पुस्तकें, नोटबुक, ड्राइग बुक उसने छाती पर ढो रखी थी।

लगा कि कोई प्रशिक्षण-छात्रा होगी।

हवा के झटके से टूटी हुई पसलियोवाली छतरी को अपने सिर के ऊपर तान कर श्रीधरन चलने लगा। किस्मत ही समझो कि वहाँ इस घटना को देखनेवाला कोई न था।

बारिश खतम होने पर छतरी को समेटकर बगल मे रख लिया।

उस छतरी की मूठ काजू के आकार की थी। उसे स्मरण आया कि काजू के फल मे दिखाई देनेवाला दाग-जैसा कुछ उसने उसके गालो पर भी देखा था।

श्रीधरन घर की तरफ नही गया क्योकि पिताजी छतरी देखते ही पूछते यह औरतो की छतरी किसकी है? यह कैसे तुम्हारे हाथ मे आयी? ऐसे ढेर सारे सवाल। पिताजी से वह कभी झूठ नही बोला। वे तो सच्चाई के मूर्त रूप है।

सीधे मुहल्ले की तरफ गया। गली के छोर पर छतरी की मरम्मत करने वाला एक ऐंची आँखोवाला मुसलमान था।

मरम्मत के बाद अगले दिन लेने का वादा करके छतरी उसके हवाले कर घर का रास्ता लिया।

दूसरे दिन सुबह नौ बजे मरम्मत हुई छतरी लेकर रेल के मैदान मे उसका इन्तजार करता हुआ वह खडा रहा।

उसके वहाँ पहुँचने पर छतरी की अदला-बदली हुई। श्रीधरन ने सकुचाते हुए पूछा, "आपका शुभ नाम?"

"अम्मुक्कुट्टि।"

"क्या प्रशिक्षण-छात्रा हो?"

"हा"

"कहाँ रहती है आप?"

उसने जगह का नाम बताया।

"उस घर के मालिक से कोई रिश्ता होगा?"

"उनकी साली हूँ।"

•

श्रीधरन ने स्मरण किया कि जिन्दगी मे उन दोनो के बीच केवल इतनी-सी

बातचीत हुई थी।

एक अप्रत्याशित घटना ने फिर उनकी मुलाकात मे अड़चन पैदा की' महीनो बाद उसके घर के सामने से कभी-कभी निकला था। रास्ते मे भी जब-कभी उसे देखा—पर, न जाने क्यो, कुछ वार्तालाप करने का साहस नही हुआ—शरम और भय के मारे। कोई जान ले तो ?

यो धीरे-धीरे अनजाने मे ही अलग हो गये। लगभग भूल-सा ही गया। फिर तीन बरस बीत गये। तभी उसके छोटे भाई ने उसकी वह नोटबुक दी थी———

इस दुनिया मे वह क्यो जनमी थी ? ढेर सारी पुस्तको का बोझ ढोकर प्रशिक्षण स्कूल जाने के लिए और छिपे-छिपे शोकाकुल गीतो का सर्जन कर रोने के लिए ही तो ?

परलोक मे बसनेवाली उस लडकी के लिए श्रीधरन ने कई प्रेमगीत लिखकर आग मे उनकी आहुति दी है। श्रीधरन ने अनुभव किया है कि अनश्वर प्रेम का क्या अर्थ है।

परलोक की तरफ उड गयी उस नन्ही कोकिला के निवास-स्थान पर ही दस हजार गैलन का एक बडा रिजर्वायर (पेट्रोल टैंक) उठ खडा हुआ है।

महज अम्मुक्कुट्टि ही नही, श्रीधरन के कैशोर्य एव वय सधि की कई तरह से मेहमानी करनवाले कई इनसान इधर अदृश्य हो गये है। अर्ध शती के पहले की उस जिन्दगी की सौध और गरमी कुछ और ही थी। जिस देश मे जन्म हुआ और जहाँ की मिट्टी मे पला, उस देश के प्रति और वहाँ की जिन्दगी के नाटक मे बखूबी अभिनय करने के बाद मृत्यु के पर्दे के पीछे जा छिपे इनसानो के प्रति अपने एहसानो का श्रीधरन ने स्मरण किया उनकी कथा अपनी जिन्दगी की दास्तान भी होगी

कथा एक प्रान्तर की

खण्ड . एक

1 एक रजिस्ट्री खत, 2 नये रिश्तेदार, 3 कुजप्पु, 4 सिपाही, 5 वर्षगाँठ की दावत और फौजी अफसाना, 6 इलजिपोयिल मे, 7 तुर्की फौज, 8 अप्पाण्य, घर का चबूतरा, औरतो का झगडा, 9 फिर इलजिपोयिल मे, 10 पेटर कुजप्पु, 11 ज्ञान के मूलस्रोत, 12 किट्टन मुशी, 13 दगा-फसाद, 14 आसमान का दुश्मन, 15 आयिश्शा, 16 औरत, सोना और पुलिस, 17 हड्डियो का पिजरा और मौलमिरी की माला, 18 बन्दर और गूर्खास, 19 वेणुगोपाल, 20 अप्पु के खेत मे, 21 दगा दबता है, 22 मौत की गाडी

1 एक रजिस्ट्री खत

अपने बडे भाई एव घराने के मुखिया श्री चेनक्कोत्तु केलुक्कुट्टि के सम्मुख वरिष्ठ उत्तराधिकारी चेनक्कोत्तु कृष्णन का सादर निवेदन

मेरी पहली पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरी शादी की बात तय करके पिछले साल आपने ही मगनी की रस्म पूरी की थी। लेकिन उस औरत को ब्याह कर घर लाने के लिए घराने के मुखिया होने के नाते आपने अभी तक कोई कार्यवाही नही की। अपनी बूढी माँ और छोटे बच्चो की परवरिश का भार मेरी नाक मे दम कर रहा है। विवाह के लिए कम-से-कम पचास रुपये खर्च करने की सख्त जरूरत है। चूंकि इतनी रकम मेरे पास नही है अत घराने की परम्परा के अनुसार विवाह का इन्तजाम करने का दायित्व आप पर है। यदि आप अपना दायित्व पूरा नही करेंगे तो आज से पन्द्रह दिन बाद मै उक्त रकम किसी और से उधार लेकर जरूरी कार्यवाही करूँगा। उस स्थिति मे मुझे या साहूकार को उक्त रकम देने की जिम्मेदारी आपकी होगी। इस नोटिस के जरिए मै आपको इस बात की सूचना देता हू।

भवदीय,

ह० चेनक्कोत्तु

तारीख 21 फरवरी, 1912

कृष्णन मास्टर का चेनक्कोत्तु घराना उस पुराने शहर के मशहूर चार घरानो मे से एक था।

कृष्णन मास्टर के स्वर्गीय पिता कुजप्पु ब्रिटिश सरकारी सेवा मे थे—एच एस कस्टम मे एक चपरासी। उस ज़माने मे वह अच्छा पेशा माना जाता था। सरकारी मोहरवाली वर्दी, नियमित मासिक वेतन, असामियो से घूस लेने की सुविधा, जहाज द्वारा आयात होने वाले सामान मे से थोडा हडप लेने की छूट इस पेशे के मुख्य आकर्षण थे।

कुजप्पु एक हट्टा-कट्टा, गोरा-चिट्टा नौजवान था। कुजप्पु की कुल-महिमा और व्यक्तित्व देखकर ही गोरे साहब ने उसे कस्टम के चौकीदार की नौकरी दी थी।

शराब की लत और औरतो के चक्कर ने कुजप्पु का व्यक्तिगत जीवन एकदम असतुलित कर दिया था। खूबसूरत औरतें—चाहे वे कन्याएँ हो, शादी-शुदा हो, विधवा हो या बुढ़ियाँ हो—कुजप्पु की काम-पिपासा का शिकार होती थी। उसके कुछ बदमाश साथी भी थे। उनसे मुठभेड करने का हौसला उस सारे क्षेत्र मे किसी को न था।

इसी बीच घराने मे पारिवारिक झगडे सिर उठाने लगे। कुजप्पु के मन मे आशका उठने लगी कि स्वर्गीय दादा के बेटा और बेटी तथा काकाजी का बेटा एक-जुट होकर उसे, पैतृक घराने का मुखिया होने के नाते, जहर पिलाकर मारने की साजिश कर रहे है। इस आशका ने कुजप्पु के जीवन को और भी कलुषित कर दिया। घर के भीतर और बाहर दुश्मन। कुजप्पु खूनी शैतान मे बदल गया।

लेकिन घर के जानी दुश्मन भाई-बहनो द्वारा जहर पिलाने से पहले ही एक दिन सुबह कुजप्पु की लाश एक सुनसान जगह पर अधे कुए मे दिखायी दी। किसीने खूब शराब पिलाकर बेहोश करने के बाद उसे कुए मे गिरा कर मार डाला था।

कुजप्पु की अकाल मौत के बाद चेनक्कोत्तु घराने के मुखिया का पद कुजप्पु के बडे भाई के बेटे केलुक्कुट्टि को मिला।

केलुक्कुट्टि की एक बदसूरत जेठी कुमारी बहन थी। नाम था कुकी। दरअसल घराने के शासन की बागडोर कुकी के हाथ मे थी। कुकी के कई बदमाश आशिक थे। उसके साथियो ने ही कुजप्पु को शराब पिलाकर बेहोश करने के बाद अधे कुए मे फेक दिया था।

अपने पिता की मृत्यु के बाद कृष्णन मास्टर ने महसूस किया कि उनका घर दुश्मनो का अड्डा बन गया है। शान्त, नेक और ईमानदार व्यक्ति होने के नाते मास्टर ने सब कुछ बरदाश्त कर नौ बरस वहाँ काटे। इस बीच उसने शादी की और दो तीन सताने भी हो गयी।

उस पैतृक घर मे रहना खतरे से खाली नही था। उसे लगा, पिता के लिए लाया जहर बेटे को पिलाया जायेगा। तीन-चार साल पहले से ही कृष्णन् मास्टर ने अपने परिवार का चूल्हा अलग कर लिया था और खाना-पीना भी।

कृष्णन मास्टर अपनी माँ, पत्नी और बच्चो के साथ घराने के एक अलग अहातेवाले घर मे रहने लगा।

दो साल गुजर जाने पर कृष्णन मास्टर ने घराने के मुखिया केलुक्कुट्टि के नाम इस तरह का एक रजिस्ट्री नोटिस भेजा

"आप लगभग बारह वर्षों से हमारे घराने का कार्यभार सभाल रहे हैं। हमारे इस सयुक्त परिवार की दो शाखाओ मे से एक का सदस्य होने के नाते मैं तथा इस शाखा के अन्य सदस्य जिन सुविधाओ के अधिकारी है, अभी तक आपने हम सबको उनसे वचित रखा है। घराने की सारी आय आप व आपकी शाखा के अन्य सदस्य

लूट रहे हैं। जमीन-कर अदा किए बिना, चल संपत्ति बेचकर, बाग के फल-वृक्षो को तबाह करके और कुछ कार्यवाहियाँ अपनी मर्जी से रद्द करके आप हम लोगो की आँखो मे धूल झोंकने की कोशिशें करते आये हैं। इस तरह घराने की संपत्ति नष्ट होने लगी है। मेरे पिता के बीमार पड़ने के बाद आपने मुझे बहुत कष्ट दिया। कई बार मार-पीट कर घायल भी किया। आप जानते ही है कि एक अभ्यस्त शराबी होने के नाते आप किसी न किसी चाल से मेरी हत्या करेंगे ही। इसीलिए मैंने अपना चूल्हा अलग जलाना शुरू किया। इसलिए इस नोटिस द्वारा आपको सूचित किया जाता है कि आज से चौथे दिन तक मुझे व मेरी शाखा के अन्य सदस्यो को घराने के जो लाभांश मिलते है, वे अदा किए जाएं। नहीं तो आपके विरुद्ध मुकदमा दायर किया जायेगा और उससे जो नुकसान उठाना पड़ेगा उसके लिए आप जिम्मेदार होंगे। इस नोटिस के जरिए ये सब बातें सूचित की जाती है। इससे पहले रजिस्ट्री नोटिस भेजा गया था, वह आपको याद होगा ही।

यह रजिस्ट्री नोटिस आपके छोटे भाई चात्तुक्कोट्टि तथा आपकी शाखा के अन्य सभी सदस्यो को भी दिखाया जाना चाहिए।

भवदीय,

ह०/—चेनक्कोत्तु कृष्णन)

घराने के बँटवारे की धमकी देनेवाला यह पत्र घराने के मुखिया केलुक्कुट्टि को जरा भी विचलित करने मे कामयाब नही हुआ। उनकी प्रतिक्रिया सिर्फ यह थी "उससे कह दो कि मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक ही है।" अपने रजिस्ट्री नोटिस के विषय मे घराने के मुखिया से कृष्णन मास्टर को यही उत्तर नाई रामन द्वारा मिला।

कृष्णन मास्टर मुकदमा दायर करने नही गया। सब्र से इंतजार करता रहा।

दो साल और गुजर गये। कृष्णन मास्टर की एक और संतान-लड़की पैदा हुई। किन्तु वह छह महीने से अधिक जिंदा न रही। इस दुर्घटना के महीनो बाद उसकी पत्नी विष-ज्वर से पीड़ित होकर चल बसी।

बूढ़ी माँ और छोटे बीमार लड़के की देख-रेख के लिए घर मे एक औरत की सख्त जरूरत थी। इसलिए कृष्णन मास्टर ने दोबारा विवाह करने का निश्चय किया। यह जरूरी और न्यायोचित कार्य संपन्न करने के लिए घराने के मुखिया को बिना किसी झिझक के पूरी मदद करनी चाहिए थी। लेकिन, उन्होने जहर पिलाने की बात मे जो दिलचस्पी दिखायी थी वह अपने भानजे के पुनर्विवाह के मामले मे नहीं दिखायी। शायद शादी के खर्च के बारे मे सोचकर। यह सब समझ लेने के कारण ही कृष्णन मास्टर ने अपनी जरूरतो और अधिकारो की याद दिलाते हुए घराने के मुखिया के नाम वह रजिस्ट्री खत भेजा था।

2 नये रिश्तेदार

पता नहीं, केलुक्कुट्टि ने रजिस्ट्री खत का कोई जवाब दिया या नहीं। हो सकता है खत उन्होंने कूड़े में ही फेंक दिया हो।

कृष्णन मास्टर शहर के अँग्रजी स्कूल का अध्यापक था। शहर मे उपलब्ध सबसे ऊँची अँग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के अलावा उसके पास आशुलिपि के इम्तहान का प्रमाण-पत्र भी था। उन दिनो मलबार मे आशुलिपि जाननेवाले लोग बहुत ही कम थे। इस योग्यता के कारण उसे उत्तर भारत की एक विदेशी कपनी से डेढ सौ रुपये माहवार की नौकरी का न्योता भी मिला था, लेकिन अपना परिवार छोडकर दूर जाने का उसका मन न हुआ और उसने डेढ सौ रुपये वेतन की नौकरी को इनकार करके पन्द्रह रुपये की अध्यापकी कर ली।

यह तो बीस साल पहले की बात है। उसके बाद कितनी ही घटनाएँ घटी। शादी हुई। दो बच्चे हो गये। घर के मुखिया पिता चल बसे। परिवार मे दगा-फसाद शुरू हो गया। घर से कुछ मिलना तो दूर, जान हथेली पर रखकर भटकना भी पड़ा। सच्चाई और ईमानदारी ही उसके जीवन-साथी रहे। लेकिन खानदान के नृशस मुखिया पर इन बातो का कोई असर नही पड़ा। इस नाजुक हालत मे एक बीमार छोटे बच्चे और दो बेटो को छोडकर पत्नी भी चल बसी।

अब कृष्णन खानदान के सभी रिश्तो को तिलाजलि दे पुनर्विवाह कर एक नयी ज़िंदगी शुरू करने जा रहा है।

शहर मे जन्मा, बडा हुआ, अँग्रेजी शिक्षा हासिल की, यूरोप और यूरेशिया के साहबो की सगति मे रहकर सम्मान पाया, फिर भी कृष्णन मास्टर का गाँव और ग्रामीण सस्कृतियो के प्रति खास लगाव बना रहा। इसीलिए शहर मे करीब छह-सात मील दूर पूरब की तरफ के एक पुराने किसान परिवार की नव-विधवा लडकी को कृष्णन ने पुनर्विवाह के लिए चुन लिया।

घरान की चहारदीवारी से दूर अपने लिए एक बिलकुल अलग अहाते का घर खरीदने और शादी करके वहाँ रहने का पक्का इरादा कृष्णन मास्टर कर चुका था। इस तरह जमीन की तलाश शुरू हुई।

शहर की दक्षिण-पश्चिम दिशा मे अतिराणिप्पाट नाम से प्रसिद्ध एक नुक्कड पर खेत को पाटकर एक अहाता तैयार किया गया था और उसी मे छप्पर का एक झोपडा था। कृष्णन मास्टर ने एक मुस्लिम परिवार से वह अहाता और घर खरीद लिया।

एक विशाल दल-दल को पाट दिये जाने के कारण ही अतिराणिप्पाट बस्ती बनी। पुराने जमाने मे एक छोटी-सी नदी इस जगह मे बहती हुई एक मील दूर पश्चिम के समुद्र मे गिरती थी। सदियो बाद वह नदी सूख गयी और वहाँ दलदल

मे भरा नाला बन गया। उस हिस्से को आज भी 'नदी किनारा' कहकर पुकारते है। वह नाला भी धीरे-धीरे पटकर दलदल मे बदल गया। दलदल ज़मीन मे बदलती गयी और वहाँ लोगो का आना-जाना शुरू हुआ। मेहनत के निशान प्रकट होने लगे। गन्ने के बाग, तिलहन और अरहर के खेत और बाडो से घिरे हुए अहाते भी बनने लगे। धीरे-धीरे खेतो की जगह नये-नये मकान उठ खडे हुए। पुराने खेतो की मेडो पर नारियल के पेड झूमने लगे। तिल के खेतो मे अब ताडी निकालनेवाले नारियल के पेड खडे हैं। अहाते की सीमाएँ मेहदी की बाडो से ढकी हुई है।

पुरानी दल-दल के निशान अभी पूरी तरह मिटे भी नही थे कि नये अहातो के लिए जहाँ से मिट्टी खोदी गयी थी, वहाँ पगडडियाँ बन गयी है। गर्मी के दिनो मे भी इन पगडडियो म मछली के खून के रग का गदा पानी भरा रहता है। बरसात के दिनो मे ये पगडडियाँ पीले रग के पानीवाले नालो मे बदल जाती है। आधेक मील दूर पर बहनेवाली नदी की मछलियाँ इन नालो मे मेहमान की तरह चली आती है। पगडडियो के दोनो तरफ के अहातो मे जाने के लिए डाले गये नारियल के पुल कभी-कभी पानी के ज़ोरदार प्रवाह मे बहकर पहले नदी मे और फिर समुद्र मे पहुँच जाते है। समुद्र के क्षुब्ध होने पर उसकी लहरो के गर्जन की आवाज अनिराणिप्पाट मे सुनाई देती है।

अनिराणिप्पाट मे बसनेवाले लोग अमीर नही हैं। दाने-दाने के लिए मुहताज भी नही है। उनमे अधिकाश लोग नदी किनारे के काठ गोदामो मे चिराई करने वाले मजदूर और उनके परिवारो के सदस्य है। यही उनका पुश्तैनी पेशा है। काठ के पसेब और पसीने से तर, चमडी की तरह के बदबूदार कमीज़ और धोती पहनकर ये मजदूर अकेले और एक जुट होकर सुबह के समय नदी-किनारे के गोदामो की तरफ बढते दिखायी देते हैं।

वहाँ के सभी छोटे अहाते वहाँ के निवासियो के कठिन परिश्रम का परिणाम है। ज्यादातर झोपडियाँ है। कोई किराये के घर मे नही रहता। दूसरो के झोपडो मे किराये पर रहने की व्यवस्था से वे लोग परिचित नही है।

"मोइतु मापिला का अहाता और घर किसी ने खरीद लिया है।" यह खबर अनिराणिप्पाट मे फैल गयी।

"किसने वह अहाता और घर खरीदा है ?" आराकश रामन ने दामु राइटर से पूछा।

"सुना है कि कोई मास्टर है—खूब पढा लिखा एक मास्टर साहब !"

"मुसलमान है ?"

"नही, हमारा ही आदमी है।"

उसे बडी तसल्ली हुई। अतिराणिप्पाट मे सिर्फ एक ही मुसलमान परिवार था, मोइतु मापिला का। अब वहाँ एक सभ्रान्त हिन्दू मास्टर आनेवाला है। खुश-

खबरी है।

एक रविवार की शाम उन लोगो ने मास्टर को निकट से देखा भी। मास्टर अपने अहाते के चारो तरफ बाड बँधवाने आया था।

बद गले का काला कोट और सिर पर काली टोपी पहने, गोरे रग और नाटे कद का, आँखो पर चश्मा चढाये एक आदमी। हाथ मे छतरी और पैर मे चप्पल भी हैं। माथे पर चन्दन का टीका भी।

नया मेहमान उनको बहुत पसंद आया। अहाते के चारों तरफ जुड आये उस प्रदेश के निवासियो की तरफ देखकर मास्टर प्यार से मुस्कुराया। कुशल समाचार पूछा। बातचीत शुरू होने पर उन्हे मास्टर से कुछ ममता भी हो गयी।

मास्टर ने उस प्रान्तर के बारे मे उनसे ढेर सारी बातें पूछी। साफ शब्दो मे पूछे गये सवालो का जवाब उन लोगो ने हाँ-ना मे दिया। बातचीत के दौरान मास्टर ने अपना इतिहास भी बता दिया "नाम है कृष्णन। बडे भाई से दगा-फसाद हो, इससे पहले ही घर से गला छुडाकर भाग निकलने का निश्चय किया है। कहावत है न 'तेते पाँव पसारिये जेती लाँबी सौर।' आगे की हमारी जिंदगी आप लोगो के बीच मे ही गुजरेगी। आप लोग ही अब हमारे नये रिश्तेदार हैं। मेरा यह अहाता तो बुरा नही है। लेकिन घर तो बिलकुल खराब है। नया घर बनाना है। शादी और बारिश के बाद " मास्टर ने हँसते हुए कहा।

मास्टर ने और भी बहुत-सी बाते की। फिर, अचानक अपने कोट की जेब से चाँदी की जेबघडी निकालकर समय देखा।

लोगो ने इस नयी चीज को बडे ताज्जुब से देखा। उनमे अधिकाश तो ऐसे थे, जिन्होने समय जानने का यह यत्र पहली बार देखा था।

"क्या बजा है ?" एक कुबडे बुजुर्ग ने अपने चेहरे और छाती को आगे करते हुए पूछा।

"छह बजकर पाँच मिनट हो गये।" मास्टर न घडी जेब मे डालते हुए बताया। "मुझे साढे छह बजे मार्टिन साहब के बगले मे पढाने के लिए पहुँचना है।"

मास्टर ने छतरी बगल मे दबाकर उनसे बिदा ली।

"मास्टर ऊपर की तरफ देखकर चलता है।" कुबडे वेलु की पत्नी कोच्चि ने अपनी राय जाहिर की। उसने घर की खिडकी के पीछे छिपकर यह सब कुछ देखा-सुना था।

गाँव के स्कूल के पणिक्कर से भी ज्यादा पढा है क्या यह ?"—परगोटन की पत्नी पेरिच्ची ने शका की।

"अरी, बुद्धू, गाँव के स्कूल का पणिक्कर मास्टर तो हरिश्री और अमरकोश सिखानेवाला है। लेकिन यह मास्टर तो इगिरीस है। ए० बी० सी० डी०, एक

पैसे की बीडी—बूढे की दाढी मे आग लगी···"

परगोटन का मजाक सुनकर सब लोग ठहाका मार कर हँस पडे।

3 कुजप्पु

कृष्णन मास्टर की नयी शादी मे भाग लेना अतिराणिप्पाट के लोगो को नसीब नही हुआ। विवाह की रस्म कृष्णन मास्टर के पुस्तैनी घर पर ही सम्पन्न हुई। घराने से अलग होने के लिए तैयार कृष्णन मास्टर इस छोटी-सी बात पर अपनी शान-शौकत मिट्टी मे नही मिलाना चाहता था।

शादी के एक हफ्ते बाद ही कृष्णन मास्टर, नयी बीबी और परिवार के अन्य सदस्य अतिराणिप्पाट वाले घर मे रहने आ गये।

मास्टर के परिवार को देखने के लिए अतिराणिप्पाट की औरतें कन्निप्परपु मे आने लगी। नव वधू कुट्टिमालु उन्हें बहुत पसन्द आयी। गोरी-चिट्टी और जरा नाटे कद की खूबसूरत युवती। दूसरी शादी होने पर भी नव वधू के चेहरे पर लाज-शरम की झलक थी। कानो में बडी-बडी बालियाँ, गले मे माला, हाथ मे लाल पत्थरो के जडाऊ भारी कगन, नाक मे लटकती हीरे की नथ। गर्दन के ऊपर बालो के जूडे मे खूबसूरत सोने का फूल, उगलियों मे कई सुन्दर अगूठियाँ—कुट्टिमालु के ये ढेर सारे आभूषण देखकर अतिराणिप्पाट की औरतो को अचरज भी हुआ और ईर्ष्या भी।

मास्टर की माँ सत्तर बरस की बुढिया है, सफेद बाल और काँपते चेहरेवाली। मास्टर का बडा बेटा कुजप्पु काला-कलूटा और नाटे कद का नौजवान है। चेहरा बन्दर-जैसा। दूसरा पुत्र गोरा-चिट्टा और सुन्दर है। उम्र करीब अठारह वर्ष की है। लम्बे बालो को दाहिने कान पर गूँथकर रखता है। कानो में सोने की बालियाँ है। तीसरा लडका सात बरस का है, पोलियो और बवासीर का मरीज।

बूढी माँ और हमेशा चारपाई पर पेशाब करनेवाले इस मरीज छोकरे की शुश्रूषा का भार आज से कुट्टिमालु पर है। नफरत और चख-चख के बिना क्या वह अपना फर्ज निभा पाएगी? अतिराणिप्पाट के लोगो ने आपस मे खुसुर-फुसुर की। देखे, क्या होता है।

लेकिन कुछ ही दिनो मे वे समझ गये कि उनका शक बेबुनियाद है। कुट्टिमालु बडी श्रद्धा और अदब से सास से अपनी माता जैसा बर्ताव करती है और सगे बेटे की तरह वात्सल्य और हमदर्दी से मरीज राघवन से बरतती है। पडोस की औरतो से भी वह हिल-मिल गयी। उनकी तकलीफो और जरूरतो मे वह जी जान से हिस्सा लेती।

छाती पर सिर्फ एक अगोछा लपेटने की अभ्यस्त अपनी देहाती वधू को कृष्णन

ने चौली पहनवायी। बाहर जाने के लिए बाँह और गरदन पर झालर लगी लाल रेशमी ब्लाउज़ भी सिलवा दी।

बचपन से ही गाँव के विशाल और उन्मुक्त वातावरण मे पली उस देहाती युवती को शुरू से ही शहर का गन्दा वातावरण और वहाँ की जिन्दगी अखरने लगी। खाने के लिए ताज़े नही, बासे चावल मिलते है। नहाने के लिए तालाब और नदी नही है। पीने का पानी भी पडौस के अहाते के कुएँ से लाना पडता है। तरकारी और लकडी बाजार से खरीदी जाती है। मट्ठा और दही मिलते नही। सुबह सकारे मुर्गे की बाग नही सुनाई देती बल्कि आधी मील दूर की मिल का भोंपू चीखता है। सुबह उठने पर गाये नही, पडोस के अहाते मे मल विसर्जन करनेवाले नगे चूतड ही शकुन मे दिखाई पडते है।

बुनाई और कटाई को देखकर कुट्टिमालु भूली-सी खडी रह जाया करती। ये कच्चे तिनको की गन्ध और चिडियो की चहचहाट सुनने के लिए कुट्टिमालु का मन ललचाने लगा। हालाकि धीरे-धीरे वह नये वातावरण और नयी जिन्दगी से हिल-मिल गयी।

कुट्टिमालु की इस नयी जिन्दगी की राह म पति का ज्येष्ठ पुत्र कुजप्पु एक काँटा था।

कुजप्पु एक अजीब आदमी था।

पहली सतान होने के नाते मा-बाप ने ज्यादा लाड-प्यार म उसको खराब कर दिया था। अपने नामधारी दादा के सभी अवगुण उसको मिले थ। पर दादा का असीम हौसला और फक्कडपन कुजप्पु को छू तक नही पाया। बचपन मे स्कूल मे भर्ती कराया। लेकिन घर से निकलने पर भी कई दिनो तक स्कूल नही पहुँचा। बाजारू लडको के साथ खेलने-कूदने म और नदी तट पर जाकर बसी से मछली पकडने म उसका समय कटता। आखिर शाम को थक कर वह घर वापस लौट आता। कई दिनो बाद जब पिता को इसका पता लगता तो वह उसको मीठी-मीठी बाते करके पुचकारता और मन पसद हलुआ खिलाकर धीरे-धीरे थपकियाँ लगाता हुआ स्कूल ले जाता। स्कूल का मास्टर दुर्वासा का अवतार ही था। शरारत करने पर या पाठ को गलत ढग से उच्चारण करने पर लडको को बेंत से खूब मारता था। मार खाने पर कुजप्पु फिर पुराना कार्यक्रम चालू कर देता। कृष्णन मास्टर फिर नयी कमीज सिलवा देने का प्रलोभन देकर उसको स्कूल मे पहुँचाता। इस तरह तीन-चार महीने निकल जाते। कुजप्पु के कभी-कभी स्कूल जाने के कार्यक्रम के साथ अध्यापक के मारने-पीटने का कार्यक्रम भी निरतर चलता रहा।

एक दिन एक शरारती दोस्त ने कुजप्पु को सलाह दी कि बेत की छडी पर पेशाब कर धूप मे सुखाने से, मारते समय छडी एक दम टुकडे-टुकडे हो जायेगी। कुजप्पु दूसरे दिन सुबह ही सुबह स्कूल पहुँचा। उसने मेज़ पर से मास्टरजी

की छडी उठायी और एक कोने मे जाकर बैठ गया। छडी पर पेशाब करने के ऐन मौके पर ही उसकी पीठ पर जोर की मार पडी। कुजप्पु कूद कर उठ खडा हुआ, मुडकर देखा तो मास्टर जी का विराट रूप सामने था। झट से उसने गुरूजी की छाती पर पेशाब से सने बेत से तीन-चार जमा दिये। स्लेट और किताबों को फेककर उस दिन से जो वह स्कूल से निकला तो फिर कभी उसने उस तरफ मुडकर नही देखा।

जब कृष्णन मास्टर को इस घटना का पता चला, तो पुत्रवात्सल्य को दूर फेककर उन्होने कुजप्पु को एक खम्भे से बाध दिया और उसकी धोती हटाकर जाघो और चूतड पर छडी से खूब मार लगायी।

उस दिन शाम को कुजप्पु घर छोडकर कही भाग गया। दो दिन तक मारा-मारा फिरने के बाद दूसरे दिन शाम को भूख बर्दाश्त न होने के कारण कुत्ते की तरह दुम दबाये फिर घर म ही घर लौट आया।

यही कुजप्पु का पहला इतिहास है।

कुजप्पु अब भी कोई काम किये बिना मारा-मारा फिरता है। 'कुल का कलक' बताकर कृष्णन मास्टर ने उसे मनमाना करने को छोड दिया है।

कन्निप्परपु मे रहन क लिए आन पर पहले ही दिन कुजप्पु ने एक कौशल दिखाया। माक्कोता ने ताडी निकालने के लिए जो हॉडी नारियल के पेड पर लटकायी थी, उस पर कुजप्पु ने निशाना साधकर एक पत्थर मार दिया। हॉडी के फूटते ही ताडी बहकर नीचे गिरने लगी। ऊपर की तरफ ऑख और मुँह फाड कर कजप्पु ने जी भर कर उस अमृत-धारा का पान किया।

कुजप्पु पत्थर मारने मे बडा होशियार है। ऊँचे आम्र वृक्ष के आम के गुच्छो म से बीच के किसी भी खास आम पर निशाना बाधकर वह उसे मार गिराता है। मौका पाते ही वह नारियल के पेड से नारियल भी मार गिराता और बाजार म जाकर बेच आता। बॉया हाथ उठाकर अर्जुन की-सी भगिमा से जरा दाहिनी तरफ मुडकर खडे होने के बाद कुजप्पु के दाहिने हाथ के पत्थर का भु की गभीर ध्वनि से हवा को चीरते हुए लक्ष्य स्थान को बेधने का दृश्य एकदम अनोखा होता है।

कुजप्पु का एक और कौशल है, मुँह मे उगलियाँ डालकर सीटी बजाना। कानो को बेधनेवाली सीटी की वह आवाज एक-आध मील दूर तक सुनाई देती है।

उसका मनपसद मनोरजन केकडा पकडना है। नारियल के पत्ते से निकाले गये धागे के छोर पर चारा लगाकर वह उसे पानी मे डाल देता और नदी-किनारे के लक्कडो के ढेर पर केकडे के ध्यान मे बैठा हुआ घण्टो इन्तजार करता। ऐसे ही समय कुजप्पु शान्त दिखाई पडता।

कृष्णन मास्टर का दूसरा बेटा गोपालन शान्त स्वभाव का है। वह अकलमद

भी है। लेकिन स्कूल की पढाई से, न जाने क्यो उसे एक प्रकार की विरक्ति है। आठवी कक्षा तक पढा। फिर पिताजी के निरन्तर दबाव के बावजूद वह स्कूल नही गया। सतानो को उच्च शिक्षा देकर ऊँचे औहदो पर पहुँचाने की कृष्णन मास्टर की सारी आशाओ पर पानी पड गया। कृष्णन मास्टर ने गोपालन को नदी-किनारे के कुजाडी साहब की लकडी की दुकान का हिसाब सीखने के लिए रख दिया।

छोटा लडका राघवन दो-तीन साल से बीमारी के कारण खाट पर पडा है। तमाम इलाज कराये, पर हालत नाजुक ही रही। कुट्टिमालु का प्यार और सेवा-शुश्रूषा ही उसका एक मात्र आधार है।

कुट्टिमालु को घर के काम काज मे मदद करने के लिए उसके पिता ने अपने गाँव से एक नौकरानी भेज दी है।

कुट्टिमालु को जब कै-उल्टी की शुरुआत हुई तो कृष्णन मास्टर के मन म खुशी हुई। लेकिन राघवन की दर्दनाक हालत देखकर अफसोस भी हुआ। तीन-चार महीने बाद कुट्टिमालु प्रसव के समय तक के लिए अपने घर चली जाएगी, फिर राघवन की देख-रेख कौन करेगा ?

खैर, चार महीने गुजरे और कुट्टिमालु को प्रसव के लिए इलजिपोयिल ले गये।

पत्नी की गैर-हाजिरी म राघवन की तीमारदारी और घर के काम-काज के लिए कृष्णन मास्टर अपनी चचेरी बहन चिरुतक्कुट्टि को ले आया। चिरुतक्कुट्टि ने चार दफा शादी की थी। पर चारो मर्तबा उसकी किस्मत मे वैधव्य ही बदा था। तीस वर्ष की चिरुतक्कुट्टि अपने पाँचवे शिकार के इन्तजार मे थी।

हाई-स्कूल की पढाई पूरी हो जाने पर कृष्णन मास्टर को दो-तीन ऐंग्लो-इडियन रेलवे कर्मचारियो के बगलो पर ट्यूशन लेने जाना पडता। इन सब कामो से निपट-कर घर पहुँचते हुए उसे रात के नौ बज जाते।

घर मे घुसते ही कुजप्पु के बारे मे चिरुतक्कुट्टि की फरियाद सुननी पडती 'कुट्टिमालु के सन्दूक को एक जाली चाभी से खोलने की कोशिश की'। 'भात के साथ खाने मे सब्जी ही है, मछली नही है, यह सुनते ही कुजप्पु ने आगन की मुर्गी को पत्थर फेक कर मारा और तुरन्त ही उसे पकाने की आज्ञा दी'। ऐसी कई शिकायते हर रोज होती थी। लेकिन अभियुक्त को बुलाकर पूछताछ करना तो तभी सभव होता, जब वह कही आसपास ढूँढने पर मिलता।

कृष्णन मास्टर बडा भक्त है। सुबह जल्दी उठकर सस्कृत के स्तोत्र गाता। फिर नहाकर जप-उपासना करने के बाद जब उठता तो अक्सर पडोस का कोई आदमी बरामदे मे अपनी दाढी खुजलाता हुआ खडा होता। कभी किसी को कोई आवेदन-पत्र लिखना होता तो कभी किसी बात पर सलाह लेनी होती। (अतिरा-

णिप्पाट के गरीब और अशिक्षित लोगो के लिए कृष्णन मास्टर शानी सलाहकार था।) बीच मे वे लोग मजाक के रूप मे मास्टर के बडे लडके कुजप्पु की कुछ करतूतों का भी अवश्य बखान करते कुजप्पु ने रात को नारियल के पेड पर चढ़कर ताडी चुरा कर पी। औरतों को देखकर भद्दे गीत गाये, सीटी बजायी। ऐसी शिकायतें अक्सर होती थीं। यह सब सुनकर कृष्णन मास्टर के अभिमान को आच आती। मास्टर का मन यह सोचकर ममोस उठता कि जो अपने बेटे को ठीक रास्ते पर नही ला पाया, वही औरो को सलाह दे रहा है। उस समय कुजप्पु नदी-तट पर के लक्कड के ऊपर केकडा पकडने मे ध्यान मग्न बैठा होता।

तीन महीने बीत गये।

एक दिन खुश-खबरी लेकर इलजिपोयिल से एक आदमी आ पहुँचा। ओठ पर सफेद दागवाले सन्देहवाहक चेक्कु ने बताया, "आज प्रभात मे प्रसव हुआ। कोई परेशानी नही हुई। लडका है।"

कृष्णन मास्टर ने झट पचाग लेकर देखा। चैत्र की पहली तिथि रोहिणी नक्षत्र।

पिता ने चेक्कु को एक नयी धोती और पाँच रुपये इनाम दिया।

तीन महीने और बीत गये।

कुट्टिमालु अम्मा बच्चे को लेकर कन्निप्परपु मे शान शौकत से रहने लगी। लडके का नामकरण किया 'श्रीधरन'।

4 सिपाही

अम्मालुअम्मा की गोद मे बैठकर चारो तरफ का मुआइना किया।

बडी मुर्गी और उसके चूज़े कोई चीज़ चुग रहे है। बडी मुर्गी को एक साँप मिला है। साँप मुर्गी की चोच मे तडप रहा है।

"अम्मालुअम्मा, इधर देखो, मुर्गी की चोंच मे साँप!"

"नही चीतरन, वह साँप नही है, केचुआ है— केचुआ।"

तभी पेड के नीचे से कोई जीव धीरे से सरक रहा था। अम्मालुअम्मा ने कहा, "साँप है, साँप!"

"उसके कोई पैर दिखायी नही पडता। फिर वह कैसे जाता है?"

सवाल सुनकर अम्मालुअम्मा हँस पडी। अम्मालुअम्मा की हँसी देखते ही बनती है। उसके मुँह मे एक भी दाँत नही है—अम्मालुअम्मा का मुँह रबड की फटी गेंद की तरह है। अम्मालुअम्मा ने चीतरन के दोनो पैरो को सहलाते हुए कहा—"मेरे चीतरन के दो ही पैर है। साँप के हजारो पैर होते है। मिट्टी के कण जैसे छोटे-छोटे पैर।"

"हजारो पैर वाले हे साँप—अरे तू कहाँ जा रहा है?" श्रीधरन ने ऐसी धीमी

आवाज मे पूछा, जिससे साँप न सुन ले।

"मुर्गी जिसे पकडकर खा रही है, वह केचुआ है, तो क्या केचुआ साँप का बच्चा है ?"

सवाल सुनकर अम्मालुअम्मा फिर हँसते-हँसते लोटपोट हो गयी।

"अरे बेटा, केचुआ तो अधा है। वह तो एक बडा कीडा है।"

हाँ। बडी मुर्गी कीडा निगल रही है। लेकिन पूरा का पूरा निगल नही पाती —मुर्गी के मुँह से कीडे का एक छोर नीचे लटककर तडपता है। मुर्गी सिर झुकाकर चोच इधर-उधर हिलाती है। मजा आ रहा है—अरे केचुए तू यो ही तडपता रह—अरी मुर्गी, तू भी यो ही खाती रह, खाती रह।

यह तमाशा माँ को बुलाकर दिखा दू। नही—अम्मालुअम्मा की गोद म बैठा देखकर माँ गाली देगी। 'लडका तो बडा हो गया है। अरी बुड्ढी, तू क्यो उसे गोद मे लेकर चलती है ?' —ऐसा कहकर माँ अम्मालुअम्मा को गाली देन लगेगी।

अम्मालुअम्मा को चीतरन को गाद म लेकर चलने म बडा मजा आता है। अम्मालुअम्मा की गोद मे चढकर चलना श्रीधरन को भी पसन्द है। अम्मालुअम्मा का स्तन पेट तक लटका हुआ है। वह अपने स्तनो का कपडो से बाधती नही। चीतरन की माँ अपने स्तनो को हमेशा चोली से बाधकर ढक लेती है।

"ल्लाहला आ आ "

कान लगाकर ध्यान म सुना— यह एक गीत है न ?

किधर से आ रहा है यह गीत ?

चारो तरफ देखा। ऊपर भी देखा। नारियल क पेडो के ऊपर और आसमान म पीले रग की धूल छायी हुई है।

खुदा की करामात है।

'लूहाहिला ' गीत फिर सुनाई पड रहा है।

"अम्मालअम्मा, यह गीत कौन गा रहा है ?"

अम्मालुअम्मा ने सडक की तरफ इशारा करके बताया—"एक अधा पठान है बेटा।"

पठान सुनने पर खौफ हुआ। माँ ने बताया था कि पठान बच्चो को पकडकर ले जाता है। फिर गुमसुम रहा।

फिर भी यह गीत सुनने मे मजा आता है।

सडक की तरफ देखा—कुछ भी दिखाई नही देता। अहाते के साथ मेहदी की झाडियाँ जो लगी है।

कभी-कभी कही से आनेवाले मुसलमान बच्चे मेहदी की डालियाँ तोडकर ले जाते। पत्तो को पीस नाखूनो और हथेलियो को रगते। अम्मालुअम्मा बता रही थी।

गीत तो सुनाई पडता है—क्ली---छ्ली की गूँज भी··

"चीतरन गायक को देखना चाहता है," अम्मालुअम्मा के पेट पर मुक्का मारते हुए उसने जोर से कहा।

अम्मालुअम्मा ने टट्टी की मेहदी की डालो को जरा हटा दिया। बीच की जगह मे देखा तो गायक दिखायी दिया। अम्मालुअम्मा के पेट पर हलकी-सी थपकी जमाकर उसने फिर देखा।

गायक एक बडा आदमी है। लम्बा सफेद कुर्त्ता, (इस ढग का एक कुर्त्ता चीतरन के पास भी है।) सिर पर एक लाल टोपी, (चीतरन की टोपी तो काली है!) हाथ मे एक छडी। छडी मे घूंघरु बधे है। उस छडी को ज़मीन पर टेकते समय ही क्ली, छ्ली, क्ली, छ्ली की आवाज़ निकलती है।

'लाहलाहिल्लल्ला ' गीत सुनने पर डर क्यो लगता है! चील की तरह

साँस रोक कर देखा।

"अम्मालुअम्मा, वह क्या गा रहा है?"

"चीतरन, वह मुसलमानो का गीत है।"

"वह इस तरह क्यो गा रहा है?"

"गाने पर लोग उसको पैसा देगे।"

"पैसे मे वह क्या करेगा?"

"वह तो अधा है, बेटा। वह कुछ भी देख नही सकता।"

बेचारा पठान! वह कुछ देख नही सकता। न तो वह कीडो को निगलने वाली बडी मुर्गी को देख सकता है और न आसमान मे और नारियल के वृक्षो के ऊपर छिडकी पीले रग की धूल के दृश्य को। अम्मालुअम्मा की गोद म बैठने वाले चीतरन को भी वह नही देखा सकता।

"अम्मालुअम्मा, उसकी आँखे कहाँ गयी है?"

"आँखे फूट गयी है, बेटा।"

"वह कैसे?"

"चेचक की बीमारी से फूट गयी होगी।"

"चेचक क्या बला है?"

"वह तो बडी बुरी बीमारी है। शरीर भर मे गलित फोडे हो जाते हैं। आँखो मे फोडा आ जाय तो आँखे फूट जाती है।"

"आँखे फूटने पर क्या कभी दिखायी नही देता?"

कोई जवाब नही मिला।

अम्मालुअम्मा के चेहरे की तरफ ताका। उस की आँखो मे तो आँसू बह रहे है।

अम्मालुअम्मा रोना भी जानती है।

"अम्मालुअम्मा, क्यो रोती हो ?"

मेरा कोवालन—हू ड हू ड ई

कोवालन ती मेरे चीतरन बेटे की ही तरह था।

अम्मालुअम्मा को रोते देखकर चीतरन भी गला फाडकर रोने लगा।

"अम्मालुअम्मा—" श्रीधरन की माँ पुकारती है।

अम्मालुअम्मा ने तुरन्त श्रीधरन को गोद से नीचे उतार दिया और अपने चेहरे पर से आँसू पोछ लिये। श्रीधरन तब भी सिसकियाँ भरकर रो रहा था

"अम्मालुअम्मा, क्यो बेटे को रुलाती है ?" श्रीधरन की माँ ने रसोईघर से जोर से पूछा।

अम्मालुअम्मा का दुख तो दूर हो गया, घबराहट महसूस होने लगी। "मेरे मुन्ने मत रो।" उसने श्रीधरन को तसल्ली देने की भरसक कोशिश की। लेकिन श्रीधरन की रुलाई बन्द नही हुई। वह फफक-फफक कर रोता ही रहा ·

"मत रो बेटा। अरे, देख इधर सिपाही !"

अम्मालुअम्मा ने दरवाजे की तरफ इशारा किया।

श्रीधरन को जन्मे पाँच—छह बरस बीत गये। वह माँ की गोद मे स्तनपान करता हुआ आँख मूद-खोल कर अपना विस्मय जाहिर करते हुए, चटाई पर पड-कर शैशव के अव्यक्त सपनो मे डुबकियाँ लगाते हुए, हाथ-पैर चलाकर खेलते हुए, घुटने टेककर रेंगते हुए, हौले-हौले चलना सीखते हुए तथा प्रकृति की विचित्रताओ को उत्सुकता के साथ निहारकर तोतली बोली मे अपने भावो को अभिव्यक्ति देते हुए बढ रहा था। उसी समय कन्निप्परपु मे, अतिराणिप्पाट मे, प्रान्त मे और भारत मे ही नही, दुनियाँ भर मे अनेक घटनाएँ घटी। कृष्णन मास्टर का बेटा राघवन बीमारी मे गल-गलकर आखिर मिट्टी के गढे मे समा गया। प्रथम विश्व-युद्ध का आरम्भ हुआ। प्रान्तर के प्रमुख घराने के मुखिया केलनचेरि केचु-मेलान की मृत्यु हो गयी। उनके बेटे चन्तुक्कुट्टि मेलान ने घराने के शासन की बागडोर सभाली। भारत के प्रशासन के सुधार के नाम पर मौंटेग-चेसफोर्ड रिपोर्ट प्रकाशित हुई। कृष्णन मास्टर की बूढी माँ चल बसी। एनी बेसेंट ने हर मोहल्ले मे जा-जाकर भाषण दिया। कुजप्पु फौज मे भर्ती हो गया। और लडाई के कई दौर देखने के बाद अन्त मे समुद्र को पार कर अरेबिया के मेसोपो-टामिया देश मे पहुँच गया।

लडाई के खत्म होते ही कुजप्पु फौज से अवकाश ग्रहण कर घर वापस आया। उसी की तरफ अम्मालुअम्मा ने श्रीधरन का ध्यान आकृष्ट किया था।

दरवाजे पर से जूते की आवाज सुनकर श्रीधरन की माँ ने रसोईघर से बरा-मदे मे आकर झाँका। वजनदार फौजी जूतो से पट्-पट् आवाज करते हुए खाकी

वर्दी और पीकदान-जैसी टोपी पहने हुए एक आदमी हाथ मे बेंत की छोटी छडी घुमाता हुआ दरवाजा पार कर रहा था। सिर और कधे पर भारी बोझा लादे दो कुली भी उसके पीछे आ रहे थे।

कुजप्पु बहुत कुछ बदल गया है। पहले से अधिक काला हो गया है। नाक के नीचे बडी मूंछे भी रख ली हैं।

उसकी कमीज पर इन्द्रधनुषी रग के एक रेशमी फीते मे 'ओवरसीस फौजी सर्विस' के सूचक कुछ पदक चमक रहे हैं।

सदूक और ढेर सारे सामानो को बरामदे मे रखकर कुलियो ने लम्बी सांस खीच कर अपनी थकावट जाहिर की। माथे मे पसीना पोछने के बाद बडी उत्सुकता से उन्होने कुजप्पु की तरफ ताका। कुजप्पु ने खाकी पतलून की जेब से मक्का की मसजिद के चित्रवाला एक छोटा-सा बटुआ निकालकर खोला। उसमे से महारानी विक्टोरिया के सिर की तस्वीरवाले चाँदी के दो रुपये लिये और दोनो के हाथ मे एक-एक सिक्का थमा दिया।

सिपाही को देखकर सहमा हुआ श्रीधरन माँ के पीछे छिपकर खडा रहा।

कुजप्पु ने सामानो के ढेर से एक थैली ली और उसमे से एक टीन का डिब्बा बाहर निकाला। उसे हाथ मे उठाते हुए पुकारा, "अरे, श्रीधरन !"

श्रीधरन माँ के पैरो से लिपटता हुआ छिपकर खडा रहा।

"जा बेटा, जा — तेरा बडा भैया है।" माँ ने श्रीधरन को आगे की तरफ धकेल दिया — "मिठाई है, ले ले।"

माँ की बात और मिठाई के लालच ने श्रीधरन को हिलाया। उसने आगे बढ़ कर शरम से सिर नीचा किये ही किये हाथ पसार कर मिठाई का डिब्बा ले लिया।

"अरे तू तो बडा हो गया है।" भैया ने उसके चेहरे को जरा ऊपर उठाकर गालो को लाड से सहलाया।

फौज मे शामिल कुजप्पु के आगमन का समाचार पाकर अतिराणिप्पाट की बुढिया और लडके कन्निप्परपु मे आ पहुँचे। लडकियो ने मेहदी की बाड से झाँककर देखा।

बरामदे मे एकत्रित सामान मे ज्यादा बडे और वजनदार डिब्बे खाद्य वस्तुओ के थे। मिलिटरी कैन्टीन मे उपलब्ध राशन की सभी खाद्य वस्तुओ के डिब्बे कुजप्पु समुद्र पार करके लाया था। छाछ, मक्खन, जैतून तेल मे सुरक्षित मछली आदि सभी खाद्य वस्तुएँ। इन डिब्बो के भीतर की चीजे ज्यादातर बासी थी। इसलिए उनकी बदबू भी असहनीय थी। डिब्बो को खोलते वक्त उन से निकली बदबू के के कारण कन्निप्परपु के आसपास के लोगो को नाक बन्द कर चलना पडा। उन विदेशी डिब्बो मे ऐसी चीजें भरी थी, जिनको कुजप्पु तीन महीने तक खा सके

और जो अतिराणिप्पाट के लोगो को तीन महीने तक नाक बन्द करके चलने को विवश भी करें।

5 वर्षगाँठ की दावत और फौजी अफसाना

मौहल्ले भर मे हलचल मच गयी है। प्रसग है केलचेरि चन्तुक्कुट्टि मेलान की वर्षगाँठ का उत्सव।

गरीबो के लिए अन्न-दान, आम लोगो के लिए दावत, ब्राह्मणो के लिए भोजन और साथ मे दक्षिणा भी।

दावत के लिए तैयार किये गये अन्न के ढेर को सफेद टीले की तरह आँगन के किनारे खडा कर दिया गया है। सब्जी बना कर दो खास बडी नावो मे भरी गयी है। (किले की तरह पत्थर की दीवारो से घिरे हुए केलचेरि मे पश्चिम की दीवार को तोडकर बनाये गये दरवाजे मे होकर ही ये नावे लायी गयी थी।)

भात और सब्जियो के अलावा बडा, पापड, नमकीन, विशिष्ट केले, कई तरह के पकवान दावत के पत्तो मे परोसे जा रहे है। जहाँ औरते और बच्चे बैठते है, वहाँ बडी-भीड है। छोटे लडको के लिए भी अलग-अलग पत्तो का इन्तजाम है। भात, सब्ज़ी और पकवान पत्तो मे परोसे जाने के बाद लोग उसे अगोछे मे लपेट कर अपने घर भी ले जा सकते है।

परोसनेवाले के पीछे एक आदमी एक हाथ मे ताँबे का बर्तन और दूसरे मे एक चम्मच लेकर चल रहा है। सभी भोज्य पदार्थों के परोसे जाने के बाद वह दो चम्मच भर तिल का तेल उन औरतो के सिर पर डाल देता है, जो खाद्य वस्तुएँ घर ले जाने के बाद फिर खाने के लिए आ बैठती थी। यह ऐसी स्त्रियो को पहचानने की एक आसान तरकीब थी।

कुछ ऐसी अकलमन्द बुढियाँ भी थी, जो चालाकी से अपने एक घुटने पर अगोछा डालकर उसे एक नन्ही मुनिया का रूप दे देती और उसके सामने एक अलग पत्ता रखकर भोजन का इन्तजार करती। जल्दबाजी मे सिर और कन्धा हिला-हिलाकर परोसने वालो की दृष्टि अक्सर ऐसी चालाकियो पर नही जाती। उनकी आँखे और हाथ ज्यादातर सामने की पत्तल पर ही रहते हैं।

आज इस इलाके मे अपने घर मे भोजन पकाने वाले लोग अधिक नही होते। सभ्रान्त घरो के आदमी और औरते वर्षगाँठ की दावत खाने नही जाते। दावत की विशिष्ट वस्तुएँ केलचेरि से उनके घरो मे पहुँचा दी जाती हैं।

गरीबो के लिए दो-तीन दिन बडी समृद्धि के है, क्योकि बचे हुए चावल को वे धूप मे सुखाकर खाने के लिए रख लेते है।

वर्षगाँठ के दिन दोपहर के बाद भी कभी-कभार लोगो को केलचेरि मे भात

लेकर जाते हुए देखा जा सकता है। केलचेरि इस इलाके का सबसे पुराना और मशहूर घराना है। पीढियो से सुविख्यात इस घराने का मुखिया एक तरह से यहाँ का बेताज बादशाह ही है।

केलचेरि घराने के पुराने मुखियो ने दक्षिण-पूर्वी देशो और चीन के साथ जहाजो के द्वारा व्यापार किया था। सोने की विदेशी मुद्राएँ और चीन के मर्तबान केलचेरि के तहखानो मे अब भी भरे पडे हैं। समुद्र-तट के अधिकांश स्थान, उस इलाके के और आसपास के ज्यादातर अहाते, दुकानें, गोदाम आदि केलचेरिवालो की निजि सपत्ति मे शामिल हैं। इनके अलावा पूर्व प्रदेशो मे अनेक पहाड और जगल भी हैं।

बारह साल मे एक बार दस्तावेजो का नवीकरण होता है। केलचेरिवालो को प्राय हर रोज इस तरह के दस्तावेजो को पजीकृत करवाना पडता है। वे इतनी बडी विपुल जायदाद के मालिक जो हैं।

पुराने जमाने से ही उस जगह का राज-परिवार केलचेरिवालो से हार्दिक ममता रखता था। शताब्दियो पहले महाराजा ने अपनी खुशी से केलचेरि के मुखिया को 'मेलान' की पद-प्रतिष्ठा दी थी। विरासत मे इस घराने के सभी मुखियो को यह उपाधि मिली है।

केलु मेलान के जमाने मे केलचेरि का ऐश्वर्य चरम कोटि तक पहुँच गया था। पूर्वार्जित अपार सपत्ति के अलावा अनगिनत जमीन-जायदादो से लगान, माल-गुजारी की आय और समुद्री व्यापार से होनेवाले मुनाफे से केलचेरि के मुखिया की दिन-दूनी रात-चौगुनी बढोतरी होती रही। अपने पुरखो की तरह एक जहाज खरीदने की केलु मेलान की बडी ख्वाहिश थी। लेकिन अपनी योजना को कार्यान्वित करने के पहले ही उसका निधन हो गया।

केलु मेलान की मृत्यु के बाद उसका पुत्र चन्तुक्कुट्टि मेलान घराने का मुखिया हुआ।

चन्तुक्कुट्टि मेलान के रामन, कुंजिक्केलु और शकरन तीन बेटे और एक बेटी है माधवी। रामन की उम्र तीस की है तो कुंजिक्केलु चौबीस और शकरन पन्द्रह वर्ष का है। माधवी सत्रह बरस की युवती है।

घराने का मुखिया होने के बाद चन्तुक्कुट्टि मेलान की यह दूसरी वर्षगाँठ है।

केलचेरि मे वर्षगाँठ की दावते धूम-धाम से परोसी जा रही थी तो कन्निप्प-रपु मे घर के बरामदे मे बैठकर कुजप्पु फौजी डिब्बो की मछलियाँ, मक्खन और दूसरी चीजे चटकारा लेकर चाट रहा था। कुजप्पु की हरकतो और चेष्टाओ को ललचाई आँखो से ताकता हुआ पडोस का कुत्ता भी आँगन मे खडा सिर और दुम हिला रहा था।

शाम के बाद कुजप्पु हमेशा पडोस के किसी घर मे दिखायी देता। ज्यादातर

कठफोडवा वेलप्पन के घर मे।

मेज कुर्सी, पलग आदि लकडी का सामान बनवाकर बेचना वेलप्पन का धन्धा है। वात रोग ने बेचारे के दाहिने पैर को जड कर दिया इसलिए वह घर से कही बाहर नही जाता। अनिराणिप्पाट के लोग वेलप्पन को कठफोडवा कहकर बुलाते हैं। वेलप्पन को बातचीत के लिए हमेशा कोई आदमी साथ चाहिए। दिन मे बढई है। रात मे ही तकलीफ होती है। इस मुश्किल से बचाने के लिए माक्लोता, परगोटन, आराकश वेलु और करप्पन आदि दोस्त शाम के बाद कठफोडवा के घर पहुँच जाते है। लेकिन आजकल वहाँ सिर्फ एक आदमी की आवाज ही सुनाई देती है। वह है भूतपूर्व मिलिटरीवाला कुजप्पु। कुजप्पु के पास फौजी अफसानो का पूरा एक दस्ता है। उसके सनसनीखेज किस्से वे सब बडे ताज्जुब से गहरी दिलचस्पी के साथ सुनते है।

बिक्री के लिए तैयार रखी लकडी की नयी कुर्सी पर बैठकर चैन से बीडी पीता हुआ कुजप्पु किस्सा सुना रहा है।

(दृश्य मोसापोटामिया की बस्ती। रसोई मे तपते बर्तन की तरह जलनेवाले रेगिस्तान मे कुजप्पु की पलटन ने अड्डा जमा लिया है।)

"हम ट्रच खोद रहे थे ''

"तिरिच क्या बला है?" परगोटन ने पूछा।

"कुजप्पु बताएगा।" (छोटे बच्चो की तरह कुजप्पु 'मैं' के बदले अपने नाम का ही प्रयोग करता। 'कुजप्पु ने ऐसा किया', 'कुजप्पु ने वैसा किया' इस तरह के शब्द ही उसके मुँह से निकलते।)

"वह गड्ढा होता है, बहुत बडा गड्ढा—आसमान से बम गिरने समय छिपकर बैठने का गड्ढा—समझ गये?"

सब ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया।

कुजप्पु ने किस्सा जारी रखा "तभी आसमान मे एक गुँऽऽ सुनाई पडी।"

कुजप्पु के गले मे भयकर हुँकार की आवाज निकली—ह् र ड् ड्— ह् र ड् ड् आ--हुकार के साथ उसने अपनी दोनो लाल-लाल आँखें इस तरह ऊपर चलायी कि माक्कोता, परगोटन, वेलु, करप्पन और कठफोडवा भी अनजाने ही ऊपर की तरफ देखने लगे।

"शत्रु-विमानो के आगमन की सूचना थी। जर्मन हवाईजहाज। सबको आदेश मिला कि झट ट्रच मे जाकर जान बचाओ।

कुजप्पु एकदम ट्रच मे कूद पडा और औधे मुँह लेट गया।

पठ! विस्फोट की आवाज गूँज उठी। साथ ही पठ् पठ् पठ्' • लगातार विस्फोट लगा कि हजारो आतिशबाजियो को एक साथ किसी ने आग लगायी है जर्मन बमो का विस्फोट •

फिर कुजप्पु को बिल्कुल होश नही रहा। '' 'होश मे आने पर उसने अपने को बुरी हालत मे देखा। कुजप्पु मिट्टी मे दफन हुआ पडा था। एक बम कुजप्पु के सामने गिरा था। गड्ढा पट गया और कुजप्पु मिट्टी मे दफन हो गया। घुसाडे की तरह मिट्टी कुरेद-कुरेदकर हटाते हुए वह बाहर आया। कुजप्पु ने चारो तरफ का मुआइना किया। एक भी प्राणी वहाँ मौजूद नही था। चारो तरफ शमशान-सा सुनसान। आग की तरह जलती हुई धूप।

तभी दूर पर कुछ परछाइयाँ दीख पडी। माथे पर हाथ की ओट कर कुजप्पु ने बडे ध्यान से देखा। समझ गया, कुजप्पु की रेजीमेट के ही सिपाही है। बमबारी मे घायल और मृत सिपाहियो को एक साथ ट्राली मे लिटाकर ले जा रहे है। मिट्टी मे दफनाये जाने के कारण उन्हे कुजप्पु का पता नही लगा था।

कुजप्पु ने आगे बढने की कोशिश की। लेकिन हिल नही सका। शका हुई कि पैर म कही चोट लगी है। लेकिन जाच करने का समय नही था। अगर ये सिपाही आँखो से ओझल हो गये तो कुजप्पु की क्या हालत होगी? चिलचिलाती धूप मे पतगे की तरह रेत मे भुनकर मर जायेगा, बस इतना ही।''

क्या करूँ?

''क्या करूँ?'' कुजप्पु ने वही सवाल फिर दोहराया। सामने बैठनेवालो के चेहरो की तरफ एक-एक कर घूरकर देखा।

क्या किया? कलाल परगोटन ने आराकश करप्पन के चेहरे को देखा। करप्पन ने कठफोडवा के चेहरे का देखा। कठफोडवा ने अपना जानदार बाया पैर हिलाकर दाढी खुजलाते हुए बडी देर तक सोचा। आखिर क्या किया?

वेलु ने नाक मे ऊगली डालकर नीचे की तरफ देखकर सोचा क्या किया?

माक्कोता नाक सिकोडकर रोता है। (उसने शराब पीली थी। पीने पर उसका चेहरा करुण रस की झलक देता।) चिलचिलाती धूप मे रेगिस्तान मे फस गये कुजप्पु की लाचारी को याद कर वह रो पडा।

कुजप्पु जरा मुस्कराया। सबके चेहरो को बारी-बारी से देखा। फिर रसोई के दरवाज़े की तरफ नज़र घुमायी। (कठफोडवा की जवान औरत वल्लिकुट्टि कुजप्पु की रोमाचकारी फौजी कथाएँ दरवाज़े की ओट मे खडी बडी लगन से सुन रही थी।)

कुजप्पु ने झट मुँह मोडकर मुंह मे उँगलियाँ डालकर सीटी बजायी।

पैर हिलानेवाला कठफोडवा, रोनेवाला माक्कोता और नाक मे उँगलियाँ घुमानेवाला वलु सीटी की तेज़ आवाज से होश मे आये। वह सीटी अतिराणिप्पाट मे गूँज उठी। जीभ के नीचे दोनो हाथ की दो-दा उँगलियाँ ठूमकर कुजप्पु ने जो आवाज़ पैदा की, उसकी गूँज से अतिराणिप्पाट के लोगो के रोगटे खडे हो जाने की घटना को दो-तीन साल गुज़र गये थे।

''साथियो!'' कुजप्पु कुर्सी पर बैठ गया। ''तब कुजप्पु ने यही किया था—

सीटी बजायी थी।"

"कुजप्पु की पहली सीटी पर सिपाहियो ने ध्यान नही दिया। कुजप्पु ने फिर एक बार उससे भी ऊँची आवाज़ की लबी सीटी बजायी। उससे कामयाबी हुई। पलटन एकदम रुक गयी। कुजप्पु ने दोनो हाथ हिलाये। फिर तीन-चार दफा हाथ उठाकर उछलते हुए अपनी हालत की सूचना दी।

थोडी देर बाद छह-सात सिपाही एक स्ट्रेचर लेकर कुजप्पु की तरफ बढे।"

'वह क्या बला है?" करप्पन का सवाल था। कुजप्पु ने व्याख्या की "घायल सिपाहियो को लिटाकर ले चलनेवाले कपडे के पलग को स्ट्रेचर कहते है।"

"हा, उस ढग की एक चीज मैंने भी अस्पताल मे देखी थी।" परगोटन ने कहा।

कुजप्पु ने किस्सा जारी रखा "उस पलटन के नजदीक पहुँचने पर कुजप्पु एकदम दग रह गया—यह सिपाहियो के आगेवाला कौन है? "

"कौन? कौन था वह?" वेलु, परगोटन और कठफोडवा की जानने की बडी इच्छा हुई।

कुजप्पु ने कठफोडवा से एक बीडी माँगी। कठफोडवा को अपने पैरो को हौले से खीचकर बीडी देने मे समय लगेगा, यह सोचकर वेलु ने नाक से ऊँगलियाँ खीचकर गोद स एक बीडी निकालकर कुजप्पु की तरफ बढा दी।

बीडी पीकर धुआँ छोडता हुआ कुजप्पु थोडी देर तक अपने साथियो की जिज्ञासा को भडकाता रहा।

"वोलो न, कौन था सामने?" वेलु ने जानी दोस्त की तरह अनुनय के साथ आग्रह किया।

कुजप्पु कुर्सी स आगे बढकर, गरदन फैलाकर बडे गौरवपूर्ण रहस्य को प्रकट करता-सा फुसफुसाया "जानते हो वह कौन था? ओ०सी०—वह ओ०सी० था।"

"अरे यह आदमी होता है या कोई जानवर?" करप्पन का सवाल था।

"ओ० सी० का मतलब है कमाडिंग अफसर। पलटन का मुखिया साहब।"

ओ० सी० का भाष्य हो चुकने के बाद कुजप्पु ने रसोईघर की तरफ ताककर जरा नाक-भौ सिकोडी और पूछा "वहाँ से यह कैसी गध आ रही है?"

तब सब नाक चढाकर उस गन्ध को पकडने की कोशिश करने लगे। ठीक तो है। किसी जली सूखी चीज की गन्ध आ रही है।

कुजप्पु की कहानी सुनने मे तल्लीन वल्लिक्कुट्टि चूल्हे पर पकने के लिए रखी मछली की बात भूल गयी थी। मछली और साथ डाले व्यजन जलकर एकदम ठठरी हो गये थे।

यह जानने पर कठफोडवा आपे से बाहर हो गया—"अरी हरामजादी! मर्दों की बातचीत को उनके मुँह मे घुसकर सुन रही थी न · ?"

कठफोडवा के हाथ मे जो भी आया उसने उठाकर दरवाजे की तरफ दे मारा। उसको इस बात का पता नही था कि वह कीलो का पुलिंदा है।

पुलिंदे के कील बम मे भरे कॉच के टुकडो की तरह बरामदे मे इधर-उधर बिखर गये।

"बम विस्फोट होने पर इस तरह की जले की गन्ध फैलती है।"

कुजप्पु ने कठफोडवा का ध्यान रणभूमि की तरफ खीचा।

"उस आदमी को देखने पर कुजप्पु ने फिर क्या किया ?" परगोटन ने उतावली दिखाते हुए पूछा।

कुजप्पु ने कुर्सी से फौरन नीचे कूदकर 'अटेन्शन' मे सीधा खडा होकर एक सेल्यूट मारा। ओ० सी० सामने ही हो, ऐसी मुद्रा दिखाई।

"तब ओ० सी० ने कुजप्पु को एडी से चोटी तक देखा, फिर दो कदम आगे बढकर कुजप्पु को हाथ दिया। सिर हिलाकर हिन्दुस्तानी मे उन्होने घोषणा की तुम को वी० सी० मिलने मे हम रेकमेड करेंगे।"

"इसका क्या मतलब है ?" कठफोडवा ने पूछा।

"कुजप्पु को वी० सी० मिलने के लिए अधिकारियो से सिफारिश करेगे।"

"यह बीशी क्या बला है ?" वेलु ने सवाल किया। कुजप्पु ने स्पष्टीकरण दिया 'वी० सी० का मतलब है 'विक्टोरिया क्रॉस'। एक सैनिक को उपलब्ध होनेवाली सबसे बडी वीर-मुद्रा। लडाई मे शत्रु-सेना की छीनी हुई तोपो से ही इसका निर्माण किया जाता है।" कुजप्पु ने नीचे से दो कीलो को उठाकर एक चित्र-सा बनाकर वी० सी० मुद्रा की आकृति दिखाई।

"इस वी० सी० के लिए सिफारिश करने की बात किसने कही थी ?" कुजप्पु ने अपने साथियो की परीक्षा करने के लिए झट से पूछ लिया।

"ओ० सी० ने" कठफोडवा ने जवाब दिया।

"ठीक है। किससे ओ० सी० ने यह बात कही थी ?" परगोटन की ओर इशारा करके उसने पूछा।

"कुजप्पु से।" परगोटन का जवाब भी फौरन मिल गया।

"लान्स नायक कुजप्पु से।" कुजप्पु ने परगोटन की गलती को सुधारते हुए फरमाया।

थोडी देर तक खामोशी—

"ओ० सी० की वी० सी० हेतु घोषणा सुनते ही कुजप्पु बेहोश होकर जमीन पर गिर पडा था।"

"अरे तू बेहोश होकर क्यो गिर पडा था ?" करप्पन ने पूछा

कुजप्पु जोर से ठहाका मारकर हँस पडा।

"साथियो, वह तो कुजप्पु की एक चाल थी—बेहोशी नही थी। कुजप्पु को

स्ट्रैचर पर सवारी मिलती। बमबारी मे 'शाक' लगने के नाम पर कई कई दिनो तक मिलिटरी डाक्टर के इलाज मे सुख से रहने को मिलता—बढिया खाना—पीने के लिए ब्राडी भी मिलती "

"कमाल है ! कमाल है !" वेलु ने अपनी गाद से फिर एक बीडी कुजप्पु को भेट की।

6 इलजिपोयिल मे

इलजिपोयिल एक छोटा-सा खेती-प्रधान इलाका है जो दो समातर रेखाओ । तरह पूरब से पश्चिम तक फैली हुई पहाडियो के बीच एक फलाँग की दूरी पर बसा हुआ है।

अहाते के सामन की पहाडी के किनारो को काटकर उन्हे अच्छे खेतो मे बदल दिया गया है। 'पहला खेत', 'दूसरा खेत' इन नामो से खेतो को पहचाना जाता है। छठे नबर के खेत के ऊपर पहाडी की चोटी तक घना जगल है।

बीच मे, 'चट्टानी खेत' नाम का एक खण्ड है, जिसे नबर नही दिया गया है।

इन खेतो के अनेक उपखण्ड भी है। मध्य भाग के निचले खेत मे इलजिपोयिल घराना रहता है। छोटा-सा एक घर। उत्तरी भाग मे नारियल रखने का एक बडा कमरा है, जिसने घर के आधे से ज्यादा भाग पर कब्जा कर रखा है। गोबर से लिपे हुए विशाल आँगन को पार करने के बाद एक बडी गोशाला है। उसमे गाय और बैल पागुर करते है। आँगन के कोने मे सूखी घास के दो तीन गट्ठर भी रखे हुए है।

घर के आस-पास तथा उस पूरे अहाते मे नारियल, आम और कटहल के पेडो के अलावा चार-पाँच बडे पेड भी है। आँगन के सामने सेमल का एक बडा वृक्ष है, जिसकी डाले आसमान से बाते करती है और अहाते मे हमेशा फूलो की वर्षा होती रहती है।

खेत भर म सब्जियो की खेती है। मूली, भिडी, बेगन, अरबी आदि कई तरह की सब्जियाँ। जिन खेतो मे आधी खुली हरी छतरियो की तरह की कतारे चली गयी है, वहाँ सूरज की खेती है। कुछ खेतो मे करेले का ओसारा नजर आता है। एक दूसरे अहाते म पान की झालरे लहलहाती हैं। पाय सभी पेडो के साथ काली मिर्च की लताएँ है। एक-दो बडे खेतो म धान की खेती भी है।

'चट्टानी खेत' मे एक बडा शामियाना है। सूत के जाल से बने इस तबू के अन्दर ही सूखी गरी का खलिहान है। नारियल को सुखाने के लिए फैलाते समय कौओ और अन्य प्राणियो के हस्तक्षेप को रोकने मे जाल का यह शामियाना काम आता है।

इलजिपोयिल के पूरब मे विशाल लहलहाते खेत हैं। धान के खेत के एक तरफ पानी से भरा हुआ एक छोटा-सा सरोवर है। वहाँ बगुलो को और कभी विश्वभ्रमण करनेवाली कुछ विदेशी चिडियो को भी देखा जा सकता है। ये जगहे इलजिपोयिल के प्रान्तर मे ही आती है।

श्रीधरन को उसके नाना कभी कभार इलजिपोयिल मे रहने के लिए ले जाते है। इलजिपोयिल जाकर रहने मे श्रीधरन को बडा मजा आता। अपने बेटे के उत्साह को देखकर श्रीधरन की माँ कहा करती, "उधर जाने की बात उठने पर तो मुन्ने को न भूख लगती है, न प्यास, न नीद ही आती है।" बात तो सच्ची है। श्रीधरन के लिए इलजिपोयिल विमोहनकारी एक माया नगरी है। अतिराणिप्पाट के गदे नालो और तग अहातो को छोडकर विशाल खूबसूरत इलाके मे वह स्वच्छन्द विहार कर सकता है। हरे-भरे लहलहाते वनस्पति-जगत मे चारो तरफ चक्कर लगा सकता है। तितलियो और पतगो के पीछे नाचता हुआ भाग सकता है। गरी के खलिहान मे जाने पर पहरेदार केवल श्रीधरन को गरी का एक टुकडा देता। धूप से अधसूखे गरी के टुकडे की कैसी ललचानेवाली गन्ध है। मुँह मे डाल कर चबाने मे क्या रस आता है! नाना जब बैलो को सूखी घास का पुलिदा खाने को देते तब वह उनके नज़दीक जाकर बैठता। उबाले गये कुलथ और दूसरे पशु-खाद्यो को सूखी घास के पुलिदे मे लपेटकर जब नाना बैल का मुह पकड कर ठूंसने तो उसे चबाते हुए बैल को श्रीधरन ताज्जुब से देखता रहता। बैलो के नाम मैनान, चोप्पन, पुल्लि, कण्णप्पन आदि है। बैलो को खिलाते समय नाना श्रीधरन मे ठिठोली भी करते। कभी-कभी श्रीधरन पूछता, "नानाजी, जरा मै भी एक पुलिदा खिला दूँ?" "नही बेटा, नही" नानाजी सिर हिलाकर मना करते। "तेरी पाँचो उँगलियो का कण्णप्पन भिडी की तरह चबाकर खा जायेगा।" "नही नाना, जैसे आप देते है, वैसे ही मै भी दे सकता हूँ।"

श्रीधरन यो हठ करता तो नानाजी जरासी कुलथी और कुछ घास लेकर एक छोटा-सा पुलिदा बनाते और श्रीधरन के हाथ मे रख देते। फिर बैल का मुँह खोलकर वे उसे पकड लेते। कुलथी पीसनेवाले सिलबट्टे-जैसी उसकी जीभ और चक्की की तरह का उसका मुँह अच्छी तरह देखने के बाद श्रीधरन वह छोटा-सा पुलिदा उसके मुँह मे रख देता। यह सोचकर कि कण्णप्पन अब श्रीधरन के दिये पुलिदे को ही खा रहा है, श्रीधरन के पाँव जमीन पर न पडते।

बैलगाडीवान तैयन के लडके अप्पु के साथ श्रीधरन कभी-कभी जगल की तरफ चला जाता। वहाँ जामुन और दूसरे ढेरो तरह के फल मिलते। जीभर तोडकर खा सकता है। फल तोडकर खाने से पहले अप्पु जरा उसकी जाच करता। "यह मत खा" अप्पु कहता, "इसे साँप ने काट लिया है, जहर है।" जगलो मे असख्य साँप होते है। इसी का तो डर है। बाड के नजदीक के झुरमुट से एक साँप को रेगते

हुए एक बार देखा था। अप्पु ने बताया कि वह जहरीला नाग है।

अप्पु पेड के ऊपर चढकर चारो तरफ के दृश्यो का आनन्द लेता। कुछ का वर्णन श्रीधरन से भी करता, 'देख वह हरिजनो का कब्रिस्तान है।' अप्पु दूर दिशा मे इशारा करता। श्रीधरन को भी उसे देखने की इच्छा होती। लेकिन उसे पेड पर चढ़ना नही आता। अप्पु नीचे उतरकर अपना कधा झुकाकर खडा होता—'मेरे कधे पर खडे होकर देख लो।' श्रीधरन अप्पु के कधे पर खडा होता और पेड से चिपकते हुए ऊपर चढ़ कर देखता। पहाडी के ऊपर उस पार जगली चपा के पेडो से भरा एक खुला मैदान है—वही हरिजनो का कब्रिस्तान है। अप्पु ने श्रीधरन को बताया कि एक बार वह वहाँ गया था। वहाँ पत्थर की मालाएँ और काँसे की चूडियाँ फिकी हुई पडी थी।

ओठो पर सफेद कोढवाला चेक्कु और अप्पु बैलो को नहलाने के लिए जब नदी के किनारे ले जाते तब कभी-कभी श्रीधरन भी उनके साथ जाता। उत्तरी पहाडी के उस पार नदी बहती है। उधर पहुँचने के लिए खेतो से होकर, नाला पार करके चक्कर काटकर जाना पडता है। पहाडी की परिक्रमा करके बहने वाली नदी के घुमाव पर एक बडा गड्ढा है जो 'शैतान गड्ढा' कहलाता है। गड्ढे के पास एक बडी चट्टान है। असमय मे कोई उस गड्ढे के पास नही जाता। वहाँ दिन मे भी प्रेत होते है। पुराने जमाने मे राजाओ द्वारा दण्डित अपराधियो को उसी चट्टान पर गला काट कर मारा जाता था। अप्पु बताता, "अपराधी को चट्टान पर खडा किया जाता। फिर जल्लाद तलवार घुमाकर एकदम सिर काट देता, और सिर 'शैतान गड्ढे' मे। गड्ढे के पानी का रग हर बार बदलता रहता। कभी-कभी गहरा लाल रग हो जाता तो कभी नीला और कभी हल्दी के घोल जैसा। अप्पु कहता कि यह सब शैतानो का इन्द्रजाल है।

नहला चुकने के बाद अप्पु बैलो को नदी के उस पार तक तैराता, और फिर उधर से इस पार भी। उसके बाद अप्पु भी नहाता। पानी मे एकदम कूद पडता - फिर अप्पु दिखाई नही देता। श्रीधरन उत्कण्ठा से दम साधे नदी की तरफ ताकता रहता। अप्पु को क्या हुआ? अचानक वह उस पार की चट्टान के पास दिखाई देता। तब वह चट्टान पर खडा होकर ऊँची आवाज मे चिल्लाता। उँगलियो से नाक बन्द करते हुए वह फिर चट्टान पर से पानी मे कूद पडता। गोता लगाते हुए इस पार पहुँच जाता। अप्पु चित्त लेटकर भी तैरता। तैरते-तैरते ही मुँह मे उँगली डालकर दाँत साफ करता—पानी मुँह मे भरकर कुल्ला करता। अप्पु के अभ्यासो को देखकर श्रीधरन ताज्जुब के साथ तालियाँ बजा-बजाकर वाह-वाही करते हुए उसका अभिनन्दन करता।

उस समय चेक्कु वहाँ कही दिखायी नही देता। चेक्कु कहाँ गया? श्रीधरन अप्पु से पूछता। 'नही मालूम' अप्पु आँख बन्द कर इशारा करता।

एक दिन चेक्कु के बिना ही अप्पु और श्रीधरन बैलो को लेकर नदी पर गये। उस दिन अप्पु ने श्रीधरन से रहस्य खोला "अगर तू भगवान के नाम पर शपथ ले कि तू किसी से न कहेगा, तो मैं तुझे एक चीज दिखाऊँगा।"

"मैं कसम खाता हूँ कि मै किसी से न कहूँगा।" श्रीधरन ने सौगन्ध खायी। अप्पु नदी के किनारे की एक चट्टान के पास गया। श्रीधरन ने भी अप्पु का पीछा किया। चट्टान के पीछे एक जगह की मिट्टी हाथो से हटाकर अप्पु ने एक चीज बाहर निकाली। एक बडी बोतल का डाट दाँत से खीच कर हटा दिया। बोतल मुँह मे रखकर उसमे से तीन-चार घूंट पिये, फिर चुल्लू-भर नदी का पानी उसमे भर दिया और डाट लगाकर बोतल वही दफना दी।

"चेक्कु मामा की शराब है।" अप्पु न ओठ पोछते हुए कहा। (चेक्कु अप्पु का दूर का एक रिश्तेदार हे।) श्रीधरन की समझ म कुछ न आया। अप्पु ने विस्तार से सब बता दिया पहाडी के ढलान के एक बडे गड्ढे मे चेक्कु नारियल की ताडी से शराब चुआता है और इस तरह बनायी गयी वर्जित शराब को बोतलो मे भर-कर नदी के किनारे की चट्टान के पीछे बालू मे छिपा देता है। शाम के बाद वहाँ से बाहर निकल कर वही शराब ग्राहको को बेचता है।

उस दिन बैलो को नहला कर लौटते वक्त अप्पु पूरे नशे मे था। उसने मौज मे कुछ मनमाने गीत गाये

"सूरन अहात की उण्णुलि अम्मा की
पाणन कणारन से प्रीत लगी।
मॉड की हाँडी पर दाढी और
देखो आगन के पेड पर मूँछ उगी।"

अप्पु रास्ते मे मिले कच्चे तिनके और हलकुशा तोडकर चबाता रहा ताकि शराब की गन्ध मिट जाये।

पूरब तरफ की नहर मे जगली वत्तखे झुण्डो मे आ जाती है। उनका केकडो और मछलियो की तलाश मे पानी मे तैरने का दृश्य बडा ही दिलचस्प है। आस-पास कही कोई मनुष्य दिख जाये तो वे झुण्ड की झुण्ड उड जाती है। जगली बतखो को पकडने की विद्या भी अप्पु को मालूम है। वह एक पुराना मिट्टी का घडा लेकर उसमे दो छेद करता। फिर घडे को सिर पर औधा रखकर सिर को ढक लेता और पानी मे उतर कर गले तक डूब जाता। पानी के ऊपर केवल औधा घडा ही दिखायी देता। जगली बत्तखो को यह पता नही चलता कि पास बह आनेवाले घडे के नीचे अप्पु नाम का एक चालाक छोकरा है। बत्तखो के निकट पहुँचने पर अप्पु मौका देखता और पानी से हाथ निकालकर बत्तख को एकमद पकड लेता। यह काम अप्पु इतनी निपुणता से करता कि आस-पास की बत्तखो को भी मालूम नही होता कि क्या हुआ है। कभी-कभी एक ही दिन मे अप्पु दस पन्द्रह बत्तखे तक पकड लेता।

कठफोडवा एक ऐसी चिडिया है जो जमीन के कीडो को चुग खाने के लिए अहाते मे आती है। एक बार अप्पु ने नारियल के पत्तो की तीलियो से एक शिकार पिंजरा बनाकर उसके अन्दर एक बडे कीडे को टाँगकर कठफोडवे को आकर्षित किया और उसे पकड कर श्रीधरन को भेट किया। सिर, चोच, पैर, पख आदि विभिन्न अगो मे कुल नौ रगो वाली उस विचित्र चिडिया का श्रीधरन बडे प्यार से निरीक्षण कर रहा था कि अप्पु दौडता हुआ आया और बोला "श्रीधरन के पिताजी आये है।"

पिताजी का दर्शन श्रीधरन को प्रीतिकर है। द्वीप से आनेवाले खास ढग के हलवे और अरबो द्वारा जहाजो से लायी जानेवाली खजूरो के अलावा वे लड्डू जलेबी आदि शहरी मिठाइयाँ भी लाते। लेकिन इस बात का ख्याल आते ही कि पिताजी उसे पश्चिम की तरफ (शहर मे) ले जाने के लिए आये हैं, श्रीधरन को रुलाई आ जाती। अप्पु भी श्रीधरन को अकेले म यह उपदेश देता कि मत जाओ। तोते पकड दूँगा—जगल मे जाकर चकोर का घोसला दिखा दूँगा। ऐसी कई बातो से अप्पु उसे प्रलोभन मे डालता। जिसमे लोहे को पानी बनाने की शक्ति है, उस चित्रक नाम की विचित्र जडी के बारे म अप्पु बताता जगल के पेडो पर चकोर का घोसला ढूँढकर चकोर के बच्चे के पैर मे लोहे की एक जजीर बाँध देते है। माता चिडिया जब आती और बच्चे के पैर मे लोहे की जजीर देखती तो तुरन्त उडकर जगल स चित्रक की जड चुग लाती। उस जडी बूटी के स्पश से लोहे की जजीर पानी बन जाती। अगल दिन उस घोसले म चित्रक की जडी पडी मिलती। उसे हथिया लेने पर फिर सारी साधे पूरी हो जाती है। जगल मे पहुचने पर अप्पु सभी पेडो पर चढकर चकोर का घोसला खोजता।

श्रीधरन के इलजिपोयिल मे रहने से अप्पु को भी फायदा था। श्रीधरन की मिठाइयाँ उसे भी मिलती।

पिताजी के वापस आन का समय पास आते ही श्रीधरन कही जाकर छिप जाता। कृष्णन मास्टर गुस्से मे आकर उसे पुकारता। तब नानाजी समझा देते— "मुन्ने को चार-पाच दिन और यही रहने दो। उसे चेक्कु के साथ उधर भेज दूगा।"

श्रीधरन का पिता मान जाता। जाते वक्त वह उसे पास बुलाकर उसका सिर चूम लेता।

इस तरह आनन्द, आश्चर्य और मनोरजन से भरपूर इलजिपोयिल के कुछ दिन और श्रीधरन को मिल जाते।

अप्पु ने दो सूखे नारियलो का पिरोकर बाँध लिया और उनके सहारे इलजि-पोयिल के तालाब म श्रीधरन को तैरना सिखाया।

चार-पाँच दिनो के बीतने का पता ही नही चलता कि श्रीधरन को पश्चिम की तरफ ले जाने के लिए एक दिन शाम को चेक्कु आ जाता।

"चेक्कु मामा ने सीने के नीचे शराब की दो बोतलें बाँध रखी है।" अप्पु एकान्त मे श्रीधरन को रहस्य बताता।

चेक्कु के साथ पश्चिम की तरफ जाना श्रीधरन के लिए बडे आनन्द की बात है। पैदल चलने पर श्रीधरन के पैर थक जाते तो चेक्कु उसे अपने कन्धे पर उठा लेता और कई कहानियाँ सुनाता। इट्टिच्चिरक्कुट्टि की कहानी सुनकर श्रीधरन रो पडता।

"इट्टिच्चिरक्कुट्टि, क्या कच्ची मूँग की माप ठीक हुई ? क्या ठीक हुई ?" का गीत गानेवाली एक चिडिया की दर्दभरी कहानी है।

मातृविहीन एक बदनसीब लडकी थी कुजिमालु। पिता की दूसरी पत्नी इट्टिच्चिरक्कुट्टि बडी बदमिजाज औरत थी। वह घर का सारा काम कुजिमालु से करवाती। दूर की नदी से पानी लाना है। जगल मे जाकर लकडी बटोरनी है। आँगन मे झाडू लगानी है। रसोईघर के सारे काम करने हैं। कही कोई जरा-सी गलती हुई तो विमाता उसे बुरी तरह दण्ड देती। झाडू लगाने पर यदि आँगन मे कोई तीली या सूखा पत्ता दिखता तो इट्टिच्चिरक्कुट्टि झाडू मे कुजिमालु के मुँह पर मारती। सब्जी मे जरा नमक ज्यादा हो जाये तो सब्जी भरा बर्तन उसके सिर पर पटक देती। घर का सारा काम कुजिमालु को सौंपकर इट्टिच्चिरक्कुट्टि पडोस के घरो मे जा गप्पे मारती रहती।

एक दिन दोपहर को कुजिमालु को भूनने लिए आध पाव कच्ची मूग देने के बाद इट्टिच्चिरक्कुट्टि पडोस के घर मे बात करने बैठ गयी। उसके लौट आने तक शाम हो चुकी थी। आते ही कुजिमालु से पूछा—"मूँग भून ली है ?" कुजिमालु ने छाज मे रखी भुनी मूँग दिखा दी। इट्टिच्चिरक्कुट्टि ने मूँग मापी। बस, चौथाई पाव।

"अरी, यह तो केवल चौथाई पाव है ? अरी, धोखेबाज, मैने आध पाव मूँग मापकर तुझे भूनने के लिए दी थी न ? उसमे से आधी तू ने खाली, है न ?" कहते हुए इट्टिच्चिरक्कुट्टि ने कुजिमालु के सिर पर चक्की का पाट उठाकर पटक दिया। कुजिमालु की खोपडी टुकडो मे बिखर गयी और वह वही मर गयी।

मृत कुजिमालु का पुनर्जन्म एक तोते के रूप मे हुआ। एक दिन इट्टिच्चिरक्कुट्टि ने आध पाव मूँग भूनी। भून कर रखने पर वह कम लगी। मापकर देखा। केवल चौथाई पाव।

तोता बनी हुई कुजिमालु ने उस समय आँगन के पेड पर बैठक यो गाया—"इट्टिच्चिरक्कुट्टि ! क्या कच्ची मूग की माप ठीक हुई ?—क्या ठीक हुई ?"

7. तुर्की फौज

समय—रात के नौ बजे। कोरन बटलर के बरामदे की एक पुरानी लकडी की

पेटी पर बैठकर कुजप्पु अपना अफसाना सुना रहा है।

घर का मालिक कोरन बटलर जी भर ताडी पीकर बरामदे के कोने मे पडे एक पलग पर ताडी भरी हाँडी जैसी तोद का प्रदर्शन करता हुआ बेहोश होकर चित्त पडा है। कलाल गपिया परगोटन, हाथीपाँववाला अय्यप्पन और अर्जीनवीस आण्डि भी नीचे बरामदे के किनारे पैर लटका कर बैठे हुए हैं और कुजप्पु का फौजी अफसाना सुन रहे है। रसोईघर के दरवाज़े के नज़दीक तीन-चार औरते भी बडे अदब से इस फौजी दास्तान को सुन रही है। उनमे बटलर की बीबी कुजप्पु और बेटी तिरुमाला के अलावा जानु और कल्याणी ये दो भतीजियाँ भी शामिल हैं।

अर्जीनवीस आण्डि की उपस्थिति पर कुजप्पु प्रसन्न नही है। और लोग तो कुजप्पु की सारी बाते बगैर बहस के निगल जाते है, लेकिन आण्डि वैसा आदमी नही है। वह अचानक कुछ ऐसे 'लाजवाब' सवाल पूछता, जिनसे कुजप्पु की नाको दम हो जाता। इसलिए आज कुजप्पु अपनी बडी मूछो को मकोडता हुआ बडी सतर्कता से किस्सा सुना रहा है।

अरेबिया की बस्रा ही कथा की पृष्ठभूमि है। रेगिस्तान के एक कोने मे तुर्कियो के साथ घमासान लडाई के बाद कुजप्पु के स्क्वाड्रन को मुँह मोडना पडा। क्योकि बारूद बिल्कुल खत्म हो चुकी थी। तुर्की सेना ने एक तरकीब से ब्रिटिश भारतीय सिपाहियो की आँखो मे धूल झोक दी थी।

कुजप्पु के कप्तान ने खुर्दबीन से देख लिया कि तुर्की फौज ने अपने पडाव के सामने कुछ बन्दूधारियो को खडा कर दिया है। अचानक धावा बोलना है। कप्तान ने गोली मारने का आदेश दिया। भारतीय सेना ने लगातार गोलियो की बौछार की। दस 'रौण्ड' गोली मारने पर भी तुर्की पलटन की सख्या मे कोई कमी न हुई। फिर दस 'रौण्ड' मारने का हुक्म दिया गया। तुर्की सैनिक गोली खाकर हिलते-डुलते जरूर, लेकिन वहाँ से पीछे न हटते। कप्तान ने उन्हे लगातार निशाना बनाने का हुक्म दिया। कप्तान ने समझा था कि मरहूम तुर्की सैनिको की जगह नये सैनिक आकर खडे हो रहे है। उन सब को गोली का शिकार बनाकर पडाव पर कब्ज़ा करने की कप्तान की योजना थी। लेकिन भारतीय सेना की सभी गोली-बारूदे खाली हो गयी।

तुर्की पलटन के बारह सैनिक उसी तरह खडे रहे। क्या थी उनकी तरकीब ?

"क्या थी उनकी तरकीब ?" आण्डि ने सवाल किया।

कुजप्पु ने आण्डि से एक बीडी माँगी। आण्डि ने गपिया परगोटन से एक बीडी माँगकर कुजप्पु के हाथ मे थमा दी। किसी के पास माचिस नही।

"थोडी-सी आग" रसोईघर की तरफ देखकर कुजप्पु ने चिल्लाकर कहा।

"ये अरबी तो बडे मान्त्रिक होते है। उन्होने हाथ मे तावीज बाँध रखा होगा

कि गोली लगने पर भी मरें नहीं।" अरबियो के बारे मे बडे जानकार की तरह हाथीपाववाले अय्यप्पन ने राय ज़ाहिर की।

हाथ मे जली हुई एक लकडी लेकर एक मोटी काली-कलूटी औरत कल्याणी बरामदे मे आ गयी। उसने सब लोगो के चेहरे की तरफ नज़रे घुमायी। अपने सभी मोटे दाँतो को निपोरते हुए हँस पडी और जलती हुई लकडी कुजप्पु की तरफ बढा दी। कुजप्पु ने लकडी लेकर बीडी सुलगायी। कल्याणी के हाथ मे लकडी वापस देते समय कुजप्पु न उसे उगली से ज़रा छू लिया।

आण्डि ने सब की आँखे बचाकर अपने कमरबन्द से एक बीडी खीच कर कल्याणी की लकडी से बीडी सुलगाली और कश खीचते हुए सोचने लगा "वह तरकीब क्या होगी?"

गपिया परगोटन ने हाथ से घडी उतार कर चाबी दी। (रोज़ कई दफा वह अपनी घडी को चाबी देता है।)

तुर्कियो के मृतसजीवनी सूत्र पर माथा-पच्ची करने के बाद भी किसी को उसका रहस्य मालूम नही हुआ। रसोई-घर की औरते भी आपस मे फुसफुस करने लगी।

कुजप्पु ने बीडी पीकर ज़रा सिर नीचा करके नाक से धुआँ निकालते हुए (उस समय कुजप्पु का चेहरा आग लगे युद्ध-विमान के औंधे मुँह गिर पडने-जैसा लग रहा था।) उस तरकीब का बखान किया "तुर्कियो की सेना के ये बारह सिपाही दरअसल सिपाही नही थे, फौजी वर्दी पहने हुए रबड के पुतले थे। गोली लगने पर बस ज़रा हिलते-डुलते, इतना ही। कप्तान को यह तरकीब बडी देर के बाद मालूम हुई। इतने मे सभी गोली-बारूद खतम हो चुके थे। फिर दुम दबाकर भागने के सिवा और कोई चारा नही था।"

यह सुनते ही हाथीपाँववाला अय्यप्पन ठठाकर हँस पडा। लगा कि कोरन बटलर के घर की छत तक हिल उठी है।

इस कुजप्पु की पलटन रेगिस्तान से प्राण लेकर भाग गयी। रात को वे रेगिस्तान के एक और कोने मे डेरा डालकर ठहरे।

तभी आण्डि का एक नुकीला सवाल आया—"रात को क्या वे तबू मे ठहरे थे? दुश्मनो की आँखें बचाकर आसानी से लुक-छिपकर भाग जाने का मौका तो रात को ही था?"

कुजप्पु ने आण्डि की तरफ आँखें तरेरकर देखा "रात को वहाँ सोने के लिए नही था तबू। पूरी बात सुनने के बाद शका का स्पष्टीकरण माँगो। अरे, यह कोई झूठा दस्तावेज़ लिखना नही है, समझे। यह तो लडाई है, लडाई। 'जर्मन-वार' कई तरह का दाँव-पेंच करना पडता था।"

आण्डि चुप हुआ।

कुजप्पु ने अपनी दास्तान जारी रखी "कप्तान ने सभी सिपाहियो को बुला कर सामने कतार मे खडाकर दिया। फिर उन्होने हाथ मे एक बडा मानचित्र लेकर उस पर सरसरी निगाह डालने के बाद एक लेक्चर दिया—"हम सब दुश्मनो के किसी पडाव के नजदीक आ पहुँचे हैं। तुर्कियो के पडाव इस प्रदेश मे जरूर होगे। अगर हम उनमे फस गये तो गला छूटना मुमकिन नही है। हमारे पास माचिस की एक तीली भी नही है। इसलिए आगे बढने के पहले हमे इस बात का पता लगाना चाहिए कि दुश्मन ने कहाँ डेरा डाल रखा है। इसके लिए एक गुप्तचर की जरूरत है। कौन जाएगा ?"

कोई न हिला न डुला।

तभी कुजप्पु ने चार-पाँच कदम आगे बढकर कप्तान को सलामी दी "मैं तैयार हूँ साहब।'

"ठीक है।" कप्तान ने बधाई देते हुए सिर हिलाया "तो तुम जाओगे ?"

"जी साऽब" कुजप्पु ने सिर झुकाया।

"अभी जाओ।"

कुजप्पु एक पल भी वहाँ नही रुका। हाथ हिलाते हुए सीधे रेगिस्तान का रास्ता लिया।

"ठहरो !" कप्तान ने पुकारा।

कुजप्पु ने मुडकर देखा।

"अरे बेवकूफ ! बन्दूक लिये बिना ही जा रहे हो ?"

"बन्दूक मे गोलिया तो है नही। फिर क्यो बोझा ढोऊँ ?"

अब बेवकूफ गोरा साहब हो गया।

"वेरी गुड ! यू आर ए क्लेवर मैन !"

यह सुनते ही कुजप्पु ने सावधान मुद्रा मे कप्तान को एक और सलामी दी।

"अच्छा, जाओ। तुम्हारा अभियान सफल हो !" साहब ने शुभ कामनाएँ दी।

श्मशान की तरह सुनसान रेगिस्तान मे अकेला निहत्था कुजप्पु आगे बढ रहा है। कही भी शोर-शराबा नही है। आसमान मे टिमटिमाने वाले तारो की हल्की-सी रोशनी रेगिस्तान मे फैली हुई है। कुजप्पु एक नगमा गुनगुनाते हुए आगे बढा।

"क्या मरुभूमि मे उत्तर-दक्षिण की पहचान सभव है ? तू किधर चला था ?" आण्डि ने बात काटकर पूछा।

यह सुनकर कुजप्पु मुस्कराया। उसने इस तरह सिर हिलाया कि आण्डि ने जो कहा वह सोलहो आने सच है। फिर बडे गर्व के साथ उसने फरमाया "रेगिस्तान मे चलनेवाले सिपाही को अपनी जान के अलावा तीन चीजो को और साथ लेकर चलना पडता है। बदूक, पानी की बोतल और कुतुबनुमा। इनमे बदूक और पानी की बोतल कुजप्पु के हाथ मे नही थी। लेकिन कुतुबनुमा उसकी जेब म

मौजूद था। वह तो अब भी उसकी जेब मे है।"

कुजप्पु ने जेब से एक चीज़ बाहर निकालकर सबको दिखायी कुतुबनुमा !

आण्डि ने वह चीज़ पहले भी देखी थी। गपिया परगोटन और हाथीपाँव वाले अय्यप्पन ने हाथ मे लेकर उत्सुकतावश उसकी जाँच की। क्या ही अजीब चीज़ ! किसी भी दिशा मे मुडने पर कुतुबनुमा की सुई उत्तर की ही दिशा मे !

कुतुबनुमा मर्दों के हाथ से आखिर रसोई घर की औरतो के पास पहुँचा। (कुजप्पु को कुतुबनुमा के प्रति इतनी ममता थी कि वह जब चुपचाप बैठता तो उसे जेब से निकाल कर हाथ मे रख लेता और कई दिशाओ मे उसकी सुई को चलते देखकर मज़ा लेता।)

कुजप्पु ने दास्तान जारी रखी

कुजप्पु रेगिस्तान से सीधे उत्तर दिशा मे दो-तीन मील चला होगा, कि दूर पर एक काला घेरा नज़र आया। ध्यान से देखा काली चट्टान तो नही है, दुश्मनो का डेरा होगा। कुजप्पु ज़रा और आगे बढा। सौ गज़ नज़दीक पहुँचा। हाँ, शत्रुओं का डेरा ही है।

कुजप्पु रेत मे औंधे लेटकर केंचुए की तरह रेगता हुआ पडाव से पचास गज़ की दूरी पर पहुँच गया। वहाँ एक बडी चट्टान थी। उस चट्टान के पीछे छिपकर कुजप्पु ने सामने के दृश्य का अच्छी तरह मुआइना किया।

पडाव मे खामोशी थी। सिपाही अन्दर सो गये होगे। पडाव के दरवाज़े पर एक आदमी कधे पर बदूक रखे पहरा दे रहा था। उसके सिर पर एक तुर्की टोपी भी थी। तुर्की फौज का डेरा ! अभियान सफल हुआ।

लेकिन कुजप्पु को लगा कि तुर्कियो को यो छोडकर चले जाना उचित नही है। कुजप्पु ने मन ही मन अपनी योजना बनायी पहले इस सुअर पहरेदार को खत्म करना होगा। फिर

कुजप्पु ने झुककर मिट्टी मे कुछ ढूँढा। थोडी देर मे आवश्यक चीज़ मिल गई। एक छोटा-सा शिलाखण्ड !

उस पत्थर का एक हिस्सा चाकू की धार की तरह नुकीला और तेज़ था।

कुजप्पु ने चट्टान की ओट से छिपकर निशाना साधा ! उस तुर्की सुअर की टोपी के नीचे कान और कधे के बीच, गर्दन के मर्मस्थान कर्णनाडी पर ही निशाना था।

"अरे, सुअर की औलाद, ले तेरे लिए एक इनाम है।" दाँत पीसकर बडबडाते कुजप्पु ने "भु " की आवाज मे वह पत्थर खीचकर मार दिया।

मार तो मर्म पर ही लगी। हल्का-सा चीत्कार भी नही निकला। तुर्की सुअर, उसकी बदूक, भाला और टोपी सब नीचे गिर पडे। कुजप्पु बिजली की तरह उस पर झपटा। तुर्की की बदूक से बॉनिट निकालकर उसने उसकी गर्दन पर लगातार

तीन-चार दफा आघात किया। तुर्की सुअर दो-बार हिला-डुला, फिर खलास !

पहरेदार सुअर की मौत का निश्चय होने पर कुजप्पु ने तुर्की की टोपी अपने सिर पर रखी और बदूक लेकर पडाव के अन्दर घुस गया।

तुर्की की टोपी क्यो पहनी थी ?—कुजप्पु ने इसकी व्याख्या की। तुर्की टोपी दिल्लगी के लिए नही पहनी थी बल्कि इसलिए कि उस समय कोई सिपाही जाग उठे तो उसको देखते ही यह न मालूम हो कि मैं उसका दुश्मन हूँ। वह यही समझ कर चैन से सो जाए कि पहरेदार सैनिक ही इधर आया है।

कुजप्पु ने पडाव के भीतर घुसकर चारो तरफ आँखे घुमायी। एक जलता फानूस तबू के कोने मे लटका हुआ है। तुर्की सैनिक गहरी नीद मे मग्न हैं। कुछ तो खर्राटा भी ले रहे हैं। एक दूसरे कोने मे बदूको, भालो और गोलियो के ढेर है।

ये सब सामान वही रहे। कुजप्पु की आँखे तो कुछ और तलाश रही थी, कुछ खाने को। इधर-उधर के सामानो की जाँच की। एक कोने मे ताँबे का एक बडा बर्तन दिखायी दिया खजूर के पत्तो की चटाई से ढका हुआ। उसे खोलकर देखा। वाह क्या कहना !

कुजप्पु ने जीभ निकालकर ओठो को चाटकर दिखाया। भुने हुए मुर्गे ! उनके सुबह के नाश्ते का बन्दोबस्त था।

कुजप्पु वही बैठ गया। दो मुर्गे फौरन खा गया। चमडे की थैली से पानी भी पी लिया। अनजाने मे ही डकार निकल गयी। हाय राम ! किस्मत ही समझो कि डकार सुनकर कोई जागा नही।

फिर उठकर सोचा। बन्दूको की जरूरत नही है। बढिया जर्मन बदूके है। लेकिन अब गोलियो की ही जरूरत है। पिरोयी हुई गोलियो की माला गले मे डाल ली। 'कारटिज मालाओ' के बोझ से गरदन झुक गयी। ताँबे के बर्तन से भुने हुए दो मुर्गे लेकर उसने पतलून की जेब मे डाल लिये।

फानूस के नीचे मिट्टी का तेल भरा हुआ टिन दिखा। अब कुछ कपडे चाहिए। तुर्की झडे एक तरफ पडे दिखे। झडो को मिट्टी के तेल मे भिगोकर कमरे मे डाल दिया। फानूस से एक तीली जलाकर बाहर निकला। फिर तबू को आग लगाकर कुजप्पु फौरन वहाँ से रफू हो गया।

सौ गज की दूरी पर पहुँचने पर जरा मुडकर देखा। आसमान मे लाल-लाल लपटे उठ रही थी। तुर्की पलटन के जल-भुनकर तबाह होने का दृश्य !

तबू के भीतर तुर्की सुअरो के जल-भुनने के दृश्य की याद करके कुजप्पु ठठ्ठा मारकर हँस पडा।

तभी बटलर के रसोई घर से एक दहाड सुनायी पडी। फिर दो-तीन चीत्कारे भी। हाथीपाँववाला अय्यप्पन, परगोटन और अर्जीनवीस आण्डि रसोईघर की तरफ दौडे—पीछे कुजप्पु भी।

"कल्याणी को अपस्मार का दौरा पड़ा है।" हाथीपाँववाले अय्यप्पन ने चिल्लाकर कहा।

उन्होने पलग पर लेटे कोरन बटलर को जगाने की चेष्टा की। बटलर मरे हुए बैल की तरह लेटा है। कोई हरकत नही।

कल्याणी रसोईघर की जमीन पर चित्त पडी शोर मचा रही है।

हाथीपाँववाला अय्यप्पन तुरन्त ही वैद्य मण्णान शकरन की तलाश मे उसके घर की तरफ दौड गया।

8 अप्पाण्य, घर का चबूतरा और औरतो का झगडा

अतिराणिप्पाट के उत्तर की तरफ जानेवाली सडक को 'नई सडक' कहते है। वह पश्चिम मे समुद्रतट पर खत्म हो जाती है। अतिराणिप्पाट की पश्चिम सीमा मे एक नाला है। 'नई सडक' जिस पुल के जरिये इस नाले को पार करती है, उस पुल का नाम है 'सैतालिपुल'।

सैतालिपुल से लेकर पश्चिम तट तक के इलाके में मुसलमानो का साम्राज्य है। ऊँची-ऊँची दीवारो से घिरी हुई गुप्त किलो की तरह दीखनेवाली पुरानी अट्टालिकाए, बाडो से घिरे हुए मध्यवित्त परिवारो के अहाते और झोपडे, ऊँची मस्जिदे, बडे-बडे तालाब, दुकाने, मछली बाजार—सब यहाँ मिले-जुले है। सहजन और कटहल के पेड अहातो को हरियाली बनाते है।

'चेंगरा' और 'पुलिक्करा' यहाँ की ज्यादा आबाद और गदी बस्तियाँ है।

अतिराणिप्पाट और उसके पूरबी प्रान्तर मे रहने वाले लोगो मे अधिकाश हिन्दू है। उनका रोबदाब और प्रभाव सैतालिपुल तक ही सीमित है। पुल के उस पार उनके लिए एक तरह से विदेश ही है।

लेकिन चेगरा और पुलिक्करा की मुसलमान मसजिदो के त्यौहार और मनौतियाँ अतिराणिप्पाट के लोगो को भी आकर्षित करते है। इन त्यौहारो का उल्लास नई सडक पर भी दिखाई देता है।

इस ढग का एक त्योहार चेगरा शेख मसजिद का 'अप्पाण्य' (चावल की रोटी की मनौती) है।

उस दिन जुलूस होते, मनौतियाँ होती, बाजे बजा-बजाकर जानेवालो की लबी कतारें होती।

अप्पाण्य त्यौहार देखने के लिए श्रीधरन गोपालन भैया का हाथ पकडकर शाम होते ही 'नयी सडक' के नजदीक आकर खडा हो जाता।

बडे-बडे जुलूसो मे ललाटपट्ट से सजे हुए हाथी होते। नीली रोशनी फेकने वाले बड़े-बडे गैस के हण्डे जुलूस के साथ-साथ कतार मे आगे बढते। समुद्र के किनारे

पर के लाइट-हाउस की आकृतिवाले इन बड़े-बड़े हण्डो को लोग सिर पर ढोते।

अरबी बाजे तुरही एव ढोल की ध्वनियाँ आसपास के प्रदेशो मे हर्ष और उत्साह भर देती। सफेद टोपियाँ, हरे रग की पगडियाँ और जरीदार कमीज जुलूस के सौन्दर्य मे चार-चाँद लगा देते।

आँखो को चुधियाने वाले आलोक, शोर-शराबे और उमग भरे वातावरण के बीच चावल की रोटियो से भरी और रग-बिरगे नये कपडो से ढकी टोकरियो को सिर पर ढोते हुए लोग आगे बढते।

हाथी के ऊपर सज्जित शाही पखो और लम्बे बाँसो के छोर पर मोरपख के आकार मे कटी हुई रगपर्णियो के हिलने-डुलने का दृश्य श्रीधरन को सबसे अधिक रोमाचक लगता।

बीच-बीच मे छोटे जूलूस भी होते जिनमे एक बाजेवाला होता, रोटियो की दो-तीन टोकरियाँ होती और चार-पाच आदमी होते। अपनी कमी दूसरो से छिपा-कर भागनेवालो की तरह वे बहुत जल्दी आगे बढते जाते। ऐसे जुलूस को देखने पर श्रीधरन 'कूय-कूय' कहकर हल्ला मचाता। तब गोपालन भैया उसकी जघा पर चिकोटी काट लेता।

रात को पिताजी श्रीधरन को उत्सव दिखाने के लिए ले जाते। कैसी भीड है! इतनी तादाद मे लोग किधर से आये? पिताजी का हाथ कस कर पकडकर वह दृश्यो को देखता हुआ भीड के बीच से शेख के मकबरे के सामने पहुँचता। तब कृष्णन मास्टर जेब से एक चवन्नी लेकर श्रीधरन के हाथ मे थमाते हुए उसे 'मनौती की पेटी' मे डालने को कहते। श्रीधरन गुपचुप पिता के चेहरे की तरफ दृष्टि डालकर धीमी आवाज मे पूछता "यह तो मुस्लिम मसजिद है न? हमारा मन्दिर तो है नही।"

उस वक्त पिताजी श्रीधरन के चेहरे पर आँखे तरेर कर इस तरह देखते, मानो कह रहे हो कि जो मैं कहता हूँ वह कर। श्रीधरन पैसा तुरन्त उस पेटी मे डाल देता। (वहाँ से लौटते वक्त कृष्णन मास्टर श्रीधरन को उपदेश देते कि बेटे, यह तो एक सन्त की पुण्यभूमि है। सन्तो के लिए हिन्दू-मूसलमान का कोई भेद नही है। उनके लिए सभी इनसान एक से है। सब लोगो को सन्तो का आदर करना चाहिए।)

आसपास कई दुकाने है। शेख के मकबरे के नजदीक ही नही, चेंगरा भर मे सडक के कोने-कोने मे, पगडडियो तक मे कई दूकानें उठ खडी हुई हैं। एक तरफ मच के झूले की आवाज और बच्चो का शोर-शराबा है तो दूसरी तरफ हाथी, मोर और ऊँट के ताश खेलनेवालो की पुकार, जयकार और हो-हल्ला हो रहा है। मनौती मे आयी ढेर सारी रोटियाँ बेचने के लिए रखी गयी हैं। कई किस्म और रग की रोटियाँ। लगभग एक सौ किस्म की होगी। पिताजी श्रीधरन को चार-पाँच किस्म की रोटियाँ खरीद तो देते, लेकिन वहाँ पर उनका स्वाद नही लेने देते। (पिताजी

का यही आदेश है कि बाहर कुछ नही खाना चाहिए। घर मे ले जाकर सबको अपना-अपना हिस्सा देने के बाद ही खाना चाहिए।)

कई किस्म के पकवान ही नही, विविध प्रकार के खिलौने और ढेर सारी विचित्र वस्तुएँ भी बाजार मे बेचने के लिए रखी गयी हैं। श्रीधरन एक दुकान के सामने खडे होकर वहाँ लटके हुए पीकदान के आकारवाले एक बिगुल की तरफ इशारा करता। तब पिताजी उसे वह खरीद देते। पिताजी उसे समझाते कि उसका नाम है ब्युगिल। भीड मे से एक नौजवान अभिवादन करते हुए कृष्णन मास्टर के नजदीक आ जाता। वह कृष्णन मास्टर के पुराने शिष्यो मे से कोई होता। "बेटा है न?" कहकर वह श्रीधरन का हाथ पकडकर प्यार प्रकट करता। फिर वह निकट की एक दूकान से एक सेर हलुवा या कोई पकवान खरीदकर श्रीधरन के हाथो मे थमा देता। श्रीधरन लेने मे सकोच करता। (पिताजी का आदेश है कि कभी किसी से भी कुछ नही लेना चाहिए।) श्रीधरन ललचाई आँखो से सहमकर पिताजी के चेहरे की तरफ ताकता। कृष्णन मास्टर जरा हँस पडते। इस हँसी को 'स्वीकृति सूचक मौन' मानकर श्रीधरन दूसरी चीजो के साथ उसे भी पकड लेता। यो छाती पर— नाक के ठीक नीचे—ललचानेवाले पकवानो को दबाकर पकडते हुए तथा बिगुल बजा-बजाकर मुँह की लार का शमन करते हुए श्रीधरन पिताजी के आगे-आगे चलता हुआ घर वापस आता। उस समय वह नीद के मारे थोडा-थोडा ऊँघता भी।

कन्निप्परपु की पश्चिमी सीमा म एक नाला है। नाले के उस पार एक पुराना अहाता है। 'पश्चिमी खेत' नाम के उस छोटे मे अहाते के इर्द-गिर्द नाला बह रहा है।

'पश्चिम खेत' की तरफ देखते समय एक गुफा और एक दाढीवाला स्मृति मे रेंगते हुए श्रीधरन के सामने आ जाते। बचपन की हलकी-सी याद मन मे आज भी ताजा है। गुफा-जैसी एक फूस की छोटी-सी झोपडी का दरवाजा और वहाँ बैठनेवाला एक बूढा। गौर वर्णवाला—गोरे साहबो की तरह—एक बूढा। उस बूढे की सफेद दाढी का स्मरण खौफ और आशका पैदा करता है। लगता है कि निकट जाने पर वह पकडकर निगल जाएगा। कभी-कभी उसके पास एक बुढिया भी होती। बूढे की दाढी की तरह बुढिया के स्तन भी पेट तक लटके हुए होते। श्रीधरन ने एक बार देखा था कि बूढ़ा अपना सिर और दाढी बुढिया की गोद मे रखकर लेटा है और बुढिया उसकी दाढी से जू निकालकर मार रही है। उस दृश्य की याद आज भी ताजा है।

वह बुड्ढा और बुढिया कही गुम हो गये। वह झोपडी भी नष्ट हो गयी। किशोरावस्था मे खडे श्रीधरन को इस बीच घटी घटनाओ के बारे मे कोई खास जानकारी नही है। उस झोपडी की जगह पर नया मकान बनाने के लिए उस

अहाते के नये मालिक कुट्टाप्पु ने एक चबूतरा बनाया था। सालो से वह चबूतरा ज्यो का त्यो पडा है—उन बूढे दपतियो के मकबरे की तरह।

अतिराणिप्पाट से तीन-चार मील दूर पर ही कुट्टाप्पु रहता है। कभी-कभी वह अपना चबूतरा देखने चला आता। काला-कलूटा और दुबला-पतला जिदा लाश-सा कुट्टाप्पु गले मे अँगोछा लपेटकर खखारते हुए वहाँ खडा हो जाता। फिर वह चबूतरे पर बैठकर घास फूस उखाडकर फेकते हुए रेगने लगता। चबूतरा और आसपास की जगह साफ करने के बाद अपने नये भवन का ख्वाब देखते हुए कुट्टाप्पु वहाँ घण्टो टकटकी लगाये खडा रहता।

अधूरे कार्यों को सूचित करने के लिए 'कुट्टाप्पु के घर के चबूतरे की तरह'—यह एक नयी उक्ति अतिराणिप्पाट मे प्रचारित हो गयी थी।

श्रीधरन को 'पश्चिमी क्षेत्र' म अकेले जाने मे डर लगता। सफेद दाढीवाले बूढे की याद से उसको तकलीफ होती। अगर साथ कोई मित्र होते तो वह वहाँ जरूर पहुँच जाता। कुट्टाप्पु महाशय का चबूतरा लडको के लिए क्रीडास्थल है।

हाथीपाववाले अय्यप्पन का पुत्र चात्तुण्णि श्रीधरन का प्रधान साथी था। वह हृष्ट-पुष्ट और काले रग का था।

कुट्टाप्पु लोगो से मेल-जोल न रखनेवाला रूखा आदमी था। लडको के प्रति उसको रत्तीभर हमदर्दी नही थी। चात्तुण्णि उसको 'शैतान' के नाम से पुकारता था। उस अहाते मे उस एक चबूतरे और घास-फूस के अलावा और कुछ नही था। न तो वहाँ कोई बाड थी, न कोई आड। उजाड होने पर भी अगर कोई उस अहाते मे घुसता तो कुट्टाप्पु आग-बबूला हो जाता। लडको को अहाते मे देखने पर वह पत्थर मार कर भगा देता। इसलिए 'शैतान' के आगमन की आशका से आतकित होकर ही श्रीधरन और चात्तुण्णि और कभी-कभी कुछ दूसरे लडके भी वहाँ खेलते।

उस चबूतरे पर कुट्टाप्पु ने जिस ढग के भवन के निर्माण की कल्पना की थी, उससे कही बेहतर एक-सौ-एक मजिल के भव्य प्रासाद का निर्माण श्रीधर और चात्तुण्णि ने वहाँ कर डाला—कल्पना म ही। यह वही प्रासाद है, जहाँ राक्षस ने राजकुमारी को चुरा कर रख दिया है। राजकुमारी से प्रेम करनेवाला मत्रीकुमार राजकुमारी को बचाने क लिए वहाँ आ पहुँचता है। मत्रीकुमार उस एक-सौ-एक मजिलवाले मकान की तरफ पतग उडाता है। राजकुमारी दरवाजे से बाहर आकर पतग को पकडती है और उस पर चिपककर लेट जाती। मत्रीकुमार पतग की रस्सी हौले-हौले नीचे की तरफ खीचने लगता है। पतग और राजकुमारी नीचे आने लगते है। अचानक राक्षस मत्रीकुमार पर झपटकर धावा बोल देता है। फिर राक्षस और मत्रीकुमार के बीच लडाई शुरू होती है। इस द्वन्द्व युद्ध मे मत्रीकुमार राक्षस की हत्या कर देता है। भयकर अट्टहास के साथ राक्षस जमीन पर औधे

मुँह गिर पडता है। (एक दफा ओठों पर सफेद दागवाले चेक्कु ने श्रीधरन को यह कहानी सुनायी थी।) इस कहानी का अभिनय श्रीधरन और चात्तुण्णि, कुट्टाप्पु के चबूतरे पर कर रहे है। एक-सौ-एक मजिलवाला मकान और राजकुमारी ही स्मृति पटल पर छाये हुए हैं। चात्तुण्णि ने एक अच्छी पतग बनायी है। श्रीधरन ही मत्रीकुमार है और चात्तुण्णि राक्षस। आँखें तरेरकर दाँतो को निपोरते हुए जीभ लटकानेवाला एक भीषण मुखौटा चात्तुण्णि कही से ले आया है। हरे पत्तो की डालियो को कमर मे बाँधकर और वह मुखौटा पहनकर झुरमुटो मे लुक-छिपकर बैठनेवाला राक्षस चात्तुण्णि मत्रीकुमार श्रीधरन पर अचानक आ झपटता है। खीचातानी मे अपने को इच्छानुसार मारने-पीटने की पूरी छूट चात्तुण्णि ने श्रीधरन को दी है। श्रीधरन को मारने-पीटने और ठोकर मारने का वह दिखावा मात्र ही करता, श्रीधरन के शरीर को हर्गिज पीडा नही पहुँचाता। श्रीधरन की लात-मार सहते वक्त चात्तुण्णि को विशेष खुशी महसूस होती। श्रीधरन दुबला-पतला और कमजोर होने पर भी अपनी पूरी ताकत लगाकर साथी के पेट, पीठ और छाती पर मुक्का मारता।

महल की ऊपरी मजिल मे राजकुमारी ने मत्रीकुमार की पतग के सहारे अपनी जान बचा ली है। मत्रीकुमार आहिस्ते-आहिस्ते पतग को नीचे खीच रहा है। पतग जमीन को छूने ही वाली है। अभी राक्षस मत्रीकुमार पर झपटेगा कि अचानक खाँसी की आवाज सुनकर श्रीधरन ने मुडकर देखा पीछे खडा था शैतान कुट्टाप्पु!

पतग और राजकुमारी को वही छोडकर श्रीधरन जान लेकर भाग गया। तभी भयकर शोर-शराबे के साथ राक्षस चात्तुण्णि निर्धारित स्थान मे—शैतान के सामने झपटा।

कान्निप्परपु के कोने के झुरमुटो मे छिपकर पश्चिमी क्षेत्र मे निगाह डालने पर श्रीधरन ने चबूतरे के ऊपर शैतान और राक्षस के बीच होनेवाली घमासान लडाई देखी। शैतान को जमीन पर पटककर राक्षस फरार हो गया। (मुखौटा तो शैतान ने लेकिन कमर मे बधी हरी पत्तियो की डालियाँ वही बधी रह गयी।) गिर गया। झट उठकर एक पत्थर के टुकडे को राक्षस के पैरो का निशाना बनाया। एक ही मार – पत्थर चात्तुण्णि के दाहिने पैर की हड्डी पर लगा। चात्तुण्णि गिर पडा। फिर फौरन उठकर लगडाते हुए ही दक्षिण दिशा की तरफ दौड चला और शैतान की आँखो से ओझल हो गया।

शैतान ने राक्षस का मुखौटा उठाकर रौद डाला और टुकडे-टुकडे करने के बाद नाले मे फैक दिया।

शैतान की मार से पैर मे चोट लगी थी, उससे पैर मे सूजन आने के कारण चात्तुण्णि कई दिनो तक बाहर नही निकल सका। लेकिन दो महीने के बाद उसने

शैतान से इसका बदला लिया।

जिस दिन शैतान अपने चबूतरे का निरीक्षण करने आनेवाला था, उस दिन चात्तुण्णि ने उस चबूतरे पर एक गड्ढा खोदा। उसमे नुकीले पत्थर और काँटे बिछाये, फिर उसमे मल त्याग किया। गड्ढे के ऊपर हलकी डालियाँ रखकर उनके ऊपर पत्ते बिछाये, ऊपर से मिट्टी डाली और कई तरह की घास-फूस मिट्टी के ऊपर रोपकर चात्तुण्णि इन्तज़ार करने लगा।

चबूतरे के निरीक्षण के लिए हमेशा की तरह कुट्टाप्पु आ पहुँचा। वह ज़मीन पर उकड़ूँ हुआ घास उखाडकर फैंकने लगा। कुछ ही दूर चला था कि एकाएक गड्ढे मे गिर पडा।

"शैतान गड्ढे मे गिर पडा— हाय! हाय! हाय!।" पास के अहाते के केलो के बीच मे छिपा हुआ चात्तुण्णि हो हल्ला मचाते हुए दौड गया। कन्निप्परपु के कोने के अमरूद की डालियो म छिपकर श्रीधरन उस दिन बडी देर तक ठहाका मार कर हँसता रहा।

कन्निप्परपु के दक्षिण-पश्चिम कान मे कुछ दूर पर एक छोटा-सा नाला है। उसके किनारे पर कई तरह के हरे पौधे बढ आये हैं। नाले के पानी मे मछलियाँ भी आकर अड्डा जमाती है। दोपहर की धूप मे उन छोटी मछलियो को देखने पर लगेगा कि नाले के पानी मे किसी ने ताँबे की छोटी कीलें बिछा दी हो। पख पसारकर एक विशेष ताल म नृत्य करती हुई मछली माँ उनके नजदीक ही पहरा देती होगी।

इस नाले के दोनो तरफ लगभग आमने-सामने एक एक छप्परवाली झोपडी हैं। उत्तर दिशा के कुछ बडे घर मे आराकश वेलु और वेलु की पत्नी उण्णूलि रहते है। (उनके दो बच्चे है बालन और दामोदरन।) दक्षिण दिशा के घर मे कलाल माक्कोता और पत्नी अम्मिणि बसते है। (उनके कोई सतान नही है।) माक्कोता का छोटा भाई मानुक्कुट्टन भी उनके साथ ही रहता है।

कभी-कभी शाम को नाले के किनारे मे ऊँची आवाज़ मे गालियाँ और चिल्लाहटे सुनाई देती। औरतो के दगे फसाद की शुरुआत।

कन्निप्परपु के कोने के अमरूद की डाल पर बैठकर श्रीधरन पौधो की ओटवाले से इन झगडो का मजा लेता। उत्तर के घर की उण्णूलिअम्मा और दक्षिण के घर की अम्मिणि-अम्मा के बीच ही जली-कटी बाते हो रही है। दोनो औरतें अपने अपने घर के आँगन मे नाले के सामने खडी होकर एक दूसरे को गाली गुफ्तार करती।

उनके दगे-फसाद का कारण श्रीधरन को मालूम नही है। इन औरतो के मुँह से निकलनेवाली फटकारो और गालियो के शब्द और शैली और उनके हाथ की मुद्राओ का मतलब उन दिनो श्रीधरन बिल्कुल नही समझता था। फिर भी, उसको

उनके अभिनय और हाथ की मुद्राओ को देखने मे बडा मजा आता था। उनकी भाषा के कुछ शब्द उसकी समझ मे आते। कुछ शब्दो के बारे मे उसे बिलकुल मालूम नही होता। (बाद मे वह चात्तुण्णि से पूछकर समझ लेने की कोशिश करता। ऐसी कोई बात नही थी, जिसे चात्तुण्णि न समझता हो।)

एक दिन औरतो के दगे-फसाद को ठीक तरह देखने की इच्छा से श्रीधरन अमरूद की डाल पर थोडी देर पहले ही चढकर बैठ गया।

दगे की शुरूआत की बातचीत मामूली शैली मे ही थी। आराकश की पत्नी उण्णूलि ने ही झगडा शुरू किया। (उण्णूलिअम्मा काले रग की एक मोटी औरत है। उसका रग-ढग मर्दाना है। वह कच्चे कटहल-जैसे अपने भारी स्तनो को गदे-फटे अगोछे से ढककर रखती है।)

'दक्षिण से कुछ बन्दर इस गाँव मे रहने आये हैं। झगडा करने के लिए ।" दक्षिण के नारियल के पेडो पर निगाहे डालते हुए उण्णूलिअम्मा ने चिल्ला कर कहा। (करीब साठ मील दक्षिण से कलाल लोग इधर बसने आये थे। उण्णूलि अम्मा उनको नीचा साबित करने की कोशिश कर रही है। आराकश पीढियो से इसी इलाके मे बसे हुए है। देहातियो के मन मे कलालो और उनके पेशो के प्रति नफरत है।)

आँगन मे झाडू देनेवाली अम्मिणिअम्मा यह सुनते ही नाराज हो गयी। वह झाडू देते हुए जोर से बोली, "हम कलाल ऊपर जाते है, आराकश की गति तो पीछे की तरफ है न ?,"

(अम्मिणिअम्मा गोरे रग और नाटे कद की एक खूबसूरत युवती है। चोली पहनती है। सिर के घुघराले बालो को लाल रिब्बन से बाँध रखा है। बातचीत मे मृदु स्वर की है। लेकिन जीभ को सिलाई मशीन की सुई की तरह देर तक बेरोक-टोक चला सकती है।) हाँ, कलाल ऊपर चढता है। आराकश पीछे रेगता है। पेशे के बारे मे अम्मिणिअम्मा की व्यग्य भरी बाते सुनकर उण्णूलिअम्मा ने उस पर जरा विचार किया।

"कल्पवृक्ष की गर्दन छेदने के लिए ही ऊपर जाता है न ? कत्ल करनेवाला हरामजादा !"

"हाँ, कत्ल करना ही कलाल का 'पुश्तैनी पेशा' है।" उण्णूलिअम्मा ने अम्मिणि-अम्मा की दलील को काट-छाँटकर निराधार साबित किया।

अम्मिणिअम्मा झाडू को दूर फेककर तनकर खडी हो गयी।

"हम नारियल के गुच्छो को छेदेगे, ताडी बनायेगे। अरी, उसके लिए तू क्यो बकती है ? और एक बात ! हम लोग नारियल के पेड पर चढकर नारियल की चोरी कर जेल जानेवाले थोडे ही है, समझी।"

इतना कहकर अम्मिणिअम्मा ने मुँह बनाते हुए उण्णूलि अम्मा के प्रति अपनी

नफरत और नाराजगी जाहिर की।

(चार पाँच साल पहले नारियल की चोरी के मुकदमे मे, सन्देह के तौर पर उण्णूलिअम्मा के पति को पुलिस पकड ले गयी थी। उस पुरानी बात को ही अम्मिणिअम्मा ने कुरेदकर अब उण्णूलिअम्मा के मुँह पर उछाला था।)

उण्णूलिअम्मा दबने को तैयार न थी। वह नाले के किनारे की तरफ जरा हटकर दहाडी, "अरी, जेल जाना तो मर्दों के लिए शान की बात है। घर की औरतो की बात बता! चाचा को अपनी चटाई पर लिटाकर साथ सोनेवाली औरत तो इधर नही है।" (ड्‌ हू ड्‌ की एक गुर्राहट)

(अम्मिणिअम्मा और माक्कोतो के छोटे भाई मानकुट्टन के बीच के अवैध सबध की अफवाह अतिराणिप्पाट मे फैली हुई थी। उण्णूलिअम्मा ने इसे ही अम्मिणिअम्मा के मुँह पर मारा था।)

अम्मिणिअम्मा अपस्मार रोगी की तरह काँप उठी। वह एकाएक समझ नही सकी कि क्या जवाब दे। बस दाँत पीसते हुए खडी रही।

तमाम कूडा करकट और रोग के पर्यायवाची अभद्र शब्द अम्मिणिअम्मा के मुँह से निकले। उनसे ज्यादा नमक-मिर्च लगे शब्दो का प्रयोग कर उण्णूलिअम्मा ने अपने को बेहतर साबित किया।

"रडी कही की—थू !" उण्णूलिअम्मा ने खखारते हुए थूक दिया।

अम्मिणिअम्मा आग-बबूला होकर बकने लगी—"अरी, रडी तो तू ही है। रडी रडी रडी हरामजादी "

अम्मिणिअम्मा के रडीमत्र के अन्त की प्रतीक्षा कर जरा सिर झुका कर मुँह को वक्र करके तैयार खडी उण्णूलिअम्मा ने अम्मिणिअम्मा का अन्तिम शब्द सुनते ही फटकारा "फू !"

फटकारने की तीव्र आवाज और हरकतो के फलस्वरूप उण्णूलिअम्मा की गुँथी हुई चोटी के बाल (उसके सिर पर घने बाल है) ढीले होकर चारो तरफ फैल गये।

लगा कि अम्मिणिअम्मा के तरकश के सारे तीर खाली हो गये है। फिर अनेक प्रकार की हरकते और कसरते ही दिखायी पडी। एक औरत अपनी कमर को चक्की की तरह चलाकर दिखाने लगी तो दूसरी अपनी कलाई ऊपर उठाकर फिर नीचे की तरफ मालिश करने की मुद्रा प्रकट करने लगी। बीच-बीच मे बकरियो के मिनमिनाने और घोडो के हिनहिनाने की-सी विकृत आवाजें भी सुनाई देती।

उण्णूलिअम्मा के स्तनो ने भी ललकार मे भाग लिया। थोडी देर के बाद दोनो थक गयी। फिर भी अम्मिणिअम्मा दबने को तैयार न हुई।

एक मिनट के विश्राम के बाद अम्मिणिअम्मा ने नाई से सबधित एक शब्द का

उच्चारण कर अपनी धोती जरा ऊपर उठाकर दिखा दी।

यह देखकर उण्णूलिअम्मा भी खामोश रहनेवाली नही थी। उसने घने खुले हुए केशभार को सिर पर बाँधा और फिर दोनो हाथो से धोती उतारकर नगे शरीर का प्रदर्शन करते हुए तनकर खडी रही ···।

9 फिर इलजिपोयिल मे

श्रीधरन का विद्यारम्भ स्कूल मे नही हुआ था। दशमी के शुभ दिन उस इलाके के प्रसिद्ध पण्डित और ज्योतिषी कुजन पाणिक्कर को कन्निप्परपु मे बुलाकर श्रीधरन को चावल मे लिखवाने के बाद विद्यारम्भ का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। उसके बाद कृष्णन मास्टर ने अपने बेटे को घर मे ही पढाया था। हर दिन पाठ पढने के बाद मर्जी के मुताबिक खेलने की अनुमति मिलने के कारण श्रीधरन बडे उत्साह से अपना सबक याद करता था। इस तरह स्कूल से चार सालो मे मिलनेवाली शिक्षा श्रीधरन को सिर्फ दो सालो मे घर पर बैठे-बैठे ही प्राप्त हो गयी। फिर, जून महीने म अनिगाणिप्पाट से पौन माल दूर एक हिन्दू स्कूल मे वह चौथी कक्षा मे भर्ती हो गया।

पहली बार क्लास मे जाकर बैठने पर श्रीधरन को बडी घबराहट महसूस हुई थी। नया वातावरण। नये चेहरे। लेकिन, वेश-भूषा और शक्ल-सूरत मे अपने पिताजी-जैसे लगनेवाले शान्तप्रकृति के हेडमास्टर कृष्णन नायर साहब के वात्सल्य पूर्ण बर्ताव मे श्रीधरन ने सुरक्षा अनुभव की।

एक पुराने देहाती विद्यालय के धर्मार्थ स्कल के रूप मे बदल जाने के कारण ही यह स्कूल बना था। सिर पर चोटी, बडी तोंद और नाक पर रस्सी से बधा हुआ चश्मा ऐसा एक बुजुर्ग अधपढा देहाती अध्यापक और ताड के पत्तो मे देखते हुए 'किया - किया—केरा—केरा' का उच्चारण करते हुए एक साथ चिल्लानेवाले छोटे-छोटे बच्चे स्कूल के अहाते के एक कोने के छप्पर मे आज भी थे।

चौथी कक्षा मे केवल चार ही छात्र थे। पुलिसवाले का बेटा केलुक्कुट्टि, मन्दिर के पुजारी का लडका अय्यप्पन, रजिस्ट्रार की बेटी कात्यायिनी—ये ही श्रीधरन के सहपाठी थे। इनम केलुक्कुट्टि उम्र, कद और बर्ताव की दृष्टि से चौथी कक्षा के लिए बहुत बडा लगता था। नटखट और आलसी केलुक्कुट्टि को इस बात का घमण्ड था कि वह पुलिसवाले का बेटा है। अय्यप्पन पित्त रोग का शिकार था। वह कक्षा मे हमेशा ऊँघता रहता। कात्यायनी हँसी-ठिठोली करती रहती। सहपाठियो मे उसको श्रीधरन से अधिक लगाव था। कात्यायनी से मेल-जोल बढाने मे श्रीधरन को पहले-पहल शरम आती थी। अपनी उम्र की एक लडकी से मेल-जोल बढाने का यह पहला मौका था। धीरे-धीरे उसका सकोच जाता रहा। स्कूल

के अहाते के आम्र वृक्ष की छाया मे बैठकर कात्यायनी और श्रीधरन गुट्टियो से खेलते। दोनो कहानी किस्सा कहकर आनन्द मग्न हो जाते। ओठो पर सफेद रोग वाले चेक्कु से सुनी हुई सारी कहानियाँ श्रीधरन को याद थी। कात्यायनी आँखे फाडकर गुमसुम हो उससे कहानियाँ सुनती रहती।

सालाना इम्तहान के बाद स्कूल बन्द होने पर श्रीधरन ने छुट्टियो को इलजिपोयिल मे बिताने की इच्छा की। कृष्णन मास्टर ने उसे नही रोका। इस तरह खुशी के ख्वाब देखता वह इलजिपोयिल आ पहुँचा।

वहाँ अप्पु ने बढे प्रसन्न होकर श्रीधरन का स्वागत किया।

"हम जगल मे चले" दोपहर के बाद पहले दिन ही अप्पु ने श्रीधरन को भ्रमण का निमन्त्रण किया।

"तैयार!" श्रीधरन ने खाकी कोट उतार दिया। फिर जाधिया पहनकर और तौलिया सिर पर बाँधकर अप्पु के साथ जगल की तरफ रवाना हुआ।

फल, फूल और कोपलो से भरे हरे जगल। झाडी मे लाल बडे बिदुओ की तरह पके हुए जाती के फल लटक रहे है। नीले रग के काँच की गोली-जैसे पके जामुन के फल भी। तोड-तोडकर हाथ और खा-खाकर जीभ दुखने लगी। तभी अप्पु ने तुरई का फल दिखा दिया, वह पकने पर भी हरा रहता है। उसे मुँह मे डालकर चबाने पर मीठापन नही, नशीले खट्टे रस का स्वाद आता है। श्रीधरन को वह फल बेहद पसन्द आया।

"जाती के आठ फल खाने पर फिर एक तुरई का फल।" अप्पु ने एक उक्ति का स्मरण किया।

कच्ची तुरई का छिलका ललाट पर मारकर अप्पु ने 'ठप' की आवाज पैदा की। श्रीधरन ने भी उसका अनुकरण किया।

अप्पु न तुरई फल तोडकर मारे के सारे एक पत्ते के दोने म रखे थे।

"तू तुरई क्यो नही खाता?" श्रीधरन ने पूछा।

अप्पु ने चुप्पी साध ली।

दोनो जगल के एक और कोने मे गये। वहाँ की चट्टान पर बैठकर पेडो के ऊपर सरसरी निगाह डालते हुए अप्पु ने कहा, "एक दिन वह जरूर मेरे हाथ मे आएगा।"

"कौन?"

"चकोर का बच्चा।" अप्पु पेडो के ऊपर ही ताकता रहा। चकोर के बच्चे को लोहे की जजीर मे बाँधकर चित्रक जडी-बूटी को हासिल करने की कोशिश अप्पु ने तभी स शुरू की थी। उसने सभी जगलो को छान मारा। ऊँचे पेडो पर चढकर ढूँढ लिया। लेकिन कही चकोर का घोसला दिखायी न दिया। एक बार एक पेड पर चढकर एक खोखल म हाथ डालने पर ततैयो ने एक साथ उडकर अचानक उस पर आक्रमण किया था। फुर्ती से आँखे मूँदकर पेड से उतरकर वह

भाग गया था और सीधे नदी मे कूदकर डुबकी लगाते हुए उसने अपने प्राण बचाये थे। यह घटना सुनाने के बाद श्रीधरन को यह उपदेश भी दिया कि ततैयो का आक्रमण होने पर तुरन्त पानी मे कूदकर डुबकी मारनी चाहिए।

सुन्दर और सफेद रोमवाले एक फल को लता मे लटकते देखकर श्रीधरन ने उसे तोडने के लिए हाथ बढाया।

"अरे ! उसे छुओ मत !" अप्पु ने चट्टान पर से गला फाडकर चिल्लाते हुए कहा, "वह केवाँच है—केवाँच। खुजलाते-खुजलाते तू मर जायेगा।" श्रीधरन ने डर के मारे अपना हाथ खीच लिया। फिर धीरे-धीरे अप्पु के पास चट्टान पर जाकर बैठ गया। जाती, जामुन और तुरई के बढिया फल खाने को मिले। उसके बाद केवाँच से खुजलाते-खुजलाते मार डालनेवाले ईश्वर को मुँह चिढाने की इच्छा हुई।

"सुन, चित्रक मिलने पर आधा मै तुझे दूँगा।" अप्पु श्रीधरन के कान मे फुस-फुसाया। सुनते ही श्रीधरन अपनी खुशी और कृतज्ञता प्रकट करने के लिए अप्पु के हाथो को सहलाने लगा।

अप्पु चित्रक की महत्ता का बखान करने लगा "हम मन मे चाहे जैसी इच्छा करे, झट वह पूरी हो जाएगी। राजा बनने की बात सोचे तो फौरन राजा बनेगे। सपत्ति की तमन्ना है तो सपत्ति मिलेगी। लेकिन एक मुश्किल तो है ही। सिर्फ एक ही बार एक ही वर मिलेगा। दूसरी इच्छा बताते ही पहली वस्तु भी हाथ से निकल जाएगी। फिर निराशा ही हाथ लगेगी।'

"नही, मै सिर्फ एक ही वर माँगूंगा।" कहते हुए श्रीधरन ने इस तरह मुट्ठी बाँध ली मानो चित्रक बूटी उसके हाथ मे आ गयी हो।

"तू कौन-सा वर मागेगा ? कैसा आदमी बनने की तेरी इच्छा है ?" अचानक अप्पु का सवाल सुनकर श्रीधरन निरुत्तर हो गया। उसने इस बात पर अब तक विचार ही नही किया था। कौन-सा कैसा आदमी बनना है ? अब इस बात की याद आयी। अप्पु के और निकट बैठकर श्रीधरन उसके कान मे यह रहस्य बुद-बुदाया, "मुझे समुद्री तट के 'लाइट हाउस का साहब' बनना चाहिए।"

उसकी बात अप्पु की समझ मे न आयी। समुद्री तट के 'लाइटहाउस' (दीप-स्तभ) के बारे मे श्रीधरन ने अपने मित्र से बखान किया। समुद्री तट की एक बडी मीनार के ऊपर एक अद्भुत दीपक है। उसमे दस हजार चुम्बकीय दीपको की चमक है। वह हमेशा घूमता रहता है। एक बार पिताजी ने श्रीधरन को ले जाकर दिखाया था। उस मीनार के सकरे बरामदे मे देखने पर कितना सुहावना दृश्य दिखाई दिया था। आसमान के उस पार—सातवें सागर के उस पार—सूर्य भगवान की डुबकी लगाने के लिए रत्न के पत्थरो से बना एक तालाब दिखाई देता।

अप्पु सुनकर अचभे मे आ गया।

"उस लाइटहाउस मे एक काला साहब है। उसे और कोई धधा नही है। वह हमेशा कहानी की किताब पढता हुआ कुर्सी पर बैठा रहता है। तुझे मालूम है, उसकी तनख्वाह कितनी है?—एक सौ रुपये।"

"शीधरन, झूठ मत बोल।" अप्पु ने अपना अविश्वास प्रकट करते हुए कहा।

"आँखो की कसम—पिताजी ने कहा था।" श्रीधरन ने शपथ ली।

अप्पु विचारो मे डूबने लगा।

अप्पु ने एक दफा समुद्र देखा था। एक साल वह कार्तिक महीने की अमावस्या के दिन नहाने के लिए पिताजी के साथ गया था। रात को ही वे समुद्र के किनारे पहुँचे थे। उस समय समुद्र तट पर एक बडे खभे के ऊपर बार-बार आँखे मूँदता खोलता—यह खेल करने वाला एक अजीब दीपक उसने देखा था। लेकिन यह नही समझा था कि उसके अन्दर हमेशा कहानी की किताब पढने वाला एक आदमी बैठा रहता है, जिसे एक-सौ रुपये माहवार तनख्वाह मिलती है।

"चकोर की जडी बूटी मिलने दो। तब प्रार्थना करने पर तुम्हे वह नौकरी मिलेगी।" अप्पु ने श्रीधरन को आशीर्वाद दिया।

अब श्रीधरन ने अप्पु से पूछा

"चकोर की औषधि मिलने पर तू क्या प्रार्थना करेगा?"

अप्पु का चेहरा दुःख से पीला हो गया। उसने श्रीधरन के चेहरे की तरफ बडे दुख से देखकर कहा "शीदरन, क्या तुम्हे सचमुच नही मालूम कि मै मात्र एक कार्य की सिद्धि के लिए चकोर की औषधि की खोज मे मारा-मारा फिरता हूँ?"

'कौन सा कार्य?" श्रीधरन ने उत्कण्ठा से पूछा।

"अपनी नारायणी की रोग-मुक्ति के लिए।" अप्पु ने ओठ काटते हुए दूर ताककर लम्बी साँस खीची।

"कौन है नारायणी?" श्रीधरन ने उत्सुकता से सवाल किया।

दूर ताकते हुए अप्पु ने जवाब दिया "नारायणी मेरी बहन है।"

"उसे क्या बीमारी है?"

"कमर के नीचे जान नही—छह साल से उसके दोनो पैर बेजान पडे है। मेरी नारायण यो ही पडी हुई है ।"

बेचारी नारायणी! श्रीधरन को रुलाई आ गयी। वह जगल मे जाकर जाती का फल तोडकर नही खा सकती। न वह चिडियो के गाने का मज़ा ले सकती है। ईश्वर ने क्यो उसकी इतनी दुर्दशा की?

श्रीधरन को पता लग गया कि अप्पु के हाथ के तुरई के फल नारायणी के लिए है। शाम के धुधलके के पहले ही वे जगल से लौटे।

श्रीधरन तब भी अप्पु की बहन के बारे मे दयार्द्र होकर सोच रहा था। बेचारी लडकी वह जगल मे जाकर न तो जातीफल तोड सकती है और न चिडियो का गाना सुन सकती है

"देखो, उस पेड के नीचे की तराई मे ही मेरा घर है।" अप्पु ने चट्टान के एक कोने मे इशारा कर दिया।

"तू अपने घर नही जाता क्या ?" श्रीधरन ने पूछा।

"तुझे घर पहुँचाने के बाद मैं लौट जाऊँगा।"

"नही, हम अभी चले। तेरा घर देखने की मेरी बडी इच्छा है।" (अप्पु की बीमार बहिन को एक दफा देखने की इच्छा से ही श्रीधरन ने ऐसा कहा था।)

अप्पु ने विरोध नही किया।

दोनो पेड की तरफ बढ-चले।

"तेरे घर मे कौन-कौन है ?" श्रीधरन ने पूछा।

"माँ और नारायणी ही है।"

"तेरे पिताजी कहाँ है ?"

"पिताजी कभी-कभी ही घर आते है—चार-पाँच दिन मे एक बार।"

"ऐसा क्यो ? पिताजी कहाँ जाते है ?"

"बैलगाडी लेकर पूरब दिशा मे जाते है।"

थोडी देर की खामोशी के बाद अप्पु ने श्रीधरन को एक रहस्य और बताया—"पिताजी की एक और औरत है। उसके साथ रहते है।"

"वे कुछ पैसे-वैसे नही देते ?"

"उस बदतमीज औरत को देने के बाद खूब ताडी पीने मे पैसा खर्च करते हैं। घर आने पर अगर माँ पिताजी से पैसा माँगती है तो माँ को मार खानी पडती है।"

"बदमाश !" श्रीधरन ने अपने मन मे बैलगाडीवान तैयन को कोसा।

"फिर तुम लोगो को खाने को कहाँ से मिलता है ?" श्रीधरन ने हमदर्दी के साथ पूछा।

"माँ रेशो की पतली रस्सी बनाकर बेचती है। फिर, हमारे घर मे एक बकरी भी है। माँ उसका दूध चाय की दूकान मे बेच आती है। "

वे चट्टान के उस पार की तराई मे उतरने लगे। चट्टान और काँटेदार पौधो से भरी खुरदुरी जगह पार कर एक अगम बनी पगडण्डी मे पहुँचे। बरसात के दिनो मे पानी के तेज प्रवाह के कारण कही-कही उसमे कुछ गड्ढे बन गये थे। नुकीले पत्थर, काँटे, वृक्षो की जडें श्रीधरन के पैरो को पीडा पहुँचा रही थी। उसको लगा कि इधर न आना ही बेहतर था।

कुछ दूर चलने पर एक अहाते के कोने मे पहुँचे। वहाँ काँटेदार टट्टी की

बाड दिखायी दी। "कूदकर हम बाड के उस पार चलें—यही हमारा अहाता है।"—अप्पु ने काजू के पेड के निकट खडे होकर इशारा किया। एक बडे वृक्ष के नजदीक से श्रीधरन ने अहाते मे घुमने की कोशिश की तो अप्पु ने घबराकर उसे रोक दिया, "शीदरन, उस पेड को मत छुओ।"

"छू लेने पर क्या होगा ?" श्रीधरन ने जानना चाहा।

"वह तो भिलवाँ वृक्ष है, छू लेने पर शरीर मे सूजन आ जाएगी।"

श्रीधरन ने उस पेड को क्रोध भरी दृष्टि से देखा।

"उसके लिए एक उपाय है। बहेडा वृक्ष। भिलवाँ को छू लेने से सूजन होने पर बहेडा छूना काफी है।" अप्पु ने बडे गर्व के साथ बताया।

इस अप्पु को क्या-क्या बाते मालूम है ! श्रीधरन को बडा ताज्जुब हुआ। भिलवाँ वृक्ष के बीज जमीन पर पडे थे। अप्पु बीज चुनकर खेलने लगा।

"भिलवाँ के बीज को छूने पर क्या ज़हर नही लगेगा ?" श्रीधरन ने पूछा।

अप्पु ने 'नही' के अर्थ मे सिर हिलाया।

"भिलवाँ के बीज धोबिने ले जाएँगी। तुम्हे पता है, वे इन्हे क्यो ले जाती है ?"

श्रीधरन को क्या मालूम !

"भिलवाँ के बीज का रस लेकर कपडो पर निशान लगाने के लिए।"

श्रीधरन समझ गया—धोबियो का 'मार्किग इक'।

बाड के नज़दीक के एक काजू के पेड की डाल पर चढकर अप्पु ने श्रीधरन का हाथ पकडा और कूदकर बाड के उस पार अहाते मे उसे भी हाथ देकर उतार लिया। ताड और काजू के पेडो से भरे अहाते को पार कर वे एक झोपडी मे पहुँचे। आँगन मे एक जपा वृक्ष था, जिसमे ढेर सारे फूल खिले थे। अत्यन्त ही मनोहर दृश्य। सेमल के फूल आँगन मे बिखरे पडे थे।

झोपडी के बरामदे मे बैठकर अप्पु की माँ पाँव-फैलाकर रेशो से पतली रस्सी बना रही थी। उसने एक चीथडा ही पहना हुआ था। छाती पर कोई वस्त्र नही था।

बेटे के साथ आये हुए लडके को उस औरत ने घूरकर देखा।

"अरे अप्पु, यह छोकरा कौन है ?" उसने जोर से पूछा। अपने बारे मे छोकरा सबोधन श्रीधरन को अच्छा नही लगा। (हाँ, बैलगाडीवान तैयन की मार इसे इसी वजह से मिलती है।)

अप्पु बरामदे मे दौडा हुआ गया और माँ के कानो मे कुछ फुसफुसाया।

"उसको तू साथ क्यो ले आया ? उसको देने के लिए इस झोंपडी मे क्या रखा है ?"

उस स्त्री को इस तरह दुख प्रकट करते देखकर श्रीधरन को उसके प्रति अपनी पहली राय म जरा हेर-फेर करना पडा।

अप्पु ने बरामदे से श्रीधरन को इशारे से बुलाया। श्रीधरन को हल्की-सी घुटन महसूस हुई। नारायणी को दिखाने के लिए बुला रहा है। उसको देखने की इच्छा थी।

श्रीधरन धीरे-धीरे बरामदे मे चढ गया। अप्पु उसका हाथ पकडकर दक्षिण दिशा के कमरे मे ले गया।

वहाँ जमीन मे एक पुरानी चटाई पर एक लडकी चित्त लेटी थी। सोने का-सा रग। छाती पर कपडा-लत्ता कुछ नही है। घुटने के नीचे तक की एक धोती ही पहन रखी है।

तो यही है नारायणी। कमर के नीचे बेजान होकर लेटी हुई नारायणी—श्रीधरन ने बडी सहानुभूति से उसको देखा।

उस छोटे कमरे के दरवाजे से छनकर आती हुई धूप उस चटाई पर सुनहरा आलोक फैला रही थी।

श्रीधरन को देखकर नारायणी ने चटाई के दोनो हिस्सो को उठाकर छाती पर समेट लिया। गरदन के नीचे का शरीर उसने इस तरह ढक लिया।

उसके खूबसूरत चेहरे के चारो तरफ काली घुँघराली अलके बिखरी थी।

वह मधु मुस्कान बिखेरने लगी उसके मोती-जैसे सुन्दर चमकदार दाँत!

श्रीधरन को लगा कि चेक्कु की कथा की मत्स्य कन्या सामने दीख रही है।

चटाई से ढका शरीर मछली का, और चेहरा राजकुमारी का।

अप्पु ने गोद से तुरई फलो की पोटली लेकर बहिन को सौंप दी। उसने हाथ पसारा – कच्चे केले के तने का-सा हाथ। उसने पोटली लेकर अपनी चटाई के नीचे रख दी।

पश्चिम से आये हुए श्रीधरन के बारे मे उसको सब कुछ मालूम है। अप्पु ने उसके बारे मे सब बताया था। उसकी खुशी का ठिकाना न था।

"भैया, हमारे मेहमान को अमरूद तोडकर दिया है न?"—उसकी सुरीली आवाज!

"अमरूद के पेड के पके हुए अमरूदो को चमगादड खा गयी है।" अप्पु बडे दुख के साथ बोला।

वह तब भी मुसकाती है।

धूप कम हो गयी। कमरे की हलकी रोशनी मे उसकी मुसकान फिर प्रकाश बिखेरने लगी।

कुछ कहे बिना श्रीधरन कमरे से बाहर आया। उसके पीछे अप्पु भी।

उस रात को सोते समय श्रीधरन की आँखो मे कुछ स्वप्न घर बनाते रहे

राजकुमारी को एक भूत चोरी कर ले गया है। उसने राजकुमारी को जगल की एक गुफा मे रख दिया है। सेनापति के लडके के साथ वह शिकार खेलने के लिए

निकला है। पडोसी राजकुमार गुफा मे एक खूबसूरत राजकुमारी को देखता है। राजकुमार राजकुमारी से अपने साथ चलने की प्रार्थना करता है। तभी राजकुमारी दुख से बताती है, "हाय, राजकुमार! मै चल नही सकती। उस पापी भूत ने मेरे कमर के नीचे के हिस्से को बेजान कर दिया है।"

राजकुमारी के पैरो मे प्राण फूँकने के लिए क्या किया जाय ?

तभी एक बात सुनाई दी—भुतहा जगल मे आठो दिशाओ मे झुके रहनेवाले आठ अजीर वृक्ष है। उनमे दक्षिण-पश्चिम की तरफ झुके अजीर वृक्ष का पता लगाओ। उस पेड के नीचे और ऊपर दो बडे खोखल है। नीचे के खोखल मे एक काली बाघिन पहरा देती है। काली बाघिन को मौत के घाट उतार कर ऊपर चढना है। ऊपर के खोखल मे एक लाल बाघिन पहरा देती है। उसकी हत्या कर खोखल मे ढूंढने पर भूत द्वारा छिपाकर रखी हुई मृतसजीवनी जड मिलेगी। उसे ले जाकर राजकुमारी के शरीर से छुआ देने पर उसके पैरो को ताकत मिलेगी।

सेनापति का पुत्र और राजकुमार जगल मे निकलते है। वे दक्षिण-पश्चिम की तरफ झुके हुए अजीर वृक्ष का पता लगाते है। पहले सेनापति का पुत्र अजीर वृक्ष पर चढता है। नीचे के खोखल की बाघिन उसका मुकाबला करती है। सेनापति के पुत्र और काली बाघिन के बीच जब लडाई होती है तो राजकुमार अजीर के पेड पर चढकर ऊपर के खोखल की लाल बाघिन से लडने लगता है। बाघिनो को मारकर खोखल मे ढंढने पर मृतसजीवनी की जडी-बूटी मिल जाती है।

बाघिनो की हत्या करके मृतसजीवनी औषधि हस्तगत करने के बाद राजकुमार और सेनापति का पुत्र गुफा मे वापस आते है। मृतसजीवनी का स्पर्श पाते ही वह राजकुमारी उठ खडी होती है और नाचने लगती है।

अचानक राजकुमारी नारायणी मे और राजकुमार श्रीधरन मे और सेनापति का पुत्र अप्पु के रूप मे बदलने लगते है।

मनोरजन और दिवास्वप्नो मे इलजिपोयिल के दिन बीत रहे थे कि एक दिन सुबह को अप्पु श्रीधरन के पास दौडता हुआ आकर बोला—"शीदरन, तुम्हे घडियाल देखने की इच्छा है ?"

"हाँ, जरूर! कहाँ है घडियाल ?" श्रीधरन ने उत्सुकता से पूछा। घडियाल नाम के एक जानवर के बारे मे उसने सुना था। पर, अब तक उसे देखा नही था।

"तो जल्दी आ। नदी के 'हौआ गर्त' मे है।" अप्पु ने उतावली दिखायी।

श्रीधरन अप्पु के साथ खेतो मे होकर दौडने लगा। 'शैतान गर्त' से कुछ दूर आगे 'हौआ गर्त' है। वहाँ के नदी-तट पर लोगो की इतनी भीड थी कि तिल धरने को भी जगह नही थी। अप्पु ने आसमान की तरफ उगली से इशारा करते हुए कहा—"अरे, देख, घडियाल मामा तो इधर है।"

श्रीधरन ने ऊपर देखा। एक बाँस के छोर पर एक बडा जानवर लटक रहा था।

"पीट्टक्केलन महाशय ने ही इसे पकडा है।"—अप्पु ने कहा।

पीट्टक्केलन उस प्रदेश का बडा ही मज़ाकिया आदमी है। दुबला-पतला, गोरा-चिट्टा, ऊँचे कद का आदमी। घुटनो तक भी न पहुँचनेवाला एक अँगोछा ही उसका पहनावा है। जगली-जन्तुओ, चिडियो और मछलियो को जाल में फँसाकर पकडना, दावतो में सक्रिय रूप से भाग लेकर जरूरी मदद करना उसके प्रिय धधे हैं। वह वैद्य भी है। उसी पीट्टक्केलन ने घडियाल को फँसाकर बास के सिरे पर लटका दिया है।

केलन महाशय ने किस तरह घडियाल को पकडा, इसका किस्सा भी अप्पु ने श्रीधरन को बता दिया।

नदी के 'हौआ गर्त' मे एक घडियाल कही से घुस आया है, यह खबर चारो तरफ फैल गयी थी। बाढ मे कही पूर्वी दिशा से बहकर आया होगा। 'हौआ गर्त' में पहुँचने पर वहाँ से कही जानकी उसकी इच्छा नही हुई। खान के लिए ढेर सारी मछलियाँ। बसने के लिए एक अच्छी माँद भी। सुख चैन से वही रहने की सोच ली। लेकिन पीट्टक्केलन नाम के एक बदमाश आदमी की उपस्थिति का पता इस बेचारे घडियाल मामा को नही लगा था।

केलन ने 'हौआ गर्त' के नजदीक जाकर घडियाल को पकडने की तरकीब सोची। गर्त के तट पर लम्बे बेत खडे हुए थे। उनमे से एक अच्छे बेत के छोर को रस्सी से बाँधा और खीचकर धनुष की तरह मोडकर, रस्सी एक पेड से बाँध दी। फिर पानी मे डूबे हुए बेत के छोर पर एक लोहे का काँटा बाँध उसमे एक बिल्ली को मारकर पिरो दिया। फदा इस ढग से लगाया हुआ था कि घडियाल द्वारा बिल्ली को निगलते ही बेत का बधन ढीला हो जाये और बेंत ऊपर उठ जाये।

अगले दिन सुबह आकर देखा तो 'हौआ गर्त' का घडियाल मामा आसमान मे लटक रहा था।

"अरे, देखो! वही है केलन महाशय।" अप्पु ने गर्त के एक कोने की तरफ इशारा करते हुए कहा।

श्रीधरन ने देखा। वहाँ एक चट्टान पर उकडूँ बैठकर पीट्टक्केलन नदी मे बसी डाल रहा है—मानो उसको इन बातो से कोई सरोकार ही नही है।

आसमान मे अपनी विराट आकृति लिये विवशतावश लटकनेवाले घडियाल को श्रीधरन ने ताज्जुब से देखा। बेत के छोर, लोहे के काँटे और बिल्ली को गले मे फसने के कारण आधा मुँह खोलकर लटकनेवाले घडियाल मामा का चेहरा वह पूरी तरह नही देख सका। लेकिन उसका फूला हुआ पेट और आरे की तरह पूँछ उसे ठीक-ठीक दिख रही थी। पूँछ कभी-कभी हिल उठती थी।

10 पेटर कुजप्पु

कुजप्पु की युद्ध-कथाओ के खतरो की अगर एक सूची ले ली जाय तो उसे कम से कम एक सौ-एक बार मरना चाहिए था, जबकि उसकी मृत्यु एक बार भी नहीं हुई। ओ०सी० स्क्वाड्रन लीडर, कप्तान आदि कई ऊँचे अफसरो ने कुजप्पु को वी० सी० प्रदान करने की ज़ोरदार सिफारिश करने का वादा किया था। पर उनके द्वारा वादा न निभाये जाने का कारण हो या उनकी सिफारिशो की परवाह न करने का कारण हो, कुजप्पु को वी० सी० मिलने की बात तो दूर, 'मिलिटरी डेस्पाच' मे 'मेन्शन' भी नही मिला। कुजप्पु कहा करता था कि ये गोरे लोग अहसान फरामोश हैं। कितने गोरो को उसने मौत के मुँह से बाल-बाल बचाया था। लडाई जीतने के बाद वे सब कुछ बिसराकर बैठ गये। कुत्ते उनसे ज्यादा एहसानमन्द होते है।

पर, कुजप्पु के बस्रा रेगिस्तान के वीर कारनामो की दास्तान सुनकर अतिराणिप्पाट के लोगो के रोगटे खडे हो गये और उन्होने उसको, 'बस्रा कुजप्पु' की उपाधि प्रदान की। आगे चलकर नाम तो लुप्त हो गया। मात्र 'बस्रा' रह गया—बस्रा अर्थात् झूठ बोलनेवाला।

चार-पाँच महीने बाद बस्रा कुजप्पु के हाथ के पैसे कम होने लगे। और दो तीन महीने बीतने पर तो जेब बिलकुल खाली हो गयी। अब वह फौज से लायी हुई सैनिक वर्दियो और अन्य सामानो को एक-एक करके बेचने लगा। पहले पहल उसने मच्छरदानी बेच डाली। फिर कमली, खाकी शर्ट, पतलून बेल्ट, किट्ट, कानवास बेग आदि एक-एक कर बिदा होने लगे। आखिर काबा मसजिद की तस्बीरवाला बटुआ भी उसने गपिया परगोटन को आठ आने मे दे दिया।

लम्बी गरदनवाले मिलिटरी जूतो के लिए ग्राहक नही मिला। श्रीधरन के दादा एक दफा कन्निप्परपु मे आये तो कुजप्पु ने वे जूते उन्हे भेंट कर दिये। कुजप्पु ने कहा, 'कीचड भरे खेतो मे काम करते समय ये आपके काम आयेगे।'

आखिर 'ओवरसीस सर्विस' मेडल, बडी-बडी मूछे और बस्रा की उपाधि ही कुजप्पु के पास बच गये। फौजी अफसाना सुनने मे भी लोग अब आनाकानी करने लगे। बातचीत के लिए सबका स्वागत करनेवाले कठफोडवा वेलप्पन ने यही कहा, "कुजप्पु दूसरी कोई बात हो तो बताओ। सुना है कि चावल का दाम दिन दूना रात चौगुना बढ रहा है। ठीक है?"

कुजप्पु अपने कुतबनुमा से मनबहलाव करता हुआ घर पर ही रहने लगा।

फौज मे सेवा करते समय कुजप्पु पिताजी के नाम कभी-कभी पैसा भेजता था। अब हाथ नगा होने पर और सारा सामान बिक जाने के बाद वह हट करने

लगा कि जितना पैसा उसने मिलिटरी से भेजा था, सब का सब उसे अभी वापस मिलना चाहिए। कुजप्पु मे पिताजी के मुँह के सामने पूछने का हौसला नही था। विमाता के जरिए ही उसने पैसा लौटा देने की नोटिस दी थी।

यह सुनकर कृष्णन मास्टर नाराज और गमगीन हो उठा।

"अरे, बदमाश, तुझे अपना पैसा वापस मिलना चाहिए न ?" कृष्णन मास्टर ने जोर से पूछा।

अपनी बडी मूछो को मरोडते हुए रसोईघर के बरामदे मे कुजप्पु उकडूं बैठा था।

"हाँ चाहिए बिलकुल चाहिए—मैने बन्दूक पकडकर मेहनत करके ही पैसा कमाया था न ?"

कुजप्पु ने धीमी आवाज मे बड-बड की। (पिताजी से कुजप्पु हमेशा इसी तरह बोलता था। सभी सवालो का वह जवाब देता—पर, सवाल पूछनेवाले को सुनाई देने के लिए नही।)

एक दिन कृष्णन मास्टर के स्कूल जाने के बाद कुजप्पु ने नारियल के पेड पर चढकर नारियल का एक गुच्छा काटकर नीचे डाल दिया। कुल मिला कर आठ नारियल थे। दूकान मे ले जाकर उन्हे बेच डाला। रेल के फाटक के मकान मे जाकर साथियो के साथ ताश खेला। हार गया तो चूतड झाडकर चुपके से वहाँ से घर का रास्ता नापा।

नयी सडक के रेल फाटक का मकान तब से कुजप्पु का डेरा बन गया।

घर के झगडे-फसादो से बदहवास होकर श्रीधरन की माँ अपने पति से एक दो रुपये माँग कर कुजप्पु को देती थी। यह नित्यकर्म-सा हो गया। मियाद लम्बी होने पर कुजप्पु अपनी नाराजगी जाहिर करता। घर के बर्तनो को वह जमीन पर पटक देता—एक्स मिलिटरी वाले अपने सौतेले बेटे की दुष्टता देखकर श्रीधरन की माँ रसोईघर मे बैठकर रोती, तब कुजप्पु शान्त होता। फिर वह उठकर फाटक-घर मे जाकर सो जाता। दिन-रात वह सोता ही रहता। कभी-कभी नदी तक जाकर केकडा पकडने के अपने पुराने शौक म समय बिताता।

कन्निप्परपु मे अशांति की एक और घटना घटी। श्रीधरन का गोपालन भैया ही उसका कारण था।

कृष्णन मास्टर कुछ बातो मे बिलकुल रूढिवादी था। बाल बनाने की सभ्यता से उसे बडी चिढ थी। (अपने गजे सिर के इधर-उधर फैले हुए कुछ सफेद बालो को वह रेशमी धागे की गाँठ की तरह टोपी मे सुरक्षित रखता था।)

कुजप्पु के बाल घने थे। फौज मे भर्ती होने पर उन्हे काटा गया था। वापस आने पर बालो की तरफ उसने कोई ध्यान नही दिया। गोपालन के सघन केशो पर कृष्णन मास्टर को गर्व था। दाहिनी तरफ साँप की पूंछ-जैसी इन चोटियो

को बाँधते देखना कितना सुन्दर लगता है। पर, गोपालन को यह हास्यास्पद लगने लगा था। मोहल्ले के कई नौजवानो को बार-बार सैलून मे जाकर और बालो को सजा-सवार कर बाल बनवाते चलते हुए देखकर उसके मन मे हीन भावना पैदा हो गयी थी। वह देहाती नाई रामन से गोलाकार मे कटिंग कराने के बाद औरतो की तरह बालो को गूँथ कर चलता था। गोपालन राइटर को यह बिलकुल अच्छा नही लगा। कुछ औरते ईर्ष्या के साथ उसके बालो को देखती तो उसका मन मसोस कर रहा जाता। नहाते वक्त तेल की भी ज्यादा जरूरत होती थी।

उसने चोटी कटवाने की एक अर्जी मौसी के द्वारा पिताजी के सामने रखी। तब पिताजी ने कहा, "उसको मुडन करके मुसलमान की तरह चलने की तमन्ना है न ? फिर वह मेरे सामने न दिखे।"

गोपालन राइटर बालो को गाँठ देकर चलने लगा।

एक दिन रात को गोपालन के कमरे म शोर-शराबा सुनकर कृष्णन मास्टर दौडता हुआ वहाँ गया। कमरे मे बालो के जलने की बदबू ! कुजप्पु भी कमरे मे था।

मेज पर मिट्टी के तेल का दिया जलाकर गोपालन एक कहानी की पुस्तक पढता हुआ सो गया था। मेज पर टिके सिर के खुले पडे बालो मे आग लग गयी। दिय से बिखरे हुए मिट्टी के तेल ने आग को और भडका दिया।

कृष्णन मास्टर को लगा कि गोपालन ने जान बूझकर ऐसा किया है। कुजप्पु ने भी छोटे भाई की सहायता की होगी। हाँ, कुजप्पु न ही यह तरकीब सुझायी होगी।

गोपालन की चोटी का अधिकाँश भाग जल चुका था। अब 'क्रोप' करके उसे ठीक करना होगा। कृष्णन मास्टर ने कुछ नही कहा।

दूसरे दिन सुबह गोपालन राइटर शहर के 'नेशनल हेयर कटिंग सैलून' मे गया। बाल और दाढी बनाने के बाद नाई मुत्तु ने उसके चेहरे पर जो पाउडर लगा दिया था, उसे दिखाते हुए वह बाहर आया।

यो कुछ महीने बीत गये।

घर मे कभी-कभी झगडा-फसाद, केकडा पकडना, ताश खेलना और कभी ेलवे गेट के मकान मे नीद, इन्ही मे बप्पा के दिन बीत रहे थे।

एक दिन दोपहर को अपने हाथ मे चार-पाँच डिब्बे और कन्धे पर तीनचार ब्रुश लटकाये कुजप्पु घर आया। श्रीधरन की माँ ने बाहर आकर देखा। डिब्बो मे कई तरह के रग थे। रग और तारपीन के तेल की गध वहाँ छा रही थी।

रगो के डिब्बे और ब्रुश बरामदे मे रखकर, बप्पा अपनी बडी मूँछें मरोडते हुए बडी देर तक चिन्तामग्न खडा रहा।

"अरे कुजप्पु, इन सामानो की क्या जरूरत पडी है ?" श्रीधरन की माँ ने जिज्ञासा ज़ाहिर की।

कुजप्पु ने सारा किस्सा विमाता को सुना दिया।

अतिराणिप्पाट के कोने मे रहने वाले पेंटर स्तेव ने कुजप्पु से पाँच रुपये उधार लिये थे। दो तीन साल पहले जब कुजप्पु फौज से अवकाश ग्रहण कर एक अमीर की तरह ज़िन्दगी गुजार रहा था तभी उसने उधार दिया था। अब कुजप्पु को याद आया कि स्तेव को उसने पाँच रुपये उधार दिये थे। स्तेव के यहाँ जाकर उसने पैसे माँगे। "अगले हफ्ते मे जरूर दूंगा" कहकर स्तेव मियाद को बढाने लगा। यो दो महीने बीते गये। आज भी वहाँ जाकर तकाजा करने पर 'उस ईसाई सुअर' ने अगले सप्ताह कहकर फिर टालने की कोशिश की तो बस्रा चुप न रह सका और स्तेव के रग और ब्रुश जबरदस्ती उठाकर ले आया।

अब क्या करे, यही उसकी चिन्ता है।

घर के दरवाजे और खम्भे गन्दे हो गये है। ऐसी हालत मे अधिक विचार करने की क्या जरूरत है ? कुजप्पु कमीज उतार सिर्फ खाकी पतलून पहनकर रग के डिब्बे और ब्रुश हाथ मे लेकर रग पोतने लगा।

खिडकियो और खम्भो पर रग भर दिया। रगो को चुनते समय उसने अपना कला-बोध भी प्रकट किया। दरवाज़े की हर-एक सलाई पर अलग-अलग तरह के रग भर दिये।

खिडकियो और खम्भो को रगने का काम तो समाप्त हुआ। अब ? एक पल उसने विचार किया। रसोई मे घुस गया। विमाता के रसोईघर के सामानो को रग देने की इच्छा हुई।

लकडी के बने सभी सामानो पर बस्रा के रग और ब्रुश का आक्रमण होने लगा। और सब कामो के बाद रसोईघर एक अच्छे अजायब घर मे परिवर्तित हो गया। लाल ऊखल, पीला मूसल, नीली खुरचनी, हरी चक्की, रगबिरगे कर-छुल। इन्द्रधनुष के सात रगो का एक मुर्गीखाना भी।

सभी काम-काज खतम होने पर शरीर पर तरह-तरह के रग लग जाने के कारण कुजप्पु चीते की तरह दिखाई देने लगा।

तभी बाहर से किसी की आवाज़ आयी। रसोई घर के दरवाज़े से झाँक कर देखा तो आँगन मे 'ईसाई सुअर स्वेत' खडा था। उसके हाथ मे पाँच रुपये का नोट भी था।

स्वेत कही से पाँच रुपये उधार लेकर अपने रगरोगन वापस लेने के लिए उतावला होकर आया था।

बस्रा असमजस मे पड गया।

खाली डिब्बे और ब्रुश वहाँ थे। रग तो खिडकियो और सामानो पर पुत गया

गँया था।

आखिर बस्ना ने एक तरकीब सोची। रग के मूल्य के तौर पर पाँच रुपये स्वेत के हाथ मे ही रहने दिये और सभी डिब्बे और ब्रुश लौटा दिये।

स्वेत खिन्न होकर लौट गया।

उस दिन, रात को बस्ना को एक नयी अतर्दृष्टि मिली क्यो न मैं एक पेंटर बन जाऊँ? कुछ ही घटो के अन्दर कुन्जप्पु के मन मे रगो के प्रति प्रेम पैदा हो गया था।

कुजप्पु अगले दिन विमाता से पाँच रुपसे उधार माँग कर बाज़ार जाकर एक ब्रुश और रग का डिब्बा खरीद लाया।

सुबह चाय पीकर रग का डिब्बा और ब्रुश हाथ मे लेकर कुजप्पु घर से चल देता। गाँव मे रगनेवालो की बडी माँग थी। उस इलाके पर स्वेन ने अपना एकाधिकार जमा लिया था। अब उसके लिए एक प्रतिद्वन्द्वी पैदा हो गया।

यो बस्ना कुजप्पु 'पेंटर कुजप्पु' बन गया।

कुजप्पु म इस परिवर्तन की दास्तान अपनी पत्नी के मुँह से सुनकर कृष्णन मास्टर को एकाएक भरोसा नही हुआ।

विविध रगो के लेप से बदसूरत बने घर की खिडकियो और खभो के दृश्य ने कृष्णन मास्टर को खिन्न कर दिया था। मास्टर को कुछ रग-बोध तो था ही-- लेकिन जब यह सुना कि 'कुजप्पु ने एक पेशे के तौर पर पेंटिंग को स्वीकार कर लिया है तो उसने खुशी जाहिर की। आखिर उसको अक्ल तो आयी कि कोई काम-काज करना है। पेंटिंग कोई बुरा धधा नही है। हाँ, कोई भी धधा बुरा नही होता।

मास्टर को एक ही सदेह था वह अपने धधे को आखिर कितने दिन खीचेगा?

11 ज्ञान के मूलस्रोत

श्रीधरन इलजिपोयिल से एक बैलगाडी मे ही लौट आया था। सूखी गरी लेकर शहर की तरफ जानेवाली तैय्यन की बैलगाडी मे ही वह चढ गया था।

कन्निप्परपु मे पैर रखते ही घर के रगबिरगे दृश्यो को देखकर वह चकित रह गया। बरामदे मे देखा तो वहाँ 'अन्दमान' चात्तप्पन मज़े से भात खाता दिखाई पडा। पिताजी आराम कुर्सी पर बैठे थे।

पिताजी ने श्रीधरन को नज़दीक बुलाकर गले लगा लिया। फिर हँसते हुए पूछा, "सभी पाठ पढ लिये?"

उसने 'हाँ' सूचक गरदन हिलायी। पिताजी ने उपदेश दिया था कि झूठ नही बोलना चाहिए। इसलिए वह बोला नही।

पिताजी ने श्रीधरन के जाँघिये की जेब टटोली। जेब-भर गुजा! दूसरी जेब

मे कच्चे आम ! (सब कुछ अप्पु का इनाम था।)

पिताजी हँस पडे। कुछ कहा नही। श्रीधरन रसोई घर मे दौड गया।

माँ ने उसको ऐडी से चोटी तक देखा। "अरे, तू धूप मे काला हो गया है न ? रात दिन खेलता कूदता रहता है न !"

श्रीधरन रसोई घर की चक्की, खुरचनी आदि पर आँखें गडाकर खडा था। कितना अजीब है ! नीली खुरचनी, लाल ऊखल

"सब कुछ तेरे बडे भाई की करतूत है।" माँ ने बडे गौरव के साथ बताया। कृजप्पु के पेटर बनने का किस्सा माँ ने विस्तार से सुना दिया।

"अब शाम को आकर बडा भाई तुझे भी रग पोतकर सफेद बनाएगा।" माँ ने चेहरे, कर्णफूल और नाक की नथ को हिला कर हँसते हुए कहा।

माँ ने श्रीधरन को थाली मे भात परोस दिया। श्रीधरन को जल्दी-जल्दी भात निगलते देख माँ ने पूछा, "अरे, इतनी उतावली क्यो ?"

हाँ, कुछ जल्दी है। अन्दमान चात्तपन्न को मेरे भात खाने के बाद पान-सुपारी खाने से पहले ही बरामदे मे हाजिर होना है—अन्दमान चात्तप्पन द्वीप की कथाएं सुनाएगा।

घुटनो तक लम्बा मैला अगोछा पहन कर कमर मे एक बडा चाकू खोस कर चलता है दानवरूप चात्तप्पन। ऊँचे कद का शरीर। देखने पर लगता है मानो लकडी का बना है।

कृष्णन मास्टर के बचपन का सहपाठी था वह। चात्तप्पन की कथा पिताजी ने मा से कही थी। तब श्रीधरन ने भी सुनी थी। नौजवान होने पर चात्तप्पन मजदूरी करने लगा। उसने शादी भी की। एक दिन काम की तलाश मे घर से निकल पडा। उस दिन कोई काम न मिला। दुपहर घर लौट आने पर चात्तप्पन ने एक खास दृश्य देखा—चात्तप्पन की पत्नी तेली केलु के साथ सो रही है। तुरत ही अपनी कमर से चाकू निकालकर उसने केलु का काम तमाम कर दिया। फिर नजदीक से कुछ सूखे नारियल के पत्तो को लेकर एक मशाल बनायी। उसे सुलगा कर हाथ मे लिया। अपनी पत्नी को आगे-आगे चलने का आदेश दिया।

दिन दहाडे मशाल जलाकर बीबी को साथ लेकर पगडडियो से जा रहे चात्तप्पन को देखकर लोगो ने अचरज से पूछा—"अरे चात्तप्पन, यह क्या ?"

चात्तप्पन मुडकर खडा हो गया। उसने लोगो को सारी बात बतायी—"यह औरत जो मेरी बीबी है ना, इसकी एक खास बीमारी है। दिन मे इसकी आँखो से दिखाई नही देता—इसलिए धोखे से यह तेली केलु के साथ सोयी। इसकी बीमारी जब तक दूर न हो, तब तक यह अपने घर मे ही रहे।"

यह मजाक सुनकर लोग ठहाका मार कर हँस पडे। लेकिन तभी वे हक्के बक्के से देखते रह गये। केलु का सिर काटने के बाद खून से सना हुआ चाकू

उसकी कमर मे ही खुँसा था।

स्त्री को उस के घर मे छोड कर चात्तप्पन चाकू लेकर पुलिस स्टेशन पर हाज़िर हो गया।

हत्या के अपराध मे अदालत ने चात्तप्पन को फाँसी की सज़ा सुनायी। फाँसी से चात्तप्पन की ज़िन्दगी समाप्त ही थी, पर किस्मत ने ऐसा न होने दिया। अपील होने पर मृत्युदड को आजीवन कठोर कारावास मे बदल दिया गया। चात्तप्पन को अदमान द्वीप मे निर्वासन मिला।

सजा की मियाद भर अगर वही रहना पडता तो वह किसान बन कर शेष ज़िन्दगी वही गुजारता। लेकिन किस्मत ने अब भी हस्तक्षेप किया। उसे द्वीप म गये पाँच बरस ही बीते थे कि उसी साल ब्रिटिश सरकार की वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में कैदियो के बीच पर्ची डाली गयी तो चात्तप्पन का नम्बर निकल आया। इस तरह चात्तप्पन आजाद होकर अपने प्रदेश मे लौट आया।

अब वह मोहल्ले भर मे मारा-मारा फिरता है।

चात्तप्पन कन्निप्परपु मे अक्सर रविवार को ही आता था। (कृष्णन मास्टर उस दिन घर म हो रहता।) भोजन के समय से पहले ही करीब ग्यारह बजे वह पहुँच जाता।

"चात्तप्पन, क्या समाचार है?" कृष्णन मास्टर अपने सहपाठी से कुशल क्षेम पूछता।

चात्तप्पन चेहरे को नोचता हुआ दाँत निपोर देता। फिर गिद्ध की तरह चुपचाप बैठ जाता।

कृष्णन मास्टर पुराने सहपाठी को भोजन का न्योता देता।

केले के बडे पत्ते म ही उस के लिए भोजन परोस देता। वह अकेले ही करीब डेढ सेर भात खाता। दो किस्म की सब्जियो और कढी के रहने पर भी उसको एक हरी मिर्च और दो टुकडे नमक की खास जरूरत पडती। भात का बडा-सा लड्डू बनाकर उसे सब्जी मे भिगोकर वह अपने मुँह मे डाल लेता। चार पाँच गोले निगल जाने के बाद हरी मिर्च नमक के साथ चबा लेता।

उस बकासुर के खाने का दृश्य श्रीधरन ताज्जुब मे देखता हुआ खडा रहता। अपना प्रिय चाकू औरो को दिखाने मे उस को बडा उत्साह था। कभी-कभी वह उसे कमर से निकाल कर छाती फुलाकर दाँत निपोरता हुआ उससे पीठ खुजलाता। नही तो उससे पैर के नाखून ही काटने लगता। चाकू को अच्छी तरह प्रदर्शित करने का मौका भोजन के बाद पान खाने की तैयारी मे बैठते समय होता। पान-दान से एक पकी सुपारी उठाकर छीलने के बाद उसके टुकडे करते हुए वह कुछ कहानियाँ भी सुनाता—अन्दमान द्वीप के निजी अनुभवो की कहानियाँ। चात्तप्पन की कथा शुरू होते ही श्रीधरन नजदीक आकर खडा हो जाता। हजारो

मील दूर से जहाज से आयी हुई कथाएँ है न। आँखें फाडकर सुनता।

अदमान द्वीप मे निर्वासन के दिनो के शुरू के पाँच-छह महीनो मे एकात कारावास और अनगनित यातनाएँ एक इलाज की तरह बर्दाश्त करनी पडती थी। एक बार जजीरो से पैर मे लगे घाव मे एक बिच्छु ने काट लिया था और एक दफा प्यास बुझाने के लिए गदा पानी पीना पडा था। ऐसी ढेरो मुसीबतो का बखान चात्तप्पन बिलकुल निर्विकार होकर करता।

एक बार सभी बदियो को जगल मे पेड काटने के लिए ले गये। उनमे चात्तप्पन भी था। शाम को जगल से वापस आते समय वार्डर ने कैदियो को गिनकर देखा तो दो आदमियो का पता न था। वे कहाँ गये ?—भागे नही ! फिर ? वहाँ इन्सानो को पकडकर खानवाले जगली इन्सान है। वे लुक छिपकर उन्हे ले गये

"ये बर्बर हब्शी इन्सानो को कैसे खाते है ? पकाकर या भूनकर ?" श्रीधरन ने जिज्ञासा जाहिर की।

"हऊँ—पकाना और भूनना ! क्या उन्हे और कोई काम नही है ? (चात्तप्पन ने सुपारी के छिलके बाहर फेक दिये।) मनुष्य के कच्चे मास को काट-काटकर खाएगे। (चात्तप्पन चाकू से सुपारी काटने लगा।) जिगर को निकाल कर पहले मुखिया को भेट करेगे। लिंग काटकर मुखिया के बच्चो को खाने के लिए देगे। फिर आँख, कान, हाथ-पैर, छाती, नाक के टुकडे चबा-चबाकर खायेगे।" चात्तप्पन ने पान और सुपारी मुँह मे डालते हुए कहा।

उस रात को श्रीधरन नीद मे दो-तीन बार भय से चिल्लाया। हबशियो के बच्चे लिंग काटने आ रहे है।

कुञप्पु नियमित रूप से रग के डिब्बे और ब्रुश लेकर काम करने जाता है। बीच-बीच मे घर के लिए बडी मछलियाँ और श्रीधरन के लिए मिठाई खरीद लाता है।

श्रीधरन का स्कूल खुल गया। इम्तहान मे सब के सब पास हो गये है। ऊँघने वाला अय्यप्पन भी।

लेकिन नये दर्जे मे जाकर बैठने पर जरा बेचैनी महसूस हुई। कात्यायनी कक्षा मे नही है—उस के उपरजिस्ट्रार पिता का तबादला हो गया है। वे सब उत्तर मे कही चले गये है।

एक नया लडका दर्जे मे भर्ती हो गया है भास्करन—कम्पाउण्डर का लडका है। हरा कोट और गले मे रेशमी मफलर पहने हुए एक गोरा खूबसूरत लडका, बडा आडम्बरी।

श्रीधरन हरे ब्लेसर का कोट पहले-पहल देख रहा है। उत्सुकतावश आँखे फाड कर देखा।

"अरे, क्यो उल्लू की तरह ताक रहा है ?" भास्करन ने नफरत से पूछा।

श्रीधरन सकोच से सिकुड कर रह गया। श्रीधरन की वेश-भूषा भास्करन को अच्छी नही लगी।

(खाकी रग का एक जाँघिया और एक खाकी कोट—यही श्रीधरन की पोशाक थी।)

उस शेखीबाज को श्रीधरन कुछ जवाब देना चाहता था। लेकिन कुछ कह न सका। हमेशा ऐसा ही होता हे। ठीक समय पर कुछ नही सूझता—"टिड्डा समझ कर जरा देखा था यार!' यो कहना था।

भीतर मे गुस्सा था—इस टिड्डे ने मुझे उल्लू बताया न ?

बदला लेने का विचार हुआ। हाँ, ठीक है केलुक्कुट्टी के कान भरना ही उचित है। वह टिड्डे को जरूर मजा चखाएगा। उसके हरे बनेसर कोट की पीठ मे एक दफा मारने मे भी केलुक्कुट्टी को हिचकिचाहट नही होगी। केलुक्कुट्टी का पिता हेडकास्टेबिल है। विद्यार्थियो को पानी पीने के लिए मिले छोटे से अवकाश मे श्रीधरन केलुक्कुट्टि की तलास मे स्कूल के अहाते के कोने की तरफ गया। केलुक्कुट्टी एक आम के पेड की ओट मे खडा होकर बीडी पीता हुआ आसमान म धुआँ छोड रहा था।

श्रीधरन को देखते ही केलुक्कुट्टी मुडकर खडा हो गया। व्यग्य से हँसता हुआ बोला, "तेरी 'गिरगिट' चली गयी है न श्रीधरन!"

श्रीधरन को उसका सवाल और हसना बिलकुल पसद नही आया। कात्यायानी को ही केलुक्कुट्टी ने 'गिरगिट' बताया था।

हर रोज नये रग का घाघरा पहन कर कात्यायनी कक्षा मे आती थी। बदलते रगो को देखकर ही केलुक्कुट्टी ने उसे 'गिरगिट' का नाम दिया था। भास्करन से 'उल्लू' सुनकर उसे जितना क्षोभ और बेचैनी हुई थी उससे भी अधिक गुस्सा और दुख कात्यायनी के बारे म केलुक्कुट्टी से 'तेरी गिरगिट' शब्द सुनकर महसूस हुआ।

"तू वही खडा रह। तूने बीडी पी। मै मास्टर से जरूर कहूँगा।" श्रीधरन न केलुक्कुट्टी को धमकी दते हुए कहा।

"अरे, पीले मेढक, जा बता दे मास्टर को!" केलुक्कुट्टी आँखें तरेरकर श्रीधरन के नजदीक आया। श्रीधरन मुँह मोड कर कक्षा की तरफ दौड आया।

"कायर कही का!" केलुक्कुट्टी पीछे से जोर से चिल्लाया।

श्रीधरन कक्षा मे दुखी होकर बैठ गया। उल्लू के अलावा पीला मेढक, कायर आदि बाते भी सुननी पडी। आगे किसी से भी कुछ नही कहूँगा।

कक्षा मे मास्टर नही था। वह बेच के कोने मे बैठ कर ऊँघ रहे अय्यप्पन के निकट जाकर बैठ गया। अय्यप्पन ने भी खामोशी साध ली। वह सिर झुकाए बैठा है। जरा झुक कर देखा। उसके फूले हुए गाल हिल रहे है। वह कुछ मुंह मे डाल

करें चबा रहा है। बेंच पर दो-तीन कच्चे चावल के दाने गिरे पडे हैं। समझ गया। अप्यप्पन घर से चावल चुराकर जेब मे डाल कर लाया है और सबसे छिपा कर खा रहा है। माँ की बाते याद आयी। माँ ने कहा था कि पित्त रोग के शिकार बच्चे चावल खाते है।

शाम को घर पहुँचने पर खेलने के लिए कोई साथी नही है। चात्तुण्णि इन दिनो ईद का चाँद हो गया है। वह काम करने जाता है। नदी-तट की लकडी की मिलो से लकडी का चूरा टोकरी मे भरकर वह बाहर बेच आता है—फिलहाल यही चात्तुण्णि का काम है। चात्तुण्णि का बाप हाथीपाँव वाला अय्यप्पन वात के बुखार का शिकार है। चात्तुण्णि की माँ चिरुता पश्चिमी शहर के किनारे के अहाते म रहनेवाली अम्मालु के साथ समुद्री तट की कम्पनी मे काम करने के लिए जाने लगी है। सब लोग कहते है कि अम्मालु एक बुरी औरत है। अम्मालु की एक बेटी है, जिसकी आखे नीली और बाल ताँबे के रग के है। चात्तुण्णि ने कहा था कि वह कम्पनी के एक गोरे साहब की बेटी है।

कभी-कभी रात को चन्दुमूप्पन की पुराण कथा होती। बडा मजा आता।

कन्निप्परपु के पडोस मे ही चन्दुमूप्पन का घर है।

चन्दुमूप्पन का बाप रामन कुष्ठ रोगी है। कमली के चिथडे से शरीर ढककर वह घर के आँगन मे एक प्रेत की तरह बैठा रहता है। उसके पास से निकलने पर बदबू आती है—मछली बाजार की मोरी की बदबू।

रामन के बडे पुत्र चन्दु ने लम्बे अर्से तक चिराई का पेशा किया था। फिर उसी मिल मे मुशी का काम कर रहा है। उसकी उम्र पचपन वर्ष की है। आरा-कशो का मुखिया होने के कारण सब लोग उसको चन्दुमूप्पन ही पुकारते हैं।

ऊँचे कद का सफेद आदमी। पैर अधिक लम्बे है। दुबला है। गालो की हड्डियाँ बाहर दिखाई देती है। एक जबर्दस्त नाक और नोकदार चेहरा (उसमे एक टूटा-फूटा चश्मा भी)। बार-बार दातो को निपोरकर हँसने और तुरत ही ओठ बन्द करने को कोशिश मे अनजाने ही वह मुह बनाकर चलता।

चन्दुमूप्पन एक पूरा भक्त है। मछली माँस कभी छूता भी नही। दिन मे तीन दफा स्नान करता। आधी-रात तक पुराणो का पारायण, जप तप का कार्यक्रम रहता। एक बजे खाना खाकर सोने लेटना। ब्रह्म मुहूर्त मे जाग उठता। फिर जप, तप और पूजा-पाठ। आठ बजे स्नानकर सूरज को प्रणाम करने के बाद विभूति लगाता और काजी पीने के बाद दूकान की तरफ रवाना होता। एक लबी धोती और कमीज उसकी पोशाक है। हाथ मे एक छतरी लटक रही होती। दुकान से दोपहर को खाना खाने घर आता। तब भी वह स्नान करता, जल्दी-जल्दी कौवे का-सा स्नान।

चन्दु मूप्पन शाम को घर वापस आने पर नहाने के लिए जल्दी से एक तौलिया

लेकर आँगन मे उतरता। दो तीन घटो के अन्तराल पर ही फिर उसका स्नान होता। इसके बाद कन्निप्परपु जाता —कृष्णन मास्टर के साथ भक्ति विषयक पुराण कथाओ की चर्चा करने। (कृष्णन मास्टर भी भक्त है। जप-तप करता है लेकिन सामने तस्वीर रखकर उपासना नही करता।)

रामायण, महाभारत, भागवत आदि पुराणो के कुछ दृश्यो और पात्रो के सबध मे मास्टर और मूप्पन के बीच खब बहसें होती। कृष्णन मास्टर पडित है। चन्दु मूप्पन को रामायण और महाभारत कठस्थ हैं। मीठी आवाज मे वह पारायण भी करता। चन्दुमूप्पन की इस भक्ति के बारे में कुजप्पु के मन मे नफरत-सी है।

"हमेशा नहाकर कीर्तन गाने पर अगर मोक्ष मिलेगा तो नाले के मेढक को अवश्य मोक्ष मिलना चाहिए। विभूति लगाने से अगर मोक्ष मिलेगा तो राख मे लेटनेवाले कुत्ते को ही पहले-पहल मिलना चाहिए।" कुजप्पु इस तरह की दलीलें पेश करता।

कृष्णन मास्टर से भक्ति-विषयक चर्चा करने के लिए कन्निप्परपु मे आने वाले चन्दुमूप्पन की खडाऊँ की आवाज सुनते ही कुजप्पु रसोईघर से अपनी यह टिप्पणी करता—"लो, कूद कूदकर आ रहा है मेढक स्वामी।"

लेकिन चन्दु मामा की पुराण-कथाएँ, वर्णन आदि श्रीधरन को बहुत पसद आते। पिता और चन्दुमूप्पन के बीच की बातचीत को वह ध्यान से सुनता। एक नयी दुनिया उसकी कल्पना मे प्रकाशित हो उठती। ऐसा एक अद्भुत प्रसग जहाँ 'नैमिष्यारण्य के मुनि श्रेष्ठ' और अम्ब—अम्बिका – अबालिका आदि विहार करते है।

मास्टर मूप्पन के सवाद मे ऐसी बाते आ जाती जिन्हे श्रीधरन समझ नही पाता

"मधुर मोलि कान्तेय च्चिन्दिच्चितप्पोल
नृपवरनु बीजस्खलनमुण्डाय।"

पहली पक्ति का अर्थ तो वह समझ गया—राजा ने अपनी सुन्दर पत्नी का स्मरण किया। लेकिन उसके बाद राजा किस सकट मे पड गया, वह तो मालूम नही हुआ।

अगले दिन स्कूल जाते समय पगडडी पर अकस्मात् चात्तुण्णि से भेंट हो गयी। वह अपने सिर पर एक टोकरी लादे आ रहा था।

चात्तुण्णि को रोककर जल्दबाजी मे ही उसने कुशल-क्षेम पूछा। फिर 'मधुर मोलि' का गीत गाकर उस को सुनाया, फिर पूछा

"अरे यार, इसका मतलब क्या है? सुनते ही चात्तुण्णि बोला, "यह चन्दुमूप्पन की रामायण पाट्टु तो नही है?"

चात्तुण्णि को शिक्षा नही मिली, पर उसे अक्ल तो है।

"अरे यार, तुझे यह कैसे मालूम हुआ ?"

"सुनने पर, लेकिन—समझ मे आना बहुत मुश्किल है। बात कुछ टेढी है। तू क्यो नही अपने पिता जी से पूछता ?"

"शका होती है कि यह लडको से न कहने लायक कोई बुरी बात तो नही।" श्रीधरन ने सिर नीचा करते हुए कहा।

यह सुनकर चात्तुण्णि को जरा जोश आ गया। "तू फिर एक बार गा।"

श्रीधरन ने फिर एक दफा 'मधुर मोलि' गाया। पहली पक्ति का सार भी बता दिया।

यह सुनकर चात्तुण्णि ठट्ठा मारकर हस पडा। सिर की टोकरी हिल गयी। लकडी का चूरा उसके चेहरे पर, आँखो पर और कधे पर बिखर गया।

चात्तुण्णि ने श्रीधरन को दीवार के नजदीक बुलाकर सब कुछ समझाया-बताया। उसका अर्थ समझने पर श्रीधरन को नफरत और शरम महसूस हुई।

12 किट्टन मुशी

एक दिन सुबह को श्रीधरन स्कूल जाने को तैयार खडा था कि देखा, किट्टन मुशी घर की तरफ आ रहा है। तब श्रीधरन के पिताजी नहाने के बाद बरामदे मे आ रहे थे।

"आगे चलकर मास्टर को नहाने और जपने की जरूरत नही पडेगी। अब वे 'नहाकर' छोडेगे " किट्टन मुशी ने आँगन से ही बताया।

"अरे, तुम क्यो दिल्लगी की बाते कह रहे हो ? मुझे 'नहाने' कौन आता है ?" "कृष्णन मास्टर ने एक चुटकी भस्म लेते हुए पूछा।

"यह दिल्लगी-तमाशा नही है। ये मुसलमान 'नहाकर' ही छोडेगे। अरे सुना नही ? मुसलमानो का दगा-फसाद शुरू हो गया है।" किट्टन मुशी ने शान से बैठकर बताया।

"सही बात है यह ?" कृष्णन मास्टर का हाथ भस्म के बर्तन मे ही रहा।

"दगा शुरू हुए तीन चार दिन गुजर गये—सेना और पुलिस उधर गयी है।" किट्टन मुशी ने अपनी जेब से सुघनी की डिबिया लेकर उसमे से जरा-सी हथेली पर डाल ली और एक चुटकी भर नाक मे ठूँस कर सुडक ली। चेहरे को जरा झटक कर बोला, "पुलिस और सेना आसमान मे ताककर खडी होगी··· पुल को तोड दिया गया है· ·"

दगा-फसाद। पुलिस और सेना। पुल तोड दिया गया है। श्रीधरन ने इतना ही समझा कि कोई महत्वपूर्ण बात हुई है।

किट्टन मुशी दगाइयो के पराक्रम के बारे मे कई किस्से कहने लगा। काफिरों को धर्म परिवर्तन कराने मे सबसे पहली विधि होती है 'नहाना'। फिर बैल का मांस खिलाना। मुडन कराना। सुन्नत कराना और टोपी पहनाना। कोई एतराज करे तो उसे कत्ल कर दिया जाता। उसे एकदम मार नही डाला जाता। जिन्दा मनुष्य की खाल निकाल कर खडे करना उनका बहुत बडा मनोरजन है।

"तू जल्दी स्कूल जा" किट्टन मुशी का मुँह ताकने वाले श्रीधरन को कृष्णन मास्टर ने झिडकी दी।

श्रीधरन ने समझा कि ये बातें लडको को नही सुननी चाहिए। वह किताबे लेकर स्कूल चला गया।

कुछ दूर जाने पर पगडडी पर बैठा हुआ किट्टन मुशी का मुखतार तुप्रन दिखाई पडा। मदिर के काले पत्थर की प्रतिमा-जैसा तुप्रन।

"अरे बेटा, स्कूल मत जा। दगाई पकड कर ले जाएँगे। मोहल्ले मे गडबड मची हुई है।" श्रीधरन जरा भयभीत होकर चला गया।

किट्टन मुशी अच्छा खूबसूरत नौजवान है। वह सफेद मलमल की धोती और रेशमी कमीज पहनकर चलता है। मुशी नाम महज उसके नाम की शोभा बढाने के लिए जोडा गया था। दरअसल वह मुशी नही है। जीवन भर के लिए उसने ऐसा कोई पेशा नही चुना है। एक अच्छे खानदान का व्यक्ति है। उसका बडा भाई एक कपनी का मैनेजर है। किट्टन मुशी अपना रेशमी कुर्त्ता पहने (उसमे अमरीकी सोने की पालिशवाले क्रेमेन्स प्लेट बटन और कफलिंग्स चमकते रहते) और क्लीन शेव किये अपने चेहरे पर नकली मुस्कान ओढकर हमेशा इधर-उधर घूमता रहता। अच्छे घरो मे ही वह जाता। सबेरे की चाय के समय वह किसी के भी घर मे घुस जाता। रोचक वार्तालाप से मेजबान को खुश करता। दोपहर को भोजन के समय चले जाने का बहाना करता। "जरा बैठो किट्टन मुशी। भोजन के बाद चले जाना।" मेजबान निमत्रण देता।

"एक जगह जाने की बात थी—कोई बात नही, बाद मे चले जायेगे।" कहकर वही बैठ जाता। फिर भोजन के बाद जरा विश्राम लेकर ही पिड छोडता। लेकिन किसी को भी यह खयाल नही आता कि किट्टन मुशी एक चालाक आवारा आदमी है।

लोगो के मन मे किट्टन मुशी के प्रति हार्दिक ममता है। वे यही समझते है कि किट्टन मुशी अपना ही आदमी है, हितैषी है। अगर किसी घर मे मृत्यु हो जाये तो सुनकर सबसे पहले किट्टन मुशी ही वहाँ पहुँचता। शादीवाले के घर मे एक दिन पहले ही वह आ जाता। सिर पर अँगोछा बाँध पडाल बनाने मे और

सजावट करने मे वह हाथ बँटाता। दावत मे कमर मे एक अँगोछा बाँधकर परोसने के काम में भी वह हाथ बँटाता। यो इस इलाके की शादी-ब्याहो मे आदि से अत तक किट्टन मुशी हाजिर रहता है।

इस इलाके और आसपास के समाचार सबसे पहले किट्टन मुशी के मुँह से ही फैलते थे। सब कही वह पहुँचता और रहस्य सूँघ लेता। किसी भी विषय पर लम्बा लेक्चर देता। जरा धीमी आवाज मे बीच-बीच मे हास्य व्यग्य भरे शब्दो को जोडकर मुस्कराते हुए वह घटो बातचीत करता। सबूत के तौर पर जरा सुनें, "कोरुप्पणिक्कर 'आत्रवृद्धि' की बीमारी से तग आने के कारण ऑपरेशन करा कर अस्पताल मे आराम कर रहा है। कल मैंने जाकर देखा, मिशन शाप के नोमिन साहब के सिगार-जैसा लगा।"

किट्टन मुशी बीडी, सिगरेट, चुरुट कुछ नही पीता। शराब का विरोधी है। पर, सूंघनी संघता है। किट्टन मुशी की सूँघनी की डिब्बिया देखने ही लायक है। वह उसे हमेशा अपनी टेट मे ठूंस कर रखता।

किट्टन मुशी के पीछे चलनेवाला एक इन्सान है तुप्रन। वह उसका सेवक, चेला, अग-रक्षक और मुखतार है। तुप्रन के बारे मे कुजप्पु कहता था कि वह किट्टन मुशी का पिट्ठू है। ऊब्रल शरीर, सूखी गरी का-सा चेहरा, काले पत्थर मे बना काला-कलूटा हट्टा-कट्टा इन्सान। जमीन खोदना, दीवार बनाना, टट्टी का निर्माण करना, जुताई करना तुप्रन के कई धधे है। कोई काम-वाम नही होता तो किट्टन मुशी के पीछे चलता। लेकिन सम्मानित घरो मे जाते समय मुशी तुप्रन को साथ लेकर नही जाता। कुछ दूर उसे बिठा देता। 'मुशी मालिक' के लौट आने के इतजार मे तुप्रन घटो प्रतिमा की तरह वही बैठा रहता।

किट्टन मुशी ने तुप्रन को कैसे ढूंढ निकाला यह एक उल्लेखनीय घटना है।

एक दिन सुबह को किट्टन मुँशी जरा टहलने निकला। रेल की पटरियो के नजदीक से चलते समय ठेकेदार उण्णीरि के फाटक के सामने पहुँचा। उस दिन की चाय वहाँ से पीने की साध लिये मुशी बरामदे मे चढकर जरा खखारने लगा।

उण्णीरि की पत्नी ने दरवाजे पर आकर कहा, "घर मे नही है। तडके ही कहीं निकल गये है।

वहाँ और कोई मर्द नही था। किट्टन मुशी को निराश हो वापस जाना पडा। फाटक पर पहुँचने पर हथेली भर सूँघनी ली और नाक मे डालकर विचार करने लगा—अब किधर चलूँ ? किस घर मे जाने से कुछ मिलेगा ?

तब कुदाल कन्धे पर रखकर एक कोमल काली आकृति रेल की पटरियो पर चलती हुई दिखाई पडी। खुली छाती, सुगठित कन्धे और हाथ। सिर्फ एक अँगोछा पहने अर्द्ध नग्न उस इन्सान को मुशी ने ध्यान से देखा।

उसके चले जाने पर किट्टन मुशी को कुछ मनमानी करने का विचार उठा।

कुछ काम कराये बगैर इसे छोडना गुनाह होगा।

ताली बजाकर पुकारा। कुदालवाले ने मुडकर देखा तो नजदीक आने का इशारा किया।

निकट आने पर सिर से लेकर पैर तक फिर एक बार देखा। सरकस मे अपनी छाती पर हाथी को चढानेवाले 'स्ट्रैंगमैन' की तरह का एक आदमी।

बातचीत करने पर समझ गया कि वह दक्षिण से काम की तलाश मे शहर आया है। इस इलाके के बारे मे उसको कुछ भी नही मालूम। नाम है तुप्रन।

मुशी ने पूछा, "अरे, आज तुम्हे कही कोई काम-वाम है?"

"नही हुजूर, काम की तलाश मे निकला हूँ।" तुप्रन ने वडे अदब से बताया।

"खैर, आज मुझे खुदाई करनेवाले एक मजदूर की जरूरत है।"

तुप्रन तैयार हो गया।

"तेरा पारिश्रमिक कितना है?"

"दस आने।"

"दस आने? यह तो जरा ज्यादा है। आठ आने नही तो—तेरे काम की निगरानी करते बैठने का समय मेरे पास नही है। तू ठेका ले ले।"

तुप्रन उसके लिए भी तैयार था। "पूरी जगह खोदनी होगी।" किट्टन मुशी ने इशारा किया। रेल के पास से बायी तरफ उस कटहल के पेड तक और दाहिनी तरफ उस सेमल के पेड तक। बता कितना पैसा चाहिए?"

"हुजूर, तीन रुपये होता है।"

"तीन रुपये नही मिलेगा। दो रुपये।" मुशी ने दो उगलियाँ दिखायी।

तुप्रन ने और कुछ नही कहा। काम वाम तो कही नही है। हामी भर ली।

"अभी से शुरू करो। जल्दी काम समाप्त करना तुम्हारी होशियारी—"

तुप्रन ने सिर हिला दिया।

"काम खतम होने पर उधर आकर पारिश्रमिक ले लेना—मुझे जरूरी काम पर अभी एक जगह पहुँचना है।" किट्टन मुशी ने ठेकेदार के घर की तरफ इशारा किया।

इतनी बाते कहते हुए मुशी फाटक से निकला और रोब मे चलने लगा।

तुप्रन थूक से अपनी हथेली जरा गीली करके फावडा पकडकर जमीन खोदने लगा।

काँटेदार पौधे, घासफूस और छुई-मुई से भरी हुई इस ऊसर जमीन मे तुप्रन के हाथ फावडे और छाती मे एक जुट होकर सघर्ष करने लगे। शाम के धुँधलके से पहले ही उसने अपने काम को सफलता पूर्वक समाप्त किया।

पैसे माँगने फाटक पार के घर मे पहुँचा। ठेकेदार उण्णीरि बरामदे की एक बेच पर लेटकर किसी 'प्लान' की जाँच कर रहा था।

बेलाल-जैं से एक आदमी को फावड़ा लेकर आँगन मे खड़े देखकर उण्णीरि ने पूछा, "क्या है रे ?"

"काम तो खतम हो गया है हुजूर।"

उण्णीरि को कुछ समझ मे नही आया।

"आप ज़रा जाकर देख लें।"

उण्णीरि ने तुप्रन को आँखें तरेरकर देखा।

"दो रुपये के लिए तय किया था। आप ज़रा काम देखकर कुछ न कुछ दे दीजिए।"

"किसने तुम से काम करने को कहा था ?"

"छोटे मालिक ने।"

"छोटा मालिक ?"

"हाँ, छोटा मालिक—रेशम का कमीज़ पहने हुए सफेद मालिक। सुबह को जाते समय आदेश दिया था।"

उण्णीरि ने फिर सोचा—किट्टन मुशी का काम होगा।

पत्नी को बुलाकर पूछा, "किट्टन मुशी इधर आया था क्या ?"

"सुबह को इधर आया था। यह सुनते ही कि आप यहाँ नही है वापस चला गया।" रसोई घर से जवाब मिला।

शक दूर हो जाने पर उण्णीरि ठट्ठा मार हँस पड़ा।

तुप्रन सिर को नोचता हक्का-बक्का खड़ा रहा।

"अरे, इधर मेरे अलावा और कोई बड़ा मालिक और छोटा मालिक नही है। तुझे किसी ने धोखा दिया है। तूने जिस ज़मीन की खुदाई की है, वह रेलवालो की है। मेहनताना मिलना है तो स्टेशन मास्टर से जाकर पूछ ले। वहाँ जाकर पूछने पर सभव है कि मार भी खानी पड़े"

तुप्रन को तभी अपनी बेवकूफी मालूम हो गयी। नाराजी से भी अधिक शरम महसूस हुई। तुप्रन अपनी बदनसीबी को कोसता जल्दी ही वहाँ से चला गया।

फिर तुप्रन ने आँखो मे धूल झोकनेवाले इस रेशमी कमीज़वाले को ढूंढना ही अपना फर्ज समझा।

तीन-चार दिन गुज़रने पर एक शाम पुल के नज़दीक उस आदमी से मुलाकात हो ही गयी। तुप्रन ने पीछे से उसकी रेशमी कमीज़ का छोर पकड़कर खीच लिया।

किट्टन मुशी ने चेहरे को घुमाकर देखा—तुप्रन! पहले असमजस मे पड गया। फिर मुस्कान का मुखौटा चेहरे पर लगा लिया। बड़े प्यार से कुशल क्षेम पूछा—"अरे, कौन तुप्रन ? कोई काम-वाम तो मिल गया है ? गाँव मे बीबी-बच्चे तो सकुशल हैं न ?"

बड़े प्यार से परिवार का कुशल क्षेम पूछनेवाले मालिक से कुछ भी कहने को मन नही हुआ।

फिर किट्टन मुशी और तुप्रन के बीच बडी देर तक बातचीत हुई। उस वार्तालाप के सबध मे कुछ भी अदाज नही लगाया जा सकता। पुल से लेकर किट्टन मुशी के घर तक बातचीत करते हुए वे साथ-साथ चले। घर के फाटक पर पहुँचने तक तुप्रन किट्टन मुशी का चेला बना गया था। घर से भी उसको कुछ सलाह दी गयी। अगले दिन मुर्गे के बाँग देने से भी पहले किट्टन मुशी के घर के सामने पहुँचने का वादा करके तुप्रन ने अपने गुरु से विदा ली।

वादे के मुताबिक सुबह ही सुबह चार बजे तुप्रन मुशी के घर पर हाजिर हो गया।

किट्टन मुशी ने तुप्रन को एक पुरानी कमीज़ पहना दी। हाथ मे पकडने के लिए कागज़ का एक बडल और लोहे की एक बडी चाभी दी।

बडल के अन्दर एक पुराना झाड़ू ही था।

दोनो धुंधलके मे सडक की दक्षिण दिशा म चले। दो-तीन मील चलने के बाद एक ऐसी जगह खडे रहे, जहाँ कुछ दुकानें थी।

यह दक्षिण से पान की गाँठो को ढोकर मुसलमानो के शहर आने का वक्त था। दूर से पान की गठरी लिये एक आदमी को आते देखकर किट्टन मुशी ने एक कोने मे छिपकर तुप्रन को ज़रूरी इशारा किया। तुप्रन तुरन्त दूकान की तरफ आगे बढा। बडल को खोल कर झाड़ू देने लगा।

पान की गाँठ दुकान के सामने पहुँची। "अरे काका !" तुप्रन ने पुकारा, "चार गाँठें इस बरामदे मे रख लो।"

पानवाले ने अपने सिर से पान की चार गाँठें बरामदे में रखी। दुकान खोलने की चाबी तो बरामदे मे ही रखी थी। दुकान को पहचानकर बाकी गाँठो को ढोकर वह चला गया।

देहात के पान-व्यापरियो की यही रीति है। सबेरे पान की गाँठे दुकान मे सौपेंगे। शाम को वापस आते समय उस का पैसा लेगे।

पानवाले मुसलमान के कुछ दूर पहुँचने पर तुप्रन ने झाड़ू को बाँध कर फिर कागज मे लपेट लिया और चाबी जेब मे डालकर, पान की गाँठ को कन्धे पर रख कर दूसरी दुकान के सामने चला।

किट्टन मुशी का इशारा मिला। पान की गाँठे ढोये एक और आदमी आ रहा है।

उसके सिर पर से चार गाँठे नीचे उतार ली।

यो आधे घण्टे के अन्दर कई दुकानो के आँगन मे जाकर उन्होने कुल मिला कर पान की अठारह गाँठे मार ली।

"बस। अब इतनी ही' " किट्टन मुशी ने आदेश दिया।

तुप्रन ने झाड़ू को दूर फैंक दिया। कागज मे अपना कुर्त्ता लपेट कर कमर मे ठूंस लिया और पान की गाँठे सिर पर लाद कर शहर की तरफ चलने लगा—पीछे कुछ दूर किट्टन मुशी भी।

सामान बाजार मे बेच दिया। किट्टन मुशी ने पूरा पैसा तुप्रन को दिया।

किट्टन मुशी के लिए यह मात्र मनोरजन था।

13 दगा-फसाद

दगा-फसाद जबरदस्त हो रहा है।

अतिराणिप्पाट के सभी लोग इस आशका से आतकित है कि दगाई कब शहर मे अकस्मात् आक्रमण कर बैठे। उनका आक्रमण किसी भी क्षण हो सकता है। सुना है कि जिले के दक्षिण-पूर्वी इलाको म दगाइयो ने कब्जा कर रखा है। वे अदालतो पर अचानक आक्रमण कर खजानो को लूटकर रिकार्डों को जला दते है और पुलिस स्टेशनो पर धावा बोल कर पिस्तौल और बन्दूकें छीन कर सब कही अशाति पैदा कर रहे हैं।

नपूतिरिया के महलो और अन्य हिन्दू घरो पर आक्रमण कर चावल और पैसा लूट लेते है और हिन्दुओ को जबरदस्ती धर्म-परिवर्तन करन के लिए विवश करते हैं। जो कोई धर्म-परिवर्तन के लिए राजी नही होता, तुरन्त उसको मौत के घाट उतार दिया जाता है। वे एक जुट होकर जिहाद बोलते हुए आगे बढ रहे है। उन्हाने अपने राजाओ, राज्यपालो और सेनापतियो को तैनात किया है। ब्रिटिश शासन खतम होने लगा ह।

दगाइयो स बदहवास होकर झुड के झुड लोग गठरियाँ बाधकर वस्तियो से शहर की तरफ बढ रहे है। दगा-फसाद इधर फैल जाय तो शहर के लोग किधर जाएँगे ?

अतिराणिप्पाट के बुजुर्ग आदमियो के बीच सलाह-मशविरा हुआ। उन्होंने कृष्णन मास्टर के सभापतित्व मे एक सभा का आयोजन किया। दगाइयो के आने पर उनका मुकाबला करना चाहिए। उसके लिए सबसे पहले हथियारो को इकट्ठा करना चाहिए। बन्दूकें नही मिलेगी। फिर क्या करेंगे ?

"ताडो और नारियलो के तनो से भाले बनाने चाहिए।" मूंछ कणारन ने राय जाहिर की। सब लोग उससे सहमत हो गये।

कठफोडवा वेलप्पन के पास गये। "अरे, वेलप्पन" मूंछ ने कहा, "दगाइयो के आने पर हम मौके के मुताबिक या तो उनसे लडेगें या भागकर कही छिप लेगे —पर, तू कुछ भी नही कर सकेगा। तू इधर ही फस जाएगा। इसलिए दगाइयो पर आक्रमण करने लिए कुछ भाले तू अपने नीलाडन बढई से बनवा कर मुफ्त ही

हमे दे देना, समझे ।"

कठफोडवा ने हामी भर दी।

बढ़ई नीलाडन ने मेज़-कुर्सी का काम स्थगित कर दो दिनो के अन्दर अठाईस भालो को ठीक करके दिया ।

शाम होते ही अतिराणिप्पाट आशका से आकुल हो जाता। शाम को ही भोजन कर औरतो और बच्चो को घर के अन्दर करके दरवाज़ो को बन्द कर सभी जन भाले लेकर दगाइयो की आहट सुनने के लिए कान खडे कर इधर-उधर जमा होकर खडे हो जाते ।

दिन को वे अपना अपना काम करने के लिए जाते। उनका ख्याल है कि दगाई सुबह या आधी रात को ही आएगे ।

एक्स मिलिटरीवाला बस्रा कुजप्पु भी कमर कसकर बाहर आ गया।

टूटा-फूटा एक खाकी पतलून कमर मे डालकर और एक सेन्डो बनियान पहन कर कुजप्पु ने रोज सुबह के समय उस इलाके के नौजवानो को मिलिटरी प्रशिक्षण दिया—ड्रिल, मार्चिग, दौड, उछल-कूद आदि का प्रशिक्षण। (श्रीधरन से एक सीटी उसने उधार ली थी ।)

श्रीधरन को भी एक ड्यूटी मिली मुनादी—घूम फिर कर देशवासियो को युद्ध के सबध मे जरुरी सूचनाएँ देना ।

"शाम को सभी कलालो को अपने-अपने चाकू कन्निप्परपु मे सौप देना है—बडे भाई का हुक्म है " रग का एक खाली डिब्बा गले मे लटका कर उसे एक डडी से पीट-पीट कर श्रीधरन जोरो से ऐलान करता। गले का यह ड्रम और 'बडे भाई का हुक्म' वाक्य श्रीधरन की अपनी देन थी ।

"अरे, यह मत कह कि बडे भाई का हुक्म है। बस इतना ही कह कि कन्निप्परपु मे सौप देना चाहिए।" कुजप्पु ने मूँछ को मरोडते हुए आँखें तरेरकर छोटे भाई को झिडकी दी ।

कन्निप्परपु रात को हथियार-घर मे तबदील हो गया।

सब लोग फुरतीले थे ।

आराकश वेलु के घर के आँगन मे जाकर मूछ कणारन ने ज़ोर से कहा "औरतो के लिए कुछ काम-वाम होगा। अगीठी मे हमेशा तेल जलते रहना चाहिए —अगर मुसलमान घर के भीतर घुसेगा तो उनके सिर पर "

"हमेशा तेल उबाल कर रखने के लिए तेल कहाँ है ?" वेलु की पत्नी उण्णूलि ने दोनो हथेलियो को पसारते हुए पूछा ।

"पानी उबाल कर रखना काफी है।" मूँछ ने खर्च कम करेने का उपाय बताया ।

"हमेशा पानी उबाल कर रखने के लिए लकडी कहाँ है ?" कमर पर हाथ

रखते हुए उण्णूलि ने पूछा।

मूंछ आपे से बाहर हो गया।

"अगर ऐसा है तो मुसलमानो के पीछे चली जाओ। माथे पर घूंघट डालकर कदीशा बनकर चलो—अच्छे बैल का मांस मिलेगा खाने को · ·· "

"अरे कणारन, ऐसी बाते मत बको।" उण्णूलि मूंछ कणारन की तरफ उगली से इशारा करके खडी रही।

मूंछ फिर एक अक्षर भी नही बोला।

"तेल, मरहम की जरूरत नही" उण्णूलि ने सिर हिलाते हुए कहा, "रसोई घर मे मूसल हो तो उण्णूलि अकेली ही दस मुसलमानो के सिर तोड देगी।"

मूंछ ने सिर हिलाकर हां मे हां मिलायी। उण्णूलि ऐसी औरत तो है ही।

दगो के समाचार लोगो को देने के लिए कुछ लघु समाचार-पत्रो का प्रकाशन हुआ। 'दगाई समाचार', 'मलबार झगडा' आदि नामो से ही ये पत्र छपते। दगाग्रस्त इलाको की हालतो और दगाइयो से डरकर भाग जानेवाले लोगो बारे मे मजेदार छोटी मोटी कविताएँ प्रकाशित होती। श्रीधरन ने उन रसीली कविताओ को कठस्थ कर लिया और गा-गाकर अतिराणिप्पाट के लोगो को मतवाला बना दिया।

दगाइयो की करतूतो के सम्बन्ध मे जो अफवाहे प्रचलित थी, उससे ही लोग बेहद डर गये थे। सुना जा रहा था कि बैल का मास खिलाना, नगा बनाकर सुन्नत करना, नहलाने के बाद गला काट डालना आदि ऐसी कई नृशस कारवाइयां दगाई कर रहे है।

दगाइयो के सहायक और गुप्तचर वेश बदलकर शहरो मे घूमते थे। एक दिन किट्टन मुशी ऐसी ही एक खबर लेकर कन्निप्परपु मे आया "क्या सुना नही? कल बाजार मे एक हाथीपांववाले मुसलमान को पुलिस ने शक के कारण पकड लिया। उसकी जाँच करने पर सारा भेद खुल गया। हाथीपाँव न था—दगाइयो द्वारा एजेन्टो तक पहुँचाने के लिए भेजे गये ढेरो पत्र थे—उन्हे गठरी बनाकर पैर पर कपडे से लपेट कर बाँध लिया था। मक्खियो को आकर्षित करने के लिए कुछ शक्कर भी पोत ली थी। सुना है कि पुलिस ने उस आदमी का पैर पत्रो सहित केलो के गुच्छे की तरह काटकर कलक्टर साहब के यहां रख दिया है।

साबुन बेचनेवाले कण्णन ने कहा कि दगइयो के कुछ एजेंट नकली बालो से हिन्दुओ का वेश बना कर माथे पर चन्दन का टीका लगाकर चलने लगे है। जब कण्णन गाँव मे साबुन बेचने गया तो उसने पुलिस द्वारा इस ढग के एक आदमी को पकडने की बात सुनी है।

"कैसे मालूम हुआ कि वह मुसलमान है? क्या उसके कपडो को उतार कर देखा था?" गपिया परगोटन ने पूछा।

"सब के कपडो को कैसे उतार कर देख सकेंगे ?" कण्णन ने बताया, "पुलिस ने एक आसान तरकीब ढूंढ निकाली है। शक होने पर अनजाने में अचानक एक झापड रसीद देती है। चन्दन का टीका लगानवाला अगर मुसलमान है तो 'अल्ला' ही चिल्लाता है।

एक दिन सुबह को मूँछ कणारन ने दौडते हुए आकर बताया, "पलटन पेन्सिल आ पहुँची है।"

"क्या कहा ? पलटन पेन्सिल ?" कृष्णन मास्टर ने ताज्जुब से पूछा।

"हाँ, पलटन पेन्सिल—गोरी पलटन" मूछ ने जोर देकर कहा।

"पलटन स्पेशल है", कृष्णन मास्टर न वहा इकठ्ठे हुए लोगो को मूछ की बातो का सही अर्थ बता दिया।

फसादो को दबान के लिए गोरो की फौज आ गयी है। इस समाचार ने लोगो को तसल्ली दी। लगातार रलगाडियो म बन्दूकें और भाले लिय सफर करनेवाले गोरे बन्दरो-जैसे सैनिको को अतिराणिप्पाट क मर्द और बच्च बडे आश्चर्य और धीरज के साथ देखत रहे। डर के मारे औरते बाहर नही निकली। अतिराणिप्पाट मे एक यह अफवाह भी प्रचलित हुई कि हथियारो से लैस गोरे सिपाहियो की य यात्राएँ दगाइयो को डराने-धमकाने और देशवासियो मे सुरक्षा-बोध पैदा करन की एक तरकीब थी। पता नहीं, इस अद्‌भुत समाचार की सृष्टि किसने की थी ? मूँछ न उसका प्रचार किया। कई लोगो ने उसका यकीन किया। औरतो न गाल पर उगली रखकर आपस म कुछ खुसर-पुसर की।

सिर्फ वेलु की पत्नी उण्णुलि न ही राय जाहिर की—"झूठी बकवास।"

तब नीलाडन बढई जोर जमाकर बोला, "गोरो के चूतड पर जरूर पूंछ होगी, छेनी की मूँठ की तरह।"

फौज मे गये उसके साले ने ऐसा कहा था।

गोरो की पूछ को देखने के लिए श्रीधरन और चात्तुण्णि फौज की गाडी के इतजार मे रेल को पटरियो के नजदीक लोहे के बाडे पर चढकर खडे हो गये। गाडी पीछे जा रही थी। काजूफल जैसे मुँहवाले सिपाही पिस्तौल पकडे बेतरतीब खडे होकर गा रहे थे।

चात्तुण्णि ने श्रीधरन को धीमे से टहोका और साँस रोककर पीठ फेर खडे एक सैनिक के चूतड की तरफ इशारा करते हुए फुसफुसाया, "अरे, जरा देख तो ! लपेट कर बाँध रखी है।"

श्रीधरन ने ध्यान से देखा। हाँ ठीक ही है। कुछ लपेटकर बाध रखा है। पूँछ ही होगी।

उस दिन कृष्णन मास्टर के स्कूल से लौट आने पर श्रीधरन ने हाँफते हुए आकर अजीब समाचार सुनाया।

"बाबूजी ! मैंने गोरो की पूँछ देखी।"

कृष्णन मास्टर यह सुनकर ठट्ठा मारकर हँस पड़ा। "अरे, क्या बताया ? गोरो की पूंछ ?"

"हाँ, बाबूजी—पूँछ ही है—पूंछ मैंने अपनी आँखो से देखी है। "बेटे को अपने निकट खीच कर गले से लगाते हुए कृष्णन मास्टर ने पूछा—"तू ने क्या देखा ? एकदफा और बता।"

"गोरे ने वह चूतड पर लपेट कर बाँध रखी थी।" श्रीधरन ने बड़े गर्व के साथ कहा।

कृष्णन मास्टर श्रीधरन के गाल में चिकोटी काटकर फिर ठट्ठा मारकर हँस पड़ा।

"श्रीधरन, तू तो एकदम बुद्धू है।" मास्टर ने टोपी और कोट उतारते हुए कहा, "गोरो के पीछे दिखाई देनेवाली थैली उनकी पूंछ नही है। वह तो सैनिक का किट है—किट बैग—भोजन पानी और अन्य जरूरी चीजो को रखने की थैली—समझा ?"

श्रीधरन समझ गया। गोरो की पूंछ गायब होने से थोडा निराश भी हुआ।

अतिराणिप्पाट मे रात को कुछ तमाशा भी होता रहता।

एक दिन आधी रात को कुबड़े वेलु के घर से चीत्कार सुनकर सभी पहरेदार चाकू और भालो को लेकर वहाँ दौड़े आये। कुबडा वेलु भी पहरेदारो के बीच मे था। वेलु की नयी बीबी अच्चा ही घर मे थी।

उसने आँगन से एक काली कलूटी आकृति भागते हुए देखी थी। तभी वह चिल्लायी थी।

"शायद चोर होगा। ज़रा देखो तो सामान की चोरी हुई है कि नही ?" वेलु ने कहा।

जाँच करने पर मुर्गी माँ नदारत थी। उस के बच्चे लुक-छिप कर लेटे थे। मुर्गीखाना और जमीन पानी से भीगे थे।

"सियार चोई की ही करतूत है"—मूंछ ने हँसते हुए कहा।

मुर्गी के हल्ला मचाने से बचने के लिए उसने एक बर्तन भर पानी उनके ऊपर डाल दिया। फिर घर खोलकर मुर्गी को पकडकर फरार हो गया—यही थी सियार चोई की करतूत।"

"अब मुर्गीखाने को घर के अन्दर रखकर सो जाना, समझी।" कुबड़े वेलु ने पत्नी को उपदेश दिया, "मुर्गी और चोई गायब ही समझो।"

काला-कलूटा दुबला-पतला चोई कही दूर से अतिराणिप्पाट मे आकर बसा था। उसका पेशा चोरी करना ही है। केलो के गुच्छे, नारियल, सुपारी, बर्तन आदि की चोरी ही उसका पेशा है। नुकीला चेहरा होने से या मुर्गी की चोरी करने

से नही, बल्कि एक और कारण से उसको सियार नाम मिला था। एक दफा चोई को चोरी करते समय रगे हाथो पकड लिया गया। लोगो ने उसकी अच्छी मरम्मत करनी चाही। लेकिन पहली मार से ही वह बेहोश होकर गिर पडा। वह न हिला न डुला। साँस भी नही ली। मुँह फाडे बेहोश पडा रहा। उसे पकडनेवाले सब लोग इस विचार से डरकर वहाँ से तुरत गायब हो गये कि किसी मर्म पर मार पडने से इसकी मृत्यु हो गयी है। सबके वहाँ से चले जाने के बाद चोई उठ खडा हुआ और एकदम भाग गया।

और, एक बार किसी वस्तु की चोरी करके दौडते वक्त 'चोर, चोर' चिल्लाकर लोग उसके पीछे दौडने लगे। चोई रेलव पुल के नीचे घुसकर सियार की तरह रेंगकर कही नदारद हो गया। उस दिन मे लोग चोई को सियार के नाम से पुकारने लगे।

सियार चोई दिन मे मुश्किल से ही दिखाई देता।

"उस सियार को मै देखूंगा—तब मजा चखाऊँगा," मच्छर गोपालन ने दाँत किटकिटाकर गुस्से से कहा।

"हाँ, तुम उसे देखोगे—पुल के नीचे जाकर तलाश करो। शायद—" मूँछ ने हँसी उडायी।

तभी कुछ दूर से एक गीत सुनाई पडा।

आराकश शराबी कुट्टाई का गीत था। उम रात के गीत ने अतिराणिप्पाट के लोगो के रोंगटे खडे कर दिये।

कुट्टाई को अतिराणिप्पाट की रक्षा-सेना मे रत्ती भर विश्वास नही। "अगर मुसलमान और हिन्दू एक साथ शराब पिये तो दगा-फसाद कुछ भी नही होगा।" कुट्टाई की यही सलाह थी।

कुट्टाई अकेला है। दिन मे खून-पसीना एक कर काम करता। रात भर शराब पीकर उन्मत्त हो गीत गाता चलता।

अतिराणिप्पाट के जवानो की हँसी उडाने-वाले गीत के बाद कुट्टाई ने इश्क का नगमा भी सुनाया

'मामा मामी को अगरमाला खरीदते तो
मैं भी अपनी कुकी को साडी खरीद देता॥'

अतिराणिप्पाट के पहरेदार जवानो की आँखे लगने लगी थी। कुछ लोग नौजवानो को सावधान रहने का आदेश देकर थोडी देर सोने के लिए अपने-अपने घरो मे घुस गये।

एक दिन कुबडे वेलु का साला कुंजाडि अतिराणिप्पाट मे आया। वह फौजी शिविर का रसोइया था। सामान खरीदने के लिए जो फौजी लारी शहर मे आयी थी, उसमे चढकर ही वह अपनी बहन को देखने आया था। शाम को ही वह वापस

चला जायेगा।

दगे के सबध मे ताजा समाचार सुनने की इच्छा से कृष्णन मास्टर ने कुजाडि को कन्निप्परपु मे निमत्रण दिया।

कुजाडि ने कहा कि गोरो की फौज के आने से दगाई जगलो मे जाकर छिप गये है। औरतो और बच्चो को घर मे छोडकर ही ये मुसलमान जगलो मे फरार हो गये है। सैनिको की खुशकिस्मत समझो।

कुजाडि ने एक घटना का जिक्र किया।

पिछली पूर्णिमा की रात थी। कुजाडि अपना काम खतम कर घर वापस जा रहा था। दूध-सी चाँदनी थी। पडाव मे कुछ दूर बने मैदान के नजदीक पहुँचने पर मैदान के चारो तरफ स्पेशल पुलिस तैनात थी। उन्होने 'उधर न जाओ'—कहकर कुजाडि को रोक लिया।

"वहाँ क्या है?" एक परिचित पुलिसमैन से कुजाडि ने धीमी आवाज मे पूछा।

उसने 'जल्दी चले जाओ' का इशारा मात्र किया और बताया नही। शायद कोई मिलिटरी प्रशिक्षण होगा—इस ख्याल से कुजाडि ने लौट जाने का विचार किया। तभी उसने कुछ लोगो को उधर ले जाते हुए देखा। औरते थी—सभी मुसलमान औरते। सफेद ब्लाउज पहने सफेद घूँघट से सिर ढके ये औरते सोने के गहनो को चमकाती चाँदनी मे धीरे-धीरे चलती हुई अजीब जादूभरा दृश्य उपस्थित कर रही थी। पुलिस उन्हे धक्का देकर आगे ले जा रही थी। कुल मिलाकर तीस औरते होगी। उनमे दस-बारह साल की लडकियाँ भी थी। कुजाडि को बाद म मालूम हुआ कि ये औरते दगाइयो के घर की थी। कुछ जोर मे रो रही थी, कुछ फफक-फफककर रोती थी तब कुजाडि को जिबह के लिए ले जायी जाती हुई बकरियो की याद ताजा हो गयी।

थोडी देर बाद हो-हल्ला सा सुनायी पडा। पडाव के गोरे सैनिक आ रहे थे। सब के सब शराब पीकर सुध-बुध खो बैठे थे। कुछ लोग जोर से गा रहे थे तो कुछ मुँह मे उगलियाँ डालकर सीटी बजा रहे थे। कम से कम एक-सौ आदमी होगे। कुजाडि एक वृक्ष की ओट मे छिप गया।

मैदान के बीच टिकी इन औरतो के नजदीक उन गोरे सैनिको को झपटते देखा फिर जोर का रोना-धोना कुजाडि फिर वहाँ नही ठहरा।

दूसरे दिन मैदान मे जाकर देखा तो वह स्थान देवी के लिए बलि चढाये गये चबूतरे जैसा लगा। मिट्टी और घास म खून की बूँदे थी। नफरत से मुँह सिकोडकर ही कुजाडि ने अपना किस्सा खतम किया।

श्रीधरन ने बडे दुख के साथ रुँधे गले से कुजाडि से पूछा, "औरतो को पकड कर मैदान मे क्यो ले गये थे?"

कृष्णन मास्टर को तभी स्मरण आया कि धरन उनकी बातचीत ध्यान से सुन रहा था। मास्टर ने बेटे के चेहरे को गौर से देखा। श्रीधरन का चेहरा गमगीन था। वह रोने ही वाला था। उसकी रोनी सूरत और भीगी आँखें देखकर कृष्णन मास्टर ने कहा, "इन औरतो के मियाँ विद्रोही है। उनसे यह कहलवाने के लिए ही वहाँ ले गये थे कि उनके मियाँ कहाँ है ? कहाँ-कहाँ छिपकर रहते हैं ? तू यह सब सुनकर इधर नही बैठ। जाकर अपना सबक पढ।"

उस दिन रात को श्रीधरन ने लेटते समय एक अजीब सपना देखा। कह नही सकता कि वह सपना था या अर्ध चेतन अवस्था की कल्पना सृष्टि थी।

जगल के हरे मैदान मे दूध-सी चाँदनी म झुड की झुड बकरियाँ चर रही थी। दूर से एक आवाज सुनी। भेडिये आ रहे थे। भेडिये दाँत निपोरकर, पूँछ हिला कर, विकृत स्वर निकालते हुए बकरियो पर झपटते ! बकरियो का मिमियाना, भेडियो का विकृत स्वर और शोर शराबेवाला भयकर सगीत। भेडिये बकरियो के पट और पीठ को नुकीले दाँतो से चीरन-फाडने लगे———फिर अँधेरा——खामोशी !

सूर्योदय हुआ। मैदान भर मे लाल गुलाब खिल उठे है। श्रीधरन फूल तोडने के लिए हाथ बढाता है। छूने पर वह गुलाब नही था, खून की बूँदे थी। हाथ की उँगलियो मे वह रग की तरह चिपक जाता है। उसके नजदीक एक सफेद चट्टान धूप मे जगमगाती है। श्रीधरन ने अपनी उँगली के खून के रग से सफेद चट्टान पर लिख डाला 'दगा फसाद'।

14 आसमान का दुश्मन

नयी सडक के उस पार-- धोबियो की गली के दाहिनी ओर एक खपरैल का मकान अकेला खडा है। उस घर के एक तरफ बाँस की टट्टी से ढके बरामदे मे हर रोज सबेरे और शाम बडी भीड-भाड होती है। वहाँ के तीनो चूल्हो म नारियल के छिलके जल रहे है। उनके सामने काली लुँगी और कमीज पहने उकड' बैठी एक ईसाई औरत बडी हाडी म तैयार रखे आटे को करछुल म थोडा-थोडा लेकर चूल्हे पर रखी मिट्टी की कडाही म डाल रही है। फिर अगारो से भरी एक और हाँडी स उसे ढक देती है। कडाही मे डाले हुए आटे के पक जाने पर ऊपर की अँगारो से भरी हाँडी को हटाती है और नीचे की कडाही की 'सफेद रोटी' को एक चौरस चमचे से बाहर निकालकर केले के पत्तो से ढके बडे थाल म रखती है। कडाही मे फिर आटा डालने से पहले वह उसके तले को तेल के भीगे कपडे से दबाकर चिकना करती है। इस तरह वह औरत लगातार काम मे लगी हुई दीखती है।

अत्तिराणिप्पाट और उसके आसपास के इलाको के लोगो को प्रीतिकर यह भद्र महिला है 'रोटीवाली अम्मा' ।

पापड के आकार की छोटी रोटी का दाम एक पैसा है । दो पैसे देने पर कमल पुष्प की-सी बडी रोटी मिलती । अधन्नी देने पर एक पूरे अडे से बनायी गयी चावल की स्पेशल रोटी मिलती ।

यहाँ की 'सफेद रोटी' तो मशहूर है। 'पुट्टु' भी इधर मिलता। केले के पत्तो से बिछे एक दूसरे थाल मे गरम पुट्टु भी करीन से रखे होते—एक टुकडे क दो पैसे ।

इसके अलावा एक बडी हाँडी म शक्कर की कॉफी भी तयार रखी होती। दो पैसे दने पर इच्छानुसार पी सकते है ।

रोटीवाली अम्मा के यहाँ से सफद रोटी खरीदकर घर ले जाने के लिए या रोटी, पुट्टु आदि वही खाने के लिए कई लोग सुबह स ही आते रहत । कुछ कुलीन घरो म भेजे गय नौकर-चाकर भी रोटियो की प्रतीक्षा म वहाँ बैठे दीखते ।

कृष्णन मास्टर के घर म हफ्ते मे दो-एक बार उस अम्मा के यहाँ से रोटी खरीदी जाती थी। जब कभी श्रीधरन को भी भजा जाता। उस समय श्रीधरन को बडा उत्साह होता। खाने के लालच से नही, बल्कि सफेद रोटी बनाने के उस वातावरण मे थोडी देर खडे रहन और उस अम्मा की आश्चर्यजनक रसोईदारी देखन की इच्छा स ही वह वहाँ जाता । हाँडी मे तैयार आटे का घोल कडाहियो मे डाला जाना, चावल के आटे और ताडी के घोल का हाँडी की रासायनिक प्रक्रिया द्वारा ललचानेवाली गन्धो से युक्त रोटी मे बदलना और उसके मध्य भाग मे सूक्ष्म दानो का उत्पन्न होना—यह सब देखते-देखते श्रीधरन वहा बडी देर तक समय की चिता किये बिना खडा रहता ।

कभी-कभी अगीठी मे जलनेवाले नारियल के छिलको के धुएँ से उसकी आँखो मे आँसू आ जाते ।

वहाँ मनोरजन के लिए और वस्तुएं भी थी । काला पण्ट और फटी-टूटी एक खाकी कमीज पहन कर कोयले की तरह काला-कलूटा एक आदमी अपने सिर पर पीकदान-जैसी टोपी पहने हिले-डुले बिना आँगन की आराम कुर्सी पर धूप मे लेटा सोता । वह बुड्ढा रोटी बनानेवाली उस अम्मा का आदमी है । सालो पहले रिटायर हुआ रेल विभाग का फोरमैन । श्रीधरन को लगा कि बेचारा वहाँ मर जाने के लिए ही लेटा है । उसकी मौत हो गयी है या नही, यह जानने के लिए नजदीक जाने की इच्छा हुई ।

उस आँगन मे हमेशा चित्रकला का प्रदर्शन होता । अम्मा का बेटा स्तेव पेंटर जो था । पहले घरो मे रग पोतने का धधा था, आजकल बोर्ड लिख रहा है । कई रगो और लिपियो के बोर्ड वहाँ सूखने के लिए धूप मे रखे होते ।

इसके अलावा वहाँ नाचते रहते रगो का बगीचा भी है। कई रगो का। गुलाब, डाहलिया, कई रग के जासौन फूल।

एक दिन सुबह कन्निप्परपु मे कुछ मेहमान आये। श्रीधरन को बुलाकर श्रीधरन की माँ ने हाथ मे एक आना रख दिया और धीरे से बोली, "उस अम्मा के यहाँ से जाकर रोटी खरीद ला।"

"एक आने की बाहर रोटियाँ।" मन मे हिसाब लगाते हुए श्रीधरन रोटी बनानेवाली उस अम्मा की तरफ दौड गया।

वहाँ बडी भीड-भाड थी। ताश खेलनेवालो की तरह उस अम्मा के हाथ चल रहे थे। ग्राहक अधीर होकर इन्तजार कर रहे थे।

रोटी की प्रतीक्षा मे मन मसोसनेवालो को अम्मा ने 'पुटटु' खाने का निमत्रण दिया।

पन्द्रह मिनट के बाद श्रीधरन का नम्बर आया। उस अम्मा ने पन्द्रह सफेद रोटियो पर जरा-सा नारियल का दूध छिडकने के बाद केले के झुलसे-से पत्ते मे रोटियाँ लपेटकर श्रीधरन को दे दी।

पोटली को दोनो हाथो से पकडकर श्रीधरन जल्दी-जल्दी चलने लगा। घर म मेहमान इनजार करते होगे।

आँगन म, चित्रकार स्तेव के चित्रो के पास पहुँचने पर श्रीधरन की चाल धीमी हो गयी। एक बार देखा। वहाँ पहुचने पर कुछ मोह मन मे उठा—बोर्ड के रग सूख गये है या नही। छूकर देखने की इच्छा हुई। रगो मे उँगली डुबोकर लकडी की नयी तख्ती पर पेण्टिग करने का मन हुआ। लेकिन वहाँ किसी के आने और देखने की बात स्तेव को बिलकुल पसद नही थी। पतलून भर पहने, झुके हुए हाथ मे हल्का-सा ब्रुश लिये छिलके के रग मे उसे हल्के-से डुबोकर सामने की बडी तख्ती पर बडी सावधानी से लकीरो, अक्षरो और वाक्यो को चित्रित करनेवाला बदसूरत स्तेव श्रीधरन की परछाई सामने पडने पर 'हट जा, हट जा' बकता हुआ कुत्ते की तरह भौकने लगता। बोर्ड पर लिखे हुए वाक्य को ठीक से पढा भी नही जा सकता। स्तेव सूखने के लिए बोर्ड का सिर उल्टा करके ही रखता। बदमाश! कोई इसे पढ ले तो क्या आसमान इसके सिर पर टूट पडेगा?

श्रीधरन ने मन म ठाना कि उन बोर्डों के कुछ शब्द पढे बगैर वह वहाँ से नही हटेगा। जासौन के पौधे के नीचे उल्टे सिरवाला एक बोर्ड उसने चुना। उसमे अक्षर कम थे। उमस बातचीत करनी है।

रोटी की पोटली को पीठ की तरफ हटाकर जरा झुकते हुए योगाभ्यास के ढग से निरीक्षण करने पर वह बोड के अक्षर मुश्किल से पढ पाया।

'इधर आवेदन पत्र आदि " कि उसी क्षण श्रीधरन को महसूस हुआ कि उसकी पीठ पर कोई दीवार गिर पडी है। चौकते हुए वह उठ खडा हुआ। पख फडफडाने

की आवाज़ और सिर के ऊपर मँडराती एक चील का विश्वरूप। हाथ की रोटियो की पोटली को चील ने छीन लिया था। पखो का शोर-शराबा था।

पोटली को छीन लेने की कोशिश मे चील ने अपने लम्बे नाखूनो से श्रीधरन की नगी पीठ और कन्धे को खरोच लिया था।

पीठ मे दर्द महसूस हुआ। श्रीधरन ने पीठ को ज़रा छूकर देखा। खून बह रहा था। ऊपर की तरफ देखा। रोटी की पोटली पैरो मे दबाये चील नारियल के पेड की ऊँचाई तक पहुँच गयी थी। चारो तरफ देखा। हाथ मे ब्रुश लिये सडे दाँतोवाला स्तेव हँस रहा था।

रोटी खरीदने के लिए गये बेटे को चाकू खाये की तैरह लहूलुहान रोते हुए आते देखकर कृष्णन मास्टर बदहवास हो गया।

"रोटी चील ले गयी " श्रीधरन ने रोते हुए कहा।

"जाने दे, कुछ परवाह नही।" मास्टर ने बेटे को तसल्ली दी। फिर उसको अच्छी तरह देखते हुए मास्टर ने पूछा—

"तुम्हारी पीठ मे चोट कैसे लगी ?"

"चील ने नोच लिया।" श्रीधरन ने ज़मीन पर आँखें गडाते हुए कहा।

"क्या रोटी पीठ पर रखी थी ?" श्रीधरन की बातो का मतलब न समझकर मास्टर ने कैफियत माँगी।

जवाब नही मिला।

शरीर के खून को धोकर दवा मल रही माँ को श्रीधरन ने खुल्लम-खुल्ला सारी बाते बतायी। नास्ते के लिए रोटी न मिलने पर भी मेहमानो को हँसाने का अच्छा मौका मिल गया।

उस दिन से श्रीधरन का आसमान मे एक जानी दुश्मन पैदा हुआ—चील।

15 आयिश्शा

कठफोडवा के नीलाडन बढई ने श्रीधरन से एक बार अच्छी लकडी से एक रेखनी बना देने का वादा किया था। उसके पास बैठने पर वह अपने स्वर्गीय पिता बढइयो के मुखिया चेरुकुजन की वीर कथाओ का बखान करने लगता। चेरुकुजन बढई ने एक अंग्रेज साहब को एक चक्करदार कुर्सी बना दी थी और मोहर्रम के समय मुसलमानो को लकडी का एक शामियाना बना दिया था—इस प्रकार स्वर्गीय पिता के बारे मे ढेर सारी बातें बताकर वह रेखनी की बात एकदम भूल जाता।

नीलाडन को एक जगह बिठाने के दृढ निश्चय के साथ एक दिन शाम को श्रीधरन कठफोडवा के घर गया। नीलाडन कटहल की एक कुर्सी की मरम्मत कर रहा था। कठफोडवा अपने उसी कोने मे बैठा पचाग देख रहा था। वह एका-

दशी का व्रत करता है।

श्रीधरन बढई के सामने लकडी की एक बडी तख्ती पर जाकर बैठ गया। कटहल के सुनहरे रग की छिपटियो का यहाँ ढेर बन गया था।

चेरुकुजन बढई ने गाँव के मुखिया को भेट देने के लिए सोलह दराजवाली चन्दन की एक पेटी बना कर दी थी। नीलाडन उस किस्से का बखान कर रहा था। तभी पेट को दबाकर रोता हुआ मच्छर गोपालन आता दिखाई पडा। बढई और श्रीधरन ने उस तरफ निगाहे घुमायी। मच्छर गोपालन के आँगन मे पहुँचने पर मालूम हुआ कि वह पेट के दर्द से नही रो रहा था। दरअसल वह रो नही, हँस रहा था। हँसी न रोक सकने के कारण उसने पेट दबा रखा था।

गोपालन बरामदे मे चढ गया। पचाग देखनेवाले कठफोडवा के सामने एक बेच पर ओधे मुँह लेटकर धुमु धुमु—धुमु धुमु—हँसने लगा।

"अरे, कोवालन' तुझे क्या अपस्मार की तकलीफ है ?" मरक्कोतन ने पूछा।

"अपस्मार नही गोरा गा गोरा " गोपालन पुन हँसने लगा।

"अरे, क्या साब न पेट म पेशाब किया है ?" कठफोडवा ने चुटकी ली।

नही तो, नही तो एक गोरा आदमी केशवन के पीछे दौड गया 'औरत समझकर "

कुर्सी बनानेवाले नीलाडन और श्रीधरन ने कान खडे कर लिये और उसकी बाते सुनने लगे।

बीच-बीच मे हँसते हुए मच्छर गोपालन ने इस घटना का जिक्र किया केशवन ने शाम को बाजार से नमक, मिर्च आदि चीजे खरीद कर अगोछे म बाँध ली और छाती पर लटका कर चलने लगा। तब शराब के नशे म उन्मत्त एक गोरा सैनिक भीड से अलग होकर वहाँ आ पहुँचा। लम्बे बाल लटका कर चलनेवाले केशवन को औरत समझकर गोरा सैनिक उसे पकडने के लिए पीछे दौडा। पकडने के लिए आगे बढनेवाले अग्रेज स 'मैं मुसलमान नही मुसलमान ' चिल्लाकर बेचारा केशवन प्राण हथेली पर रखकर दौडने लगा। केशवन और उस गोरे को आगे और पीछे दौडते देखकर लोग जोर से हल्ला-गुल्ला मचाने लगे। तब गोरा साहब शैतान बनकर सामने दीख पडनेवाले लोगो को मारने-पीटने लगा। इतने मे एक मिलिटरी लॉरी वहाँ पहुँच गयी और उस कामुक पागल को पकड कर ले गयी।

कहानी सुनकर कठफोडवा बडी देर तक हँसी से लोट-पोट होता रहा। श्रीधरन ने कठफोडवा को हँसते हुए पहली दफा देखा था। आँखे मूँदकर नाक चढा कर चेहरे को ऊपर-नीचे हिलाते हुए कठफोडवा हँस रहा था। बीच-बीच मे उसके गले से कोई विकृत शब्द निकलता।

कठफोडवा की पत्नी वल्लिक्कुट्टि को रसोई घर के दरवाजे पर खडी होकर

मुंह फाड हँसते देखकर मच्छर गोपालन ने मज़ाक मे पूछा, "बर्तन मे पानी भरने की तरह रसोई से कोई आवाज़ सुनाई दे रही है कि नही ?"

तभी गोपालन से नीलाडन बढई ने पूछा, "गोरे लोगो के पूंछ होती है क्या ?"

उसी सदर्भ के बीच मूंछ कणारन आ पहुँचा।

सब लोगो को हँसते देखकर मूंछ को बात पकड मे नही आयी। वह झट छाती पीटते हुए बोला, "मेरे लिए, अब कौन होगा ?"

मूंछ मज़ाकिया है। मुसलमानो की तरह बातचीत करता। वह दूसरो की बातचीत ठीक तरह से नकल कर सुनाता। पति की मृत्यु पर लाश को पकडकर रोने-धोने और बकनेवाली पत्नी की वह ठीक से नकल करता। दरअसल वही उसका 'मास्टरपीस' था। पति की लाश को सामने पडा देख पत्नी की स्वार्थ-चिंता सिर उठाती है—"मेरा अब कौन होगा ?"

लेकिन मूंछ के मज़ाक का उस समय कोई असर नही हुआ। उससे भी बडा मज़ाक सुनकर ये लोग हँसी से लोट-पोट हो गये थे।

केशवन और गोरे के इश्क की घटना मूंछ को सुनाने पर वह भी अपस्मार रोगी की तरह हो-हल्ला मचाकर आँगन मे दौड पडा। तभी फाटक से एक आवाज सुनायी दी।

"अपस्मार की अगरबत्ती—अपस्मार की अगरबत्ती "

फिर हल्की-सी धुन मे एक गीत भी। इस अगरबत्ती मे शामिल एक-सौ एक दवाओ की एक लम्बी सूची की घोषणा उस गीत मे थी।

गायक आँगन मे पहुँचा। महदी लगी हुई लम्बी दाढी और ताबे की कटोरी-सा चमकनेवाला गंजा सिर। यह एक मुसलमान बुजुर्ग था। उसने लम्बा कोट पहन रखा था। दाहिने हाथ मे कपडे से लपेटी एक बत्ती थी। बाये कन्धे पर एक झोला।

मच्छर गोपालन कठफोडा के पास बैठकर उसके कान मे कुछ फुसफुसाया। कठफोडवा ने दवा बेचनेवाले मुसलमान की तरफ आँखे तरेरकर सिर हिलाया।

खामोशी छा गयी।

अपस्मार की बत्ती बेचनेवाला थका-हारा मुसलमान बरामदे मे जाकर बैठ गया।

"पीने के लिए कुछ पानी" बूढे ने हाँफते हुए कहा।

कठफोडवा ने पीछे की तरफ हाथ हिलाकर इशारा किया—हर्गिज मत देना।

मूंछ ने आँगन से उठकर मुसलमान के करीब जाकर कान मे बुदबुदाया, "जिहादवाले अब कहाँ पहुँच गये है ?"

सवाल सुनकर बूढा असमजस मे पड गया।

मच्छर गोपालन ज़ोर से बोला—"अरे, तुम अपनी बत्तियो को समेटकर फौरन चले जाओ। यही बेहतर है।"

तभी मूंछ ने एक और राय जाहिर की—"बाज़ार के अय्यप्पन की दूकान पर जल्दी चले जाओ। वहाँ केशवन अपस्मार से हाथ-पाँव पटक रहा है ।"

बूढा मुसलमान कुछ बडबडाता हुआ पोटली को कन्धे पर रखकर गमगीन-सा वहाँ से चला गया।

बूढे के चले जाने के बाद मच्छर गोपालन ने दाँत निपोरते हुए कहा, "यह कोई तमाशा नही है। यह दगाइयो का एजेट है। घर और आदमी की पहचान करने के लिए निकला है—अगरबत्तीवाला।"

"औरत को देखने के लिए ही पानी माँगा था।" कठफोडवा ने नाक सिकोडते हुए कहा।

"वह तो ठीक है।" वल्लिक्कुट्टि ने रसोई मे से कहा, "उसकी नजर इधर ही थी।"

"अरे वेलप्पन, पैसे की सदूकची कही छिपाकर रख। वही अच्छा होगा।" मच्छर गोपालन ने सलाह दी।

मूछ थोडी देर तक चिन्तामग्न हो खडा रहा। (मूंछ चेहरे को मोडकर बाये कन्धे की तरफ नजरे गडाकर खडा होता है तो समझना चाहिए कि वह किसी महत्त्वपूर्ण बात पर विचार कर रहा है।)

मूछ ने झट सिर उठाया, "अगर मै दौड कर उस बुड्ढे की दाढी खीच लं तो कैसा रहे? शायद वह नकली दाढी हो—"

"कणारन, उस की जरूरत नही।" कठफोडवा ने उसे रोक लिया, "उसे अपना रास्ता नापने दो।"

मच्छर गोपालन ने भी कहा कि यही ठीक है। कोई उत्पात करे तो वह विद्रोहियो को पहले इधर ही ले आएगा।

मूछ फिर एक बार अपने कन्धे पर नजरे गडाकर सोचने लगा, "हाँ, मै एक बात करने को इधर आया था।"

वह कठफडोवा के पास जरा हट कर बैठा गया। गोरे की कहानी और अपस्मार बत्तीवाले के आने से वह सब कुछ भूल गया था।

"कणारन, तुम बताओ बात क्या है?" कठफोडवा ने जिज्ञासा प्रकट की।

"तुम हमारे कुबडे वेलु की आच्चा का अफसाना जानते हो?" मूंछ ने दुखी होकर पूछा।

"नही।" कठफोडवा ने सिर हिलाया।

"अगर कोई इधर आकर न बताये तो हमे कैसे मालूम होगा?" वल्लिक्कुट्टि बोली।

"अरी रसोई मे जाकर अपना काम कर। बातचीत करते समय मर्दों का मुंह देखते रहने के अलावा तुझे और कोई काम भी है? धत् हट जा।" कठफोडवा ने

बीबी को चूल्हे की तरफ भगा दिया।

नयी कुर्सी को उठाकर नीलाडन बरामदे मे चढ आया। उसके काम करते वक्त किस्सा सुनने का मौका भी मिलता है, फिर भी इस समय बढई का आना कठफोडवा को अच्छा नही लगा। यह बात उसके चेहरे से साफ जाहिर हो गयी। लेकिन उसने कुछ कहा नही।

श्रीधरन भी धीरे-धीरे बरामदे के पास आकर खडा हो गया।

मूंछ ने सहानुभूति के स्वर मे किस्सा जारी रखा "उनकी बातें बिलकुल दयनीय हैं। आच्चा कुछ कहे बगैर चुपचाप भीतर बैठी रहती है—कुबडा उसी तरह बरामदे मे। किसी के वहाँ आ पहुँचने पर कुबडा नाराज़ी प्रकट करता—बिलकुल अजनबी की तरह।"

"शायद भूत-प्रेत का उपद्रव होगा।" मच्छर गोपालन ने कहा।

"दोनो पर अचानक एक साथ भूत-प्रेत का आक्रमण कैसे हुआ होगा?"

"कब से यह सब शुरू हुआ?" कठफोडवा ने कैफियत माँगी।

"चार-पाँच दिन हुए।" मूंछ ने एक बीडी सुलगाते हुए कहा। फिर कठफोडवा के नजदीक जरा हटकर बैठने के बाद बताया, "ठीक तरह बताऊँ तो कुजाडी जिस दिन वहाँ आया, उसी दिन से भूत-प्रेत की शुरूआत हो गयी।"

कठफोडवा और मच्छर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। फिर बडी देर तक सोचते रहे—ऐसी हालत मे कुजाडी ने ही कुछ न कुछ किया होगा।

"कुजाडी ने उसको कोई जडी-बूटी दी है क्या?" कठफोडवा अपने मन की बात जोरो से कह गया।

"नही, इसकी सभावना तो नही लगती।" उसने अपनी राय अचानक बदल दी।

कुबडे से बहन की शादी करने की कोशिश कुजाडी ने ही की थी। आच्चा देखने मे सुन्दर औरत थी। पर एक बार बिगड गयी थी। एक ठेकेदार कुट्टापु का उसे गर्भ रह गया। पैदा होने के बाद बच्चा तो मर गया। ठेकेदार ने कुछ पैसा भी दिया, लेकिन बात मोहल्ले भर मे फैल गयी। उसका भाई कुजाडी बहन के लिए एक पति की तलाश मे घूमने लगा।

कुबडा वेलु अपनी पहली औरत कोच्ची की मृत्यु के बाद बडी उदासी मे दिन काट रहा था था। वेलु के एक ही बेटा था, वह कही चला गया था। कुबडे को खाना पकाने के लिए एक औरत की ज़रूरत थी। वह आच्चा से शादी करने के लिए इसीलिए तैयार भी हो गया कि औरत के साथ कुछ पैसा मिलने की सभावना भी थी। कुबडे वेलु को इस ढग से खूबसूरत बीबी मिल गयी थी। ऐसी स्थिति मे कुजाडी अपनी बहन और बहनोई को जडी-बूटी क्यो खिलाता?

थोडी देर तक खामोश रहने के बाद मूंछ ने धीमी आवाज मे बताया, "कुजाडी

ने उन्हें जडी बूटी नही दी थी बल्कि—अच्छा मैं वह बात अभी बताता हूँ।"

कलाल अप्पु ने उससे जो रहस्य बताया था उसने उसे उसके सामने खोल दिया।

अप्पु कुबडे वेलु के घर के आँगन म शाम को छिलाई के लिए नारियल के पेड पर चढा था। कुजाडी फौजी अड्डे से बहन को देखने उस दिन आया था। नारियल के पेड से उतरते समय अप्पु ने दरवाजे से एक अद्भुत दृश्य देखा। कुबडा वेलु और अच्चा एक सदूक से कुछ निकालकर उसकी जाँच कर रहे है। अप्पु ने ध्यान से देखा। उसकी आँखे एकदम पीली पड गयी। दरवाजे से रिस आनेवाली धूप मे आच्चा के हाथ मे लटका बडा सोने का हार जगमगा रहा था। जमीन पर पहुँचने पर एक दफा दरवाजे से झाँककर देखने की अप्पु की इच्छा हुई, लेकिन कुबडे ने अचानक दरवाजा बद कर लिया।

मूँछ ने कहा, "अब समझ गये ? कुजाडी अपनी बहन के हाथ मे दौलत सौप-कर चला गया था। आच्चा और कुबडा रात दिन उसका पहरा दे रहे है।"

"कुजाडी को यह दौलत कहाँ से मिली ?" कठफोडवा ने अचरज से पूछा।

"जमीन के अन्दर से तो नही मिली होगी।" मूँछ ने अपना विचार स्पष्ट किया। "विद्रोही मुसलमानो की औरतो को लूटकर या कत्ल करके ले आया होगा। दगाग्रस्त जगहो से कई लोगो ने सोना जमा किया है।"

"शापग्रस्त सोना होगा।" कठफोडवा ने ईर्ष्या से कहा।

"सोने पर शाप-वाप कुछ नही लगता। जिनका नसीब अच्छा है उनके साथ वह जाएगा।' मच्छर गोपालन ने राय जाहिर की।

रसोई घर से एक लबी साँस आयी।

"बेचारा वेलु !" मूँछ न सहानुभूति मे कहा "कुबडे की मुसीबत जरा देखो तो, समुद्र तट की गरी की दूकान मे नौकर था। अच्छी तनख्वाह। अब काम पर जाये बिना माले की निधि का पहरा देकर घर म ही भूत की तरह चुपचाप बैठा हुआ है।

"अरे बच्चू, तुझे क्या आज घर नही जाना है ?" श्रीधरन से कठफोडवा ने पूछा।

श्रीधरन ने घर का रास्ता लिया। घर पहुँचने पर ही स्मरण आया कि बढई से रेखनी की बात कहना तो भूल ही गया।

दूसरे दिन सुबह को चन्दुमूप्पन के अहाते की उत्तरी पगडडियो से शोर-शराबा सुनकर श्रीधरन दौडकर वहाँ पहुँचा। उसने देखा चन्दुमूप्पन और शकुण्णि कपाउण्डर के बीच झगडा हो रहा है।

"रात को जप तप और सुबह उठते ही दूसरे की मिट्टी चोरी करना तेरा पेशा है।" शकुण्णि कपाउण्डर ने चिल्लाकर चन्दुमूप्पन के हाथ से कुदाल छीनकर

दूर फेंक दी।

चन्दुमूप्पन दाँत निपोर कर मुँह बनाता हुआ चुपचाप खडा रहा।

बात श्रीधरन की समझ मे आ गयी।

चन्दुमूप्पन के अहाते के नजदीक उत्तर दिशा मे केलु का अहाता है। (लोग उसे कंजूस केलु पुकारते हैं। खाये-पिये बिना उसने पच्चीस बरसो के अन्दर कई खेत और अहाते खरीदे हैं।) केलु का बडा लडका अप्पुण्णि समाज सेवक है और दूसरा लडका है शकुण्णि कपाउण्डर। उसने एक दो महीने किसी औषधालय मे काम कर कपाउण्डर का बिल्ला हस्तगत किया है। लोगो को लडवाना और फिर मुखिया बनकर दोनो पक्षो मे समझौता कराकर दोनो से पैसा ऐंठना यही कम्पाण्डर का पेशा है। सिविल और क्रिमिनल दोनो मुकदमे वह स्वीकार करता। सिविल मुकदमो के सलाहकार के रूप मे 'अर्जीनवीस आण्डि' और क्रिमिनल केस के सलाहकार के रूप मे रेल-कुली 'गोल केलप्पन' भी हमेशा उसके पीछे रहते। पीला चपटा चेहरा, नाक के नीचे एक छोटी-सी मूँछ और भैंस की आवाजवाले इस तगड़े नाटे आदमी का दर्शन उस इलाके के लोगो के लिए हमेशा अपशकुन है। मूंछ कणारन ने उसको 'शकुनि कपाउण्डर' का नाम दिया है।

लेकिन चन्दुमूप्पन के साथ के आज के झगडे मे इन्साफ शकुण्णि कपाउण्डर के पक्ष मे था। चन्दुमूप्पन और कजूं केलुस के अहातो का विभाजन एक छोटी-सी पगडडी से ही हुआ है। दोनो अहातो के लिए घेराबन्दी नही थी। सुबह को नहाने जाने से पहले चन्दुमूप्पन थोडी कसरत करता, मतलब कुदाल लेकर अहाते मे खुदाई। कभी-कभी कसरत का अखाडा पगडडी ही होता। पगडडी से मिट्टी खोदकर अपनी दीवार पर डालता। लगातार मिट्टी खोदने से पगडडी की गहराई भी बढने लगी। पगडडी से मिट्टी मिलने की उम्मीद खत्म होने पर वह कजूस केलु के अहाते की दीवार से कुछ न कुछ मिट्टी खुरचने लगा। कुछ महीनो तक लगातार खुरचने से पगडडी मे कोई कमी नही आयी। लेकिन चन्दुमूप्पन का अहाता और पगडडी एक मीटर उत्तर की तरफ बढ गये।

आज सुबह शकुण्णि कपाउण्डर ने इस चोरी की प्रक्रिया मे चन्दुमूप्पन को कुदाल के साथ रगे हाथो पकड लिया।

"आगे इस पगडडी मे इस ढग की कार्यवाही देखी तो मैं तुम्हारे हाथ-पाँव काट डालूंगा, समझे—मिट्टी खोदने वाला घूरा सन्यासी।" कपाउण्डर ने अपनी मूंछ हिलाते हुए कहा।

चन्दुमूप्पन ने कुछ कहना चाहा—तभी हाँफते-हाँफते मूँछ कणारन सामने झपट पडा।

"आपने सुना नही ?" मूँछ ने बडे आवेश मे कहा, "अतिराणिप्पाट मे एक आयिश्शा आ गयी है।"

"आइशशा ?—कौन आइशशा ?"

चन्दुमूप्पन ने अपने नुकीले चेहरे को हिलाते हुए पूछा।

मूंछ चन्दुमूप्पन के पास आकर खडा हो गया (शकुण्णि को अनदेखा कर दिया।)

"एक आयिश्शा बीबी—बडे घर की बेटी है। सोने के ढेर सारे आभूषणो से सजी हुई है वह। देखना हो तो कुबडे वेलु के बरामदे मे जाकर देखो।"

चन्दुमूप्पन कुछ समझे बगैर दाँत निपोर कर हँसने लगा।

तब मूंछ ने चन्दुमूप्पन के कान मे कुछ खुसफुस की।

"हाय! क्या कुबडे केलु की बीबी आच्चा को पागलपन सवार है ?"

चन्दुमूप्पन अनजाने मे ही जोर से पूछ बैठा।

श्रीधरन कुबडे वेलु के घर की तरफ दौड पडा।

वहाँ आँगन मे भीड लगी थी—एक तरफ मर्द—दूसरी तरफ औरतें और बच्चे। सब लोगो ने अचरज के साथ बरामदे मे निगाह डाली।

बरामदे के बीचोबीच सारे शरीर पर सोने के आभूषण पहने एक स्त्री एक तख्त पर बैठी है। उसने मुस्लिम स्त्रियो की तरह जरी से सिर ढक रखा है। वह कभी-कभी मोती-जैसे अपने दाँत दिखाकर हँसने लगती है।

किसी को भी अचानक मालूम नही हुआ कि वही आच्चा है।

बरामदे के एक कोने मे घुटनो के बीच सिर छिपाये कुबडा आलसी की तरह बैठा था।

सब लोग डरे हुए ही आँगन मे खडे थे।

तभी बालो को बाँधते हुए आराकाश वेलु की पत्नी उण्णूलि दौडी आयी।

उण्णूलि सीधे आँगन मे पहुँच गयी। आच्चा को एक बार निहारने के बाद कुशलक्षेम के लहजे मे पूछ बैठी, "आच्चा, यह सब क्या है ?"

आच्चा 'ह—ह—ह—हिहि—हि-ह—ह' करके हसने लगी। सिर से घूँघट को खीचकर ठीक कर लिया। फिर आँगन की तरफ आँखें फाडकर देखने लगी।

उण्णूलि ने आच्चा के एक-एक गहने की जाँच की। सब के सब सोने के ही थे।

"आच्चा, यह सब तुम्हे कहाँ से मिला ?" उण्णूलि न बडे प्यार से पूछा।

"ह—हा हि—हि—हि" आच्चा हँसने लगी। फिर खामोशी साध ली।

उण्णूलि कुछ देर वहाँ खडी रही। फिर निराशा के साथ सिर झुकाकर आँगन मे उतरकर दूसरी औरतो के साथ खडी हो गयी।

मुसलमान औरतो के गहनो से परिचित होने के कारण ओरन बटलर की बीवी कुजप्पु आच्चा के गहनो की तरफ इशारा करके दूसरी स्त्रियो को उनके नाम बताने लगी।

"ये सब इसे कहाँ से मिले ?" परगोटन की पत्नी कोच्ची ने दाँतो तले उँगली दबाकर पूछा।

"पुराने कुट्टाप्पु ठेकेदार ने दिये होंगे"। आच्चा के पुराने इतिहास का स्मरण करते हुए माक्कोत्ता की अम्मिणी ने अपना विचार प्रकट किया।

"अरी अम्मिणी, तू तो निरी बुद्धू है।" उण्णीलि ने अम्मु की हँसी उड़ायी। ठेकेदार क्या मुसलमान गहने बनवा देता ?"

यह सब सुनती कठफोडवा की पत्नी वल्लिक्कुट्टि नजदीक ही खडी थी। उससे रहा न गया।

"आच्चा को बडे भाई कुंजाडी ने ये जेवर सौंपे थे।" वल्लिक्कुट्टि ने सबसे लुक-छिपकर धीमी आवाज़ मे बताया।

"दंगो के बीच एक बडे घर की औरत को कत्ल करके ये सब छीन लिये थे "

यह सुनकर दूसरी औरतें अपनी छाती पर हाथ रखकर दम साधे खडी रह गयी।

"वलिल्क्कुट्टि क्या यह सच है ?" लक्ष्मण ड्राइवर की माँ मोटी अम्मालु ने रोती हुई आवाज़ मे पूछा।

"जिसने अपनी आँखो से देखा, उसी ने बताया था," वल्लिक्कुट्टि ने ज़ोर देकर कहा।

"तो मैं कहे देती हूँ। आच्चा पर उस मुसलमान औरत का भूत सवार है।" कोच्चि ने सिर हिलाते हुए कहा।

"मुसलमान का भूत हिन्दुओ को नही छूता।" उण्णूलि ने सिर हिलाते हुए कहा।

मोटी अम्मालु ने उण्णूलि की बात की पुष्टि की।

"फिर आच्चा को हुआ क्या ?" कोच्चि ने पूछा।

"पागलपन।" वल्लिकुट्टि ने सिर खुजाते हुए बताया।" सोने का पागलपन। इतने ढेर सारे के गहनों को घर की पेटी मे बद कर रखना आच्चा सह न सकी। उन्हे देखकर उस पर पागलपन सवार हो गया। वही हुआ—देखो तो आयिश्शा लग बैठी आच्चा को।

16 औरत, सोना और पुलिस

उस दिन अतिराणिप्पाट मे एक लाल टोपी दिखाई पडी—एक पुलिस कोन्स्टेबिल।

अतिराणिप्पाट मे लाल टोपी का आना एक अपूर्व घटना है। औरतो ने आँगन

में उतर कर आँखें फाड़कर देखा। बच्चे डरकर घर के अन्दर जाकर छिप गये। आराकशो के दोपहर को भोजन के लिए आने का वक्त था। उनमे कुछ लोग लाल टोपी से कुछ दूर पीछे-पीछे उत्कण्ठा से आगे बढ़ने लगे।

उनके अदाज के मुताबिक लाल टोपी कुबड़े वेलु के घर मे चली गयी।

आच्चा कभी-कभी 'हि हि ह हि' कर हँस देती। वह सभी आभूषणो से सज-धजकर उस समय भी बरामदे मे बैठी है। घुटनो के अन्दर सिर झुकाकर एक कोने मे कुबड़ा भी चुपचाप बैठा है।

पुलिस का सिपाही कुजि कण्णन नपियार ने बरामदे मे चढ़कर आच्चा का एड़ी से लेकर चोटी तक देखा।

जूतो की आवाज सुनकर कुबड़े वेलु का सिर जरा ऊपर उठ आया। लाल टोपी को देखते ही कुबड़े का सिर फिर घुटनो के पिंजड़े मे छिप गया—घुटने काँपने भी लगे।

पुलिसवाले का हाव-भाव देखकर आच्चा लज्जा और शृगार भाव के साथ 'ह ह हि हि' बकने लगी। उसने अपने सिर का पल्लू खीचकर चेहरे को जरा ढक लिया और उसकी ओट से पुलिसवाले को छिपकर देखा।

मुर्गी को देखकर मुर्गे की जो हालत होती है, उसी तरह आच्चा को देखकर पुलिसवाले की दशा हुई।

पुलिसवाला बड़ी अकड के साथ वेलु की तरफ मुड़ा। उसके गजे सिर पर उसने लाठी से दो बार टकोरा।

"अरे, इधर देख।"

वेलु ने चेहरा ऊपर नही उठाया। फूटी आँखो से भी नही देखा उधर। झट पुलिस के पैरो पर गिर पड़ा। "हुजूर, मुझे बचाइए, बचाइए।"

"अरे तू झटपट उठ।" सिपाही ने जूतो से वेलु के चेहरे पर ठोकर दी।

"तुझसे कुछ पूछना है।"

वेलु नीचे डालने के लिए रखे हुए सूखी गरी के बोरे की तरह बैठ गया।

सिपाही कुजिक्कण्णन नपियार बरामदे मे बैठकर एफ ए आर तैयार करने लगा।

तुम्हारा नाम क्या है ?

"वेलु" कुबड़े ने जमीन पर आँख टिकाये दुख के साथ बताया।

"पिता का नाम ?"

"कटुगोन।"

'घर का नाम ?'

,'कुरुक्कनकण्टि।"

"आयु ?"

"अडतालीस।"

"पेशा ?"

"समुद्री-तट की एक दूकान मे सूखी गरी को तौलना।"

"तुझे सूखी गरी तौलने पर कितना पैसा मिलता ? क्या दिन भर मे सौ रुपया मिल जाता ?"

दिन भर मे सौ रुपये की बात सुनकर सिपाही की मूर्खता पर विचार करता वेलु अनजाने मे हँस पडा।

"शट अप !" सिपाही ने जूता जमीन पर पटकते हुए कहा।

"मूर्खों की-सी तेरी हँसी को मैं जल्दी ही भला दूंगा। पहले सवालो के जवाब दे।"

"एक रुपया मिल जाता है।"

"ठीक है, दिन मे एक रुपया।"

वेलु ने सिर हिलाया।

"इधर बैठी औरत से तेरा क्या रिश्ना है ?"

"आच्चा मेरी ब्याही औरत है।"

"ठीक है। तेरी औरत के शरीर पर जो सोने के गहने दिखाई दे रहे है, क्या तूने ही उसे दिये थे ?"

कोई जवाब नही मिला।

"अरे, सुना नही ? (जूता फिर जमीन पर पटकते हुए) क्या ये सब आभूषण तुमने ही उसे दिये थे ?"

कुबडा चुप रहा।

इस बीच मे एक आदमी उधर आ गया। आँगन के एक कोने मे खडे हुए अतिराणिप्पाट के लोगो ने इस आदमी को जरा आशका से देखा।

"शकुण्णि कपाउण्डर।"

तोद और कमीज के उपर दुपट्टा लपेट कर मोटा-ताजा शकुण्णि कपाउण्डर उतावली मे हिलता-डुलता-सा चलता था। कभी-कभी नाक और मूंछ को सिकोड-कर कुछ चेष्टाएँ भी दिखाता चलता।

कम्पाउण्डर ने सीधे बरामदे म चढकर नफरत भरी निगाहो से सिपाही को देखा, फिर लाल टोपी से पूछा

"आप इधर क्यो आये ?"

सिपाही कुजिक्कण्णन नपियार ने अधिकार के मद मे कम्पाउण्डर को देखा, "यह पूछने वाले तुम कौन हो ?"

"मैं इस इलाके का मुखिया हूँ।" कहते हुए कम्पाउण्डर ने आँगन मे खडे लोगो की तरफ निगाहे घुमायी। भीड से गपिया परगोटन ने 'हाँ' सूचक सिर

हिलाया। तब और भी कुछ लोगो ने अपना-अपना सिर हिलाया।

"वर्दीधारी पुलिस इधर क्यो आयी है, मुझे यह जानना ही चाहिए।" कपाउण्डर ने लोगो को सुनने के लिए भैंसे की सी आवाज़ मे गर्जन किया।

सिपाही घृणा से हँस पडा, फिर अधिकार भरे स्वर में बोला, "मै एक मुकदमें की कैफियत लेने आया हूँ।"

"कौन-सा मुकदमा ? कैसी कैफियत ? किस के हुक्म से ?" कम्पाउण्डर हाथ उठाकर चिघाडा।

"सुप्रेण्ड (सुपरिण्टेण्डेण्ट) साब का हुक्म है।" सिपाही भी दहाडते हुए बोला।

"इसके लिए यहाँ हुआ क्या है ?" कम्पाउडण्र ने लगातार तीन बार अपनी नाक और मूँछ हिलायी।

"मुझे इन सब बातो को आप से कहने की ज़रूरत नही है।" पुलिस ने अपने स्वर और भाव को ज़रा बदलते हुए अपना काम जारी रखा। "फिर भी मै कहूँगा। उधर बैठी औरत के आभूषणो के सम्बन्ध मे पडताल करने मै इधर आया हूँ।"

"क्या राज्यपाल साब का ऐसा आदेश है कि औरत को आभूषण नही पहनना चाहिए ?" कम्पाउण्डर ने चुटकी लेकर पूछा। उसने आगन मे एकत्रित लोगो की तरफ देखा। वे लोग कपाउण्डर का रसिक सवाल सुनकर उसे मुबारकबाद देते हुए हँस रहे थे।

"औरते अपना आभूषण पहन सकती है। कोई एतराज नही है।" पुलिस ने स्पष्टीकरण दिया।

"इस औरत का सोना और आभूषण इसका अपना नही है, यह आप से किसने कहा ?" कम्पाउण्डर ने पूछा।

पुलिसवाला कुछ देर तक चुप रहा। आँगन मे खडे लोगो ने समझा कि कम्पाउण्डर ने लाल टोपी को बिलकुल पछाड दिया है।

तब कास्टेबिल कुंजिक्कण्णन नंपियार एक लम्बे भाषण की तैयारी कर रहा था·

"मुझे इन सब बातो को आप लोगो से कहने की कोई जरूरत नही है—फिर भी मैं कहूँगा। फौजी पडाव का रसोइया कुंजाडी एक बडे अमीर मुसलमान की बीबी को कत्ल कर उसके सभी आभूषणो को हडप कर भाग गया था। कुंजाडी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।"

"हाय भगवान ! कुंजाडी को पुलिस ने पकड लिया !" कुबडा वेलु छाती पर हाथ रख कर फफक फफक कर रोने लगा।

आच्चा उस समय भी 'ह ह हि हि' मन्त्र जप रही थी। पुलिस ने उस पर ध्यान नहीं दिया। उसने भाषण जारी रखा "इन गहनो को कब्जे मे लेने के

लिए सुप्रेण्ड साब ने मुझे भेजा है। गहनो को ही नही, इस औरत और कुबडे वेलु को भी गिरफ्तार करके ले जाने का सुप्रेण्ड का हुक्म है ।"

लोग आपस मे खुसुर फुसर करने लगे। कुछ लोगो को दुख हुआ। कुछ लोगो ने राय दी कि आच्चा को ऐसा ही सबक मिलना चाहिए। कुछ औरतो को चोरी के गहने पहननेवाली आच्चा और उसके पति कुबडे वेलु को गिरफ्तार कर सडक से जाने का दृश्य देखने की इच्छा हुई।

"आच्चा के हाथ मे क्या हथकडी पहनाएँगे ?" गपिया परगोटन ने मानुक्कुट्टन से पूछा। मानुक्कुट्टन ने 'हाँ' कहा।

कम्पाउण्डर थोडी देर तक चितामग्न खडा रहा। फिर कुबडे की तरफ देखकर बोला, "अरे, वेलु, यह मै क्या सुनता हूँ ? क्या ये आभूषण साले कुजाडी ने दिये थे ?

कुबडा फूट-फूट कर रोने लगा। उसने कुछ नही बताया।

सिपाही कुजिक्कण्णन नपियार उठ खडा हुआ।

"मुझे तो ऊपर के आदेश का पालन करना है। अरे, अपनी औरत का हाथ पकडकर पुलिस-स्टेशन की तरफ चल।"

"कम्पाउण्डर, मुझे बचाइए "कुबडे ने कम्पाउण्डर के पाँव पकड लिये।

कम्पाउण्डर वेलु को उठाते हुए बोला, "अरे तू अन्दर आ। कुछ बातचीत करनी है।"

कम्पाउण्डर और कुबडे ने अदर घुसकर दरवाजा बन्द कर लिया और एक कोने मे खडे होकर बातचीत करने लगे।

कम्पाउण्डर ने पूछा, "अरे तूने आच्चा को गहनो से लादकर बरामदे मे क्यो बिठाया ?"

"मै क्या करूँ कम्पाउण्डर ?" वेल ने दुखी होकर कहा। "उसने पागल होकर ही यह काम किया था न ? मैने उसके शरीर से गहनो को हटाने की कोशिश की, तो उसने छुरा लेकर मुझे मारने की चेष्टा की। तख्ते पर आच्चा ने छुरा रख दिया है। उसके पास जाते समय सावधानी बरतने की जरूरत है। जब उसे शक होगा कि गहनो को उतारने के लिए कोई आया है तो वह निश्चित ही छुरा भोक देगी। कम्पाउण्डर जी, हालत यही है।"

कम्पाउण्डर ने सिर हिलाते हुए कहा "वेलु, ऐसी बाते न कह। "स्थिति बहुत ही नाजुक है। पुलिस तुझे और आच्चा को अभी पकडकर ले जायेगी। पुलिस-स्टेशन पर पहुँचने पर सच कहन पर भी मार ही मिलेगी। फिर तू क्या करेगा ?"

कुबडे ने सिर पटक कर कहा, "हाय, मेरी फूटी किस्मत !"

"फूटी किस्मत नही। सब तेरी ही करतूत है।" कम्पाउण्डर ने मूंछ और नाक हिलाते हुए कुबडे की भर्त्सना की। "मुसलमान औरत की हत्या कर कुजाडी

ने जब चोरी का माल तुझे दिया, तब तूने क्या सोचा था ? अब बचाने के लिए कम्पाउण्डर चाहिए न ?"

"अब तो यह एक गलती हो ही गयी। आगे से कम्पाउण्डर के कहे अनुसार ही करूँगा।" कुबडा रो पडा।

"हाँ, जो हुआ सो हुआ। गहनो को पुलिस ले जावे। तुझे और आच्चा को पुलिस स्टेशन के दरवाज़े पर न जाना पडे, इस के लिए कुछ बन्दोबस्त करना पडेगा।"

कम्पाउण्डर थोडी देर चिंतामग्न खडा रहा।

"कम्पाउण्डर जो कहे वही करूँगा" कुबडे ने फिर दोहराया।

"वह कास्टबिल एक लालची नपियार है। उसे कुछ न कुछ देकर काम ठीक करना होगा। तेरे हाथ मे कितना पैसा है ?"

"कम्पाउण्डर जी, मेरे हाथ मे कुछ है ही नही। सदूक मे तलाशने पर मुश्किल से चवन्नी मिलेगी।"

कुबडे ने सच्ची बात ही कही थी।

"अरे वेलू, ऐसी हालत है तो तू पुलिस के साथ चला जा।" कम्पाउण्डर ने उपदेश दिया—"एक तरह से देखे तो वही तेरे लिए अच्छा है। तेरा कूबड तो पुलिस ठोक-पीट कर ठीक करेगी ही, कुजाडी ने जिस मुसलमान औरत का कत्ल किया है, उस के लिए तुझ पर मुकदमा भी दायर होगा। फिर जेल मे सुख-चैन से रह सकेगा।"

"हाय, ऐसा न कहिए, कम्पाउण्डर।" कुबडे ने फूट-फुट कर रोते हुए छाती और पेट सहलाया।

"कम से कम दस रुपय इस लालची नपियार को देना होगा। तभी मै उससे कुछ कह सकगा।" कम्पाउण्डर ने सलाह दी।

कुबडे ने कुछ देर तक विचार किया। फिर धीमी आवाज मे कहा, "आच्चा ने अपनी निजी धरोहर जमीन मे दफना रखी है। लेकिन उसका भेद खुल जाने पर वह मेरी हत्या कर देगी। फिर भी ।"

"अरे, फौरन उसे ले आ।" कम्पाउण्डर ने कहा।

आच्चा की बचत रसोईघर के एक कोने मे गडी रखी थी। निशाना देखकर वेलु जमीन खोदने लगा।

कम्पाउण्डर ने भी उसकी मदद की। मिट्टी का एक बर्तन बाहर निकाला। उसमे एक छोटी सी गाँठ थी। कम्पाउण्डर ने गाँठ खोली तो कुछ सिक्के और नोट दिखाई पडे।

कम्पाउण्डर ने जल्दी से वह गाँठ बाँधी और उसे अपनी धोती के नीचे जाधिये की जेब मे डाल ली। अब वह बरामदे की तरफ बढ़ा। मन ही

मन कोसते हुए कुबड़ा भी उसके पीछे चला।

कान्स्टेबिल नपियार तब भी रिपोर्ट तैयार कर रहा था।

कम्पाउण्डर ने कुंजिक्कण्णन नपियार के पास जाकर, बडी देर तक कुछ भेद भरी बातें की।

पुलिस ने सिर हिलाते हुए इतनी जोर से जवाब दिया कि बाहर आँगन मे खडे हुए लोग भी सुन सके।

"सारे गहनो के साथ इस औरत को और चोरी के माल को छिपाकर रखने वाले वेलु को तुरन्त लाने का ही सुप्रेड का आदेश है। उनके हुक्म के खिलाफ मैं कुछ भी नही करूँगा।"

तब कम्पाउण्डर ने बड़े अदब से पूछा, "इन गहनो को आप ले जाइए। आच्चा और बेलु को फिर हाजिर करने मे क्या कोई हर्ज है?"

कास्टेबिल ने इनकार मे सिर हिला दिया।

कम्पाउण्डर ने याचना के लहजे म फिर विनती की, "हेड कास्टेबिल साहब यो हठ न कीजिए—जरा रहम कीजिए। औरत पर पागलपन सवार है। वेलु भोला भाला है। तीन चार दिन मे फाको का मारा है। इस हालत मे उसे पकड-कर ले जाना बड़े दुख की बात होगी "

सिपाही ने पेन्सिल दाँतो के बीच दबाकर थोडी देर तक सोचा। फिर उसने वेलु और आच्चा पर सरसरी निगाह डाली। आच्चा 'ह ह हि हि—' हँसी को दबाकर जरा गरिमा के साथ बैठी है। कुबडा पुलिस की तरफ हाथ जोडकर खडा है। लगता है कि कास्टेबिल नपियार के चेहरे का रौद्र भाव सहानुभूति मे बदल गया। वह कम्पाउण्डर को देखकर बोला, "अच्छा, इस औरत और इसके पति को आदेश के मुताबिक स्टेशन पर हाजिर करने की जिम्मेदारी क्या तुम अपने ऊपर लेते हो?"

"हाँ, वह जिम्मा मेरे ऊपर रहेगा।" कम्पाउण्डर ने अपनी छाती छूते हुए कहा।

"फिर गहनो की "

कम्पाउण्डर ने एक बधे बधाये इशारे से झटपट सूचना दी, "इस विषय मे अभी कुछ न कहिए। और छाती सहलाते हुए इसका बदोबस्त भी स्वय करने का इशारा किया।

फिर खामोशी छा गयी।

कम्पाउण्डर ने हाथो को पीछे की तरफ रखककर आच्चा के सामने झुकते हुए आभूषणो से दमकती उसकी खुबसूरती को बधाई देने के बहाने चेहरे पर मधु-मुस्कान बिखेर ली।

तब आच्चा के चेहरे पर लाज से सनी हुई मधुर मुस्कान खिल उठी। उसने

सिर के घूँघट से आँखो को ढक लिया। उमी समय मौका पाकर कम्पाउण्डर ने हौले से हाथ फैला कर उसके पीछे के तख्ते पर छिपा हुआ छुरा उठा लिया। कम्पाउण्डर,ने चाकू पीछे छिपाकर वेलू को इशारा किया कि आच्चा के गहनो को हटाओ।

कुबडा पहले सकपकाया। जब उस को मालूम हुआ कि आच्चा अब निहत्थी है तो धीरे-धीरे आच्चा के पीछे होकर काले नाग को पकडने के भाव से उसने उसकी गर्दन की तरफ हाथ बढाया।

आच्चा तिरती निगाहो से सब कुछ देख रही थी। ज्यो ही कुबडे के हाथ ने आच्चा की गर्दन छुई, त्यो ही आच्चा का हाथ तख्ते के नीचे की तरफ मुड गया। उसने तलाश की, वहाँ छुरा नही था।

आच्चा बाघिन की तरह दाँत निकाल कर गुर्रायी। फिर अचानक उसने वेलु का हाथ अपने मुँह मे लेकर काट लिया। वेलु की दो-तीन उँगलियाँ आच्चा के मुँह मे फँस गयी। वेलु ने हाथ खीचने की कोशिश की। पर आच्चा ने नही छोडा।

"हाय बाप रे।" कुबडा असहनीय दर्द के मारे चीख पडा।

तब कम्पाउण्डर ने हौसले के साथ आच्चा की नाक को जबर्दस्ती पकडकर दबा दिया। दम घुटने पर उस का मुँह खुल गया। यो वेलु की उँगलियाँ बच गयी,

लहूलुहान उँगलियो और हाथ को झटका देता कुबडा रो-रोकर कोसता हुआ वहाँ से हट गया।

इस खतरनाक औरत की करतूत को देखकर सिपाही सामने आया।

कास्टेबिल कुजिक्कण्णन नपियार आच्चा के सामने झुककर लाठी को ऊपर उठाते हुए गरजा "हूँ! जरा हिली-डुली तो पीट कर तेरी ।"

आच्चा ने अचानक उसके चेहरे पर थूक दिया।

कास्टेबिल नपियार ने 'छी धत्' कह कर आँख और नाक पोछी। फिर उसने आग्नेय नेत्रो से आच्चा को देखा।

आच्चा ने जीभ निकाल कर मुँह बनाया। सिपाही ने मदद के लिए कम्पाउण्डर को पुकारा।

कम्पाउण्डर ने हाथ का छुरा दूर आँगन मे फेक कर आच्चा को दबोच लिया। आच्चा हाथ-पाँव मारकर जोर से चिल्लाने लगी। उसकी धकापेल पर ध्यान दिये बगैर सिपाही ने उसके सिर की धोती से उसके हाथो को पीछे से बाँध दिया।

आच्चा के गर्जने से अतिराणिप्पाट हिल उठा। उस समय कम्पाउण्डर ने जेब से रसाल निकालकर आच्चा के मुँह मे ठूँस दिया।

उस वक्त आगन मे इकट्ठे हुए लोगो की प्रतिक्रियाएँ कई प्रकार की थी। कुछ लोगो न 'हाय बेचारी' कहकर हमदर्दी जाहिर की। कुछ लोगो के लिए यह

महज एक तमाशा था। कुछ ईर्ष्यालु औरतें दाँत किटकिटा कर अगूंठा दिखाते हुए चिल्लायी, "अच्छा ही हुआ। आच्चा के साथ ऐसा ही होना था। झूठी कही की।"

आच्चा के कान और गले के सभी गहने लाल टोपीवाले ने उतार लिये। तभी एक और मुसीबत का अहसास हुआ। कगन और चूडियाँ उतारने के लिए हाथो को बन्धन मुक्त करना था। बन्धनमुक्त होने पर आच्चा क्या काबू मे रहेगी ?

सिपाही ने बडी सावधानी पूर्वक आच्चा को बन्धनमुक्त किया। उसका एक हाथ तो कम्पाउण्डर के हाथ मे दिया, दूसरा उसने अपनी हिरासत मे ही रखा। फिर आच्चा की पीडा और कराह को नजरअदाज करके कगन और चूडियाँ जबर्दस्ती उतार उसे फिर अच्छी तरह बाँध दिया।

बेंच पर गहनो का ढेर रख दिया और एक-एक का वजन देखकर सिपाही कुजिक्कण्णन उन सामानो की सूची तैयार करने लगा, "स्वर्ण हार वजन करीब आठ गिनी।"

"कगन जोडी दो—हर एक का वजन दो गिनी ।"

इस तरह गहनो के नाम और वजन आदि की सूची उसने कम्पाउण्डर और वहाँ के उपस्थित दूसरे लोगो को जोर से पढकर सुनायी।

कम्पाउण्डर ने सूची और गहनो को मिलाकर देखा ठीक है। अब गवाहो के हस्ताक्षर चाहिए।

रिपोर्ट के नीचे बाये कोने मे कपाउण्डर ने 'वेलिक्कल शकुण्णि' लिखकर अग्रेजी मे हस्ताक्षर किये।

"एक और सभ्रात व्यक्ति झटपट इधर आये और गवाह के हस्ताक्षर करे।" आँगन मे एकत्रित लोगो की तरफ निगाह डालकर कुजिक्कण्णन नपियार ने आवाज लगायी।

लोगो के बीच से गपिया परगोटन फौरन आगे बढा। अभी तक परगोटन को गवाह के हस्ताक्षर करने का कोई मौका नही मिला था। आज एक अच्छा अवसर मिला है।

कपाउण्डर के हस्ताक्षर के नीचे बडे ध्यान से 'मेल्लुप्पुल्लि परगोटन' लिखकर, मकडी के जाल की तरह 'श्री' लिखकर गपिया परगोटन ने हस्ताक्षर किये।

कुजिक्कण्णन नपियार सभी गहनो को एक कागज मे लपेटकर अपनी जेब मे डालकर आँगन मे उतरा। उसने जरा मुडकर कपाउण्डर को इस बात का स्मरण कराया कि सदेशा भेजने पर तुरन्त इन लोगो को स्टेशन मे हाजिर किया जाए।

"जरूर।" कपाउण्डर ने अपनी छाती पर हाथ से थपकी देते हुए सिर झुकाकर जवाब दिया।

सिपाही ने एक बार आच्चा को देखा। वह 'ह ह—हि हि—ह ह' की आवाज निकाल रही थी। लेकिन वह हँसी नही थी, गम का चीत्कार था।

कुबडे वेलु को तसल्ली देने के लिए कम्पाउण्डर वही खडा रहा। सिपाही के चले जाने पर आँगन मे इकट्ठा हुए लोगो मे से हाथीपाँववाले अय्यपन और धोबी शकरन वगैरह को छोडकर बाकी सब लोगो ने अपना-अपना रास्ता नापा।

"मैं फिर आऊँगा।" नाक और मूंछ हिलाते हुए कपाउण्डर ने विदा ली। वह हाथो को ज़ोर से हिलाते हुए तेजी से चला गया।

एक घटा बीत गया।

कुबडा, हाथीपाँववाला और वैद्यर मिलकर आच्चा के उन्माद के इलाज की चर्चा कर रहे थे कि मूँछ कणारन आँगन मे प्रकट हुआ। कणारन ने आँगन के बीच खडे होकर तीन बार 'हूँ हूँ हूँ' की आवाज़ की।

"अरे कणारन, तू किस वजह से यो उल्लू की तरह शोर मचा रहा है।" हाथीपाँववाले अय्यप्पन ने पूछा।

मूँछ ने व्याख्या की, "जिस आदमी ने चोरी की हो उसके चोरी करने के बाद हूँ—हूँ—हूँ बस तीन दफा बोलना काफी है।"

धोबी शकरण को उसका व्यग्य समझ मे नही आया। फिर भी वह इस अर्थ मे सिर हिलाकर हँस दिया, मानो उसको सब कुछ मालूम हो गया है।

कुबडे और मूँछ को इसका मतलब बिल्कुल समझ मे नहीं आया। उन दोनो ने एक-दूसरे की तरफ घूमकर देखा।

मूँछ बरामदे मे जाकर कुबडे के नजदीक बैठ गया। फिर उसने पूछा, "पुलिस स्टेशन नही जाना है ?"

"नही तो, कम्पाउण्डर ने जमानत दी है।" कुबडे ने शान से बताया।

"आच्चा के गहने कहाँ चले गये ?"

"एडनशेल (हेड कान्स्टेबिल) सुप्रैंड साब (सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब) के सामने हाजिर करने के लिए ले गये हैं।"

मूँछ ठट्ठा मारकर हँस पडा।

"तुम जानते हो, वह बदतमीज नपियार गहनो को कहाँ पेश करने ले गया है ?"

"कहाँ ?" कुबडे और अय्यप्पन ने एक ही लहजे मे पूछा।

"रेल के फाटक पर।" मूँछ ने उन्हे लालटोपीवाले द्वारा गहनो को कागज मे लपेटकर ले जाने के बाद का किस्सा सुनाया।

'एडनशेल' नपियार और शकुण्णि कम्पाउण्डर को वेलु के बरामदे मे देखते ही मूँछ को ज़रा शक हो गया था। जब पुलिसवाला आच्चा के शरीर के गहनो को उतारकर कागज़ मे लपेटकर चला गया, तभी खुफिया पुलिस की तरह मूँछ ने उनका पीछा किया। नपियार ने फाटक घर मे घुसते ही दरवाजा बद कर लिया। मूँछ ने नजदीक की एक दुकान मे छिपकर देखा। थोडी देर बाद शकुण्णि कम्पाउण्डर

भी फाटक-घर मे आ पहुँचा। उसने अन्दर घुसकर बडी फुरती से दरवाजा बन्द कर दिया। तभी मूंछ को भरोसा हो गया कि वेलु के बरामदे मे जो षडयत्र रचा गया था, उस सबके पीछे नपियार और शकुण्णि कम्पाउण्डर की साजिश थी। पुलिसवाले को इधर लानेवाला शकुण्णि कम्पाउण्डर के सिवा और कोई नही था।

मूंछ ने फाटक-घर के पीछे जाकर दीवार से सटकर खडे होने के बाद कान लगाकर ध्यान से सुना। नपियार और शकुण्णि आच्चा के शरीर के गहनो का बँटवारा कर रहे थे। जब मंछ वहाँ से हटने की सोच ही रहा था कि फाटक-घर की खिडकी से उन्होने एक पीला कागज मोडकर फेका। वह कागज मूंछ के पास ही गिरा। मूंछने जेब मे वह पीला कागज निकालकर कुबडे, धोबी वैद्यर और हाथी-पाँववाले को जोर से पढकर सुनाया।

स्वर्ण माला। वजन करीब आठ गिनी। कगन जोडी दो—वजन करीब हर-एक का दो गिनी। सोने की करधनी। वजन करीब छह गिनी गवाह (1) वेल्लिक्कल शकुण्णि (हस्ताक्षर) (2) मेल्लुप्पुल्लि परगोटन (हस्ताक्षर)।

कुबडा इस तरह गुमसुम बैठा था मानो उस पर बिजली गिर गयी है। उसकी तरफ उस पीले कागज को फेककर मंछ ने उपहास किया। "वेलु इसे गिरवीनामे की तरह सदूक मे रखो फिर हूँ हूँ हूँ बोलकर बैठ जाना।"

कुबडे ने छाती पीटकर ठण्डी साँस खीच ली "हाय दैया, आच्चा की जो धरोहर बची थी, वह भी खो गयी। "

मूंछ वहाँ से चला गया। उसने आँगन से मुडकर आच्चा की तरफ नजरें घुमायी। आच्चा को इस हालत मे देखने पर मूंछ ने एक ऊटपटाँग पाट्टु का स्मरण किया। उसने आच्चा को देखकर अपनी कर्कश आवाज मे गाया

"पत्थर के बीच का केकडा
क्या शादी मे नही जाना है?
फिर नही जाना है, नही जाना है
क्या जरूरत नही कचन की ?
फिर नही चाहिए, नही चाहिए
नही चाहिए क्यो ?"

17 हड्डियो का पिंजरा और मौलसिरी की माला

झगडा दबने का कोई लक्षण न था। गोरो की पलटन और मशीनगनो के पहुँचने पर दगाई नाको दम होकर जगलो मे फरार हो गये। पुलिस और सैनिक उन लोगो को पकडकर ले गये, जिन पर दगाइयो की सहायता करने का अभियोग था। दरअसल वे सदेह के कारण मोहल्लो मे चक्कर लगाकर हिन्दुओ

को भी पकडकर ले गये। पुलिस अधिकारियो और सरकार की सहायता करने का ढोंग रचनेवाले कुछ बदमाशो को उन लोगो से बदला लेन का अच्छा मौका मिला, जिनसे उनकी पहले की लडाई थी। अपने धर्म के प्रतिद्वन्द्वियो को मजा चखाने का मौका वे हाथ से कैसे निकल जाने देते?

जगलो मे घुसनेवाले दगाई कभी-कभी भोजन की तलाश मे नीचे की बस्तियो मे आ जाते। वे आधी रात को जमीदारो के घरो मे जाकर उन सामानो की माँग करते, जिनमे चावल और माँस बनाने के लिए मवेशी होते। दगाइयो को उनकी माँग के अनुसार सामान देने से आनाकानी करने पर परिवार का नरमेध तुरन्त हो जाता। दगाइयो की माँग के अनुसार उन्हे सब कुछ दे-देने पर भी मुसीबत न टलती। अक्सर पुलिस और घुडसवार फौज तुरत उस परिवार को आ घेरती और खीचातानी कर जबर्दस्ती सबको उठा ले जाती। जो भी हो, मोहल्लेवालो म सुरक्षा की भावना बिलकुल नही रही थी। वे झुड के झुड शहरो की तरफ बढ रहे थे।

दगाइयो ने शासन छीन लेने की बात करना छोड दिया था। उनमे अधिकाश लोग नादान और बेवकूफ किस्म के थे। धर्म के ठेकेदारो ने उन मूर्खो को यह समझा बुझा दिया था कि गोरो ने इस्लाम और मसजिदो का विनाश करने के लिए कमर कस ली है। उन्होने जिहाद की पुकार की और प्राण हथेली पर रखकर सघर्ष मे सक्रिय भाग लिया। मसजिद के मुल्लाओ ने उन्हे समझाया था कि काफिर को कत्ल करने पर उन्हे स्वर्ग मिलेगा। अधिकाश मुखियो की मृत्यु या हत्या हो जाने पर दगाई नेताओ की कमी हो गयी। उनके अनुयायी जगलो मे भीड से अलग होकर दिन गुजार रहे थे। उन्हे इस बात की पक्की जानकारी थी कि अगर उन्हे पकड लिया गया या हथियार डालकर दबाने का इशारा किया गया तो पुलिस और फौज उन्हे तिल-तिल करके मार डालेगी। इसीलिए मरहूम होने से पहले जितने काफिर मिले उन सबका कत्ल कर दिया जाये। मजहब के नाम पर अतिम दम तक लडकर मर जाना है—यही दगाइयो का कार्यक्रम और कोशिश थी। इस कोशिश को दूसरे शब्दो मे कह तो दगाई खुद इस्लाम के नाम पर शहादत कबूल करनेवाली एक सेना के रूप मे परिवर्तित हो गये थे।

सरकार को इस बात का बोध हो गया कि जगल में घुसनेवाले दगाई अधिक खतरनाक है। मशीनगनो और बख्तरबन्द गाडियो से कोई फायदा नही होता।

जगल मे घुसकर विद्रोहियो को पकडने और दबाने के लिए वन-युद्धवीरो की गोरखा पलटन भी आ पहुँची।

एक दिन गोविन्दन मुशी कृष्णन मास्टर से मिलने कान्निप्परपु मे आया। अब वह फौजी पडाव के लिए अण्डा और तरकारियाँ वितरण करनेवाला एक छोटा-सा ठेकेदार बन गया था। वह कभी-कभी इधर इसलिए आ निकलता था क्योकि

उसकी बडे भाई से सपत्ति के बँटवारे को लेकर अनबन थी। और उसके लिए वह कृष्णन मास्टर को पच बनने की विनती करना चाहता था। कृष्णन मास्टर ने इस बारे मे सोच-विचार करने का वादा किया। फिर झगडे के सम्बन्ध मे गोविन्दन मुशी से पूछा।

"झगडा जल्दी खत्म होने की कोई गुजाइश नही है?" सैनिको और विद्रोहियो की करतूतो के रहस्यो को नजदीक से पहचानने वाले गोविन्दन मुशी ने कहा, "ये दगाई जगलो मे चले गये थे। जगलो मे घुसकर उन्हे कत्ल करना बायें हाथ का खेल नही है। गोरो की पलटन को तो खाने-पीने और औरतो से छेडछाड करने से ही फुरसत नही। जगलो मे जाने से वे कतराते है। गुरखा पलटन के उतरने से हालत मे कुछ सुधार हो गया है। लेकिन विद्रोहियो को खौफ बिलकुल नही है। झगडा तब तक खतम नही होगा, जब तक एक भी विद्रोही जिन्दा बचता है। वे तो मरने के लिए कमर कसकर खडे है।"

गोविन्दन मुशी ने बताया कि गुरखा पलटन के अलावा बर्मा राइफल्स और रेगिस्तान मे लडने के लिए काम मे आनेवाली खच्चर फौजे, तोपे और बख्तरबन्द गाडियाँ बेंगलूर के रास्ते से दगाग्रस्त इलाको मे पहुँच गयी हैं, ऐसा सुनने मे आया है।

कृष्णन मास्टर ने अपनी शका जाहिर करते हुए पूछा, "आधुनिक युद्ध सामग्री और भली-भाति प्रशिक्षित विदेशी लडाकू सैनिको से विद्रोही कितने दिन तक मुकाबला कर सकते हैं?"

"देखना पडेगा।" गोविन्दन मुशी ने कहा, "ये बदहवास मुसलमान विद्रोही यह सब देखकर भी लोहा माननेवाले थोडे ही हैं। मौत होने के बाद 'जन्नत' मे जाने की तैयारी मे ये जान की परवाह किये बिना लड रहे है। ये कभी-कभी छिपकर तो कभी खुले तौर पर फौज का मुकाबला करते हैं।

दो तीन दिन के बाद 'कु—' मोहल्ले मे घटी एक घटना का गोविन्दन मुशी ने जिक्र किया।

जगल मे निकला एक गोरखा फौजी दस्ता रात को एक डेरे मे ठहरा था। देशवासियो के नाम पर कुछ विद्रोही भी वहाँ आ पहुँचे। सुबह के झुटपुटे मे मे उन्होने डेरे मे घुसकर अचानक आक्रमण कर दिया। ज्यो ही विद्रोहियो के डेरे मे घुसने का समाचार मिला, त्योही वह दस्ता मशीनगनो और बख्तरबन्द गाडियो से लैस होकर धावा बोलने ही वाला था कि मुसलमान विद्रोहियो ने एकाएक तलवारो से एक ब्रिटिश अपसर और दस बारह गोरखा सैनिको के सिर शरीर से अलग कर दिये। फौज गोली चलाने लगी। और ये विद्रोही तब तक बाघो की तरह लडते रहे, जब तक गोली खाकर जमीन पर न गिर पडे। पन्द्रह मिनट के अन्दर सब खत्म हो गए' '। मुस्लिम विद्रोहियो की मैयतें गिनकर देखी थी।

वहाँ कुल मिलाकर दो-सौ चौतीस लाशें थी। इस्लामधर्म की शर्तों के मुताबिक उन्हे दफनाने के बजाय, एक कोने मे जमा कर उन पर पेट्रोल डाल कर जला दिया।

गोविन्दन मुशी ने जरा मजाक के लहजे मे इतना और जोड दिया, "मुसलमानों को यही भरोसा था कि लडकर मर जाने पर जरूर जन्नत मिलेगा। लेकिन अब कयामत के दिन वे उठकर हाजिर तो हो नही सकते, क्योकि उनकी मैयतें गरम राख मे बदल गई है।"

दो-तीन दिन और गुजर गये। अफवाह फैल गई कि दगाई शहरो को रवाना हो गए है। उनको जगल से भी अधिक सुरक्षा आबाद शहरो की भीड मे मिलेगी। वहाँ तो उन्हे कई दलाल और गुप्त सहयोगी भी मिलते है— इसके अलावा लूटने के लिए अपार धनराशि और सामानो से भरे बाजार भी है।

एक दिन कृष्णन मास्टर ने अपनी पत्नी को बुलाकर बडे गौरव के साथ कहा

"विद्रोहियो के इधर रवाना होने की खबर है। बेहतर यही है कि तुम और श्रीधरन इलजिपोयिल जाकर रहो, जब तक कि यह झगडा खत्म न हो जाए।"

श्रीधरन की माँ ने कहा, "आप लोगो को छोडकर मैं कही नही जाऊँगी। मरे तो हम एकसाथ मरे—बेटे को इलजिपोयिल जरूर भेज दो।"

इस तरह श्रीधरन फिर इलजिपोयिल पहुँच गया।

इलजिपोयिल म श्रीधरन की अगवानी के लिए जीवन का एक अजनबी क्षेत्र मौजूद था—शरणार्थियो की एक विचित्र दुनिया।

दगाइयो के पैशाचिक आक्रमण से किसी तरह बचे हुए और विद्रोहियो से डर कर दक्षिण-पूरब की बस्तियो मे अपने घर छोडकर भागे हुए सौ से अधिक परिवार इन इलाको मे आये हुए थे। उनमे से करीब बीस परिवार इलजिपोयिल मे ही टिके हुए थे।

उन लोगो मे अधिकाश ऐसे थे, जिन्हे सब कुछ छोडकर अपने प्राण और पहने हुए कपडो के साथ ही निकल आना पडा था। कई परिवारो के सदस्यो की निर्मम हत्या हो गई—कई लोग जरूरी इलाज के बिना रास्ते मे ही मर गये। बेइज्जत होने के कारण कुछ औरतो ने आत्महत्या कर ली। उन लोगो मे बहुत से लोग ऐसे भी थे जो जख्मी हो गये थे।

वे लोग इलजिपोयिल के आगन और बाडे के पीछे, अहाते के पेडो की छाया मे चूल्हे जलाकर भोजन पकाते थे। इधर-उधर चटाइयाँ डालकर वे अपने नारकीय अनुभवो की याद कर आँसू बहाते हुए दिन काट रहे थे।—बुजुर्ग लोग कोनो मे गुमसुम स्तब्ध बैठे थे। छोटे बच्चे भोजन मिल जाने के बाद आगन मे खेल रहे थे। शरणार्थी औरते विद्रोहियो की क्रूर करतूतो की दास्तान औरो को रो-रोकर

सुना रही थी।

बरामदे के एक कोने मे केले के एक बडे पत्ते पर एक आदमी को लिटाया हुआ था। उसके शरीर पर सिर्फ एक लगोटी ही थी। उसके चेहरे पर, गरदन मे, छाती मे—कमर के ऊपर सारे बदन मे—मार के जख्म थे। घावो मे तेल और दवा भरकर लेटा हुआ वह आदमी ऐसा लगता था, मानो हाँडी मे पकाने के लिए मसाला लगाकर रखी हुई बाराल मछली हो। जब श्रीधरन ने रासक्कुट्टि नाम के बुजुर्ग से उसकी आपबीती सुनी तो उसके अन्तस् मे काले नाग के डसने की-सी पीडा और तडप मससूस हुई।

तीन विद्रोहियो का जत्था अचानक ही आधी रात को रामक्कुट्टि के मुहल्ले मे घुस आया था। तीन-चार दिन पहले पुलिस वहाँ से दो मुसलमानो को पकड-कर ले गई थी। दगाई इस ख्याल से वहाँ टूट पडे थे कि मुहल्लेवालो ने उनके दो आदमियो को पुलिस के हवाले कर दिया है। बस, वे इसका बदला लेने के लिए वहाँ पहुँच गये थे। फिर विद्रोहियो का सहार-ताडव शुरू हुआ। धर्म-परिवर्तन कराने या बैल का मास खिलाने का अवकाश ही नही था। इस बस्ती के जितने काफिर उनके हाथ लगे, सब को गाजर-मूली की तरह काटकर एक अधकूप मे फेक दिया। लाशो से कुआँ पट गया। तभी एक केले के नीचे छिपकर जान बचाने की कोशिश करनवाला एक आदमी रासक्कुट्टि को दिखा—उसको भी काटकर उन्होने कुएँ मे फेक दिया

रासक्कुट्टि को होश आने पर पहले कुछ भी समझ नही आया। बारिश हो रही थी। मै बारिश मे कहाँ लेटा हूँ ? शरीर के नीचे से कुछ हरकतें और कराहे धीरे-धीरे उसको सब कुछ मालूम हुआ मै लाशो की सेज पर लेटा हूँ बारिश ने मुझे बचाया है—बरसात के ठण्डे पानी से ही मुझे होश आया है। शरीर भर म गहरा घाव है। धीरे-धीरे हाथ उठाकर छुआ तो अधकूप के किनारे से टकरा गया। लाशो पर हाथ टेककर बडी मुश्किल से किसी तरह ऊपर की सतह तक पहुँचा। सब कही खामोशी थी। बारिश के बाद की धुँधली चाँदनी। पता ही न चला कि कितनी दूर रेग गया। किसी तरह नाले के नजदीक पहुँच गया। चेहरे को झुका कर जीभर पानी पिया और वही लेट गया दूसरे दिन उस रास्ते से गुजर रहा एक शरणार्थी मघ ही रासक्कुट्टि को अपने साथ इधर ले आया था।

श्रीधरन को लगा कि वहाँ का वातावरण बर्दाश्त के बाहर है। पूरब दिशा से आये हुए लोगो मे सफाई नाम मात्र को भी नही है। न उन्हे कोई लाज-शरम ही है। आँगन मे मल और पेशाब की बदबू ! बीमारो के चीत्कार—कभी-कभी औरतो के बीच के झगडे भी ।

अप्पु कही नजर नही आया। वह मिले तो जगल की सैर की जा सकती थी।

दोपहर ढल गई। कुछ देर अकेले टहलने के विचार से श्रीधरन बाहर निकला।

चट्टानी खेत से जाल का शामियाना हटा दिया गया है। सूखी गरी का खलिहान और चारो तरफ बास की चटाई की टट्टी उसी तरह कायम थे।

आम के पेडो के ऊपर निगाहे घुमाई। आम का मौसम नही है।

'क्यें 'ङ,' आसमान से शैतान की पुकार! झट ऊपर देखा। एक पपीहा—सिर पर काठ का कटोरा ढोनेवाली चिडिया। उस चिडिया के सिर पर काठ के कटोरे के आने की कहानी अप्पु ने उससे कही थी। पपीहा ने 'क्ये ङ' के चीत्कार के साथ तीसरे खेत के नजदीक तालाब के किनारेवाले ताड के पेड के ऊपर शरण ली।

श्रीधरन एक-एक दृश्य को देखता और विचार करता आगे बढ रहा था। पाँचवे खेत पर पहुँचने पर उसने चारो तरफ का मुआइना किया।

जगल की सीमा के नुक्कड पर किसी की आहट महसूस हुई। गौर से देखा। वहाँ झुका हुआ एक आदमी काँटो से बाड बाँध रहा है। नजदीक आकर देखा तो पहचान लिया। ओठ पर सफेद दागवाला चेक्कु था।

"अरे बेटा, इधर कब आया?" चेक्कु ने कुशल-क्षेम पूछा।

चेक्कु को बाड बनाते देखकर श्रीधरन वहाँ खडा रहा। पाँचवें खेत की सीमाओ की मेड पर कही-कही टूट-फूट गई बाड की चेक्कु मरम्मत कर रहा था।

उस दीवार के कोने मे नीचे के ककड भरे अहाते मे, अगूठी मे लाल नग की तरह के कीडो ने श्रीधरन का ध्यान खीचा। वे मैथुनरत होकर चूतड से चूतड चिपका कर चक्कर लगा रहे थे—देखने मे बडा मजा आता है।

"अरे बेटा, उस मेड के पास मत खडे रहो।" बाड की मेड के बीच से चेक्कु ने टनन् की आवाज मे पुकार कर कहा।

इन कीडो की हरकत देखते रहने के कारण ही शायद चेक्कु ने ऐसा कहा होगा, इसी ख्याल से श्रीधरन ने झट तीसरे खेत के तलाब के किनारे के ऊपर नजरे घुमाई। फिर अबोध बनकर श्रीधरन ने पूछा—"इधर खडे होने से क्या होगा?"

चेक्कु खामोश रहा। उस ओर देखने पर मालूम हुआ कि चेक्कु ने बाड को बाँधने के लिए ताड के रेशे अपने मुँह मे दबा रखे हैं।

उन कीडो की प्रणय-चेष्टाओ की तरफ एक बार फिर सरसरी निगाह डालने के बाद श्रीधरन ने पूछा—"इधर खडे होने मे क्या आपत्ति है?"

"उधर ही चन्दोमन लेटता है।" चेक्कु ने मुँह से रेशा निकालकर बाड पर बाँधते हुए फुसफुसाने के ढग से कहा।

चन्दोमन के लेटने का कोना? श्रीधरन की समझ मे कुछ भी नही आया। उसने

शंकित होकर दीवार के उस कोने मे देखा।

दीवार की ऊपरी सतह पर कई बास खड़े हुए थे। वहाँ बाड की जरूरत नही है। पुरानी दीवार का वह हिस्सा कही-कही नष्ट-भ्रष्ट हो गया है। बाँस की लम्बी, मोटी और पकी जडें दीवार की छाती से बाहर दिखाई दे रही थी। एक पुराना गड्ढा भी वहाँ था, जिसमे साही ने डेरा डाल रखा था। लेकिन किसी के लेटने का कोई चिन्ह दिखाई नही दिया।

बाड बाँधते-बाँधते चेक्कु उस कोने के निकट पहुँच गया था।

"चन्दोमन को वहाँ चैन से लेटने दो, बेटा! उधर मत देखो।"—चेक्कु ने झनकार की-सी आवाज मे कहा।

सुनकर श्रीधरन भयभीत हो गया।

"तुम वह किस्सा सुनना चाहते हो क्या?" डालियो को बाड मे बाँधते-बाँधते चेक्कु ने चेहरा घुमाते हुए पूछा।

चेक्कु कहानी कहने के 'मूड' मे है। श्रीधरन ने उतावली के साथ 'हाँ' कह दिया।

"तेरे दादा के पिताजी के जमाने मे उधर वह घटना घटी थी।" चेक्कु ने यो कहकर अपनी कथा शुरू की।

"तेरे परदादा की एक बेटी थी—तिरुमाला। सुना था कि तिरुमाला बहुत ही सुन्दर थी। ताड के गुच्छे की तरह उसके लम्बे बाल थे। तेरी उस दादी माँ की शादी की उम्र थी ·। उन दिनो इलजिपोयिल के बैलो की देख-रेख करने के लिए कही सुदूर पूरब से चन्दोमन नाम का एक नौजवान आकर ठहरा था "

बाड बाँधते हुए चेक्कु ने किस्सा जारी रखा "तिरुमाला और चन्दोमन के बीच मुहब्बत हो गयी " श्रीधरन ने बडी उत्सुकता से ध्यान दिया।

"मुहब्बत का मतलब जानता है?" बाड की गाँठ को कसकर बाँधते हुए चेक्कु ने पीली मुस्कान के साथ अपना चेहरा मोडकर पूछा।

'जानता हूँ' के अर्थ मे श्रीधरन ने सिर हिलाया। "फिर क्या हुआ?"

"एक दिन, रात को तेरे परदादा ने उनकी मुहब्बत का पता लगाया। किसकी मुहब्बत?—दुलारी बेटी तिरुमाला और बैल की देख-रेख करनेवाले चन्दोमन की मुहब्बत। तेरे परदादा ने आधी रात मे तिरुमाला को उस पशुशाला की तरफ जाते हुए अपनी आँखो से देख लिया, जहाँ चन्दोमन लेटता था। "

अनजाने मे ही श्रीधरन के मुँह से 'हाय' की आवाज निकली।

चेक्कु ने चुप्पी साधकर थोडी देर के लिए एक खामोशी पैदा की।

उसने जानबूझ कर ऐसा नही किया था। उसके मुँह मे ताड के रेशे जो थे।

सोने का रग और ताड के गुच्छे-जैसी चोटीवाली तिरुमाला-दादी के पास हौले से पशुशाला के दरवाजे को खोलने का और कानो मे बाली और सिर पर

लम्बी चोटीवाले एक स्वस्थ खूबसूरत नौजवान के, अपनी प्रेमिका को छाती से लगा लेने का दृश्य श्रीधरन की आँखों मे नाच उठा।

चेक्कु ने कथा आगे बढायी "दूसरे दिन सबेरे चन्दोमन दिखाई नही दिया।"

"क्या हुआ? 'चन्दोमन छिपकर चला गया?" श्रीधरन ने सहानुभूति से पूछा।

"तेरे परदादा ने सब लोगो से यही कहा था कि चन्दोमन कही छिपकर भाग गया है। वह कही फरार हो गया है। लेकिन बात ऐसी नही थी।"

चेक्कु ने एक बडी लकडी उठाकर मेड पर गाड दी और एक काले बडे पत्थर से उसका सिर ठोकते हुए कहा —"तेरे परदादा ने चन्दोमन को पीट-पीटकर मार डाला था। सहायता के लिए पटिक्काल के चेरुमन को भी बुलाया था। उसके बाद सुबह से पहले ही लाश खेत के इस कोने के गड्ढे मे दफनाकर उसके ऊपर दीवार बना दी गई।"

चेक्कु ने इशारा करते हुए कहा—"इधर, इधर ही!"

श्रीधरन को लगा कि उसका सिर घूम रहा है।

"इस घटना के बाद दूसरे दिन इलजिपोयिल मे और एक घटना घटी।"

"चन्दोमन का किस्सा खत्म हो गया।" चेक्कु ने कथा जारी रखी, "दूसरे दिन, रात को तेरी तिरुमाला दादी तीसरे खेत के तलाब मे कूदकर डूब मरी।"

चेक्कु ने नीचे के तीसरे खेत की तरफ इशारा किया। श्रीधरन की दृष्टि भी अनजाने उधर चली गयी।

तालाब के नजदीक फले हुए ताड के गुच्छे तिरुमाला दादी की याद ताजा करते हैं।

(फिर लाश की दीवार को ध्यान से देखने के बहाने श्रीधरन ने उन कीडो की प्रणय-क्रीडा का दृश्य तिरछी आँखो से देखा, लेकिन वह प्रणय वेदी वहाँ खाली पडी थी।)

चेक्कु बाड का काम समाप्त कर, बाकी डालियो और ताड के रेशो को वही डालने के बाद चाकू मोडकर अपनी कमरे मे रखकर धीरे से उठ गया।

श्रीधरन अपने ही ख्यालो मे खोया सहमा हुआ देख रहा था कि चेक्कु का स्वर सुनाई दिया "इन घटनाओ को बीते तीस-पैंतीस बरस बीत गये। लेकिन तिरुमाला और चन्दोमन अब भी बिछुडे नही हैं। चाँदनी की कुछ रातो मे तिरुमाला पानी टपकाते बालो से तीसरे खेत के तलाब से उठकर छठे खेत की दीवार के नीचे लेटनेवाले चन्दोमन के करीब जाती हुई कई लोगो को दिखाई दी है। एक दिन, रात को खरगोशो के शिकार के लिए इधर से जाते हुए मैने बाँस के इस झुरमुट मे कुछ सिसकियो और फूट-फूट कर रोने की आवाजे सुनी थी।"

चेक्कु ने अकस्मात् दीवार के कोने मे आँखें गडाकर देखा।

उस ने इशारा करके बताया—"वह उधर पडी हुई चीज हड्डी तो नही है ?"

सपनो से चौंक उठकर श्रीधरन की निगाहे दीवार पर टिक गईं। दीवार के भीतर बासो की जडो के बीच मे कटोरे के टुकडे की तरह कोई चीज दिखाई दे रही थी। चेक्कु ने बास के टुकडे से वहाँ की थोडी-सी मिट्टी हटाई तो हड्डी कुछ अधिक साफ नजर आने लगी।

"चन्दोमन की पसली है।" निर्विकार होकर चेक्कु ने कहा। फिर जमीन से कुछ डालियाँ उठाकर वहाँ ढकने के बाद फुसफुसाया "दीवार की मरम्मत करने को कहना है।"

शाम ढलनेवाली थी। श्रीधरन चेक्कु के पीछे-पीछे नीचे उतरने की सोच रहा था, लेकिन चेक्कु नदी के किनारे पर जाने लगा—टीलो को लाँघने के बाद तग पगडडियो से। (चेक्कु को नदीतट पर गाडी गई शराब की बोतलो को लेना है।)

चेक्कु ने पूछा—"बेटा, तुझे अकेले जाने मे डर तो नही लगता है ?"

"नही, कोई डर नही ! मै अकेले ही जाऊँगा।" श्रीधरन ने हौसला दिखाते हुए कहा।

"तो दौड जाओ ! मै इधर से देख रहा हूँ"—चेक्कु भूत की तरह पहरा देने लगा।

खेतो और मेडो को लाँघकर श्रीधरन नीचे की तरफ तेजी से चला गया। चट्टानी खेती की गरी के खाली खलिहान को पार कर तीसरे खेत के नजदीक पहुँचने पर हृदय मे जलन-सी महसूस हुई। लेकिन वह तुरन्त ही शाँत हो गयी। तीसरे खेत मे लोगो का शोर सुनाई पड रहा था। उधर देखा। शरणार्थी औरते तालाब मे डुबकी मार कर नहा रही है। जरा तसल्ली हुई। तभी दूसरी दिशा से कोई दौडता हुआ आया, अप्पु !

"शीदरन, मै तुझे ढूँढता हुआ आया हूँ।" हाँफते हुए अप्पु ने अपनी गोद से केले के पत्ते का दोना लेकर श्रीधरन की तरफ बढाते हुए कहा—"नारायणी ने दिया है, शीदरन को।"

श्रीधरन ने दोना खोल कर देखा खुशबूदार मौलसिरी के फूलो की एक माला !

18 बन्दर और गूर्खास

मौलसिरी की पुष्पमाला की खुशबू ने श्रीधरन के हृदय मे एक अज्ञात विकार के 'आदि सदेश' को जगा दिया •। साथ ही उसको एक प्रकार के भय,

शरम और पछतावे की अनुभूति भी होने लगी।

उस दिन रात को श्रीधरन चैन से नहीं सो सका। बाहर शरणार्थियों का हो-हल्ला था—बच्चे झिल्लियों की तरह लगातार रो रो रहे थे—माताएँ उन्हें दुलार रही थी (स्तनपान करा रही थी ?)—फिर भी रुलाई न थमने के कारण नाराज होकर खूब पीटती थी। रुलाई फिर दहाड़ मे बदल जाती ' जगलों से सियारो की चीख भी

श्रीधरन ने तकिये के नीचे छिपाकर रखी हुई फूलमाल ले ली

पहाडी की तराई की एक गन्दी झोपडी मे अपने गतिहीन शरीर को पुरानी चटाई से ढककर चितन, स्वप्न और एकात मे दिन गुजारनेवाली नारायणी सुनहरी सर्पिणी की तरह रेंगकर अन्तस मे आ बैठी।

उसने यह श्रीधरन को क्यो पिरोकर भेज दी ? 'पश्चिम से आये हुए राज-कुमार' को अभी तक नही भूली है, क्या इस बात की सूचना देने के लिए ही ?

उसके लिए श्रीधरन क्या कर सकता है ? जगल मे जाती के फल, जामुन आदि तोडकर पत्तो के दोनो मे लपेटकर दे सकता है।

वह सब उसका अप्पु भैया तो करता ही है।

उसको अप्पु से ज़रा ईर्ष्या हुई। श्रीधरन उसको अच्छी कहानी सुनायेगा ? पोन्मला देश के राजकुमार और नीले समुद्र के महल की नागराज कन्या की दास्तान ?

पोन्मला देश का राजकुमार अपने दोस्तो के साथ नीले समुद्र मे बहुत दूर नैया खेने गया। थोडी देर के बाद एक ऊँची लहर ऊपर आयी और उस किश्ती को तोड डाला।

वह लहर नही थी। फिर क्या थी ? —नीले सागर की गहराई के पहरेदार नाग राक्षस का खुला हुआ फण था। राजकुमार के सभी दोस्त समुद्र मे डूब मरे। राजकुमार समुद्र मे नीचे उतरता-उतरता आखिर नीले रग की काई मे रुक गया। वह नीले रग की काई न थी, नीले समुद्र की चौथे मजिल पर नहानेवाली नागराज कन्या की नीली केशराशि थी ।

स्वर्ण नाग के दो बच्चो ने राजकुमार के शरीर को घेर लिया। राजकुमार बेहोश हो गया।

राजकुमार के शरीर को घेरनेवाले वे नाग के बच्चे न थे, बल्कि राजकुमार के सुनहरे हाथ थे।

नागराजकुमारी ने राजकुमार को अपनी नीली अलको मे छिपा लिया और नील रत्नमहल मे तैर कर ले गयी महल के रत्न-खचित कमरे के मुक्तापलग पर रग-बिरगी चिकनी सेज पर

बाहर से जगली बिल्ली की रुलाई सुनकर श्रीधरन चौंक उठा। बाद मे उसे

मालूम हुआ कि वह बिल्ली की रुलाई न थी, बल्कि सारे शरीर मे विद्रोही मुसलमानो की मार खाकर जिन्दा लाश बने शरणार्थी रासक्कुट्टि का चीत्कार था।

"क्ययो ङ "

एक चिडिया का गीत। श्रीधरन ने कान खडे कर लिये। चौथे खेत के आँवले के पेड के ऊपर से आयी होगी •

नागराजकुमारी और नारायणी पुन मन मे नाच उठी। एक सपने की तरह देखा कि नागराजकुमारी की दास्तान सुनकर नारायणी की नीलकमल की-सी आँखे आश्चर्य से खुली रह गयी है।

(बाहर से एक शिकायत सुनाई दी "माँ, छोकरे ने मेरे ऊपर पेशाब कर दिया।")

एक नगे बालक को अपने पास लेटे भैया के शरीर पर पेशाब कर देने के बारे मे सोच कर श्रीधरन को हँसी आ गयी

इस ढग की अद्भुत कथाएँ क्या अप्पु नारायणी को सुना सकता है ?—अप्पु को कुछ नही मालूम। चित्रक की मिथ्या जडीबूटी के खोजने की फिजूल कोशिश मे सारे पेडो के ऊपर चढ जाना ही वह जानता है—बुद्धू कही का !

"आ आ • आ आ मुर्गे आ—मुन्ने आ।

चुग कर खाने चूहे आ—

प्यारे—मुन्ना सो जा—छोटे गीदड—देखो मत।

एक शरणार्थी माँ अपने बेटे को लोरी गाकर सुला रही थी। श्रीधरन की आँखें भी लगने लगी

श्रीधरन की चिल्लाहट सुनकर नाना जी दौडे आये। नानाजी के हाथ मे तेल से सनी बत्ती जल रही थी। श्रीधरन 'साँप ! साँप' चिल्लाता हुआ एक कोने मे छिप कर खडा था।

"कहाँ है —कहाँ है ?" नानाजी भय के मारे दरवाजे की तरफ मुड गये।

श्रीधरन ने चटाई की तरफ इशारा किया। अच्छी तरह दिखायी न देने पर भी नानाजी ने झुककर देखा, श्रीधरन की सफेद चटाई पर गोलाकार कोई चीज पडी थी। नानाजी ने बरामदे मे लेटे शरणार्थियो को जोर से पुकारा। उनके बीच से पाच्चु बाँस की एक छडी लेकर फौरन दौडा आया। साँप तो चटाई पर चुपचाप कुडली मारकर लेटा था। लगता है, विषैला साँप है।

पाच्चु ने अपना एक पैर दरवाजे के बाहर और एक दरवाजे के अन्दर रख जरा झुक कर साँप को छडी से हिलाने की कोशिश की। वह जरा हिला तो, पर सरका नही।

पाच्चु ने ध्यान से देखा फिर छडी को नीचे डालकर अन्दर आ साँप को पकडकर अपने गले मे डाल लिया। हँसते हुए बोला "यह मौलसिरी का काला

नाग है। मौलसिरी का काला नाग।…"

नानाजी ने निकट जाकर उसकी जाँच की। मुरझाये हुए मौलसिरी फूलों की माला थी।

इतने मे श्रीधरन की नीद की खुमारी दूर हो गयी थी।

शरम के मारे सिर नीचा किये खड़े श्रीधरन का हाथ पकडकर नानाजी ने कहा "बेटा, तू यहाँ मत लेट। आज तू नाना के पास लेटेगा।"

दूसरे दिन दोपहर को श्रीधरन चन्तुक्कुजन के साथ खेल रहा था। शरणार्थियो के बीच श्रीधरन को यह साथी मिला था।

चन्तुकुजन ने श्रीधरन को एक फूंकनली बनाकर दी। एक लम्बे बेत को छेद कर उसमे कपडे से लिपटा हुआ एक तीर घुसाने के बाद निशाना साधकर फंक मारने पर पेड पर बैठी चिडिया या नदी की मछली को मारा जा सकता है।

श्रीधरन ने सलाह दी "हम जगल मे जाकर कबूतरो का शिकार करे।" दोनो फूंकनी साथ लेकर जगल की तरफ रवाना हुए। तभी अचानक अप्पु उधर दौडा आया।

श्रीधरन डर रहा था कि कही अप्पु के हाथ मे पत्ते का दोना न हो। अगर दोना है तो अवश्य उसके अन्दर मौलसिरी के फूल भी होगे। उन फूलो से कल श्रीधरन के नाको दम हो गया था।

अप्पु के हाथ मे दोना नही था। अप्पु ने बडे जोश से श्रीधरन से पूछा—"शीदरन, क्या तुझे बन्दर को देखना है? कारोट्ट मन्दिर के चात्रन बदर को—?"

श्रीधरन ने कोई दिलचस्पी नही दिखायी। उसने कितने ही बन्दरो को देखा था। फूंकनी लेकर चिडियो का शिकार करने की मशा से श्रीधरन बोला, "मै बदर देखने नही जाऊँगा। मै और चन्तुक्कुजन कबूतरो को तीर मारकर गिराने के लिए जगल मे जा रहे है। तू भी साथ चलेगा?"

अप्पु ने नही छोडा "जगल मे फिर जायेगे। कारोट्ट मदिर का चात्रन बदर थोडे ही दिनो का मेहमान है। बन्दर एक साँप को पकडकर चार दिनो से बैठा है। लोग चात्रन बदर को देखने के लिए ही अब मदिर मे जाते है—"

साँप को पकडकर बैठने वाला बदर! श्रीधरन उत्सुक हो गया "हम चलकर देखें—" चन्तुक्कुजन को जोश आ गया।

यो उन्होने जगल के कार्यक्रम को स्थगित कर बदर को देखने के लिए कारोट्ट मदिर मे जाने का निर्णय लिया—फूँकनी को एक केले के नीचे छिपाकर रख दिया।

"जगल के कबूतरो, तुम लोग और एक दिन जिन्दा रहो।" श्रीधरन ने जगल की तरफ देखकर आश्वासन दिया।

इलजिपोयिल से ढाई मील पूरब मे नदी-घाट के नजदीक एक ऊँची जगह पर कारोट्ट मदिर बना है। वह पुराना देवी-मदिर है। उसके पास एक छोटा-सा तालाब है जिसका आधा पानी सूख गया है। तालाब के चारो तरफ सागौन, अक्ष, कारस्कर के कई बडे पेड किले की तरह खडे हैं। सौ बरस से भी ज्यादा आयु के इन पेडो मे कई बदर उछल-कूद करते है। 'कारोट्ट मदिर' को लोग 'बदरो का मदिर' कहकर ही पुकारते है। मन्दिर मे मनौती चढाने के लिए आनेवाले तीर्थ-यात्री यदि इन बदरो को नैवेद्य का भात, रोटी, शक्कर न दे तो ये शरारत करने लगते हैं। लोगो की कमीज और धोतियो को कीचड उछालकर गन्दा कर डालते हैं और औरतो को लजानेवाली कुछ हरकतें भी करते है। अवसर पाकर ये बडे लोगो के हाथ से भी सामन छीन लेते और वृक्षो पर चढ़कर कूद-कूद कर अपने चूतड नोचते हुए उन्हे शर्मिन्दा करते। जब कोई इन्हे पत्थर मारने की कोशिश करता तो झट ये गुरिल्ला क्रातिकारियो मे बदल जाते। पर मन्दिर की देवी की पूजा होने के नाते कोई भी इन पर आँच न आने देता। इसी कारण से ये बन्दर इतनी बदतमीजी करने लगे हैं।

उनमे एक बन्दर ज्यादा नटखट था। उसकी पहचान बडी आसान थी। उसका दाहिना कान आधा ही था। न मालूम पैदा होने ही उसके इस कान की ऐसी दुर्दशा हो गयी या उससे भी अधिक किसी नटखट बदर ने उसे काट डाला। इस बदर को लोग चात्रन के नाम से पुकारते थे। यह नटखट वानरो का उस्ताद था।

इस चात्रन बन्दर पर ही यह मुसीबत आ गयी है। अपने साथियो और बच्चो के हाथ से कई चीजें छीन कर खाने के बाद पानी पाने के ख्याल से उस्ताद चात्रन पेड से नीचे उतरा था। चारो पैरो को फैलाकर अपनी पूँछ उठाये उस्ताद चात्रन नदी तट की तरफ जा रहा था कि तभी उसे एक साँप कीच मे रेगता दिखाई दिया। बन्दर ने कौतुक से उसकी तरफ देखा और फिर झट उसे पकड लिया।

साँप प्राण-वेदना से तडप उठा और बन्दर की कलाई पर लिपट गया। बन्दर ने अपनी मुटठी की तरफ देखा। हू—हू—हू—!—और इस भयकर दृश्य को वह दुबारा नही देख सका। दाहिने हाथ से आँखे ढक चेहरे को उल्टी दिशा मे घुमा-कर बाये हाथ को अपने मे दूर फैलाए हुए वह बैठ गया। चार दिन से बेचारा यो ही बैठा है। न कोई भोजन, न जलपान न शोर-शराबा। मुट्ठी को खोले बिना, सोये बगैर बेचारा ध्यान मग्न-सा बैठा है।

चात्रन की तपस्या को भग करने के लिए लोगो ने कई तरकीबें निकाली। चिउडा, फल, शक्कर एक पत्ते मे उसके सामने रख दिये। पर बन्दर अपने मौन-ध्यान से विचलित नही हुआ।

मुट्ठी का साँप सडने लगा था। बन्दर को श्रीधरन ने अच्छी तरह देखा। उसने इस तरह चुपचाप बैठा बन्दर पहली बार ही देखा है। वह भी एक विचित्र मुद्रा

मैं। 'मैं हर्गिज नही देखूंगा' का हठ लेकर बायें हाथ को दूर हटा, आखें मूंद चेहरा मोडकर बैठनेवाले उस बन्दर को देखकर श्रीधरन के मन मे 'सतान को न देखूंगा' के हठ मे मेनका को इनकार करनेवाले विश्वामित्र मुनि की तस्वीर ताजा हो आयी।

"इस बदमाश बन्दर को ऐसा ही फल मिलना चाहिए—मन्दिर की देवी ने सजा दी है।" अप्पु पीछे से बडबडाया।

इस बन्दर ने एक बार अप्पु को खरोच दिया था। साँप को पकड़कर तपस्या करने वाले बन्दर को देखने के लिए लोग तालाब के आसपास जमा हो गये थे। किसी ने भी कारोट्ट देवी की तरफ मुडकर फूटी आँखो से भी नही देखा। उस दिन प्रजाओ को भी भूखो रहना पडा।

चन्तुकुजन ने लोगो की भीड देखकर राय जाहिर की "मैं बीडी-मीडी, सिगार, शरबत की एक छोटी-सी दुकान खोल लूं ?" (अपने गाँव की दूकान मे बीडी सिगरेट, सिगार बेचता था चन्तुकुजन—वहा से भी बडी सख्या मे लोग कारोट्ट मदिर के बन्दर को देखने के लिए आ रहे है।)

यहाँ के बन्दरो को भी विषाद ने घेर लिया है। कुछ बुजुर्ग बदर पेडो की डालो पर गम्भीर भाव से बरौनियो को जरा ऊपर उठाकर चूतड खुजाते चिता-मग्न बैठे है। उन्हे नही मालूम कि उनके साथी चात्रन और भीड के लोगो को क्या हुआ है। बच्चो को पेट से चिपकाये कुछ बदरियाँ इधर-उधर घूम रही हैं। डालो के बीच युवा कपि बकवास कर रहे हैं और बच्चे पूंछ उठाकर उछल-कूदकर रहे हैं।

साँप को भीचकर बैठे हुए बन्दर की तरफ अन्त मे एक बार और मुडकर देखने के बाद अप्पु ने कहा—"जरूर आज रात को चात्रन बदर की मृत्यु हो जाएगी। लक्षण से ऐसा ही लगता है।"

तालाब से कुछ दूर की एक झाडी मे अप्पु ने सियार को छिपे हुए देखा था। झाडी मे छिपकर बैठनेवाले सियार को उन प्राणियो की सूघ मिल गयी होगी, जो मृत्यु के गड्ढे मे पाँव रखने जा रहे है।

श्रीधरन ने भी उसकी बात पर यकीन किया। आँखें मूंदकर हाथ फैलाने की दशा मे ही बेचारे चात्रन बन्दर के जान से हाथ धोकर नीचे लुढ़क जाने, झुरमुट मे छिपकर ताक मे बैठे सियार के चिल्लाने, जगल से चिल्लाते हुए आ रहे सियारो द्वारा चात्रन बदर को चीर-फाडकर खाने के दृश्य श्रीधरन के मन से होकर गुजर गये। दूसरे दिन सुबह को तालाब मे जाकर देखने पर लोगो को चात्रन की हड्डि-डयाँ और खोपडी ही दिखायी देगी।

तभी चन्तुक्कुजन ने कहा कि दगइयो से डरकर गाँव से भागते समय उसने ऐसी एक लाश रास्ते मे देखी थी जिसको सियारो ने खा डाला था और जिसकी

खोपडी मे बारिश का पानी भरा था।

श्रीधरन और उसके दोस्त घाट को पार करने के बाद सडक के रास्ते से ही इलजिपोयिल वापस आये। जब वे नदी से सडक पर पहुँचे तब उन्होने सडक के किनारे इधर-उधर लोगो की भीड देखी। श्रीधरन और उसके साथियो को मालूम नहीं हुआ कि क्यो लोग इधर इकट्ठे होकर खड़े हैं। तब चन्तुक्कुजन सडक से पश्चिम की तरफ जानेवाली एक बैलगाडी की तरफ इशारा करते हुए आश्चर्य और खुशी से चिल्लाया 'गूर्खास!'

विद्रोहियो का मुकाबला करने के कारण जख्मी हुए सिपाहियो को चढाकर ये बैलगाडियाँ दक्षिण-पूर्वी देहातो से पश्चिम के शहरो की तरफ जा रही थी। पहले भी कई गाडियाँ जा चुकी है। गोरखा पलटन है। सडक किनारे के बरगद के पेड के पीछे छिपकर श्रीधरन, अप्पु और चन्तुक्कुजन ने उन्हे देखा।

ऊपर की तरफ मुडे कोनेवाली खाकी टोपी पहने एक बन्दूक धारी गोरखा गाडी के पीछे बैठकर बाहर की तरफ देख रहा है। (जख्मी सिपाही अन्दर लेटे हुए है।)

जिन्दगी मे पहली बार श्रीधरन ने एक गोरखा देखा है। पीला बन्दर।

श्रीधरन ने गोरखो की खुखरी के बारे मे सुना था। हसिये की तरह का एक हथियार। रस्सी मे बाँधकर फेंकने पर दुश्मनो का सिर काटने के बाद खुखरी और रस्सी गोरखा के हाथ मे ही लौट आती है। कैसा अद्भुत हथियार है यह उनकी खुखरी!

श्रीधरन ने चन्तुक्कुजन से धीरे से पूछा "गोरखा की वह खुखरी कहाँ है?"

"कमर मे लटकी है।" चन्तुक्कुजन ने उसका स्थान बता दिया।

अचानक श्रीधरन को ऐसा महसूस हुआ मानो उसके पेट मे तोप का विस्फोट हो गया है। बैलगाडी मे बैठा वह गोरखा बरगद के पेड के पीछे खडे उन लोगो की तरफ बदूक से निशाना लगा रहा था। अप्पु वहाँ से झटपट प्राण लेकर भागा। उसके पीछे श्रीधरन भी।

गोली की आवाज के बदले बैलगाडी से सिपाहियो के ठ्टठा मारकर हसने की ध्वनि गूंज उठी।

श्रीधरन ने मुडकर देखा तो चन्तुक्कुजन बरगद के पोछे ही खडा था।

"निरे कायर!" चन्तुक्कुजन परिहास करते हुए हँस पडा "गूर्खास तो बस दिल्लगी ही कर रहे थे न? वे हम लोगो को कुछ नही कहेगे—लेकिन मुसलमानो का मुंडा हुआ सिर देखते ही—ठो!" चन्तुक्कुजन के मुंह से एक गोली छूट गयी।

सिपाहियो को ढोनेवाली आखिरी बैलगाडी भी आँखो से ओझल हो गयी।

अप्पु कहाँ है? चन्तुक्कुजन ने जोर से पुकारा।

अप्पु प्राण लेकर भाग गया था।

श्रीधरन के पेट का दर्द भी पूरी तरह शात नही हुआ था। मृत्यु-भय का यह पहला अनुभव था। साँप पकडे बन्दर को देखने का सारा मजा इस गोरखे की बन्दूक ने किरकिरा कर दिया।

थोडी देर बाद नदी की गहरायी से एक सिर ऊपर उठता दिखायी दिया। देखा तो अप्पु है।

19 वेणुगोपाल

कुल मिलाकर एक बैरागी की तरह ही श्रीधरन इलजिपोयिल म आ पहुँचा था। गोरखे की बन्दूक के सामने एक पल मे अनुभव मे आयी प्राण-भीति की तडप अन्तस् मे अब भी लहरा रही थी। कारोट्ट मदिर मे ध्यानमग्न बैठे बन्दर को देखकर हँसी मुश्किल से ही रुकी थी। लेकिन अब उस बन्दर की बदनसीबी का ख्याल कर दुख होता है। रात को जगली सियार चात्रन का काम तमाम कर देगे—कोई उसकी जान नही बचा सकता ।

इलजिपोयिल के आँगन और अहाते मे तितर-बितर फैले शरणार्थियो की जिन्दगी पर विचार किया—वे सब जान बचाने के लिए अपना घर छोड भाग निकले थे ।

आँगन के कोने के बडे मदार-वृक्ष के सहारे बन गाँज से सटे बैठ श्रीधरन ने ढेर सारी बातो पर विचार किया। मदार की चूडा पर लाल फूल है। गाँज और मदार को एक साथ देखने पर लगता है कि कोई बडा मुर्गा खडा है। तभी कुछ दूर के वृक्षो से 'टी—टी—टी' की आवाज उठी। साथ ही एक सुरीली पुकार भी। श्रीधरन ने ध्यान दिया। लगातार पुकार की मधुरिमा बढती गयी। कोयलें थी। चिडियाँ क्यो गाती है ? वे आपस म बातचीत करती होगी। तमिल नाटको की तरह गीत मे ही सवाद होते होगे। अचानक स्मरण आया कि एक दफा गोपालन भैया के साथ वह तमिल-नाटक देखने गया था। नाटक का नाम था 'तूक्कु तुक्कि"। बडे-से हरे रग के पर्चे पर मोटे अक्षरो मे लिखा मजमून आज भी स्मृति मे ताजा है। "घमासान लडाई! सबका मनोरजन! दासन मुलक्क की एक्टिग!"—विदूषक दासन मुलक्क की एक्टिग देखकर वह हँसी से लोट-पोट हो गया था। उस नाटक की अधिकाश बातचीत गीतो मे थी। गोपालन भैया इन गीतो को सुनकर सिर हिलाकर ताल देता था। गोपालन भैया सगीत सीख रहा है। उसे हिन्दुस्तानी सगीत अधिक प्यारा है।

गोपालन भैया की याद आते ही घर का स्मरण भी हो आया। अब कन्निप्प-

रपु मे माँ, बाप और गोपालन भैया क्या करते होगे ? जब से दगे की शुरुआत हुई है तब से पिताजी आग्ल-इडियन घरो मे ट्यूशन के लिए न जाकर स्कूल से सीधे आते है—शायद वे बरामदे मे बैठकर सस्कृत श्लोक बोलते होगे। गोपालन भैया जिस गोदाम मे हिसाब लिखता है, वह फिलहाल इसलिए बद हो गया क्योकि उसका मालिक—मुसलमान हाजी फरार है। गोपालन भैया शायद अपने पूरब के किमरे मे 'किस्ते-बिस्ते' रटता हुआ हिन्दुस्तानी गाने का अभ्यास करता होगा। माँ रसोई घर मे होगी। लेकिन बडे भाई साहब के बारे मे कुछ नही कहा जा सकता। मूँछ कणारन को माँ से यह कहते सुना था कि बडा भाई पेट करने के धधे पर न जाकर रात-दिन फाटकघर मे बैठकर तौश खेलता हुआ धूप मे बाल सफेद कर रहा है। माँ के ही शब्दो मे कहूँ तो भैया अब 'फाटकघर' मे बैठकर पापड बेलता होगा ।"

कौन जान दगाई शहर मे पहुँच गये है या नही ? अगर वे अतिराणिप्पाट मे घुस गये तो वहाँ की हालत क्या होगी ? इन शरणार्थियो की तरह सब कुछ छोड-कर क्या प्राण हथेली पर लेकर उन्हे भी फरार होना पडेगा ? यह विचार आते ही बडा डर महसूस हुआ। बेचारे माँ- बाप

अचानक आसमान से एक सुरीली आवाज गूँज उठी। लेकिन गायक चिडिया का कोई पता न लगा। चौथे खेत के बडे आम्र वृक्ष की डाल पर उसकी पुकार और चहचहाट सुनाई पडती है। वह तो एक तरह की कोयल है। झट स्मरण आया कि सफेद ओठवाले चेक्कु ने एक बार बाताया था कि कोयल आम्रवृक्ष की कोपले खाती है। इसलिए इतनी सुरीली आवाज म गाती है।

कोयल को देखने के लिए श्रीधरन ने चौथे खेत की तरफ निगाह घुमायी। आम का पेड दिखाई नही दिया। तब तीसरे खेत के तालाब के किनारे का ऊँचा ताडवृक्ष नजर आया। ताड के पत्तो के बीच से पश्चिमी आकाश की नीलिमा दिखायी पडी। जब शाम की कच्ची धूप ताड के गुच्छो पर पडती है तो ऐसा लगता है कि सोने के कर्णाभूषण पहने एक लम्बी औरत ताड के रूप मे वहाँ खडी है। चेक्कु की कहानी की तिरुमाला दादी की याद आ गयी। चाँदनी रातो मे तिरुमाला दादी के भीगे बालो के साथ तालाब के ऊपर उठने और छठे खेत की दीवार के नीचे लेटे चन्दोमन के नजदीक एक-एक कदम रखकर आगे बढने का दृश्य इस दृश्य का स्मरण आते ही रोगटे खडे हो गये।

'चिकलि—पिकलि—च्छील'—नजदीक के कोने से आवाज आयी तो उधर देखा। चार-पाँच चिडियाँ कही से उडकर अहाते मे आ गयी है। वे सूखे पत्तो को छितराकर उनके बीच कुछ ढूँढ रही है। उन बेचारियो को यह बात मालूम नही थी कि उनके पास गाँज से सटा श्रीधरन नाम का एक नटखट लडका पाँव पसारे बैठा है। शाम के धुंधलके की परवाह किये बिना ये छोटी चिडियाँ आहार की

तलाश मे व्यस्त थी। —श्रीधरन को एकाएक अपनी फूकनली की याद आयी। गाँज के पीछे एक केले के नीचे रखी थी। हौले से उठकर गाँज की ओट मे छिपता-छिपाता वह केले की तरफ चला। फूँकनली हाथ मे उठाकर उसकी जाँच की। कपड़े से लिपटा तीर उस नली के अन्दर ही है। उसे हाथ मे लेकर सामने करते ही गोरखे की बन्दूक याद आ गयी सिहरकर खड़ा रहा चिड़ियाँ तब भी सूखी पत्तियो के बीच अपना आहार टटोल रही थी

"गुनाह होगा !" अन्त करण ने सुझाया। नली हाथ से छूट गयी

श्रीधरन ने झट शू शू शू की आवाज निकली। चिडियाँ डर के मारे चू चू करती हुई इधर-उधर उड गयी।

श्रीधरन ने फिर एक बार फूँकनली को देखा। फिर उसे उठाकर ऊँचे केले के गुच्छे के निचले हिस्से को पक्षी रूप मे निशाना बनाकर फूँक दिया। तीर 'पक्षी' के शरीर मे गडगया।

प्राण-वेदना के साथ काँपती, पख फडफडाकर नीचे गिरती चिडिया की कल्पना मन मे की, तो श्रीधरन का शरीर सिहर उठा।

फूँकनली की तरफ घृणा और द्वेष से देखा। मन मे ठाना कि अभी इस नली को नारियल के पेड पर पटककर चकनाचूर कर देता हूँ। फिर ऐसा नही किया। मन मे तुरत दूसरा भाव आ गया। एक नये कौतुक से उस नली को दुबारा देखने के बाद मन ही मन बोला "अप्पु इसे बनाना जानता है।"

चन्तुकुजन के आने के पहले ही इसे बनवाना होगा, क्योकि उसी ने यह फूँक-नली भेंट की थी। चन्तुकुजन तो रासकुट्टि के लिए दवा खरीदने उण्यप्पुट्टि वैद्य के घर गया है। उण्यप्पुट्टि वैद्य की शक्ल याद आते ही वह हँसी नही रोक सका। क्योकि ललाट, छाती और बाहो पर तीन लकीरो का चन्दन-टीका लगानेवाले उस काले-कलूटे, बडी तोदवाले मोटे वैद्य के बारे मे अप्पु ने यह राय जाहिर की थी कि वैद्य पीतल से बधे लकडी के सन्दूक की तरह लगता है।

उसी समय बाहर किसी की बातचीत सुनाई दी। आवाज सुनने पर मालूम हुआ कि वह चेक्कु ही है। (दूसरा आदमी ओठकटा पाच्चु है।) चेक्कु की शराब की बोतले शरणार्थियो के बीच भी पहुँचने लगी थी।

श्रीधरन ने फूँकनली को आगे कर चेक्कु से विनती की—"इससे एक बाँसुरी बना दो।"

चेक्कु ने श्रीधरन से नली माँगी। उसने दाहिनी आँख से लगाकर नली की जाँच की। (देखना था कही नली टेढी तो नही है।) उसने इस अर्थ मे अपना सिर हिलाया कि सब कुछ ठीक है। फिर हसते हुए बोला "मुन्ने को अभी एक बाँसुरी बना देता हूँ।"

तब वह खुशी के 'मूड' मे था। शराब की बदबू आ रही थी।

चेक्कु वहाँ आगन के किनारे ही बैठ गया। कमर से चाकू निकालकर बाँस की नली को नापकर ठीक से छेदा। फिर उसने श्रीधरन से कहा—"बेटा, एक लोहे की कील तो लाओ।"

श्रीधरन दौड़ता हुआ गया। वह कमरे की दीवार पर से अलगनी की एक कील निकाल लाया और चेक्कु को सौंप दी। आँगन मे शरणार्थियो का चूल्हा जल रहा था। गीत गुनगुनाते चेक्कु ने कील को चूल्हे मे डालकर तपाया। फिर उसे बाँस की नली के एक हिस्से पर दबा दिया। वहाँ जलकर गोलाकार छेद बन गया। यो चार-पाँच छेद और बना दिये। फिर एक टुकडी नली की गरदन मे फँसा दी। किसी मरीज शरणार्थी के लिए आयी दवाओ मे कुछ मोम भी मिल गया। उसे भी सही जगह पर लगा दिया। पन्द्रह मिनट मे काम पूरा हो गया।

"पी – पु—पी—पी " चेक्कु ने छेद्रो पर अपनी उँगलियाँ फिराकर बाँसुरी बजा दी।

बाँसुरी का अद्‌भुत नाद! उसके हाथ मे आने पर खुशी के मारे श्रीधरन के पाँव जमीन पर नही पड रहे थे। बाँसुरी लेकर मदार वृक्ष के ऊपर जाकर बैठ गया।

"पी पि पू पु पु पु कोसो पी " राग और ताल तो उस गीत से दूर थे। महज कई तरह के स्वर ही निकल रहे थे। फिर उसको इस बात का घमड हुआ कि वह अपनी ही स्वर-सुधा है— पी पि पी— पी पि पुप्पी

धुधलका छा रहा था। इलजिपोयिल की शारणार्थी औरते नहाने के लिए चली। वे एक जुट होकर तीसरे खेत के तालाब मे उतरी। उन्हे अधेरे मे नहाने मे ही अधिक सुविधा थी। अधेरे मे नहाते वक्त पहनने के लिए धोती की जरूरत न थी—उनम कई औरतो के पास बस एक ही धोती थी।

इन औरतो का नगे होकर तालाब मे तैरते हुए नहाने का दृश्य सोचता हुआ श्रीधरन एक वृक्ष के ऊपर चढकर बाँसुरी बजाने लगा। तब गोपिकाओ के चीर-हरण की तस्वीर का स्मरण आया । वृक्ष की डाल पर बैठनेवाला वेणु-गोपाल और जल मे नगी होकर नहानेवाली सुन्दर गोपियाँ ।

20 अप्पु के खेत मे

चावल की गरम काजी मे घी डालकर उसे कटहल के हरे पत्ते के दोने से पीने का मजा कुछ और ही है। व्यजन के रूप मे भुना हुआ पापड और आम का अचार। (कभी-कभी प्याज और कैथनीम के पत्ते मिलाकर बनाया गया अण्डे का रोस्ट भी होता। (यही है इलजिपोयिल मे श्रीधरन का नाश्ता। बढिया चावल का भात, कद्दू या ककड़ी की सब्जी तुरई या चिचिडे से बना कोई व्यजन, पापड, स्वादिष्ट मट्ठा—दुपहर का भोजन होता। कभी-कभी रतालु का व्यजन होता—

दवा के से हल्के स्वादवाला रतालु श्रीधरन को प्रिय है। अक्सर दोपहर के व्यजन ही रात को भी होते। कई तरह के कद वहाँ मिलते थे। भुने हुए कदो का छिलका निकाल कर उन्हे मिर्च लगाकर खाना बहुत मजेदार लगता है। और कुछ नही तो भुना कोया ही वह खाता (कोया ज्यादा खायें तो पेट मे गडबडी हो जाती है इसलिए खाते समय थोडा सावधान रहना पडता है।) पका हुआ कटहल चीनी मिलाकर भूनने के बाद नयी हाँडी मे रखा रहता है। कटहल के उस हलुवे को केले के पत्ते मे लेकर उगली से चाटकर खाने मे मजा आता है। शहर मे ऐसे पकवान सूँघने को भी नही मिलते।

लालची न होने पर भी श्रीधरन सभी विशिष्ट खाद्य-पदार्थों को इच्छानुसार थोडा-थोडा खा लेता।

कभी कभी शाम को धूप कम होने पर श्रीधरन अकेले ही जगल की तरफ निकल जाता। वह जगल के भीतर नही घुमता। छठे खेत की पूर्वी सीमा के कोने से जगल का निरीक्षण करता (जहाँ चन्दोमन लेटता है पश्चिम के उस कोने की तरफ मुडकर देखने मे भी उसे डर लगता था।)

'ठोख—ठोख ' जगल से तावे पर मारने की-सी एक आवाज उठी। पक्षी की आवाज है। अप्पु ने कहा था कि इस तरह गाने वाला पक्षी 'कुट्टिट कुरुमन है। "ठोख—ठोख – ठोख " वह पुकार लगातार गूँजने लगी। पक्षी के पत्तो मे छिपकर ही वह चहचहाता है। उसकी यह चहचहाहट सुनकर ऐसा लगता है कि वह अपनी प्रेमिका से जोर-जोर मे कुछ बात कर रहा है।

गीतो मे बात करनेवाले पक्षी, दूसरे भी अनेक पतगो की पुकार और शोर सुनाई पड रहा है—लगता है कि जगल एक नाट्यशाला मे बदल रहा है। पर्दा रग-बिरगे बादलो वाला आसमान है। 'कुट्टिटक्कुरुमन' पक्षी तबूरा गायक है। सौ से अधिक अभिनेता और अभिनेत्री है। विदूषक है पपीहा—सिर पर काठ का कटोरा पहने विचित्र वेशवाला।

अप्पु साथ रहे तो जगल के भीतर घुस सकता था। जाती, जामुन के फल पके होगे।

अब अप्पु का साथ नही मिलेगा। क्योकि मट्ठा बेचनेवाला कुजन नायर के छोटे भाई अप्पुण्णि के साथ उसने ककडी की खेती शुरू की है। खेती का खर्च अप्पुण्णि उठायेगा। पर, सुबह और रात को दूर के गड्ढे से पानी लाकर सीचने और रात को खेती का पहरा देने काम अप्पु का है। खेती से जो मुनाफा मिलेगा, उसका दोनो मे समान रूप से बँटवारा होगा। दोनो के बीच यही शर्ते थी।

अप्पु अप्पुण्णि को 'अप्पुण्णिकरुमल' के नाम मे पुकारता है। श्रीधरन को अप्पुण्णि के मट्ठा बेचनेवाले बडे भाई कुजन नायर की याद आयी

लबा, दुबला और जरा टेढा कुजन नायर घुटनो तक एक अगोछा पहनकर

मट्ठे की हाँडी कधे पर रखकर हर रोज सुबह को शहर की तरफ जाता। बेचने पर जब हाँडी से मट्ठा कम हो जाता तो मौका देखकर कही रास्ते से पानी लेकर मिला लेता।

एक बार बडे भाई कुजन नायर से जो भद्दी भूल हो गयी थी उसे अप्पुण्णि ने अप्पु को गुप्त रूप से बताया था। अप्पु ने वह भेद भरा किस्सा श्रीधरन को बता दिया। उसकी याद कर श्रीधरन को हँसी आ गयी। कुजन नायर ने शहर के ब्राह्मण वकील के मठ मे मट्ठा बेच दिया। ब्राह्मणी ने मट्ठा खरीदने के बाद बर्तन को जरा हिला कर देखा। उसके अन्दर कुछ टिमटिमा रहा था। उसे यह सोचकर बडी खुशी हुई कि इसके अन्दर शायद नथुनी पडी होगी। चम्मच से बाहर निकालने पर देखा, न नथुनी है और न सोना, बल्कि एक जिन्दा मछली है। जब कुजन नायर ने रास्ते मे खेत से कुछ पानी लेकर हाँडी मे भरा था, तो मछली भी पानी के साथ चली आयी थी। कुजन नायर फिर मट्ठा बेचने के लिए उस मठ मे भूल कर भी नही गया।

एक दिन श्रीधरन अप्पु की ककडी की खेती देखने गया। विशाल खेत के एक कोने की थोडी-सी जगह को ताड से घेर कर खेती की गयी थी।

अप्पु थोडी देर के कुड से एक बडी हँडिया मे पानी लाकर ककडी की क्यारी सीच रहा था। श्रीधरन को देखते ही अप्पु की आँखे आश्चर्य और आनन्द से चमक उठी। बर्तन को क्यारी मे औधा रखकर अप्पु अपने दोस्त की अगवानी को दौडा।

वहाँ अहाते के बीच मे रखवाली के लिए नारियल के पत्तो और बाँस से बना एक छोटा-सा झोपडा था। दुमजिला। अप्पु ने श्रीधरन को अपने महल म आने का निमत्रण दिया। ऊपर चढने के लिए बाँस की एक सीढ़ी रखी थी। बाँस की गाँठ पर पैर रखता हुआ श्रीधरन एक सरकस खिलाडी की तरह सन्तुलन खोये बगैर बिना किसी खतरे के ऊपर पहुँच गया। बाँसो को बिछाकर बनी ऊपरी मजिल के कोने म एक ताड की चटाई रखी थी। वह अप्पु के सोने की चटाई थी। अप्पु ने श्रीधरन को बैठने के लिए वह चटाई बिछा दी। फिर वह नीचे चला गया।

श्रीधरन ने ककडी के विस्तृत खेत की तरफ निगाह डाली। एक बडे बास के छोर पर एक कठपुतली लटकायी हुई थी। ऊपर पहुँचते ही इस कठपुतली ने श्रीधरन को अचानक आकर्षित किया था, उत्सुकतावश उसने फिर एक बार उसे देखा। बाँस और सूखी घास स बनायी हुई एक मनुष्य आकृति। चेहरा तो मिट्टी का बर्तन था। सिर पर एक घास की टोपी रखी थी। एक पैन्ट भी पहना दिया गया था।—नारियल के पत्ते के डण्ठल के रेशो से बना एक बेल्ट भी। उसकी कमर मे हसिये के ढग का एक हथियार लटका दिया गया था। कन्धे पर ताड के डण्ठल की एक तोप भी थी । श्रीधरन को लगा कि वह एक गोरखे का ही वेश है।

अपनी बढ़िया ककडी की खेती को बुरी नजर न लगने के लिए अप्पु ने नये

गोरखा मॉडल की पुरुषाकृति बनायी थी ।

अपने अहाते से तोड़ी हुई चार-पाँच छोटी ककड़ियाँ अप्पु ने एक केले के पत्ते मे श्रीधरन को भेंट की ।

ककड़ी नमक लगाकर ही खानी चाहिए । नमक अप्पु के स्टाक मे नहीं था । एक बड़े पत्ते मे लपेटकर बरामदे के छप्पर मे रखा हुआ था ।

ककड़ी को बड़ी रुचि के साथ काट-काटकर खाने के दौरान श्रीधरन ने दूर दृष्टि डाली । पूर्वी क्षितिज मे नीले पहाड़ो की चोटी पर डूबते सूरज की धूप सिंदूर की रज छिड़क रही थी । कतारो मे खड़े पहाड़ो के वृक्ष, सतह से ऊपर खड़े ताड़ो के वृक्ष ऊँचे पुतले जैसे दिखाई देते ।

अप्पु ने श्रीधरन के साथ चलने की फुर्सत न मिल पाने का दुख प्रकट किया "श्रीधरन, तूने मेरा काम देखा है न ?—कुड से पानी भरते-भरते कमर टूट गयी । अब रात को पहरेदारी भी करनी होगी । नही तो सारी ककड़ी सियार खा लेगे ।"

श्रीधरन ने पूछा—"क्या तू यहाँ अकेला ही सोयेगा ?"

"हाँ अकेला ही ।"— अप्पु ने सिर हिलाते हुए कहा, "कुछ दिन तक बढ़ई तामू का छोकरा वेलायुधन भी आ जाता था । लेकिन वह हरामी सियारो से भी बड़ा चोर निकला । सियारो को देखने का बहाना कर अहाते मे जाकर, ककड़ी तोड़कर खा लेता—इसलिए उसको अब नही बुलाता "

तब बरामदे मे छिपे एक यन्त्र पर श्रीधरन की निगाह पड़ी ।

"वह क्या है ?" श्रीधरन ने उत्सुकता से पूछा । अप्पु ने उस यन्त्र को बाहर निकाला । बाँस के टुकड़ो और नारियल के पत्तो के रेशो से बनी एक टोकरी जैसी थी ।

"क्या यह चिड़ियो को पकड़ने का फदा है ?" श्रीधरन ने पूछा ।

अप्पु ने हँसते हुए कहा—"यह तो सियारो को डराने-धमकाने की एक तरकीब है ।"

अप्पु ने वह तरकीब दिखा दी । यन्त्र की थैली मे एक पत्थर रख दिया । फिर यन्त्र को लटकाकर तेजी से हवा मे घुमाया "भ् ह् हू म्-भू हू हू म्-भ्ह् हू म् " भयकर गूज !—एक मील दूर पर भी सुनायी पड़े, इतनी भयकर ।

अप्पु ने स्पष्टीकरण दिया सियार लोगो के शोर से परिचित हैं । लोगो के हल्ले-गुल्ले के बीच भी कोई चालाक सियार ककड़ी को काट-काटकर निगलता होता । लेकिन इस यन्त्र की हुकार को किसी भयकर जन्तु का गर्जन समझकर सियार बदहवास होकर जगल मे ही दफा हो जाता ।

इस बात को सोचकर श्रीधरन को हँसी आयी कि अप्पु के यन्त्र की आवाज सुनकर बेवकूफ सियार दुम दबाकर खौफ के मारे भाग जायेगा ।

चिड़ियाँ पश्चिम दिशा मे अपने घोसलो की ओर झुड मे उड रही थी। श्रीधरन का भी घर जाने का समय हो गया था। अप्पु की सिंचाई भी खतम नही हुई थी।

श्रीधरन जाने के लिए उठा।

शाम की लाली मे जगमगाने वाला आसमान ! दूर पर नीला पहाड। कितना खूबसूरत है ! अप्पु को पहरे के इस झोपडे मे बैठकर ककडी खाते हुए कहानी की किताबे पढते रहने मे कितना मजा आता होगा ! श्रीधरन ने अपने मन मे प्रार्थना की कि दगा कुछ अर्से तक बना रहे।

पहरे के झोपडे से नीचे उतरने पर कोई एक बेल श्रीधरन के पैर मे लिपट गयी। उसे साँप समझकर श्रीधरन डर गया।

झट अप्पु से पूछा "अप्पु, क्या यहाँ साँप है ?"

"कभी-कभी दिखायी पडते है, हाल ही मे एक विषैला दुष्ट साँप मेड के पास मिट्टी सूघता हुआ कुडली मारकर लेटा था। मै उस पर पाँव रखने ही वाला था !"

"तूने उसे फिर मार नही डाला ?" साँप के प्रति मन का द्वेष बाहर उगलते हुए श्रीधरन ने पूछा।

"नही, नही, साँप को हर्गिज नही मारना चाहिए।" अप्पु ने सिर हिलाते हुए कहा "अगर साँप को मारेगा तो कुष्ट रोग का शिकार बन जाएगा।"

"वह काट ले तो ?" श्रीधरन ने सवाल किया।

"मारुति मन्दिर मे मुर्गी के अडो की मनौती करना ही काफी है। कोई साँप नही काटेगा।" अप्पु ने दृढ़ता के साथ कहा।

श्रीधरन को याद आया, एक बार उसने मारुति मन्दिर के नागो का वह बडा किला देखा था। बहुत मोटी लताओ से घिरे हुए वृक्ष-समूह। अन्धकार फैलाने वाला अहाता। नाग के फन की मूर्तिवाले कुछ पत्थर इधर-उधर गाड दिये गये है

साँप के बारे मे सोचने पर नारायणी की शकल-सूरत मन मे उभर आयी।

अब नारायणी सुनहरी शाम की धूप को देखती पुरानी चटाई को ओढ़कर अपने आप मुस्कराती उस गुफा मे लेटी होगी। बेचारी !

नारायणी के बारे मे अप्पु से पूछने के लिए उसकी जीभ नही उठी—लाज के मारे।

एक दिन नारायणी को देखने जाना है—श्रीधरन मन ही मन फुसफुसाया।

उसने फिर प्रार्थना की कि दगा बना रहे। श्रीधरन के इलजिपोयिल मे वापस आते आते धुँधलका छा गया था।

21 दगा दबता है

इलजिपोयिल जानेवाली पगडंडी के मोड़ पर पहुँचने पर श्रीधरन के कानों में आर्तनाद सुनाई पड़ा। कारण न जानने से घबराता हुआ वह दरवाजा चढ़ गया। सभी शरणार्थी बरामदे के इर्द-गिर्द खड़े थे। अम्मालु अम्मा नाम की एक औरत अपनी छाती पीट-पीटकर "अरे, मेरे मुन्ना तू चला गया" चिल्लाती हुई गला फाड़कर रो रही थी। जमीन पर, एक चटाई पर मृत बालक को लिटा रखा है।

अम्मालु अम्मा का पति कुजिप्पेरच्चन बरामदे के एक कोने में सिर झुकाकर बैठा हुआ अपनी धोती के छोर से आँसू पोंछ रहा है।

चन्तुक्कुजन से सारी बातें मालूम हुईं। अम्मालुअम्मा ने छह सन्तानों को जन्म दिया था। सब के सब लड़के थे। चार बरस पहले तक सब जिन्दा थे। फिर एक-एक कर मरने लगे। दो सालों के अन्दर तीन अपमृत्यु हो गयीं। सबसे बड़ा लड़का ताड़ के ऊपर से गिरने के कारण चल बसा। चौथा लड़का नदी में गिरकर डूब मरा। दूसरे लड़के की मृत्यु साँप के डसने से हुई थी। फिर दो साल पहले दो बेटे तीसरा और पाँचवाँ चेचक की बीमारी का शिकार होकर दो हफ्तों के भीतर मर गये। आखिरी लड़का उण्णिकुट्टि ही जिन्दा था। झगड़े के कारण घर छोड़कर आते समय उण्णिकुट्टि को साथ लेकर ही अम्मालु अम्मा और कुजिप्पेरच्चन इलजिपोयिल में पहुँचे थे।

दो तीन दिन पहले उण्णिकुट्टि के पेट से दस्त के साथ खून भी जाने लगा था। वैद्य को बुलाकर दिखाया। जब वैद्य ने काढ़ा पिलाने को कहा तो शरणार्थियों में से ही एक बुजुर्ग काना कुट्टाप्पु ने राय जाहिर की कि बच्चे को दवादारू से ज्यादा मन्त्र से ही फायदा होगा। बच्चे को किसी भूत-प्रेत ने काट लिया। झट उस इलाके के मान्त्रिक कोरू को लाया गया। एक धागा बाँधकर पहले-पहल भूत-प्रेत के उपद्रव को रोक दिया गया। फिर उसके बाद एक होम का बन्दोबस्त हो रहा था कि शाम को उण्णिकुट्टि ने अपनी अन्तिम साँसें छोड़ दीं।

यों अम्मालु अम्मा की अन्तिम सन्तान भी उसके हाथ से निकलकर भगवान के हाथ में पहुँच गयी।

चार पाँच दिन पहले इस खूबसूरत बालक को श्रीधरन ने एक लाल लंगोटी बाँधे नारियल के पत्ते के डंठल से बने बैल को इलजिपोयिल के आँगन में चारों तरफ रस्सी से खींचकर खेलते हुए देखा था। वही घुंघराले बालोंवाला दुबला सुन्दर लड़का इस चटाई पर मुर्दा होकर पड़ा है।

उस दिन रात को छठे खेत के कोने में चन्दोमन के नजदीक ही एक गड्ढा खोदकर उसकी लाश दफना दी गयी।

उस दिन लेटने पर आधी रात के बाद भी नीद न आने के कारण अस्वस्थ होकर श्रीधरन कई बातो पर विचार करता रहा। क्या भगवान इतना निष्ठुर है ? अम्मालु अम्मा के सभी लडको को प्रतिशोध के साथ छीन ले गया।

"माम्पूक्कल कण्टिट्टुम् कक्कले काण्टिट्टुम्
मालोकराकूम् मदिक्केण्टा "

(आम्रमजरियो और सन्तानो को देख कोई घमण्ड से फूले ना।)

यह पुराना सुना हुआ गीत उस रात श्रीधरन के मन मे उभर आया। श्रीधरन को याद आया कि दूसरे खेत का आम्रवृक्ष पूरा का पूरा फूलकर इतराने लगा था कि तीन-चार दिन मे ही सब बौर सूखकर गिर गये और आम्रवृक्ष की शोभा एकदम नष्ट हो गयी। आसमान मे जो बादल अचानक छा गया था उसी ने ही इन फूलो को बरबाद कर दिया था। ऐसे ही अम्मालु अम्मा के छह बेटे भी मिट्टी मे मिल गये। शायद अम्मालु अम्मा ने भी घमण्ड किया होगा कि उसके छह पुत्र है। उसी के दण्डस्वरूप अम्मालु अम्मा की यह दुर्दशा हुई होगी। लेकिन, हे भगवान ! इन बच्चो ने क्या गलती की थी ? लाल लगोटी पहने आगन मे खेलते उस कोमल बालक की तस्वीर फिर से मन मे सरक आयी। वही बालक आज छठे खेत के गड्ढे मे लेटा है। पर, अकेला नही, नजदीक ही चन्दोमन भी है।

दरवाजे से चाँदनी कमरे मे झर रही है—अहाते और जगल ज्योत्स्ना मे डूब रहे होगे—आज कौन-सा दिन है ? - शुक्रवार है। तिरुमाला दादी तीसरे खेत के तालाब से उठकर जल टपकाती केशराशि के साथ चन्दोमन की तलाश मे छठे खेत के कोने मे एक-एक कदम रखकर आगे बढती होगी । आज छठे खेत मे पहुँचने पर तिरुमाला दादी रोयेगी नही, हँसेगी। उण्णिकुट्टि को देखकर हँसेगी। चन्दोमन और तिरुमाला को एक दुलारा बच्चा मिल गया है।

"हुन्व-हा हुन्व-हा ' " एक भयकर चीख। पश्चिमी खेत के पेड से आयी थी। अचानक श्रीधरन भयभीत हो उठा। चकोर की पुकार थी। सुना है कि चकोर चीख-चीखकर मृत्यु की सूचना देता है। क्या उण्णिकुट्टि के छठे खेत मे समाये जान की बात उसने नही जानी थी ? नही तो क्या अब भी कोई गड्ढे मे पाँव फैलाये लेटा है ?

हल्के खौफ के साथ श्रीधरन सो गया। अगले दिन सबेरे जाग उठा। थोडी देर बाद अचानक श्रीधरन को याद आया कि इलजिपोयिल मे करने के लिए कुछ सवाल और पढने के लिए कुछ विशेष सबक कन्निप्परपु से पिताजी ने दिये थे। अब तक उस तरफ ध्यान ही नही दिया। देहाती पकवान खाकर अहातो और खेतो मे टहलना और चट्टान पर बैठकर दिवास्वप्नो मे डूबना इसी मे कितने दिन गुजर गये, कुछ पता ही नही लगा। कर्त्तव्य-निष्ठा से विचलित होने पर पिताजी माफी नही देंगे। चार पाँच बार उनकी बेत की मार का स्वाद चख चुका है।

दिन और भी बाकी है। मन में प्रार्थना की कि दंगा लम्बे अर्से तक जारी रहे।

गणित के सवालों की किताब धूल पोंछकर सामने रखी। स्लेट भी साफ करके सामने रख ली। पेन्सिल भी छीलकर ठीक कर ली। कुछ भी तो समझ नही आता। स्लेट पर ऐसी ही कुछ रेखाएँ खींचीं। साँप का चित्र बन गया। साँप का चित्र आसानी से खीचा जा सकता है। साप मौलसिरी फूलों की माला मे बदल गया—तब नारायणी की याद आयी।

अब तक नारायणी के यहाँ जाकर उसे देख नहीं सका था। फिर प्रार्थना की कि दंगा-फसाद लम्बे अर्से तक बना रहे। दुबारा गणित की तरफ निगाह डाली। बहुत देर तक यो ही बैठा रहा। किसी जादूगर ने ही चिह्न और अकों को खोज निकाला होगा—मांत्रिक कोरू के तावीज बनाते समय इस्तेमाल किये जानेवाले अंको, चक्रो और खानो की भी याद आयी। फिर ऐसा एक शाप दिया कि गणित का आविष्कार करनेवाला प्रथम मांत्रिक उस्ताद नरक की आग मे झुलस जाय।

उससे भी समस्या का हल नही हुआ। फिर प्रार्थना की कि दंगा लम्बे अर्से तक चले।

श्रीधरन की विनती का असर नही हुआ। उसकी मनोकामना पूरी नही हुई।

छह महीने तक दावानल की तरह भभकता रहा दगा धीरे-धीरे थम गया। दगाइयो मे कई लोग मारे गये। हजारों की तादाद मे पकडे गये। बाकी लोग लाचार होकर दब गये। देहातो मे शान्ति कायम होने लगी।

हालात की जानकारी के लिए गाँव में गये ओठकटे पाच्चु ने एक दिन शाम को वापस आकर बताया कि दगा खतम हो गया है। पुलिस और फौज वापस चली गयी है। अब हम भी वापस जावें।

दूसरे दिन इलजिपोयिल के शरणार्थी गठरियों और बोझों के साथ अपने गाँवों के लिए रवाना हुए। सामान ढोने के लिए नैयन की बैलगाडी का प्रबन्ध किया गया। शरीर के घाव पूरे नही भरे थे, फिर भी रासक्कुट्टि उत्साह के साथ रवाना हुआ। वह एक बडी धोती लपेटकर बैलगाडी में जाकर बैठ गया।

उनमे अधिकाश ऐसे थे जो लाचार और परेशान थे। इलजिपोयिल से उतरकर जाते समय उनमे अधिकाश की आँखे गीली हो गयी थी। यह कृतज्ञता की निष्कलक अभिव्यक्ति थी।

उनके चले जाने पर श्रीधरन को भी अजीब-अजीब सा महसूस हुआ। उसको चन्तुक्कुन्जन के बिछुडने का गम था। चन्तुक्कुन्जन उससे बडा एक नवयुवक था। मूँछें निकल आयी थी। कुछ बडप्पन भी था। फिर भी वह एक अच्छा मित्र था।

विदा लेते समय चन्तुक्कुन्जन ने अपनी मित्रता की याद के लिए श्रीधरन को एक खूबसूरत लोहे की अंगूठी भेंट में दी। उसमे हाथी की पूँछ का बाल बधा था। उसने श्रीधरन को अपने वन्य गाँव में एक बार आने का निमत्रण दिया।

चन्तुक्कुन्जन ने अपने देहात के बारे मे कई अद्‌भुत किस्से श्रीधरन को सुना रखे थे। लोग गर्मी के मौसम मे पेडो को काटकर ले जाने के लिए हाथियो को लेकर वहाँ आ जाते। तब अपनी दुकान का बीडी-सिगरेट-शरबत का व्यापार बन्द करके वह भी जगल में काम करने जाता। गाँव के उस पार जगली हाथियो का विहार स्थल है। लकडी ढोने के लिए लाये गये हाथियो को काम के बाद रात को गर्दन मे लोहे की जजीर डालकर चरने के लिए भेज देते। कभी-कभी जगली हाथी इन पालतू हाथियो से लडने आजाते। पालतू हाथियो के लिए उन जगली हाथियो से लडकर जीतना आसान नही होता। उस समय काम मे आने के लिए ही गले मे लोहे की जजीर डाली जाती है। जगली हाथी आक्रमण करने के लिए जब नजदीक आता तो पालतू हाथी अपनी सूड मे लोहे की जजीर लेकर जोर से घुमाकर मारता है। मस्तक के मर्म पर मार पडते ही जगली हाथी पीडा की चिंघाड से जगल को हिलाता हुआ मुँह मोडकर भाग जाता।

श्रीधरन को उस जगली गाँव को देखने की बडी इच्छा हुई। चन्तुक्कुन्जन ने हाथी की पूँछ के बाल से बधी इस अगूठी के महत्त्व को बताते हुए कहा "इसे उगली मे पहनने पर जूडी नही होगी —शैतान का उपद्रव भी नहीं होगा।"

इस अगूठी के बदले श्रीधरन ने चन्तुक्कुन्जन को अपना प्यारा चाकू अर्पित किया। वह आसानी से बन्द किया जा सकता है। श्रीधरन को इन्द्रधनुष के रगो की मूठ वाले इस अग्रेज़ी चाकू को कृष्णन मास्टर के किसी पुराने शिष्य ने ही भेंट मे दिया था। यह उपहार देखकर चन्तुक्कुन्जन विस्मयविमुग्ध हो गया।

"पश्चिम की तरफ जब भी आओ तो अतिराणिप्पाट मे आकर मुझसे मिलकर जाना।" श्रीधरन ने चन्तुक्कुन्जन के हाथ को दबाते हुए कहा "कृष्णन मास्टर के घर का पता पूछने पर कोई भी बता देगा।"

चन्तुक्कुन्जन ने आने का वादा किया। एक बार वह नदी से लकडी ले जाने वालो के साथ शहर मे आया था। अगली बार आने पर अतिराणिप्पाट मे कृष्णन मास्टर के बेटे श्रीधरन से मिले बिना न लौटेगा

अम्मालु अम्मा अत मे निकली। छठे खेत की तरफ देखकर वह अपनी छाती पर हाथ रख बडी देर तक रोती रही। कुदरत का खेल। उण्णिकुट्टि की मिट्टी यही है

दोपहर होते-होते इलजिपोयिल का आगन और खेत वीरान हो गया। शरणार्थियो के छोडे हुए कूडाकरकट और चूल्हे वहाँ बिखरे पडे थे। एक पुरानी लगोटी खेत के मदार वृक्ष से बधी अलगनी मे एक झंडे की तरह फहरा रही थी।

श्रीधरन को एक तरह का अकेलापन महसूस हुआ। अप्पु भी अपने पिताजी की बैलगाडी के साथ शरणार्थियो के गाँव गया है।

श्रीधरन ने अपने होमवर्क पर ध्यान दिया। उसने गणित की किताब हाथ मे

लेकर खोली। कभी भी वश मे न आनेवाला गणित।

चहकती हुई दो-तीन छोटी चिडियाँ खेत के कूडे-करकट को इधर-उधर छितरा-कर आहार चुग रही थी। ये चिडियाँ कितनी सौभाग्यशाली है। इन्हे गणित का हिसाब नही लगाना है। सबक याद नही करना है। खाना और गाना ये ही इनके दो काम है।

दोपहर के भोजन के बाद पढने का इरादा करके उसने स्लेट और पुस्तकें वही डाल दी।

22 मौत की गाडी

श्रीधरन ने सुबह उठकर अपनी पढाई जारी रखी। शुरू होते ही एक नया जोश महसूस हुआ। लेकिन गणित पर पहुँचते उसका आवेश ठण्डा होने लगा।

एक दुकानदार के नारियल के हिसाब मे वह उसी तरह फँस गया, जिस तरह रस्सी के जाल मे फसा नारियल। हिसाब लगाकर बताना होगा कि व्यापार मे उस व्यक्ति को नुकसान हुआ था या मुनाफा। उसने मन ही मन प्रार्थना की कि उस दुष्ट को नुकसान ही मिले। लेकिन बात तो पकड मे नही आयी।

तब देखा कि कोई सीढियाँ चढकर आ रहा है। सिर उठाकर देखा। हर्ष के मारे उछलते हुए उठ खडा हुआ। माँ!

माँ के साथ कन्निप्परपु के पडोस के कलाल माक्कोता की पत्नी अम्मिणि अम्मा और एक मोटा काला लडका भी है। उस लडके के सिर की टोकरी मे पान की एक गाठ और ताड के पत्तो मे लिपटा तम्बाकू दिखाई दे रहा है। एक पुडिया मे हलवा और खजूर होगे।

आंगन मे दौडते हुए जाकर माँ की अगवानी की। माँ ने श्रीधरन को एडी से चोटी तक देखा।

"अरे, तू तो बिल्कुल काला हो गया है रे! धूप मे जगलो और झाडियो मे घूमता-फिरता रहा। है न?"

माँ का कुशलान्वेषण इसी ढग का था। माँ कभी जाहिर नही करती। वात्सल्य मन मे ही छिपाकर रखती है। कितने दिनो के बाद वह अपने बेटे को देख रही है। जरा हँस ले तो क्या बिगडता है?

"माँ, पिताजी आएगे?" श्रीधरन ने उतावली से पूछा।

"खैर, तुझे पिताजी को ही देखना काफी है न।" माँ ने जरा खिन्न होकर कहा।

सुनकर श्रीधरन हक्का-बक्का हो गया। कुछ पश्चाताप भी हुआ। माँ ने जो कहा, वह तो ठीक है। श्रीधरन मा से भी ज्यादा पिताजी को प्यार करता है।

"यह कौन है ?" श्रीधरन ने विषय बदलने के लिए उस काले लड़के की तरफ इशारा करके पूछा।

"गाँव से हमारे घर आया हुआ छोकरा है।" अम्मिणि अम्मा ने जवाब दिया।

श्रीधरन की माँ, अम्मिणि अम्मा और वह काला-कलूटा लडका तीनो मुर्गों के बाग देने के मुहूर्त मे कन्निप्परपु से पैदल रवाना हुए थे। वे भुतहे अहाते के रास्ते से वेलालूर खेतो को पार करके इलजिपोयिल पहुँचे हैं। चलते-चलते बिल्कुल थक गये है।

"तू ने पिताजी के कहे अनुसार सभी सबक पढ लिये है न ?"

माँ का सवाल श्रीधरन को अच्छा नही लगा। माँ को तो काला अक्षर भैंस बराबर है। ऐमी अशिक्षिता माँ क्यो इन बातो का अन्वेषण करती है ?

श्रीधरन ने इस तरह अपना सिर हिलाया जिसे "हाँ" या "नही" दोनो अर्थों मे लिया जा सकता है। फिर उसने विषय बदलने ने लिए माँ से अतिराणिप्पाट के समाचार पूछे।

तभी माँ ने एक शोक-समाचार सुनाया "बेटे, तेरा साथी चात्तुण्णि चल बसा।

यह मै क्या सुन रहा हूँ ? चात्तुण्णि मर गया। माँ मुझ से झूठी बात कह रही होगी। चात्तुण्णि मर नही सकता।

श्रीधरन की माँ ने महानुभूति प्रकट करते हुए सब बता दिया। श्रीधरन अपनी प्रतिक्रिया पर नियत्रण रख आँखें फाडकर इस तरह सुनता रहा, जैसे कोई दुखभरी कहानी सुन रहा हो।

चात्तुण्णि एक दिन शाम को लकडी का चूरा बेचकर घर मे बुखार के साथ ही लौटा था। पैसे माँ के हाथ मे देकर अन्दर के कमरे की चटाई पर पड गया। फिर वह नही उठा। विषम ज्वर था। छह दिनो तक यो ही पडा रहा। सातवें दिन पिछले शुक्रवार को उसकी मृत्यु हो गयी ।

शुक्रवार की रात को !—उण्णिकुट्टी की मृत्यु भी उमी दिन हुई थी। श्रीधरन को याद आया। उस दिन चकोर ने अपनी पुकार से चात्तुण्णि की मृत्यु की ही सूचना दी होगी।

अब तो अतिराणिप्पाट पहुँचने पर चात्तुण्णि दिखायी नही देगा। इस दुनिया की सारी बातो की जानकारी रखने वाला अक्लमद चात्तुण्णि अब मिट्टी का ढेर हो गया है। श्रीधरन ने लकडी चूरे की टोकरी सिर पर रख कर पगडडियो पर बढते, अपने आप मुस्कराते और 'अभी आये जहाज मे है क्या-क्या माल ? अदरक, सोठ, सुपारी आदि कितने नाम गिनावें ' गुनगुनाते हुए चात्तुण्णि के आखिरी मिलन की याद की।

"अभी आये खुदा के जहाज़ मे मृत्यु है—मृत्यु—श्रीधरन ने मन ही मन बताया।

अगले दिन तडके ही श्रीधरन को लेकर माँ और साथी अलिराप्पिप्पाट की तरफ लौट गये।

श्रीधरन ने कन्निप्परपु मे पहुँचने पर देखा कि बरामदे मे पिताजी और किट्टन मुशी बातचीत कर रहे हैं। किट्टन मुशी बरामदे के बेंच पर अनन्तशयन की मुद्रा मे लेटा हुआ बातचीत कर रहा है। कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन को अपने नजदीक बुलाकर बडे दुलार के साथ छाती से लगा लिया। उसकी पीठ पर थप-थपाते हुए आहिस्ते से पूछा

"तू ने इलजिपोयिल मे क्या-क्या खाया था ?"

श्रीधरन ने सभी पकवानो के बारे मे बताया। कृष्णन मास्टर जोर से हँस पडे।

पकवानो का नाम सुनकर किट्टन मुशी के मुँह मे पानी भर आया होगा, सोचकर श्रीधरन अपने आप हँस पडा ।

"किट्टन, मुसलमान कैदी सख्या मे कितने थे ?"

कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन को छोडकर किट्टन मुशी की तरफ उन्मुख होकर पूछा।

किट्टन मुशी "मृत्यु की गाडी" की दास्तान बता रहा था · दगे के बीच की एक दारुण घटना।

श्रीधरन सुनता हुआ नजदीक ही खडा रहा।

"तो किट्टन, वे कितने मुसलमान कैदी थे ?"

किट्टन मुशी ने सूघनी अपनी हथेली मे लेकर उसे अपनी नाक के दोनो छेदो मे डाला, फिर दो सेकण्ड तक एक तरह के निर्वाण की हालत मे बैठा रहा। फिर फौरन आँखे खोलकर घोषणा की

"मुसलमान कैदी लगभग एक सौ थे—ठीक-ठीक बताऊँ तो नब्बे "

"क्या ये सब फौजी अदालत के मुकदमे मे दण्डित थे ?" कृष्णन मास्टर ने पूछा।

नही—अधिकाश तो ऐसे थे बेचारे, जो अदालत मे मुकदमे के लिए ले जाये जा रहे थे। सिर्फ शक के आधार पर पकडे गये लोग—उनका कसूर यही था कि वे मुसलमान थे। पकडे गये इन मुसलमानो को दो-दो करके हथकडी लगाकर माल-गाडी के एक छोटे डिब्बे मे ठूस दिया गया था। डिब्बे मे न तो कोई झरोखा था और न हवा के प्रवेश के लिए कोई छेद। दरवाजा बद कर उस पर ताला लगा दिया गया था। गोरे सेनापति का यह हुक्म था कि मुहरबद इस डिब्बे को तब तक नही खोलना है जब तक गाडी निर्दिष्ट स्थान पर न पहुँच जाये। इस डिब्बे के साथ के प्रथम श्रेणी के डिब्बो मे बैठे सैनिक गीत गाते मजा लेते जा रहे थे।

दगाग्रस्त इलाके के नजदीक के रेलवे स्टेशन से ही वह फौजी गाडी रवाना

हुई थी। साठ मील दूर तमिलनाडु के एक जेलखाने मे ही उन्हे ले जाया रहा था। गाडी के रवाना होते ही मालगाडी के तग डिब्बे मे ठूँस दिये गये मुसलमान गर्मी से बेहद परेशान हुए। गला सूख गया। दम घुटने लगा—हाहाकार शुरू हुआ

सैनिको ने परवाह नही की। किसी एक स्टेशन पर सिग्नल न मिलने के कारण गाडी रुक गयी। तब भी ये कैदी मरण-विह्वलता के साथ चीत्कार कर रहे थे। "पानी-पानी" गला फाड-फाडकर वे चिल्लाने लगे। बाहर खडे हुए लोगो ने उनकी पुकार सुनी थी। लेकिन खौफ के मारे कोई भी गाडी के नजदीक नही आया। क्योकि वह फौजी गाडी थी। सबको दूर रहने का हुक्म था। नजदीक जाना गुनाह है, बिना किसी चेतावनी के गोली दाग कर मार डालेगे।

गाडी फिर आगे बढी। थोडी देर के बाद हो-हल्ला और चीत्कार थम गये। तमिलनाडु के स्टेशन पर गाडी पहुँच गयी। कैदियोवाले डिब्बे की मुहर तोडकर अन्दर झाँकने पर एक अनोखा ही दृश्य दिखाई पडा। खून और मास के टुकडे वहाँ छितरे पडे थे। गर्मी, प्यास और घुटन से ये मुसलमान शैतान बन गये थे। उन्होने खून पीने के लिए एक दूसरे को दाँतो से काट काटकर खाया था। कुछ ताकतवर लोगो की काली करतूते —बाकी सब तडप-तडप कर मर गये—गिनकर देखा तो भीतर के नब्बे आदमियो मे छियासठ लाशे थी। बाकी लोग शरीर से थोडा-बहुत माँस और खून निकल जाने के कारण विकृत हो सुध बुध खोकर पडे थे •।

उस रात श्रीधरन सो नही सका। साठ मील की यात्रा के दौरान उस मौत की गाडी मे हुई भीषण वारदात ने उसके मन को मथ डाला। अदम्य प्यास के कारण खून पीने के लिए आपस मे चीर-फाड करनेवाले काले इन्सान। और उन्हे उस दुर्दशा मे पहुँचानेवाले ये गोरे लोग।

ईश्वर से भी अधिक नृशस ईश्वर की ही सृष्टि है यह इन्सान।

श्रीधरन के मन म इस मानव जगत से ही नफरत हो गयी।

●

खण्ड : दो

1 सत्य ब्रूयात्, 2 अतिराणिप्पाट के परिवर्तन, 3 प्रवास, 4 प्राइवेट बुक और जरीदार दुपट्टा, 5 धधकनेवाला घराना और दक्षिण से आये लोग, 6 अद्भुत नक्षत्र, 7 शराब और महिला, 8 एक निधि की दास्तान, 9 दल-बदल, 10 विद्यालय और घर में, 11 इम्तहान, 12 यक्षी

1 सत्य ब्रूयात्

श्रीधरन 'पुत्तन हाई स्कूल' मे छठे दर्जे मे भर्ती हो गया है। नये तजुर्बे हासिल हो रहे है।

'पुत्तन हाई स्कूल' उन छात्रो का अच्छा केन्द्र है जो कई बार फैल हाने के बाद हमेशा विद्यार्थी हो बने रहना चाहते है और जिसमे दूसर स्कूलो से बाहर निकाले गये अमीरो के शरारती बच्चे है।

इस सस्था का व्यवस्थापक हेडमास्टर एक कोगिणी ब्राह्मण है जो फीस अदा करने को तैयार किसी भी दो पैरोवाले जानवर को प्रवेश दे दता है।

पहले के कुछ दिनो मे श्रीधरन को लगा कि यह हाईस्कूल जानवरो का अजायबघर है। वहाँ के अधिकाश शिक्षक दूसरे हास्यास्पद उपनामो से जाने जाते थे "भैसा पट्टर", "गैडा", "सियार स्वामी", "घूस" आदि नाम गुरुदक्षिणा के तौर पर उन्हे छात्रो ने दिय थे। छात्रो पर नियन्त्रण और शासन करनवाले कुछ मोटे-ताजे नटखट लडके थे। दसवी कक्षा का गणपति ही उनका कमाण्डर-इन-चीफ था। वह उस इलाके के बैकर का लडका था। हमेशा हरे रग का सजकोट पहनने वाले दुबले-पतले उस लडके के दाँत कुछ बाहर दिखाई देते थे। गणपति की आज्ञा का पालन करने के लिए हर दर्जे मे एक बदमाश लडका मुकर्रर था। श्रीधरन के छठे दर्जे के "ए" डिवीजन का नेता भालू नारायण था। भालू के कहे अनुसार ही सबको काम करना पडता था। नही तो गडबड होती। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी वह अच्छा नही होता। स्कूल मे कक्षा आरम्भ होन से लेकर शाम को समाप्त होने के बाद भी शासन की बागडोर इन बदमाशो के हाथ मे ही रहती।

उम्र और शकलसूरत से दर्जे का सबसे छोटा लडका होने के कारण श्रीधरन को भालू ने पहले दिन से ही अवज्ञा की दृष्टि से देखा था। शायद उस पर जरा हमदर्दी भी हुई होगी। उस दिन शाम को क्लास छूटने के बाद भालू ने श्रीधरन को देखकर कहा "बेटा, घर म जाकर स्तनपान करके सो जा— बेचारा।"

श्रीधरन शर्मीले स्वभाव का होने के कारण किसी से भी कुछ कहे बिना चुप-चाप बैठा रहता। जब ड्राइग मास्टर दर्जे मे आते तो भालू "श्श फू" शब्द बनाता। यह सुनकर छात्र ठट्ठा मारकर हँसने लगते। श्रीधरन लम्बे अर्से के बाद भालू के

"शश फू" शब्द का अर्थ समझ सका। ड्राइंग मास्टर जाति से धोबी था। वह छोटा-मोटा मान्त्रिक भी था। धागा बाधते समय जपनेवाला मन्त्र "शशफू" कहलाता था।

ड्रिल मास्टर पठान से भालू डरता था। वह कुश्ती लडनेवाले पहलवान की तरह दिखाई देता था। शैतानी करने या कुछ बकवास करने पर यह पठान गरदन पकड लेता। उस समय प्राण भी तडप उठते। एक दफा भालू का मुँह खुला का खुला रह गया था।

स्कूल के दरवाजे मे बैठनेवाला छह फुट लम्बा दुबला-पतला मिठाईवाला नामट ही ऐसा एक इनसान था, जिसने श्रीधरन को आकर्षित किया था। मिठाई भरी हाँडी सामने रखकर वह पित्त रोगी ऊँघने लगता। नारियल के चूरे से बनी उसकी मिठाई मजेदार होती। हलके लाल रग की मिठाई छोटे-छोटे टुकडो मे काटकर हाँडी मे ढेर बनाकर रखी जाती। देखने म बहुत ही सुन्दर लगती थी। एक पैसे के छह टुकडे मिलते। श्रीधरन मिठाई खरीदकर उसे मुँह मे डाल लेता और पानी पीने के लिए स्कूल के प्याउ पर चला जाता। पानी देनेवाले का आकार मिठाईवाले के आकार से बिलकुल उलटा था। पानी देनेवाला साढे तीन फुट लम्बा एक बुजुर्ग ब्राह्मण था, बडी तोद वाला वह आदमी पानी भरे ताँबे के बर्तन से अपनी मोटी तोद सटाकर इस तरह बैठता मानो एक बडा मेढक पानी मे उछलने की तैयारी कर रह रहा हो। उसको देखने पर श्रीधरन को हँसी आ जाती। ब्राह्मण हमेशा बकवास करता। वह बहुत जल्दी आपे से बाहर हो जाता। श्रीधरन की मजाक भरी हँसी देखकर वह बुजुर्ग नाराज हो जाता। पीपल के गिलास मे दिया हुआ पानी पूरा न पीने पर वह गाली बकने लगता। इस वजह से श्रीधरन पानी वितरण करनेवाले उस मेढक ब्राह्मण का शिकार हो गया।

एक सुबह जब श्रीधरन स्कूल पहुँचा तो देखा, लडके बरामदे मे इकट्ठे होकर दूर देख-देखकर हँस रहे है। पूछने पर एक सहपाठी न फाटक की तरफ इशारा कर दिया।

वहाँ हरे रग की एक कार खडी थी। दो आदमी एक नाटे कद के बुजुर्ग को पकडकर कार से नीचे उतरने के बाद स्कूल की तरफ ले जा रहे थे।

छठे दर्जे के "बी" डिविजन के चन्दुकुट्टि ने बताया कि केलचेरी के छोटे मेलान का आगमन हो रहा है। ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि जिसे उसने बुजुर्ग समझा था, वह एक बदसूरत लडका था। केलचेरी का छोटा शकरन मेलान "पुत्तन हाई स्कूल" का एक छात्र है। उसे मालूम नही था कि वह किस कक्षा मे पढ़ता है। छठे छमासे ही छोटे मेलान को स्कूल मे लाया जाता था। वह बडी घटना होती थी।

केलचेरी से "पुत्तन हाईस्कूल" सिर्फ एक ही फर्लांग था। फिर भी शकरन

मेलान की सैर हमेशा कार पर ही होती थी। उसके बड़े भाई कुजिक्केलु मेलान ने यह नई कार इंगलैण्ड से खरीदी थी। (कार के कई कोनो मे बारह बत्तियाँ थी। सॉड की-सी आवाज निकालनेवाला एक बड़ा भोपू भी था) केलचेरी का पहला मुख्तार शुप्पुप्पट्टर और कुजिक्केलु मेलान का अगरक्षक लौहपुरुष पोक्कर ये दोनो छोटे मेलान के इर्द-गिर्द रहते। राजाओ की तरह ही वे शान-शौकत से पधारते। बाजो की कमी की पूर्ति सॉड के स्वर मे बार-बार बजनेवाला भोपू करता।

देखने मे रीछ की तरह बदसूरत बीमार शकरन मेलान को शुप्पुट्टर और लौह-पुरुष पोक्कर स्कूल तक ले जाते। उस समय हेडमास्टर कौगिणी ब्राह्मण आदर से अगवानी करने वहाँ उपस्थित होते। कक्षा की सबसे पहली सीट पर मेलान को प्रतिष्ठित करने के बाद वे वहाँ से पीछे हट जाते।

हफ्ते मे एक दो बार ही छोटा मेलान कक्षा मे हाजिर होता।

एक दिन क्लास शुरू होने के पहले भालू नारायण ने कुर्सी पर चढकर यह घोषणा की कि दक्षिण के किसी कालेज से अवकाश प्राप्त एक पडित इस स्कूल मे आया है। वह आज इस कक्षा मे पढाने आएगा। हमे पडित का समुचित ढग से स्वागत करना होगा। भालू ने कार्यक्रम का बखान करने के बाद उसका रिहर्सल भी प्रस्तुत किया।

कागज का एक-एक पक्षी बनाकर सबको जेब मे रखना होगा।

भालू जब अपने ओठ पर उँगली रखेगा, तब सब को खामोश रहना होगा।

जब भालू गुनगुनाये तब सब को उसी स्वर और ताल म गुनगुनाना होगा।

जब भालू मेढक का स्वर निकालने लगे तब "साँप साँप, हाय हाय!" चिल्ला-कर सबको बेंच पर कूदकर चढना होगा।

नेता ने इस ढग का आदेश सबको दे दिया।

दूसरे घटे मे मॉरल इस्ट्रक्शन था। क्लास लेने पडित जी आ पहुँचे।

सभी लडके अदब से चुपचाप उठ खडे हुए।

जमीन पर लटकती मैली धोती और कुर्ता पहने बुजुर्ग पडित को लडको ने परिहास से देखा, लेकिन वे हँसे नही (क्योकि भालू अपने ओठ पर उँगली रखे गर्व से खडा था।)

दर्जे मे श्मशान की-सी खामोशी छा गयी।

ढलती उम्र के कारण थकी पलको को उठाकर नये मास्टरने कक्षा मे सरसरी निगाह डाली।

छात्रो को मालूम हुआ कि पडितजी की आँखो की दर्शन-शक्ति कम है।

"सिट डाउन", मास्टर ने गम्भीर स्वर मे कहा।

सभी बच्चे साँस रोककर बैठ गये। (शायद मास्टर जी ने कक्षा के छात्रो के

अनुशासन की मन ही मन प्रशसा की होगी ।)

मास्टर ने सबक शुरू किया

"सत्य ब्रूयात् प्रिय ब्रूयात्
न ब्रूयात् सत्यमप्रियम् "

श्लोक की व्याख्या "सच बोलना चाहिए । लेकिन वह प्रियकर सच्चाई होनी चाहिए । एक चोर को चोर पुकारना सच तो है ही लेकिन प्रिय सच्चाई नही है । इसलिए इस ढग का अप्रिय सत्य नही कहना चाहिए "

भालू गुनगुनाने लगा साथ ही दर्जे मे ततैयो के झुंड के छत्ते से हिलने की-सी एक गूँज सुनाई पडी ।

मास्टर ने अपना सिर और पलको को उठाकर चारो तरफ देखा खामोशी थी ।

उन्होने समझा कि शायद मेरे कान से ही निकली कोई गूँज होगी । फिर उन्होंने श्लोक दोहराया

"सत्य ब्रूयात्, प्रिय ब्रूयात् · "

भालू जोर से गुनगुनाया । दर्जे मे आँधी का-सा शोर

मास्टर ने घबराकर सिर उठाकर देखा ।

खामोशी और निश्चलता ।

मास्टर को कुछ भी नही मालूम हुआ ।

"कैसी गूँज थी यह ?" मास्टर ने जोर से पूछा । कोई जवाब नही मिला । खामोशी छा गयी ।

मास्टर ने सबक जारी रखा

सत्य ब्रूयात्

अचानक भालू ने गर्जन किया । साथ ही पचास भालू गरज उठे ।

मास्टर कुर्सी से झपटकर खडे हो गये । कुछ कहने का प्रयास कर रहे थे कि इतने मे भालू ने अपनी जेब से कागज की चिडिया निकालकर मास्टर के गजे सिर की तरफ फेंककर उडा दी । उसके साथ पचास सफेद पक्षी हवा मे उडने लगे । एक-दो पक्षी पडितजी के सिर पर भी जा गिरे

"जारज कुत्ते !—" पडितजी नाराज होकर चीखे । भालू मेढक की तरह रो पडा—साँप के मुँह मे पडे मेढक की रुलाई ।

'साँप, साँप, हाय-हाय ।' सभी लडके एक साथ चिल्लाते हुए बेंच के ऊपर चढ गये ।

"क्या यह सच है ! माया है या अपने मन की भ्रान्ति है ?" पडितजी सोचने लगे कि क्या मैं भी कुर्सी के ऊपर चढू । वे शंकित से खडे रहे ।

शोर-शराबा सुनकर हेडमास्टर कोंकिणी ब्राह्मण ने क्लास के बरामदे मे

पहुँचकर अन्दर झाँककर देखा ।

लडके बेचो पर इम तरह बैठे थे मानो वहाँ कुछ भी घटित नही हुआ हो।

कागज की चिडियाँ दर्जे मे इधर-उधर बिखरी पडी थी ।

हेडमास्टर ने पडितजी के चेहरे की तरफ देखा ।

पडितजी की आँखो से दो बूंद आंसू गालो पर लुढक गये ।

पडितजी कुछ कहे बगैर दर्जे से बाहर चले गये ।

चुपचाप बैठनेवाले अपराधियो को देखकर हेडमास्टर ने वेदना के साथ कहा "तुम्हे मालूम है कि आज तुम लोगो ने किसकी हँसी उडाकर अपमानित किया है ? हाय हाय ! महान पडित पारबत्त् देरू नायर को ही तुम लोगों ने आज रुलाकर बाहर भेज दिया है ।"

2 अतिराणिप्पाट के परिवर्तन

अतिराणिप्पाट मे कई परिवर्तन आ गये थे । प्रमुख घटना है कि कन्निप्परपु का कुजप्पु रेलवे की नौकरी पाकर परदेश चला गया है ।

उसके पहले की घटना पर जिक्र करूँगा

एक दिन सुबह कृष्णन मास्टर उठकर बरामदे मे आये तो अँग्रेजी शैली के अभिवादन और मिलिटरी सेल्यूट ने उनकी अगवानी की ।

"गुडमोर्निंग फादर यू बिग मैन "

कृष्णन मास्टर न घूरकर देखा तो सामने कुजप्पु था । कपडा ढीला होकर गिर रहा था और वह पागल की तरह बरामदे के एक कोने मे पैर पसार कर बैठा था ।

"हाय ! कुजप्पु को क्या हुआ ?" कृष्णन मास्टर असमजस मे पड गये ।

तभी कलाल मानुक्कुट्टन आँगन मे आ पहुँचा । वह कुजप्पु को ठीक तरह से देखने के बाद हँस पडा ।

"मुन्ने को जल्दी जरा मट्ठा पिला दो" मानुक्कुट्टन ने मास्टर की तरफ देखकर जोर से कहा ।

कुजप्पु का सिर छाती की तरफ झुक गया था । मुँह से लार गिर रही थी ।

मानुक्कुट्टन ने कुजप्पु के पास जाकर उँगली मे इशारा करते हुए क्रोध और परिहास भरे लहजे मे खरी खोटी सुनायी "बच्चू, मेरी ताडी यो चुराकर पीने से यही होगा । अब समझ गया ना ? "

कृष्णन मास्टर को बात तभी समझ मे आ गयी थी ।

मानुक्कुट्टन ने देखा कि नारियल पर की हाँडी मे ताडी कम होती जा रही है । कभी-कभी बिलकुल ही न होती । मानुक्कुट्टन ने समझा कि कोई चुराकर पी लेता है । चोर को पकडने के लिए उसने बर्तन मे धतूरे का फल पीसकर मिला

दिया। सुबह ही सुबह कुजप्पु ने नारियल के पेड पर चढकर ताडी पी ली। थोडी देर बाद उसे नशा चढ गया और पागल की तरह वह लोटने लगा।

कृष्णन मास्टर को लगा कि किमी ने उसकी खाल खीच ली है। कितना अपमान है!

उस दिन शाम को कृष्णन मास्टर अपने एक पुराने शिष्य और रेल विभाग के एक बडे अफसर मार्टिन साहब से मिला। उसने बडे दुख के साथ एक्स मिलिटरी वाले अपने बेटे को रेल विभाग मे कोई नौकरी दिला देने की प्रार्थना की। इस एग्लो इण्डियन अफसर ने वादा किया कि वह उसे रेल के लोकोशेड मे "फिटर" के प्रशिक्षण के लिए ले लेगा।

अगले दिन कृष्णन मास्टर ने कुजप्पु को पास बुलाकर पूछा, "रेल विभाग मे नौकरी मिलने पर तू करेगा?"

कुजप्पु ने "हाँ" मे जवाब दिया। अतिराणिप्पाट की जिन्दगी से वह एकदम ऊब गया था। कर्जदारो से बच भी जाएगा।

यो बना कुजप्पु—नही पेटर कुजप्पु, रेलविभाग की वर्कशॉप मे फिटर कुजप्पु बनकर तमिलनाडु पहुँच गया।

दूसरी घटना अतिराणिप्पाट के एक कोने मे सडक के नजदीक कोरन बटलर की दूकान की शुरूआत है।

बचपन से ही कोरन रेल के एग्लोइण्डियन गार्ड के बगले मे रसोइया था। आखिर उसका नाम भी यही पड गया गार्ड बगले का कोरन।

जब मालिक नौकरी से अवकाश ग्रहण कर बेगलूर मे रहने लगे तो कोरन बटलर को नौकरी मे अलग कर दिया गया। वेतन की बाकी रकम के साथ उसको पुरस्कार के रूप मे अच्छी रकम भी दी थी। कोरन ने उस पैसे से अतिराणिप्पाट मे चाय की दूकान खोल ली। गोरे रग और नाटे कद का कोरन बटलर बडी तोद और गजे सिर का बुजुर्ग है। उसकी खोपडी पर चारो तरफ कुछ सफेद बाल हैं। उसकी पहली पत्नी की मृत्यु हो चुकी है। उससे उसकी तिरुमाला नाम की एक खूबसूरत बेटी है। बटलर की दूसरी पत्नी एक पतली दुबली औरत है—नाम कुजम्मा—क्षय रोग की शिकार। (मूँछ कणारन के शब्दो मे "देखने मे सुन्दर पैन्सिल की तरह है) कुजम्मा के दूर के रिश्तेदारो मे जानु और कल्याणी दो अनाथ बहनें भी थी। लम्बी, दुबली-पतली कुछ भेंडी आँखो वाली जानु विधवा है। काली मोटी कल्याणी सत्रह साल की लडकी है। काली होने पर भी कल्याणी देखने मे सुन्दर है। हसते समय बाहर दिखाई देते उसके दाँतो मे एक खास तरह का सौदर्य होता। चाय की दूकान मे चावल पीसना, मिर्च पीसना, पकवान बनाना ये सब काम जानु-कल्याणी बहने ही करती थी।

कोरन बटलर तमाशाई भी था। शाम होते ही उसे ताडी चाहिए। पीने पर

वँह कुजम्मा के साथ सार्वजनिक रूप से प्रणय-चेष्टाएँ करता। उसका मालिक विलियम साहब शराब पीने के बाद अपनी पत्नी के साथ जिस प्रकार की प्रणय चेष्टाएँ करता था उसी तरह की हरकतें कुजम्मा के साथ कोरन बटलर भी करता। "ओ माई डार्लिंग – माई लिट्टिल बरडी" आदि बकते हुए बूढा अपनी लेडी कुजम्मा को छाती से लगाकर उसके पीले गालो का चूबन लेता। फिर उसकी कमर पकडकर नाचने भी लगता। कुजम्मा और कोरन बटलर की इन शृगारिक हरकतो क लिए मूँछ कणारन ने एक नाम दिया है "ताडी की हाडी और कलछुई के बेत-बीच का खेल।"

कभी कभी ताडी अधिक मात्रा मे पी जाने के कारण होशो-हवास खोकर कोरन बटलर चाय की दूकान की बेच पर धोती लगाटी के बिना चित लेट जाता। उस समय कुजम्मा अपने पति को कपडो से ढककर नकदी पटी के पास जाकर खुद बैठती।

कोरन बटलर की बेटी मदिराक्षी तिरुमाला की शादी उत्तर के एक केलन के साथ सपन्न हुई है। नारगी के छिलके का रग और आँवले जैसी आँखोवाले केलन म गोरो का खून समाया होगा। केलन बहुत ही सुन्दर है। वह पुलक्करा के लकडी गोदाम के मालिक पोक्कु हाजी के इक्के का गाडीवान है। उडनवाला घोडा, खूबसूरत गाडी, चित्रकारीवाली खिडकियाँ, अन्दर हरी सेज, नील रेशम का पर्दा—एक चलता फिरता सिगारघर है पोक्कु हाजी का इक्का। उसकी घटी बजने पर फायर इजिन के आने का शक होता। उस राजसी रथ का सारथी बनना बडी शान-शौकत की बात है।

ससुराल म ही केलन रहता है। लेकिन ज्यादातर वह इक्कागाडी के सामने सीट पर शहर मे इधर-उधर दिखाई देता। उसे घर म देखना मुश्किल है। सुबह ही सुबह समुद्र तट के सामने मालिक के महल म पहुँचना होना। घोडे को दाना-पानी देने के बाद उसकी मालिश करना, उसे धोना होता।

हाजी को हर रोज सुबह समुद्रतट को सडक म इक्के पर लेना। फिर उसको पुलक्करा के गोदाम म पहुँचाना। अकस्मात् कई जगह जाना भी पडता। वहाँ घटो इतजार करना होता। हाजी दोपहर को भोजन करने दूसरी बीबी के घर जाता। फिर गोदाम म जाना। शाम को हाजी को महल मे पहुँचान के बाद इक्का और इक्केवान हाजी की औरत के अधीन रहते। घूघट मे ढके उन प्राणियो को प्राय हर रोज मेहमानो के यहाँ कही न कही घूमने जाना होता। कभी-कभी रातो मे हाजी की भी कुछ रहस्यपूर्ण यात्राएँ होती। इन सबके बाद घोडे को भोजन देकर उसे अस्तबल मे बाँधकर घर पहुँचने तक आधी रात ढल चुकी होती। नवोढ़ा तिरुमाला गाढी निद्रा मे लीन हो गयी होती।

कुवडे वेलु की पत्नी पगली आच्चा को उसका भाई कुजाडी इलाज कराने के

लिए ले गया। वेलु ने आच्चा से अपना रिश्ता विधिवत् तोड दिया। उसने अपनी और घर की देख-रेख करने के लिए एक नयी शादी की। काली मोटी, कटहल से स्तनोवाली उस औरत के दस वर्ष का एक लडका भी था। सिर पर गाय के गोबर की तरह बाल बाँधनेवाली कुट्टिप्पेण्णम्मा को पहली बार देखने पर श्रीधरन को अशोकवाटिका मे सीतादेवी पर नियुक्त किसी राक्षसी की याद आ गयी। उस औरत का लडका बहुत शरारती जीव है। अप्पुण्णि नाम का यह बदमाश छोकरा एक दिन अतिराणिप्पाट के बस्रा कुजप्पु का रिक्त स्थान जरूर ग्रहण करेगा।

'बडा गपिया किट्टुण्णि' अतिराणिप्पाट मे अभी-अभी आया है। वह गपिया परगोटन का छोटा भाई है। परगोटन अपनी बस्ती से छोटे भाई किट्टुण्णि को अपने सहयोगी के तौर पर लाया है।

किट्टुण्णि स्कूल मे छठे दर्जे तक पढा था। कंकाल होने पर भी उसे बडी सजधज के साथ चलने का शौक है। गप्प मारते हुए चलने के कारण अतिराणिप्पाट पहुँचने पर कुछ ही दिनो के अंदर किट्टुण्णि को 'बडा गपिया किट्टुण्णि' उपनाम अतिराणिप्पाट के जन प्रतिनिधि की हैसियत मे केकडा गोविन्दन ने दिया था। कुष्ठ राग से सिकुडे हाथोवाला केकडा गोविन्दन उस जगह की सभी चुगलियो और मिथ्या अपवादो के कार्यक्रमो का प्रणेता है।

किटट्टुण्णि के पास रेशमी कुर्ता है, रिस्टवाच है, कलम है, और चरनिवाली नयी जूतियाँ भी है। लेकिन इन सबके साथ बाहर निकलने की फुरसत कहाँ मिलती है? नारियल मे ताडी निकालने जाते वक्त जूतो को पहनता था। जूतो को पेड के पास छोडकर ऊपर चढ जाता। नीचे उतरने पर कभी जूतो मे एक दिखाई देता, एक न देना। कुत्ता काटकर ले गया होगा। इस तरह तीन जोडे जूतो के नुकसान होने पर फिर किट्टुण्णि ने ताडी निकालने जाते वक्त जूते पहनने की आदत ही छोड दी।

सुबह होते ही कमर मे रेशो की पतली रस्सी से चौडी छुरी बाँधकर नारियल से ताडी निकालने के लिए वह जाता। फिर ताडी का घडा लेकर तुरन्त ताडीघर जाना होता। देर होने पर पालटार—आबकारी अफसर--पकडकर मुकद्दमा दायर कर देता। दोपहर के भोजन के बाद थोडी देर का अवकाश मिलना। दोपहर मे कहाँ जाता? शाम को फिर ताडी निकालने जाना होगा। इन सबके बाद घर मे वापस आने पर धुँधलका छा जाता। नहाकर भोजन करने के बाद किट्टुण्णि अभिनेता की तरह अपनी सज धज स्वय करता। चेहरा पाउडर से चिकना करके रेशमी कुर्ता पहनकर सुनहरे क्लिपवाली कलम जेब मे रखकर, रिस्टवाच पहनकर चमकनेवाली जूतियाँ पहनते हुए वह बडी देर तक विचारमग्न सा खडा रहता। नौ बज गये, अब कहाँ जाना है? किट्टुण्णि गद्दा बिछाकर उसी वेशभूषा मे घडी वाला हाथ सिर पर रखकर लेटकर सोने लगता।

अतिराणिप्पाट का दूसरा नवागत है 'डींगवासु'। वह चन्दुमूप्पन का भतीजा है।

गोरा लंबा खूबसूरत युवक है वासु। आठवी कक्षा पास है। अब लेखाकार के रूप मे काम कर रहा है। वह अपने मामा चन्दुमूप्पन के साथ ही रहता है। हिसाब लगाने मे बडा होशियार है। लेकिन उससे बढ़कर डींग हाँकनेवाला व्यक्ति और कोई नही होगा। उसे कई कठिन श्लोक मालूम है। चुटकुले और ढेर सारी कहावतें भी याद हैं। कहावतो की लडी मे वह जैसा होशियार है, उसी तरह अक्षरो को आगे पीछे पिरोकर ढेर सारी पहेलियाँ भी बुझाता है।

"नारगव पुत्त ताड़ी"—बताओ क्या है? वासु श्रीधरन से पूछता।

श्रीधरन उसके अक्षरो को मन मे उलट फर कर कई तरह स रखता। फिर कागज पर लिखकर सोचता। लकिन उसे कुछ समझ मे नही आता।

"हार गया?" वासु सवाल करता। 'हार गया' के भाव मे श्रीधरन सिर झुका लेता।

"तो सीख ल"—नादापुरत्तगाडी।

अब एक और

"बलियचात्तु तीण्डि वन्नु"

श्रीधरन उसमे भी हार गया।

उत्तर "चालियत्तु तीवण्डि वन्नु।" [चालियत म रेलगाडी आयी।]

और एक जटिल सवाल।

"कुट्टियुण्डो राङ्गल कुक्कुटि तच्च पोले"

उसे सुनकर श्रीधरन एकदम धराशायी हो गया।

उत्तर सुनने पर वह हँस पडा।

"कुण्डोट्टि तगल राक्कु कुटिच्चपोले।" [जैसे कुण्डाट्टि तगल ने शराब पी ली हो]

तन्त्रमन्त्रवाले करिश्मे से प्रभावग्रस्त की तरह श्रीधरन डींग वासु का विनीत शिष्य हो गया—उसको वासु की सहायता भी मिली। दर्जे के गणित के सवालो मे से जो करना होता, उसे वासु से कराता।

इक्केवान केलन के मलिक पाक्कु हाजी के गोदाम मे ही वासु लेखाकार के रूप मे काम कर रहा है। माहवार वेतन है पन्द्रह रुपये।

3. प्रवास

एक शनिवार की दोपहर श्रीधरन को डींगवासु के घर के सामने की पगडंडी पर वासु मिला। वासु ने अपनी जेब से एक मोटा कागज निकालकर श्रीधरन को

भेंट किया।

श्रीधरन एकाएक समझ नही सका कि क्या है ? उस पर छपे शब्दों से अदाज लगाया, रेलगाडी का तीसरे दर्जे का टिकट है।

वासु ने कहा, 'कारक्कुन्निल का टिकट है। तू चाहता है तो सफर कर आ। साढे तीन बजे उत्तर दिशा की तरफ एक गाडी है।"

वासु कारक्कुन्निल मे मौसी के घर से अभी वापस आया है। वह रेलगाडी से ही वहाँ गया था। कारक्कुन्नु स्टेशन पर उतरकर चालाक वासु टिकट कलेक्टर की आँखे बचाकर बाहर निकला। इस तरह कमाया हुआ वह टिकट ही उसने श्रीधरन को भेट किया है—साथ ही कारक्कुन्नु तक रेलगाडी मे मुफ्त यात्रा करने की सलाह भी दी है।

यह सुनहरा मौका श्रीधरन ने खोना नही चाहा।

घर मे जाकर खाकी नेकर और जिप्सी मे खरीदी हुई चार खाने की हाफ कमीज पहनकर वह माँ से यह झूठी बात कहकर बाहर निकल गया कि होम-वर्क करने के लिए सहपाठी गगाधरन के घर जा रहा है। जेब मे कुल मिलाकर साढे तीन आने भर थ।

श्रीधरन दो-तीन बार अमावस्या के दिन नहाने के लिए कारक्कुन्नु समुद्र तट पर गया था। वह पैदल समुद्र तट तक ही गया था। समुद्री किनारे के अलावा उसने वहाँ की कोई और जगह नही देखी थी। अकेले आजादी के साथ रेलगाडी की यात्रा! उसे गर्व का अनुभव हुआ। साथ ही हल्का-सा भय भी!

स्टेशन पहुँचा। जेब मे टिकट निकालकर सीधे भी घुस सकता था। दरवाज़े पर खडे टोपीवाले को ज़रा देखा। श्रीधरन ने ध्यान दिया कि वह अन्दर घुसने-वाले यात्रियो का टिकट लेकर उसमे एक खास तरह की कची स ज़रा सा काटता है। उसने वासु के टिकट की जाँच की ता देखा कि उसके कोने मे अग्रेजी "वी" शक्ल मे पहले ही एक निशान था। श्रीधरन छिपकर खडा हो गया। दरवाजे का टोपीवाला अगर उसका टिकट देख ले तो आसानी से समझ जायेगा कि इसके पहले इस टिकट का इस्तेमाल हो चुका है। जाली टिकट से घुसने की कोशिश करनेवाले को पकडकर पुलिस को सौप दिया जाएगा।

श्रीधरन को लगा कि वापस जाने मे ही खैरियत है।

उसन विचार किया कि किसी तरह प्लेटफार्म पर घुस जाने के बाद वह बच जाएगा।

तभी औरत-मर्द और बच्चो का एक झुड दरवाजे पर इक्ट्ठा होकर खडा हो गया। उनके मुखिया ने टिकटो का ढेर टोपीवाले को सौपा और टोपीवाला इन्हे काट ही रहा था कि इतने मे श्रीधरन भीड के बीच मे होकर प्लेटफार्म पर निकल गया।

तसल्ली हुई। अब कोई पड़ताल नही करेगा। सन्दूक, गठरियो को पास में रखे गाडी के इन्तजार म बैठे हुए यात्रियो को देखता श्रीधरन मजे से इधर-इधर चक्कर लगाने लगा। कितने वेश है ! कोगणी, मुस्लिम, पट्टर आदि सभी जाति-धर्म के लोग वहाँ जमा हैं। मूछ कणारन कहा करता था, "कई जाति के लोग और पठान भी।"

चार बज गये। साढे तीन बजे की गाडी अब भी नही पहुँची।

"क्या गाडी लेट है ?" नियमित यात्री-जैसा बन कर सामने दिखाई दिये एक-दो मान्य व्यक्तियो से पूछताछ की। उन्होंने अनसुना कर दिया। फिर लगा ऐसी बेवकूफी का प्रश्न नही करना चाहिए था।

"बेटा एक पैसा दो"

मुडकर देखा। काँपती हुई एक बुढिया लाठी टेके झुकी हुई खडी है।

झट जेब टटोली तो पाव आना हाथ लगा। उसे बुढिया को दिया। बेचारी भूखो रहती होगी।

हमदर्दी दिखाता हुआ आगे बढा तो आचनक धक्का सा लगा—मोटा केलप्पन कुली दूर पर दिखाई दिया।

अतिराणिप्पाट मे रहनेवाला मोटा केलप्पन बडा ही दुष्ट आदमी है। उसकी पत्नी एक नायर स्त्री है। केलप्पन उत्तरी इलाके के किसी बडे घराने से उसको फुसला कर लाया था।

मोटे केलप्पन ने मुझे देख लिया तो गडबडी हो जाएगी। पूछेगा, बच्चा किधर जाता है ? साथ कौन-कौन है ? अब उससे झूठ मूठ बोलने पर भी वह कन्निप्परपु मे जाकर जरूर बतावेगा कि उसने रेलवे स्टेशन पर श्रीधरन को देखा था।

केलप्पन की आँख बचाने के लिए श्रीधरन जल्दी से प्लेटफार्म के दक्षिण मे बने शौचालय की तरफ गया।

शौचालय के एक सिरे पर पगडी पहने एक भैसवाले का चित्र टगा था। दूसरे सिरे के बोर्ड पर साडी पहने एक औरत का चित्र था। उस बोर्ड के नीचे "केवल औरतो के लिए" लिखा था

श्रीधरन को लगा कि शुरू मे एक शब्द को बदलकर दूसरा जोडना है।

मोटे केलप्पन से बचने के लिए श्रीधरन पेशाब की बदबू को बर्दाश्त कर मर्दों के शौचालय मे ही खडा रहा।

थोडी देर बाद घटी बजने की आवाज सुनाई दी। गाडी आने का समय हो गया है, प्लेटफार्म पर चला।

प्लेटफार्म के एक कोने मे बोरो का ढेर लगा हुआ था। उसकी ओट मे छिपकर खडा हो गया।

गाडी के प्लेटफार्म पर पहुँचने पर चारो तरफ निगाह घुमायी। मोटा केलप्पन एक बडी संदूक कन्धे पर उठाकर एक जरीदार पट्टर के पीछे चलते हुए दिखाई दिया। उसके दूर पहुँचने पर सोचा कि सामने के डिब्बे मे घुसना ही अच्छा है। वह डिब्बा एकदम खाली था। अन्दर झाँककर देखा। गद्दीदार सीट थी। ऊपर पखा भी घूम रहा था। कोने मे एक गोरा साहब मूसल के टुकडे जैसा सिगार पीते हुए अखबार पढ रहा था। हाय रे ! गोरो का पहला दर्जा है यह। दौडकर नजदीक के तीसरे दर्जे मे चढ गया।

डिब्बे मे भीड थी। फिर भी एक कोने मे जाकर छिप गया।

गाडी रवाना हो गयी। कुछ तसल्ली हुई।

औषधि की गध के साथ एक भाषण डिब्बे मे गूँज उठा— 'सिर दर्द, जुकाम, छाती का दर्द, शरीर का दर्द, सब के लिए अत्युत्तम बढिया नीलगिरी यूक्लिप्टिस "

एक मोटा ताजा मुसलमान बडी तोदवाला आदमी। उसने एक काला ढीला कोट पहन रखा था। उस कोट के नीचे, ऊपर और अन्दर बडी-बडी जेबें थी। उनमे शीशियाँ भरी थी।

उसने जेब से एक बोतल का कार्क हटाकर उसमे से कुछ तेल अपनी उगलियो पर उडेलकर सामने के मान्य यात्रियो के माथो पर थोडा-थोडा पोत दिया। 'सिर दर्द और छाती के दर्द' का लेक्चर भी वह करता जाता। श्रीधरन ने भी उठकर अपना चेहरा दिखा दिया।

यूक्लिप्टिसवाले मुसलमान ने श्रीधरन के माथे पर तेल चुपडने का नाम-मात्र कर दिया कि लडको को इतना ही काफी है।

माथे को बडी राहत महसूस हुई। उस तेल की खास तरह की गन्ध नाक मे चढ गयी।

"बडी शीशी के दो आने छोटी शीशी का एक आना।" वह आदमी सिर दर्द का तेल बेचने लगा।

श्रीधरन ने एक आना देकर एक छोटी शीशी तेल खरीदने का विचार किया। जेब मे सवा तीन आने ही थे। इसलिए यही पक्का किया कि न खरीदना ही अच्छा है।

उस वक्त डिब्बे के कोने मे शोर-शराबा सुनाई पडा। मार-पीट होने लगी— लोग उस कोने मे इक्ट्ठा होने लगे। श्रीधरन ने भी उठकर देखा। दो नौजवान मुसलमानो के बीच मार-पीट हो रही थी। उन्हे दूर हटाने का हौसला किसी मे न था। दोनो के बीच धक्का-मुक्की होती रही।

श्रीधरन धक्का-मुक्की देखने लिए भीड के बीच खडा हो गया। आखिर एक बुजुर्ग ने बीच-बचाव किया। उसने दोनो को अलग कर दिया। वे नौजवान फिर

छाती फुलाते हुए आगे बढ़े और अपनी मुट्ठी बाँधकर एक दूसरे को धमकी देने लगे।

इतने मे गाडी सीटी बजाती हुई कारक्कुन्नु स्टेशन पहुँच गयी। वह गति कम करती हुई आखिर प्लेटफार्म पर रुक गयी।

श्रीधरन झट गाडी से प्लेटफार्म पर उतर गया। उसने टिकट निकालने के लिए हाथ नेकर की जेब मे डाला। जेब खाली थी। नही, एक पैसा जेब के कोने में अटका हुआ था।

धक्का-मुक्की के बीच किसी ने श्रीधरन की जेब खाली कर दी थी। तीन आने दो पैसे, साथ ही टिकट भी नदारद।

एडी से लेकर चोटी तक सिहरन-सी महसूस हुई। आफिस के दरवाजे की तरफ देखा। यात्री-जन बाहर जाने की उतावली मे खडे थे। टोपीवाला एक-एक टिकट जाँच कर यात्रियो को बाहर जाने दे रहा था।

अगर मुझे पकड ले तो यह मेरा क्या करेगा? बिना टिकट गाडी मे चढने-वाला समझकर धकेल देगा। फिर पुलिस को सौंप देगा। जेलखाने मे डाल दिया जाएगा। इस तरह सोचता-सोचता वह बेहद परेशान हो गया। इस्तेमाल किया हुआ टिकट देकर लोभ में डालनेवाले बदमाश वासु को कोसा। स्टेशन पर मोटे केलप्पन को देखते ही घर लौट जाना था। फिर रेलगाडी की वह मारपीट। समझ गया कि वे धक्का मुक्की का बहाना कर लोगो की जेब खाली कर रहे थे। अब इन बातो को सोचने से कोई फायदा नही है। किसी न किसी तरह प्लेटफार्म से बाहर निकलना है।

गाडी स्टेशन से रवाना हुई। काफी देर हो जाने पर भी कुछ यात्री प्लेटफार्म पर ही रुके हुए थे। घंटी बजने की आवाज़ सुनाई दी, मालूम हुआ कि दक्षिण की गाड़ी का समय है।

सभी यात्रियो के चले जाने के बाद श्रीधरन ने दरवाजे पर खडे टोपीवाले को टिकटो का ढेर लेकर स्टेशन मास्टर के कमरे की तरफ जाते हुए देखा। मौका पा कर श्रीधरन दरवाज़े से बाहर निकल गया।

सुरक्षा का बोध होने पर एक तरह का हौसला-सा हुआ। कारक्कुन्नु और उसके आस-पास की जगह देखने के बाद पैदल ही शहर मे लौट जाने का निश्चय किया।

कारक्कुन्नु के ऊपर फौजी बेरिक्स है। गोरो की पलटन ही वहाँ आबाद है। काजू-सा चेहरा और सूखी सुपारी के छिलके की तरह के बालवाले ये सिपाही कभी अकेले तो कभी एकत्रित होकर सीटी बजाते और गीत गाते हुए पहाडियो से नीचे उतरकर आ रहे थे श्रीधरन नीचे के मैदान के कोने पर मुडनेवाली एक पगडडी पर आ पहुँचा। वहाँ कतार मे खडे कमरो और महलनुमा घरो के

सामने खूबसूरत औरतें सज-धज कर रही है। कुछ औरतें आँखो मे काजल लगा रही हैं, और कुछ टीका लगा रही हैं। रेशमी जाकेट पहननेवाली और महज घाघरा पहननेवाली भी उनमे है। नये फैशन की औरतो की दुनिया ! श्रीधरन के मन मे अचानक एक गाली उभर आयी 'रडियाँ' !

कारक्कुन्नु की रडियो के बारे मे स्वर्गीय चात्तुण्णि ने श्रीधरन को कुछ बातें बतायी थी। ये वेश्याएँ गोरे सिपाहियो को खुश करने की चेष्टा मे ही शृगार कर रही है। फिर इन बदतमीज़ औरतो को श्रीधरन उत्सुकता के साथ देखता रहा। वे अपनी सेज पर गोरो की अगवानी करने क लिए सज-धज कर रही हैं। वे नगी होकर

"बेहरीज़ षचीरु—ष षचीरु ?" पाछे से एक आवाज़ सुनकर श्रीधरन बदह वास होगया। शराब पीकर उन्मत्त एक गोरा आदमी। वह रडी चोरु की तलाश मे निकला है। श्रीधरन बडी सडक की तरफ एकदम बढ गया।

बडी सडक से शहर की तरफ चला। कारक्कुन्नु से शहर चार मील दूर पर है। रास्ते के दृश्यो को देखकर आगे बढा। शहर के तालाब के नज़दीक के म्युनिसिपल बगीचे के निकट पहुँचने पर पुलिस-स्टेशन से घटी बजने की आवाज सुनाई दी। छह बजे थे।

बाग क फाटक के दोनो तरफ एक-एक शेर बनाया गया था। मिट्टी की मूर्तियाँ थी। मुँह खोलकर बैठने वाले केसरी वीर। उनमे दाहिनी तरफ के वीर के मुँह से कई मक्खियाँ भीतर और बाहर उड रही थी। देखने मे बडा मजा आया। लगता है कि शेर मक्खी को पकडने के लिए अभी-अभी मुँह बद करेगा। शेर के चेहरे मे ततैयो ने छत्ता बना लिया था।

तालाब से पानी पीकर प्याम बुझाते हुए मैदान की तरफ चला। मैदान के कोने मे पहुचने पर एक गभीर गान ने श्रीधरन को रोक दिया। वह उधर मुड गया। गायक को घेरकर दस पन्द्रह आदमी खडे थे। श्रीधरन भी एक स्रोता बनकर उनके साथ खडा हो गया।

लाल लुगी और सफेद शर्ट पहने मिर पर तुर्की टोपी ओढे एक तमिल भाषी रावुत्तर मौलवी खडा था। उस मान्य व्यक्ति के सुन्दर चेहरे और काली दाढी ने श्रीधरन को आकर्षित किया। वह सुबोध तमिल भाषा मे भाषण कर रहा था। मजहब की गध के विना कई दार्शनिक बाते कथावाचक की शैली म उसके मुँह से निकल रही थी—

"आट्टेयु काट्टेयु नम्पलाम् अन्त
शेल केट्टिय मातरे नम्पलाम् "

व्याख्या गौरैयो पर विश्वास नही किया जा सकता। दूर भगाने पर भी फसल की तबाही करने कब वे आ जाएगी, इसका कोई अदाज नही लगा सकता।

हवा का रुख भी उसी तरह है। कब किधर बह निकलेगी, इसका किसी को पता नही है। साडी पहने औरते भी वैसी ही हैं—अगर हम चिडियो और हवा पर विश्वास कर सकते हैं तो साडीवाली औरतो पर भी विश्वास कर सकते है '

रावुत्तर मौलवी का दार्शनिक विचार श्रीधरन के मन मे जम गया। तमिल की वह पक्ति कठस्थ की। धुँधलका छा गया था नही तो उस महात्मा के दार्शनिक विचार बडी देर तक सुनने के लिए वह वही खडा हो सकता था।

"आट्टेयु काट्टेयु नम्पलाम्—अन्त
शेल केट्टिय मातरे नम्पलाम् ।"

इस पक्ति को गानेवाले के हावभाव और स्वर को अनुकरण के साथ दुहराते हुए ही श्रीधरन ने कन्निप्परपु मे प्रवेश किया। रसोईघर मे पहुँचने पर भी वह गाना दुहरा गया।

"अरे, यह क्या है ? कपडा बेचनेवाले का गाना गा रहा है ?"

श्रीधरन की माँ ने परिहास करते हुए पूछा।

श्रीधरन ने कुछ नही बताया। लेकिन मन मे सोचा कि किसी महिला पर भरोसा नही किया जा सकता—माँ पर भी

4 प्राइवेट बुक और जरीदार दुपट्टा

वह दिन श्रीधरन के लिए रोचक घटनाओ से भरा एक स्मरणीय दिन था।

सवेरे स्कूल पहुँचने पर लडको को इकटठे होकर कुछ न कुछ कहते और हँसते हुए देखा। पूछने पर एक सहपाठी ने बरामदे की तरफ इशारा कर दिया। कमाण्डर-इन-चीफ गणपति शान शौकत से आ रहा था।

रेशमी पैंट, रेशमी शर्ट और हरा मर्ज कोट पहनकर तथा कोट के ऊपर जनेऊ डालकर गणपति स्कूल आया है। गणपति का सही कहना था—अगर मै जनेऊ को कमीज़ के अदर रखूँ तो मै अपने ब्राह्मणत्व को बाहर कैसे दिखा सकता हूँ ? तर्क सुनने पर कोंगिणी ब्राह्मण हेडमास्टर कुछ कह न सके। इस तरह कोट के ऊपर ब्राह्मण-सूत्र को प्रदर्शित कर (इस मैले धागे मे एक लोहे की चाभी भी बधी थी।) गणपति हर दर्जे के सामने गया।

एक लबा पैंट और काला कोट पहनकर ललाट पर बरौनियो को भी ढकने वाला चन्दन और एक रुपये के सिक्के जितनी बडी सिंदूर की बिन्दी लगाकर मुर्गे की पूँछ का-सा जासौन का फूल रखकर बडे पुजारी के वेश मे भालू नारायण इधर आ पहुँचा है। उसके दादा की श्राद्ध क्रिया का व्रत है।

दोपहर को श्रीधरन मिठाई खरीदने के लिए स्कूल के दरवाजे के जिराफ नायर के पास गया। तभी उसने लगभग दस गज दूर सडक के किनारे दाडिम वृक्ष

की छाया मे एक आदमी को बैठे देखा। उसके सामने कई पुस्तकें कतार मे रखी हुई थी। गंजा सिर, गड्ढे मे पड़े गाल, लंबा चेहरा और बड़ी-नाक वाला वह दुबला-पतला आदमी एक गिद्ध की तरह दिखाई पड़ता था। उसने माथे पर भस्म लेप किया है। गले मे बड़ी रुद्राक्ष की माला भी लटक रही है।

जब उसने देखा कि श्रीधरन उसकी तरफ देख रहा है तो उसने मधु मुस्कान बिखेरते हुए उसे अपने पास आने का इशारा किया। श्रीधरन शंकित-सा वहीं खड़ा रहा। उसने चेहरे की मुस्कान के जरिये फिर श्रीधरन को पुकारा। बात जानने की इच्छा से श्रीधरन उस गिद्ध के निकट गया।

गिद्ध के पास एक टाट पर रखी हुई किताबो पर श्रीधरन ने सरसरी निगाह दौड़ायी। सीता-दुख, पचांग, ज्ञानप्पाना, भीमन-कथा आदि छोटी किताबो के अलावा रामायण, महाभारत, कृष्ण-गाथा आदि मोटी किताबे भी वहाँ रखी थी। पुरानी पाठ्य-पुस्तके दूसरे छोर पर रखी थी।

गिद्ध ने बड़े प्यार से श्रीधरन का स्वागत कर उसे एक पुराने अखबार पर बैठने का इशारा किया।

उसने श्रीधरन से पूछा कि बेटा किस दर्जे मे पढ़ता है और नाम क्या है ?

श्रीधरन ने एक ही शब्द मे जवाब दिया तो गिद्ध ने चारो तरफ का मुआइना किया। वहाँ किसी के भी न होने पर हौले से उसने पूछा, "एक प्राइवेट बुक है, तुम्हे चाहिए ?"

"कैसी प्राइवेट बुक ?" श्रीधरन ने आश्चर्य के साथ पूछा।

उसने आँखे फाड़कर बताया, "और कही भी यह किताब नही मिलेगी। बेटा, जरूर एक दफा पढ़ लो। अकेले किसी के देखे बिना ही पढ़ो तो बड़ा मजा आएगा "

श्रीधरन फिर चुपचाप खड़ा रहा। उसको शरम आयी। लेकिन प्राईवेट बुक की बात सुनकर नयी उत्सुकता हुई। यह आदमी मुझे बुलाकर एक उपकार करने की सोच रहा है तब

"चाहिए ? जल्दी बताओ। एक ही प्रति है।" गिद्ध ने चारो तरफ देखकर उतावली जाहिर की।

"उसका मूल्य कितना है ?" श्रीधरन ने जमीन पर देखते हुए पूछा।

"एक आना" गिद्ध अपने गले के रुद्राक्ष को पकड़कर फुसफुसाया।

श्रीधरन फिर भी सकुचाता हुआ खड़ा रहा। जेब मे सिर्फ एक ही आना है। मिठाई खानी है या प्राइवेट बुक खरीदनी है ? यही सवाल था।

दोपहर की क्लास शुरू होने की घंटी बज उठी।

मिठाई का स्वाद तो चख लिया था। लेकिन प्राइवेट बुक का मजा क्या होगा ? एक बार जाँच कर देखे तो ?

श्रीधरन ने जेब से एक आना निकाला। गिद्ध ने पास रखे सदूक मे से एक पुस्तक निकाली और छिपाते हुए श्रीधरन के हाथ मे पकडा दी।

श्रीधरन ने प्राइवेट बुक की तरफ निगाह घुमायी। 'भीमन कथा' की तरह एक छोटी किताब थी। टाट के रग का आवरण पृष्ठ—मुख पृष्ठ पर 'मैथुन विधि' नाम छपा हुआ था।

"जल्दी जाओ। कोई उसे न देखे—" गिद्ध ने श्रीधरन को वहाँ से भेज दिया।

प्राइवेट बुक मोडकर जेब मे डालने के बाद श्रीधरन क्लास की तरफ दौड गया।

दोपहर का पहला घटा धोबी मास्टर की ड्राइग का था।

खाकी कोट पहनने वाले अप्पुण्णि मास्टर बातचीत करते समय हकलाते हैं। घुँघराले बाल और चन्दन का टीका लगाये हुए मास्टर एक चाक लेकर बोर्ड के नजदीक गये। उन्होने चाक से कुछ लकीरे बनायी। और जरा तिरछा रखा हुआ एक बर्तन बोर्ड पर बन गया।

ड्राइग बुक मे उस हाँडी के चित्र की नकल करते हुए श्रीधरन का ध्यान जेब मे रखी 'प्राइवेट बुक' मे लगा था। प्राइवेट बुक की अद्भुत दुनियाँ मे विचरण करने की तमन्ना उसके मन मे तीव्र होने लगी।

हाँडी का चित्र मिट्टी का ढेला हो गया।

दूसरे घटे मे मलयालम और फिर मॉरल इन्स्ट्रक्शन का क्लास पहाड की चढाई जैसा महसूस हुआ। घटी बजते ही रस्सी छुडाए साँड की तरह वह कन्निप्प-रपु की तरफ भागा।

कन्निप्परपु मे पहुँचने पर घर के बरामदे मे चार पाँच लोगो को बातचीत करते हुए खडे देखा। उनमे मूँछ कणारन, अर्जीनवीस आण्डि भी शामिल थे। पिताजी हाथ पीछे की तरफ बाधे बरामदे मे उतावले होकर इधर-उधर टहल रहे थे।

कुछ समझे बिना ही श्रीधरन बरामदे मे चढ गया। 'प्राइवेट बुक' खरीदने का समाचार जरूर यहाँ किसी ने जान लिया है, आशका से श्रीधरन काँप गया।

"औरो की चीजे अपने घर मे रखना मुझे बिलकुल पसद नही है।" कृष्णन मास्टर ने जोर से बताया।

"फिर क्या किया जायेगा?" मूँछ कणारन का सवाल था।

"किसी को दान दे देना चाहिए।" अर्जीनवीस आण्डि ने सलाह दी।

"दूसरो का सामान कैसे दान किया जा सकता है?" कृष्णन मास्टर ने नाराज होकर पूछा।

श्रीधरन को बात पकड मे नही आयी। उसके आने और अन्दर घुसने पर किसी ने भी ध्यान नही दिया।

रसोई मे कॉफी पीते समय उसकी माँ ने पिताजी के बेचैन होने का कारण विस्तार से बताया।

कृष्णन मास्टर उस दिन स्कूल मे थोडी देर पहले रवाना हुआ था। आइने की मरम्मत करवाने के लिए बाज़ार की तरफ चला। वहाँ पहुँचने पर सडक के किनारे कागज़ का एक पैकेट पडा देखा। उसे उठा लिया। पैकेट खोलने पर उसके अदर नया कीमती जरीदार दुपट्टा दिखाई पडा। वह दुपट्टा किसी के हाथ से नीचे गिर गया होगा। ईमानदार कृष्णन मास्टर ने इस दुपट्टे के मालिक को ढूंढने की उतावली दिखाई। लेकिन कैसे उससे मिलेगा ? और उसे भी कैसे मालूम होगा कि उसकी धोती किसके हाथ मे आ गयी है। मास्टर असमजस मे पड गया। जरीदार दुपट्टा खो जाने के कारण गली म इधर-उधर देखते-ढूंढते एक गरीब आदमी की तस्वीर मास्टर के मन मे तैर गयी। हमदर्दी की पीडा मे ईमानदारी और सच्चाई के पथ पर उतरना मन की दशा को अवश्य बदल देता है, यह बात मास्टर को मालूम नही थी। जिस व्यक्ति के हाथ से दुपट्टा िकल गया था, उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए मास्टर ने दुपट्टा उठाकर शहर की गली के इस छोर से उस छोर तक चार मर्तबा चक्कर लगाने का कार्यक्रम बनाया। वह इस ख्याल से दुपट्टा ऊपर उठाकर चल रहा था कि दुपट्टा देखकर उसका हकदार दौडा आवेगा। शर्ट, टोपी, चश्मा और जूता पहने हुए एक शरीफ आदमी को गली मे पताका-सी उठा-कर नाच करते देखकर लोग मज़ाक उडाते हुए हँस पडे। मास्टर से परिचित कुछ लोगो को शक हुआ कि कही मास्टर को कुछ पागलपन ता सवार नही हो गया है !

मास्टर के प्रदर्शन का कोई फायदा नही निकला। दुपट्टे के लिए कोई आगे नही बढ़ा। मास्टर दुखी हो गया। वह जरीदार दुपट्टा समेट उसे कन्धे पर रखकर घर लौट आया। यही सवाल उसे सता रहा था कि यह अनाथ दुपट्टा अब वह कहाँ रखे ?

'प्राइवेट बुक' से श्रीधरन भी परेशान हो गया। उसे वह कहाँ रखे ? पाठ्य पुस्तक के अन्दर रखना खतरनाक है। श्रीधरन का होम-वर्क और अक सूची देखने के लिए पिताजी कभी-कभी कमरे मे आते है। अचानक ही ऐसे इस्पेक्शन होते। तब पाठ्य पुस्तकों के अन्दर मे एक प्राइवेट बुक का प्रसव होते वे देखते तो जरूर बेंत मे खाल निकाले देते।

लेकिन दुपट्टे की समस्या मे लीन होने के कारण मास्टर बेटे की पढाई की जाँच करने नही गया। रात की खामोशी श्रीधरन न सेज के नीचे रखी हुई मल-यालम पाठ्यपुस्तक से प्राइवेट बुक निकाल कर मेज की बत्ती के सामने प्रतिष्ठित की। उसका नाम एक बार और दुहराया मैथुन विधि।

समझ गया कि बात दूसरी ही है।

उतावली के साथ पृष्ठ उलटकर देखा। किलिप्पाट्टु रीति की कविता मे

मैथुन विधि का वर्णन था।

पहले पृष्ठ से ही पढना शुरू किया। चार-पाँच पृष्ठ पढ चुका। बात ठीक तरह से समझ मे नही आयी। पलग पर चढने के दृश्य तक मुश्किल से पहुँचा। फिर क्लिष्टता ही है। यत्र, इन्द्रिय नाम के कई शब्द पचे नही। फिर भी पढाई बद नही की। एक आना देकर ही यह अमूल्य ग्रन्थ मिला था न। प्राइवेट बुक के मैटर के आठ पृष्ठ पढ चुका। अजीर्ण-सा महसूस हुआ। गिद्ध को कोसा। एक आने की बारह मिठाई मिलती ?

प्राइवेट बुक के नवे पृष्ठ पर पूरा का पूरा विज्ञापन था 'स्वप्न स्खलन निवारिणी' औषधी का विज्ञापन। नीचे वैद्य की एक सलाह थी।

वैद्य की सलाह पढ कर श्रीधरन बेहद थक गया। स्वप्नदोष पर तुरन्त ध्यान न देने पर सिर दर्द, नाडी की थकावट, क्षय फिर मृत्यु !

उस दिन आधी रात के बाद भी आँखे न लगने की वजह से कन्निप्परपु मे दो आदमी बेहद तकलीफ उठा रहे थे। प्राइवेट बुक के विज्ञापन से डरनेवाला श्रीधरन और ज़रीदार दुपट्टे की समस्या मे सिर खपानेवाला ईमानदार कृष्णन मास्टर।

5 धधकनेवाला घराना और दक्षिण से आनेवाले

केलचेरी के चन्दुक्कुट्टि मेलान की मृत्यु होने पर घराने के मुखिया का पद बडे पुत्र रामन को ही मिलना चाहिए था। लेकिन रामन मेलान पिताजी के जिन्दा रहते ही एक भक्त और विरक्त की जिन्दगी गुज़ारता हुआ कही दूर जाकर रहने लगा था। घराने की बातो मे पिताजी की मदद करनेवाला दूसरा पुत्र कुजिक्केलु था। चन्दुक्कुट्टि मेलान की मृत्यु हो जाने पर घराने के शासन की बागडोर कुजिक्केलु मेलान ने अपने हाथ मे ले ली—छीन ली कहना ही अधिक सगत है। तीसरा पुत्र शकरन कम उम्र का नितान्त बुद्धू लडका था।

दुबला-पतला और नारगी के छिलके के रग का एक खूबसूरत युवक था कुजिक्केलु। बचपन मे चेचक की बीमारी का शिकर होने का कारण बायी आँख फूट गयी थी। वह अपने चेहरे की विकलागता को छिपाने के लिए हमेशा काला चश्मा पहनता था।

कुजिक्केलु मेलान का ओढना-पहनना और बर्ताव एक मालिक की तरह ही था। रेशमी धोती, रेशमी शर्ट, ज़रीदार दुपट्टा (धोती और दुपट्टा मेलान के लिए इगलैण्ड के मान्चेस्टर से विशेष आदेश के अनुसार भेजे गये थे।) उसकी उँगलियो मे जगमगानेवाली रत्नखचित अगूठियाँ थी। शर्ट के लिए हीरे जडे बटन और उस जमाने मे प्राप्त सबसे कीमती घडी—इस सब साज-सज्जा से ही वह

बाहर जाता था। एक-दो आदमी हमेशा साथ रहते। उनमे प्रधान लौहपुरुष पौक्कर है। पोक्कर कुजिक्केलु मेलान का निजी सचिव और अग रक्षक है। लोहे की तिजोरी की तरह की छाती, धँसी हुई आँखें, बडी-बडी मूछो वाला वह भयकर मानव सिर पर एक तौलिये से मुर्गे की पूँछ की तरह पगडी बाँधकर, कमर मे एक चाकू और दाहिने हाथ मे कोई अस्त्र लेकर हमेशा सबके लिए तैयार कुजिक्केलु मेलान के पीछ खडा रहता।

चाहे बालिका हो, शादीशुदा औरत हो, विधवा या प्रौढ कुमारी हो, देखने मे अगर खूबसूरत है तो उसे कुजिक्केलु मेलान के मोह-पाश से बचाना मुमकिन नही था। उसको हस्तगत करने के लिए वह सभी तरकीबो का प्रयोग करता। अगर कोई उसे बचाने की चेष्टा करता तो लौहपुरुष पोक्कर सामने आ जाता। वह अपनी मुट्ठी के प्रहार से प्रतिद्वन्द्वी को पछाड देता। कोई दूसरा चारा न होने पर पौक्कर चाकू बाहर निकाल लेता। पोक्कर के मूसल हाथो ने कई लोगो की गर-दनो को दबोचा था। वह लाश को दफनाने के बाद उसके ऊपर एक केला रोप देता था। कभी-कभी लाश को दीवार से चिपकाकर खडा करने के बाद उसके ऊपर नयी दीवार बना देता। ऐसा मौक भी आया है कि लाश को पत्थर से बाँधकर नदी मे डुबाना पडा है। सुबह से पहले ही सब कुछ पूरा हो जाता।

पोक्कर के आदेशो का पालन करने के लिए मेलान बदमाशो के एक गूढ सघ का लालन पालन करता था। कभी-कभी इन बदमाशो की जरूरत पडती। तमिल नाटक सघ और सर्कस कम्पनियाँ जब प्रदर्शन करने के लिए शहर म आती तो सघ की मशहूर अभिनेत्रियो और खूबसूरत औरतो को उठाकर ये लोग कुजिक्केलु मेलान के अन्त पुर मे ले जाते। नाटक शुरू होने पर सजी धजी नायिका दिखाई न देती। नायिका कुजिक्केलु मेलान के घर की रहस्यपूर्ण जगह मे किसी दूसरे ही प्रदर्शन के लिए मजबूर होकर खडी होती। सरकस सुन्दरियो के अनुभव भी इसी ढग के थे। जब देश मे मोटर कार सहज एक सुनी सुनायी बात थी, तब कुजि-क्केलु मेलान इग्लैड से एक कार खरीदकर उसमे सवारी करता था। बडे-बडे दीपदान और शोर शराबे के बीच शादी के जुलूस की तरह ही मेलान कार मे रात को सफर करता था।

एक बार इस जुलूस को शहर की गलियो की दस-पन्द्रह बार परिक्रमा लगाते देखकर मेलान के एक मित्र ने कार मे बैठे लौहपुरुष पोक्कर से इसका कारण पूछा, तो मेलान की जगह पीछे की सीट पर बैठनेवाले पोक्कर ने अपनी पगडी जरा ठीक करते हुए जवाब दिया था, "मेलान की शर्ट का एक कफबटन दिखाई नही देता। शक है कि सडक पर कही गिर गया होगा। तलाश कर रहा हूँ।"

कुजिक्केलु मेलान ने अपने खर्च पर चार-पाँच रडियो को शहर के कुछ कोनो में बसा लिया था। उनमे मेलान की इष्ट देवी ककडी कल्याणी नाम की रखा थी।

एक बार उसने पैसा माँगा तो कुजिक्केलु मेलान ने उसे एक हरा नोट (एक सौ रुपये का) दे दिया। उसने इस नोट को नगण्य भाव से सरका दिया। कुजिक्केलु मेलान ने तुरन्त इस नोट को मेज़ के दीपक की लौ मे जलाकर दरवाज़े से बाहर इसीलिए फेंक दिया कि वह अपनी प्रेमिका को यह दिखाना चाहता था कि वह नोट उसके लिए उतना ही तुच्छ और नगण्य है जितना कल्याणी के लिए। यह देखकर कल्याणी हँस पडी। मेलान भी हँस पडा। अचानक मेलान ने अपनी जेब से पाँच हरे नोटो को लेकर अपनी प्रेमिका की छाती मे ठूंस दिया।

कुजिक्केलु मेलान को कोई आर्थिक विषमता नही थी। नगद पैसा नही है तो भी ज़मीनो के दस्तावेज तो है न? बडा भाई जप तप के साथ दिन बिता रहा है। छोटा भाई निरा बुद्धू है, कोई पूछनेवाला नही है। शराब के नशे म, रडियो के बाहुपाश मे कितने दस्तावेज़ो पर उसने हस्ताक्षर किये थे, इसका पता मेलान को भी नही था। हवा मे सूखे पत्तो की तरह केलचेरी घराने के कई दस्तावेज़ उडने लगे। उनके बीच प्रथम सलाहकार शुप्पु पट्टर ने भी अपने ब्रह्मसूत्र मे थोड़े-बहुत दस्तावेजो को फँसा लिया था।

छह सात बरस पहले दूर स्थित तिरवितांकूर के कोल्लम इलाके से चार-पाँच परिवार शहर मे बसने आये थे। वे दस्तकारी मे होशियार थे। रेशे की पतली रस्सी से बुनाई करने के सामानो के साथ वे इधर आये थे। सब के सब काले-कलूटे और विचित्र नामधारी थे। वे स्वावलम्बी और शिक्षित थे। लेकिन शहर के पुराण पथी समाज ने उनकी उपेक्षा की। बुनाई तो जुलाहा जाति का पुश्तैनी पेशा है। वह तो हमारे समाज के लिए अनुचित है, यही उनकी उपेक्षा का कारण था। रेशे की बुनाई करनेवालो को वे 'कोल जुलाहा' के नाम से पुकारते थे। 'कोल जुलाहे' आगे चलकर 'कोलजुले' म परिवर्तित हो गये। 'कोलजुले' म्लेच्छ का पर्यायवाची शब्द हो गया।

'कोलजुलो' ने शहर मे बुनाई की कम्पनियाँ और कपडे की दुकाने खोली। त्वचा का रग काला होने पर भी वे अपनी वेशभूषा और आचरण मे बेहतर थे। उनका मुखिया काला कोट, जरीदार पगडी, सोने की चेन की घडी पहनकर बढ़िया इक्के मे सैर करता था। उसके कोट का हर बटन एक-एक अशरफी का था।

लेकिन उनकी इस शान-शौकत से समाज के आम लोग भी नही हिले। समाज के प्रभावशाली लोग ही नही, आराकश, कलाल आदि सबने कोलजुलो से नफरत की।

केलचेरी के चन्दुक्कुट्टि मेलान के ज़माने मे ही वे आये थे। उनकी वेश-भूषा और बर्ताव मेलान को अच्छा नही लगा। मन मे ईर्ष्या भी थी। लेकिन मेलान ने इसे बाहर प्रकट नही किया। दक्षिण से आये हुए 'कोलजुलो' के खिलाफ समु-दाय मे बढती हुई अस्पृश्यता के मनोभाव को मेलान ने गुप्त रूप से प्रोत्साहन

दिया। जाति के पुरोहित और आचार्य तण्डान से 'कोलजुलो' के खिलाफ अस्पृश्यता की घोषणा करवा दी गयी। उनसे शादी-ब्याह का निषेध भी घोषित किया। आदेश दिया गया कि उनका भात भी नही खाना चाहिए। यो दक्षिण से आनेवालो को अलग कर दिया गया।

लेकिन पेशे पर दोषारोपण कर दक्षिण से आये हुए इन जाति-भाइयो को दूर खडे करनेवालो के खिलाफ विचार रखनेवाले भी कुछ लोग थे। कन्निप्परपु का कृष्णन मास्टर इस पक्ष का था। कृष्णन मास्टर ने सवाल उठाया था कि हमारे इलाके मे एक नयी दस्तकारी का प्रचार करने के लिये आये इन लोगो को घृणापूर्वक बाहर निकाल देने से हमारी जाति को क्या मिलेगा ? तब अतिराणिप्पाट के अर्जीनवीस आण्डि ने प्रचार किया था कि कृष्णन मास्टर 'कोलजुलो' से घूस लेकर उनकी वकालत करता घूम रहा है।

केलचेरी के चन्दुमेलान ने तटस्थ रहने का निश्चय किया। दक्षिण से आनेवालो को जाति के सदस्यो के रूप मे मान्यता देने के पक्ष मे कम ही लोग थे। चन्दुक्कुट्टि मेलान ने यह बात जान ली थी।

कृष्णन मास्टर की कोशिश के फलस्वरूप दक्षिण से आनेवालो के साथ सामूहिक भोजन के कार्यक्रम की योजना बनायी गयी। कृष्णन मास्टर ने केलचेरी के चन्दुक्कुट्टि मेलान को इस सामूहिक भोजन मे भाग लेने का न्योता दिया। मेलान ने कृष्णन मास्टर को आश्चर्य स्तब्ध करते हुए निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। यह जानने पर कि 'कोलजुलो' को जातिच्युत करने के विरोध की दावत मे केलचेरी चन्दुमेलान भाग लेनेवाले हैं, विरोध पक्ष के कुछ लोग भी सहयोग देने के लिए तैयार हो गये। लेकिन अधिकाश लोग इसके खिलाफ ही खडे रहे। दक्षिण से आनेवालो के खर्च से ही दावत की जा रही थी। ऐसे कई व्यजन तैयार किये गये थे जिन्हे इस इलाके के लोगो ने पहले कभी नही देखा था, न चखा था।

निमत्रित व्यक्तियो मे कई नही आये—उनमे उस इलाके का तण्डान और कई विशिष्ट व्यक्ति भी शामिल थे। दावत के आयोजको को डर था कि केलचेरी के बडे मेलान भी शायद न आये। लेकिन ठीक समय पर अपनी गवर्नेर स्कारट घोडा गाडी मे केलचेरी के चन्दुक्कुट्टि मेलान आ पधारे।

दावत मे पत्ते बिछाकर भोजन परोसा गया। उसके बाद विशिष्ट व्यजन और पकवान भी परोसे गये।

तभी तार विभाग का एक चपरासी वहाँ घुस आया। केलचेरी चन्दुमेलान के लिये एक अर्जेंट तार था। मेलान के निजी सचिव कुजाडी ने हस्ताक्षर करके तार ले लिया। उसे खोल कर मेलान को पढ कर सुनाया। कलक्टेर साहब ने तार भेजा था – फौरन आकर मिलने का सन्देश था।

खाने के लिए पत्ते मे डाला हाथ खीचकर मेलान ने मेहमानो और मेजबानो

से माफी माँगी। फिर उठकर अपनी इक्कागाडी मे चढकर चले गये।

दावत मे भाग लेनेवालो ने तृप्ति भर भोजन किया। शुभ कामनाएँ देकर वे सब भी चले गये।

अगले दिन तण्डान केलु ने एक आर्डिनेन्स निकाला। गये दिन जिन लोगो ने 'कोलजुलो' के साथ भोजन किया है उन सभी जातिभाइयो को जाति से बाहर निकाल दिया गया है। भविष्य मे उनके साथ कोई सामाजिक रिश्ता नही रखा जाएगा।

कृष्णन मास्टर को भी जोश आया। मास्टर को मालूम हो गया कि यह सब केलचेरी मेलान के काले कारनामो का नतीजा है। मास्टर ने समझ लिया कि दावत मे भोजन आरम्भ होने के समय जो तार आया था उसके लिए मेलान ने ही पूर्व निर्धारित तैयारी की थी। मास्टर ने अदाज लगाया कि मेलान की गूढ सलाह के मुताबिक ही अन्य मुखिया जन दावत मे शामिल नही हुए थे। पुरानी प्रथा के पीछे जानेवाला मास्टर उस दिन से प्रगतिवादी हो गया। कृष्णन मास्टर ने घोषणा की कि केलचेरी मेलान और उस इलाके के तण्डान ने हमे जाति से निकाल दिया है तो हमने भी मेलान और तण्डान को निकाल दिया है। पर, मास्टर के पक्ष मे कम ही लोग थे।

अतिराणिप्पाट मे मास्टर और मास्टर के अनुयायियो के खिलाफ गूढ प्रचार करनेवालो मे सबके आगे अर्जीनवीस आण्डि था।

काला दुबला और मध्य वयस्क आण्डि दस्तावेज लिखनेवाला, लेखाकार और गायक था। जब आण्डि की उम्र डेढ वर्ष की थी तभी उसके पिता एक नारियल के पेड से गिरकर मर गये थे। फिर उसकी माँ कालियम्मा ने ही उसका लालन-पालन किया था। कालियम्मा ने उसका पालन-पोषण करने और स्कूल भेजकर शिक्षा देने मे खूब तकलीफे उठायी थी। मजदूरी करके, भीख माँगकर और भूखो रहकर उस माँ ने अपने बच्चे को आदमी बनाया था। पौने चार फुट लम्बी और एकफील पाँववाली वह माता हमेशा एक ही मत्र जपती थी "मेरा बेटा आण्डि"। आण्डि ने आठवी कक्षा तक अध्ययन किया था। फिर पढाई खतम कर मुलक्करा के काठ के गोदाम मे बहीखाते का प्रशिक्षण लिया। कुछ अर्से बाद दस्तावेज लिखना भी सीख लिया। इस विद्या म आण्डि का गुरुदेव अष्टवक्रन वेलप्पन नायर था। अष्टवक्रन वेलप्पन नायर झूठे दस्तावेजो को लिखने मे बडा कुशल था। वे सभी तरकीबें उसने अपने शिष्य आण्डि को भी बता दी थी। अक्षरो को कई प्रकार से लिखने, दस्तावेजो और वचनपत्रो को पुराना दिखाने के लिए उन्हे धुएँ मे रखकर कुछ रासायनिक प्रयोगो से ठीक करने की भी विद्या एक वर्ष के प्रशिक्षण मे आण्डि को मिल गयी। उस विद्या मे वह अपने गुरु से भी अधिक होनहार निकला। सगीत और नाटको मे अभिनय करने का उसे शौक था। आण्डि ने एक धोबी

भागवतर के पास एक पुराने हारमोनियम पर कुछ अर्से तक सा रे ग म का अभ्यास किया। "शभो शिव शभो शकर महादेवा" आदि कीर्तनो को भी कठस्थ किया। अपने दुलारे बेटे के सभी कार्यो मे यहा तक कि ताडी पीने मे भी माँ को बड़ा अभिमान था। दिन भर दुकानो मे, हिसाब लगाने और झूठे दस्तावेजो का निर्माण करने मे और रात को सगीत, नाटक का अभिनय और ताडी पीने मे आण्डि समय बिताता था। ताडी पीकर वह कभी-कभी घर मे आधी रात को या फिर तडके ही पहुँचता था। कालियम्मा जागती हुई थाली म भात परोस कर बेटे का इन्तजार करती रहती। बेटे के खिलाफ एक भी शब्द वह न कहती। घर मे कभी बत्ती जलाने के लिए मिट्टी का तेल नही होता, तो कालियम्मा भोजन करते बेटे के सामने प्रकाश के लिए नारियल के पत्ते जलाकर उजाला करती।

एक रात आण्डि ताडी पीकर सुध बुध खो रास्ते के पत्थर पर औंधे मुँह गिर पड़ा। ऊपर के तीन दाँत उखड गये। मुँह के दाँत खोकर घर आये बेटे को देखकर कालियम्मा हँसी नही रोक सकी। वह अपनी कमर पर हाथ रखकर हँसते हँसते लोट-पोट हो गयी। मसूडे दिखा सिर हिलाकर हँसती माँ को देखकर आण्डि भी हँस पडा।

दाँतो के अभाव ने आण्डि के सगीत कार्यक्रमो म बाधा उपस्थित नही की। बडी दिलचस्पी के साथ उसने गान-कला को अपनाया।

वह आण्डि ही आज अतिराणिप्पाट के सम्मान्य व्यक्ति कृष्णन मास्टर के बारे मे झूठे अभियोग का प्रचार-प्रसार कर रहा है। आण्डि को जोश दिलाने के लिए केकडा गोविन्दन भी उसके साथ रहा। केकडा गोविन्दन ने मास्टर के बारे मे कुछ गीत तैयार कर आण्डि को सिखाये। रात को आण्डि ताडी पीकर कन्निप्परपु के उत्तर की पगडडियो पर झूमता-झामता चलता हुआ जोर-जोर से गीत गाता

"कोल जुलाहो की जूठन चाट
आसमान ताक कर चलनेवाला
चार आँखोवाला यह चोर मास्टर
अब न तो जाये स्कूल
और न पढाये ए बी सी डी
बुनता रहे रेशा की चटाई—
डडी और रस्सी लपेट-लपेट कर
ताल और लय मे नाच नचावे।"

जब केलचेरी घराने का मुखिया कुंजिकेलु मेलान बना तब दक्षिण से आने वालो के प्रति उनके व्यवहार म मनुष्यता कम हो गयी। यह कुंजिक्केलु मेलान की सज्जनता का लक्षण नहीं था। दस्तकारी और व्यापार से वे लोग बडे अमीर हो

गये थे। जाति मे उन्हे बराबरी का स्थान दिलाने का प्रलोभन देकर वह उनके हाथो से पैसा हडप लेता था। समाज द्वारा अपने ऊपर लादी गयी शृंखला को दूर करने के लिए दक्षिण से आनेवाले लोग कोई भी मूल्य देने को तैयार थे।

6 अद्‌भुत नक्षत्र

एक दिन शाम को वासु श्रीधरन को पुकार कर कुछ दूर ले गया और बड़े रहस्यपूर्ण ढग से बोला, "श्रीधरन जरा मेरी मदद करेगा ? लेकिन और किसी को मालूम नही होना चाहिए।"

वासु की बात सुनकर श्रीधरन को गर्व-सा महसूस हुआ। वासु उसका उस्ताद है—आराध्य व्यक्ति है। होम वर्क करके वह उसकी बडी मदद करता था। वासु के पाडित्य का रस उसने चख लिया था। ऐसा महान वासु ही पूछ रहा है कि मेरी मदद करेगा। क्या वासु को मालूम है कि श्रीधरन उसके लिए अपने प्राण कुर्बान करने को भी तैयार है ?

श्रीधरन ने अदाज लगाया कि वासु किसी झझट मे फँस गया है। जिस तरह ईसप कहानी के जाल मे फँसे शेर को उसके पुराने दोस्त चूहे ने जाल की रस्सी को काट-काट कर बचाया था, उसी तरह श्रीधरन भी वासु को इस झझट से बचायेगा। श्रीधरन को मालूम नही हुआ कि वासु क्या मदद माँग रहा है ?

सब कुछ के लिए तैयार खडे श्रीधरन की तरफ देखकर वासु ने सिर हिला कर शाबाशी दी। फिर वासु ने रजाई के अन्दर से एक गत्ते का डिब्बा बाहर निकाला। देखने मे बहुत खूबसूरत था। डिब्बे के बाहर घने बालोवाली एक औरत की तस्वीर थी। वासु ने जब डिब्बा खोला तो एक विचित्र-सी खुशबू वहाँ फैल गयी।

उसमे विनोलिया व्हाइट रोज साबुन की दो टिकियाँ थी।

उस बिलायती साबुन की खुशबू और डिब्बे की खूबसूरती देखकर चकित खडे श्रीधरन को वासु ने एक और चीज भी दिखाई। स्वर्ण अक्षरो मे चमकते एक सुन्दर कार्ड पर लटक रहे दो आभूषण। हुम के आकार की दो छोटी बालियाँ निर्यात किया गया अमरीकी सोना था।

श्रीधरन को मालूम था कि उस दिन वासु को गोदाम से वेतन मिला है। वह शहर जाने के बाद ही वापस आया था। ये खुशबूदार साबुन और बालियाँ लडकियो के इस्तेमाल करने की चीजे है। चन्दुमूप्पन के घर मे लडकियाँ नही हैं। वासु के अपने घर मे उसकी माँ के अलावा और कोई महिला नही है। फिर किसके लिए इस मियाँ ने ये चीजे खरीदी है। श्रीधरन के मन के भाव को ताडकर वासु ने अपना उद्देश्य बताया। शाम वासु ने तिरुमाला से छिपकर मिलने की योजना

बनायी है। अपनी प्रेमिका तिरुमाला को भेंट देने के लिए विनोलिया व्हाइट साबुन और अमरीकी गोल्ड की हंसनुमा बालियाँ उसने खरीदी थी।

उस समय श्रीधरन के मन मे एक विचार कौंध गया कि इक्का गाडीवान ने तिरुमाला से शादी की है। फिर वासु छिपकर उसकी पत्नी से मुलाकात करे तो क्या यह सही होगा ? उसे लगा वासु जो कुछ करेगा, वह कभी अनुचित नही होगा। उस पर श्रीधरन ने देर तक विचार नही किया। फिर वह सोचने लगा कि वासु के इस निजी कार्य मे उसे क्या भूमिका अदा करनी है।

वासु ने इसे भी स्पष्ट कर दिया। वासु और तिरुमाला जब कोरन बटलर के घर चुपचाप मिले तो श्रीधरन को दरवाजे के नारियल के नीचे उनका पहरा देना होगा। अगर कोई आवे तो तुरन्त खतरे की सूचना देकर भीतर के लोगो को बचाना होगा। वासु ने खतरे की सूचना देने की तरकीब भी बता दी। श्रीधरन के हाथ मे एक लोहे की कील और नयी माचिस रखते हुए वासु ने निर्देश दिया—"लोहे की कील से कोरन बटलर के दरवाजे के पास वाले नारियल के पेड मे एक छेद बनाकर फिर उसमे माचिस की तीलियो का मसाला भरना होगा। उसके बाद एक पत्थर लेकर तैयार रहना चाहिए। अगर उस समय कोई बदतमीज वहाँ पहुँच जावे तो तुरन्त छेद मे कील रखकर उसको उस पत्थर स ज़ोर से मारना होगा। 'ठो' की आवाज़ के साथ धमाका होगा। आवाज सुनकर भीतर के लोग समझ जाएँगे।

लोहे की कील और माचिस की तीली के मसाले से पटाका छुडाने की तरकीब श्रीधरन को पहले से ही मालूम थी। विषु के त्योहार मे आतिशबाजियो के खतम होने पर वह यही काम करता था। अब तो उस खेल को ज़रूरी कार्य के रूप मे बदलना है।

तिरुमाला शाम को घर मे अकेली होगी। कोरन बटलर ताडी पीने के बाद बेहोश होकर चाय की दुकान के बरामदे की बेंच पर लेटा होगा। कुंजम्मा पैसे की पेटी की पहरेदारी करती होगी। जानु कल्याणी बहने दूकान मे रसोई का काम करती होगी। केलन इक्कागाडी लेकर बाजार मे समुद्री तट पर घूमता होगा। उसी मौके पर वासु न तिरमाला से मिलने की योजना बनायी थी।

सारी तैयारियाँ हो गयी। साबुन और गोल्ड के साथ वासु ने घर के भीतर प्रवेश किया। श्रीधरन नारियल के पेड मे लोहे की कील से छेद बना रहा था कि तभी उसने पीछे से क्टो क्टो की आवाज़ सुनी। श्रीधरन ने मुडकर देखा बडा गपिया किट्टुण्णि था।

किट्टुण्णि कमर मे चाकू बाँधकर शाम को ताडी निकालने के लिए निकला था। चलते समय चाकू की मूँठ बाँस की नली से टकराने के कारण 'क्टो-क्टो' की आवाज़ हो रही थी।

"अरे ताडीवाले नारियल के पेड मे क्या कर रहा है ? · " किट्टुण्णि के हक भरे लहजे को सुनकर श्रीधरन सकपका कर खडा रहा।

बात तो ठीक थी। वह किट्टुण्णि का कल्पवृक्ष है। सोलट वालो ने हरे रग से 112 का नबर डाल दिया था। नबर के नीचे ही श्रीधरन ने छेद बनाकर मसाला भर दिया था।

"मैं गोली दागने का खेल खेल रहा हूँ—" श्रीधरन ने जरा अपराध-बोध के साथ कहा।

"अरे, क्या तू अब खेलनेवाला बच्चू रह गया है ?" उसने अपनी जीभ को फैलाकर श्रीधरन के हाथ की कील और पत्थर को तिरछी आँखो से देखा।

यह तो किट्टुण्णि के स्वभाव की खूबी है। कुछ न कुछ कहते समय उसकी जीभ आधा इच बाहर निकल आती है।

किट्टुण्णि की बात और जीभ फैलाकर बातचीत करने के ढग से श्रीधरन को हँसी आ गयी। किट्टुण्णि की बाते सुनकर ऐसा कौन होगा जो हँसी से लोट-पोट नही हो जाता हो ? किट्टुण्णि का एक मामा लका के कोलबो शहर मे नौकरी करता है उसके बारे मे किट्टुण्णि 'मेरा कोलबु मामा' कहता · । लेकिन इन बातो को सोचकर हँसने का समय यह नही है।

किट्टुण्णि ने अदम्य चपलता दिखाकर श्रीधरन के हाथ से पत्थर छीन लिया और कील को नारियल के छेद पर रखकर पत्थर से जोर से ठोक दिया।

"ठो" आवाज गूंज उठी।

"हाय, हाय धोखा दिया गया ?" श्रीधरन के हृदय मे भी एक गोली धाय कर उठी।

किट्टुण्णि ने श्रीधरन को चेतावनी देकर कहा कि आगे से तेरी गोली-वोली यहाँ नारियल के पेड मे नही लगनी चाहिए। उसने पत्थर दूर फेंक दिया और कील अपने पास रख ली। (किट्टुण्णि का ऐसा स्वभाव था कि वह किसी भी उप-योगी वस्तु को देखते ही उसे अपने कपडे के छोर मे बाँध लेता।) इसके बाद वह नारियल के पेड पर फुर्ती से चढने लगा। एक मिनट के अन्दर किट्टुण्णि उस छोटे नारियल के पेड के ऊपर पहुँच गया।

नब कोरन बटलर के घर का दरवाजा जरा खुला। श्रीधरन ने आधे खुले हुए दरवाजे से झाँकती तिरुमाला का चेहरा और खुली हुई केशराशि देखी। वहाँ श्रीधरन के अलावा और किसी को न पाकर तिरुमाला आँखे फाडकर देखने लगी। श्रीधरन ने हाथ उठाकर ऊपर की ओर कुछ इशारा-सा किया और सूचना दी कि ऊपर के आदमी (खुदा नही, किट्टुण्णि) ने ही यह हरकत की थी। लेकिन इससे कोई कामयाबी न मिली। तिरुमाला ने बिना किसी शब्द के श्रीधरन की तरफ देखकर नफरत और नाराज़ी जाहिर करने के लिए चेहरा घुमाकर गाली बकने

जैसी कुछ चेष्टा की।

दरवाज़ा फिर बन्द हो गया।

पहरा देने का अच्छा पारिश्रमिक मिला। श्रीधरन ने खुद को कोसा।

ऊपर नारियल की ताडी निकालने के कारण थोडी सी मिट्टी श्रीधरन के सिर पर भी गिर गयी।

तभी पीछे से पदचाप सुनायी दी। श्रीधरन ने मुडकर देखा। चाय की दुकान की जानु—। कुछ दूर टोकरी और हँडिया हाथ मे उठाये उसकी बहन कल्याणी भी आ रही थी।

दुकान के पकवान खतम हो जाने के कारण ही आज वे जल्दी घर चल दी होगी। प्राय जानु और कल्याणी एक साथ दिल्लगी करती और हँसती हुई ही घर आती थी। कभी-कभी वे आपस मे झगडा भी करती। (किसी नौजवान के नाम पर ही झगडा होता।) ऐसा संदर्भ उठने पर दोनो मुँह फुलाकर अलग-अलग चलने लगती। रास्ते मे औरो को देखने पर भी कुछ न बोलती। इस समय वैसा ही कोई मौका होगा। नारियल के बीच खडे श्रीधरन को एक दफा घूरकर दोनो बडप्पन दिखाती हुई चली गयी।

धोखा दिया गया। श्रीधरन छाती पर हाथ रखकर सकपकाकर खडा रहा। खतरे की सूचना देने के लिए न तो उसके हाथ मे कोई सामान है न कोई मसाला। उसने समझ लिया कि अब वहाँ भयकर घटना घटने की सभावना है।

श्रीधरन ने जिस खतरे के बारे मे सोचा था, ठीक उसी तरह का शोर-गुल उठ खडा हुआ। ज़ोर से गाली बकने की आवाजे भी गूंज उठी।

वासु गोली खाये सूअर की तरह सिर झुकाकर भाग रहा था। श्रीधरन डर के मारे एक कोने मे छिपकर खडा हो गया।

पल भर मे कोई गोलाकार चीज़ उस तरफ से उडकर नारियल के नीचे आ गिरी, जहाँ से वासु भागा था। उसके नारियल के नीचे गिरते ही किट्टुण्णि भी नीचे उतर आया। उसने उत्सुकता से झुककर वह उठा ली और उसे सूँघा। उस की जीभ दो इच बाहर आयी—'विनोलिया व्हाइट रोज साबुन'।

किट्टुण्णि ने नारियल के ऊपर देखते हुए कहा, "कौआ कही से यहाँ ले आया होगा।"

साबुन को कपडे मे रखकर किट्टुण्णि फाटक पारकर चला गया।

उस दिन आधी रात बीतने पर भी श्रीधरन को नीद नही आयी। पराजय की बेचैनी ने उसे आ घेरा अब उस्ताद वासु को क्या मुँह दिखाऊँगा? वासु ने मुझ पर विश्वास करके ही मुझे यह काम सौपा था। अचानक आ झपटे उन शैतानो को—बडे गयिये, ऐंचौ आँख और बेतरतीब दाँतोवाली—उन तीनो को श्रीधरन बार-बार कोसता रहा। यह भी तय किया कि उनसे बदला जरूर लेना

है। उसने तिरुमाला को कोसते हुए कहा—"चरित्र हीन, हरामजादी रंडी !"

तभी बाहर के बरामदे मे शोर और हलचल-सी हुई। रोशनी भी है। मालूम हुआ कि पिताजी सुबह की गाडी से आने की तैयारी कर रहे हैं।

कृष्णन मास्टर एग्लो-इण्डियन-सर्विस छोडकर म्युनिसिपल सर्विस मे एक शिक्षक हो गये हैं। म्यूनिस्पैलिटी की उत्तर सीमा मे कारक्कल हायर एलिमेण्टरी स्कूल मे ही उनकी नियुक्ति हुई है। हर दिन चार मील जाना और चार मील पैदल आना पडता है। चार-पाँच दिन से पैर मे एक फोडा होने के कारण चलना दूभर हो गया। छुट्टी लेना भी सभव नही है। इसलिए रेल से स्कूल जाते है। सुबह पाँच बजे उत्तर की तरफ एक गाडी है। उस पर चढकर कारक्कुन्नु जाते। शाम को वहाँ से पाँच बजे की दक्षिण की गाडी मे लौटते।

सुबह पाँच बजे से पहले स्टेशन पहुँचने के लिए मास्टर तीन साढे-तीन बजे उठकर तैयारियाँ करने लगते। श्रीधरन की माँ भी उठकर भात और दूसरी भोजन-सामग्री बनाने के लिए रसोईघर मे पहुँच जाती। मास्टर घर पर पत्नी के हाथ के दिये भोजन के अलावा भूखे होने पर भी बाहर होटल आदि का कुछ नही खाते। दोपहर का भोजन टिफिन कैरियर मे ले जाते है।

"कुट्टिमालु, तुझे एक अचरज देखना है तो इधर आ—" श्रीधरन ने ध्यान दिया कि आँगन से पिताजी रसोईघर म काम कर रही माँ को ऊँची आवाज मे पुकार रहे है। श्रीधरन को भी जिज्ञासा हुई कि वह अद्‌भुत चीज क्या है। जाकर देखा।

माँ-बाप दक्षिण के कोने मे खडे होकर पडोस के पाणन के अहाते मे देख रहे है। उम पडोस के अहाते क वृक्षो के नीचे से पिताजी आसमान की तरफ इशारा कर रहे है

"अरे, देख एक विचित्र नक्षत्र।" माँ ने देखा—"क्या वह कच्छ-प्रकाश नही है ?" माँ ने अपने देहाती ज्ञान को व्यक्त किया। वह तो ऐसा वैसा तारा नही है।"

'मै यहाँ हूँ' कहता शुक्र तारा पूर्व दिशा के क्षितिज मे चमक रहा था।

"यह एक नया तारा है। आग की मशाल की तरह चमक रहा है। आधा चाँद-सा लगता है।"

तब श्रीधरन का गोपालन भैया भी आसमान का यह अचरज देखने को उठकर आ गया।

"वह पुच्छल तारा होगा", गोपालन भैया ने राय ज़ाहिर की।

"इसकी पूँछ और सिर नही है इसलिए यह पुच्छल तारा नही है।" कृष्णन मास्टर ने गोपालन को समझाया, "पुच्छल तारा अग्रेजी मे 'कॉमेट' कहलाता है। पर, यह कॉमेट नही है। स्टार है। इस नये स्टार के बारे मे ब्रिटिश वैज्ञानिको की राय हम जल्दी ही अखबार मे पढ सकेगे "

क्षितिज मे एक नये तारे के प्रत्यक्ष होने की बात पहले पहल खोज निकालने वाले वैज्ञानिक का अभिमान हृदय मे रखकर ही कृष्णन मास्टर बोला था।

तारे को देखते रहने पर रसोई मे भात शाक कौन देखेगा ? बुदबुदाती हुई श्रीधरन की माँ रसोई मे चली गयी।

कृष्णन मास्टर नये नक्षत्र के वर्ण, स्थान आदि का निर्णय करने लगा। सप्तर्षियो के सचार-पथ के नजदीक

तभी मास्टर के पीछे नाखून काटता चुपचाप खडा श्रीधरन मुस्कराते हुए बोला—"बाबू जी वह तारा नही है—कलाल मानुक्कुट्टन का फानस है "

कृष्णन मास्टर को लगा कि उनका सिर किसी ने पछाड दिया है। हो सकता है कि यह ठीक ही हो। फिर भी शक दूर नही होता।

तभी वह विचित्र नक्षत्र आसमान से धीरे-धीरे ज़मीन पर उतरते हुए दिखाई पडा।

अतिराणिप्पाट का कलाल मानुक्कुट्टन—माक्कोत का छोटा भाई एक खास मिज़ाज का आदमी था। वह शाम को शराब पीने लगता। पीते-पीते वह गिर पडता। फिर आधी रात या तडके उठकर चाकू कमर मे बाँध एक फानूस जलाकर ताडी लेने निकल पडता। ताडी वाले नारियल और ताड पेडो मे नीचे से ऊपर तक बाँस की सीढियाँ बँधी होती। कन्निप्परपु के दक्षिण मे पाणर के अहाते का ताडवृक्ष आसमान से बातें करता है। मानुक्कुट्टन और फानूस बाँस की सीढियो से धीरे-धीरे ऊपर जाते। ताड के ऊपर पहुँचने पर लालटेन को सामने रखकर उसकी रोशनी मे मानुक्कुट्टन ताडी लेता।

गुरुवायूर मदिर मे महीने के अत मे दर्शन कर दो महीने की मिन्नत-प्रार्थनाओ को एक ही दफा निपटा देनेवाले कुछ भक्तो की तरह मानुक्कुट्टन दो दिन का काम एक सुबह ताडी लेकर कर लेता।

आसमान का नया विचित्र तारा कलाल मानुक्कुट्टन के फानूस के रूप मे बदल जाने पर कृष्णन मास्टर को कुछ निराशा तो हुई, फिर भी अपने छोटे लडके की अकलमन्दी पर उसे गर्व महसूस हुआ। रसोई मे लगी पत्नी से वे चिल्लाकर यो बोले—"कुट्टिमालु, हमारा बेटा अकलमन्द है। अरी सुन, हमने जो नक्षत्र देखा था वह ताडी लेने वाले कलाल मानुक्कुट्टन का फानूस था। जो बडे लोगोको भी नही सूझा, वह उमे सूझ गया वह एक दिन बडा आदमी बनेगा ।"

पिताजी की हार्दिक बधाई और आशीष ने श्रीधरन मे एक नया उन्मेष भर दिया। मै उतना छोटा आदमी तो नही हू। आम लोगो मे जिस निरीक्षण-पटुता की कमी होती है, वैसी कमी मुझम तो नही है। यह बोध श्रीधरन मे ताज़ा हो गया।

7 शराब और औरत

केलचेरी के छोटे शकरन मेलान की मृत्यु हो गयी।

एक दिन यह समाचार पूरे इलाके मे फैल गया। पिछले दिन रात को अचानक ही मृत्यु हो गयी थी।

किसी को भी मालूम नही था कि उसकी मृत्यु किस बीमारी से हुई थी।

शकरन जन्म से ही बीमार-जैसा दिखने पर भी खाने-पीने मे लालची था। उसने अच्छी बुद्धिमत्ता दिखायी! क्या कहना है! नौजवान होने के पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी!

पहले दिन वह पुत्तन हाईस्कूल मे हाज़िर था। शाम को केलचेरी के बरामदे मे दोस्तो के साथ खेल-तमाशे मे समय बिताया था। रात को अचानक मृत्यु हो गयी। लाश सुबह जला दी गयी।

शकरन मेलान के सूतक स्नान के उपलक्ष्य मे जो दावत दी गयी वह केलचेरी के प्रताप के अनुकूल ही थी। दावत के लिए पाँच बोरा चावल परोसा गया था।

सब कुछ ठीक तरह से सम्पन्न होने पर भी इलाकेवालों के मन मे सन्देह पच न सका। क्या शकरन मेलान की मृत्यु अचानक हो गयी थी? क्या शकरन मेलान को जहर पिलाकर नही मार डाला था?

इन्ही दिनो किट्टन मुशी एक रविवार को कन्निप्परपु आया।

कृष्णन मास्टर ने पूछा—"अरे, किट्टन, केलचेरी मे क्या कोई धुआँ उड रहा है?"

किट्टन मुशी ने कमर से सुँघनी की डिबिया लेकर उसमे से ज़रा-सी अपनी नाक मे डालकर मस्तिष्क मे ताज़गी पैदा की।

"अरे मास्टर, आग है तो धुआँ भी होगा। अब तो केलचेरी मे आग लगने का ज़माना नही है?"

"क्या उस आग मे कुछ प्राणी नही जलते होगे?" कृष्णन मास्टर ने हँसते हुए पूछा।

किट्टन मुशी ने "हाँ" कहा।

"केलचेरी के शकरन की मृत्यु कैसे हो गयी, ज़रा बताओ न?"

कृष्णन मास्टर ने सीधे ही बात पूछ ली।

किट्टन मुशी ने अपने रेशमी कमीज के क्रमन्ट प्लेट कफ बटन को सहलाते हुए मुस्कराकर थोडी देर तक चुप्पी साधी। फिर अपने आप फुसफुसाया, "शकरन मेलान शराब पीकर चल बसा।"

कृष्णन मास्टर ने ताज्जुब से पूछा, "क्या कहते हो? उस छोकरे ने शराब पी

ली थी ?"

किट्टन मुशी ने अपनी गरदन को खुजलाते हुए कहा, "वह छोकरा अकेला आधी बोतल शराब एक ही बैठक मे पी लेता था।"

सुनते ही मास्टर ने अपने दाँतो-तले उँगली दबायी।

"तुम्हे मालूम है कि उसे शराब पीना किसने सिखाया था ?"

(मुशी ने अपनी नाक मे गन्ध खीची। रसोई से मछली भूनने की गन्ध आ रही थी।)

"शायद लौहपुरुष पोक्कर होगा ?" कृष्णन मास्टर ने अन्दाज लगाकर कहा।

"पोक्कर तो नही है।" (मुशी ने फिर रसोई की गन्ध सूँघी। उसने अन्दाज लगाया कि कोई अच्छी मछली है।)

"पोक्कर नही तो फिर कौन है ?" मास्टर ने पूछा।

"पट्टर" मुशी नाक सिकोड कर बोला। "केलचेरी का प्रथम मुख्तार शुप्पु पट्टर "

"मैं क्या सुन रहा हूँ। क्या पट्टर शराब पियेगा ?" कृष्णन मास्टर ने उतावली जाहिर करते हुए पूछा।

"पट्टर तो शराब नही छुयेगा—इस बात मे किट्टन मुशी और शुप्पु पट्टर एक ही गुट के है।" मुशी ने हँसते हुए कहा।

"फिर पट्टर ने क्यो इस झझट म हाथ डाला ?" भोले भाले कृष्णन मास्टर ने कहा।

"जान बूझकर ही उसने यह योजना बनायी थी।" मुशी ने बखान किया। शुप्पु पट्टर केलचेरी घराने के मुखिया कुजिक्केलु मेलान का मुख्तार है। वह कुंजिक्केलु मेलान के लिए सब कुछ कर सकता है। उसका छोटा भाई बालिग बनता तो उसके एकाधिकार को धक्का लगता। इसलिए पट्टर ने ऐसा किया।"

"क्या शराब पीने से आदमी की मृत्यु हो जाती है ?" मास्टर ने अपना सन्देह जाहिर किया।

किट्टन मुशी ने अपनी डिबिया से सुँघनी हाथ मे लेकर हँसते हुए कहा—"समझ लो कि शराब मे थोडी-सी औषधी भी मिलायी होगी "

"हाय राम !" मास्टर ने लम्बी साँस खीच ली। "क्या यह सब कुजिक्केलु मेलान के नेतृत्व मे ही हुआ था ?"

मुशी न कहा, "उस रात कुजिक्केलु मेलान केलचेरी मे नही था। हमारे पुराणो म बताया है कि ब्राह्मण किसी की हत्या करे तो मरनेवाले आदमी को स्वर्ग मिलेगा। पर कोई ब्राह्मण का कत्ल करे तो ब्रह्म-हत्या के पाप के कारण नरक म जाना पडेगा। इसलिए अपने छोटे भाई को मोक्ष दिला देने का काम जनेऊधारी को सौपकर कुजिक्कलु मेलान लौहपुरुष पोक्कर को साथ लेकर एक जरूरी काम

से बाहर चला गया।

"क्या काम था ?"

"नाटक की अभिनेत्री को फँसाने की योजना।"

"क्या कहा, अभिनेत्री को फँसाने की योजना ?"

कृष्णन मास्टर बात समझ बगैर स्तब्ध हो आँखे फाडकर खडे रहे।

इलाके मे घटित होनेवाली बुरी करतूतो के मसखरेपन के बारे मे बेचारे कृष्णन मास्टर को कुछ भी जानकारी नही थी। 'फँसाना' 'बिछाना' आदि शब्दो के बारे मे भी उन्हे रत्ती भर ज्ञान नही था। इसलिए किट्टन मुशी ने सब कुछ विस्तार से बताया।

उस दिन मदुरै से आये 'मीनाक्षी विलास तमिल नाटक सघ' के 'कोविलन इतिहास' को शहर मे खेलने का आयोजन हुआ था।

नाटक को शुरू हुए एक घटा बीत गया। कोविलन घुँघरू बाँधकर रगमच पर खडा हो गया। लेकिन उसका नगमा सुनने के लिए कण्णकी सामने नही आयी। (उस समय कण्णकी बारह बल्बवाली कार मे कुजिक्केलु मेनोन की हिरासत मे कही उड रही थी)

कण्णकी को न देख पाने के कारण दर्शको ने हल्ला-गुल्ला मचा दिया। तब मुर्गे की पँछवाली पगडी पहने एक हट्टा-कट्टा आदमी रगमच पर सामने आया। इस आदमी को दर्शको ने आसानी मे पहचान लिया। वह और कोई नही, लौह-पुरुष पोक्कर ही था।

पोक्कर ने कोविलन को पकडकर पीछे हटा दिया। उसने शान के साथ खडे होकर भैसे के-से स्वर मे बताया, "अभिनेत्री को जरा चक्कर-सा आ गया है। एक घटे मे ठीक हो जायेगी। तब तक सब चुपचाप बैठे। "

यह तो एक चुनौती थी।

पोक्कर की चाण्डाल चौकडी के लोग इधर-उधर खडे होकर फुसफुसाते हुए अपने होने की सूचना देने लगे।

श्रोतागण डरे हुए चुपचाप बैठ गये।

पोक्कर के कहे अनुसार एक घटे के बाद कण्णकी रगमच पर आयी। नाटक की शुरूआत हुई।

कण्णकी की रुलाई और अभिनय उस दिन पहले से बेहतर हुए। उस दिन वह असली परेशानी के साथ ही अपनी भूमिका का निर्वाह कर रही थी।

फिर बहुत देर के बाद रगमच पर राजा के हुक्म के मुताबिक कोविलन की हत्या होने पर केलचेरी मे भी एक आदमी की हत्या हो रही थी! ..

किट्टन मुशी की बाते सुनकर कृष्णन मास्टर चौंककर बैठ गया।

अपना क्रोध दबाते हुए कृष्णन मास्टर ने कहा—"हाय! यहाँ क्या पुलिस

और कानून नही है ? गोरो के शासन मे भी यहाँ इतनी सारी ऐसी घटनाएँ घट रही हैं ।"

किट्टन मुशी मज़ाक मे हँस पडा । "कानून और पुलिस ? आपने नही सुना कि पैसे के ऊपर चील भी नही उडती ? पुलिस अफसरो के हाथ अच्छी रकम आएगी बशर्ते कि वे ज़रा आँखें मूंद लें ।

"इस तरह कितने दिन चलेगा ?"

"यह तब तक चलेगा जब तक केलचेरी की सारी सम्पत्ति हाथ से निकल नही जाती ।" किट्टन मुशी ने कहा ।

श्रीधरन की माँ ने दरवाज़े से झाँककर कहा कि भात खाने का वक्त हो गया है ।

भात खाते समय किट्टन मुशी ने कुजिक्केलु मेलान की पागलपन से भरी धूर्तता की ढेर सारी कथाएँ सुनायी ।

भोग-लालसा स उन्मत्त कुजिक्केलु मेलान रसिक भी था । एक बार स्थानीय वकीलो के क्लब के वार्षिक समारोह म 'इन्दुलेखा' का मचीकरण किया गया था । नाटक का टिकट बेचने के लिए दो वकील कुजिक्केलु मेलान के पास गये । सबसे ऊँचे दर्जे का टिकट लिया ।

"टिकट का कितना पैसा है ?" मेलान ने पूछा ।

"दस रुपये ।" वकील ने बताया ।

कुजिक्केलु मेलान ने टिकट खरीद कर बटुआ खोला और तुरन्त पाँच रुपये दे दिये ।

"ये तो सिर्फ पाँच रुपये ही है ?" वकीलो ने समझा कि मेलान मे गलती हो गयी है ।

"हाँ, पाँच रुपये काफी है ।" मेलान ने कहा, "मैं काना हूँ न ?"

8 एक निधि की दास्तान

एक दुपट्टा ओढ और पैर मे खडाऊँ डालकर चन्दुमूप्पन कन्निप्परपु के बरामदे मे बैठकर केलचेरी के कुजिक्केलु मेलान के जन्म के पहले के जमाने की दास्तान कृष्णन मास्टर को सुना रहा था ।

कुजिक्केलु मेलान के परदादा केलु मेलान का जमाना था । केलचेरी घराने की सम्पत्ति का कोई पार नही था । केलचेरी घराने की मिट्टी पर पैर रखे बिना कोई भी आधा मील दूर तक इस इलाके मे नही चल सकता था । समुद्री व्यापार से एक साल मे इतनी आमदनी हो जाती थी, जितनी एक जहाज खरीदने के लिए पर्याप्त है ।

निधि प्राप्त करना केलचेरीवालों का साधारण अनुभव था। पूर्वजो ने रत्न, हीरो और सोने के आभूषणो को तांबे और कांसे के बर्तनो मे भरकर वृक्षो के नीचे जमीन मे गाड दिया था। केलचेरी मुखिया के नजदीक आने पर इन बर्तनो के आभूषण कभी-कभी स्वय ऊपर उठते-से प्रतीत होते थे। यो केलचेरी का ऐश्वर्य जब दिन दूना रात चौगुना बढ रहा था तब एक परदेशी ज्योतिषी ने केलु मेलान की जन्मपत्री का निरीक्षण कर सलाह दी कि आगे निधि न मिलने का खास विचार रखना चाहिए। कुछ अर्से बाद इस घराने को एक शाप ग्रस्त निधि मिलेगी। उससे घराने की तबाही की शुरूआत हो जाएगी।

यह सुनकर मेलान तोद को सहलाते हुए मुस्कराया। उसने मन मे सोचा कि केलचेरी के क्षय होने पर भी उसकी पूरी तबाही के लिए शताब्दियाँ निकल जायेंगी। व्यापार की तबाही हो सकती है, लेकिन केलचेरी की अपार भू-सम्पत्ति की गिनती कौन कर सकता है ? भूचाल और प्रलय होने पर भी हमेशा रहने वाले इलाके और खेत तो हैं ही। छह-सात पीढियो के बाद चाहे जो भी दुर्घटना हो, फिर भी उसकी तबाही नही होगी। कुआँ और तालाब का पानी सूख सकता है, लेकिन केलचेरी तो एक समुद्र है पर ज्योतिषी की सलाह विचारणीय है। घराने मे इतनी अधिक सम्पत्ति इकट्ठी हो गयी है कि उसके बोझ से घराना दब रहा है। फिर यह जमीन के नीचे के निधि-कुओ का बोझ कैसे ढो सकेगा ?

केलु मेलान यो सम्पत्ति की अतिशयता की तकलीफो का विचार कर रहा था कि तभी राजमहल के दूत फाटक से आते हुए दिखाई पडे। महाराजा ने आदेश दिया था कि मेलान तुरन्त उनसे आकर मिलें।

मेलान अपने कुछ साथियो के साथ सजधज कर राजा के निकट पहुँचा। वहाँ राजा, मत्री और पडित लोग एक कठिन समस्या को हल करने का उपाय सोच रहे थे।

राजा का प्रिय हाथी केशवन भगवती अहाते के बडे अन्धकूप मे गिर पडा था। हाथी कुएँ मे फँस गया था। अब बगैर चोट पहुँचाये उसे कैसे बचाया जा सकता है ?

"मेलान कुछ कह सकते हो ? इधर के लोगो को कुछ सूझता नही।" राजा ने विषादभरे स्वर मे कहा।

केलु मेलान ने सिर झुकाकर एक पल सोचा। फिर सिर उठाकर बडे अदब से कहा, "मै कोशिश करूँगा।"

मन्त्रियो और पडितो के चेहरो से स्पष्ट हो गया कि मेलान के जवाब से उन्हें कोई खास खुशी नही हुई है। लेकिन राजा का चेहरा खिल उठा। मेलान की अक्ल-मन्दी पर राजा को भरोसा था।

केलु मेलान झट केलचेरी वापस आया। वहाँ पहुँचते ही मुख्तारो और नौकरो

को बुलाकर उसने आदेश दिया कि जहाँ से भी सभव हो, घास-फूस को बडी मात्रा मे खरीद कर तुरन्त भगवती अहाते मे पहुँचाओ।

बैलगाडियो, ठेलो और सिरो पर घास-फूस के ढेर भगवती इलाके मे आने लगे। मेलान के नेतृत्व मे उसके साथी फूस के गट्ठर एक-एक कर कुएँ मे डालने लगे। उन गाँठो पर कदम रखते हुए हाथी हौले-हौले ऊपर चढ़ने लगा। आधा घटा भी नही हुआ, तिनको की सेज पर पैर रखकर केशवन कुएँ से बाहर आ गया और केलु मेलान को देखकर शुक्रिया देता हुआ चिघाडा। नजदीक दौडे आये महावत की अवज्ञा कर हाथी सीधे राजा के महल की तरफ चला गया।

राजा ने केलु मेलान को रेशमी वस्त्र और कगन का पुरस्कार दिया। अब चौथी बार केलचेरी के मुखिया कजिक्केलु मेलान को राजा की तरफ से रेशम और सोने के कगन मिल रहे थे।

केलचेरी मे वापस आने पर केलु मेलान के निधि मिलने के बारे मे सावधानी बरतने की सलाह देनेवाले ज्योतिषी को बुलाकर पूछा, "ज्योतिषी, अनजाने मे ही मुझे सोने का कगन मिल गया है। इस सोने के कगन को एक निधि समझा जाए क्या ?"

"जरा सावधानी रखिए।" ज्योतिषी के उभय अर्थ म कहा।

पाँच-छह महीने बीत गये।

एक दिन शाम को केलु मेलान घराने के कुछ खेतो और अहातो की जाच करने के बाद वापस आ रहा था। केलचेरी से कुछ दूर किसी नायर का एक बडा अहाता केलु मेलान ने अदालत से नीलाम मे खरीद लिया था। उस पुराने अहाते मे बाड लगाने और जुताई कर खाद डालने के लिए मुख्तारो को उसने आदेश दिया था। उस काम को खुद देखने के लिए मेलान एक पगडडी से उस तरफ मुड गया। तब शाम हो चुकी थी।

मेलान ने अपने नये अहाते के निकट आने पर एक हरिजन युवती को एक गट्ठा अपने सिर पर लादकर उस अहाते से नीचे उतरते हुए देखा।

"अरी, तुझसे बाड को हटाकर अन्दर घुसकर घास काटने के लिए किसने कहा ?" मलान क्रोधभरे स्वर मे गरजा।

पगडडी और अहाते के बीच की काँटेदार बाड और पत्थरो के बीच सकपकायी खडी उस हरिजन युवती ने घास के गट्ठे के नीचे से मेलान की तरफ आँखे घुमायी।

"अरी, तू क्यो बिजली गिराती-सी इस तरह खडी है ? घास वही डाल दे।"

घास के गट्ठे को सिर पर रखे हुए ही वह औरत केलु मेलान को छूती हुई-सी पगडडियो मे कूदकर भागने लगी।

केलु मेलान आपे से बाहर हो गया। "अरी तू इतनी बडी हो गयी है ?" दाँत

किडकिडाते हुए मेलान उस औरत के पीछे दौडने लगा। अपने पकडे जाने के ख्याल से वह औरत घास का गट्ठा नीचे डालकर प्राण लेकर भाग गयी।

'टच्चिग' के घटी-नाद के साथ ही घास का वह गट्ठा एक पत्थर के ऊपर पडा था। मेलान ने आश्चर्य से झुककर देखा। मिट्टी के निशानो से भरा एक पुरान ताँबे का बर्तन वहाँ निकला पडा था। उसने उसे उठाया। वज़नदार था। हिलाया तो कुछ हिलने की आवाज़ सुनाई दी। खोले बिना ही समझ गया कि निधि है। उस औरत के इस निधि के कुभ को घास के गट्ठे मे छिपाकर भागने के समय ही मेलान वहाँ आ निकला था।

कन्धे पर पडे दुपट्टे से निधि के कुभ को ढककर केलु मलान केलचेरी मे पहुँच गया। तभी केलु मेलान की बहिन कुजिकुरुपी ने बरामदे मे आकर एक खुशखबरी दी, "उण्णूलि ने एक सन्तान को जन्म दिया है—लडका है।"

केलुमेलान के बेटे चन्दुक्कुट्टि की पत्नी है उण्णूलि। पौत्र की पैदाइश से केलु मलान को विशेष प्रसन्नता नही हुई। उसने निधि-कुभ को कन्धे पर रखे हुए सिर्फ 'अच्छा' कहा।

(कुजिक्केलु मेलान उस दिन जन्मा शिशु था।)

केलु मेलान उस निधि-कुभ के बारे मे ही सोच रहा था।

ताँबे के कुभ का मुँह लोहे से बद कर दिया गया था। कुभ के अन्दर का सामान देखने की मेलान को बडी उतावली थी। लेकिन तुरन्त इसे खोलने का हौसला नही हुआ। मुझे इस निधि की जरूरत नही है। फिर क्यो इसे खोलकर देखूँ। मेलान ने यो समझाकर मन को शात किया।

बडी देर के बाद अँधेरे मे मेलान निधि-कुभ लेकर दक्षिण के अहाते मे गया। वहाँ एक ताड के पेड के नीचे गहराई मे एक गड्ढा बनाकर उस कुभ को गाड-कर लौट आया।

शिशु की जन्मपत्री तैयार करनी है। केलु मेलान ने कुजिकुरुपी को बुलाकर पूछा, "मुन्ने का जन्म किस समय हुआ था ?"

कुजिक्कुरुपी पहले तो कहने से हिचकिचायी। फिर दृढ स्वर मे बताया—"उदय के बाद साढे सत्ताइस नाषिका[1] मे ही जन्म हुआ था।"

लेकिन वह ठीक समय नही था। पुरानी प्रथा के अनुसार उदय काल मे ही थाली मे पानी भरकर 'नाषिक वट्टा'[2] रख दिया था। लेकिन पता नही कब एक बिल्ली ने थाली मे झपट्टा मारकर 'नाषिक वट्टा' उलट दिया। कुजिक्कुरुपी ने उसके बारे मे किसी से भी नही कहा। बच्चे की पैदाइश का समय उसने अपने

---

1 एक घटे की डेढ़ नाषिका

2 समय देखने का एक पुराना उपकरण

आप निर्धारित कर बताया था।

ज्योतिषी चन्दुक्कुजन पणिक्कर ने ही बच्चे की जन्मपत्री बनायी थी। उसने लिखा था कि इस बच्चे को सभी सौभाग्य उपलब्ध होंगे। राजयोग भी है। जिन्दगी भर सौभाग्य और दीर्घायु होने के नाते यह एक बडी सौभाग्यशाली जन्मपत्री ही है।

पाँच-छह दिन बीत गये। केलु मेलान बेचैन होने लगा। उसको निधि-कुभ के के अन्दर का सामान जानने की उतावली होने लगी थी। उसके अन्दर सोना-चाँदी, जवाहरात या और क्या सामान होगा? जरूरत के लिए नही, महज एक दफा देखने के लिए।

आखिर एक दिन उसकी जाँच का निश्चय किया। आधी रात को एक कुदाल और चाकू हाथ मे उठाकर दक्षिण के ताड के अहाते के पास गया। उसने जगह की अच्छी तरह जाँच की।

जब निधि-कुभ जमीन के अन्दर गाडा था, तब उसके ऊपर निशान के लिए एक केले का पौधा भी लगा दिया था। अन्धेरे मे केले का पौधा चुपचाप नजर आया। मेलान ज्योही, कुदाल उठाकर नजदीक पहुँचा त्यो ही 'फ् ब फ् फ' फुफकारने की उग्र आवाज उठी। फण फैलाए काले नाग का फुफकारना! अध बेहोशी की हालत मे केलु मेलान अपनी बैठक मे वापस जाकर गिर पडा था।

फिर अन्तिम दम तक उस निधि को देखने के लिए वह नही गया। उस निधि को याद करते समय उस साँप का फुफकारना वह सुनता और उसकी दृष्टि की चमक वह देखता।

उसी विषैले नाग ने कुजिक्कलु मेलान को दबोच लिया था। केलु मेलान को उस दिन जिस परदेशी ज्योतिषी ने कुछ बताया था, उसे जरूर भुगतना पडेगा। केल्चेरी घरान की नीव तक की तबाही करने पर कुजिक्केलु मेलान तुला हुआ है।

चन्दुमूप्पन उठ खडा हुआ। "कथा कहकर समय तो गुजर गया।" बडे-बडे दाँतो को दिखाकर चन्दुमूप्पन ने बिदा ली। खडाऊँ से ठ्क-ठ्क की आवाज करता वह चला गया।

श्रीधरन बरामदे के पासवाले कमरे मे बैठकर चन्दुमूप्पन की दास्तान को एक शब्द भी छोडे बिना सुन रहा था।

9 दल-बदल

महीनो और सालो बीत जाने पर अतिराणिप्पाट की प्रतिच्छाया भी बदल गयी।

कन्निप्परंपु को ही देखें—पुराने छोटे घर की जगह खुले बरामदे के साथ एक खूबसूरत मकान खड़ा हुआ है। आँगन के कोने मे एक अच्छा कुआँ भी है, जो कन्निप्परपु के आसपास के घरो के लिए वरदान ही है। ताँबे के बर्तन और घड़ो को कमर पर रखकर अतिराणिप्पाट की लड़कियाँ वहाँ इकट्ठी हो जाती हैं। वे बातें करती हुई खिलखिलाकर हँसने लगती हैं। मकान के बरामदे मे बैठा श्रीधरन कुएँ के चारो तरफ ऊपर मणि-लताओ के लिए बँधी हुई बाड के ऊपर से उन लड़कियो की रोचक बातचीत और हँसी-ठिठोली को कुछ सकोच के साथ-लेकिन रस लेकर, सुनता है। वह उन लड़कियो को कल्पना मे जलदेवी का रूप देकर कविता रचने की कोशिश करता है।

अतिराणिप्पाट के दक्षिण पूर्वी कोने के आराकश करप्पन की झोपडी चार कमरोवाले पत्थरो के एक घर के रूप मे तबदील हो गयी है।

करप्पन का पुत्र बालन समुद्र तट की छतरी की बनानेवीली कम्पनी से मासिक वेतन पाता है।

कोरन बटलर की चाय की दुकान के निकट उसकी प्रतिस्पर्धा मे सूप कण्णन के बेटे कुमारन ने एक और चाय की दूकान खोल ली है। उसका नाम 'भारत-माता टी शॉप' रखा गया है। कुमारन का सहयोगी उत्तर दिशा का कुंजिरामन है जिसे 'गोरा जूँ' के उपनाम से जाना जाता है। वह एक फैशनेबुल नौजवान है।

बढई नीलाँडन ने कठफोडवा बेलप्पन की सेवा से अलग होकर अतिराणिप्पाट के पश्चिम कोने मे स्वय एक फर्नीचर की दुकान खोली है। सहयोगियो के तौर पर उसका बहनोई माधवन कुट्टप्पन, करुप्पन इन दो बढइयो को भी लाया गया था।

आराकश सामी के पडोस मे एक राजगीर अप्पु के छोटे अहाते मे बढई वेला-युधन ने एक झोपडी बनायी थी। उसके माल्लुक्कुट्टी, चेरियम्मा ये दो पत्नियाँ थी। ये दोनो बहिनें थीं।

पुराने कुछ नालो और गड्ढो को पाटकर वहाँ कुछ झोपडियाँ खडी की गयी थी। सुनार, लुहार जाति के लोग बसने लगे थे। इस तरह अतिराणिप्पाट मे नयी झोंपडियाँ बनी। आबादी की वृद्धि हुई। जिन्दगी का स्तर भी ऊँचा होने लगा।

कुट्टाप्पु के घर का चबूतरा और चन्दु पणिक्कर का विद्यालय ज्यो का त्यो था। उनमे किसी तरह का परिवर्तन नही हुआ था। कुट्टाप्पु का चबूतरा घास-फूस और छोटे पौधो से भरा था। शायद तबीयत खराब होने के कारण कुट्टाप्पु को अपने घर का चबूतरा देखने आये महीनो बीत गये थे।

अतिराणिप्पाट के जीवन की साज-सज्जा के जमाने से ही चन्दुप्पणिक्कर का विद्यालय था। उस इलाके के अधिकांश नौजवानों ने पणिक्कर के विद्यालय मे रेत पर और ताड के पत्तो मे लिखकर पढना सीखा था।

बुजुर्ग चन्दुप्पणिक्कर शिक्षक, ज्योतिषी, वैद्य, मान्त्रिक आदि उपाधियों

के कारण अतिराणिप्पाट और आस-पास के कई लोगों के लिए आदरणीय थे। अपने विद्यालय को प्राइमरी स्कूल तक ले जाकर उन्होंने उसके व्यवस्थापक का पद भी हस्तगत किया था।

चन्दुप्पणिक्कर का घर चार-पाँच मील दूर था। लेकिन अक्सर वे स्कूल मे रहते थे। ज्योतिष देखने, जन्मपत्री की जाँच करने, भूत प्रेतो को रोकने हेतु धागा बँधवाने के लिए लोग रात को ही पणिक्कर से मुलाकात करने आते थे।

पणिक्कर की कौडी की काली थैली करीब बीस वर्ष पुरानी थी।

चन्दुप्पणिक्कर को देखने पर श्रीधरन को हँसी आती थी। इसका कारण पणिक्कर की लम्बी नाक थी। वे सूंघनी का बार-बार इस्तेमाल करते थे। तम्बाकू की बुकनी नाक मे सुडक कर नाक को बार-बार मलते रहने के कारण उनकी नाक के छिद्र विकृत होकर जरा नीचे की तरफ मुड गये थे, इससे नाक एक टूटे-फूटे नाले के पुल की तरह लगती थी।

आधी रात को गीत गाकर घूमनेवाले कुट्टाई के अभाव ने अतिराणिप्पाट की रातो मे एक तरह की उदासी पैदा कर दी थी। कुट्टाई आराकशो के मुखिया के रूप मे मैसूर की तरीक्करा मे काम करने गया था। वहाँ वह एक कन्नड औरत से शादी कर चैन से रहता है।

मूंछ कणारन के पिता पुजारी वेलु की रस्सी से लटक कर मृत्यु—शकुणि कम्पाउण्डर का गधर्व विवाह—पाणन की झोपडी मे दिन दहाडे हत्या—चाप्पुण्णि अधिकारी के नये घर का त्योहार इस बीच घटित ये अतिराणिप्पाट की मुख्य घटनाएँ थी।

पहले एक आराकश की जिन्दगी गुजारनेवाला वेलु पलनि भक्तो का मुखिया के रूप मे दाढी मूंछ बढाकर, गेरुए कपडे और गले मे रुद्राक्ष माला पहन कर फुल टाइम पुजारी की तरह जीवन बिता रहा था। एक दिन बिना किसी खास कारण के सुबह ही सुबह नहाने के बाद भस्म लगा बहँगी की पूजा करने के बाद वह रस्सी को घर की छत से बाँध उस से लटककर मर गया।

पुजारी वेलु के लटक कर मरने का दृश्य देखने श्रीधरन दौडा गया था। गरदन झुकाए, पके दाढी-मूँछवाला पुजारी जमीन से कुछ ऊपर लटका हुआ था। ऐसी लटकी हुई लाश को श्रीधरन ने पहली बार देखा था।

"अरे देखा, उसने अपनी जाँघो को नोच डाला है।" पीछे से बढई माधवन ने खुसुर-फुसर की। लटक कर मर जानेवाला आदमी अपनी दोनो जाँघो को यो नोच डालेगा!

कुबडे बच्चे की तरह लम्बे अर्से तक पुजारी के कन्धे पर सवारी करनेवाली पलनी के कोने मे रखी बहँगी अपनी मोरपख आँखो से पुजारी को घूरकर देख रही थी।

एक और कोने मे बैठकर मूँछ कणारन फूट-फूटकर रो रहा था। पति के निधन पर एक विधवा की रुलाई की हँसी उडाकर "अब मेरा कौन है ?" कहकर छाती पीटकर रोने वाले कणारन की रुलाई सुनकर श्रीधरन को हँसी आ गई थी।

शकुण्णि कपाउण्डर ने उत्तर के किसी इलाके से एक मैथिली की चोरी कर उसे कुछ दिन तक तो अपने घर मे रखा। फिर सार्वजनिक रूप मे शादी सम्पन्न हो गयी। धुनिया वेलु के घर मे उस दिन एक विवाहोत्सव हो रहा था। दोपहर को पत्ते बिछ गये थे। उस समय आये हुए मेहमानो के दो आदमियो के बीच कुछ बहस हो गयी। बहस बढकर—'मैं —मैं—तू— तू, मे बदल गयी। फिर एक ने बाप के नाम गाली दी। दूसरे ने तुरन्त झपटकर अपने कन्धे से छूरा उतार उसकी छाती मे भोंक दिया। उसी समय उसकी मृत्यु हो गयी। धुनिया की झोपडी मे औरतो का हाहाकार, हल्ला-गुल्ला — इधर-उधर दौडना 'कुत्तो और कौवो की अच्छी खासी दावत हो गयी थोडी देर के बाद पुलिस की लाल टोपी सामने दीखने लगी।

थोडे से बाल और गोल-गोल बडी आँखोवाले उस मोटे हत्यारे ने पुलिस को प्रणाम कर उसकी अधीनता मान ली। धुनिया की छाती मे चीनी अक्षरो की तरह जो चन्दन की लकीरें थी, उनमे खून के नक्षत्र इधर-उधर छिटक गये थे।

खून से नहाये आँगन मे लेटे धुनिया का शरीर सफेद पड गया था। वह दुबला-पतला सा युवक था। घुंघराले बाल, ललाट पर सिंदूर की बिन्दी, दाहिने गाल के नीचे एक बडा मस्सा—सब साफ दिखाई देता था।

छूरे के शिकार एक आदमी के शरीर को और एक असली हत्यारे को श्रीधरन ने पहले पहल वहाँ नजदीक से देखा था।

चाप्पुण्णि अधिकारी ने जो नया भवन बनाया था, उसके उपलक्ष्य मे पूजा का प्रबन्ध किया गया था। इलाके वालो और अपने हितैषियो से जो उपहार और भेट वस्तुएँ वहाँ आ पहुँची थी उनकी हिफाजत के लिए अधिकारी को एक अलग गृह का निर्माण करना पडेगा।

"अधिकारी उस मकान के लिए भी एक पूजा करायेगा।" मूँछ कणारन ने राय प्रकट की।

कुजिक्केलु मेलान अपने मनोरजन, भोग लालसा और बाहरी दिखावे के लिए केलचेरी भडार पर एक तरह का ताडव नृत्य कर रहा था। दाक्षिणात्य भी चुप नही रहे। नये समाज के बीच एक इच जगह हासिल करने के लिए उन्होने भी पैसे खर्च किये। क्षेत्रीय मन्दिरो के त्योहारो और आम जरूरतो के लिए उन्होंने उदार होकर पैसे दिये। फिर उन्होने अपने खिलाफ प्रचार-प्रसार करने वालो को रिश्वत देकर अपने कब्जे मे रखने की चेष्टा की। उन्हे इस प्रयास मे थोडी-बहुत सफलता भी हासिल हुई। पहले पहल आण्डि को ही उन्होने अपने वश मे किया था। उन्होने

अच्छी तनख्वाह देकर आण्डि को अपने गोदाम के प्रधान देखपाल के पद पर नियुक्त किया। 'कोल जुलाहों' के खिलाफ रात-दिन प्रचार करने पर आण्डि को किसी से एक कानी कौड़ी भी नहीं मिली थी। अब इन लोगों का वेतनभोगी हो जाने के कारण आण्डि ने चुप्पी साध ली।

अर्जीनवीस आण्डि की सिविल और क्रिमिनल सलाह से दाक्षिणात्यों को बड़ी मदद मिलती थी। आण्डि ने समझाया कि कुंजिक्केलु मेलान के दाक्षिणात्यों को समुदाय में शामिल कराने के वादों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। उसके बाद मन्दिरों के त्योहारों के लिए उन्होंने पैसे देने से साफ इनकार कर दिया।

कर्ज के बोझ से दबे परिवारों के अहाते, खेत और मकान केलचेरी वालों को ही मिलते थे। कुंजिक्केलु मेलान को इन संपत्तियों को बेचने के अलावा इन्हें हस्तगत किये रखने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। केलचेरी के मुख्तार भी इस दिशा में उदासीन रहे। मौका देखकर आण्डि ने उन संपत्तियों को दाक्षिणात्यों को दिला दिया।

झूठे दस्तावेजों की निर्माण-कला को आण्डि एकदम नहीं भूल सका था। कुंजिक्केलु मेलान के झूठे हस्ताक्षरों के कुछ दस्तावेजों को आण्डि ने लिखकर तैयार किया। आण्डि के गुरु अष्टवक्रन वेलायुधन नायर ने भी उसकी बड़ी सहायता की। वेलप्पन नायर और केलचेरी के द्वितीय मुख्तार इट्टिरारिश्श मेनोन ने एक रहस्यपूर्ण समझौता किया। केलचेरी के कुछ छिपे हुए अहातों के सर्वे नम्बर और जरूरी सूचनाएँ इट्टिरारिश्श मेनोन ने वेलप्पन नायर को गुप्त रूप से दे दीं। आण्डि ने रात-रात जागकर इन दस्तावेजों को बनाया। (आशान वेलप्पन नायर वात रोग से पीड़ित हाथों से कुछ भी लिख नहीं सकता था।) इन दस्तावेजों में प्रतिपादित दूसरे आदमी आण्डि के ही नौकर चाकर थे। आण्डि ने उनसे ये संपत्तियाँ फिर दाक्षिणात्यों को दिला दीं। इस प्रकार आण्डि को बड़ा मुनाफा मिला। शराब के नशे और औरतों की आँखों के कटाक्षों में घिरे कुंजिक्केलु मेलान ने केलचेरी के अहातों को जिन लोगों के नाम लिखा था, उसका पता खुद उसे ही नहीं था। फिर इन बातों पर ध्यान देने का फर्ज प्रबन्धकों का था। प्रथम मुख्तार धुप्पुपट्टर और दूसरे मुख्तार इट्टिरारिश्श मेनोन की आँखों के सामने अगर एक थैली रख दो तो फिर केलचेरी का एक पूरा टीला भी आँखों से ओझल हो जाए, वे नहीं देखेंगे।

इस तरह केलचेरीवालों की कई सम्पत्तियाँ गूढ़ तरीके से दाक्षिणात्यों के हाथों में आ गयीं।

फिर भी दाक्षिणात्यों की प्रधान समस्या—जाति में प्रवेश करने की—ज्यों की त्यों बनी रही।

चेनक्कोट्टु और कृष्णन मास्टर को दाक्षिणात्यों से सहानुभूति थी। लेकिन खुले तौर पर उनके पक्ष में शामिल होकर लड़ने के लिए उनका आत्मसम्मान अनुमति नहीं देता था। मास्टर को डर था कि अगर वह खुले तौर पर दाक्षिणात्यों के

पक्ष में कुछ कहेगा तो लोग समझेंगे कि मास्टर उनसे घूस लेकर उनकी वकालत कर रहा है। इतना ही नहीं, कृष्णन मास्टर दाक्षिणात्यो के छलपूर्वक केलचेरी की भू-सम्पत्तियो को कब्जे मे करने के खिलाफ थे। कुजिक्केलु मेलान के प्रति सहानुभूति के कारण नही, बल्कि इलाके के एक पुराने घराने की तबाही देखकर ही मास्टर को हार्दिक दुख हुआ था।

इस तरह कृष्णन मास्टर और उसके कुछ अनुयायी एक तीसरे ही गुट मे अलग खड़े रहे।

आण्डि की सलाह के अनुसार दाक्षिणात्यो ने रिश्वत देकर उस इलाके के कवि केकडा गोविन्दन को अपने वश मे कर लिया।

इसी बीच एक खूबसूरत और शिक्षित मछुआरिन से कुजिक्केलु मेलान की आंखे चार हुई। एक पतित जाति की औरत से केलचेरी मेलान की मुहब्बत को लोगो ने मसखरी के रूप मे ही लिया था। लेकिन अर्जीनवीस आण्डि ने इसे एक सुनहला मौका कहकर दाक्षिणात्यो को सलाह दी। दाक्षिणात्यो को जुलाहा कहकर दूर हटाने वाले मेलान ने एक मछुआरिन को सार्वजनिक रूप से अपना लिया है, मेलान का मजाक उड़ाना है।

दाक्षिणात्यो के मुखिया ने चुप्पी साधकर अपनी अनुमति दी। कवि केकडा गोविन्दन वेशभूषा का अधिक शौकीन था। दक्षिण से बुनकर तैयार की गई बढ़िया धोतियाँ उसके घर पहुँच गयी थी।

नयी धोतियाँ पहनकर केकडा गोविन्दन ने अपने पाट्टु साहित्य की सृष्टि की। मेलान की शान-शौकत पर प्रहार कर चुभनेवाले परिहासमय पाट्टु गा-गाकर उसका प्रचार करने के लिए कुछ देहाती लडको को भी नियुक्त कर दिया

"मछुआरिन माधवी से मुहब्बत कर
मेलान भी मछुआ बना—राम राम राम
बारह बत्तीवाली कार बेचकर—मेलान
एक मछली-नाव खरीद ले—राम राम राम
सागर पर चला जा जालो को लेकर वह
पोक्कर मुसलमान और मेलान
मछुआरिन माधवी से मुहब्बत कर ."

10 विद्यालय और घर मे

पुत्तन हाईस्कूल मे तीन साल पढ़ने के बाद श्रीधरन राजा कॉलेज हाई स्कूल मे भर्ती हो गया। वहाँ वह स्कूल की फाइनल क्लास मे पहुँच गया है।

श्रीधरन को अध्यापको के पढाने से भी अधिक सहपाठियो के बीच की शरारतो

ने आकर्षित किया था। दूसरे विद्यालयों मे इस ढग का अनुभव नही मिल सकता था। लेकिन राजा कालेज मे पहुँचने पर स्थिति एकदम बदल गयी थी। छात्रो की शरारतो पर माफी नही मिलती थी। दर्जे मे अनुशासन का पालन नही करें तो उसी समय छात्र को बाहर निकाल दिया जाता था। लेकिन राजा कॉलेज मे भी शिक्षको को उपनाम से समादृत करने की प्रथा थी। पुत्तन हाईस्कूल मे अध्यापको को देने वाले नाम जानवरो से सम्बन्धित थे। पर, यहाँ इतना फर्क था कि उन्हे पौधो का नाम ही दिया जाता था। 'भिडी पट्टर', 'बैगन स्वामी' आदि। कुबडो का इलाज करने वाला एक कुरूप मास्टर था। उसे 'हरा केला' नाम से पुकारा जाता था।

पिताजी की सलाह के मुताबिक श्रीधरन ने हाईस्कूल मे मलयालम के बदले ऐच्छिक विषय के तौर पर सस्क्रत ली थी। सस्कृत के शिक्षक एक श्रेष्ठ कवि भी थे।

जब कॉलेज मैगजीन मे श्रीधरन की एक कहानी प्रकाशित हुई तो मस्कृत के शिक्षक ने दर्जे के छात्रो को श्रीधरन की इस कहानी को पढकर सुनाया। अनजाने मे ही श्रीधरन को पहले-पहल एक श्रेष्ठ कवि, अपने ही शिक्षक, से हार्दिक बधाई प्राप्त हुई। श्रीधरन को यकीन हो गया कि और छात्रो मे वह योग्यता नही है जो उसमे है। लेकिन उसने बाहरी तौर पर इस पर कोई घमण्ड नही किया।

महाकवि वल्लत्तोल ने ही श्रीधरन की कवि बनने की इच्छा को सबसे पहले बढावा दिया था। राजा कॉलेज की साहित्यिक सगोष्ठी मे वल्लत्तोल भाषण देने आये थे। उनका जोर से एक ग्राम लहजे मे दिया गया वह भाषण पहली बार श्रीधरन ने सुना था। उन्होने आसमान मे उडनेवाले बादलो की यह उपमा दी थी 'किसी सफेद कागज को चीर फाडने की तरह'। 'मै तो अग्रेजी नही जाननेवाला एक 'कन्ट्री' हूँ' कहने के पीछे उन का जो तीखा व्यग्य था उसने श्रीधरन को आकर्षित और चकित किया था। श्रीधरन ने मन म सोचा कि अगर मै वल्लत्तोल की तरह एक कवि बन सकता तो!

लबा कोट और सूट पहननेवाले साढे चार फुट ऊँचे किणि मास्टर एक रसिया ही थे। वे दर्जे मे रोचक कथाएँ कहते। अक्सर वे मुर्गे के लहजे मे धीमी आवाज मे ठट्ठा मारकर हँसते। चाय और कॉफी के बारे के अँग्रेजी मे 'कविताएँ लिखकर कॉलेज मासिक मे प्रकाशित कराते। एक दिन किणि मास्टर कक्षा मे नीले सियार की कहानी सुना रहे थे। मारा-मारा फिरनेवाला एक सियार अनजाने मे ही एक नीले रग से भरी बाल्टी मे जा गिरा। बाहर निकलने पर उसके शरीर भर मे नीला रग पुता हुआ था। उसने दूसरे सियारो से कहा कि मै खुदा का सियार हूँ। वह उनका मुखिया हो गया। दुर्भाग्य से उस दिन श्रीधरन नीले रग का एक पाजामा और कुर्ता पहनकर कक्षा मे आया था। 'नीला सियार' कहते समय किणि मास्टर श्रीधरन की तरफ देखकर हँस रहे थे। क्लास के छात्र भी हँसने लगे।

उस दिन से श्रीधरन को 'नीला सियार' यह उपनाम मिल गया। कई सहपाठी वह नाम पुकारकर श्रीधरन की हँसी उड़ाते थे। लेकिन बर्दाश्त करने के सिवा वह और कर भी क्या सकता था।

एक दिन शाम को स्कूल से घर वापस जाते समय रास्ते मे एक पट्टर के बेटे कृष्णय्यर ने श्रीधरन की तरफ देखकर पूछा, "अरे, नीले सियार, क्या समाचार है?" श्रीधरन उसका परिहास बिलकुल सह नही सका। वह मुडकर खडा हो गया और फिर उस पट्टर के बेटे के गाल पर एक झापड रसीद कर दिया। अनजाने मे ही पिटाई मिली, यह सोचकर बेचारा कृष्णय्यर चुपचाप मुँह फुलाते हुए चला गया। फिर श्रीधरन को लगा कि ऐसा नही करना चाहिए था। पट्टर होने के नाते प्रत्याक्रमण नही करेगा, इसी विश्वास के बल पर ही तो उसने उसको तमाचा जड दिया था। और कोई लडका होता तो क्या वह उसको पीटने का हौसला करता? क्या पुत्तन हाई स्कूल का गणपति भी पट्टर नही था? वह बात दूसरी है। वह गणपति तो ऐसा एक बदतमीज था, जो गप्पें मारकर कहता था कि उसका दादा एक महावत नायर का बेटा था।

उस दिन घर पहुँचने पर भी उस तमाचे के बारे मे सोचकर उसका मन मसोसता रहा।

कॉफी पीने के बाद श्रीधरन अपने बगीचे म उतरा।

कन्निप्परपु मे कुएँ के बाहर श्रीधरन ने एक नया बाग लगवाया था। पेण्टर स्तेव के बाग ने ही श्रीधरन को प्रेरणा दी थी। इस चमन की एक खास खूबी उस मे लगाये हुए कई रग के जासौन थे। आम तौर पर मुर्गे की पूँछ जैसे जासौन के अलावा सफेद, हलके लाल, गाढे लाल, हलके पीले, गाढे नीले आदि कई रग के फूलोवाले जासौन थे। दो-दो दलो और सयुक्त दलो के फूल भी थे। जासौन के वर्ग का और एक पौधा भी था। बाड के नजदीक और मोडो पर ये पौधे झुड के झुड वर्ण-पुष्पो का प्रदर्शन कर खडे थे।

बाग मे इधर-उधर जुही की लताएँ लहलहाती थी। शाम को वहाँ रगो और सुगन्धो का त्योहार-सा होता था।

आँगन के कोने की छोटी दीवार के ऊपर मिट्टी के गमलो मे कई तरह के 'प्रिन्स ऑफ वेल्स' पौधो को लगाया गया। लबे, टेढ़े और रग-बिरगे निशानोवाले उनके पत्तो के लटक कर खडे होने का दृश्य बहुत ही आकर्षक था। सफेद प्रिन्स ऑफ वेल्स का स्थान ही प्रथम था। उसे देखने पर लगता था कि आँगन मे एक जल धारा-यत्र की स्थापना की गयी है।

श्रीधरन को अपने बगीचे के रग-बिरगे दृश्य और अपनी कला देख कर आनन्दमग्न होने के बीच ही कुछ दूर कजूस केलु के घर से लगातार ताँबे पर पीटने की-सी आवाज और 'हाय हाय मेरी माँ!' की चीत्कार सुनाई देती। यह कजूस

केलु के ज्येष्ठ पुत्र—शकुण्णि कपाउण्डर के बड़े भाई अप्पुण्णि की खाँसी और उसकी कराहें थी। श्रीधरन हमदर्दी के साथ उधर देखा करता।

अप्पुण्णि ईश्वरभक्त और समाज सेवक था। वह काला-दुबला था। उम्र अट्ठाईस के करीब होगी। शादी नहीं की थी।

अप्पुण्णि एक दो बरस पहले दक्षिण तिरुविताकूर के वैक्कम मंदिर सत्याग्रह में भाग लेकर स्वयंसेवक बना था। सत्याग्रह के समय पहरेदारों और ऊँचे कुल में जन्मे बदमाशों की भयंकर मारपीट सहनी पड़ी। आखिर वैक्कम मंदिर सत्याग्रह की जीत हो गयी। लेकिन सत्याग्रह की प्रथम पंक्ति में खड़े होकर मार-पीट सहने के कारण उसकी हड्डियाँ टूट गयी थी। कई तकलीफें सहने के बाद जब वह अपने घर लौटा, तब उस लाचार बीमार अप्पुण्णि की तरफ मुड़कर देखने के लिए कोई नहीं था। उसके पिता केलु ने भी चेहरा मोड़ लिया था। "छोकरा खुदा के खिलाफ नटखटी करने गया। उसको भुगतने दो।" बेटे का इलाज करने के लिए पैसा खर्च न हो इस लिए कजूस-मक्खीचूस पिता ने यही तरकीब निकाली थी। "यह वैक्कत्तप्पन का शाप है। उसे स्वयं अनुभव करने दो।"

जब बड़ा भाई राजयक्ष्मा का शिकार हो खून की उल्टी करता, तब छोटा भाई शकुण्णि नजदीक के कमरे से अपनी मैथिली से छेड़-छाड़ करता हुआ ठठाकर हँस पड़ता।

कृष्णन मास्टर ही एक ऐसा आदमी है जो अप्पुण्णि के त्याग के बारे में अभिमान और सहानुभूति के साथ बातचीत करता था। वह कहा करता, "हमारे इलाके में एक ही त्यागी है। वह अप्पुण्णि के सिवा और कोई नहीं है।" पिताजी की ये बातें श्रीधरन के मन में जम गयीं। वैक्कम सत्याग्रह के बारे में पिताजी ने श्रीधरन को बता दिया था। मास्टर को वैक्कम सत्याग्रह के प्रति बड़ी सहानुभूति थी।

यों अतिराणिप्पाट में एक ही त्यागी था और उसका एक ही हिमायती था।

ताँबे के बर्तन पर पीटने की-सी खाँसी की आवाज़ और 'हाय मेरी माँ' का चीत्कार श्रीधरन बर्दाश्त नहीं कर सका।

तभी कन्निप्परपु की दक्षिण-पश्चिम दिशा की एक और आवाज़ ने श्रीधरन का ध्यान खींच लिया। श्रीधरन दक्षिण के अहाते की तरफ चला। जाते समय बरामदे की तरफ देखा, बाबूजी अँग्रेजी शब्दकोश खोलकर कुछ नकल कर रहे थे। (नये अँग्रेजी शब्दों को नकल कर उन्हें दुहराकर पढ़ना कृष्णन मास्टर का व्यसन है।)

श्रीधरन ने कन्निप्परपु के दक्षिण कोने के अमरूद के नीचे जाकर देखा (अमरूद का पेड़ कई ऊँची डालों के साथ ऊँचाई पर खड़ा है। उसमें कई फल लगे होते। लेकिन श्रीधरन को कोई फल नहीं मिलता था। क्योंकि रात को चमगादड़ आकर उन्हें हड़प ले जाती थी।)

नाले की उत्तर दिशा के आराकश वेलु के घर से ही यह शोर-शराबा सुनाई पड़ता है। लाल चोली पहने एक औरत पीठ मोड़कर खड़ी थी। चमगादड़ की-सी उसकी कर्कश आवाज़ सुनने पर औरत की पहचान हुई, वह पेण्टर रामन की बेटी चिरुता है। झगडालू उण्णूलि अम्मा से ही जली-कटी बाते हो रही थी।

चिरुता अविवाहित और मोटी काली औरत है। चेचक के निशानो से भरा उसका चेहरा देखने पर लगता है कि मांस को चेहरे पर कही-कही पिरोकर रख दिया गया है। उसके शरीर के गठन मे भी कुछ खामियाँ है। लेकिन चिरुता का विचार है कि वह एक खूबसूरत औरत है। तीज-त्योहारो मे ही नही, जहाँ भीड़-भाड और चेंडा का बाजन आदि होता वहाँ चिरुता हाजिर हो जाती। वह भीड मे मर्दों को धक्का देते हुए आगे बढ जाती। फिर गाली देकर कहती—"माँ बेटी नही है इन बदमाशों के। हरामी-धत् (वह जमीन पर थूक देती) कही से भी आऊँ, ये बदमाश, हरामी ''।

अगर कोई परिचित आदमी उससे कहता, 'अरी चिरुता, तू किसे गाली दे रही है' तो वह औरत अनसुनी का बहाना कर फिर गाली बकने लगती—"औरतो को देखने पर मर्दों को एक नम की बीमारी होती है। हाथो को कुष्ठ रोग लगे ।"

चिरुता की शिकायत यह होती कि किसी मर्द ने पीछे से उसे नोचा छुआ है, या फिर उसके शरीर के किसी पवित्र भाग पर हाथ रखा है। दरअसल कोई भी मर्द चिरुता को सामने या पीछे से देखने पर उसकी अवज्ञा ही करता। यह सब कुछ चिरुता की अपनी कल्पना-सृष्टि ही थी। हाँ, इससे मर्दों को गाली देने का उसे अच्छा मौका मिल जाता।

यह चिरुता ही झगडालू उण्णूलि अम्मा से उसके घर जाकर झगडा मोल लेने के लिए तैयार हो गयी है। चिरुता के इस मुकदमे के अपराधी से उसकी पहचान है। वह उण्णूलि अम्मा का भाई और साइकिल की एक दुकान का नौकर गोपालन है। गोपालन साइकिल पर पगडंडियो से धीरे-धीरे आ रहा था तभी चिरुता से उसकी मुठभेड़ हो गयी। गोपालन ने गीत की कोई कडी गाकर चिरुता से कुछ ऊल-जलूल कह दिया था। यही झगडे की जड है।

"तुम्हारे भाई को अगर प्रेम-श्रेम का पागलपन सवार है तो जल्दी एक शादी करवा दो " चिरुता मशीन की सुई की तरह बोली।

उण्णूलि अम्मा जल्दी से घर के अन्दर घुस गयी। फिर वह एक पुराना झाड़ू लेकर बाहर आयी।

"अरी, रंडी ।" तभी तिनको के गट्ठर की तरह का एक बडा गोला आँगन की तरफ आगे बढा उण्णूलिअम्मा ने अपनी झाड़ू फेंक दी। चिरुता अपने बालो को सवारते हुए झूमती हुई वहाँ से चली गयी।

रेशो का गट्ठर जमीन पर उतरा। उसके पीछे एक लम्बा-सा आदमी। चाँदी की एक छडी भी प्रत्यक्ष हो गयी।

नारियल के रेशे की पतली रस्सी का मालिक सफेद चन्दू आया था।

सफेद चन्दू अतिराणिप्पाट के गरीब परिवार की औरतो को रेशे की पतली रस्सी के कुटीर उद्योग से पैसा दिलवाने का अधिकारी था। (सफेद चन्दू को देखने पर पुत्तन हाईस्कूल के दरवाजे पर मिठाई बेचनेवाले जिराफ नायर की याद श्रीधरन के मन मे ताजा हो जाती है।) वह एक बडी गाँठ मे रेशो को किसी मजदूर के सिर पर ढोते हुए चलता। चन्दू अपने शरीर की लम्बाई की चाँदी की एक छडी लेकर सप्ताह मे एक दफा अतिराणिप्पाट मे प्रत्यक्ष होता। वह हर घर की औरतो को रेशे तौलकर दे देता। अपनी जेब की नोट-बुक मे नोट भी कर लेता। अगले सप्ताह रेशे की पतली रस्सी को लेकर उसका पूरा पारिश्रमिक दे देता। उण्णूलिअम्मा का आँगन ही प्रमुख वितरण केन्द्र था।

सफेद चन्दू और रेशो के आने का समाचार पाकर अतिराणिप्पाट की औरते अपने हाथो मे रेशे की रस्सियो के साथ वहाँ आने लगी।

इस तरह उण्णूलिअम्मा के आँगन की गाली-गलौज सफेद चन्दू के रेशो के वितरण मे टल गई।

अमरूद के पेड से श्रीधरन घर की तरफ मुड गया। तभी एक आदमी को आते हुए देखा। वेशभूषा से जल्दी ही आदमी की पहचान हो गयी। वह पाणन कणारन था।

अगोछे को कन्धे पर रखकर सिर झुका आँखें बन्द कर बडे अदब से अजलिबद्ध होकर पाणन ने 'हुजूर' कहा।

"अरे यह ? कणारन है न ?" कृष्णन मास्टर ने शब्दकोश के पृष्ठो मे उँगली दबाते हुए पाणन से कहा।

कणारन अजलिबद्ध होकर नेत्र मूँदे हुए उसी भाव-मुद्रा मे चुपचाप खडा रहा।

"कणारन, बरामदे मे आकर बैठो !" कृष्णन मास्टर ने पाणन को बरामदे मे आने का निमन्त्रण दिया।

पाणन आँखे खोल, हाथ जोडकर और कन्धे से अगोछा उठाकर कदम रखता हुआ बरामदे मे आगे बढकर वहाँ के एक कोने मे घुटने टेक कर बैठ गया।

"कणारन, तुम्हारी परदेश-यात्रा खतम हुए कितने दिन हो गए ?"

शब्दकोश और नोटबुक बन्द कर कृष्णन मास्टर पाणन की तरफ मुड कर बैठ गये।

पाणन ने अपनी छाती को हथेली से दबाते हुए आँखें बन्द कर साफ शब्दो मे बताया, "लोगो की मेहरबानी से यह दास पिछले बुधवार सुबह ही अपनी झोपडी

मे सकुशल वापस लौट आया" ।

तभी श्रीधरन की माँ सात बत्तियोवाले जलते दीपक के साथ बरामद म आयी। चारो तरफ आलोक फैल गया ।

पाणन झट उठ खडा हुआ । (वह ज़रा सकपकाया । उसने दक्षिण दिशा मे दीपक देखा था । 'दक्षिणे न भक्षण ।' कल का फल यही होगा ।) आँखे मूँदकर अजलिबद्ध होकर थोडी देर ध्यान मग्न हो खडा रहा ।

कमर मे तौलिया लपेट (मोटे चमडे की मियान म चाकू को कमर म रखकर ललाट पर चन्दन की लम्बी लकीरे खीचने के बाद उसके मध्य मे सिन्दूर का तिलक और नगी छाती पर चन्दन लगा कर लम्बे कद का खूबसूरत मध्य वयस्क पाणन कणारन श्रीधरन का एक आराध्य पुरुष था ।

कणारन एक अच्छा मात्रिक भी था । 'जले हुए मुर्गे को उडानेवाला आदमी'— कणारन के बारे म इस इलाके के लोग यही कहते थे । (वेलालूर खेतो और पूतप्प-रपु के बीच नरिमु नामक एक देहात म ही कणारन रहता है ।)

कणारन कृष्णन मास्टर का पुराना दोस्त है । कणारन के पिता केलु, कृष्णन मास्टर के चेनक्कोत्तु घराने के देवी मन्दिर के एक पुजारी थे। कणारन अक्सर परदेश की यात्रा किया करता। वह साल मे एक बार काशी, ऋषीकेश, कैलास आदि उत्तर भारत के तीर्थों की सैर करता । यह भारत-पर्यटन दो तीन महीने तक रहता । सफर के बाद घर वापस आन पर कणारन सबसे पहले कृष्णन मास्टर स ही मिलने आता। हिमालय के जगलो के सन्यासियो की कथाएँ सुनने म मास्टर की बड़ी दिलचस्पी है । (कृष्णन मास्टर ने कोयबतूर के निकटवर्ती पेरनर के उस पार का परदेश नही देखा था । पेरनर म भी वह पितरो को पिण्डदान देने के लिए हो गया था ।)

शाम के धुँधलके के साथ ही पाणन कन्निप्परपु मे आता था। रात को बडी देर तक बैठकर चैन से वह बातचीत करता । सन्यासी, ऋषि-मुनि, परमहसो के दर्शन के लिए कणारन न भयकर जगलो से जो पदयात्राएँ की थी, वह उनकी रोमाचक कहानियाँ रात के भोजन के बाद भी सुनाता । (पाणन यह भी कहता कि कन्निप्परपु मे ही मास-मछली खाकर वह तीर्थयात्रा का व्रत भग कर रहा है ।)

बाकी कथाओ को फिर किसी अवसर के लिए टाल कर रात को ग्यारह बजे के बाद ही वह कन्निप्परपु से बिदा लेता ।

पाणन कणारन के यात्रा-वर्णनो ने श्रीधरन के अन्दर सुदूर जगलो के जीवन की गतिविधियो और सन्यासी जैसे विचित्र पुरुषो के जीवन की नयी तस्वीरो को प्रत्यक्ष कर दिया । श्रीधरन को कणारन का हौसला देखकर बडा ताज्जुब हुआ । आधीरात को, अकेले पूतप्परपु के रास्ते से नरिमुक्कु मे चलना ! भूत-प्रेत और यक्षी उछल कूद कर पूतप्परपु मे क्रीडा कर रहे है। पाणन को इनसे कोई डर

नही है। पूतप्परपु से कुछ उग्र [illegible] को उसने पकड़कर बाँध लिया था और कुछ प्रेतो को अपने इशारे पर नचाया था। पाणन कणारन ने इन बातो का वर्णन कुछ दिन पहले किया था। श्रीधरन के मन मे उसकी याद आज भी ताजा है। पाणन कणारन के सामने भूत-प्रेत तो बिलकुल नालायक कुत्तों की तरह हैं और यक्षी पक्षियो की तरह।

एक अमावस को आधी रात कणारन दूर कहीं कोई पूजा-विसर्जन कर नरिमुक्कु मे लौट रहा था। पूतप्परपु के दक्षिण कोने मे पहुँचने पर कन्धे के तौलिये की गाँठ को, जिसमें मुर्गे का मांस और कुछ पूजा का सामान था, पीछे से किसी के द्वारा खींच लेने-जैसा महसूस हुआ। अपराधी को ताड लिया गया। वह बदमाश उण्णिच्चात्तन नायर का प्रेत था। उस प्रेत ने उस कोने से कई लोगो को मारकर गिरा दिया था।

पाणन ने प्रेत को धमकी देकर कहा, "उण्णिच्चात्तन नायर, कणारन से नही खेलो!" प्रेत ने पाणन की नही सुनी। उसने गाँठ के साथ कणारन को जबरन पीछे धकेल दिया।

कणारन अचानक कमर से चाकू खीचकर मन्त्र जपकर खड़ा हो गया। उसने चाकू से जमीन पर एक चक्र खीच दिया।

"अरे, ठहर जा वहाँ।" मान्त्रिक कणारन की आवाज़ गरज उठी। उण्णिच्चात्तन चक्र के अन्दर फँस गया। कणारन ने चाकू चक्र के मध्य मे गड़ा दिया।

"हाय, हाय!" एक भयंकर चीत्कार पूतप्पुरपु मे गूँज उठी।

बदमाश प्रेत को यो वहीं कीलित कर कणारन अपना सामान लिये नरिमुक्कु चला गया।

उण्णिच्चात्तन नायर तडके तक वही लेटा चिल्लाता रहा।

दूसरे दिन सुबह कणारन ने वहाँ आकर तड़पनेवाले प्रेत से शपथ करायी कि आगे चलकर वह हर्गिज राहगीरों को तग नहीं करेगा। उसके बाद कणारन ने चक्र से चाकू को ऊपर उठाया। देखने पर क्या मिला? चाकू का धारीदार हिस्सा खून से सना था। कणारन ने बताया कि पूतप्परपु भगवती मन्दिर, श्मशान और गाँवके सुनसान कोने मे ही नही, शहर के बीच भी इन प्रेतो को देखा जा सकता है। कणारन ने शहर के गोरो के गिरिजाघर के कोने मे एक काप्पिरि को देखा है। कणारन उसकी घटना को भी बताता।

श्रीधरन ने स्कूल मे पढा था कि काप्पिरि अफ्रीका का आदि नरवर्ग है। लेकिन पाणन कणारन ने बताया कि काप्पिरि एक दिवगत आदमी है। काप्पिरि गोरे पादरी का प्रेतज है।

कणारन ने कहा कि काप्पिरि के सान्निध्य की पहचान उसकी गन्ध से ही हो सकती है। पहले तो सिगार के जलन की-सी गन्ध आ-जाएगी। फिर वह बकरी

और भेडों की मिली हुई गन्ध की तरह रूक्ष और दुस्सह हो जाएगी। उस समय मुडकर देखे बिना भाग जाना चाहिए।

एक रात कणारन शहर के काठ के गोदाम के मालिक गोविन्दन के घर से एक भूत-प्रेत को हटाने के बाद, नरिमुक्कु लौट रहा था। गोरो के गिरिजाघर के कोने की सडक पर पहुँचने पर सिगार की गन्ध महसूस हुई। समझ गया कि वह काप्पिरि है। मुडकर देखना नही चाहिए। लेकिन वह आम आदमियो के लिए ही लागू है। मांत्रिक इसकी परवाह नही करता। कणारन ने मुडकर देखा। फिर क्या कहना था। गिरिजाघर की दीवार पर काली हाँडी की-सी टोपी पहने एक सफेद दाढीवाला काप्पिरि बैठा था। उसके मुँह पर मूसल के टुकडे की नाई एक सिगार था।

कणारन ने सोचा कि पादरी प्रेत को जरा डराया-धमकाया जाये। वह मन्त्र जपकर चाकू से चक्र खीचकर पादरी को उस पर फँसा सकता था। चाकू भोक कर पादरी का चीत्कार सुन सकता था। फिर कणारन ने सोचा कि नही, उसकी जरूरत नही। बेचारा पादरी सिगार पीकर उस दीवार पर रात की हवा खाता हुआ बैठा है। अन्य प्रेतो की तरह काप्पिरि खतरनाक नही है। वह दूसरे शरीर मे घुसता नही। बस बदबू निकालकर दूसरो को पास से हटा देता है।

पाणन कणारन सन्ध्या-दीप की प्रार्थना कर अपनी जगह बैठ गया।

श्रीधरन अपने पढने के कमरे मे घुसकर दरवाजे के निकट बैठे कणारन के परदेश-समाचारो को सुनने लगा।

"कणारन, क्या तुमने इस सैर मे किसी सन्त को देखा था ?" कृष्णन मास्टर ने पूछा।

"काशी विश्वनाथ—महादेवा—देखा था देखा !"

असली परब्रह्म से मुलाकात होने की भक्ति का अभिनय कर पाणन थोडी देर तक खामोश रहा। फिर सन्यासियो, सन्तो और परमहसो से मुलाकात होने की बातें कहने लगा

काशी से दो दिनो की सैर कर एक घमासान जगल मे पहुँच गया। वहाँ एक पत्थर पर बैठकर एक सन्यासी तपस्या कर रहा था। सन्यासी पूर्व दिशा की तरफ सूर्योदय देखकर ही तपस्या शुरू करता है। आँखें बन्द किये बिना सूर्य भगवान को ताक कर उसकी तपस्या होती है। जैसे-जैसे सूरज आसमान मे ऊपर उठता है, वैसे-वैसे सन्यासी का चेहरा और आँखें भी ऊपर उठते हैं। इस तरह सूर्यास्त होने के साथ-साथ सन्यासी की देह धनुष की तरह पीछे की तरफ मुड जाती है और सिर जमीन पर टकरा जाता है। हर हर महादेव !

कृष्णन मास्टर के मन मे उस सूर्यनिरीक्षक स्वामी की अद्भुत तपस्या का चित्र उभर आया और वह श्रद्धानत होकर बैठा रहा। उधर श्रीधरन यह सोच-

कर कि बारिश के दिनो मे जब सूरज आसमान मे दिखाई नही देता होगा, ये सन्यासी क्या करते होगे, थोडी देर तक मौन ध्यान म बैठा रहा।

अब और एक तपस्वी की दास्तान दृश्य हिमालय का घोर जगल ही है। वहाँ की एक गुफा मे एक बूढ़ा सन्यासी अन्न-जल के बिना बगैर नीद के कई सालो से रात-दिन वही बैठकर कठिन तपस्या कर रहा है। हाथो को फैलाकर, पद्मासन मे ही वह तपस्या कर रहा है। सन्यासी की देह लकडी की एक गठरी की तरह हो गयी है। उस सन्त के हाथ का नाखून बढते-बढते गुफा के पेड की जड मे धँस गया है, यह दृश्य भी कणारन ने देखा था—हर हर महादेव !

11 परीक्षाएँ

उस दिन दोपहर को दोमजिले के बरामदे मे बैठकर श्रीधरन नीचे के बाग की तरफ देखता हुआ एक कविता लिखने की चेष्टा कर रहा था। तभी नीचे से पिताजी की पुकार सुनाई पडी। सीढियाँ उतरकर नीचे पहुँच गया।

कृष्णन मास्टर के चेहरे पर अजीब खुशी लहरा रही थी। ओठो के बीच एक मुस्कान थिरक रही थी।

श्रीधरन के पहुँचने पर श्रीधरन की मा को भी पुकारा। उसको इस बात का पता नही लगा कि बात क्या है ?

माँ के आने पर पिताजी ने एक खुशखबरी सुना दी।

"श्रीधरन की एस० एस० एल० सी० बुक पहुँच गयी है। हैडमास्टर ने कहा है कि वह सभी विषयो मे पास हो गया है।"

इम्तहान मे विजयी होने का समाचार पाकर श्रीधरन को जरा राहत महसूस हुई, पर कृष्णन मास्टर अपने पुत्र की जीत पर खुशी से फूला न समाया।

"अब क्या करने का इरादा है ?" माँ ने पूछा।

"उसे कालेज मे भर्ती कराना है।" कृष्णन मास्टर ने टोपी और कमीज उतारने के बाद तसल्ली के साथ कपडे की कुर्सी पर लेटकर अपनी छाती के पके बालो को सहलाते हुए कहा, "उसको पैंतीस रुपये ज़रूर मिलेगे।"

(उस ज़माने मे सरकार की सेवा मे भर्ती होने की कम-से-कम योग्यता एस० एस० एल० सी० और मासिक वेतन पैंतीस रुपया था।)

कृष्णन मास्टर की आकाक्षा श्रीधरन को बी० ए० पास कराने की थी और फिर सरकारी नौकरी मिलने मे अधिक तकलीफ न थी। क्योकि मुनसिफ, सब-जजी आदि ऊँचे ओहदो पर उनके कई पुराने शिष्य बैठे हुए थे, उनसे एक शब्द कहना ही काफी होगा।

पर, श्रीधरन का मनोभाव दूसरे ढँग का था। कालेज मे पढ़ने, बी० ए० पास

होने और सरकार की सेवा करने की श्रीधरन की कोई लालसा नही थी। फिर क्या करे ? इस विषय मे भी कोई विचार न था। पिताजी के आदेश और इच्छा के विपरीत चलने को भी मन नही होता था। श्रीधरन ऐसी एक पीडादायक स्थिति मे फँसकर परेशान हो रहा था।

अतिराणिप्पाट मे एस० एस० एल० सी० पास होनेवाला बुद्धिमान प्रथम छात्र श्रीधरन ही था।

श्रीधरन ने उस दिन शाम को परीक्षा मे सफल होने पर खुशी मनाने और भविष्य के बारे मे चिन्तन करने के लिए समुद्र-तट पर जाने का निश्चय किया।

परीक्षा के समय उसने एक नया ट्विल शर्ट पहना था। उसे उसने इस्त्री कर ठीक तरह से रख दिया था। एक अच्छी धोती और सफेद ट्विल शर्ट पहनकर, हाथ मे सोने की रिस्ट वाच बाँधकर (कुछ पुरानी वह घडी कृष्णन मास्टर के स्कूल के एक पट्टर अध्यापक ने लाटरी से बेची थी। उसके लिए उन्होने हर-एक टिकट के लिए एक-एक रुपया वसूल कर कुल पच्चीस टिकटे बेची थी। उनमे एक टिकट श्रीधरन के नाम कृष्णन मास्टर ने खरीदा था। उसी टिकट पर पुरस्कार मिला था।) बालो को सँवारकर, क्यूटीकूरा पाउडर पोतकर बडी शान से वह एम० एस० एल० सी० पास—पैंतीस रुपये तनख्वाह पाने योग्य नौजवान बनकर समुद्र-तट की तरफ रवाना हुआ।

वह नयी सडक से पश्चिम दिशा मे चलकर सेटताली पुल पार कर मुस्लिम साम्राज्य चेगरा मे पहुँच गया।

वह चेंगरा की पगडडियो के रास्ते से समुद्र-तट पर पुल के नजदीक हवा खाने को बैठनेवाले कोने मे, आसानी से पहुँच सकेगा, तथा वह पुराने हिन्दु-मन्दिरो की जगह बनी मस्जिदो, और तालाबो को देखते हुए चल सकेगा। पगडडियो के दोनो तरफ कही-कही मुस्लिम अमीरो के ऊँचे महलो की बडी दीवारे खडी होगी। उन दीवारो के नजदीक ही रसोईघर होगा। कभी-कभी सफेद घूँघटवाली यक्षियो को रसोईघर के दरवाजो से देखा जा सकगा।

भविष्य के अव्यक्त स्वप्नो मे डूबकर आगे बढते हुए श्रीधरन को पिचकारी से पानी छिटकने-जैसा कुछ महसूस हुआ। सिर झुकाकर देखा तो शर्ट और धोती पर खून था। बाद मे जाँच करने पर मालूम हुआ कि वह खून नही है, बल्कि पान खानेवाली का थूक है।

उस समय पत्थर की दीवार के नजदीक के रसोई-घर से औरतो के कटोरो के गिरने-जैसी ठट्ठाकर हँसने की आवाज सुनाई दी।

चेगरा के रसोई-घर की बीबियो के मसखरेपन के बारे मे श्रीधरन ने सुना था। पान-सुपारी मजे से खाने के बाद रसोईघर की ये यक्षियाँ लुक-छिपकर यह देखेंगी कि कोई काफिर सज-धजकर इधर से आ रहा है। शिकार के नजदीक पहुँचते

ही दरवाजे से निशाना चूके बिना ही मुंह की थूक बाहर निकालेगी। फिर ठट्ठा मारकर हँसेगी। ये खून पीनेवाली यक्षियाँ नही है, खून थूकनेवाली यक्षियाँ है।

रात-दिन उस किले के बन्धन मे समय बितानेवाली उन औरतो को किसी मनोरजन की जरूरत है।

रसोई से पान का रसायन देनेवाली बीबी युवती है या पूरी औरत ? श्रीधरन को लगा कि वह युवती ही होगी। उसे इस बात का ताज्जुब हुआ कि उस युवती का कितना बडा मुँह होगा ! अपनी धोती और कमीज को यो भिगो देने के लिए उस बीबी के मुँह मे एक बोतल का पानी समायेगा।

श्रीधरन यो किंकर्तव्यविमूढ होकर वही खडा रहा। इस रूप मे वह समुद्र-तट पर जाने का विचार भी नही कर सकता था। अतिराणिप्पाट वापस जाने पर सडक से जा भी नही सकेगा। सबसे पहले कपडे की थूक को धो लेना चाहिए। उसने सोचा कि मस्जिद के तालाब मे उतरकर धोना ही अच्छा है। तालाब के पानी का हरा रग और बदबू की याद आने पर तय किया कि बीबी की थूक उससे पवित्र है। धोती को शर्ट के ऊपर बाँधकर वह सिर झुकाए लौट चला। तेज़ चलने से खतरा होगा क्योकि कोई अकस्मात् देखने पर सोचेगा कि यह किसी को चाकू से कत्ल कर फरार हो रहा है। फिर लोगो की भीड इकट्ठी होगी। हो-हल्ला मचेगा। इस-लिए किसी को सन्देह का मौका दिये बिना ही वह साधारण चाल से चला।

नयी सडक पर पहुँचने पर एक दो आदमियो ने मुडकर देखा। सेटताली पुल पार करते समय एक मुसलमान लडका बात समझकर हँसते हुए पुकार उठा। सब कुछ बर्दाश्त किया। दसवी कक्षा पास होने के इस पुण्य दिवस पर इस प्रकार की एक झझट होने से बेहद दुख हुआ। थूकनेवाली उस मुसलमान औरत के मुँह मे सख्त बीमारी होने का शाप दिया।

अतिराणिप्पाट मे पहले के राजगीर अप्पु के घर गया।

वहाँ केलुक्कुट्टि और गपीला वासु कुछ गुप्त बातचीत कर रहे थे। श्रीधरन के वेश को देखकर केलुक्कुट्टि को घबराहट हुई। उसने सोचा कि किसी कार या बैल-गाडी से टकराने से चोट पहुँची होगी और खून मे नहाकर ही वह आ रहा है।

घटी घटनाओ को सुनाने पर केलुक्कुट्टि और वासु हँसी से लोटपोट हो गये। वासु ने कहा, "चेंगरा की पगडडी से मुझे भी एक बार यह पुरस्कार मिला था। लेकिन शर्ट पर नही, चेहरे पर मिला था।"

यह सुनकर केलुक्कुट्टि ने हँसते हुए कहा, "इलायची का दाना मिलाकर ही पान खाती होगी। बीबी के थूक की अच्छी खुशबू होगी।"

केलुक्कुट्टि की माँ उण्णूलिअम्मा ने हमदर्दी के साथ श्रीधरन से कहा, "बेटे वह धोती और शर्ट उतारकर दे दो। मैं थूक को धोकर साफ कर दूँगी।"

उण्णूलिअम्मा की भलमनसाहत पर धन्यवाद देकर श्रीधरन ने शर्ट और धोती

उतार दी। वहाँ पहनने के लिए केलुक्कुट्टि का एक तौलिया ही था। वह तौलिया पहनकर बरामदे मे बैठ गया।

वासु और केलुक्कुट्टि ने अपनी बातचीत जारी रखी।

तभी केलुक्कुट्टि का छोटा भाई नारायणन रोते हुए वहाँ आ पहुंचा।

"अरे, तू क्यो रो रहा है?" केलुक्कुट्टि ने पूछा।

"मदीना होटल के फीलपाँववाले मुसलमान ने मेरे बटुवे को छीन लिया।" नारायणन ने रोते हुए कहा।

"अरे, तू क्यो उस फीलपाँववाले की दूकान पर गया था?" वासु ने पूछा।

"चाय पीने के लिए।" नारायणन ने कुछ अपराध-बोध के साथ कहा।

"फिर फीलपाँववाले ने तेरा बटुआ क्यो छीन लिया?"

वासु ने नारायणन से कैफियत माँगी। नारायणन ने सभी घटनाओ का वर्णन किया।

पिछले दिन घर मे आये हुए बहनोई कुंजुण्णि ने नारायणन को एक छोटा-सा बटुआ और चार आने इनाम दिये थे। नारायणन बटुआ और पैसे लेकर शाम को बाजार मे टहलने गया। इधर-उधर भटककर कुछ सामान खरीदा और अन्त मे अधन्नी लेकर मदीना होटल मे चाय और केले के लिए आर्डर दिया। नारायणन चाय पीने के बाद पैसे देने फीलपाँववाले मालिक के सामने पहुँचा और अधन्नी मेज पर रख दी। 'पौन आना' दुकान के लडके ने ज़ोर से कहा। नारायणन चौक उठा। उसने सोचा था कि हाफ चाय के लिए पाव आना और केले के लिए पाव आना कुल आधा आना। नारायणन ने ऐसा ही हिसाब लगाया था। पर, लड़के ने आधे आने की फुल चाय दे दी थी।

नारायणन ने कहा, "मैंने हाफ चाय का ही आर्डर दिया था।"

"तुमने फुल चाय ही पी है" फीलपाँववाले ने कहा। "पाव आना और रख दे।"

नारायणन ने अपना नया बटुआ खोलकर दिखा दिया। बटुआ खाली था। तभी फीलपाँववाले मालिक ने नारायणन के हाथ से बटुआ छीनकर मेज के दराज मे रख लिया और कहा "बच्चू, बाकी पैसे देने के बाद बटुआ ले जाना। अब तू चला जा।"

कई लोगो के सामने ही नारायणन को उस फीलपाँववाले ने आडे हाथो लिया था। नारायणन ने यह सब आँसू पोछते हुए बताया।

केलुक्कुट्टि ने अपनी जेब से पाव आना देकर कहा, "जल्दी जाकर उस फील-पाँववाले से बटुआ ले आ।"

नारायणन पाव आना थाम आँख और चेहरे को पोछकर मदीना की तरफ चला गया।

उसके चले जाने के बाद केलुक्कुट्टि ने वासु से कहा, "उस फीलपांववाले से बदला लेना चाहिए।"

"आज ही हम उससे बदला लेंगे," गपिया वासु ने सख्ती से कहा।

"भोजन के बाद अपने दोस्तो को उधर मदीना मे ले जावें।"

"हमारे गुट के सभी लोग आज मौजूद नही है।" वासु ने किसी योजना पर विचार करते हुए कहा। "बढई माधवन देहात चला गया है। सफेद जूं बुखार से पीडित है। हमे आज कम-से-कम छह आदमियो की जरूरत है।"

"ऐसी बात है तो हम श्रीधरन को शामिल कर ले।" केलुक्कुट्टि ने अपना विचार प्रकट किया।

तौलिया पहनकर बरामदे मे बैठे श्रीधरन की तरफ नफरत भरी निगाह से देखकर वासु ने कहा, "नही वह तो माइनर ही है।"

(तिरुमाला की घटना के बाद वासु श्रीधरन से बातचीत नही करता था।)

"वह दसवी कक्षा पास हो गया है न ?" केलुक्कुट्टि ने श्रीधरन के पक्ष मे कहा।

"वह तो रही स्कूल की बात। हमारे सघ मे वह नालायक है, माइनर है।" वासु ने निषेध मे आपना सिर हिलाया।

"माइनर और मेजर देखने की क्या जरूरत है ? हम तो एक आदमी चाहिए न ?" केलुक्कुट्टि ने पूछा।

गपिया वासु थोडी देर तक सोचता रहा। फिर उसने पूछा, "श्रीधरन आधी रात को घर से बाहर जा सकता है ?"

श्रीधरन ने जोश के साथ कहा, "मैं जरूर आऊँगा।"

"तू कैसे आ सकता है ?" वासु ने अपना हाथ हिलाते हुए पूछा। "क्या तू ऊपर की मजिल मे नही सोता ? आधी रात को सीढी से उतरकर पश्चिम की खिडकी खोलकर माँ-बाप के जाने बिना ही बाहर आ सकता है ?"

"मैं उनको सूचना दिये बिना बाहर आ जाऊँगा। सीढी उतरकर दरवाज़ा खोले बिना ही आ जाऊँगा।" श्रीधरन ने आत्मविश्वास के साथ कहा।

फिर भी वासु को भरोसा नही हुआ।

श्रीधरन ने अपनी तरकीब बतायी। वह ऊपर के बरामदे से दीवार के कोने के पत्थरो पर पैर रखकर बाहर आ सकता है।

श्रीधरन का हौसला और जोश देखकर उस्ताद वासु को फिर विचार करना पडा। उसने सोचा, लडका बुरा तो नही है।

"क्या तू पहले कभी ऊपर से नीचे उतरा था ?" केलुक्कुट्टि ने सवाल किया।

"दिन मे कई बार इसकी जाँच कर चुका हूँ।"

"रात को अन्धेरे मे उतर सकता है ?" वासु ने पूछा।

"एक बार इसकी भी जाँच कर चुका हूँ।" (श्रीधरन ने कार्यसिद्धि के लिए झूठ कहा।)

"ऐसी बात है तो तू भी आ जा। रात बारह बजे को मोटी कुकुच्चियम्मा के घर मे पहुँचना है। सिर पर बाँधने के लिए एक तौलिया भी ले आना।"

उस्ताद वासु ने माइनर को आदेश दिया।

श्रीधरन को कन्निप्परपु मे पहुँचते हुए शाम हो गयी थी। धोती और कमीज कही-कही से भीगे थे। तो भी मुसलमान औरत के थूक का निशान साबुन से धोने से गायब हो गया था।

युद्धवीरो का एक रात्रि-सघ अतिराणिप्पाट और आस-पास के इलाको मे जो वीरतापूर्ण साहसिक और मजेदार कार्यवाइयाँ करता था, उसके किस्से श्रीधरन ने सुने थे। लेकिन नजदीक जाने की इच्छा होने पर भी उसे इसका कोई अवसर नही मिला था।

अतिराणिप्पाट से आधा मील दूर पर रहनेवाली मोटी कुकुच्चियम्मा के दो लडके है—लक्ष्मणन और भरतन। ये भाई शहर मे एक मोटर वर्कशाप चला रहे है। इनमे छोटा भाई भरतन नटखट और रसिक है। बडा भाई लक्ष्मणन घर मे कम ही आता है। उसका रात का कार्यक्रम वर्कशाप के कोने मे पैसे रखकर ताश खेलना था।

भरतन 'सप्पर सफर सघ' नाम के एक गूढ सघ का मुखिया था। सप्ताह मे दो बार सघ के सदस्य मोटी कुकुच्चियम्मा के घर मे एकत्रित होते। चन्दा लेकर एक 'सफर' की शुरूआत करते।

भोजन के बाद प्रच्छन्न वेश मे शहर के कोनो मे घूमकर वे कई तरह की मसखरी दिखाते। मारपीट, छीना-झपटी, डकैती, चोरी आदि आक्रमण की हरकते इस सघ के सदस्य बिलकुल नही करते थे। (यह नही कहा जा सकता कि चोरी बिलकुल नही की। कोरप्पन ठेकेदार के अहाते मे कई केले के पेड थे। कभी-कभी उनमे से एकाध की चोरी होती। भोजन के बाद टहलते वक्त इच्छानुसार कई प्रायोगिक मनोरजनो का सगठन होता। यह सघ मोहल्ले के म्युनिसिपल मिट्टी के तेलवाली बत्तियो की तीलियाँ बढाकर जलाना, सडक के काम के लिए एकत्रित किये गये गोलाकर पत्थरो का अन्य जगहो मे ले-जाकर ढेर लगाना, अगर किसी से दुश्मनी है तो उसके घर के पीछे छिपकर शैतान की तरह पुकारकर घरवालो को डराना-धमकाना, या फिर समुद्र के किनारे खडे होकर दुश्मनो को खरी-खोटी सुनाना, कुछ भी नही करना है तो समुद्र की लहरो को गिनना—इस ढग की कार्यवाइयाँ करता था। मोटी कुकुच्चियम्मा भी एक तमाशगीर थी। वह इस गुट के लिए कई मनोरजक कार्यक्रमो की सलाह देती। वह पाककला मे होशियार है। भोजन के लिए घी का भात, बिरियाणी, प्याज का भात ऐसी मजेदार चीजें वह

तैयार करती।

गपीला वासु बढ़ई नीलाडन का बहनोई माधवन, कुमारन की चाय की दूकान का कुजिरामन (सफेद जूँ), धोबी मुत्तु (काली बिल्ली), राजगीर केलुक्कुट्टि, छतरियो की मूँठवाली कम्पनी का बालन (छतरी की छडी) —ये ही उस्ताद बालन गुट के स्थायी सदस्य थे।

एक बार उन्होने चाप्पुण्णि अधिकारी का नाको दम कर दिया था। कजूस-मक्खीचूस अधिकारी ने देशवासियो का कई तरह से शोषण किया था। इस देश-द्रोही को अच्छा सबक सिखाने का 'सप्पर सफर सघ' ने एक जुट होकर निर्णय लिया था। भोजन के बाद इस सघ के सदस्यो ने अधिकारी के घर के दरवाजे पर बलि चढायी—एक केले के पत्ते म कठपुतली, ममाले और तीलियो तथा भोजन के लिए मारे गये मुर्गे का सिर और खून वहाँ रखकर वे लोग चुपचाप वापस चले गये।

दूसरे दिन सुबह अधिकारी उठकर बरामदे मे आया तो बलि के बचे-खुचे सामान को देखकर बदहवास हो गया।

दुश्मनो का पता लगाने के लिए अधिकारी आठ ज्योतिषियो को लाया। अच्छे मान्त्रिको को दोष-परिहार के लिए तीन दिन होम कराया।

इस प्रकार अधिकारी के सौ रुपये खर्च हो गये।

उस्ताद भरतन पिछले महीने भे एक नये वर्कशाप का फारमैन होकर ऊँटी चला गया। अब 'सप्पर सफर सघ' का नेतृत्व गपीला वासु ही कर रहा है। सघ के डेरे और भोजन का प्रबन्ध पहले की तरह मोटी कुकुच्चियम्मा के घर मे ही है।

उस दिन खाना खाकर श्रीधरन मकान के अपने कमरे मे पुलिस स्टेशन की घण्टी बजने के इन्तजार मे दत्तचित्त होकर बैठ गया। दस बजे की घण्टी बजी। श्रीधरन चटाई पर बैठा एक-एक पल गिनने लगा। फिर कुछ समय बीत गया। करीब पौने ग्यारह बजे वह एक तौलिया सिर पर बाँधकर बरामदे मे आकर बैठ गया।

घर के एक हिस्से मे एक नया कमरा बनवाने के लिए दीवार के छोर पर पत्थर सम्हालकर रख दिये गये थे। घर के बरामदे की दीवार पर चढ़कर कोने के पत्थरो पर पैर रखकर दीवार के सहारे वह नीचे उतर सकता है। मनोरजन के लिए उसने इसकी दो-तीन बार जाँच भी की थी।

पहले छोर के पत्थर पर पैर रखते ही श्रीधरन का कलेजा अकारण ही स्पन्दित हो उठा। आधी रात घर से लुक-छिपकर बाहर भागने की यह पहली कोशिश है। मन मे अपराध-बोध हुआ। पिताजी इसे जान लें तो! लेकिन अपने साहसिक मनोरजन कार्यक्रम के जोश मे वह अपराध-बोध नदारद हो गया।

श्रीधरन जब मोटी कुकुच्चियम्मा के घर के दरवाज़े पर पहुँचा तब बारह बज रहे थे।

उस्ताद वासु केलुक्कुट्टि और धोबी मुत्तु वहाँ हाज़िर थे। माइनर के पहुँचने पर कुल चार आदमी हो गये। उस्ताद वासु ने हठ करके कहा कि मदीना के शिकार के लिए कम से कम छह आदमियो की ज़रूरत है। तभी धोबी मुत्तु जाकर अपने घर के एक मेहमान कण्णप्पन को ले आया।

कुकुच्चियम्मा ने घी का भात तैयार किया था। बकरे के मास का एक अच्छा व्यजन भी।

भोजन के बाद सब लोग तैयार हो गये। छह आदमियो की सख्या पूरी करने के लिए कुकुच्चियम्मा के नौकर कुनिक्कण्णन को भी पगडी बाँधकर साथ ले लिया।

"चलो मदीना " उस्ताद ने आज्ञा दी।

शहर मे रेल स्टेशन के नज़दीक चौबीस घण्टे खुलनेवाला एक मुस्लिम होटल है मदीना। रेल के गुड्स शेड मे काम करनेवाले नौकर, ठेलेवाले, सेठ की छतरी कम्पनी के मज़दूर और सुबह की गाडी मे सैर करनेवाले यात्री और पुलिस के लोग रात को चाय पीने के लिए वहाँ आते है। होटल मालिक फीलपाँववाला अवरान कोया काउण्टर के ऊपर एक ऊँची कुर्सी पर बैठकर रात को ऊँघता रहता है।

फीलपाँववाले मालिक से बदला लेने के लिए उस्ताद वासु ने जो योजना बनायी थी, साथियो को इसका कोई पता न लगा। वासु पहले ही कुछ बतानेवाला आदमी नही था।

उस्ताद के नेतृत्व मे मदीना मे घुसनवाले ये छह आदमी एक स्पेशल रूम मे जाकर बैठ गये। रसोई के कोने मे ऊँघनेवाले लडके ने पास आकर पूछा, "क्या-क्या चाहिए ?"

"छह हाफ चाय और छह 'तकिया खोल'।" उस्ताद ने आर्डर दिया।

(केले, चावल का चून और सुगधित वस्तुओ को नारियल के तेल मे भूनकर यह मधुर पकवान बनता है। आधा आना उसका मूल्य है।)

लडके ने पहले एक-एक तश्तरी मे 'तकिया खोल' रख दी। फिर गिलास मे चाय लाकर मेज़ पर रख दी।

'तकिया खोल' खाकर गरम चाय पीने के बाद उठने की तैयारी करनेवाले अपने साथियो को रोककर उस्ताद ने अपनी पगडी निकालकर खाली तश्तरी को अपने सिर पर रखकर तौलिये से ठीक तरह से बाँध लिया। उसने साथियो से भी इसी तरह करने का इशारा किया।

सभी सदस्यो ने एक-एक तश्तरी लेकर अपने सिर पर रखी और उसे तौलिये

से बाँध लिया।

अब तुरन्त बाहर निकलना था।

श्रीधरन सकपकाया। जिन्दगी मे पहली बार वह चोरी कर रहा था। उसे लगा कि उसके सिर के उस कटोरे का एक बडे लोहे के बर्तन जितना बोझ है। उसको शका भी हुई कि उसकी पगडी स्वय ढीली हो रही है। उठने की कोशिश की तो बडी तकलीफ महसूस हुई। घुटनो के नीचे सिहरन, कमर मे कँपकँपी भी महसूस हुई। सिर का बोझ बढता जा रहा था।

उस्ताद और बाकी साथी फीलपाँववाले की मेज पर पहुँच गये है। बिल की रकम 'छह आदमी—साढे चार आना,' पुकारकर लडका कोने मे ही बैठ गया।

कीचड के गड्ढे मे फँसे पैर को मुश्किल से ऊपर उठाकर सिर पर छिपे बडे भारी बोझ के साथ श्रीधरन काउण्टर के नजदीक पहुँचा, तब तक उस्ताद और साथी पैसे देकर सडक पर उतर गये थे।

काउण्टर के पीछे बैठे फीलपाँववाले को देखकर श्रीधरन का कलेजा सिहर उठा। सिर के 'सॉसर' मुकुट का बन्धन जरा ढीला हो गया। एक नये चोर की घबराहट और कँपकँपी के साथ होटल के सामने के तीन पत्थर की सीढियाँ उतरने पर 'प्थुम्' ! साथ ही 'च्छलुम' का मधुर रव।

तभी सडक से लगातार 'च्छलुम'—'च्छली'—'च्छलू' नाद ने एक बडे जलतरग की तरह उस रात की खामोशी के रोगटे खडे कर दिये।

घटना इस प्रकार थी। श्रीधरन फीलपाँववाले को पार कर मदीना की तीन सीढियाँ उतरा। फिर पैर नाले के ऊपर सडक तक बिछाये तख्ते के छोर पर था। तख्त जरा उलट गया। पैर भी फिसल गया। वह नाले मे झट कूद पडा। इतने मे पगडी सरक गयी। कटोरा सडक पर 'च्छलुम्' बाजे के सगीत के स्वर के साथ गिरकर टुकडे-टुकडे हो गया।

पीछे आ रहे माइनर के खतरे की सूचना पाते ही उस्ताद और साथी फरार हो गये। दौडते समय उनके सिर की प्लेटें भी गिरकर टूक-टूक होने लगी। समुद्र-तट की रेत मे पैर पडने पर ही उन्होने अपनी दौड समाप्त की।

वे समुद्र-तट की रेत मे लेटकर अपनी थकावट दूर करने लगे।

तभी उस्ताद वासु ने श्रीधरन को पुकारकर एक कोने मे ले जाकर उसके कान मे गर्जन किया, "तू एक जाण्तूस है।"

"जाण्तूस !" श्रीधरन को उसका अर्थ नही मालूम हुआ। शायद अरबी का शब्द होगा। (पोक्कु हाजी के मालखाना से वासु ने कई अरबी शब्द सीख लिये थे।) लेकिन इस शब्द के अर्थ का उसने अन्दाज लगाया। उसका अर्थ शायद 'नालायक – बुद्धू' होगा।

उस्ताद न खरी-खोटी सुनाना बन्द नही किया। "उस दिन तिरुमाला से

मिलने गया तो तूने ही सब कुछ बिगाडकर मुझे अपमानित किया था। तूने आज छह कटोरे भी नष्ट करा दिये। मैंने मोटी कुकुच्चियम्मा से वादा किया था कि फीलपाँववाले की दूकान मे आते समय छह कटोरे साथ लेकर ही आऊँगा। सब कुछ तूने बिगाड दिया। भविष्य मे मदीना के सामने से चल भी नही सकेगे। अरे, तुझे साथ लेकर मुसीबत है—तू एक जाण्तूस है।"

श्रीधरन ने उसकी बातें बर्दाश्त की। वासु को यह ख्याल करना चाहिए था कि वह स्कूल की फाइनल परीक्षा मे उत्तीर्ण एक युवक से बातचीत कर रहा है। श्रीधरन ने यह भी सोचा कि अपनी कमजोरियो के कारण ही यह सब सुनना पड रहा है। जब श्रीधरन को मालूम हुआ कि रात के गुट से उस्ताद मुझे बाहर निकाल देने का ख्याल रखता है तो उसे रुलाई आ गयी।

तब 'छतरी की छडी' उठकर आ गया। उसने वासु को सान्त्वना देकर कहा, "वासु, जाने दो। वह तो माइनर है न ? अनुभव कम है। एक गलती हो गयी। यह पहली गलती है न ? जरा सब्र करो। हमे कटोरा न मिलने पर भी उस फीलपाँव-वाले मालिक को तो नुकसान हुआ है न ? हमने बदला ले लिया। बस यही काफी है "

उस्ताद ने एक बीडी पीकर थोडी देर बडप्पन मे सोचा।

"लेकिन माइनर को एक प्रशिक्षण देना होगा।" काले अरब समुद्र की तरफ आँखे फाडकर देखते हुए उस्ताद ने फैसला सुनाया।

श्रीधरन को तसल्ली हुई। श्रीधरन 'सप्पर सफर सघ' का सदस्य बनने के लिए किसी भी अग्निपरीक्षा का सामना करने के लिए तैयार था।

तीन बजे ही वे अतिराणिप्पाट मे वापस लौट आये थे।

अगला 'सप्पर सफर' शुक्रवार के लिए तय किया गया।

उस रात बारह बजे के पहले ही श्रीधरन ने मोटी कुकिच्चियम्मा के घर हाजिरी दे दी। थोडी देर के बाद उस्ताद, 'छतरी की छडी' और बढई हाजिर हुए। आखिर 'काली बिल्ली' भी आ पहुँचा।

भोजन तैयार हो गया था।

मुर्गे के मास का व्यजन मजेदार था। मछली और लहसुन मिलाकर तैयार किया गया कटहल का एक स्पेशल व्यजन मेजबान की ओर से परोस दिया गया।

भोजन के बाद वे टहलने निकले। बढई के कन्धे पर एक कुदाल था (इस सामान को साथ ले चलने का एक और उद्देश्य था। अगर बीट पुलिस उनसे मिलने पर पूछेगी, 'अरे, कौन-कौन है ? कहाँ जा रहे हो ?' तो ऐसे मौके पर वे बडे अदब मे कहेगे कि समुद्र-तट पर एक लाश दफनाने के बाद वापस आ रहे हैं।)

कार्यक्रम ठीक समय पर ही निर्धारित होता था।

म्युनिस्पिल लैम्प के नजदीक कान्ति मिस्तरी ने सडक की मरम्मत करने के लिए कब्र की आकृति मे पत्थरो का ढेर लगा दिया था। उस्ताद ने आदेश दिया कि वहाँ से हटाकर उन्हे उसकी विपरीत दिशा मे कब्र की आकृति मे रख दें।

अपने मित्रो के साथ पत्थर को नयी जगह रखने की कार्यवाई मे माइनर ने सक्रिय भाग लिया।

तभी एक बाधा उपस्थित हुई। माइनर के खडे होनेवाले कोने मे पत्थर के ढेर पर एक कुत्ते ने पाखाना कर रखा था।

श्रीधरन सकपकाकर खडा हो गया।

ओवरसियर की तरह बीडी पीते हुए निकट खडे उस्ताद ने श्रीधरन को एक बार घूरकर देखा। फिर उससे पूछा, "कल्लटिक्कोलु टीले का मान्त्रिक परय जाति का मुखिया मत्र-विद्या सीखने के लिए आनेवालो की जाँच कैसे करता है? तूने सुना है?"

श्रीधरन ने बताया "नही।"

उस्ताद ने कहा, "गाय की लाश को गोबर मे दफनाएगा। गाय की लाश सड जाएगी। उस पर कीडे पैदा हो जाएँगे। उन कीडो को पुरानी हाँडी मे डालकर काँजी बनाकर शागिर्द को पीने की आज्ञा देगा। नया शागिर्द नाक भौ सिकोडे तो मुखिया उसका हाथ पकडकर कहता, "यह विद्या तुम्हे नही मिलेगी। जिस रास्ते से आये हो, उसी रास्ते से लौट जाओ।"

उस्ताद के कहने का मतलब माइनर को मालूम हुआ। किसी भी चीज से घृणा नही करनी चाहिए।

गोबर के कीडे का किस्सा सुनने पर श्रीधरन को कुत्ते के पाखाने से हुई घृणा निकल गयी।

पत्थर के टुकडो की पुन प्रतिष्ठा के कार्य की समाप्ति के बाद उस्ताद ने हाथ से इशारा कर माइनर को आदेश दिया, "इधर घुटनो तक का एक गड्ढा बनाओ।"

उस्ताद ने गड्ढे मे पैर रखकर नाप लिया। गहराई ठीक थी।

अब इस गड्ढे को इस ढग से पाट दो कि किसी को भी मालूम न हो कि इधर एक गड्ढा था।"

श्रीधरन ने वह काम भी सम्पन्न किया।

"अब उसी दीप-स्तम्भ पर चढ जाओ।" उस्ताद ने फिर आदेश दिया।

दीप-स्तम्भ पर चढने के लिए श्रीधरन को बेहद तकलीफ उठानी पडी। पैर काँप रहे थे। पैर स्तम्भ से खिसक जाते थे। जाँघो मे खून जम गया। पीडा भी हुई। एक-दो दफा ज़रा नीचे की तरफ खिसक गया। फिर घोरपड का स्मरण कर, किसी तरह चढकर स्तम्भ के छोर को छू लिया।

"चिराग की बाती को बढाओ।" नीचे से उस्ताद ने चिल्लाकर कहा।

श्रीधरन ने मिट्टी के तेल डाले दीपक की बाती बढायी। रोशनी चारो ओर फैल गयी। यो श्रीधरन ने अपनी विजय की दीवाली मनायी।

"अब नीचे उतरो।" उस्ताद ने नीचे उतरने का इशारा किया।

उस्ताद की ये सब कार्यवाइयाँ तिरुमाला की पुरानी घटना के प्रतिकार मे ही सम्पन्न हो रही थी। लेकिन श्रीधरन आश्वस्त था कि इसके फलस्वरूप कुछ नयी बातो मे उसको प्रशिक्षण मिल गया है।

'काली बिल्ली' और 'छतरी की छडी' गुमसुम खडे थे।

"क्या कठफोडवा को जरा पुकारकर डराऊँ ?"

उस्ताद ने 'हाँ' कहा। (बढई की शैतान की पुकार सुनने लायक थो। सुन ले तो असली शैतान भी भाग जाये।)

बढई के साथ 'काली बिल्ली' भी गया।

बाग के कोने मे आधी रात शैतान की पुकार सुनकर बरामदे मे लेटा कठफोडवा डर के मारे काँपा होगा, यह दृश्य स्मरण कर श्रीधरन स्वय हँस पडा।

"मुझे नीद आ रही है।" बालन ने जभाई लेते हुए कहा।

"ऐसी बात है तो 'छतरी की छडी,' जाकर सो सकते हो।" उस्ताद ने अनुमति दी।

"चल, हम कुट्टिच्चात्तन को देखने चले।"

अनिराणिप्पाट से डेढ मील दूर दक्षिण दिशा मे रेल की पटरियो के पास एक कुट्टिच्चात्तन कावु था। कावु के आँगन मे एक बडा पेड था। शुक्रवार की आधी रात वहाँ जाकर देखे तो कभी-कभी पेड की एक डाल पर सिर नीचे लटकाये कुट्टिच्चात्तन को देख सकेगे।

उस्ताद उस कुट्टिच्चात्तन के नजदीक ही श्रीधरन को ले जा रहा था।

कावु से कुछ दूर पहुँचने पर उस्ताद ने एक पेड के निकट खडे होकर श्रीधरन से कहा, "मै यहाँ खडा हूँ। तू अकेले कुट्टिच्चात्तन कावु जाकर उसके सामने के पेड को छूकर आ।"

श्रीधरन साहस के साथ आगे बढा तो उस्ताद ने अपनी जेब से लोहे की एक कील निकालकर दी।

श्रीधरन ने सोचा कि अब एक नयी माचिस देकर उस्ताद कहेगा कि वृक्ष पर एक छेद बनाकर माचिस की तीलियो का मसाला भरकर गोली मार दे। लेकिन उस समय उस्ताद का ऐसा कोई उद्देश्य नही था। कुट्टिच्चात्तन का वृक्ष अपने हाथो छू लेने की बात साबित करने के लिए ही उसने कील ठोकने की बात कही थी।

श्रीधरन कुट्टिच्चात्तन कावु की तरफ चला। आधी रात। आसमान की हलकी

रोशनी ही साथी है। चारो तरफ खामोशी । सिर लटकनेवाले काले-काले कुट्टिच्चात्तन के नजदीक ही जा रहा है । छाती धडकने लगी । लगा कि गरम भाप के बीच पड गया है । पाँव मे कँपकँपी हो रही है । यह एक परीक्षा थी । अगर वह उसे डरपोक साबित कर दे तो फिर 'सप्पर सफर सघ' से अपना-सा मुँह लेकर निकल जाना पडेगा । जो भी हो, हौसले के साथ आगे बढा । कावु के नजदीक पहुँच गया ।

साँस रोककर वृक्ष पर सरसरी निगाहो से देखा, छाती तडप उठी । पेड की डाल पर एक काला सत्व लटक रहा है। एक नही, दो है 'क्यार-क्रिगर' का पैशाचिक स्वर श्रीधरन के कानो से सुनाई दिया ।

समझ गया कि चमगादड का चीत्कार है ।

डाल पर से आये उम मन्त्र ने श्रीधरन के मन का डर और आशका दूर कर दी । नया हौसला और जोश महसूस हुआ । वह वृक्ष पर कील ठोककर एक गीत गुनगुनाता हुआ उस्ताद के सामने लौट आया ।

"क्या तू कुट्टिच्चात्तन कावु तक गया ?" उस्ताद ने पूछा।

"हाँ, गया ।"

"कुट्टिच्चात्तन को देखा ।"

"नही ।" (चमगादड की बात नही बतायी ।)

"पेड पर कील ठोक दी ?"

"हाँ ।"

"तो मेरे साथ आ ।"

उस्ताद श्रीधरन को साथ लेकर कुट्टिच्चात्तन कावु म गया ।

उस्ताद ने वृक्ष के नीचे देखा, कील वहाँ भिदी हुई थी । वृक्ष से कील निकाल कर वह कावु मे चला । कावु के चबूतरे के निकट एक पेटी रखी थी। उस्ताद ने पेटी उठाकर एक बार हिलायी । अन्दर कुछ नही था । उस्ताद न मोहल्लेवालो को गाली दी, कुट्टिच्चात्तन की पेटी मे पैसा नही डाले तो उनके घरो मे उपद्रव-पत्थरबाजी, तबाही आदि हो जाएगी—ऐसी धमकी दी गयी थी । पर कौन सुनता है ?

श्रीधरन को इसका पता लग गया कि उस्ताद ने क्यो अपने हाथ मे कील रखी थी ? कुट्टिच्चात्तन की पेटी खोलकर उस्ताद कभी-कभी पैसा उठाकर ले जाता था ।

उस दिन कुट्टिच्चात्तन से कोई पैसा मिले बगैर हताश होकर वापस जाना पडा । नये अनुभवो के आवेश के साथ श्रीधरन भी कन्निप्परपु लौट आया ।

12 यक्षी

दूसरे दिन माँ ने ही श्रीधरन को पुकारकर जगाया था। नौ बज चुके थे।

"क्यो इतनी देर तक सोता है ?" माँ की आवाज दूर से आती-सी प्रतीत हुई।

नीद से जगने पर भी खुमारी आने से चटाई पर लेट गया। पिछले दिन की घटनाएँ सपनो की तरह मस्तिष्क मे रिस-रिसकर आने लगी। यो लेटते हुए अलस होकर नीचे की तरफ निगाहे घुमायी तो धोती के छोर पर मिट्टी दिखाई पडी। रात की सैर के मिट्टी और कीचड के निशान पैरो पर दिखाई दे रहे थे। अगर माँ इन्हे देख लेती तो।

एस० एम० एल० सी० परीक्षा उत्तीर्ण की। पिताजी ने कालेज मे भर्ती कराने का इरादा किया था। मुझे पिताजी के लिए यह त्याग करने के लिए तैयार होना चाहिए।

कालेज मे भर्ती होने के अभी और भी दिन बाकी है। उसके पहले इल-जिपोयिल जाना है। वहा दसवी कक्षा मे उत्तीर्ण होने का समाचार देना है।

देहात के नाद और गन्ध का आस्वादन लिए महीनो बीत गये।

इलजिपोयिल जाने की अनुमति माता के जरिए पिताजी से मिली। और राह खर्च के लिए एक रुपया भी।

श्रीधरन को रवाना हुए ग्यारह बज गये थे। इलजिपोयिल के नजदीक से एक बस चलने लगी है। माँ ने बताया कि बारह बजे की बस मे चले जाने पर दोपहर के भोजन के समय इलजिपोयिल मे पहुँच सकता है। रुपये का सिक्का जेब मे डालकर वह बाहर निकला।

पहले ही सोच लिया था कि बस मे जाने की जरूरत नही है। चन्दुक्कावु की पगडडियो से जाकर पूतप्परपु के रास्ते को पार करना होगा। फिर वेलालूर खेत मे उतरकर गाँव के दृश्यो को देखते-देखते इलजिपोयिल पहुँचेगा।

शहर के आसपास के इलाको को पार कर चन्दुक्कावु की पगडडियो पर पहुँचा। वहाँ के कोरु नायर की चाय की दूकान से चाय और पकवान खाने-पीने के बाद जरा आराम किया। उसके बाद फिर चलने लगा। पूतप्परपु की पगडडी पर पहुँचने पर दोपहर हो गयी थी।

पत्थरो और दीवारो से बाहर निकली बडी जडो से भरी इन पगडडियो को पार करने के लिए अधिक मेहनत करनी होगी। उस जहन्नुम के गड्ढे को पार कर हाँफते हुए पूतप्परपु के दक्षिण-पश्चिमी कोने की ऊँची जगह पर पहुँच गया। चारो तरफ का मुआइना कर थोडी देर वहाँ खडा रहा। सामने एक मायालोक था।

स्मरण किया कि किसी ने कही लिखा है कि स्वर्ग का रास्ता काँटो और पत्थरो से भरा हुआ है। जो भी हो जिसने यह बात कही वह जरूर महान है। दूर पूर्व दिशा मे नीले पहाडो का निशान मध्याह्न के आवरण मे अव्यक्त होकर दिखाई दे रहा था।

दो-तीन मील विस्तृत एक जगह है पूतप्परपु। मैदानो, घास-भरी जगहो कही-कही झाडियो, काली चट्टानो, ताड के पेडो से हिल-मिलकर रहनेवाला पूतप्परपु उस धूप की ज्वाला मे शवदाह करनेवाले श्मशान की तरह दिखाई पडा।

मुरझायी घास और ककडियो से भरी हुई पगडडी से श्रीधरन उत्तर दिशा की तरफ चला। अचानक श्रीधरन की निगाह अचरज से फैल गयी। एक ओर रग-बिरगी कालीन बिछी होने का-सा मोहक दृश्य—फूलो का विस्तार देख वह मुग्ध हो गया।

वे तो बस्ती के फूल नही है। विदेशी किस्म के रग-बिरगे फूल हैं। सालो पहले किसी गोरे ने विदेश से कुछ बीज लाकर पूतप्परपु की जमीन मे डाल दिये थे। वे उगकर बडे होने के बाद फूले है। इस तरह उस जगह पर ये पौधे बढ़ने और फूलने लगे। गाढे नीले रग के ये मधुर मुस्काते फूल चट्टानो से भरी हुई जमीन पर रग-बिरगे दृश्य उपस्थित करते।

इन कालीनो मे क्या यक्षी आराम करती होगी? उसकी सभावना तो नही है।

भूतप्रेत और यक्षी। उनकी पुरानी लीलाभूमि नही है आज का पूतप्परपु। चार मील दूर स्थित कारक्कुन्नु बैरक्म के गोरे सिपाही निशाना लगाने का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए पूतप्परपु मे आते थे। एक मैदान के एक कोने की ऊँची दीवार के पीछे से ऊँचाई पर दिखाई देनेवाले बैलो की आँखो को लक्ष्य कर सिपाही तीन-चार सौ गज दूर मे जमीन पर लेटकर गोली मारने लगते हैं। गोली मारने की आवाज और बारूद की बदबू से तग आकर ये यक्षी और भूतप्रेत यह जगह छोडकर चले गये होगे। गोरो ने यहाँ एक विनोद-केन्द्र की भी स्थापना की थी। पूतप्परपु के चारो तरफ सम-दूर मे केकडो के बिलो की तरह गड्ढा बनाकर उसमे चिडियो के अण्डो की-सी गेद डालते। एक लोहे की छडी कधे पर रखकर उडाये गये गेद के पीछे हौले से चलते गोरो को देखकर हँसी आ जाती। गोरो के इस गेद के खेल का नाम 'गोल्फ' है।

पर ये सब, दिन की कहानियाँ हैं। रात होने पर दृश्य बदलने लगते। पूतप्परपु फिर भूत-प्रेतो और यक्षियो की लीलाभूमि मे बदल जाता। तार के पेडो से यक्षी नीचे उतरने लगती। पूतप्परपु के नजदीक से जानेवाले राहियो को प्रलोभन देकर लाती। फिर बेचारो को ताड के पत्तो पर चढाती। (आधी बेहोशी की हालत मे इन राहियो को ताड के पेड महल की तरह ही दिखाई देते।)

दूसरे दिन ताड के पेड के नीचे एक लाश दिखाई देती उसका खून यक्षी ने पी लिया होता।

अप्पु की एक कथा की याद श्रीधरन के मन में ताजा हो गयी।

एक दिन तडके ही परगोटन बढई काम करने जा रहा था। पूतप्परपु के कोने मे पहुँचने पर उसने चीत्कार सुना। चारो तरफ का मुआइना किया। कोई भी दिखाई नही पडा। फिर ध्यान देने पर लगा कि रुलाई ऊपर से ही आ रही है। देखते ही अजरज हुआ। इयगोट्टुमना का बुजुर्ग शकरन नपूतिरि ताड के ऊपर सिर्फ एक लगोटी पहनकर बैठा था। उसने अपनी धोती उतारकर ताड के पत्तो से अपने को बाँध लिया था। चक्कर खाकर गिरने से बचने के लिए ही उसने ऐसा किया था।

रात को पूतप्परपु की यक्षी ने ही उसे ऐसी तकलीफ दी थी। नपूतिरि की कमर मे एक यन्त्र बँधा था। इसलिए यक्षी उसका शरीर छू नही सकी। यो वह भारी खतरे से बाल-बाल बच गया।

पूतप्परपु के कुख्यात कुट्टिच्चात्तन के बारे मे एक दफा पाणन कणारन ने जो कुछ बताया था, श्रीधरन के मस्तिष्क मे उसका स्मरण ताजा हो गया। एक गोलाकार धागे की तरह वह रास्ते मे लेटता। उसके ऊपर कोई पैर से मारे तो उसको सामने की विस्तृत जगह पगडडी की तरह मालूम देती और वह विशाल पूतप्परपु के चारो ओर चक्कर लगाने लगता। छोटा-सी वह वस्तु भी हिल-डुलकर आगे-आगे चलने लगती।

पूतप्परपु की उन अलौकिक घटनाओ पर विचार करने पर श्रीधरन के मन मे एक अज्ञात भय आने लगा। उसको इस बात से भय होने लगा कि वह अकेले ही इस पथ पर पहले-पहल सफर कर रहा है। सुना था कि यक्षी और भूत-प्रेत कभी-कभी दोपहर को भी चलने लगते। धत्! सब कुछ अन्धविश्वास ही है। कुछ अर्सा पहले कुट्टिच्चात्तन का नाम सुनते ही डर लगने लगता था। कल रात उस्ताद वासु के साथ जाने पर कुट्टिच्चात्तन को चमगादड के रूप मे पहचाना। (झट श्रीधरन के मस्तिष्क मे नया विचार पैदा हो गया। दरअसल कल उस पेड पर कुट्टिच्चात्तन अपना वेश बदलकर खडा हुआ होगा। नही, कुट्टिच्चात्तन नाम की कोई वस्तु है ही नही। कुट्टिच्चात्तन होता तो क्या अपने पैसे की चोरी करनेवाले वासु को यो ही छोड देता?

कैसी सुनसान जगह है! कोई प्राणी दिखाई नही पडता—चीटी तक नही। हवा भी नही है।

लम्बे पैरोवाली भूसे के-से रग की एक बदसूरत चिडिया इधर दिखाई देती थी। उस पक्षी के बारे मे अप्पु की कहानी याद की। वह चिडिया रात मे अपने पैरो को ऊपर उठाकर ही सोती है। अचानक आसमान नीचे गिर जाय तो अपने

पैरो से उसे रोकने के लिए ही वह ऐसा करती है। लोग उसे आसमान को रोकने-वाली चिडिया के नाम से पुकारते है।

क्या वह चिडिया भी पूतप्परपु की उपेक्षा कर कही उड गयी है ?

घास-फूस, ककडियाँ और बीच-बीच मे काली चट्टानो से भरी ऊँची-नीची जगहो को पार कर श्रीधरन तालाब के पास पहुँच गया।

पूतप्परपु मे तालाब किसी इन्सान ने नही बनाया था। हजारो वर्ष पहले कई भूतो ने एक रात समुद्र को पाटकर पूतप्परपु बनाया था। सभी जगहो को पाटने से पहले सुबह हो गयी। समुद्र की बची-खुची जगह आज भी तालाब के रूप मे दर्शनीय है।

पुराने लोगो का कहना है कि समुद्र की एक-दो मछलियाँ आज भी इस तालाब मे रहती है।

शताब्दियो से यह तालाब सूखकर कम होता जा रहा है। कई बडे-बडे वृक्ष इधर-उधर खडे हो गये है।

वृक्षो के नीचे ठण्डापन है। कडी धूप के समय पेडो की हरी पत्तियो म अधिक कान्ति दिखाई देती है।

श्रीधरन ने एक वृक्ष के निकट खडे होकर तालाब की तरफ निगाहे घुमायी। सूखे तालाब का जल आइने की तरह चमक रहा है। गर्मी की ज्वाला और भाप का हलका-सा पर्दा जल के ऊपर सचरणशील प्रतिभास को जन्म देता है। उसे देखने पर लगता है कि किसी मात्रिक से फेकी हुई भस्म इधर-उधर उड रही है।

निकटवर्ती किनारे के उस पार के कोने की तरफ श्रीधरन ने नजरे डाली। वहाँ कमरे के बरामदे मे 'एक' बैठी हुई है।

(वह छोटा घर गोल्फ के खिलाडियो ने अपने सामान को सुरक्षित रखने के लिए तालाब के पास के ताड के जगल मे बनाया था।)

एक सफेद चेहरा। वक्ष पर लटकी हुई केशराशि।

श्रीधरन एक दम सिहर उठा। आँख मूँदकर फिर एक बार चमकनेवाले जल के ऊपर से उस तरफ दृष्टि दौडाई।

उस चेहरे का रग चाँदनी का-सा था। इस तरह का खूबसूरत चेहरा इस दुनिया मे पहले नही देखा था। दोनो कन्धो पर खुले छूटे बाल काले-नीले रेशम की तरह चमक रहे थे। जरा झुककर आँखे मूँदने की मुद्रा मे वह लेटी है।

दोपहर की गर्मी की शिथिलता के कारण ऐसा लग रहा है या यह आँखो के सामने की सच्चाई है ?

लहरो की प्रतिच्छाया की तरह क्या 'वह' स्वय हिल रही है ?

उसने मुझे देखा नहीं होगा। लेकिन सभव है कि अगले क्षण वह तालाब मे या ताड के ऊपर अन्तर्धान हो जाए।

दोपहर को, सभी प्राणियो से अलग, समुद्र के उस प्राचीन किनारे पर वह अकेली है। मुझे तुरन्त अपने को बचाना है।

उसे फिर एक बार देखने का हौसला नही हुआ। सिर झुकाकर कदम पीछे हटाने की चेष्टा की। पैरो मे कपन-सा महसूस हुआ। किसी तरह पैरो को खीचकर चला। नही मालूम कि चला या उड भागा।

आँखो मे धुँधलका छा रहा है। वह अन्धकार पीने रग मे बदलने लगता है। सामने का मैदान, घास-फूस, चट्टान और झाडियाँ किसी मान्त्रिक के पीले धुएँ मे ढकने लगे।

पीछे मुडकर देखे बिना एक बडे बोझ को ढोता हुआ-सा वह आगे बढ रहा है। जमीन काँपने लगी। क्या 'वह' भी पीछे आ रही है? फिर मालूम हुआ कि पूनप्परपु की जमीन कही-कही पैर लगते हो काँपने लगती है। पुराने ज़माने मे समुद्र को पाटकर ही इसे बनाया गया था न।

मन मे वह दृश्य चुभ गया। चाँदनी के रग मे अतुल सौन्दर्य मे ढला हुआ चेहरा! दोनो कन्धो से छाती पर बाल लटक रहे है। वह चेहरा और बालो से ढकी छाती के अलावा झुरमुट के कारण उसका निचला भाग दिखलाई नही देता।

मेड की उत्तर दिशा के चट्टानो से ढके कोने से वेलालूर की पाताल गुफा के कोने मे पहुँचने पर सौ मील दौडने-जैसी थकावट और शिथिलता महसूस हुई।

पगडडियो के बडे पत्थरो और पानी बहने के कारण बने गड्ढो को पार कर धीरे-धीरे उस पार की पगडडियो मे पहुचने पर कुछ तसल्ली हुई। ज़रा मुडकर देखा। वह मेरा पीछा कर रही है। गौर से देखने पर वह एक गाय मे बदल गयी। उस समय राहत नही, बल्कि ज्यादा बेचैनी महसूस हुई।

वेलालूर खेत को पार कर इलजिपोयिल पहुँचने के लिए खेत के रास्ते से डेढ़ मील चलना होगा।

कटाई के बाद का खेत सूखे समुद्र की नाईं सामने असीम होकर फैला हुआ है।

एक बडी मछली की हड्डियाँ इधर ही आ रही है। नजदीक पहुँचने पर वह बाँस के टुकडे हो गयी। एक हरिजन बाड बनाने के लिए बाँस के टुकडो और काँटे-दार पौधो को सिर पर ढोकर आ रहा था।

श्रीधरन को उसकी हलकी-सी याद है कि इतने मे इलजिपोयिल के दरवाज़े मे पहुँचते ही वह बरामदे मे गिर पडा था।

फिर तीन-चार दिन तक उसने जो कहा, जो बीता, उसकी उसे याद नही है। पर, कुछ घटनाओ की हलकी-सी याद है। वह इसका अन्दाज़ नही लगा सका कि कुछ दृश्य सपने थे या मात्र कल्पना या फिर वे यथार्थ थे। कठिन ज्वर से पीडित इन दिनो मे गरम भाप से भरे अँधेरे कमरे मे फँसने का-सा अनुभव हुआ था।

फिर इन सब बातो के बारे मे अप्पु ने ही श्रीधरन से कहा था। श्रीधरन की

शुश्रूषा मे अप्पु हमेशा उसके नजदीक बैठा रहता था। श्रीधरन ने क्या-क्या बक-वासें की थी—अप्पु हँसते हुए कहना शुरू करता

'ताड के ऊपर है। मुझे नीचे उतरने दो।' कहकर ज़ोर से चिल्लाया था। और फिर 'यक्षी-यक्षी' कहकर चटाई से उठकर दौडने की कोशिश करने पर अप्पु ने ही उसको रोक लिया था।

कोरुप्पणिक्कर के घर जाकर मामा ने ज्योतिष विद्या पूछी थी। पणिक्कर ने बताया था कि ब्रह्मराक्षस ही उसे तग कर रहा है। धोबी कोप्पुण्णि को लेजाकर उसने मन्त्र-जप किया एक धागा बाँध दिया था। रात को फिर होम किया। वेलन शकरन वैद्य ने जाँच करने के बाद काढा और गोली लिखी। अप्पु ने इन ढेर सारी बातो का वर्णन किया तो श्रीधरन को बडी शरम आयी। धोबी ने कलाई मे जो धागा बाँधा था, वह एक शिशु की तरह वहाँ पडा हुआ था।

'श्रीधरन ने एक बार जोर से 'नारायणी' पुकारा था।' अप्पु ने भर्राई आवाज़ मे कहा।

नारायणी! नारायणी! थोडी देर उस दृश्य की याद कर मन मे कुछ उभर आया

पूतप्परपु के महासमुद्र मे श्रीधरन एक बडी मछली की पीठ पर चढकर सवारी कर रहा था। तभी ऊँचे ताड के पेडो के नजदीक के नाले मे तैरनेवाली एक मत्स्य-कन्या ने अपने मोती-जैसे दाँतो मे मुस्कराते हुए श्रीधरन को पुकारा। नज़दीक पहुँचने पर देखा कि मत्स्यकन्या नारायणी थी।

उत्कठा और शरम से भरे लहजे मे श्रीधरन ने अप्पु से पूछा, "नारायणी की बीमारी का क्या हाल है?"

अप्पु ने श्रीधरन के चेहरे की तरफ आँखे फाडकर देखा। एक मिनट की चुप्पी के बाद अप्पु की आँखे भर आयी। दूर देखते हुए अप्पु ने कहा, "पिछले साल वैशाख मे नारायणी चल बसी। श्रावण मे माँ का भी निधन हो गया।"

नारायणी की मृत्यु हो गयी—यह सुनकर श्रीधरन चौका नही। उसका मस्तिष्क गरम हो गया। नारायणी एक सोने का सपना थी। वह सपना अन्तर्धान हो गया। सोने के सपनो की मृत्यु नही होती है। वे स्मृति मे हमेशा जियेंगे।

फिर उसने अप्पु से कुछ नही पूछा। बुखार दूर होने के दो-तीन दिन बाद श्रीधरन ने कन्निप्परपु मे लौटने का निश्चय किया।

अपना कर्त्तव्य न निभा पाने के कारण पछतावा और एक अज्ञात अपराध-बोध श्रीधरन के मन को व्यथित कर रहा था। नारायणी को जिन्दगी मे सिर्फ एक ही बार देखा था। उस लडकी से मिलने की साध को मन मे ही दबाकर रखा था। प्रथम दर्शन से ही मन मे यह विचार उठा था कि नारायणी अलौकिक है। किसी यक्षी स मुलाकात करने के क्षण मे मन मे जिस तरह की सिहरन होती, उसी तरह

की कँपकँपी नारायणी से मुलाकात करने का विचार उठते ही श्रीधरन को होती थी। इसी भय ने श्रीधरन को रोक दिया था। अब यह भय नही रहेगा। यह सात्वना तो मिलती ही है कि मृत्यु के बाद वह वहाँ मिलने गया था।

उस दिन शाम को वह अप्पु के साथ टीले की तराई मे बने उसके घर पहुँच गया।

आँगन के जासौन मे दो-तीन फूल ही थे। पहले तो पौधा फूलो से भरा था! क्या वह सूख रहा है? अहाते मे मौलसिरी के फूल गिरे पडे थे। लेकिन उन्हे एकत्रित कर माला पिरोने के लिए वहाँ कोई नही था। लगता है, वहाँ झाडू दिये महीनो बीत गये है।

कुछ अर्से पहले का उस आँगन के कोनेवाला बकरी का घर कहाँ गया? उस जगह रेशो को डाल दिया गया था।

घर बन्द कर रखा था। अप्पु वहाँ अकेला ही रहता है। उसका बाप बैल-गाडीवाला तैय्यन उधर मुडकर भी नही देखता था।

अप्पु अपने पिता को 'वह'-'वह' ही कहता। उसके पिता ने वयनाट की अपनी पुरानी पत्नी को छोडकर अब पापड बनानेवाली एक विधवा चेट्टिच्चि से शादी की है।

अप्पु श्रीधरन को दक्षिणी अहाते मे ले गया। अप्पु की माँ का दाहकर्म उस अहाते म ही सम्पन्न हुआ था। नारायणी को वही अमरूद के पेड के पीछे ही जला दिया था। पेड पर स्वर्ण वर्ण के फल लटक रहे थे।

श्रीधरन ने नारायणी की लाश जलाने की जगह पर सहानुभूति से दृष्टि डाली। मिट्टी के उम ढेर मे कुछ फूल खिले थे। लगा कि फूलो के बहाने नारायणी ही मुस्करा रही है।

"श्रीधरन को अमरूद चाहिए?" अप्पु ने पूछा।

श्रीधरन ने 'नही' के अर्थ मे सिर हिलाया। श्रीधरन को लगा कि उस मिट्टी के ढेर से नारायणी की वे मीठी बाते गूँज रही है। "अप्पु भैया, हमारे मेहमान को अमरूद तोडकर दे दो।"

"अच्छा तो दो-तीन तोड दो। चख ही लू जरा।" श्रीधरन ने उस मिट्टी के ढेर से नजरे हटाये बिना कहा।

अप्पु ज्यो ही पेड पर चढकर फल तोडने लगा तो श्रीधरन ने पूछा, ये सब पककर नीचे गिर जाते थे क्या?"

"नही" अप्पु ने कहा। उन्हे तोडकर टोकरी मे भरकर बाजार मे ले जाकर बेचता था। पिछले महीने इस पेड के अमरूद बेचकर चार रुपये मिले थे। अब एक भी अमरूद चमगादड नही छूती। नारायणी नीचे पहरा देकर उन्हे भगा देती होगी।"

यह सुनते ही श्रीधरन की देह कँपकँपी से भर उठी।

धोती मे कई अमरूद लेकर अप्पु नीचे उतर आया।

इन फलो को खाते हुए श्रीधरन ने उस मिट्टी के ढेर की ओर निगाहे घुमायी। शाम की धूप बाड के बाँसो से नीचे की मिट्टी के ढेर मे छायादार तस्वीरे खीच रही थी। लगा कि काले घुंघराले बालो और सोने के रग के चेहर के साथ गरदन क नीचे चटाई से ढकी नारायणी सामने लेटी है।

अगले दिन श्रीधरन जब शहर की तरफ रवाना हुआ, तब उसके साथ अप्पु को भी सहायता के लिए भेज दिया गया। अप्पु के साथ चलने से श्रीधरन को बेहद खुशी हुई क्योकि वह किस्से कहते हुए चलता है।

जब अप्पु ने सलाह दी कि वे दोनो 'बेलालूर खेत' के रास्ते से पूतप्परपु पर चढकर पंदल चले तो श्रीधरन न कुछ भी जवाब नही दिया। उसके अन्दर भय समाया हुआ था।

पूतप्परपु के चिरक्करा से यक्षी को देखने की दास्तान श्रीधरन ने किसी से भी—अप्पु से भी—नही कही थी। चिरक्करा से सैर करने की बात की याद आने पर उसको शक हुआ कि ज्वर और बुद्धि-भ्रम पुन उस पर सवार हो जाएगा। अप्पु उस्ताद वासु की तरह नही है। अप्पु भूत-प्रेतो और यक्षी से डरता है। चिरक्करा की यक्षी अगर वहाँ प्रत्यक्ष हो जाये तो अप्पु बेहोश होकर वही गिर पडे। फिर वह अकेले क्या करेगा? तब दोपहर का वक्त नही था—यही बडा सौभाग्य समझो।

बेलालूर के दो खेतो को पार करन पर अप्पु ने सीधे रास्ते को छोडकर पग-डडियो म मुडते हुए कहा, "हम कणियार टीले पर चढकर पूतप्परपु की पूर्व दिशा की तरफ चलें।"

सुनकर श्रीधरन आश्वस्त हुआ। लेकिन उसन उसे जाहिर नही किया। अप्पु चिरक्करा के मामूली रास्त को छोडकर इस नये मार्ग की तरफ क्यो जाना चाहता है, इसके कारण का भी श्रीधरन ने अन्दाज लगाया। चिरक्करा की यक्षी से भयभीत होकर ही वह इस नयी राह से जाना चाहता था।

बडी देर तक खेत की तरफ चलकर कणियार टीले को पार करते हुए दो तीन पगडडियो के गड्ढो और एक सँकरी सडक को पार कर दोनो पूतप्परपु के उत्तर-पूर्वी ढाल पर पहुँच गये। वहाँ बडी दीमक की नाई इधर-उधर चार-पाँच झोप डियाँ थी। अप्पु ने कहा कि ये कारक्कुन्नु मे दूर से आकर बसे हरिजन हैं। श्रीधरन ने बाँस की झाडियो को देखा। हरिजन बस्ती की सभी गन्दगी वहाँ मौजूद थी।

श्रीधरन की दृष्टि उस झोपडी के बरामदे मे तीर की तरह चुभ गयी। सारी देह मे कँपकँपी छूट गयी।

'वह' तो उधर ही बैठी है।

चाँदी मे ढला हुआ चेहरा। दोनो कन्धो से छाती पर लटकनेवाली केशराशि!

झुकी हुई निगाहे ! चिरक्करा का वही सत्व ! बैठने की वही अदा ! लेकिन आज पूरा रूप दिखाई दिया। काली-सी एक धोती पहने थी। सोने के रग-जैसे पैर साफ दिखाई दे रहे थे।

झोपडी के बरामदे मे स्वर्ण विग्रह से आँखे हटाये बिना सकपका कर खडे श्रीधरन को देखकर हँसते हुए अप्पु ने कहा, "कारक्कुन्नु के गोरो तथा एक हरिजन स्त्री से इसका जन्म हुआ था।"

"अरे, बच्चू, कांजी पी ले।" यक्षी फुसफुसायी।

(आँगन मे खेलनेवाले कुट्टिच्चात्तन-जैसे एक छोकरे से ही वह कह रही थी। आँखो और चेहरे को हटाये बिना ही उसी 'पोज' मे बैठी वह बाँस के टुकडो से टोकरी बना रही थी।)

"इस तरह की एक और युवती यहाँ थी। पिछले साल मद्रास का एक हरिजन युवक उसको ब्याह कर ले गया।" पीछे से अप्पु ने बताया।

'उसने' जरा चेहरा ऊपर उठाकर श्रीधरन की तरफ देखा। श्रीधरन बेहद डर गया। वह कानी थी। सफेद पत्थर-सी एक आँख ! कैसी पैशाचिक दृष्टि है उसकी !

तभी आँगन से काले-कलूटे उस छोकरे ने कुछ बकते हुए दरवाजे की तरफ इशारा किया। श्रीधरन ने उधर दरवाजे की तरफ देखा। एक बडी गाय की फूली हुई लाश के पैरो को एक मजबूत बाँस मे बाँधकर कन्धे पर ढोते हुए दो हरिजन बस्ती मे आ रहे थे।

"इन लोगो के लिए आज बडा त्योहार है।" अप्पु ने नफरत के साथ कहा। "गायो की लाश को खानेवाले शैतान ! ' अप्पु ने घृणा भाव से थूक दिया।

स्मरण करते ही श्रीधरन को भी उबकाई आ गयी। दोनो तेज चलने लगे।

हरिजन बस्ती के कोने की मेड पर चढकर दोनो पूतप्परपु के ऊपर पहुँच गये। चिरक्करा के नाले, ऊँचे ताड वृक्ष, गोरो की गोली मारने की दीवारे कुछ दूर पर दिखाई देती थी।

"श्रीधरन, चुप क्यो हो गया ?" पीछे से अप्पु ने पूछा।

चिरक्करा के ताड के जगलो के एक छोटे घर के बरामदे मे बैठकर सिर झुकानेवाली यक्षी और झोपडी के बरामदे मे टोकरी बनाने और गाय की लाश खानेवाली उस हरिजन युवती के बारे मे श्रीधरन सोच रहा था। पूतप्परपु मे गोरो के बीजो से जन्मे कई पौधो के फूलो की कालीन उसकी स्मृति मे प्रत्यक्ष हो गयी।

अपने मन मे नाचनेवाले अद्भुत दृश्यो को कैसे अप्पु को समझाऊँ ? चुप्पी छोडकर कुछ न कुछ बोलने के ख्याल से श्रीधरन ने अप्पु से पूछा, "अरे, हम चिरक्करा का रास्ता छोडकर इस टढे मार्ग से क्यो आये ?"

अप्पु ने कुछ निगलने की मुद्रा मे आसमान की तरफ ताककर स्वगत की तरह कहा, "चिरक्करा के ताड के जगल उतनी अच्छी जगह नही हैं ।"

खण्ड : तीन

1 पख और सोना, 2 कुआँ और कैलेण्डर, 3 बुरे समाचार, 4 'कोरमीना', 5 नया दुश्मन, 6 लगान और कविता, 7 जयमोहन, 8 मदनोत्सव, 9 वापसी, 10 इब्राहीम कथावाचक, 11 चबूतरे का सन्यासी, 12 अण्टकटाह, 13 पाँची, 14 वापसी—एक और दफा, 15 कडुआ, खट्टा और मीठा, 16 काँग्रेस वालंटियर कुजप्पु, 17 केलचेरी का साँप, 18 दो नाटक, 19 अम्मुकुट्टि, 20 पोन्नम्मा 21. काला और गोरा, 22 रथ-यात्रा, 23 नया प्रेमलेख, 24 सौभाग्यशाली, 25 नशे मे, 26 वनवास, 27 ज़माने का व्यग्य, 28 परलोक मे, 29 समस्याएँ, 30 पिताजी का निधन, 31 अतिराणिप्पाट, अलविदा !

1 पख और सोना

"कैलासेशन पार्वतिये प्पाणिग्रहण चेटयन्नाकिल
कैलासायिप्पोय नमुक्कु कण्णीरोप्पुवान "

श्रीधरन ने इन पक्तियो को दुबारा पढा। सभी देव ब्रह्मा के पास जाकर अपन दु ख के निपटारे का मार्ग पूछ रहे थे। उन्होने निर्देश दिया कि शिवजी यदि पार्वती का वरण कर ले तो सारी झझटो से छुटकारा मिल जायेगा। कविता का नाम पहले ही लिख डाला था 'मदन-विभूति'।

लगा कि उल्लूर की काव्य-शैली का यूक्लिप्टिस तेल ज रा इस 'कैलेस' (टवल) मे लिपट गया है। (उल्लूर का एक काव्य सग्रह कालेज की पाठ्य-पुस्तको मे है।) कोई परवाह नही। अगली पक्ति लिखने लगा।

"दुष्टासुर विक्रियकल विस्तरिच्चु केट्टनर
अष्ट दृष्टि महादेवन "

तभी पीछे आइने मे दो आँखे इस कविता की नोटबुक के करीब आ रही थी। श्रीधरन आँखे मूँदकर 'अष्ट दृष्टि महादेव' के शेष अश की रचना करने की उतावली मे था।

कृष्णन मास्टर गृहपाठ पढनेवाले अपन बेटे को देखने चुपचाप ऊपर की सीढियाँ चढकर बरामदे मे आये थे।

ब्रह्मा के बदले पिताजी के प्रत्यक्ष होने पर श्रीधरन सकपकाया। घबराकर उसने अपनी नोटबुक मेज़ पर छिपाने की व्यर्थ कोशिश की।

"अरे, तू गूंगे के गुड खाने-जैसा क्या कर रहा है?" कृष्णन मास्टर ने नोटबुक उठाकर उसके पन्ने उलटे। पूरी कापी मे कविताएँ लिखी हुई थी।

"कॉलेज के पाठो को न पढकर क्या यही काम करता रहता है?" कृष्णन मास्टर ने अपनी नाराजगी ज़ाहिर करते हुए पूछा। "क्या केकडा गोविन्दन बनने की इच्छा है?"

जली-कटी बातें वह बर्दाश्त कर सकता है। मार भी सह लेता, लेकिन पिताजी का केकडा गोविन्दन से उसकी तुलना करना उसे असहनीय लगा।

श्रीधरन की कविता की कापी जब्त करने के बाद मास्टर ने पूछा, "तू अपना

सारा होमवर्क कर चुका ?''

श्रीधरन ने धीमी आवाज़ मे 'हाँ' कहा।

"ज़रा अर्थमेटिक होमवर्क तो दिखा!"

श्रीधरन चुप रहा।

"क्यो, चुप रह गया ? ज़रा अपना गणित तो दिखा!"

"गणित नही किया।" श्रीधरन सिर झुकाते हुए बोला।

"क्यो नही किया ? तूने बताया कि सारा होमवर्क कर लिया है। क्या यह झूठ नही है ?"

'झूठ नही है। मैथमेटिक्स टैक्स्ट न होने के कारण गणित का कार्य नही कर सका था।"

श्रीधरन ने जो कहा वह अप्रिय सत्य है। मैथमेटिक्स टैक्स्ट नही खरीदा है। पिताजी को उसे खरीद देने की बात वह जान-बूझकर ही टालता रहा है।

श्रीधरन के दो बडे दुश्मनो म एक है मैथमेटिक्स। (दूसरी आसमान की चील है।) पुस्तक तो हाथ मे नही है, इसलिए गणित का हिसाब करने की जरूरत भी नही। उसे मालूम है कि यह न्यायसगत आत्म-वचना है। लेकिन अपने पक्ष मे भी कुछ दलीले पेश करनी है। पिताजी की हठ के कारण ही कॉलिज मे फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैथमटिक्स ग्रुप चुन लिया था। इनमे सिर्फ केमिस्ट्री मे ही कुछ दिलचस्पी थी। कॉलिज के गणित-विभाग के प्राध्यापक रगनाथ अय्यगर की क्लास मे 'टान्त्रण्ट', 'कोट्टात्रण्टु' का उच्चारण करते समय श्रीधरन को ऐसा लगता था जैसे किसी दुष्ट मान्त्रिक के सामने खडा हो।

कृष्णन मास्टर थोडी देर दाढी सहलाते हुए सोचते रहे। फिर सिर हिलाते हुए कहा, "ऐसी बात है तो तू मेरे साथ आ। आज ही कुनिक्कोरन की दुकान से पुस्तक खरीद दूंगा।"

कृष्णन मास्टर को शहर जाना है। हाषीम मुशी मे कलेक्टर साहब को एक अर्जी लिखानी है।

मास्टर और श्रीधरन के शहर रवाना होते समय श्रीधरन की माँ हाथ मे एक पुरान कपडे की गाँठ लेकर आयी। कृष्णन मास्टर ने हँसते हुए गाँठ ले ली और अपने कोट के अन्दर की जेब म डाल ली।

"जैसी बतायी, वैसी ही चूडी चाहिए।" माँ ने श्रीधरन के पिताजी को स्मरण कराया।

श्रीधरन को बात पकड मे आ गयी। उस कपडे की गाँठ मे माँ के सोने के पुराने आभूषण थे। पुराने फैशन की जगह नये फैशन के आभूषण बनवाने है। माँ ने कई बार पिताजी को इस बात की याद दिलायी थी। पर बाबूजी शहर जाकर अब तक वह काम नही कर सके थे।

श्रीधरन की किताब, हाषीम मुशी से पिट्टीशन, कुटीमालु अम्मा की चूडियाँ—इन तीन कार्यक्रमो को मन मे रखकर कृष्णन मास्टर श्रीधरन को साथ लेकर चले थे।

'के के बुक डिपो' गली का प्रधान पुस्तक-विक्रेता है।

के के बुक डिपो का व्यवस्थापक कुजिक्कोरण का पुराना इतिहास एक बार बाबूजी ने बताया था, उसकी याद श्रीधरन के मन मे ताजा है।

बीस साल पहले इलजिपोयिल की एक नौकरानी मान्नु की एक मात्र सन्तान था कुजिक्कोरन। मान्नु एक लाचार विधवा थी। इलजिप्पोयिल की गाये चराकर, रसोईघर का खा पीकर ही कुजिक्कोरन पला था। काला अक्षर भैंस बराबर होने पर भी कुजिक्कोरन अकलमद था। जब उसकी उम्र बारह वर्ष की थी, वह नौकरी की तलाश कर शहर म जाकर मारा-मारा फिरने लगा। शहर का एक बुक डिपो एक कोगिणी का था। बुक डिपो के निकट एक प्रेस भी था। कोगिणी की रूलिग मशीन म उसको नौकरी मिली। दिन मे दो आने पारिश्रमिक मिलता था।

कुजिक्कोरन कोगिणी की सस्था मे काम करने लगा। उसको रूलिग पहिये से बाइण्डिग सेक्शन मे तरक्की मिली। फिर वहाँ से प्रेस मे भी। इस तरह पाँच-छह सालो तक वहाँ के सभी कार्यों मे उसे अच्छा प्रशिक्षण मिला। इतना ही नही, वह कोगिणी का वफादार सेवक भी बन गया था।

कुछ अर्से बाद गली के पीछे की एक पगडडी के कोनेवाले एक खाली कमरे म कोमट्टि नाम का एक आदमी आया। उसने कुजिक्कोरन को प्रभावित कर लिया।

कोगिणी की पुस्तक की दूकान से बाउण्ड लैजर और पाठ्य-पुस्तके कोमट्टि के यहाँ गुप्त रूप मे पहुँचने लगी। उसके बाद रूलिग, बाइण्डिग मशीनो का प्रयाण भी शुरू हो गया। इस तरह एक साल के अदर कोमट्टि का कमरा भर गया।

गली के बीच एक नयी किताब की दूकान प्रकट हुई।

व्यापार की तबाही के बाद बेचारा कोगिणी कही चला गया।

कोमट्टि की दूकान शहर की प्रधान दूकान मे तबदील हो गयी।

इस तरह तीन-चार बरस बीत गये। धीरे-धीरे कोमट्टि को वहाँ उचित स्थान नही मिला। लेकिन बाहर के किसी व्यक्ति को मालूम नही हुआ कि वहाँ क्या घटित हुआ था? आखिर कुछ पैसे देकर कोमिट्ट को बाहर निकाल दिया गया। वहाँ 'के के बुक डिपो' का बोर्ड लटकाया गया। इस सस्था को कुजिक्कोरन ने अपनाया।

श्रीधरन के पिताजी ने सक्षेप मे यह इतिहास इस तरह बताया "कोमट्टि और कुजिक्कोरन एक साथ मिलकर कोगिणी को निगल गये।" फिर कुजिक्कोरन

ने कोमट्टि को निगल लिया। अब कुजिक्कोरन को निगलने के लिए कोई और चतुर कहीं छिपा होगा। जब कृष्णन मास्टर और श्रीधरन के के बुक डिपो मे चढे, तब मालिक कुजिक्कोरन नुकीली पेन्सिल को अपने कान से हटाकर नीचे रख बडे अदब से हँस पडा।

कुजिक्कोरन एक हट्टा-कट्टा और काला-कलूटा मध्य वयस्क आदमी है। उसका दाँत निपोरना ऐसा लगता है कि काली हाँडी के बीच से नारियल का एक टुकडा बाहर निकल आया हो।

मैथमेटिक्स टेक्स्ट बुक उसने श्रीधरन के हाथ म थमा दी। दाम बारह आने था। गिनकर लेने के बाद उसने उसे दिया। फिर कुछ सोचने लगा। (शायद पुराने जमाने मे इलजिपोयिल मे खाये हुए भूसे की याद आ गयी होगी।) फिर दो आने लौटा दिये।

नयी छपी हुई पुस्तक हाथ मे आने पर उसे खोलकर सूँघने की आदत कालेज मे पहुँचने पर भी श्रीधरन ने नही छोडी थी। सडक पर पहुँचते ही पुस्तक की गाँठ खोलकर उसने आँखे मूँदकर उसे सूँघा। नये कागज और छपाई की स्याही की गध लेकर तृप्ति हो गयी। फिर उसने यहाँ-वहाँ पृष्ठो को उलटा। उसमे छपे अको, चिह्नो, और कुदालो को देखकर—इन सब को रटने की चिन्ता से श्रीधरन को उलटी-सी महसूस हुई।

अदालत के नजदीक गली के कोने म पुरानी दूकान के एक कमरे मे एक बोर्ड दिखायी दिया—"यहाँ अर्जियाँ तैयार की जाती है।"

हाषीम मुशी के दफ्तर का कमरा था।

हाषीम मुशी शहर-भर म विख्यात मान्य व्यक्ति है। उनको पुरानी नौकरी के इतिहास ने ही इतना मशहूर बना दिया था।

कई वर्षो पहले हाषीम अदालत का नौकर था। वह अपने काम मे नेक और ईमानदार था। लेकिन वह अपने अफसरो से भी, चाहे वह गोरा कलक्टर ही क्यो न हो, तब बहस करने लगता जब उसे लगता कि उसकी बातो म सच्चाई नही है। उसके कई दोस्तो ने सलाह दी कि इस बर्ताव से नौकरी की तरक्की मे ही नही, अपने अस्तित्व के लिए भी खतरा पैदा हो जाएगा। हाषिम ने बडे हौसले से मित्रो को जवाब दिया था—मै जब तक अपना काम नेकी से करता हूँ तब तक मुझे अधिकारियो से डरने की जरूरत ही क्या है?

ऊँचे अफसर ताक मे बैठे थे।

एक बार हाषीम द्वारा खजाने मे अदा की गयी रकम मे एक पैसे की कमी दिखाई दी। सिर्फ एक पैसे की ही कमी थी। हिसाब म सौ रुपये की कमी हो, या एक पैसे की वह अपहरण ही समझा जाएगा।

हाषीम के विरुद्ध जाँच करने के लिए उसे नौकरी से मुअत्तल कर दिया गया।

हाषीम बहस करने को तैयार नही हुआ। उसने गलती कबूल की और लिख दिया कि माफ़ी माँगने की मशा नही है।

इस तरह हाषीम को नौकरी से हाथ धोना पडा।

अगले दिन ही हाषीम ने अदालत के निकट गली का एक मकान किराये पर लिया। वहाँ एक बोर्ड लटका दिया। यो वह अर्जी लिखनेवाला हाषीम मुशी बन गया।

सरकारी नौकर रहते उसको जो तनख्वाह मिलती थी, उससे दुगुनी आय अब उसको प्रतिमास होती थी। हाषीम मुशी द्वारा अंग्रेजी मे तैयार की गई अर्जियो को पढकर अँग्रेज कलक्टर भी ताज्जुब मे पड गया था।

अच्छी शैली मे वह सही बाते ही लिखता। अर्जी मे एक भी ऐसा शब्द नही होता जो फालतू हो।

अच्छी शैली की अँग्रेजी कृष्णन मास्टर भी लिख सकता है। लेकिन अदालत मे कोई सम्बन्ध न होने के कारण अदालत के सामने रखी जानेवाली अर्जी का ढग और प्रतिपादन-रीति उसे मालूम नही थी। इसलिए कलक्टर साहब की अर्जी तैयार करने के लिए हाषीम मुशी की सहायता लेनी पडी थी।

सँकरी सीढियाँ चढकर कृष्णन मास्टर और श्रीधरन हाषीम मुशी के मकान मे पहुँच गये। मुशी सामने खडे एक व्यक्ति की अर्जी तैयार कर रहा था। उसने आगन्तुको की तरफ पहले ध्यान नही दिया। वह लिखने मे इतना तल्लीन था। फिर कुछ सोच-विचारकर सिर उठाते समय कृष्णन मास्टर को देखा। उसने सिर हिलाकर अभिवादन करने के बाद बैठने के लिए इशारा किया। फिर अपना काम जरा गौरवपूर्ण ढग से जारी रखा।

कृष्णन मास्टर और श्रीधरन एक बेच पर बैठ गये।

(सिर्फ एक पैसे की वजह मे सरकारी नौकरी मे हाथ धोनेवाले उस विशिष्ट व्यक्ति को श्रीधरन ने एक ऐतिहासिक पुरुष की तरह गौर से देखा। छोटा-सा इन्सान। चेहरे पर पकी हुई नारगी का रग। लम्बी नाक। सफेद शर्ट के ऊपर छाती पर लटकती सफेद दाढ़ी। सिर पर नये ताँबे का कटोरा लिटाने की तरह लगने-वाला गजापन।

भारतीय इतिहास की किताब मे देखे एक चित्र का स्मरण आ गया। वह चित्र औरगजेब का था—या अबुल फजल का ?

चेहरे और दाढी को जरा हिलाकर बडे गौरव के साथ जल्दबाजी मे ही मुशी लिख रहा था। कलम या स्टीलपेन से नही, बल्कि चील के पख को नुकीला बनाकर ही लिख रहा था। कभी-कभी पख को दवात मे बडे ध्यान से डुबाता।

मुशी ने अर्जी तैयार की। फिर उसे देखे बिना ही उस व्यक्ति के हाथ मे थमा दी। उसने जो मेहनताना दिया उसे देखे बगैर ही मेज पर डाल दिया। फिर जरा

दाढी हिलाते हुए कृष्णन मास्टर को बुलाया।

आदरणीय कलक्टर साहब के सामने सबमिट करने के लिए एक डबल पिटिशन की सामग्री और उसकी पृष्ठभूमि कृष्णन मास्टर ने मुशी को बता दी। मुशी आँखें मूंदकर बैठ गया। कभी-कभी दाढी हिलाते हुए ध्यान देता। मास्टर की सारी बाते कहने के पहले ही मुशी एक कागज लेकर लिखने लगा। हाषीम मुशी को अर्जी तैयार करने के बाद दूसरे कागज पर नकल करने की जरूरत नही है। पहला आवेदन ही काफी है। चाहे आवेदन-पत्र हो, चाहे शिकायती पत्र हो, मुशी मुअ-क्किल के कहते वक्त ही उसकी जरूरी बाते अच्छी अँग्रेजी मे लिखने लगता। फिर उसमे एक फुलस्टाप की भी जरूरत नही होती।

स्याही तो मुशी ही तैयार करता था। वह ब्लाटिंग पेपर का इस्तेमाल नही करता था।

मुशी ने कलक्टर का पिटिशन दस मिनट के अन्दर लिख डाला और उसे कृष्णन मास्टर के हाथ मे सौप दिया।

श्रीधरन ने उस अर्जी पर निगाह डाली। कितनी सुन्दर लिखावट है! हौले से अपने पिताजी से कहा, "बाबूजी, लगता है कि मुशी को किसी जिन की करामात हासिल है। क्या कोई इनसान इस तरह लिख सकता है?"

यह सुनकर कृष्णन मास्टर हँस पडे।

अर्जी लिखने की फीस अदा कर कृष्णन मास्टर ने मुशी से बिदा ली तो मुशी ने श्रीधरन को वात्सल्य भाव मे देखकर पूछ लिया, "क्या, बेटा है?"

"हाँ, मेरा लडका है।" कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन को मुशी के सामने खडा कर दिया।

"क्या नाम है?"

"श्रीधरन।" बडे अदब से ही श्रीधरन ने जवाब दिया।

"किस दर्जे मे पढते हो?"

उसके लिए कृष्णन मास्टर ने ही शान से जवाब दिया—

"इन्टरमिडियेट मे —राजा कॉलेज मे।"

"होनहार युवक।" मुशी ने वात्सल्य के साथ श्रीधरन की पीठ पर थपकियाँ दी।

तभी कृष्णन मास्टर ने हँसते हुए कहा, "आपकी हैण्डराइटिंग देखकर इसको बडा अचरज हुआ है। इसकी शका है कि मुशी को जिन की करामात हासिल है।"

यह सुनकर मुशी हँस पडा।

श्रीधरन को भरोसा नही था कि इतना गम्भीर व्यक्ति यो हँसने लगेगा।

मुशी ने श्रीधरन के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा, "अभ्यास से हैण्डराइटिंग ठीक कर सकते हो। कलम से कभी नही लिखना चाहिए। स्टीलपेन का इस्तेमाल

नही करना चाहिए। लिखने के लिए पख ही सबसे बेहतर है । 'पच्ची' का पख' "

(मुशी की अँग्रेजी अच्छी है । लिखावट भी बेहतर है । लेकिन मलयालम का उच्चारण बहुत बुरा है ।)

"समझ गये ?" मुशी ने श्रीधरन की ठोडी को स्नेहपूर्वक छुआ ।

श्रीधरन ने सिर हिलाया ।

मुशी ने उपदेश जारी रखा—'हर रोज आधे घण्टे तक कुछ न कुछ नकल करनी चाहिए। स्लोली एण्ड केयरफुली ' '

श्रीधरन ने मुशी के उपदेशो को ध्यान से सुना । इतना ही नही, उसने लिखावट मे हाषीम मुशी को अपना उस्ताद मान लिया था।

मुशी ने अपने कमरे के छोटे शेल्फ मे हाथ डाला । (उस शेल्फ मे एक शब्द-कोश और तीन-चार उर्दू मासिक रखे थे । उसके नजदीक कागज की एक छोटी पेटी भी थी ।)

मुशी ने कागज का बाक्स खोलकर उसमे से एक चीज निकालकर श्रीधरन की तरफ बढ़ाकर कहा, "यह श्रीधरन के लिए मेरा पुरस्कार है । इससे लिखकर लिखावट को सुधारना चाहिए ।"

मुशी की भेंट—पक्षी के पख को श्रीधरन ने बडे अदब से स्वीकार किया । शुक्रिया अदा करने के बाद उसने उसे जेब मे डाल लिया ।

मुशी के कमरे से बाहर आकर सीढी उतरते वक्त कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन से कहा, "बेचारा मुशी ! मुशी के कोई सन्तान नही है। इसीसे लडको के प्रति इतना वात्सल्य दिखाता है ।"

गली की दक्षिण दिशा मे गहनो की एक बडी दूकान है । वहाँ एक चटाई बिछाकर एक कोने मे एक छोटे सन्दूक के पीछे एक छोटा-सा इन्सान गद्दी पर एक तकिया रखकर पालथी मारकर बैठा है। उस अर्धनग्न दाढ़ीवाले ने चश्मा पहन रखा था।

वह आत्मानन्द स्वामी के गहनो की दूकान है ।

आत्मानन्द का नाम लेने पर ज्यादातर लोगो को तुरन्त मालूम नही होगा। 'सुनार मजिस्ट्रेट' ही कहना चाहिए ।

सरकारी सेवा से बरखास्त किया गया व्यक्ति था वह । हाषीम मुशी की तरह अनजाने मे हुई एक छोटी से गलती के कारण गोपालन मजिस्ट्रेट को नौकरी से बरखास्त नही किया गया था । विचाराधीन एक क्रिमिनल मुकदमे के बीच अपनी हिरासत मे रखे हुए सोने के आभूषणो मे एक-दो को मजिस्ट्रेट ने हडप लिया था। इसका सही-सही प्रमाण मिलने के बाद ही नौकरी से हाथ धोना पडा था । कारा-वास का दण्ड तो भुगतना था, लेकिन उससे किसी तरह गला छूट गया था ।

मजिस्ट्रेट की नौकरी हाथ से निकल जाने पर गोपालन जरा भी विचलित

नही हुआ। वह एकाएक भक्ति-मार्ग मे मुड गया। कमीज़ उतारकर गर्दन मे रुद्राक्ष-माला लटका ली। बाल और दाढी फैलाकर एक नया नाम आत्मानन्द स्वीकार कर लिया। फिर वह उत्तर भारत मे तीर्थयात्रा करने निकला। काशी से प्रयाग पहुँच गया। 'त्रिवेणी' मे डुबकी लगाने से पहले हमेशा की तरह पण्डे ने तीर्थयात्री से कहा, "जिन्दगी मे सबसे प्रिय एक वस्तु को त्याग देने की घोषणा करनी है, तभी तीर्थाटन की फलप्राप्ति होगी।" गोपालन ने थोडी देर तक सोचा। फिर पत्नी को छोड देने की बात की घोषणा की।

तीर्थयात्रा की परिसमाप्ति कर अपनी गली मे वापस आने के बाद गोपालन को लगा कि अपने पुश्तैनी पेशे को छोड देना धर्म के खिलाफ है। यह सोचकर गली के दक्षिण कोने मे उसने एक आभूषण की दूकान खोली। कुछ कवित्व भी उसकी आत्मा मे बस गया था। दूकान के पीछे के विस्तृत कमरे मे तीन चार सुनार भूसे की आग, फूंकनी, हथौडा और चिमटा लिए फूँककर, गलाकर, पीट-कर, चिकनाई का काम करते, उस समय आत्मानद अपने बरामदे के कोने की सेज मे पालथी मारकर आध्यात्मिक जगल की सृष्टि करता। अनुष्टुप छन्द मे एक सौ एक श्लोको मे 'मोक्ष गवाक्ष' नामक एक लघु काव्य अपने ही खर्च से छपाकर सोने के आभूषणो को खरीदने के लिए आनेवाले ग्राहको को वह मुफ्त मे एक-एक प्रति का वितरण करता था।

फिर उसकी आत्मा से अनहद नाद सुनाई पडा, 'पठित शिक्षा को नष्ट नही करना चाहिए।' इसलिए उसने बैठने की अपनी जगह के नजदीक बरामदे मे ही 'यहाँ अँग्रेजी मे अर्जी लिखी जाएगी' का बोर्ड अँग्रेजी और मलयालम मे लिखकर लटका दिया। फिर अर्जी भी लिखने लगा।

कृष्णन मास्टर और श्रीधरन के वहाँ पहुँचने पर मालिक आत्मानद स्वामी कुछ बालियो को एक-एक करके कसौटी पर कसकर परख रहा था।

गहनो का मालिक देहाती बुजुर्ग, जिसने अपनी चोटी बाँध रखी थी, नजदीक ही अपनी गर्दन फैलाकर खडा था।

सुनार मजिस्ट्रेट कृष्णन मास्टर से पहले ही परिचित था। आत्मानन्द ने चश्मे के भीतर से कृष्णन मास्टर की तरफ निगाह घुमाई। उसने मुस्काते हुए बरामदे मे उँगली से इशारा कर बैठने को कहा। 'अभी आया' कहकर फिर बालियो को परखने लगा।

श्रीधरन बरामदे के कोने म ही खडा रहा। प्रोप्राइटर की पेटी के ऊपर अपने आप हिलनेवाले पीतल के तराजू और बाट, गुंजा आदि को बडी उत्सुकता से देखा। फिर आत्मानन्द स्वामी की तरफ नजरे डाली। बालो से ढके स्वामी के कान मुर्गी के बच्चे के पखो की तरह दिखाई दे रहे थे। लम्बी दाढी का छोर छाती से ही बाँध लिया था।

तीस बालियो की घण्टियो की जाँच करने के लिए पन्द्रह मिनट का समय लिया गया। फिर सुनार मजिस्ट्रेट ने फैसला सुनाया, "पुराना सोना है, खरा तो नही।"

ग्राहक बुजुर्ग ने सिर झुकाकर फैसला स्वीकार किया। फिर वजन का पैसा चुका देने के बाद ग्राहक को विदा कर अन्त म कृष्णन मास्टर का मुकदमा स्वीकार किया। कगनो को आग म डालकर निकालने मे थोडा समय लग गया।

मास्टर से फैशनेबुल चूडियो का नमूना पसन्द कराने के बाद गहना बनाने के लिए सोने को पीछे के कमरे मे भेज दिया गया।

"तीन दिन मे तैयार होगा।" आत्मानन्द स्वामी ने अपनी दाढी सहलाते हुए कहा। फिर पेटी की दराज खोलकर एक किताब 'मोक्ष गवाक्ष' उठाकर कृष्णन मास्टर को भेट की।

2 कुआँ और कैलेण्डर

अगले दिन शनिवार था।

हाषीम मुशी ने वात्सल्य के साथ श्रीधरन को जो पछी का पख भेट किया था, वह उसकी जाँच कर रहा था। हाषीम मुशी की लिखावट इतनी आकर्षक होने का कारण उसकी खास स्याही होगी। स्याही खुद ही बनानी होगी। थोडी देर बाद श्रीधरन को शरम महसूस हुई, कि कॉलेज मे पहुँचने के बाद अब वह लिखावट सुधारने की कोशिश कर रहा है!

मेरी लिखावट उतनी बुरी तो नही है।

पख को हाथ से सहलाया। कितनी मृदुता है! उसकी नोक से हथेली छुई। कितनी चुभन है! कितनी सावधानी से उसके छोर को ठीक कर दिया गया है! अचानक उसके दिमाग मे यह विचार उठा कि वह चील का पख है। अपनी दुश्मन आसमान की चील का पख! शत्रु को हाथ से पकड लेने की अनुभूति हुई।

उसके पख से ही उसका काम तमाम कर देने वाली एक कविता लिखनी चाहिए। शुरूआत इसी कविता से ही हो जाय। 'गरुड गर्वभग' नाम से पुराण की एक कथा याद आयी। अपनी इस कविता को 'गरुड वध' का नाम देना चाहिए। तभी स्याही की बात का स्मरण आया। हर्रे की स्याही बनाने की विद्या पिताजी ने बतायी थी। नई सडक के पूर्वी कोने पर स्थित धोबी कुन्नुण्णी की औषधि की दूकान से हर्रे खरीदूंगा। स्याही के काढे मे मिलाने के लिए तूतिया भी वहाँ से ही मिलेगी।

इन्स्ट्रुमेट बॉक्स खोलकर रेजगारी गिनकर देखी। कुल मिलाकर पौने तीन आने थे। काफी होगे।

यो श्रीधरन नई सडक की तरफ चलने लगा।

धोबी कुन्नुण्णी की दूकान के निकट पहुँचने पर उसने लोगो को भागते हुए देखा। वे नजदीक के भैंसोवाले की गली की तरफ ही भाग रहे थे। श्रीधरन ने भी उत्सुकता से उनका साथ नही छोडा।

उस गली में एक बडा कुआँ था। उसके चारो तरफ खडे होकर लोग कुएँ मे झाँक रहे थे।

कान्तम्मा कुएँ मे कूद पडी थी। वह अहीर गोविन्दन की साली है।

कान्तम्मा! लगा कि श्रीधरन के गाल पर किसी ने झापड रसीद कर दिया है।

श्रीधरन ने कई बार कान्तम्मा को देखा था। सोने के रग की लम्बी-दुबली लडकी। हाथ और ललाट पर गुदना गुदाए वह तेलुगु-भाषी युवती लाल साडी से अपनी छाती और कन्धे को ढककर दही-भरी हाँडी को बेंत की टोकरी मे सिर पर रखकर कभी-कभी तिरछी आँखो से राहगीरो पर कटाक्ष करती मटकती चलती हुई कई बार देखी थी। वही कान्तम्मा आज कुएँ मे है।

भीड मे अहीर गोविन्दन दिखाई नही पडा। गोविन्दन की पत्नी छाती पीटकर गला फाडकर रो रही थी।

दर्शक घबराहट से लाचार होकर खडे थे। किसी को भी कुएँ मे उतरने का हौसला नही हुआ। अठारह गज की गहराई है। पौने भाग मे पानी है। पुरानेपन के कारण कुएँ की सीढियाँ तहस-नहस हो गई थी।

डूबकर मरनेवाले इन्सान को पानी की गहराई मे खीच लाने के लिए बडी दक्षता, शक्ति और साहस की जरूरत है। नही तो कुएँ मे उतरनेवाले की भी दुर्दशा हो जाती है।

"आलि मुस्लिम को बुलाओ! आलि मुस्लिम को बुलाओ" किसी ने ऊँची आवाज़ मे कहा।

(कोई छह फुट लम्बा, हट्ठा-कट्ठा काला-कलूटा एक भीमकाय मनुष्य है आलि। वह अरबी मल्लाह है। पहले समुद्री जहाज मे ही उसका पेशा था। वह अच्छा तैराक है। अब तिनको का व्यापार करता है। सडक के छोर की एक दूकान के छोटे से कमरे मे तिनकों का ढेर लगाए पाँव पसारे आलि बैठा होगा। घुटनो तक का एक कपडा कमर मे बाँधकर अर्द्धनग्न हो हमेशा ऊँघते हुए ही वह बैठता है।)

कान्तम्मा तीसरी बार उभरकर आयी।

"रस्सी लाओ—लाओ रस्सी। किधर है वह?" किसी को कुछ अक्ल सूझी।

कुएँ के किनारे कोई रस्सी नही दिखाई पडी।

(कुएँ से पानी लेने के लिए हर-एक परिवार अपनी-अपनी रस्सी का ही इस्तेमाल करता था। पानी लेने के बाद औरतें अपनी रस्सियाँ घर ले जाती।)

श्रीधरन ने साँस रोकते हुए पानी मे झाँककर देखा। कान्तम्मा का खिला हुआ कमल मुख, सोने का-सा बदन, लम्बे बाल स्वच्छ जल मे स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। गुदना गुदे हाथ फड़फड़ा रहे थे, या किसी को पुकार रहे थे। मौत की घबराहट से वह हस्तमुद्राएँ दिखाकर जल मे नाच रही थी। रस्सी के लाने के समय तक वह नाचते हुए अन्दर जा चुकी थी।

दस मिनट के बाद आलि मुस्लिम कन्धे हिलाता हुआ हाथी की तरह झूमता वहाँ आ पहुँचा।

आलि ने कुएँ मे झाँककर देखा। फिर झट कूद पड़ा।

कुआँ ज़रा हिल उठा।

लोग साँस रोककर देखते रहे।

आलि ने गहराई की सतह मे पहुँचने की सूचना कुछ बुदबुदो से दी। फिर उसका कोई पता न लगा।

एक-एक पल एक युग की तरह लगा।

गोविन्दन की पत्नी अपस्मार के मरीज़ की तरह चीख रही थी।

फिर, वह ऊपर तैर आया।

वह एक विचित्र दृश्य था! अर्धनग्न कान्तम्मा को एक हाथ से अपनी छाती से लपेटकर दूसरे हाथ से पानी मे तैरते हुए आलि ऊपर आ रहा था। कान्तम्मा की अलकावलियाँ पानी मे बह रही थी।

क्या अरबी कथा का दृश्य ही सामने दिखाई दे रहा है? लगा कि समुद्री राक्षस नागकन्या का अपहरण कर ले जा रहा है।

दर्शकों ने एक कुर्सी रस्सी मे बाँधकर कुएँ मे डाल दी। कान्तम्मा को कुर्सी पर बिठा न पाने के कारण आलि ने उसे कुर्सी के हत्थो पर लिटा दिया।

ऊपर पहुँचने पर कान्तम्मा को ऊखल मे लिटाकर प्रथम शुश्रूषा की। कोई नतीजा नहीं हुआ। कान्तम्मा ने अपनी अन्तिम साँस छोड दी थी।

तभी कुएँ से एक गर्जन-सा सुनाई पड़ा। आलि का गर्जन था। आलि कुएँ मे तैर रहा था। उसकी बात लोग भूल ही गये थे।

दो-तीन रस्सियो को एक साथ एक नारियल के पेड मे बाँधकर कुएँ मे डाल दिया गया। आलि रस्सी को पकडकर धीरे-धीरे ऊपर आया। फिर पहने हुए कपडो को निचोडा। हथेलियो से मुँडा हुआ सिर और छाती पोछे। नीचे रखी हुई कान्तम्मा की मैयत को गौर से देखा। 'लाहिलाहिलाह' मत्र जपते हुए आलि अपने तिनको के ढेर की तरफ हौले-हौले कदम रखता हुआ चला गया।

श्रीधरन धोबी कुन्नुण्णी की दूकान पर नही गया। उसने हर्रे नही खरीदे। वह

सीधे कन्निप्परपु मे वापस चला गया।

चील के पंख और 'गरुड-वध' की बात भूलकर एक अज्ञात दुख से आहत-सा बरामदे की अपनी कुर्सी पर हाथो मे सिर थामकर बैठ गया। लाल साडी के अचल से छाती और कन्धो को ढककर, दही की हाँडी सिर पर ढोती हुई, तिरछी आँखो और मधु मुस्कान के साथ मोहल्ले मे घूमनेवाली कान्तम्मा और खुले बाल, ऊपर उठी हुई आँखे और पीले चेहरे के साथ हाथ पैर हिलाकर कुएँ के पानी मे मौत का नृत्य करनेवाली कान्तम्मा—दोनो तस्वीरें श्रीधरन के मन मे उभर आयी।

कान्तम्मा के बारे मे एक कविता लिखनी है। क्या लिखना है, इसका पता नही है। कान्तम्मा के शाश्वत वियोग से मैं क्यो दुखी हो रहा हूँ, मुझे मालूम नही। शायद मेरे यौवन के आरम्भिक अनुराग का प्रथम स्फुरण उस ग्वालिन लडकी मे अनजाने मे ही हुआ होगा। वह ओठो पर मुस्कान और अपनी निराली चाल के साथ मोहल्ले मे आती थी।

तभी कन्निप्परपु के सामने की पगडडी से कोयल के लहजे मे लगातार तीन सीटियो की आवाज़ गूँज उठी। माधवन बढई है। आज रात को 'सप्पर सफर सघ' के सम्मेलन होने की याद दिलानेवाली सीटी है। (माधवन सघ का सचिव है।)

उस दिन रात को मोटी कुकुच्चियम्मा के घर पहुँचने पर सभी सदस्य वहाँ मौजूद थे। गोरा जूं कुजिरामन भी हाजिर था।

कुकुच्चियम्मा ने नये ढग का भोजन तैयार किया था। नारियल के दूध को मिलाकर अच्छी काजी, मछली का एक व्यजन, अच्छी 'चम्मन्ती' की सब्जी भी।

(माइनर होने के कारण सपर के लिए पैसा न देने की श्रीधरन को छूट दी गयी थी।)

उस दिन 'छतरी की छडी' बालन ने टहलने समय एक नया कार्यक्रम शुरू करने की अपील की।

"ऐसी बात है तो हम सभी घरो मे जाकर कैलेण्डर की चोरी करें।" 'सफेद जूं' ने राय प्रकट की।

दूसरो के माल की चोरी करने की इस बात पर सघ के सदस्यो के बीच मतभेद था। बढ़ई माधवन और 'सफेद जूं' छोटी-मोटी ही चोरी के पक्ष मे थे। 'छतरी की छडी' बालन और केलुक्कुट्टि इसके खिलाफ थे। मन मे चोरी के पक्ष मे होने पर भी उस्ताद वासु ने अपनी राय ज़ाहिर नही की। माइनर मतदान नही कर सकता था।

कैलेण्डर की चोरी के कार्यक्रम मे 'छतरी की छडी' और केलुक्कुट्टि ने विरोध प्रकट किया तो 'सफेद जूं' ने अपना कार्यक्रम एक और ढग से अभिव्यक्त किया, "कैलेण्डर की चोरी, हडप लेने के लिए नही बल्कि एक घर का कैलेण्डर दूर

स्थित दूसरे घर मे लटकाना है। फिर वहाँ का कैलेण्डर एक और घर मे लटके। कैलेण्डरो का एक टेम्परेरि ट्रान्सफर। क्या वह चोरी है? सुबह को सभी घरवाले चकित होकर पूछेंगे—"यह कैसी माया है!"

गोरा जूँ हँसने लगा। उस तमाशे पर विचार कर मोटी कुकुच्चिअम्मा भी ठट्ठा मारकर हँस पडी।

सफेद जूँ के इस कार्यक्रम मे एक ताजगी तो है। चोरी की समस्या भी नही आती।

घर की दीवारो पर पिक्चर, कैलेण्डर और आँगन मे प्रिन्स आफ वेल्स क्रोट्टण का प्रदर्शन करने के लिए लोग अधिक लालायित थे। अतिराणिप्पाट मे चोरो का खतरा नही था। कभी-कभी किसी वस्तु की चोरी होने पर वह दूर से आनेवालो का काम ही समझा जाता था।

यो उस्ताद वासु और उसके साथी कैलेण्डर एकत्रित करने और वितरण करने के मनोरजक कार्यक्रम के लिए तैयार हो गये। बाहर जाते वक्त उस्ताद वासु मोटी कुकुच्चियम्मा के पैरो को छूकर आशिष माँगता था।

"सकुशल वापस आ जाना, बेटा!" कहकर कुकुच्चियम्मा उस्ताद के सिर पर अपने हाथो को छूते हुए दुआ देती।

रवाना होते वक्त बढई माधवन के कन्धे पर कुदाल नही था। उसके बदले उसने रस्सी ही ली थी।

उस्ताद ने पूछा, "यह किसके लिए है?"

बढई ने कहा, "अपने को बचाये रखने का नया कार्यक्रम है। बीट पुलिस को देखने पर कहूँगा, घर की रस्सी तोडकर गाय कही चली गयी। हम उसकी तलाश करने जा रहे है।"

बढई माधवन को इस तरह की नयी तरकीबे सूझती। वह तो पेरतच्चन का वशज है न?

'सफेद जूँ' के हाथ मे एक बडी टार्च थी।

सबसे पहले अतिराणिप्पाट से एक फर्लांग दूर पर स्थित गोविन्द शेणाय के घर मे ही वे घुसे। वहाँ के बरामदे मे चार कैलेण्डर लटक रहे थे। एक बाँसुरी बजानेवाले बालकृष्ण की बडी बहुरगी तस्वीर थी। दूसरी, पहाड को उठानेवाले हनुमान का चित्र था। गुलाबो के बाग का और हिमगिरि की चोटी का भी चित्र दीवार पर शोभित हो रहे थे।

उस्ताद ने हाथ से इशारा किया। केलुक्कुट्टि ने चारो कैलेण्डर दीवार से उतार लिये और वहाँ से चला आया।

फिर दस्तावेज़ आण्डि के घर मे गया। आँगन मे झाँककर देखा। बरामदे के एक बिस्तर पर वह खुर्राटे ले रहा था। उसने काफी शराब पी ली होगी।

"डरो मत, निकाल लो।" उस्ताद ने इशारा किया।

सफेद जूँ ने दीवार पर टार्च से रोशनी की। दीवार पर एक मात्र बीट कैलेण्डर था। वह वहीं रहने दे। वापस जाने के लिए वह मुड गया। उस्ताद ने आदेश दिया, "लिखो।"

सफेद जूँ की टार्च की रोशनी मे श्रीधरन लिखने लगा।

उस्ताद ने कहा, "कोंगिणी—चार—कृष्णन—बन्दर—नाला—हिम-गिरि।"

मालिक का नाम, कैलेण्डर का नम्बर और अन्य विवरण जानकारी के लिए लिख डाले।

फिर वहाँ से चले गये।

नज़दीक के रामुण्णि मुशी के घर की दीवार पर सिर्फ एक ही कैलेण्डर था—कमल मे खडी महालक्ष्मी का। उसे हस्तगत किया।

बढई वेलायुधन के घर जाने पर वहाँ अन्दर से कुछ जली-कटी बाते और रुलाई सुनाई पडी। ध्यान देने पर मालूम हुआ कि बढई और उसकी पत्नियो—मानवकुट्टि और चेरियम्मा—के बीच झगडा हो रहा था। मार-पीट की आवाज़ भी सुनाई दी।

"इस बढई को अपनी बीबियो को डराने धमकाने का यही मौका मिला है।" केलुक्कुट्टि ने बढई को कोसते हुए कहा।

भीतर के शोरगुल के बीच वे बाहर से कैलेण्डर की चोरी कर सकते थे। लेकिन बढई की दीवार पर था भी तो कुछ नही।

कलाल गपीला परगोटन की दीवारे कलेण्डरो से भरी थी। वहाँ से अच्छी कमाई हुई।

सुनार नपि के दरवाज़े पर पहुँचने पर वहा का कटखना कुत्ता भौकता हुआ दौडा आया।

"हम फिर देखेगे," कहकर उस्ताद ने कुत्ते को एक सेल्यूट दिया। फिर वह मुडकर चला गया।

वे कलाल मानुक्कुट्टन के घर की तरफ बढे।

मानुक्कुट्टन के घर के नज़दीक पहुँचने पर वहाँ एक जलता हुआ फानूस देखा। कलाल मानुक्कुट्टन कमर मे चाकू बाँधकर ताडी लेने के लिए ताड और नारियल पर चढने की तैयारी कर रहा था। (सप्पर सफर सघ की रात के कार्यक्रम के लिए वह आदमी खतरनाक साबित हुआ।)

फिर किट्टन ड्राइवर के घर से पाँच कैलेण्डर मिल गये।

कठफोडवा वेलप्पन के घर मे केलुक्कुट्टि को भेजा। थोडी देर के बाद वह ठट्ठा मार हँसते हुए वापस आ गया।

केलुक्कुट्टि कुछ कह नही सका। बस खिलखिलाकर हँस पड़ता।

"अरे, गधे की तरह क्यो हँसता है?" उस्ताद ने नाराज़ी से पूछा।

तब केलुक्कुट्टि ने अपनी हँसी को रोककर सब कुछ विस्तार से बताया।

केलुक्कुट्टि धीरे-धीरे आँगन मे आया। कठफोडवा बरामदे मे पलग पर लेटा खुर्राटे ले रहा था। उसने एक चादर से अपने पूरे शरीर को ढक रखा था। केलुक्कुट्टि बरामदे मे चढने लगा तो अचानक दरवाज़ा खोलकर एक आदमी बाहर आया। इस काले-कलूटे मोटे आदमी को आँगन मे खडा देखकर उसने डर के मारे अन्दर घुसकर दरवाज़ा बन्द कर लिया। जानते हो कौन था वह? कठफोडवा की खूबसूरत पत्नी वल्लिक्कुट्टि का आशिक चाप्पन चेट्टियार।

इस पर बढई माधवन ने कहा, "चेट्टियार वल्लिक्कुट्टि का प्रेमी नही है। इस सम्बन्ध मे सब कुछ वेलप्पन को भी मालूम है। जानबूझकर ही वह ऐसा करने लगता है। कठफोडवा वेलप्पन को फर्नीचर का मेहनताना देने के लिए चेट्टियार ही जरूरी रकम पेशगी देता है। पैसे का ब्याज नही। ब्याज तो वल्लिकुट्टि के सहशयन से ही चुक जाता है।

उस्ताद ने यह सुनकर सिर हिलाते कहा, "उस चेट्टियार को अच्छी तरह डराना-धमकाना है। 'सप्पर सघ' का अगला कार्यक्रम वही हो।"

"चेट्टियार आज बेहद डर गया है।" केलुक्कुट्टि ने हँसते हुए कहा। "वह जरूर चार दिन तक बुखार मे पड जाएगा। मुझे देखकर उसने भूत-प्रेत ही समझ लिया।"

वहाँ से वे धोबी शकरण के घर के नज़दीक पहुँचे। पगडडियो से ज़रा झाँककर देखा। वहाँ बरामदे मे बैठा एक आदमी चक्की मे जडी-बूटियो को पीस रहा था।

"पीसने के लिए धोबी के बच्चे ने यही समय चुना था, हरामजादा!" उस्ताद ने उसे शाप देते हुए कहा।

वे पेण्टर रामन के घर पहुँचे। वहाँ की दीवार पर सिर्फ एक रेशे की रस्सी ही लटक रही थी।

"चिरुता के लटककर मरने के लिए ही यह रस्सी बाँधी है।" केलुक्कुट्टि जलन और गुस्से से बोला।

काठ के गोदाम के मालिक भास्करन के घर से पाँच कैलेण्डर मिल गये। उन मे दो बढ़िया विदेशी कैलेण्डर थे।

कजूस-मक्खीचूस केलु के घर के निकट पहुँचने पर उन्होने उधर मुड़कर भी नही देखा।

"उधर नही जाना।" बालन ने कहा। क्षयरोग से मरे अप्पुण्णि का घर है। हमारा वहाँ जाना ही पाप है।"

उस्ताद ने भी कहा कि वहाँ नही जाना चाहिए। उस्ताद का कारण दूसरा था। वहाँ शकुण्णि कम्पाउण्डर है। वह तो पक्का शरारती है। कैलेण्डर बदलने या गायब हो जाने से वह अन्दाज लगा लेता कि यह किसकी करतूत हो सकती है। फिर वह पुलिस को ज़रूर सूचना देता।

कुली पोर्टर ने मोटे केलप्पन के घर मे झाँककर देखा। केलप्पन की नायर वधू माधवीअम्मा दरवाज़ा खोले बरामदे मे चिराग के सामने बैठी एक पाट्टु पुस्तक सुरीली आवाज़ मे गा रही थी।

बेचारी माधवी अम्मा आधी रात की गाडी की प्रतीक्षा मे रेलवे-स्टेशन पर गये पति केलप्पन का इन्तजार कर रही है।

चुपचाप वहाँ से खिसक गये। फिर तडान केलु के घर गये। तडान केलु की बकरी की बदबू पगडंडी से ही नाक मे घुस आयी। उसकी दीवार पर रंग-बिरंगे कई कैलेण्डर हैं। बडी खुशी हुई। पर, नजदीक से देखने पर मालूम हुआ कि वे चार-पाँच वर्ष पुराने थे।

"उसको जलाने के लिए ही यहाँ रखे है।" केलुक्कुट्टि ने दाँत निपोरते हुए कहा। चलो चले।

साथियो के आगे बढने पर उस्ताद ने रोका, "हमारे जैसे कुछ मान्य व्यक्ति यहाँ पहुँचे है। इसकी सूचना तडान को देनी होगी।" उसने आदेश दिया कि सभी कैलेण्डर नीचे डाल दिये जायें। सभी नीचे डाल दिये गये। उस्ताद ने इनमे एक कालीन बनायी। 'सफेद जूँ' ने बरामदे मे लटकनेवाले तडान के भस्म के नख्त स जरा भस्म लेकर दरवाजे पर 'ओ' लिख डाला।

केकडा गोविन्दन के घर से बारह कैलेण्डर हासिल हुए।

कई घरो मे जाने के बाद आखिर चाप्पुण्णि अधिकारी के बडे भवन के सामने पहुँचे। अधिकारी के घर पर आक्रमण करने की बात पर सदस्यो के बीच एकमत नही था। केलुक्कुट्टि ने बताया कि अधिकारी को हमें हर्गिज़ नही छोडना चाहिए। उस्ताद ने शका के साथ कहा, "नही। अगर हम कैलेण्डर छीन लें तो अधिकारी कल सुबह पुलिस स्टेशन पर जाकर शिकायत करेगा। फिर रात को पुलिस सतर्क होगी। हमारी यात्रा मुसीबत मे पडेगी।"

'सफेद जूँ' और 'छतरी की छडी' ने उस्ताद की राय का समर्थन किया। यो अधिकारी को छोड दिया गया। शिकार से प्राप्त बण्डलो के साथ वे मोटी कुकुच्चि-यम्मा के घर लौट आये।

वहाँ से गिनने पर कुल सत्तावन मिले। माइनर के हाथ का रिकार्ड देखकर अलग-अलग घरो मे बाँटने का काम ही अगला कार्यक्रम है।

गणित मे तेज़ होने के कारण उस्ताद ने सूची तैयार की। "काठ के गोदाम मालिक के पाँच कैलेण्डर गपिया परगोटन को। गपिया के कैलेण्डर किट्टन ड्राइवर

को। रामुण्ण मुशी की महालक्ष्मी मूंछ कणारन को।" आखिर हिसाब लगाना मुश्किल हो गया। गणित म प्रवीण उस्ताद उँगली काटता हुआ विचारमग्न हो हो गया।

"मुझे नीद आ रही है। माइनर के हाथ की सूची देखकर गलती किये बिना ही हर घर म लटकाना है।"

उस्ताद वासु ने यो कहकर कैलेण्डरो को लटकाने का भार सफेद जं, केलुक्कुट्टि और माइनर को सौप दिया। वह अपने घर चला गया। बढई, केलुक्कुट्टि, सफेद जू, 'छतरी की छडी,' माइनर और रस्सी को कन्धे पर ढोते हुए बढई माधवन भी कैलेण्डर लटकाने निकल पडे।

पहले-पहल सूची देखकर ही काम शुरू हुआ। थोडी देर बाद हाथ मे आये कैलेण्डरो का अपेक्षित जगहो लटकाने लग गय।

उस दिन श्रीधरन तीन बजे कन्निण्परपु वापस लौटा।

रात की करतूतो की प्रतिक्रिया की ख्वाहिश लेकर श्रीधरन दूसर दिन सुबह को बाहर निकला। गोविन्द शेणायी के घर के नजदीक गया। सुबह से ही कोगिणी शेणाय किसी को कोसने और गाली देने लगा था। उमने कैलेण्डर चीर-फाड कर आँगन मे डाल दिया था। स्मरण करने पर कोगिणी की नाराजगी का कारण तो मालूम हो गया। पिछली रात को कैलेण्डर वितरण करते समय एक बडी भूल हुई थी। कृष्ण-हनुमान-बाग और हिमगिरि के बदले उस सारस्वत ब्राह्मण के घर म पेण्टर स्तेव के 'वीनस विला' के क्रास मे लटकनेवाले ईसा और नगी नहाती एक औरत की तस्वीर लटका दी थी।

अतिराणिप्पाट और आसपास के कई घरो मे कुट्टिच्चात्तन की शका पैदा करक उस्ताद और उसके मित्र उस दिन चैन से सोय।

चौथे दिन सप्पर सघ के तत्वावधान म फिर एक बैठक हुई। कैलेण्डर को पुन लटका देने की बात पक्की हो गयी। उस दिन, रात को उसे ठीक तरह से सम्पन्न करने कार्यभार छतरी की छडी, बढई, सफेद जूं और माइनर को सौपकर उस्ताद तीन मील दूर दुश्शासन-वध कथकलि देखने चला गया।

सफेद जूं और दूसरे साथियो ने घरो मे झाँका तो सभी काम गडबड होते दिखाई पडे। कुछ दीवारो पर कैलेण्डर नही थे। (रात को व घर के भीतर रखते होगे।) और कुछ घरो के कैलेण्डर रिकार्ड के अनुसार नही थे। वे बहुत ही पुराने थे। शायद घरवालो ने यह आशा की होगी कि रात को उनके बदले नये कैलेण्डर लटका दिये जाएँगे। तीन-चार घरवालो ने बडे हौसले के साथ वे ही कैलेण्डर लटका दिये थे। गोबिन्द शेणाय के कृष्ण—हनुमान—फुलवारी—हिमगिरि के कैलेण्डर कोरन बटलर के घर से मिले। (बटलर के कैलेण्डर केकडा गोविन्दन की दीवार पर लटका दिये गये थे। लेकिन केकडा ने धोखा दिया।)

गोविन्द शेणाय के घर चलें। "कैलेण्डर फाड देनेवाले उस कोगिणी को कैलेण्डर का अब कोई हक नहीं है।" सफेद जूँ ने रास्ते मे बताया।

"हमे एक भी कैलेण्डर नही चाहिए। किसी को देना चाहिए। ऐसी हालत मे हम कोगिणी को ही दे दें।" छतरी की छडी ने कोगिणी का समर्थन किया।

शेणाय के बरामदे मे रोशनी दिखाई पडी।

अक्लमन्द शेणाय ने चोरो को इस भ्रम मे डालने के लिए कि घरवाले अभी सोये नही, एक फानूस जलाकर बरामदे मे लटका दिया था।

दीवारो पर कोई कैलेण्डर नही था। छडी और माइनर के सकपकाकर खडे होने पर बढई माधवन ने रस्सी 'छतरी की छडी' को सौंपी। उसने 'सफेद जूँ' के हाथ से शेणाय का कैलेण्डर माँगा। साथियों से फाटक पर खडे होने का इशारा कर वह बरामदे मे घुस गया। उण्णिकृष्णन, हनुमान, चमन और हिमगिरि को दीवार पर लटका दिया। फानूस को फूँककर बुझाया। फिर उसे लेकर वह चला आया।

3 बुरे समाचार

श्रीधरन को उस दिन सुबह हमेशा की तरह चाय और पकवान नही मिले। माँ रजस्वला थी। इन बातो मे कृष्णन मास्टर बडा शुद्धाचरण रखते। दूसरी स्त्रियो मे रसोईघर से भोजन पकवाना भी मास्टर पसन्द नही करते थे। कभी-कभी इन दिनो श्रीधरन इस कार्य-भार को सँभालता। चावल पकाने और चक्की से मिर्च और नारियल पीसने और व्यजन तैयार करने की कला से श्रीधरन परिचित हो गया। (माँ बाहर से जरूरी सलाह और निर्देश देती रहती।)

कालेज मे पहुँचने के बाद माँ के बाहर बैठनेवाले दिनो मे शनिवार और रविवार को भी पिताजी श्रीधरन को रसोईघर मे जाने की अनुमति नही देते थे। उन्हे डर था कि श्रीधरन के कालेज का काम रुक जाएगा। उसे पढने का वक्त नही मिलेगा। उन दिनो सब लोग काँजी बनाकर पीते। कन्द को भूनकर खाते। नही तो चिउडा और केला खरीद कर खाते।

इलजिपोयिल से आये 'चक्कर वरट्टु' और दूसरे पकवान इसी समय बाहर निकलते।

कृष्णन मास्टर ने बटुए मे से दुअन्नी लेकर श्रीधरन से कहा, "दूकान से कुछ खरीदकर खा-आओ।"

श्रीधरन इसी अवसर की ताक मे बैठा था। घर से मजेदार पकवान खाने पर भी श्रीधरन के मन मे, माँ के शब्दो म, 'चाय की दूकान मे जाकर कुछ-न-कुछ चाटने की इच्छा' बनी रहती थी। पिताजी बाहर से कुछ खाने के खिलाफ थे। कोई चारा न होने के कारण ही पहली बार उन्होने इसकी अनुमति दी थी।

दुअन्नी जेब मे डालकर वह सीधे कुमारन की 'भारत माता टी शाप' पर गया।

सुबह से बडी भीड थी। चिराई कम्पनी के मजदूरो और समुद्र-तट के बोझ उठानेवाले कामगरो की लाइन लगी रहती।

ऐंची आँखोंवाला कुमारन पेटी के सामने बैठा था। उसके दो सहयोगी और भी थे। कुट्टापी चाय बनाता और उण्णीरि वितरण करता।

श्रीधरन एक बेंच पर जाकर बैठ गया। उसने इशारे से नौकर को बुलाकर आर्डर दिया "एक 'कुतिर बिरियाणी' और हाफ चाय।"

'पुट्टु,' चने का व्यजन, पापड आदि का सम्मिश्रण रूप है 'कुतिर बिरियाणी'।

सभी पकवान पहुँच गये। दो टुकडे बडे 'पुट्टु' के—दोनो तरफ मसाले का व्यजन जिससे लाल मिर्च के छिलके झरन रहते है। बडे फोफोलेवाले दो बडे पापड भी थे जो हाथी की झालर-से लगते थे।

तभी दूर कोने की एक बेच पर अकेला बैठा नाश्ता करता छह फुट लम्बा गजा सिर और लाल-लाल आँखोवाला कृष्णन दिखाई दिया।

कृष्णप्परका नाश्ता खास ढग का था। नौ प्लेटो मे तीन सेट 'कुतिर बिरियाणी' और तीन फुल गिलास चाय सामने रखने के बाद ही वह नाश्ता शुरू करता। फिर एक-एक कर सभी सेट चट कर जाता।

अनिराणिप्पाट के निकट के धोबियो का कोना याद आया। वहाँ एक ही लम्बाई के पेण्ट, कई शर्ट, लुंगी, ब्लाउज, रगबिरगे कालीन इधर-उधर लटके हवा और धूप म हिलते हुए बडे मनमोहक लगते। कभी कभी पेण्ट के भीतर हवा भरती तो वह नाचती-सी लगती। श्रीधरन ने ताज्जुब के साथ कई बार उसे देखा था।

कास्टिक सोडे और साबुन की गधवाले गदे पानी मे खडे होकर धोबी सिमेट के पत्थरो पर कपडो को पीटकर धोते है। कपडो को पत्थरों पर पीटने की आवाज दूर से सुनाई देती है। इन धोबियो के बीच कण्णप्पन भी होता। गन्दे कपडो को काठ की बाल्टी म डुबोकर पत्थर पर मारते समय कणारन 'हो—ह हो' की आवाज निकालता। उसकी आवाज अलग पहचानी जा सकती है।

श्रीधरन कण्णप्पन को चाहता था। उसका खास कारण भी है। रात को खामोशी मे धोबियो के पडाव से कुछ अद्भुत गीत सुनाई देते। कन्निप्परपु के घर के बरामदे के एकान्त मे पुस्तक पढते या कविता लिखते वक्त श्रीधरन के कानो मे ये गीत स्वर्गीय आनन्द प्रदान करते। भक्ति की गहराई से नि सृत होनेवाले ये गीत-कीर्तन—दिल को पिघलाने की असीम शक्ति रखते थे। ये ईसाई कीर्तन कण्णप्पन के गले से ही निकलते थे। इसकी पहचान कई महीने बाद श्रीधरन को हुई थी।

क्या कण्णप्पन के कण्ठ की सुरीली आवाज का कारण यह 'कुतिर बिरियाणी' है?

प्लेट को अच्छी तरह चाटकर चाय पीकर नाश्ते के पैसे का हिसाब लगा लिया। दो टुकड़े पुट्टु—चार पैसे, चने की सब्जी—दो पैसे, पापड—एक पैसा, हाफ चाय—तीन पैसे, कुल हुए 10 पैसे।

तीन आने देने पर दो पैसे वापिस होंगे। एक सिगरेट पीने की इच्छा हुई। बढ़िया 'हाथी' मार्का सिगरेट माँगी—मूल्य डेढ पैसे।

उँगली मोडकर 'श्श्' की आवाज़ से उसने वितरक का ध्यान खींचा। उसके मुड़कर देखने पर अँगूठे के इशारे से कहा—'हाथी'।

उस समय दो-तीन बेंचों के उस पार बैठे लोगो की बातचीत मे 'कृष्णन मास्टर' का नाम सुनाई पडा। उस तरफ ध्यान दिया ।

"हाँ – कन्निप्परपु के कृष्णन मास्टर का बेटा गोपालन ही है "

"क्या गोपालन मुशी कही पूरब के किसी काठ-गोदाम मे नही है ?"

"हाँ, चन्दुक्कुट्टि मालिक के यहाँ है। वह अब बीमार होकर वापस लौट आया है।

"कोवालन को क्या बीमारी है ?"

"बीमारी " (एक हँसी)

"खासी बडी बीमारी ही लग गई है। अब वह कुष्ठ रोगी की तरह धीरे-धीरे चल रहा है।"

"बेचारा नौजवान है। चरित्रवान है। उस बन्दर कुजप्पु की तरह नही है।"

"क्या चरित्रवान होकर ही इसके लिए गया था ?"

"मास्टर, वह भी तो एक मर्द है न ?"

"सोने का-सा नौजवान था। अब वह राख से निकले कुत्ते की तरह लगता है "

"वह कोरनक्कुट्टि वैद्य का तेल पीले—अरे, उसका नाम क्या था ?

"आवी ओयल।"

"उससे तो बीमारी दूर नही होगी।"

वह उठकर चला गया।

श्रीधरन ने कोने मे चुपचाप बैठकर सारी बाते सुनी। ठेलावाले कुट्टाप्पु और चाप्पुण्णि अधिकारी का सहयोगी आण्टिक्कुट्टि ही बातचीत कर रहे थे। कोट और शर्ट पहने तीसरा नौजवान शायद चन्दुप्पणिक्कर के स्कूल का नया शिक्षक बढई केशवन मास्टर होगा।

सिगरेट पीने के बाद श्रीधरन उठ खडा हुआ। काउण्टर के सामने खडे होने पर उण्णीरि ने ज़ोर से कहा, "साढे ग्यारह पैसे।"

मालिक कुमारन ने तीन आने पेटी मे डाल आधे पैसे के बदले दो बीडियाँ

बढाईं। श्रीधरन ने नकार मे सिर हिलाया। "बाकी फिर दे देना," कहकर वह कुछ अकड के साथ वहाँ से चला गया।

श्रीधरन के मस्तिष्क मे ठेलेवाले, अधिकारी के सहयोगी और बढई मास्टर की बातचीत जहरीली हवा की तरह घुस गयी।

गोपालन भैया को काठ के गोदाम के मालिक चन्दुक्कुट्टि के लेखापाल की नौकरी मे एक बरस बीत गया था। अधिकाश दिन वह पूर्वी टीलो के गोदाम मे होता। महीने मे एक दफा कन्निप्परपु मे आना। आते समय पिताजी को दस रुपये देता।

पिताजी गोपालन भैया को समझाते, "इस तरह जगलो और टीलो मे पडे रहने पर तबीयत बिगड जाएगी। तन्दुरुस्ती पर ध्यान देना चाहिए।"

यह सुनकर रसोईघर से गोपालन भैया मौसी से मजाक मे कहता, "हाँ, मैं चन्दुक्कुट्टि मालिक के स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए ही गया था।"

पिताजी पूछते, "अरे बेटा गोपालन, हफ्ते मे तीन बार तेल मलकर नही नहाता क्या ?"

गोपालन भैया मकपकाकर कहना, "कभी-कभी।"

गोपालन भैया के घर आने पर पिताजी खुद बाजार जाकर अच्छी मछलियाँ खरीद लाते। "उसको जगल मे सूखी मछली भी नही मिलेगी। एक दिन के लिए ही सही, वह अच्छा भोजन करे।"

गोपालन भैया आते समय जगल मे अच्छा शहद लाता। एक बार एक हिरण के सीग लाया। उसके लिए बढई माधवन ने लकडी का एक अच्छा सिर बना दिया। उसने वह हिरण का सिर घर के बरामदे मे श्रीधरन के पढने के कोने की दीवार पर टाँग दिया है।

पिछले महीने गोपालन भैया को घर आने पर पिता के निकट जाने मे हिचकिचाहट हुई। उसके शरीर भर मे खुजली थी।

पिताजी ने अन्दर आकर गोपालन भैया को नजदीक खडा करके कमीज को उठाकर देखा।

"क्या तूने जुलाब नही लिया था ?"

"उसके लिए अवकाश नही मिलता।" गोपालन भैया ने विषाद भरे लहजे मे कहा।

"ऐसी बात है तो तू पहले जुलाब ले ले। फिर वैद्य को दिखाऊँगा। बीमारी दूर हो जाने पर ही जाना होगा।"

"वहाँ और कोई नही। मुझे कल ही जाना है।"

"अरे सुना नही, शक्ति से ही भक्ति होती है—तू मेरे कहे अनुसार एक दो हफ्ते के बाद ही जा सकेगा।"

"मैं कल वहाँ जाकर मालिक से छुट्टी की प्रार्थना कर वापस आऊँगा ।"

गोपालन भैया दूसरे दिन पूरब के पहाड़ो पर चला गया । फिर एक सप्ताह तक वह नही आया । दस दिन के बाद पहुँच गया । उसका रंग और शक्ल-सूरत एकदम बदल गयी थी । सोने का-सा शरी,र राख की तरह हो गया था । औषधि के कुछ मर्तबान भी वह साथ लाया था ।

"पनचिक्कावु के वैद्य को दिखाने पर उसने बताया कि मकड़ी का जहर है । इसके लिए वैद्य ने कुछ औषधियाँ दी हैं ।" गोपालन भैया ने मर्तबान की तरफ इशारा करते हुए कहा ।

गोपालन भैया एक सप्ताह तक बाहर निकले बिना औषधि पीकर घर मे ही रहा । पर, बीमारी कम नही हुई ।

इतने मे गोपालन भैया की बीमारी की खबर इलाके-भर मे फैल गयी ।

वैद्य को दिखाने गोपालन भैया कल फिर पनचिरा मे गया था ।

श्रीधरन को मालूम हुआ कि गोपालन भैया की क्या बीमारी है ? पिछले हफ्ते केलुक्कुट्टि ने इस 'प्राइवेट बीमारी' के बारे मे विस्तार से बताया । इसका खास कारण था ।

अतिराणिप्पाट के पाणन वेलु के घर उसकी पत्नी पाट्टि का एक रिश्तेदार रहता था । अप्पुण्णि नाम का वह नौजवान कपड़ा बुनने की कपनी मे काम करता था । हमेशा सफेद धोती और कमीज पहननेवाला वह एक खूबसूरत नौजवान था । एक दिन श्रीधरन ने उसको पगडडी से देखा । नाभि के नीचे धोती के ऊपरी हिस्से को जरा ऊपर उठाकर वह धीरे-धीरे चलता । बैंक का नौकर चदु विपरीत दिशा से आ रहा था । चदु का देखने पर अप्पुण्णि ने कहा, "मिल गया—आखिर मिल ही गया ।"

बड़ी मुश्किल से तलाश की जा रही एक अमूल्य वस्तु हस्तगत होने की खुशी से ही उसने कहा था । पर चन्दु अप्पुण्णि की तरफ आँखे तरेर कर देखते हुए चुप-चाप चला गया ।

श्रीधरन ने सोचा, अप्पुण्णि को क्या मिला होगा ? किसी रोग को छिपाने का बहाना करके ही वह आहिस्ता-आहिस्ता चलता है ।

उस दिन शाम को केलुक्कुट्टि से अप्पुण्णि को देखने की बात कही, "अरे, उसको क्या मिला होगा ?"

यह सुनकर केलुक्कुट्टि ठहाका मारकर हँस पड़ा । फिर श्रीधरन के कान मे फुसफुसाया—"प्राइवेट बीमारी —वी० डी० ।"

बुरी औरते ही यह बीमारी देती है ।

गोपालन भैया बुरी औरतो के पास गया होगा, इस पर श्रीधरन को भरोसा नही हुआ । गोपालन भैया लजालु है । औरतो को देखने पर सिर झुकाकर चलता है । फिर यह बीमारी कैसे मिल गयी ? यो सोचता हुआ वह जा रहा था । विपरीत

दिशा से सियार नाणु को आते हुए देखा।

सिर मुडाए रोम-भरे नुकीले चेहरेवाला नाणु नयी सड़क पर हमेशा पूर्व और पश्चिम की तरफ चलता। चिथड़ी बनियान और मैली धोती पहनकर नाणु अपने हाथ की मुट्ठी को बन्द कर ही चलता। वह एक अच्छे घराने का सदस्य है। बदकिस्मती से उसका सिर फिर गया।

नाणु ने अपने बाये हाथ मे जिस अमूल्य चीज़ को पकडा था, वह क्या है, इसका पता और किसी को नही है। नाणु को ही यह रहस्य मालूम है। किसी से भी वह कुछ नही बोलता। बीच-बीच मे आँखे घुमाता रहता। फिर अचानक रुककर किसी बात की जानकारी हासिल होने के बहाने तीन दफा सिर हिलाते हुए बाये हाथ की मुट्ठी को जबर्दस्ती बन्द कर वापस चला जाता।

नाणु को किसी औरत ने अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए कुछ जहर पिलाया था। मात्रा जरा अधिक हो गयी थी। बेचारे को पागलपन सवार हो गया। 'छतरी की छडी' बालन ने ही श्रीधरन को ये बातें बतायी है।

य औरते कितनी भयानक है! पुराने जमाने मे मोहल्ले के एक कोने मे उठता रावुत्तर मौलवी का वह गीत मस्तिष्क मे उभर आया।

'आट्टेयु काट्टेयु नपलाम्—अन्द
शेल केट्टिय मातरे नपलाम्—"

कन्निप्परपु मे पहुँचने पर पिताजी नहाकर जप-तप के बाद कोट और टोपी पहनकर तीन मील दूर स्कूल को रवाना हो गये थे। आँगन के नारियल के हरे छिलके को देखने पर मालूम हुआ कि पिताजी ने एक कच्चा नारियल पिया था। अहाते के नारियल से ताडी लेनेवाले माक्कोता ने दिया होगा।

बेचारे बाबूजी! श्रीधरन ने सोचा। 'भारतमाता' मे जाकर एक 'कुनिर बिरियाणी' खाने से क्या बिगडेंगे?

माँ के भोजन के बारे मे अन्वेषण करने की जरूरत नही है। पडोस की अम्मिणि अम्मा या उण्णूलिअम्मा आकर कुछ पका देती है, इसमे कुछ हिस्सा मुझे भी मिलता।

उस समय आँगन से 'स्वामी नारायणा' की पुकार सुनायी पडी। गेरुआ कपडे पहने एक हाथवाली पुजारिन भीख माँगने आयी है।

उस माँ का दाहिना हाथ एक घडियाल ने काट डाला था। जब कन्निप्परपु मे आती तब वह माँ पुरानी घडियाल की कथा कहकर आँसू बहाने लगती। उसकी दुखपूर्ण कथा सुनकर श्रीधरन की माँ को हार्दिक सहानुभूति होती। उसको माँ काजी देती।

"आज सिर्फ कहानी है—काजी नही," श्रीधरन हँसता हुआ अपने मन मे बुदबुदाया और घर के बरामदे की सीढ़ियाँ चढ गया।

नौ बज गये हैं। कालेज जाने को आधा घण्टा बाकी है।

दीवार की तरफ ध्यान से देखा। पुरानी किताबो के बण्डलवाली टाँड के कोने की दीवार पर दीमक नयी रेल की पटरियाँ बना रही थी। मिट्टी को झाडा-पोंछा, फिर टाँड से कुछ किताबें उठाकर धूल पोछकर रख दी। इस बीच पुरानी एस० एस० एल० सी० की पाठ्य-पुस्तक से एक कागज नीचे गिर गया। नीचे झुककर उठाया तो एक पुरानी कविता थी। 'भ्रमर मे' शीर्षक मे श्रीधरन की लिखी कविता

"रक्ताभ कमलो का मधु
पान कर घूमते रे भौरे,
सध्या हुई—सध्या हुई।
क्यो नही तू चला जाता ?
काले कचो के भार से गर्वीली—
शर्वरी की भौहो मे बल पडेगा।
कमल-बधु जबमे नभ-यात्रा मे
चल पडे
तब से
सिदूर सुन्दर सध्या के मर जाने तक
स्वतन्त्रता की मूर्ति बन
कामी जनो के भीतर
आतक बढानेवाला मन्त्र गुनगुनाता हुआ "

कविता पूरी नही हुई थी। (इतनी-सी बातें सुनने पर भ्रमर दौड गया होगा।)

भ्रमर को तसल्ली देनी है। कविता पूरी करनी है।

बैठकर थोडी देर सोचा, फिर लिखने लगा

"हे भृग, भगिमा के पूर्ण विराम,
फुलवारियो मे जहाँ-तहाँ
दिवालक्ष्मी के चारु नयनो-सा
तू मडराता रहा मौन
गुनगुनाकर वसत-लक्ष्मी का
शृगारमय सदेसा वहन कर
थका-माँदा तू
अब चला जा
हरियाली की गोद मे सोकर
कल तडके लौट आना

कमलो का करने मधु पान ।

समय ढलने की बात मालूम नही हुई ।

धोती और शर्ट बदलकर कालेज रवाना हुआ ।

प्रथम घण्टा रगनाथय्यर का गणित का था। दर्जे मे जाकर एक कोने मे छिपकर बैठ गया। (नजदीक बैठनेवाला वरिष्ठ मित्र नारायणन नपियार गैरहाजिर था।)

तभी दक्षिण दिशा के डेस्क के पीछे हरी साडी का कम्पन आँखो मे दिखाई पड़ा। वह दर्जे के नब्बे लडको की ऑखो के लिए पीयूषधारा बहानेवाली एकमात्र 'दूसरी सृष्टि' की प्रतिष्ठा दाक्षायणी थी।

दुबली-पतली दाक्षायणी देहात की लडकी है। उसका गोलाकार चेहरा, तारुण्य, लम्बे ताड के गुच्छे जैसे बाल, खबसूरत दाँत उसके नारी-सौन्दर्य को बढ़ाते। वह अपने बालो की लम्बाई का प्रदर्शन करने के लिए उन्हे पीछे खुला छोड देती।

दरवाजे मे सफेद पगडी दिखाई दी। कक्षा मे प्राध्यापक के आते ही सहपाठियो के साथ श्रीधरन भी उठ खडा हुआ।

अय्यगर के हाथो मे कागज का बण्डल देखकर वह चौक उठा। त्रैमासिक परीक्षा की उत्तर-पुस्तिकाएँ थी। वे अको को ज़ोर-जोर से पढ़ने लगे। दाक्षायणी भी सुनेगी। पेट के 'कुतिर बिरियाणी' का पौना अश झट पच गया।

अय्यगर मास्टर गणित की उत्तर-पुस्तिकाओ को बाहर निकालकर ज़ोर-ज़ोर से अक पढने लगे।

के० जयदेवन नेटुगाडी-55, पी० गोविन्द मेनोन-44, सी० नारायणन-नपियार 60, पी० राघव मेनोन-39, और वी० बी० कृष्णय्यर-95 (श्रीधरन ने उसी पट्टर को झापड रसीद की थी।)

सी० श्रीधरन

(छात्र ध्यान दे रहे है कि नही ? अय्यगर ने दर्जे भर मे निगाह घुमायी—फिर निर्विकार होकर घोषणा की "ज़ीरो" (शून्य)।

4 'कोरमीना'

हरित हय पर चढ गगन से
मालती के फूल लाना,
स्वच्छ नीले व्योम मे उड
मौज मे मन का विचरना,
बदलियो मे छा, ठहाका मार

हासोल्लास करना,
स्वप्न आलोकगृह की
सीढियाँ चढ़ सोनिल ठहरना
चाहता हेमन्त की वह
रात्रि जब भी आ पहुँचती।
चण्ड झझावात हो ज्यो,
या फिर हरित घोटक
शून्यता के गीत सात्विक
सुन पुलकते कान मेरे · ·

भावना की कमी से कविता वही रुक गयी। श्रीधरन के हरे घोडे को मालूम नही हुआ कि किधर उड जाना चाहिए। बेचारा सूनेपन की सैकत मे खुर पटकना रहा।

तभी 'हारमोनियम' पर एक गीत की हलकी-मी लहरो ने श्रीधरन के कानो को सहलाया। 'कोरमीना' की सौदामिनी का सगीत है।

श्रीधरन हरे घोडो को मूनेपन मे चरने को भेजकर कन्निप्परपु के बरामदे मे उत्तर आया।

हेमन्ती रात की खामोशी मे ख्वाबो की लहरो को जगाते हुए सौदामिनी के हारमोनियम से सगीत लहरियाँ उठ रही है। श्रीधरन ने एक स्वर्गीय अनुभूति मे डूबकर उसका आस्वादन किया।

तभी पडोस के कुत्ते के भौकने की आवाज़ सुनायी दी।

सौदामिनी की सगीत-सुधा को उस कुत्ते ने चाटकर पी लिया।

कुत्ता भौकता ही रहता है। मोहल्ले के कुत्तो को भौकने के लिए खास कारण की जरूरत नही है। चाँदनी देखने पर, छाया को निरखने पर, पत्तो के हिलने पर, शान्त आलोक मे भी कुत्ता भौकने लगता। एक बार भौकना शुरू करता तो फिर वह मुँह बन्द न करता। वैज्ञानिक प्रगति हासिल होने से इन्सान शब्दो पर नियन्त्रण कर सकता है, लेकिन कुत्ते के भौकने की आवाज ऐसी है जिसे कोई वैज्ञानिक, कोई इन्सान कभी भी नियन्त्रित नही कर सकेगा। अगर कुत्ते को डाँटो तो मूर्ख कुत्ता यही समझेगा कि वह मालिक की बधाई है। फिर वह अधिक जोर से भौकन लगता। पत्थर मारे तो कुछ दूर दौडने के बाद वह अपने लहजे को जरा बदलकर फिर भौकने लगता। मारने-पीटने पर भी कुछ फायदा नही होता। दर्द से जरा भौककर, कुछ देर चुपचाप रहकर, फिर साहस का प्रदर्शन कर और किसी के लिए विलापगान शुरू कर देता। पिटाई के प्रतिशोध के तौर पर कुत्ता बीच-बीच मे गान मे कुछ गुर्राहट जोड लेता।

इस प्रकार कविता लिखने मे और हारमोनियम-गान का आस्वाद लेने मे

में रुकावट आने पर श्रीधरन अपना बिस्तर बिछाकर सोने लेट गया और सौदामिनी और उसके पिता कोरप्पन ठेकेदार के पूर्व इतिहास का स्मरण करने लगा।

कोरप्पन पूर्वी दिशा मे एक देहात के एक बडे जमीदार को गायो को चरानेवाला एक अनाथ छोकरा था। दूसरे चरवाहो के साथ गायो को चराते हुए झुरमुटो और टीलो की तराइयो मे वह हँसते हुए खेलता।

जमीदार के एक दुलारी बेटी थी। बहुत ही खूबसूरत। लेकिन घमण्डी। एक दिन जब वह तेल लगाकर नदी पर अकेली जा रही थी तो कोरप्पन ने ललचायी आँखो से उसे देखा। उसने प्रेम का एक नगमा भी गुनगुनाया। नगमा सुनकर वह नाराज हो गयी। उसने अपने पिता से उसकी शिकायत की। उसने कहा कि कोरप्पन छोकरा मुझसे छेडछाड करने आया था।

जमीदार ने कोरप्पन को बुलाया। उसके पहने हुए तौलिये को उतारकर उसे नगा कर दिया गया। उसी तौलिये से उसके हाथो को बाँधा। फिर गायो को चरानेवाली बाँस की छडी से बेरहमी से उस लडके को मारा। कोरप्पन की अच्छी मरम्मत होते देखकर जमीदार की दुलारी बेटी को बडी खुशी हुई।

कोरप्पन उसी दिन गाँव से फरार हो गया। वह शहर मे आ पहुँचा। दो दिन तक वह इधर-उधर मारा-मारा फिरता रहा। आखिर सडक के एक ठेकेदार केलु मिस्तरी के यहाँ पहुँच गया। उसने कोरप्पन को मिट्टी ढोने का काम दिया। शाम तक लहू-पसीना एक कर काम करने के बाद चार-पाँच दिन तक वह रात को किसी दूकान के बरामदे मे लेटकर सो जाता। एक दिन केलु मिस्तरी को उसके प्रति वात्सल्य उमड आया। उसने कोरप्पन की जिन्दगी की अब तक की सारी बातें बडी सहानुभूति से सुनी। शाम को वह उसे अपने घर ले गया।

केलु मिस्तरी के कोई सन्तान न थी। उसकी घरवाली के भी कोरप्पन को देखने पर उसके प्रति वात्सल्य भर आया। फिर कोरप्पन को मिट्टी ढोने का काम नही करना पडा। वह मिस्तरी के घर म ही कुछ न कुछ काम कर रहने लगा। महीनो बीत जाने पर कोरप्पन की होशियारी, ईमानदारी और विनम्रता देखकर केलु-कुजम्मु दपती उस पर प्रसन्न हो गये। कोरप्पन बचपन से ही माँ-बाप के प्रेम और वात्सल्य से वचित लडका था। उसको नयी जिन्दगी अधिक पसन्द आयी। ठेकेदार ने कोरप्पन को कुछ शिक्षा देने का बदोबस्त किया। एक ट्यूशन मास्टर को लगा दिया गया। मास्टर ने रात को कोरप्पन को लिखना, पढना और हिसाब लगाना सिखा दिया। कोरप्पन गणित मे तेज था।

सन्तान न होने से दुखी होनेवाले केलु-कुजम्मु दपती ने एक साल बाद कोरप्पन को अपने पुत्र के रूप मे गोद ले लिया। उसके पहले ही गृहकार्यों के कुछ विभाग कोरप्पन को सौंप दिये गये थे।

यो तेरह साल बीत गये।

केलु मिस्तरी की तबीयत मधुमेह की बीमारी से एकदम बिगड गयी। इसी बीमारी की वजह से आखिर वह चल बसा।

मिस्तरी के वसीयतनामे मे उसकी जायजाद मे (बैंक की मोटी रकम के अलावा कई नारियल के अहाते, मकान आदि भी थे) आधा हिस्सा उसकी पत्नी कुजम्मु और आधा कोरप्पन के नाम लिखा गया था।

केलु मिस्तरी के सभी कामकाज कोरप्पन ने अपने ऊपर ले लिये।

एक साल बाद धन के लालची एक रिटायर्ड पुलिस इन्स्पेक्टर ने केलु मिस्तरी की विधवा कुजम्मु से शादी कर ली। कोरप्पन न फिर वहाँ ठहरना उचित नही समझा, इसलिए उसने अपना एक अलग मकान बनवा लिया।

एक बरस बीतते ही कोरप्पन ठेकेदार की प्रगति दिन-दूनी रात-चौगुनी होने लगी। सरकारी ठेको के अलावा रेलवे के बडे ठेके भी कोरप्पन को मिले। कई सनद प्राप्त इजिनियर उसके नीचे काम करने लगे।

आठ वर्ष के अन्दर कोरप्पन ठेकेदार शहर का एक बडा अमीर हो गया।

बाईस साल पहले जमीदार की मार-पीट बर्दाश्त कर जब देहात छोडकर भागा था तब उसने प्रतिज्ञा की थी कि ऊँचे घराने की एक खूबसूरत औरत से शादी कर उसको साथ लेकर ही वह भविष्य मे वहाँ की मिट्टी मे पैर रखेगा।

कोरप्पन को लगा कि उस प्रण को अमल मे लाने का मौका आ गया है। उसने अपने लिए वधू को ढूँढ़ने की व्यवस्था की।

पुलिस सुपरिंटेन्डेन्ट दफ्तर के व्यवस्थापक के पद से अवकाश-प्राप्त कुजबु नायर को कोरप्पन कॉन्ट्रैक्टर ने अपनी सस्था के मैनेजर के रूप मे नियुक्त किया था। कुजबु नायर ने बताया कि पूर्व दिशा मे कण्णन मजिस्ट्रेट की एक बेटी है। देखने मे खूबसूरत है। कान्वेण्ट मे पढकर मेट्रिक्युलेशन पास हो गयी है।

कोरप्पन ने कण्णन मजिस्ट्रेट के यहाँ अपनी शादी की बात पर विचार-विमर्श करने के लिए कुजबु नायर को ही भेजा।

बडे सरकारी अफसरो और वकीलो से विवाह के प्रस्ताव लगातार उन दिनो आ रहे थे। ऐसे मौके पर ही कोरप्पन ठेकेदार का दूत वहाँ पहुँच गया।

कण्णन मजिस्ट्रेट ने कोरप्पन ठेकेदार को अपने मन के कठघरे मे चढाकर उस पर विचार किया। अमीर है—लेकिन पढाई और फैशन नही है। ऊँचे समाज मे कोई स्थान नही होगा। कुल की महिमा भी नही। पर अमीर है, बडा अमीर।

एक सप्ताह के सोच-विचार के बाद कण्णन मजिस्ट्रेट ने अपना फैसला लिख भेजा। निम्नलिखित शर्तों को अगर वह स्वीकार करे तो शादी की अनुमति दी जाएगी।

एक, प्रतिश्रुत वर प्रतिश्रुता वधू के नाम दस हजार रुपये बैंक मे जमा करने के बाद उसकी पासबुक प्रतिश्रुता वधू के पिता के हाथ मे सौंपे।

दो, वधू को कपडे-लत्तो के अलावा पचास अशर्फियाँ दे। शादी के दस दिन पहले प्रतिश्रुत को वधू के पिता को ये चीजे सुपुर्द करनी होगी।

तीन, शादी के खर्च मे आधा हिस्सा प्रतिश्रुत वर को वहन करना होगा।

इतने प्रतिष्ठित घराने के मजिस्ट्रेट की बेटी को अपनी पत्नी बनाने के लिए कोरप्पन ठेकेदार इन शर्तों से कई गुना अधिक खर्च करने के लिए तैयार था। मजिस्ट्रेट को शर्तों की स्वीकृति की सूचना तुरन्त दे दी गयी।

अपनी निविदा की स्वीकृति की सूचना मिलने पर कोरप्पन ठेकेदार खुशी से फूला न समाया।

इस प्रकार कोरप्पन ठेकेदार और कण्णन मजिस्ट्रेट की बेटी मीनाक्षी की शादी धूमधाम से सपन्न हुई।

बाईस वर्षों के बीच कोरप्पन के पुराने मोहल्ले मे कई परिवर्तन आ गये थे। कोरप्पन के पुराने ज़मीदार मालिक की जायदादो को बेच दिया गया था। कई मुकदमो मे फँसकर ज़मीदार की जायदादो की तबाही हो गयी थी। ज़मीदार की दुलारी बेटी की शादी नजदीक के गाँव के अधिकारी के पुत्र से सपन्न हुई। लेकिन वह धूर्त शराबी और शैतान निकला। अधिकारी का विचार करके ही लोग चुपचाप रहते थे, पर अधिकारी की मृत्यु होने पर वहाँ की हालत नाजुक हो गयी। आखिर सभी जायदादो को बेच दिया गया। ज़मीदार के जामाता के तीन बच्चे है। अब वह होमियोपैथी इलाज कराकर दिन बिता रहा है।

ज़मीदार के जामाता के घर के निकट चट्टानो से भरा एक बड़ा अहाता है। इसे कोरप्पन ठेकेदार के लिए खरीदा गया।

एक दिन शाम को एक शानदार इक्कागाडी उस अहाते मे आकर रुक गयी। गहनो से लदी एक खूबसूरत औरत इक्कागाडी से नीचे उतरी। पीछे काला कोट और टोपी पहने कोरप्पन ठेकेदार भी उतरा।

हरिजन स्त्रियाँ उकडूं बैठी काले पत्थरो को तोड रही थी। वह काम एकाएक बन्द हो गया। ठेकेदार मालिक के आगमन की सूचना देने के लिए गोलियो का तीन बार विस्फोट किया गया। (डायनामिट बत्तियो मे आग लगाकर टीलो को तोडने की आवाज़ भी।)

कान्वेण्ट की शिक्षा प्राप्त होने पर भी मीनाक्षी 'क्यारि' के बारे मे कुछ भी नही जानती थी। काले टीलो को तोडने, इन पत्थरो को पुन टूक-टूक करने और फिर सिमेण्ट के साथ मिलाने की प्रक्रिया कोरप्पन ने अपनी प्रियतमा को विस्तार से बतायी। मीनाक्षी ने उसकी बातें ध्यान से सुनी।

उस समय नज़दीक के अहाते के टूटे बाड के निकट दो लडके आकर खडे हो गये। इन बच्चो ने सोने के आभूषणोवाली महिला और कोट और टोपी पहने मालिक को गौर से देखा। छोटा लडका आम खा रहा था। उसका रस छाती से

नीचे बह रहा था। बडे लडके के ओठ के निकट आग लगाने के निशान की तरह कुछ दाग लगा था।

दोनो लडको ने मैले पाजामे पहने हुए थे। लगता है कि टाट के टुकडो से ही बनाया गया था।

ये दोनो जमीदार की दुलारी बेटी के बेटे थे।

अहाते के बडे महल का बाहरी हिस्सा टूट-फूटकर गरीबी का निशान प्रस्तुत कर रहा था। छत की तबाही भी हो गयी थी। हर कोना पख पसारकर उडने की कोशिश कर रहा था। उस महल के गन्दे कमरे के भीतर से जमीदार की दुलारी बेटी छिपकर देखती होगी—कोरप्पन ने यो अदाज लगाया। हाँ, वह देख ले—अच्छी तरह आँखे फाडकर देख ले।

उन बदसूरत लडको का बुरा हाल देखने और टूटे-फूटे महल को देखने पर भी कोरप्पन के मृदु हृदय मे कोई हमदर्दी नही हुई। बाईस बरस पहल मुझे नगा करके बांस की छडी से निर्मम हो मार-पीटकर तडपान का दृश्य उस बेटी ने क्या मजे से देखा नही था? अब इस दृश्य को देखकर मैं भी मजा उठाऊँ। एकाएक कोरप्पन के मन मे विचार कौध गया कि उस दण्ड के फलस्वरूप ही मै आज इस हालत मे पहुँचा हूँ।

अगर जमीदार उस दिन मुझे इस तरह दण्ड नही देता तो क्या मै इस देहात को छोडकर चला जाता? इसी वजह से मैं आज की हालत म पहुँच गया था। एक तरह से उसी औरत ने ही मुझे तरक्की के रास्ते पर भाग जाने को मजबूर किया था। चिन्ताएँ खतरे की तरह बढती देखकर उसने मुडकर अपने कोट की जेब से सोने की घडी निकालकर समय देखा। उसने अपनी पत्नी से कहा, "ओह! पाँच बज गये। छह बजे रेलवे के मैनेजर साहब से एक अपाइण्टमेंट है। वह तो मै एक-दम भूल गया।"

सफेद घोडेवाली नीले रग की वह इक्का-गाडी घण्टी बजाती हुई पश्चिम के शहर की तरफ दौड गयी।

कोरप्पन किस्मत का धनी है। उसने पैसे का ख्याल किये बिना ही शान-शौकत का ध्यान रख अच्छी रकम देकर अपनी वधू को खरीदा था। अपने दाम्पत्य मे पत्नी का प्रतिकरण कैसे होगा, कोरप्पन को इस बात का डर था।

धीरे-धीरे वह समझ गया कि इस प्रकार के भय की कोई जरूरत नही है। वह एक सामान्य गृहिणी की तरह ही बर्ताव करती है। उसे जरा भी घमण्ड नही है। नयी छतरी खरीदते समय और नयी वधु को चुनते समय शील-गुण पर अधिक ध्यान देना चाहिए। मीनाक्षी मे वह गुण जरूरत से ज्यादा है।

कोरप्पन-मीनाक्षी के एक सन्तान हुई सौदामिनी।

दो साल पहले कोरप्पन ठेकेदार अतिराणिप्पाट के एक कोने के अपने पुराने

अहाते मे एक बडा भवन बनाकर वहाँ रहने लगा था। अपने दाम्पत्य की याद को बनाये रखने के लिए कोरप्पन-मीनाक्षी का नाम जोडकर उस घर का नाम 'कोरमीना' दिया गया।

यह विचित्र नाम केकडा गोविन्दन ने ही दिया था।

5 नया दुश्मन

गणित का 'होमवर्क' करने के लिए श्रीधरन बीच-बीच मे अपने सहपाठी नारायणन नपियार की मदद लेता। दुबले-पतले हाथो और गड्ढे मे पडी हुई आँखो एव लम्बे रोम से भरे कानोवाले नारायणन नपियार को मज़ाक मे छात्र 'चकवा' उपनाम से पुकारते। चूँकि वह गणित मे बडा प्रवीण है इसलिए वह कृष्णय्यर को भी हराने की जी तोड मेहनत करता।

नपियार मलयालम मे अच्छा न था। गणित के सवालो को कर देने के बदले मे श्रीधरन नपियार को मलयालम निबन्ध लिख देता। इस तरह आपसी सहयोग की योजना शुरू हो गयी। नपियार के घर से ही अक्सर यह सहयोग चलता। नपियार की स्मरण-शक्ति अजीब है। एक दफा लिखा निबन्ध अगर वह दो बार पढ ले तो स्मृति से कुछ भी छोडे बिना किसी भूल चूक के वह उसकी नकल कर देता। लेकिन गणित मे श्रीधरन की बात ऐसी न थी।

गणित के सवालो का जवाब लिखते समय नारायणन नपियार मज़ाक से पूछता, "अरे श्रीधरन, परीक्षा-हाल मे तेरे निकट नारायणन तो नही रहेगा। ऐसी हालत मे तेरी दस उँगलियाँ गिनकर खतम हो जायँ, तो तू क्या करेगा ?"

एक दिन शाम को नारायणन नपियार के घर मे जाने पर उसने मेज पर एक नया मलयालम मासिक देखा। मुखपृष्ठ पर 'कवनदर्पण' (कविता-मासिक) छपा था। श्रीधरन ने उत्सुकता के साथ पृष्ठ उलटे। इसमे सुप्रसिद्ध लोगो की और नये व्यक्तियो की ढेर सारी कविताएँ छपी थी।

उत्सुकता से मासिक पढते श्रीधरन की तरफ देखकर नपियार ने कहा, "कविता की मैगज़ीन लिये एक महाशय निकले थे। आज सुबह उठने पर उस व्यक्ति का ही शकुन देखा। हाथ मे एक थैली लटकाये वह आँगन मे खडा था। मैंने समझा कि पापड बेचनेवाला कोई चेट्टियार है। इसलिए अपनी सेठानी को पुकार-कर पूछा, "क्या पापड चाहिए हैं ?"

उस समय आँगन मे खडे महाशय ने पूछा, "क्या यहाँ मास्टर नही हैं ?" उसकी आवाज़ सुनकर बडे भाई बरामदे मे आये। थैलीवाले की अदब से अगवानी कर वे उसे अन्दर ले गये। फिर दोनो को कुछ साहित्यिक बातचीत करते सुना। बडी देर बाद मैगज़ीन की एक प्रति इधर देकर वार्षिक चन्दा तीन रुपये कबूल

कर थैली लटकाये वे इधर से अपन रास्ते चले गये।

श्रीधरन ने मैगजीन मे सरसरी निगाह से देखा। प्रथम पृष्ठ पर सपादक का नाम छपा था। कवनदर्पण – सपादक सी० सी० नबीशन।

नारायणन नपियार ने जरा ईर्ष्या के साथ जारी रखा, "मै क्या कहूँ। भैया की एक दिलचस्पी देख लो। वे चमगादड की तरह लटकनेवाली एक पुरानी छतरी लेकर ही स्कूल जाते है। क्या वे तीन रुपये देकर एक नयी छतरी नही खरीद सकते ? उस थैलीवाले को देने की जरूरत ही क्या थी ?"

(नारायणन नपियार का बडा भाई रामुण्णि नपियार म्युनिसिपल स्कूल का अध्यापक है।)

"अरे, वह सपादक कहाँ रहता है ?" श्रीधरन ने अपने उद्देश्य को मन मे छिपाते हुए कहा।

"क्या उस थैलीवाले को देखने की इच्छा है ?"

नपियार ने मजाक के लहजे मे बताया, "ओ, मैं भूल गया। तू भी एक कपि है न ? चला जा वहाँ ! वह कोविलक अहाते के मन्दिर के तालाब की पश्चिम दिशा मे ही रहता है—उसने भैया को यही बताया था। जाते समय तू वार्षिक शुल्क तीन रुपये जेब मे रख लेना।"

"ओ—मैंने तो यो ही पूछा था ?" श्रीधरन ने निस्सग होकर कहा।

"क्या तेरे पास तीन रुपये है ?'

"नही तो।"

"हो तो हम लॉज मे जाकर 'बिरियाणी' खाएँगे। थैलीवाले को देने की जरूरत ही क्या है ? मेरे पढने के बाद तू पत्रिका यहाँ से ले जा सकता है।"

"चकवा" की तरकीब के बारे मे क्या कहना है। कविता का नाम सुनते ही 'चकवा' को जुकाम और खाँसी आने लगती।

'लागरित' और 'पेरम्युटेशन एण्ड कोबिनेशन' ही गणित मे उसके 'वसत तिलक' और 'उपेन्द्रवज्रा' हैं।

नपियार ने सलाह जारी रखी, "अरे कविता लिखना छोड दे। नियोरम पढ। नही तो तेरा भविष्य अधकारमय हो जाएगा।"

"भविष्य के बारे मे कोई भी भविष्यवाणी नही कर सकता।" एक दार्शनिक की तरह श्रीधरन ने कहा।

वहाँ से वापस आने पर श्रीधरन के मन मे सुदूर भविष्य के बारे मे कोई विचार नही था। फिलहाल लिखी एक नयी कविता ही उसके मन मे उभरी आ रही थी। बारिश के मौसम के बारे मे 'पर्जन्य गर्जन' नामक कविता वसत-तिलक छन्द मे चौबीस श्लोको मे लिख डाली थी। वह 'कवन दर्पण' मे प्रकाशित करे तो…

सुबह होते ही सपादक से मिलने जाना है ।

उस दिन रात को अतिराणिप्पाट और कन्निप्परपु चैन की नींद मे मग्न थे।

श्रीधरन ऊपर के बरामदे मे मेज पर रखे दीपक को जलाकर कुर्सी पर बैठ गया। उसने मेज की दराज से फिजिक्स नोटबुक बाहर निकाल ली। 'पर्जन्य गर्जन' को उसके अन्दर छिपाकर रखा था।

कविता-कामिनी को पुन एक दफा सजाने का मोह वह सवरण नही कर सका। 'पर्जन्य गर्जन' नामक शीर्षक सेठ की पगडी की तरह वजनदार है। उसे बदलकर 'मेघ गर्जन' रख दिया।

'कवन दर्पण' का सपादक पुरानी पीढी का विद्वान होगा। सस्कृत शब्दो से अधिक मोह होगा। कुम्हडा कूष्माण्ड क रूप मे देखने पर ही बाल पके कवियो को तृप्ति मिलनी है।

पिताजी का पुराना सस्कृत-अग्रेजी शब्दकोश दीवार की टाँड मे रखा था। उसे मेज पर रख लिया। फिर 'मेघ-गर्जन' पढने लगा।

शब्दकोश की सहायता से कई मलयालम शब्दो को सस्कृत शब्दो म बदल दिया। यो कविता के बोझ को जरा बढा दिया।

उस समय धोबियो की गली से कृष्णप्पन के कीर्तन की सुरीली आवाज आने लगी।

सुबह को 'कवन दर्पण' सपादक के दर्शन करने के लिए 'मेघ-गर्जन' को जेब मे डालकर घर से निकला। निकलते समय पिताजी न पूछा, "अरे, श्रीधरन सुबह-सुबह कहाँ चला?"

"नारायणन नपियार के घर।" तुरन्त जवाब दिया।

(सपादक से मिलकर वापस आते समय नारायणन नपियार के घर जाने का निश्चय किया, ताकि पिताजी से जो झूठ कहा था उसे वह धो सके।)

कोविलक अहाते की पूर्व दिशा मे मन्दिर के कुएँ के नजदीक पहुँच गया। पश्चिम दिशा मे एक घर अलग ही दिखाई दिया। शायद वही सपादक का घर होगा।

तालाब से नहाने के बाद वापस जानवाले एक लडके से पूछा, "अरे बिट्टू, 'कवन दर्पण' के सपादक का घर वही है?"

वह लडका गुमसुम रहा। वह अपने पिछले हिस्से की शिखा को जरा हिलाकर चुपचाप खिसक गया।

फिर किसी से भी पता नही लगाया। साहस जुटाकर वहाँ चला गया।

आँगन मे इधर उधर देखा। आधे खुले हुए दरवाजे मे झाँककर अन्दर देखा। लगा कि अन्दर एक द्वन्द्व-युद्ध चल रहा है। एक आदमी घुटने टेके, सिर झुकाए उघडा बैठा है। एक औरत उसकी पीठ पर कुछ कर रही है। ध्यान से देखने पर

समझ गया कि वह औरत मर्द की पीठ पर तेल मलकर मालिश कर रही है।

समय और संदर्भ का स्मरण किए बिना श्रीधरन ने आँगन से पुकारकर पूछा, "क्या यह संपादक जी का घर है? संपादक जी हैं?"

मालिश करनेवाली औरत ने मुड़कर देखा। (फिर दोनों के बीच कुछ गुप-चुप बातें हुई होंगी।)

औरत ने दरवाज़े की तरफ आकर श्रीधरन को देखा।

उसने कहा, "नहाने जा रहे हैं। बरामदे में बैठिए।"

दरवाजा बन्द कर वह भीतर गायब हो गयी।

श्रीधरन बरामदे में चढ़ गया। वहाँ एक पुरानी कुर्सी के अलावा और कोई फर्नीचर नहीं था। सम्पादक की कुर्सी को बड़ी इज्जत के साथ देखकर श्रीधरन बरामदे के तख्त पर जाकर बैठ गया।

मालूम हुआ कि संपादक आधे घण्टे में नहाने के बाद आएँगे।

श्रीधरन ने जेब से 'मेघगर्जन' लेकर फिर पढ़ा। कहीं छन्द में कोई गड़बड़ी तो नहीं रह गयी?

एक-एक पंक्ति के अक्षरों को जपकर आँखें मूँदकर उँगली से गिनने लगा। नहीं, कोई गड़बड़ी नहीं है।

संपादक जी स्नान और पूजा के बाद ललाट पर चन्दन का टीका लगाकर कान में तुलसीदल रख बरामदे में आये।

श्रीधरन बड़े अदब के साथ तख्त से उठ खड़ा हुआ।

एक संपादक का रक्तमांस-युक्त विग्रह पहलेपहल ही वह नजदीक से देख रहा था। वह श्रद्धा-भाव से हाथ जोड़कर खड़ा हुआ।

संपादक ने श्रीधरन को गौर से देखा। आगंतुक के चेहरे पर हलकी सी निराशा की झलक आयी। शायद अंदाज लगाया होगा कि कम उम्र का नौजवान होने पर भी अमीर घर का होगा। उसके लिए श्रीधरन का सिल्क शर्ट, हाथ की सोने की घड़ी, जेब से झाँकनेवाली रोल्ड गोल्ड क्लिप की कलम प्रमाण थे।

संपादक का सिर देखने पर श्रीधरन को हँसी आयी। उस गंजे सिर के चारों तरफ सफेद बालों की लटें थीं। उसे देखने पर लगा कि अतिराणिप्पाट की धोबिन मालुक्कुट्टि जिस हाँडी में कपड़े उबालकर रखती थी, मानो उसके चारों तरफ से सफेद धुआँ ऊपर उठ रहा है।

"कौन हैं? कहाँ से आये हैं?" संपादक ने पूछा।

श्रीधरन को एक संपादक से बातचीत करने का ढंग मालूम नहीं था। पहले कुछ सकपकाया फिर कहने लगा

"मैं—मैं इस शहर में रहता हूँ 'कवन दर्पण' के बारे में ढेर सारी बातें सुनी हैं। संपादक जी से मिलने आया हूँ।"

"खैर, 'दर्पण' देखा है ?

सपादक तौलिये से कुर्सी की धूल पोछते हुए वहाँ बैठ गया।"

"कवन दर्पण' का पिछला अक देखा है।

"कहाँ देखा था ?"

"रामुण्णि मास्टर के घर।"

"हाँ, मास्टर मेरा एक पुराना मित्र है।"

बातचीत आधे क्षण को रुक गयी। फिर कुछ विचार कर सपादक ने भाषण जारी रखा

"फिलहाल मासिक को चलाने मे बडी तकलीफ है। खासकर साहित्य-मासिक का प्रकाशित करने मे—इससे भी मुश्किल है एक कविता-मासिक का प्रकाशन करना। कैरली की सेवा मे जिन्दगी को होम देनेवाले मरे जैसे लोगो की तकलीफो को जाननेवाला है ही कौन ? (सपादक ने गजे सिर को सहलाते हुए श्रीधरन की तरफ दखा) 'दर्पण' का वार्षिक चन्दा अदा करने आये होगे। सालाना चन्दा सिर्फ तीन रुपये है।"

श्रीधरन जरा सकपकाया। जो कहना चाहता था उसे उसने अपने आप निगल लिया।

"हाँ, मै ग्राहक बनूँगा। अभी एक कविता लेकर ही आया हूँ।"

श्रीधरन का हाथ जेब के 'मघगजन' की तरफ चला गया।

सपादक का चेहरा एकदम पीला हो गया। हाथ की उँगलियाँ गजे सिर स नीचे आ गयी।

नाक के रोम को नोचते हुए सपादक ने पूछा

"अच्छा, कविता लिखते हो ?"

"कभी-कभी।"

"क्या नाम है ?"

"श्रीधरन।"

"सिर्फ श्रीधरन ?"

"नही, सी० श्रीधरन—चेनक्कोतु श्रीधरन।"

सपादक ने नाक से रोम खीच लिया। फिर उसको गौर से दखा।

"किसी मासिक मे कविता प्रकाशित हुई थी ?" (सवाल रोम से था।)

"मेरी दो-तीन रचनाएँ राजा कालेज मासिक मे प्रकाशित हुई थी।"

सपादक नाक का रोम उँगली से दबाकर खामोश रहा।

"मेरी कविता अगर दर्पण मे "

"दे दो, देखूंगा।"

श्रीधरन ने 'मघगर्जन' को सपादक के हाथ म थमा दिया।

कविता पढकर सपादक जी बीच-बीच मे सिर हिलाने लगे। श्रीधरन ने चेहरे के भाव को ताडने की कोशिश की। कुछ अजीब भावो का स्फुरण था।

श्रीधरन छाती फुलाकर खडा रहा। उन्नीस वर्ष पूर्व अतिराणिप्पाट मे जन्मे अभिनव श्रीधरन कवि की पहले-पहल पहचान करनेवाले सपादक महाशय, भविष्य के इतिहासकार आपको हर्गिज़ नही भूलेंगे

श्रीधरन ने देखा कि सपादक की आँखें एक छन्द पर उलझ गयी है। झाँककर देखा—हाँ, वही छन्द है। निशाना ठीक जगह पर ही लगा है।

'उच्चण्ड मारियिलटिच्चोरु वातयाले

उच्चालित बद झटिद्रुलता समूह '

छन्द के अश 'झटिद्रुलता समूह' पर ही सपादक की आँखें लगी थी। श्रीमान् को शायद झटिद्रु का अर्थ मालूम नही हुआ होगा। (झटि पौधा। द्रु पेड। झटिद्रु - पेड-पौधे।)

सपादक-कुर्सी से उठकर धीरे-धीरे भीतर चला गया।

शायद शब्दकोश से 'झटिद्रु' का अर्थ निकालने गया होगा।

अरे सपादक महोदय, श्रीधरन कवि के पाण्डित्य के बारे मे क्या समझते हो?

तभी सपादक की भीतर जाकर झगडा करने की आवाज़ सुनाई दी।

"कुछ लिखने की कोशिश करूँ तो चीजें जगह पर दिखाई नही देगी। अरी, कहाँ चली गयी मेरी पेंसिल?"

श्रीधरन ने उस ओर ध्यान दिया। सपादक जी शब्दकोश के लिए नही, एक पेंसिल लेने के लिए अन्दर गये थे। (एक कलम तो मेरी जेब मे है। शायद उसने उस पर ध्यान नही दिया होगा।)

आखिर दरवाज़े के एक छोर पर टटोलने से एक इच लम्बी एक पेन्सिल मिली। उसको लेकर वह वापस लौट आया।

"कलम प्रेस से लेना भूल गया।" श्रीधरन को सुनाने के लिए फुसफुसाते हुए सपादक ने पुन कुर्सी पर बैठकर 'मेघगर्जन' को कुर्सी के हाथ के तख्ते पर रखा। (सपादक ने जो पेन्सिल अपनी उगलियो मे ले रखी थी उसका सिरा जूँ के मल की तरह लगता था।)

फिर सपादक ने श्रीधरन के कागज की कविता के 'झटिद्रुलता समूह ' के पहले 'द' के नीचे एक छोटे-से कीडे की तस्वीर खीची। फिर उसके ऊपर 'त' नामक एक तितली को भी खीचा। फिर जोर से घोषणा की "बद नही, बत। द नही—त—त—त "

मुँह को एक बडी ककडी की तरह खोलकर त—न -त—बकनेवाले नबीशन के मुँह पर एक झापड देने की ख्वाहिश हुई। त—त—त—तेरा बाप

नबीशन ने गजी खोपडी को खुजलाते हुए श्रीधरन की कविता का कागज हाथ

मे पकडे हुए कहा, "मैं पूरी कविता एक दफा पढकर देखूँगा। कल शाम को आ जाओ। (फिर एक खास बात का स्मरण कराते हुए कहा) 'दर्पण' का वार्षिक चन्दा तीन रुपये है ।"

नबीशन को एक निस्सग प्रणाम करने के बाद श्रीधरन ने बरामदे से अन्दर की तरफ तिरछी आँखो से देखा। वह एकदम पसोपेश मे पड गया। महज एक कच्छी पहने एक छोटी-सी लडकी दरवाजे के नजदीक से गौर मे देख रही थी।

दरवाजे पर पहुँचने पर मुडकर देखा। उसकी पत्नी सपादक की कुर्सी के नजदीक दिखाई पडी। नबीशन ने कथकलि मुद्रा म इशारा किया कि कुछ भी नही मिला।

अगले दिन तीन रुपये लेकर 'कवन दर्पण' सपादक के यहाँ नही गया। उसके बदले उसने एक मगल-श्लोक लिखकर सपादक के नाम डाक से भेज दिया

"कवन दर्पण !—कैरली देवी तन
चरण सेवनत्तिन्नाय समर्पण—
कवन दर्पण—पुत्तन कविकल तन
कवित्त चेर्क्कुवान—मुनकूर वरिप्पण।"

—सी० श्रीधरन

('कवन दर्पण' कैरली देवी की चरण-सेवा के लिए ही समर्पित है। लेकिन इसमे नये कवियो की कविताएँ प्रकाशित करने के लिए चन्दा अग्रिम देने की जरूरत है।)

साहित्य मे ऊँचे स्तर का एक साप्ताहिक शहर से प्रकाशित हो रहा था।

राजा कालेज के निकट एक नपूतिरि के घर म ही साप्ताहिक का सपादक राजा ठहरा था। जमीदार वर्ग की अपनी पत्रिका 'वसुन्धरा' का सपादक पडित मूस्सतु भी उस घर मे रहता था। नपूतिरि—राजा—मूस्सतु त्रिमूर्ति के उस घर का नाम 'स्वर्ग मन्दिर' है।

इस बीच श्रीधरन वसुन्धरा गोपालन नायर से परिचित हो गया। गोपालन 'स्वर्ग मन्दिर' का प्रधान नौकर है। सुबह नपूतिरि वकील के लोगो पर ध्यान रखना, मूस्सतु को पान-सुपारी खरीदकर देना, 'वसुन्धरा' अखबार के प्रकाशन होने पर रेपर और टिकट चिपकाकर पता लिखने के बाद डाक-घर ले जाकर पोस्ट करना और रात को साप्ताहिक के सपादक राजा के प्रेस मैटर की जाँच करते समय पानी देना—ये सब गोपालन नायर के काम हैं। 'वसुन्धरा' अखबार से निकट सम्बन्ध होने के कारण ही गोपालन नायर को 'वसुन्धरागोपालन नायर' का नाम मिला था।

गोपालन नायर साप्ताहिक के सपादक राजा का वैतालिक है। वह प्रतिदिन सपादक महोदय के पाण्डित्य, कुलीनता और हास्य-व्यग्य के बारे मे मोहल्ले-भर मे पैदल चलकर प्रचार-प्रसार किया करता।

शाम को दफ्तर से स्वर्ग मन्दिर मे लौट आते समय साप्ताहिक के सपादक राजा के हाथ मे कविताओ, कथाओ और लेखो का एक बडा पुलन्दा होता। रात को बारह बजे से लेकर एक बजे तक वह मैटर पढते। उसे भुनी हुई कुलथी खिलाने और सोठ का गरम पानी बीच-बीच मे पिलाने का फर्ज गोपालन नायर का था। वह कमरे मे ही रहता। गोपालन नायर रद्दी की टोकरी मे फिकी कविताओ और कथाओ को चुन-चुनकर पढ़ते हुए मजा लेता और नीद हराम कर साप्ताहिक तपुरान की सेवा करता।

श्रीधरन ने बीच-बीच मे वसुन्धरागोपालन को चाय पिलायी थी। उसका खास उद्देश्य था। एक छोटी कहानी लिखकर साप्ताहिक मे भेजी थी। बडे रहस्यपूर्ण ढग से इस बात की सूचना उसने गोपालन को दी थी। उस कथा के भाग्य के बारे मे जानने की तीव्र इच्छा से ही उसने उसे अपना बना लिया था।

एक दिन शाम को कालेज से वापस आते समय रास्ते मे अचानक वसुन्धरा गोपालन से भेट हो गई। गोपालन ने हँसते हुए पूछा, "बाप और बेटा है न ?"

श्रीधरन के मन मे शहद का काँटा चुभ गया।

साप्ताहिक के लिए वही कहानी भेजी थी—'बाप और बेटा'

तब मेरा साहित्य वहाँ तक पहुँच गया है।

"अरे, गोपालन नायर, प्रकाशित हो जायेगी क्या ?"

"श्रीधरन, कुछ नही कहा जा सकता। विचाराधीन है।" वसुन्धरा नायर ने जवाब दिया।

वसुन्धरा गोपालन को वह मणि अय्यर के ब्राह्मणाल होटल मे ले जाकर पकवान खरीदकर देता।

"गोपालन नायर, क्या वे प्रकाशित करेंगे ?"

"अभी तक कुछ नही कहा जा सकता। विचाराधीन है।"

हमेशा की तरह का जवाब मिलता। तीन हफ्ते के बाद वसुन्धरा नायर से मिला।

वह पत्रो का बण्डल लेकर साइकिल से डाक-घर जा रहा था।

श्रीधरन को देखते ही वह साइकिल से उतरा। फिर उसे नजदीक बुलाकर, चेहरे पर एक अद्भुत रस लाकर उसने कहा, "श्रीधरन, मैंने तुम्हारी कहानी पढी है।"

श्रीधरन के कलेजे में जहर का एक काँटा चुभ गया।

वसुन्धरा नायर के पढने का अर्थ कहानी को रद्दी की टोकरी मे फेंक देना है।

श्रीधरन को तसल्ली देने के लिए वसुन्धरा ने जोड दिया, "मैंने सपादक महाशय से प्रार्थना की थी कि वह होनहार युवक है। किसी न किसी तरह साप्ताहिक मे छपाना है। तब तबुरान ने पूछा, "किस कहानी के बारे मे कहता है ?"

"सी० श्रीधरन की कहानी—बाप और बेटा। तब तबुरान ने स्मरण किया फिर उन्होने अच्छी चुटकी लेकर कहा "

वसुन्धरा सिर ऊपर उठाते हुए मुँह मे पानी भरकर हँसी से लोट-पोट होने लगा।

"सपादक ने क्या कहा था ?" श्रीधरन ने आशा और निराश के बीच लाचार होकर पूछा।

हँसी को रोकते हुए वसुन्धरा ने आखिर सपादक की बात कही

"बाप और बेटा' है न ?—एक गधा भी चाहिए।"

इस कहानी के उद्भव के इतिहास का श्रीधरन ने स्मरण किया।

एक खूबसूरत गोरा अन्धा था। वह चीटी के समान मोटा सिर और पतले शरीरवाले एक लडके के साथ भीख माँगने कन्निप्परपु मे आया करता था। उस अन्धे का लडका था वह कुट्टिच्चात्तन।

उस अन्धे और लडके के सम्बन्ध को लेकर एक कहानी लिखने की इच्छा हुई।

पूर्व के मन्दिर के त्योहार मे आतिशबाजियो के विस्फोट से आँखें नष्ट होनेवाले एक चात्तु से परिचय था। इस त्योहार के दिन ही चात्तु की पत्नी ने एक मुन्ने को जन्म दिया था। अब वह दस वर्ष का हो गया है।

शहर के एक अस्पताल के प्रसव-वार्ड मे घटित ऐसी एक घटना के बारे मे किट्टन मुशी ने जो बात कही थी, उसका स्मरण मन मे ताजा था।

एक अमीर नमक-व्यापारी नाटार की पत्नी ने अस्पताल मे एक बच्चे को जन्म दिया। प्रथम प्रसव था। बच्चा मर गया था। तभी वहाँ एक और प्रसव हुआ। एक भिखारिन ने एक अच्छे मुन्ने को जन्म दिया। भिखारिन की हालत खतरनाक थी। नाटार मालिक ने नर्सों को घूस देकर अपने मुर्दे बच्चे को और भिखारी के बच्चे को आपस मे बदलवा दिया। ये नाटार दपती दुलारे बच्चे के साथ तमिलनाड् चले गये। भिखारिन की बीमारी कुछ अर्से बाद दूर हो गयी। जब उसे मालूम हुआ कि उसने एक मृत बच्चे को पैदा किया था तब वह बडी देर तक रोयी।

इन तीन घटनाओ के घटकों को मिलाते हुए एक नयी कहानी गढने की कोशिश की गयी थी।

कहानी इस प्रकार है। उम्मतु मन्दिर का त्योहार। आधीरात को आतिशबाजियाँ फूटने लगी। मन्दिर के निकट के एक अहाते मे चन्दोमन ने एक चाय की दूकान खोली थी। आतिशबाजियो के विस्फोटो के बीच चन्दोमन के चेहरे के सामने एक विस्फोट हो गया। इससे चन्दोमन की दोनो आँखे चली गयी। उसका चेहरा जल गया। उस समय चन्दोमन की पत्नी कुजिप्पेण्णु प्रसव-पीडा से लाचार

हो पडी थी। कजिप्पेण्णु की बुरी हालत देखकर मोहल्लेवालो ने उसको अस्पताल मे पहुँचा दिया।

अस्पताल के प्रसव-वार्ड मे एक अमीर गुजराती सेठ की पत्नी ने एक मुन्ने को पैदा किया। इस बदसूरत बच्चे के नाक, आँख, मुँह आदि बेढगे थे। देखने मे भयावना मालूम होता। बच्चे की शक्ल और तबीयत देखकर उसका बाप चमगादड के लहजे मे रोया।

उस मुहूर्त मे चन्दोमन की पत्नी कुजिप्पेण्णु ने अपस्मार रोग-सी हरकते करते-करते मुन्ने को जना था। वह एक खूबसूरत बच्चा था।

सेठ ने नर्सों को घूस देकर कुजिप्पेण्णु के बच्चे को छीन लिया। उसके बदले अपने बदसूरत बच्चे को वहाँ रख दिया। सेठ और पत्नी इस सुन्दर बच्चे के साथ बम्बई चले गये।

अन्धे चन्दोमन ने सेठ के कुरूप बेटे को अपना समझकर उसका पालन पोषण किया।

वह कुरूप बेटा आगे चलकर चन्दोमन के लिए एक अनुग्रह सिद्ध हुआ। चन्दोमन आज उस लडके का हाथ पकडे मारा-मारा फिर रहा है। उस अन्धे को और इस बदसूरत लडके को एक साथ देखकर लोगो को बडी हमदर्दी होती। वे भिखारी को कुछ अधिक पैसे दान देते।

अन्धा चन्दोमन और दस वर्ष का लडका 'कुजिमोन' लक्ष्मीविलास बँगले मे भीख माँगने आये तो वहाँ का मरीज कृष्णमेनोन चन्दोमन को बिठाकर कुछ सवाल पूछने लगा। दस वर्ष पहले मन्दिर के त्योहार म आतिशबाजी के विस्फोट मे उसकी आँखे नष्ट होने, अस्पताल से पत्नी कजिप्पेण्ण के अपस्मार रोग से पीडित होकर मर जाने के पहले कुजिमान को जन्म देने और कुजिमोन को पाल-पोसकर बडा करने की दास्तान चन्दोमन ने कृष्णमेनोन को सुनायी।

कृष्णमेनोन की पत्नी लक्ष्मिक्कुट्टि भी नजदीक बैठकर अन्धे की कहानी ध्यान से सुन रही थी।

कहानी का पहला हिस्सा इसी प्रकार था। दूसरे भाग म लक्ष्मिक्कुट्टि ही कहानी कह रही है। सेठानी के कुरूप मुन्ने और कुजिप्पेण्णु की खूबसूरत औलाद को अस्पताल से बदल देने के षड्यन्त्र मे नर्स लक्ष्मिक्कुट्टि ने एक प्रधान भूमिका अदा की थी। फिर वह कृष्णमेनोन की पत्नी बनकर इस घर मे आयी है।

इस कथानक को कई बार लिखकर अपेक्षित सशोधनो के साथ नय वर्णन जोडकर दस दिन मे पूरा किया था।—'बाप और बेटा' शीर्षक से ही इसे सपादक को भेजा था।

इस कहानी के बारे मे साप्ताहिक के सपादक राजा ने यह राय जाहिर की है कि इसमे एक गधे की भी जरूरत है।

श्रीधरन इस मजाक को बर्दाश्त नही कर सका।
उसी दिन साप्ताहिक राजा के नाम एक पत्र लिखकर भेज दिया।

मान्य महाशय,

मेरी 'बाप और बेटा' कहानी पढने के बाद उसमे एक गधे को भी शामिल करने की राय आपने जाहिर की थी। उस रिक्त स्थान को भरने के लिए आप तो वहाँ है ही।

धन्यवाद।

भवदीय,
सी० श्रीधरन।

श्रीधरन के दुश्मनो की गिनती अब तीन हो गयी। चील, गणित और तीसरा (नया शत्रु) सपादक-वर्ग।

6 लगान और कविता

श्रीधरन के गोपालन भैया की तबीयत दिन-पर-दिन बिगडने लगी। शरीर की खुजली और फोडो के फैलने के बाद गोपालन भैया फिर पनचिरक्कावु के वैद्य को दिखाने गया। वैद्य ने एक बेहतर औषधि दी। उसमे ग्रथिक के अलावा कुछ और जडी-बूटियाँ भी थी। उसने एक भस्म भी दी। नतीजे से मालूम हुआ कि औषधि का असर कम नही था। उसे पीकर कुछ दिनो के अन्दर खुजली कम हो गयी। लेकिन उसके साथ गोपालन भैया की नसे थक गयी थी। कमर के नीचे का शरीर बलक्षय के कारण सुन्न पड गया था।

उस असाध्य गुह्य रोग के इलाज के लिए कोरक्कुट्टि वैद्य के यहाँ 'उष्ण विनाशिनी ऑयल' (यू० वी० ऑयल) नामक एक औषधि थी। एरड के तेल मे कुछ जडी-बूटियो का रस मिलाकर ही इस तेल का निर्माण होता है। उन्हे बोतलो मे भरकर यू० वी० ऑइल का लेबल चिपकाकर वह बेचता। गुह्य-रोग से आक्रान्त मरीज उस तेल को खरीदकर उसे पीने के उपयोग मे लेता है। लम्बे अर्से के बाद खून का मलिन अश घटने लगता। लेकिन वह लम्बी अवधि तक चलते रहनेवाले इलाज की योजना है। यदि कोई सुने कि अमुक आदमी यू०वी० ऑइल चिकित्सा मे है तो लोग उस आदमी की बीमारी का अन्दाज लगा लेते। इस बीमारी का शिकार होने पर अप्पुण्णि की तरह अतिराणिप्पाट के अधिकाश लोग उसका ढिंढोरा पीटकर चलनेवाले नही थे। इसलिए अतिराणिप्पाट शैली मे 'काटनेवाला जहरीला नाग' समझने पर नौजवान लुक-छिपकर एक छोटे वैद्य को दिखाते। शहर के कोने कोने मे खुजली और गुह्य रोगो को शीघ्रातिशीघ्र इलाज कर दूर करनेवाले स्पेशलिस्ट डाक्टरो ने डेरा डाल रखा था। अपनी सामर्थ्य को दिखाने के लिए ये श्रीमन्त

पहले एक प्रभावशाली औषधि देते। इससे रोग का बाह्य लक्षण अचानक गायब हो जाता। रोग के बीज खून मे समाकर रह जाते। फिर दूसरे रूप मे ही इन विष बीजो का अचानक आक्रमण हो जाता।

गोपालन भैया की हालत भी इसी तरह की थी। पनचिरक्कावु का वैद्य भी इस ढग का एक आदमी था।

खुजली बिलकुल दूर नही हुई। शरीर काला हो गया। पैर थक गये। लेकिन गोपालन भैया के चेहरे पर बीमारी का कोई चिह्न नजर नही आया। इतना ही नही, लगता था कि उसके चेहरे पर शरीर के अन्य भागो के सौन्दर्य और ताजगी ने डेरा डाल दिया है। काले मुलायम बालो को सँवारकर दाहिनी ओर रखकर, विशाल ललाट, सुन्दर आँखे, लम्बी और छोर पर जरा मुडी हुई नाक, लाल-लाल ओठ, केवडे के फूल का-सा गाल बाहर निकाले सूखे शरीर और थके पैरो को एक कपडे से ढककर बरामदे के एक छोर पर दीवार के निकट बिस्तर पर लेटे गोपालन भैया को देखने पर अक्सर मुझे ऐसा लगता था, मानो नारायणी पुरुष का वेश धारण कर आ गयी हो।

पिताजी ने देहात के वैद्यो को लाकर दिखाया। प्रत्येक वैद्य अलग ढग से रोग के बारे मे बताता। उसके अनुसार काढा, गोलियाँ, तेल आदि बनाये गय। कुछ जडी-बूटियो की तलाश मे श्रीधरन को इधर-उधर चक्कर लगाना पडा।

एक वैद्य के इलाज से बीमारी दूर नही होती तो दूसरे को लाया जाता। वद्य पैर मे तेल लगाकर मालिश करने की आज्ञा देता। फिर कई दिनो तक यह इलाज जारी रहता।

पिताजी ने इस इलाके के प्रसिद्ध ज्योतिषी उण्णिप्पणिक्कर को लाकर गोपालन भैया की जन्मपत्री की जाँच करायी। पणिक्कर ने कहा, "पूर्वजन्म मे एक पुण्य नाग को छडी से मार डाला था। उसका पाप फल रहा है। साप की तरह रेंगना पडेगा।"

पणिक्कर ने जो कहा वह ठीक है।

बीमार होने पर भी गोपालन भैया ने अपन अभिमान और लाज-शरम को नही छोडा। मौसी हमदर्दी के साथ बिना कुछ बोले उसकी सेवा-शुश्रूषा करने को तैयार थी। फिर भी पाखाने के लिए अहाते मे ही वह जाता। हाथ को जमीन पर टेककर कमर से पैरो को आगे बढाकर साँप की तरह रेंग-रेंग कर ही वह आगे बढता।

उण्णिप्पणिक्कर ने परिहार भी बताया। साँपो की प्रीति के लिए कुछ-न-कुछ करना होगा।

मरुतिक्कावु मे एक सौ मुर्गी के अण्डो की मनौती की। साँपो के त्योहार की भी मिन्नत की गयी। अन्य कुछ कावो (मन्दिरो) मे चाँदी के नागो की प्रतिमाएँ

दी गयी।

अवकाश के समय श्रीधरन भैया के नजदीक जाकर बैठता। गोपालन भैया की बीमारी की शुरूआत के दिनो मे मित्रो की बडी भीड-भाड थी। फिर उनका आना-जाना कम ही हुआ। फिलहाल कोई कभी-कभी ही आता।

कालेज लाइब्रेरी से उपन्यास और कविता की पुस्तकें लाकर वह गोपालन भैया को सुनाता। गोपालन भैया को कविता से ही अधिक रुचि थी, खासकर कुमारनाशान की कविताओ से।

"हाय ! प्यारे फूल तुझ पर
भी पडे यमराज के कर
लो, दयाहीन वे कर !
कर्म जिसका, हनन होता
वह शिकारी भी कभी क्या
भेद करता गिद्ध और कबूतर मे ?"

'वीणपूवु' का वह छन्द पढने पर गोपालन भैया की आँखें गीली हो गयी थीं। उस समय श्रीधरन भी कुछ-कुछ भावुक हो आया।

खूबसूरत, सच्चरित्र और स्नेही गोपालन भैया को इस प्रकार मार गिरानेवाला भगवान निष्ठुर है।

कालेज लाइब्रेरी से कुमारनाशान की किताबें लाने लगा। आशान की कविताओ से परिचित होने मे श्रीधरन को नया जोश मिलने लगा।

गोपालन भैया को मालूम नही था कि श्रीधरन भी कविताएँ रचता है।

एक शनिवार की सुबह श्रीधरन गोपालन भैया ने नजदीक बैठकर आशान की 'नलिनी' पढ रहा था। श्रीधरन की-सी व्युत्पत्ति गोपालन भैया मे नही थी। अत कुछ काव्याशो का अर्थ और सार श्रीधरन बताता। श्रीधरन जो कुछ नही समझता वह टिप्पणी से समझ लेता।

"निज निज कर्मों के चक्कर मे पड
फिरते रहते जीव करोडो सीमाहीन।
बीच-बचाव की गति मे आपस मे
मिलनेवाले अणु गण है हम।"

इस काव्याश की अर्थ ठीक तरह से व्याख्या करने मे श्रीधरन सकपका रहा था। तभी एक आदमी आते हुए दिखाई पडा। शकुण्णि मेनोन था।

श्रीधरन अपने पिताजी के बाद शकुण्णि मेनोन का ही अधिक आदर करता था। वह म्युनिसिपल लगान वसूल किया करता था।

शकुण्णि मेनोन की वेशभूषा कृष्णन मास्टर की तरह है। एक धोती, बन्द गले का कोट, काली टोपी, चप्पल, छतरी, चश्मा, लालट पर मकडी की तरह का

एक तिलक, कान मे एक पेन्सिल और बगल मे लगान की एक किताब। लगान वसूल करनेवाली किताबो के बडे बण्डल को ढोता एक लडका भी साथ होता।

लगान अदा न करने पर माँ-बाप, भाई और उस आदमी को घर से निकाल कर, दरवाजा बन्द कर मुहर लगाने का हक उस सरकारी नौकर शकुण्णि मेनोन को है— ऐसी एक धारणा बचपन से ही श्रीधरन के मन मे थी। अब तो यह डर नही रह गया है, पर शकुण्णि मेनोन के प्रति जो आदर था वह भी कम नही हुआ।

शकुण्णि मेनोन अपने कन्धे की किताब उठाकर उँगली पर थूक लगाकर बीच-बीच मे पृष्ठ उलटते और जल्दी से 'कन्निप्परपु' के घर का कागज फाडकर दे देते। उस समय उसे स्वीकार करने म श्रीधरन को बडा उत्साह होता था। वह उस लगान के कागज़ मे लिखी बातो को ध्यान से पढता। सबसे पहले यह कागज़ 'यह रसीद नही' की चेतावनी ही देते दिखाई पडता। एक विज्ञप्ति है। हर-एक कालम मे अदा करनेवाली लगान की रकम और कुल रकम की सख्या इसमे स्याही से लिखी गयी होती। उसमे लिखे हुए एक किस्म के लगान के बारे मे श्रीधरन कुछ भी नही जान सका। 'पानी और ड्रैनेज का लगान'—एक बार पिता जी से पूछा। कृष्णन मास्टर ने स्पष्टीकरण दिया, "पाइप वाटर और गन्दे नालो के लिए ही यह लगान वसूल करता है।"

लडके को फाटक पर रोककर शकुण्णि मेनोन आँगन मे आया।

कृष्णन मास्टर तेल लगाय एक तौलिया पहनकर कुदाल से अहाते म खाद रहे थे।

शकुण्णि मनोन अब लगान का पैसा वसूल करन के लिए ही आया है। पैसा अदा करन की मुहलत गुज़र गयी थी।

कृष्णन मास्टर कुदाल नीचे रखकर फुर्ती से आगन मे आय।

"शकुण्णि मेनोन, अगले हफ्ते मे आइए। तब पैसे का बन्दोबस्त कर यहा रखूँगा।" कृष्णन मास्टर ने माफी मागन के लहजे मे कहा।

शकुण्णि मेनोन जरा हिचकिचाकर खडा रहा। कृष्णन मास्टर मे वह हठ नही कर सकता था। लेकिन एक बार कहने पर मास्टर उसका जरूर पालन करते।

शकुण्णि मेनोन ने अपना सिर हिलाया फिर बरामदे की तरफ निगाह घुमायी।

"क्या बेटे की बीमारी दूर नही हुई ?"

कृष्णन मास्टर ने विषादभरे स्वर मे कहा, "बीमारी मे अधिक सुधार नही हुआ है।" फिर उन्होने इलाज करनेवाले वैद्य और पीनेवाली दवाओ के बारे मे विस्तार से बताया।

यह सुनकर शकुण्णि मेनोन ने कुछ विचार कर अपने चेहरे को ज़रा मोड़ा, फिर कहा, "मुरिगवट्टतु एक वैद्य है—एक मूस्सतु। वात-चिकित्सा के लिए बड़े मशहूर हैं। उन्हें एक बार दिखा दो।"

गोपालन भैया अभी रामुण्णि वैद्य के इलाज में है। चौदह गाँठ का काढ़ा, जड़ी-बूटी का एक पेस्ट भी। सात दिन बीत गये। उसका कोई नतीजा नहीं हुआ। सात गाँठ और भी पीनी होगी।

कृष्णन मास्टर ने यह किस्सा शकुण्णि मेनोन को नहीं बताया।

"मूस्सतु के हाथ में एक सिद्ध भस्म है—पक्षवात फौरन दूर हो जावेगा" शकुण्णि ने मुड़कर देखते हुए कहा।

"ज़रूर दिखाऊँगा एक बार।" कृष्णन मास्टर ने सिर हिलाया।

"ख़ैर, अगले शनिवार को मिलेंगे।" लगान की बात पुनः एक दफा याद दिलाते हुए शकुण्णि मेनोन चला गया।

आगामी शनिवार।

श्रीधरन बरामदे में बैठकर एक कविता लिख रहा था।

प्रकृति के प्रतिभासों की प्रशंसा करके एक नयी कविता रची थी। उसकी थोड़ी-बहुत पंक्तियाँ लिखी गयी हैं।

'जहाज आया' कविता को शीर्षक दिया।

अपने सिर के बालों को सहलाते हुए वह आखिरी दो पंक्तियों का आशय ढूँढ रहा है।

"श्रीधरन, जल्दी जा। नीचे जाकर बता शकुण्णि मेनोन आ रहा है, उससे कहो कि पिताजी यहाँ नहीं हैं। जल्दी जाओ। नहीं तो गोपालन सच-सच कह देगा।"

श्रीधरन सकपकाकर खड़ा रहा। जहाज़ की कविता मेज पर ही थी। अगर पिताजी उसे देखेंगे तो छिपाने की कोशिश करना और भी खतरनाक है।

वह तुरन्त सीढ़ियाँ उतरकर नीचे बरामदे में पहुँच गया। शकुण्णि मेनोन फाटक से आ रहा था।

श्रीधरन ने गोपालन भैया को इशारा करके बताया कि कुछ भी नहीं कहना है।

रसीद की किताब कन्धे पर लटकाये शकुण्णि मेनोन आँगन में आकर खड़ा हो गया। "क्या मास्टर नहीं है?"

"नहीं, सुबह ही कहीं निकल गये।" श्रीधरन ने बिना झिझक के कहा।

"क्या लगान का पैसा यहाँ रखा है?" मेनोन ने पूछा।

"मुझे नहीं मालूम। माँ से पूछकर अभी बताता हूँ।"

श्रीधरन ने कमरे के दरवाजे की ओट में कुछ देर छिपकर खड़े रहने के बाद

रसीद-बुक फैलाकर खडे हुए शकुण्णि मेनोन को बताया, "नही, माँ ने कहा कि इधर कुछ भी नही रख गये हैं।"

शकुण्णि मेनोन ठिठककर खडा हो गया।

फिर वह ललाट और ललाट की मकडी के अण्डे को सिकोडकर ज़रा कर्कश स्वर मे बोला, "लगान का पैसा अदा करने की मुहलत बीते दो महीने हो गये।"

रसीद की किताब उसने अपन कन्धे पर लटकायी।

"मैं परसो आऊँगा। पिताजी मे कहो कि हर्गिज नही भूलना चाहिए। पैसे यही रखकर ही कही जाये।"

श्रीधरन न सिर हिलाया।

शकुण्णि मेनोन ने बरामदे मे देखा।

"क्या मुरिंगवट्टतु मूस्सतु को दिखाया था ?"

श्रीधरन ने ही उसका जवाब दिया, "माँ ने कहा है कि पिताजी सुबह वैद्य को लाने के लिए मुरिंगवट्टत्तु ही गये थे।"

बाबूजी ने शकुण्णि मेनोन को पिलाने के लिए जिस झूठ का काढा तैयार किया था, उसमे श्रीधरन ने ज़रा चीनी डाल दी।

शकुण्णि मेनोन ने उसका आस्वादन कर सिर हिलाया। फिर वह चलने लगा। फिर मुडकर गोपालन भैया को देखकर ज़ोर से उपदेश दिया, "मूस्सनु के भस्म के लिए पथ्य की प्रधानता है। सुना रे ?"

गोपालन भैया के चेहरे पर एक अपूर्व मुस्कुराहट थिरक गयी।

शकुण्णि मेनोन फाटक से उतरकर पगडडी से दूर पहुँच गया।

"तेरा अभिनय और बातचीत बढिया थ।" गोपालन भैया ने श्रीधरन को बधाई दी।

श्रीधरन शान के साथ हँस पडा। फिर अचानक उसका चेहरा मुरझा गया।

पिताजी मेरी 'जहाज' कविता पढते होगे। पाठ पढे बिना फिर कविता का काम शुरू करते देखकर वे अब चुपचाप नही रहेगे।

पिताजी एक बेंत लाये थे। उसकी प्रथम पूजा आज हो जाएगी।

धडकती छाती के साथ वह सीढियाँ चढ गया। बाबूजी एक कोने मे छिपकर खडे थे।

"वह गया ?"

श्रीधरन से भी अधिक घबराहट कृष्णन मास्टर के चेहरे पर थी।

कृष्णन मास्टर ने तेल मलकर कुदाल उठाकर व्यायाम करते समय ही शकुण्णि को दूर से आते देखा था। तभी लगान के पैसे की बात का स्मरण हो आया। महीने का आखिरी सप्ताह है। तनख्वाह नये महीने मे ही मिलेगी। गोपालन के इलाज के लिए बहुत अधिक पैसे खर्च करने पडे। हाथ मे पैसे न थे। फिर भी शकुण्णि

मेनोन की मुहलत की बात की याद करके अपने वादे को निभाने के लिए किसी से उधार माँगता। अब मै कैसे उसका मुँह देखूँ ?

छिपना ही भला है बुद्धि ने सलाह दी, लेकिन असत्य का सवाल है। मन फुसफुसाया।

कोई चारा न था। अपने सत्यव्रत-भग का जिम्मेदार शकुण्णि मेनोन को मानकर उसे मन मे कोसते हुए मास्टर कुदाल फेंककर दौड गये। वह सीधे ऊपर के बरामदे मे गये। और विवश होकर एक झूठा सदेश अपने बेटे को देकर उसे नीचे भेज दिया। फिर मास्टर घबराकर इन्तजार करते रहे।

"गया—गया—परसों आने को कहा है।" श्रीधरन ने अपने डर और आशका को छिपाते हुए कहा।

कृष्णन मास्टर ठण्डी साँस खीचते हुए बरामदे से चले। 'कुट्टिमालु के गहनो को गिरवी रखकर भी परसो पैसा देना होगा' स्वगत की तरह फुसफुसाता हुए वह सीढियाँ उतरकर नीचे गये।

श्रीधरन ने भी एक लम्बी साँस छोडी।

अन्दर घुसकर देखा। 'जहाज़' कविता वही पडी थी।

क्या पिताजी ने उसे देखा होगा ?

शायद उन्होने देखा होगा। फिर क्यो खरी-खोटी नही सुनायी ?

श्रीधरन को याद आया कि बाबूजी ने मेरे चेहरे की तरफ नही देखा था। अपनी जीभ से अपने पुत्र को झूठ कहने की प्रेरणा ,जिस पिता ने दी थी, वे कैसे उसके चेहरे पर ताकते ?

नही, शकुण्णि मेनोन के प्रश्न की घबराहट के बीच मेज़ की जाँच करने की सुविधा उन्हे नही मिली होगी।

जो भी हो, एक बडी आँधी से मेरा जहाज बच गया है। श्रीधरन ने अपनी अपूर्ण कविता 'जहाज़' को पुन एक बार पढा

"काल जलधि मे दौड लगाती
नील रजनी की नाव
खग विनोद के मजुल लगर की
साकल की रुनझुन के साथ
आ लगती लो, सोनिल ऊषा के नौघर मे।
झिलमिलाते दूर कुछ
भुरकुआ, दीपिका-गृह।
उस पार कही से इस नाव नौघर मे
आ लगी जादू-भरी इस नाव मे
हैं तो नये माल, मणि-मणिक ही नही,

काजल है, चन्दन है
हिम सा है मजुल श्वेताम्बर रेशमी ।
भाड के भांड सपने हैं इसकी
निचली मजिल मे पूरे के पूरे ।"

इतना ही लिखा था। सिर के बालो को पकडकर उगलियो से घुमाते हुए सोचा। और फिर कविता की इस प्रकार पूर्ति की—

'हजारो करो से लूटते हो क्या—
ये माल, तुम हे नभ-नाथ ?'

7 जयमोहन

कालेज जाते हुए, सुबह के समय कभी कभी उसे रास्ते मे दिखाई पडती थी।

हरे रग का घाघरा, सफेद ब्लाउज, छाती पर ढेर सारी पुस्तको का बोझ ढोते हुए

नायक की दृष्टि पहले पैरो को चूमनवाले घाघरे के निचले हिस्मे पर उलझती, फिर क्रमश अन्य-अन्य हिस्सो पर उठती जाती। अग्रेजी सचित्र मासिक के पृष्ठो को पकडनेवाले सुन्दर हाथो पर आँखे थोडी देर अटकी रहती। उसके दूसरे हाथ मे छोटी-सी एक छतरी होती। छतरी की मूंठ आम की गुठली की तरह थी।

मन्दिर के कोने मे पहुँचने पर नजदीक के पट्टर मठ के फाटक पर तनिक खडा हो जाता। वहाँ से एक रास्ता कालेज की तरफ और दूसरा गर्ल्स हाई स्कूल की ओर मुडता।

एक शुक्रवार की सुबह अच्छे मुहूर्त म उसने अतिराणिप्पाट के कोने से उसका पीछा करने का इरादा किया। उसका पीछा करता वह मन्दिर के कोने तक पहुँच गया। नायिका हमेशा की तरह पट्टर मठ के फाटक पर रुक गयी। उसके साथ ही नायक की गति भी रुक गयी।

कौवो को उडानेवाली छडी लिये आँगन मे एक चटाई पर बिछे अनाज की रखवाली करनेवाली पट्टर मठ की ब्राह्मणी ने, (जो सोने की नथुनी पहने हुए एक अधेड औरत है) बरामदे से अन्दर झाँककर कहा, "अरी, तकमणि लीला बदाच्चु—"

(तकमणि उसकी सहपाठिनी होगी।)

नायक नजदीक की एक स्टेशनरी दूकान के सामने रुक गया।

"क्या पेन्सिल है ? पेरुमाल चेट्टि वायलट पेन्सिल ?"

दूकानवाले बुजुर्ग नायर ने 'नहीं' के अर्थ मे सिर हिलाया।

दस सूखे पानो और चार सोडा बोतलो के साथ समय गुजारनेवाले उस बूढे की दूकान मे अच्छा स्टेशनरी का सामान नही होगा, यह जानते हुए ही उसने

पूछा था।

पट्टर मठ से हरे घाघरेवाली ने मुडकर देखा। दोनो की तिरछी आँखें टकरायी। बस, वह तृप्त हो गया। उद्देश्य पूरा हुआ।

हृदय मे एक गीत सजो वह कालेज की ओर चला।

कालेज मे पहुँचने पर एक अच्छी खबर मिली। गणित के प्राध्यापक रगनाथ अय्यगार छुट्टी पर हैं—चेचक के कारण।

वह लाइब्रेरी मे गया।

कालेज लाइब्रेरियन कुन्निकृष्ण मेनन ने मुस्कराते हुए श्रीधरन का स्वागत किया। गोरे-चिट्टे, दुबले-पतले, प्रसन्नचित्त कुन्निकृष्ण मेनन साहित्यिक रुचि भी रखते है। श्रीधरन से उन्हे विशेष स्नेह है। कालेज मासिक मे प्रकाशित उसकी कविता पढकर सबसे पहले श्रीधरन को बधाई देनेवाले मान्य व्यक्ति कुन्निकृष्ण मेनन थे।

"आशान की लीला " श्रीधरन ने माँगी।

अलमारी खोलकर पुस्तक निकालते समय कुन्निकृष्ण मेनन ने अपना विचार प्रकट किया, "मुझे लीला से भी अधिक नलिनी पसन्द है।"

श्रीधरन की राय भी वही है। लेकिन अभी उसे लीला की ही जरूरत है।

"प्रणय विह्वला तेरे शुभ हो
उठ जाग, है प्रियतम तेरे एक ठौर मे।"

ये पक्तियाँ दस बार पढी। रोगटे खडे हो गये। क्रान्तिदर्शी आशान को प्रणाम किया।

शाम हुई। मधुर प्रतीक्षा के साथ वह कालेज से बाहर आया। मन्दिर के कोने की पगडडी के नजदीक पहुँचते ही उसे गति कम करनी पडी। कालेज और गर्ल्स हाईस्कूल से मन्दिर के कोने की दूरी बराबर है। उसे लगा वह कालेज से एक खरगोश की तरह दौड आया है। फिर कछुवे की तरह हौले-हौले चलने लगा। पगडडी के दोनो ओर लगे पौधो को निहारते हुए वह मन्दिर के कोने पर पहुँचा तो देखा कि वह पूर्व दिशा से आ रही है।

पश्चिम के सूरज ने उस सडक पर लाल रेशमी कपडा बिछा दिया था।

उसके साथ तकमणि भी थी। वह साधारण नाक-नक्शवाली पतली देह की लडकी है।

ब्राह्मण लडकी अपनी सखी से ठिठोली करती हँसती हुई मठ के फाटक से चली गयी।

हरे घाघरेवाली सिर नीचा किये पश्चिम दिशा की ओर चलने लगी।

एक कोने मे इतजार करनेवाले नायक को उसने जरूर देखा होगा। महाकवि ने ठीक ही लिखा था—

'अपने इष्ट जनो का रूप निहारने
होती सूक्ष्म निगाहे ललनाओ की।'

हरे घाघरेवाली के पीछे धड़कता हुआ दिल लिये वह भी चल दिया। इस तरह चलते हुए कटहल के पत्तो के पीछे जीभ हिलाकर चलनेवाली बकरी की तस्वीर की याद ताज़ा हो आयी। इस पर उसने अपने को कोसा। (अनावश्यक सदर्भों से ही मन मे इस तरह के विचार उठते है।)

अगर कृष्णन को नही देखता तो हरे घाघरेवाली के पीछे अनजाने ही अतिराणिप्पाट की सीमा को पार कर दूर पहुँच जाता।

अतिराणिप्पाट के मोड पर मोटी कुकुच्चियम्मा के घर का नौकर कण्णन एक ट्रैफिक कान्स्टेबिल की तरह खडा था।

"स्टॉप !" कण्णन ने हाथ हिलाकर कहा।

"मैं तुम्हे देखने के लिए ही इधर खडा हूँ।"

"कुकुच्चियम्मा ने घर जाने को कहा है।"

"क्या कोई खास दावत है वहाँ ?"

"कुकुच्चियम्मा का भाई कणारन मिस्तरी मोहल्ले से आया है। इस उपलक्ष्य मे भोज है वहाँ।"

"प्रीतिभोज मे क्या-क्या होगा।"

"चाय और पकवान हमारे सघ के सभी लोगो को निमन्त्रित किया है।"

(हमारा सघ ! सप्पर सफर सघ मे एक बार ही वह आया था। और कहता है कि हमारा सघ)

"वासु भैया, केलुक्कुट्टि भैया और बढई माधवन भी वहाँ हैं। ये लोग कालेज से तुम्हारे आने की प्रतीक्षा कर रहे है।"

"तू चला जा। मै अभी आऊँगा।"

"जल्दी आना।"

"हाँ।"

कण्णन दौडकर चला गया।

पश्चिम दिशा की ओर उसने फिर निगाह डाली। पीछे से आ रही फूस से भरी एक बैलगाडी धीमी गति मे उस ओर चली गयी। इस गाडी ने हरे घाघरेवाली को ओझल कर दिया। फूस की गाडी के आने का अपशगुन ! अब उसे एक नज़र-भर देखने के लिए सोमवार तक इतजार करना होगा।

कन्निप्परपु पहुँचकर उसने मेज पर किताबे रख दी। फिर कुछ सोचकर एक नोटबुक को उठाते हुए वह सीधा रसोईघर मे माँ के पास आया। "मै नारायण नम्पियार के घर जा रहा हूँ।"

"तुझे चाय नही पीना है ?" माँ ने पूछा।

"नही, नपियार के घर पी लूंगा।"

हड़बडी मे वह बाहर आया।

गोपालन भैया पैर मे कोई दवा मलकर लेटा है। (अभी गोपालन भैया कुन्नलवि मास्टर के इलाज मे है।)

पिताजी नही आये। वे पुलिक्कश कुन्नम्मद हाजी के बच्चो की ट्यूशन करने जाते थे। आठ बजे के बाद ही वापस लौट पाते।

मोटी कुकुच्चियम्मा के घर तक पहुँचने पर टी-पार्टी शुरू हो चुकी थी।

"माइनर आ रहा है।" श्रीधरन को देखते ही केलुक्कुट्टि ने दरवाजे की ओर इशारा करते हुए कहा।

(उन्नीस वर्ष का होने पर भी सप्पर सफर सघ मे श्रीधरन अब भी माइनर ही है। भले ही वह सीनियर इन्टरमीडियेट मे पढ रहा है।)

मोटी कुकुच्चियम्मा का भाई कणारन मिस्तरी उत्तर के मुक्कलश्शेरी से आ पहुँचा है। वह अपनी बहन को देखने और मुक्कलश्शेरी के अपने नये घर के लिए शहर मे फर्नीचर का सामान खरीदने के लिए ही आया है।

कणारन मिस्तरी की मुक्कलश्शेरी मे दर्जी की दूकान है। उस दूकान मे तीन सिगर मशीनो पर चार सिलाईवाले काम करते थे। कणारन मिस्तरी एक दुबला-पतला आदमी है। भाई-बहिन एक साथ खडे होने पर '10' के अक की तरह लगते।

वहाँ उस्ताद वासु, बढई माधवन और दामू थे। (बालन कमर मे एक फोडे की वजह से चल नही सकता था। विलयम साहब की मेम साहिबा के कुछ कपडो पर इस्त्री करने की व्यग्रता होने के कारण 'काली बिल्ली' ने प्रीतिभोज मे भाग लेने की अपनी असुविधा की सूचना भिजवा दी थी।) दामू सघ का एक नया सदस्य है। शहर मे एक मुसलमान की कपडे की दुकान मे असिस्टेंट का काम करनेवाले दामू को 'बैल' का उपनाम मिला था। क्योकि दामू कभी-कभी मुस्लिम होटल मे जाकर बैल का मास खाता था।

कुकुच्चियम्मा ने टी-पार्टी मे चार-पाँच पकवान तैयार किये थे। अतिराणिप्पाट के देशीय पकवान 'छठ नम्बर' (अमरीकन रवे के छोटे पापड नारियल के तेल मे भूनकर उस पर चीनी डालकर तैयार किया गया पकवान) के अतिरिक्त मुसलमानो का पकवान मण्डा (चावल का पाउडर, रवा, अगेर, बदाँ, गुड आदि को नारियल के तेल मे भूनकर बनाया गया), कलन्तप्प (चावल की एक प्रकार की रोटी), आदि पकवान थाली मे परोस दिये गये।

खाते समय कणारन मिस्तरी और दामू किसी चर्चा मे मग्न हो गये। इसी सन्दर्भ मे श्रीधरन वहाँ आ पहुँचा।

कणारन मिस्तरी कह रहा था, "एक सौ नारियल के फूलो के गुच्छो की तरह

है वह।"

दामू ने जवाब दिया "वह तो अधिकारी का प्यारा जयमोहन है।"

"वह मिले तो "

"देख लिया मेरे कणारन का मोह। आसमान के चाँद को पकडना इससे आसान है।" ककुच्चियम्मा ने अपना विचार प्रकट किया।

श्रीधरन की पकड मे बात आयी। चाप्पुण्णि अधिकारी के आँगन के सफेद 'प्रिन्स ऑफ वेल्स' पौधे के बारे मे बातचीत हो रही थी।

अधिकारी के आँगन को चार चाँद लगा देनेवाला सफेद प्रिन्स पौधा शहर-भर मे मशहूर है। उसकी सुन्दरता देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते है। एक आदमी की ऊँचाई मे पले उस डठल के चारो ओर समृद्ध लम्बे पत्ते—एक अद्‌भुत दृश्य है। ऐसा लगता कि आँगन मे एक बडा मोर अपने पख फैलाकर खडा है।

काठ के गोदाम के मालिक हाजी ने एहसानमन्द होकर चाप्पुण्णि अधिकारी को यह पौधा भेट किया था। एक बडे पीपे मे मिट्टी भरकर उस पौधे को बोया था। उस पीपे के साथ ही इस विशिष्ट पौधे को एक ठेले मे चढाकर अधिकारी के घर पहुँचा दिया था। चार-पाँच आदमियो ने उठाकर इसे घर के सामने लगा दिया था। सौन्दर्य के अलावा सौभाग्य के लक्षणवाला यह पौधा पौधो का राजकुमार है। इसके पहुँचने के दस महीने बाद ही अधिकारी के यहाँ एक बेटा पैदा हुआ। (उससे पहले उसकी सात लडकियाँ थी।)

पालतू जानवरो को लोग नाम से ही पुकारते है। पर, क्या किसी ने पौधो को नाम से पुकारते हुए सुना है? चाप्पुण्णि अधिकारी ने सफेद 'प्रिन्स' को वात्सल्य के कारण 'जयमोहन' नाम दिया है।

इस नाम के पीछे भी एक इतिहास है। लडका पैदा होने पर उसे 'जयमोहन' के नाम से पुकारने की अधिकारी की ख्वाहिश थी। मगर सफेद प्रिन्स मिलने पर उसने यह नाम इस दुलारे पौधे को दे दिया। फिर दस महीने बाद मुन्ने का जन्म होने पर पौधे से भिन्न नाम बेटे को दे दिया 'वत्स राजन'।

सुबह उठने पर अधिकारी शुभ-शगुन मे जयमोहन को देखता। वह तोंद को सहलाते हुए मुस्कराकर कुशल-क्षेम पूछता, "कैसे हो बेटा जयमोहन?" उसकी खूबसूरती देख वह खुशी से फूला न समाता। उसके सफेद मुलायम पत्तो को सहलाता। कही पत्ते मे कोई धूल न लगे, इस ख्याल से हर पत्ता ध्यान से देखने लगता। अगर कही धूल होती तो एक मुलायम कपडे से उसे बडी सावधानी से हटाता।

अगर कोई मजाक नही करे तो सुबह को पानी सीचने के बदले वह गाय का दूध डालता।

चाप्पुण्णि अधिकारी के इस प्रिय सफेद प्रिन्स पर ही कणारन मिस्तरी की आँखें लगी थी। कुकुच्चियम्मा के कहे अनुसार आसमान का चाँद लाने की कोशिश

करना इससे आसान है।

"टेलर मास्टर सुनो !" रोटी का कौर चबाते हुए उस्ताद वासु ने एक घोषणा की।

कणारन मिस्तरी का कौर मुँह मे ही रुक गया।

"दो आने देने पर मै अधिकारी के पौधे की चोरी करके लाऊँगा।"

मिस्तरी ने समझा कि वासु झूठ बोल रहा है।

"वह वह मिले तो मै दो-सौ रुपयें देने को तैयार हूँ।"

"दो-सौ और तीन-सौ की जरूरत नही।" वासु ने कुछ चबाते हुए कहा।

"दो आने काफी है, दो आने। समझे ! अधिकारी के जयमोहन को पकड़कर मिस्तरी के सामने पेश करूँगा। नही तो मै वाच्चक्कुन्नु वासु नही।"

जब मिस्तरी को मालूम हो गया कि वासु मजाक मे नही, गम्भीरता से कह रहा है तो कणारन मिस्तरी को जरा जोश आया।

"हाथ मिलाओ !" मिस्तरी ने वासु की ओर अपना हाथ पसारा।

"पहले दो आने दो !" वासु ने भी हाथ मिलाया।

कणारन मिस्तरी ने जेब म दो आने निकालकर वासु की हथेली पर रख दिये।

वासु ने पैसा जेब म डालकर हाथ को नीचे झुकाते हुए तनिक गर्व से कहा, "लेकिन एक और शर्त है।"

कणारन मिस्तरी ने उत्कण्ठा से वासु की ओर देखा।

वासु ने कहा, "शर्त यह है कि कल रात अधिकारी के जयमोहन पौधा को इधर पहुँचते हो आधे घण्टे के अन्दर तुम्हे यहाँ से पौधे के साथ तुरन्त नदारद होना है, सुबह साढे चार बजे की ट्रेन से सीधे मुक्कलश्शेरी को।"

कणारन मिस्तरी ने यह शर्त भी मान ली।

(टेलर मास्टर पौधा मिलते ही हनुमान की तरह उडने को तैयार हो गया।)

"हाथ मिलाओ।" वासु ने हाथ पसारा।

इस तरह उस्ताद वासु और कणारन मिस्तरी ने हाथ मिलाया। उन दोनों को अपनी शर्तों पर अडिग रहते देखकर मोटी कुकुच्चियम्मा ने कहा, "बेटा, खेलते-खेलते आखिर गुरु की छाती पर सवार होने की सोच रहे हो।"

दरअसल वह खेल खतरनाक ही है। गोरे कलक्टर साहब भी शहर के मुखिया अधिकारी की इज्जत करते थे। अधिकारी अपने प्राणो से भी अधिक प्रिन्स पौधे — 'जयमोहन' से प्यार करता था। पत्थर की ऊँची दीवारो के अन्दर ही वह अहाता है। उस दीवार पर एक लाहे का फाटक है। इसके अलावा वहाँ टाइगर नामक एक खूँखार कुत्ता भी है। अपने आगे के पैरो को दीवार पर रखकर चेहरे को विकृत कर एक बार पगडडियो मे जाते समय श्रीधरन की ओर इस खूँखार कुत्ते ने आँखे फाड़कर देखा था। वह दृश्य श्रीधरन अब तक नही भूला। सोडा बोतल की स्फटिक

गोटी की तरह उसकी आँखे है। विलयम साहब के मेज के चाँदी के काँटो-जैसे उसके दाँत है। ताँबे के बर्तन को लोहे की छडी से टकराने की-सी उसकी आवाज है। उसके रास्ते से हटकर ही जाना पडेगा।

क्या यह सब भूलकर उस्ताद ने शपथ लेकर दो आने जेब मे डालकर हाथ मिलाया था?

श्रीधरन यह भी नही समझ पाया कि इस दो आने की उसे क्या जरूरत थी।

चाप्पुण्णि अधिकारी के घर पर आक्रमण करने की योजना मे शरीक होने मे श्रीधरन को और भी अवरोध थे। कृष्णन मास्टर और चाप्पुण्णि अधिकारी अच्छे मित्र है। दाक्षिणात्य बुनकरो, मोहल्लेवालो और केलचेरी मेलान के बीच के मन-मुटाव मे अधिकारी, कृष्णन मास्टर के साथ तीसरे गुट मे खडा है। इस ढग के एक प्रमुख व्यक्ति के यहाँ, चाहे वह कितना भी कजूस और शोषक क्यो न हो, चोरी करने का बन्दोबस्त हो रहा है। अगर इसका भेद खुल जाय तो इलाका छोडकर कही दूर जाने के सिवा और कोई चारा नही है।

अधिकारी के घर पर आक्रमण करने के कायक्रम के पहले दामू ने कुछ आशका जाहिर की

"वासु भैया, इसकी जरूरत न थी।" दामू न अपनी थाली खाली करते हुए कहा।

श्रीधरन ने भी जरा प्रोत्साहन दिया, "अधिकारी के घर म बाघ जैसा एक कुत्ता है।"

शक्करभात केलुक्कुट्टि ने बात काटकर कहा, "चाहे बाघ हो या बाघिन, अधिकारी के दांत तो एक बार खट्टे करने ही है।"

शक्करभात सफद प्रिन्स पौधे की चोरी करने मे नही, बल्कि अधिकारी की नाक मे दम करने मे अधिक तत्पर है। इसका खास कारण था।

छह महीने पहले एक दिन केलुक्कुट्टि की गाय दिखाई नही पडी। कई जगह उसकी तलाश की, लेकिन कुछ पता न लगा। छह-सात दिनो बाद ही मालूम हुआ कि वह अधिकारी के बाडे मे है। रात मे किसी के अहाते मे घुसकर चरने से किसी ने अधिकारी की पशुशाला म बाँध दिया था। सात दिन का भोजन का खर्च और जुर्माना अदा करने के बाद ही गाय को पशुशाला से छोडा गया था।

केलुक्कुट्टि का विचार है कि अगर अधिकारी जरा मेहरबानी करता तो एक कानी कौडी दिये बिना भी वह गाय को ले जा सकता था। इसलिए अब अधिकारी को मजा चखाने का यह अवसर वह खोना नही चाहता है।

बढ़ई माधवन भी तैयार था। उसका विचार है कि यह अधिकारी के घर पर आक्रमण नही, हजूर कचहरी का खज़ाना लूटने का कार्यक्रम है।

सब कुछ सुनकर खामोश रहनेवाले उस्ताद वासु ने आखिर घोषणा की, "कल

रात सप्पर नही करेंगे—हमे टहलना ही होगा। हम चाप्पुण्णि अधिकारी के घर चलेंगे। अगर किसी को डर है तो न आओ।"

तब माइनर और बैल के साथ सबने जोर से कहा, "आयेंगे, जरूर आयेंगे। हमे डर बिलकुल नही।"

अगले दिन शनिवार था।

एक गुप्त सैनिक आक्रमण के सही मौके की प्रतीक्षा मे बैठनवाले लेफ्टिनेंट की सतर्कता के साथ श्रीधरन बारह बजे की घण्टी बजने का इन्तजार करने लगा।

बारह बजे की घण्टी बज उठी।

घर के बरामदे के दरवाजे पर कोने की पत्थर की सीढी मे पैर रखते ही याद आया कि नीचे गोपालन भैया लेटा है।

उस पल पहले-पहल गोपालन भैया से और उसकी बीमारी से नफरत हुई।

गोपालन भैया मुझे आधी रात को चोर की तरह चुपचाप दबे पाँव उतर कर चलते देखे तो मेरे बारे म उनके मन मे बुरी धारणाएँ ही होगी। श्रीधरन को मालूम था कि मोटी कुकुच्चियम्मा के बारे मे कन्निप्परपु और पडोस के लोगो की अच्छी धारणा नही थी। इसलिए 'कुकुच्चियम्मा के घर जाना हूँ' कहने पर इससे शक ही पैदा होगा। इधर ठीक समय पर कुकुच्चियम्मा के घर मे माइनर को न देखने पर उस्ताद कहेगा, 'डरपोक कही का।' फिर वे सप्पर सघ से बाहर निकाल देंगे।

एक पल वह ठिठका-सा खडा रहा। कहानीकारो के शब्दो म 'एक निर्णायक पल।'

मुँह मोडने का सवाल ही नही उठता। श्रीधरन ने मन को दृढ करते हुए अपने-आपसे कहा, "अब चाहे जो भी हो।"

बिल्ली की तरह वह हौले-हौले पत्थर की सीढी उतरने लगा। घना अँधेरा था। गोपालन भैया की चटाई पर झाँककर देखा। वह कपडो मे लिपटा गाढी नीद मे मग्न था। कही कम्पन भी नही।

राहत पाने की एक लम्बी साँस छोडी। दीवार की ओट से फाटक की तरफ आगे बढा। पगडडी पर उतरा। दस मिनट के अन्दर वह कुकुच्चियम्मा के घर पहुँच गया।

वहाँ बढई माधवन और बैल दामू बरामदे मे बैठकर कोई काम-काज कर रहे थे। नजदीक जाकर देखा—वे दो बडे खाली बोरो को सिल रहे थे।

थोडी देर बाद हाथ मे एक पैकेट लिये उस्ताद आ पहुँचा। उसके पीछे शक्कर-भात भी। उसके हाथ मे भी एक थैला था। उसमे कोई वजनदार सामान रखा था।

"अरे, यह क्या है ?" श्रीधरन ने शक्कर-भात के थैले के अन्दर की चीज जानने की इच्छा से पूछा।

"मांत्रिक दण्ड" शक्करभात ने बहाना करते हुए कहा।

"सब तैयार हैं ?" उस्ताद ने पुकार कर पूछा।

"रेडी !" माधवन और दामू ने एक साथ उत्तर दिया।

(कणारन मिस्तरी भात खाकर पहले ही सोने लेटा था। उन्हे सुबह की गाडी से मुक्कलश्शेरी जाना है।)

उस्ताद ने हमेशा की तरह कुकुच्चियम्मा के पैर छुए। "किसी तकलीफ के बिना मेरा बेटा वापस लौट आये !" कुकुच्चियम्मा ने वासु को आशीर्वाद दिया।

सघ रवाना हो गया।

उस्ताद के हाथ मे कागज़ म लिपटा एक बडा चाकू और एक गोलाकार सामान था।

बैल के हाथ मे एक टार्च था। कन्धे पर लटका बोरे का एक थैला और एक हाथ मे रस्सी भी।

शक्करभात के हाथ मे 'मात्रिक दण्ड' था।

माइनर के हाथ मे कुछ नही था।

पगडडी से चलकर सडक पर पहुँचे। सडक की पहली बत्ती देखन पर उस्ताद ने माइनर को स्तम्भ पर चढने का आदेश दिया—बत्ती बुझाने के लिए।

माइनर ने वह काम ठीक तरह से कर दिया। इस प्रकार अधिकारी के घर की ओर मुडनेवाली पगडडी तक कोई चिराग नही जल रहा था।

अहाते के दक्षिण-पश्चिम कोने मे दीवार के बाहर सब जमा हो गये।

उस्ताद ने हाथ का पैकेट खोला। काला हलुवा था घटिया किस्म का। उस्ताद ने ऐसा जानबूझकर ही खरीदा था।

उस्ताद ने हलुवे का एक गोला बनाकर बाकी बढई माधवन को दे दिया। माधवन ने हलुआ चखते हुए कहा, "दाँत मे अटक जाता है, लेकिन स्वादिष्ट है !"

"कुत्ते की तरह भौको—भौको !" उस्ताद ने दीवार की तरफ इशारा करते हुए हुक्म दिया।

माधवन ने अपनी उँगली चाटी। फिर दीवार पर चढ गया। दोनो हाथो को दीवार पर टेककर अहाते मे गर्दन फैलाकर भौका– "भौ—भौ— भौ—"

असली देहाती कुत्तो का भौकना था।

अचानक देखा, ताँबे के बर्तनो को लोहे के मूसल से पीटने की आवाज़ मे भौकते हुए अधिकारी का टाइगर दौडकर आ रहा है।

माधवन नीचे कूदकर भाग आया। उस्ताद ने हाथ का गोला दीवार के उस पार के कोने मे फेक दिया। वह नीचे छिपकर लेट गया।

टाइगर का भौकना गुर्राटे मे तबदील हो गया—फिर आवाज़ नही निकली।

"फँस गया है।" उस्ताद ने सिर हिलाकर बताया।

"अरे माधवन, जाकर गेट खोल।" उस्ताद ने दीवार की तरफ इशारा किया।

माधवन ने खाली बोरा और रस्सी दीवार के उस पार फेंक दिये। फिर दीवार चढ़कर उस पार कूद पड़ा। उसने लोहे का फाटक खोल दिया।

उस्ताद, शक्करभात, बैल और माइनर अन्दर घुस गये।

अधिकारी के जयमोहन प्रिन्स का छतरी लिये आँगन मे खड़े होने का दृश्य अँधेरे मे भी दिखाई देता था।

प्रिन्स की पौधे की क्यारी पर उस्ताद ने सावधानी से आक्रमण शुरू किया। टॉर्च का मुँह हाथ से ढकते हुए बैल ने थोड़ी-सी रोशनी की। प्रिन्स की डालियो और पत्तो को माधवन ने समेटकर पकड़ लिया। शक्करभात ने रस्सी से उसे बाँध लिया। जब पौधे की जड़े मिट्टी के साथ एक टाट के टुकड़े मे बाँध ली गईं तब माइनर ने खाली बोरा खोलकर पकड़ लिया। एक पल के अन्दर ही जयमोहन प्रिन्स बोरे के अन्दर आ फँसे।

इस सारी प्रक्रिया मे प्रिन्स के चार पाँच पत्ते झड़ गये थे। उस्ताद ने इन पत्तो को बोरे मे डाल दिया।

"एक भी पत्ता या मिट्टी का एक कण भी आँगन मे नहीं दीखना चाहिए।" उस्ताद ने आदेश दिया।

खोदते समय नीचे गिरी मिट्टी समेटकर माइनर ने गमले मे ही डाल दी।

तब शक्करभात ने अपनी मांत्रिक-छड़ी की गाँठ खोल दी। अँधेरे मे दिखाई नही पड़ा कि वह क्या चीज़ है? श्रीधरन ने उसे पकड़कर देखा—'हाय रे' कहकर फौरन हाथ खीच लिया। उसको लगा कि नाग ने डँस लिया है। सामने और कुछ नही एक काँटेदार पौधा था। केलुक्कुट्टि ने उस कँटीले पौधे को गमले मे लगा दिया।

इस प्रकार अधिकारी से उसने बदला लिया।

तभी माधवन को उस्ताद ने हाथ का चाकू लेकर अहाते मे जाते देखा।

"अरे माधवन, यह क्यो?" उस्ताद ने पूछा।

"जरूरत है।" माधवन ने यही जवाब दिया। शक्करभात प्रिन्स को सिर पर ढोते हुए चलने लगा।

फाटक पार करने पर उस्ताद ने बढ़ई से कहा, "अरे कुछ शिष्टाचार तो दिखाओ। फाटक तो बन्द कर आओ।"

बढ़ई नारियल के पत्तो का पुलन्दा बैल को सौंपकर अन्दर से फाटक बन्दकर दीवार को पार कर बाहर उतरा।

कुकुच्चियम्मा के अनुग्रह के मुताबिक किसी तकलीफ के बिना उस्ताद और साथी कुकुच्चियम्मा के घर वापस आये। कणारन मिस्तरी जागकर उत्कण्ठा से देख रहा था। उस्ताद ने बोरे का बंधन खोलकर जयमोहन को एक बार प्रदर्शित किया।

हकलाहट के बढने के कारण कणारन मिस्तरी के मुँह से आवाज़ नही निकली। फिर प्रिन्स को बोरे मे डालकर बाँधने लगा तो बढई ने रोका। नारियल के पत्तो को बोरे के ऊपर बाँध दिया। उसने कणारन मिस्तरी को सलाह दी कि और कोई पूछे तो कहना कि ये द्वीप के नारियल के पौधे है।

(कौन पूछेगा ? लोगो को देखने से मालूम नही होगा कि बोरे मे नारियल के पौधे है ?)

इस प्रकार अधिकारी के जयमोहन प्रिन्स को बोरे की कमीज़ पहनाकर अधिकारी के ही नारियल के पत्तो मे सिर पर मुकुट पहनाकर कण्णन ने अपने सिर पर ढोते हुए रेलवे स्टेशन पहुँचा दिया। उस्ताद और मित्र आपस मे कन्धो पर हाथ रखकर शान के साथ वह दृश्य देखते रहे।

बिदा लेते समय कणारन मिस्तरी ने पहले उस्ताद से, फिर इस कार्यक्रम मे भाग लेने वाले सभी सदस्यो से—माइनर और बढई से भी—हाथ मिलाया।

अगले दिन की सुबह।

चाप्पुण्णि अधिकारी का घर।

अधिकारी ने जागते ही बरामदे मे आकर आगन की ओर देखा।

क्या स्वप्न है, माया है, मतिभ्रम है, इन्द्रजाल है या मान्त्रिक का करिश्मा !

जयमोहन दुबले-पतले एक कँटीले पौधे मे तबदील हो गया है !

अधिकारी की आँखो ने आँगन मे टटोला। एक पत्ता या धूल का एक कण भी वहा नही था।

गेट की ओर देखा सब सही-सलामत था।

तब अधिकारी को लगा कि पिछले दिन वहाँ एक सन्यासी आया था। कुछ दिये बगैर अधिकारी ने उसको भगा दिया था। शायद उस दिव्य सन्यासी ने शाप दिया होगा कि सफेद प्रिन्स एक कँटीले पौधे मे तबदील हो जाय।

फौरन टाइगर की याद आयी। कहाँ है टाइगर ?—टाइगर—टाइगर—

टाइगर का कोई पता न था।

तोद को सहलाते हुए अधिकारी अहाते मे उतरा। अहाते के दक्षिण कोने मे किसी मधुर सलाप मे डूबा था टाइगर।

उस्ताद ने जो हलुवा फेका था उसे कुत्ते ने निगलने का यत्न किया। लेकिन फॉर्क से दाँतो मे फँस गया। न तो वह उसे निगल सका न बाहर उगल सका। उसके मीठे नशे मे वह यो लेट रहा था। कुत्ते के मुँह मे उस हलुवे का गोला अभी तक समाप्त नही हुआ था।

8 मदनोत्सव

उसके टेढे बालो मे अलक्ष्य रखे
गुलाब की पखुडियो को गिराने नीचे,
बालो को मन्द-मन्द छूकर विहार करते
मन्द पवन से नित प्रार्थना की मैंने
कच्ची धूप से झिलमिल करते बालो के
धवल मणि, प्रतिबिबित गालो पर
प्रणय नव मृदु हसित किरणो से सज
प्रतिदिन मैंने देखे ढेर सारे सपने।

तिरुवातिरा के दिन।

तिरुवातिरा की रातो का स्वागत करने के लिए अतिराणिप्पाट सजधज रहा है।

पेड की डालो पर और नारियल के पेडो के बीच बाँस की ऊँचाई पर हिन्डोले लटक गये। मन्द पवन के झोको के वातावरण मे तिरुवातिरा गीत बहने लगे।

प्रणय-स्वप्नो को बुनने के लिए चाँदी के धागे के गुच्छ लेकर वृक्षो के ऊपर से और पेडो की डालो से उतर आनेवाली चाँदनी को देखते हुए श्रीधरन कन्निप्परपु के घर के बरामदे मे बैठता।

पानी मे तैरने या खेलने के लिए अतिराणिप्पाट मे और उसके आसपास कोई तालाब नही है। औरते तडके ही कन्निप्परपु के घर के बरामदे मे एकत्रित होती। कुएँ के ठण्डे पानी से नहाते समय औरते कबूतरो की तरह आवाज निकालने लगती।

नहान के बाद कामदेव के तूणीर की मुद्रा की तरह पीली भस्म रगडनेवाली लडकियाँ दिखाई देती। व्रत के दिनो मे ये केवल कदमूल खानेवाली चिडियाँ होती है।

(क्या प्रेम की तरह मधुमेह का भी देवता होने के कारण कामदेव को चावलो के भोजन से इतना परहेज़ है?)

किशोरियो को नये तारुण्य का प्रसाद लेकर ही हर तिरुवातिरा आता है। 'मदन' के यशोगान के बीच विरहिणियो की सिसकियो की तरह झूलो की रुलाई भी सुनाई देती—

तिरुवातिरा के दिन आने पर अतिराणिप्पाट के दर्शन करने के लिए पहले-पहल कुन्नालि माप्पिला ही पहुँचता। साबुन, आईना, ब्लू और चूडियो के साथ ही वह आता।

स्टेशनरी सामान से भरी एक बडी पेटी सिर पर ढोते हुए प्रत्यक्ष होनेवाला कुन्नालि माप्पिला अतिराणिप्पाट के प्रधान विक्रय-केन्द्र के रूप मे कन्निप्परपु के

आँगन को ही चुनता। आसपास की औरतें और बच्चे कुन्नालि माप्पिला के आगमन की बात सुनकर वहाँ एकत्रित हो जाते। कनखोदनी से लेकर कपूर तक और नकली बाल से लेकर 'एक डाली पर दो की लाशें' पाट्टु पुस्तक तक—सभी चीजें कुन्नालि माप्पिला के सिर पर रखी पेटी मे होती। कन्निप्परपु के आँगन मे एक छोटा-सा कालीन बिछाकर कुन्नालि माप्पिला पेटी के नये सामान और वस्तुओ का प्रदर्शन करता।

जब औरतें झुककर चीजो को देखती तो कुन्नालि माप्पिला उन्हे चीज़ो को सरकाकर एक दर्पण मे खास कोण से देखा करता है, ऐसा आक्षेप उसके बारे मे सुना है। मालूम नही कि वह सही है या नही। इसकी पहचान करना भी मुश्किल है क्योकि कुन्नालि भैंगी आँखोवाला था। वह किस कोने मे देख रहा है इसका निर्णय करना मुश्किल है। अतिराणिप्पाट मे नयी पीढी के कुछ नटखट लडके है। मौका पाते ही वे सामान की चोरी कर लेते। इन शरारती लडको को भी कुन्नालि माप्पिला का लोहा मानना पडा है, क्योकि उसकी दृष्टि किधर जाती है यह मालूम नही होता था।

अबकी बार कुन्नालि माप्पिला की पाट्टु पुस्तको मे तिरुवातिरप्पाट्टु की प्रतियाँ ही अधिक मात्रा मे बिकी है। अब तक नौ प्रतियाँ बिक चुकी है।

कन्निप्परपु का व्यापार खतम करके कुन्नालि माप्पिला के चले जाने पर गोपालन भैया ने श्रीधरन से कहा, "क्या तू एक नया तिरुवातिरप्पाट्टु नही बना सकता ?" (गोपालन भैया ने अब समझ लिया है कि छोटा भाई कविता और पाट्टु बनाता है।)

श्रीधरन हँस पडा, लेकिन कोई उत्तर नही दिया।

श्रीधरन ने मन मे ठाना कि गोपालन भैया को आश्चर्य मे डालना चाहिए।

उस रात बैठकर उसने लेखन कार्य किया।

कुछ अर्सा पहले पिताजी कविता की जिस नोटबुक को जब्त कर ले गये थ, उसकी 'मदन विभूति' की कुछ पक्तियाँ और आशय मन म जमे हुए थे। कलमोलिमार' की शैली मे उसने तिरुवातिरप्पाट्टु रच डाला। उसके लिए 'रतिविलाप तिरुवातिरप्पाट्टु' शीर्षक भी दिया।

पिछले दिन नया खण्ड-काव्य गोपालन भैया को पढ सुनाया। गोपालन भैया के अभिनन्दन के बारे मे क्या कहना "श्रीधरन, इसे छपाना होगा।"

अच्छी राय थी।

गोपालन भैया ने हिसाब लगाया। एक प्रति के लिए आधा आना। एक हज़ार प्रतियो के लिए साढे इकतीस रुपये। छपाई का मूल्य—(कह नही सकता) दस रुपये से ज्यादा नही होगा। साढे इकतालीस हुए। बिक्री का कमीशन काटकर बीस रुपये हाथ मे आएँगे। क्या यह बात बुरी है ? (यह भी छाप देना चाहिए कि

जिस प्रति मे ग्रन्थकर्ता के हस्ताक्षर नही, वह नकली है। उस चेतावनी के नीचे हस्ताक्षर की मुहर लगाने के लिए पैसे की जरूरत नही है। इसे बनाने की कला श्रीधरन को मालूम है।

गोपालन भैया, इसे कौन छपा देगा ?

इसके लिए बाबूजी से पैसे माँगें तो जली-कटी बातें सुननी पडेगी।

श्रीधरन के 'रति विलाप तिरवातिप्पाट्टु' के बारे मे गोपालन भैया को छोड-कर किसी को भी जानने का मौका नही मिला।

(माँ को तो काला अक्षर भैस बराबर ही मालूम होता था।) अतिराणिप्पाट की लडकियो को रतिविलाप गाकर झूला डालने का सौभाग्य नही मिला।

बीस रुपये हिसाब से छोडने ही पडे।

नव नलिन दल पर चल-मचलते
विभात हिम-बिन्दु समान
सुन्दरियो के उस सिर-मौर के हृदय मे
रागामृत का कोई एक कन
होता इस नव तरुण के लिए।"

तिरुवातिरा की सुबह।

श्रीधरन सबेरे उठकर नीचे उतर आया तो उसने एक बोरा भर सामानो को कन्धे पर ढोते हुए एक नौजवान को आते हुए देखा। आँगन मे पहुँचने पर आदमी को पहचाना। चन्दुक्कुनन। दगा-फसाद के समय इलजिपोयिल मे एक शरणार्थी की जिन्दगी गुजारने वाला मित्र चन्दुक्कुनन। जगली हाथियो के आतक से भरे एक पूर्वी पहाड की तराई के मोहल्ले से ही वह आया है।

दगा-फसाद के बाद, इलजिपोयिल से जाने बाद दो बार कन्निप्परपु मे श्री-धरन को देखने आया था। अब तीसरी बार आया है।

एक बोरा-भर केला, कई किस्म के कद और तरकारियाँ लेकर ही वह आया है। ये सब चन्दुक्कुनन की कोशिश का परिणाम था। उसके अतिरिक्त एक बोतल-भर शहद और एक पोटली मे अरारूट की बुकनी भी है।

श्रीधरन को यह सोचकर दुःख हुआ कि चन्दुक्कुनन से शादी करने के लिए उसकी बहन नही है। एक बहन होती तो वह कितना अच्छा बहनोई होता।

श्रीधरन के माँ-बाप को भी चन्दुक्कुनन के प्रति हार्दिक ममता थी।

चन्दुक्कुनन अपने देहात से काठ को नदी से ले जानेवालो के साथ रात को निकलकर तडके ही शहर मे पहुँचा है।

"अब इधर का तिरुवातिरा त्योहार देखकर कल जाना।" श्रीधरन ने कहा।

"ऐसा नही होगा। मुझे आज ही पहुँचना है।" लाल पत्थर जडे कुण्डल को जरा हिलाते हुए चन्दुक्कुनन ने कहा। फिर उसने कुछ कहना चाहा। पर, शर्म से

सिर नीचा करके खडा रहा।

"क्या तेरी शादी हो गयी है?" माँ ने शका के साथ पूछा।

चन्दुक्कुनन ने जरा शरमाकर 'हाँ' मे सिर हिलाया। "पिछले महीने हुई थी।"

"हाँ, इसीलिए ही चन्दुक्कुनन को वापस जाने की इतनी जल्दबाज़ी है। तिरुवातिरा के अवसर पर सास को एक गुच्छा केला भेट मे देना है। नही तो रिश्ता टूट जाएगा।" माँ ने हँसते हुए कहा।

बात ऐसी ही थी।

चाय और पकवान खाकर चन्दुक्कुनन जाने को तैयार हो गया।

"क्या तुम्हे यह याद है?" अपनी चाभी के गुच्छो मे से एक चीज़ छूते हुए चन्दुक्कुन्नन ने पूछा।

कई साल पहले दगा-फसाद के बाद जब चन्दुक्कुनन अपने गाँव लौट रहा था तब उसने मेरे लिए हाथी की पूँछ से बन्धी एक अँगूठी उपहार मे दी थी। उसके बदले मैने उसे एक चाकू भेट किया था—इन्द्रधनुष के रगो का मूँठवाला इगलैड-निर्मित चाकू। चन्दुक्कुनन श्रीधरन का उपहार अब भी सोने की तरह सुरक्षित रखे हुए है। (श्रीधरन को याद नही आ रहा था कि चन्दुक्कुनन की दी हुई अँगूठी कहाँ खो गयी।)

इस तरह प्यार जतानेवाला मित्र शहर मे कभी दिखाई नही देगा।

"तुम मेरे गाँव मे नही आओगे, है न?—" चन्दुक्कुनन ने शिकायत के स्वर मे याद दिलाया।

चन्दुक्कुनन के जगली गाँव को अभी तक श्रीधरन देख नही सका था। वहाँ जाने पर उसका स्वागत-सत्कार कैसे होगा!

"वार्षिक परीक्षा बीतने दो। मै जरूर उधर आऊँगा।"

"हाँ, आये, जब तो न?"

बीच-बीच मे चेहरा घुमाकर मुस्काते हुए फाटक से निकलनेवाले उस ग्रामीण मित्र को श्रीधरन गीली आँखो से देखता रहा।

तिरुवातिरा की रात आ गयी। कामदेव के छाते की तरह चाँद उभर कर आया।

अतिराणिप्पाट की औरतो के लिए यह खुशी की एक स्वतन्त्र रात थी। (मर्दों के लिए भी)। चारुचन्द्र की चचल किरणो से ढके आँगन मे, हिडोलो के नीचे, अहातो के रेतीले स्थानो मे औरतें झुण्ड के झुण्ड गीत गाकर 'कैकोट्टिक्कली', 'तवियुरच्चिल' 'तेरुप्परक्कल' आदि मनोरजनो मे भाग लेकर समय बिताती है। कल्याणिक्कुट्टि किधर है? जानु किधर है? ऐसा सवाल ही नही। कही भी दिखाई देगी अतिराणिप्पाट मनोरजन-कार्यक्रम के नेपथ्य मे तबदील हो गया है।

व्रत के साथ कामदेव की उपासना कर रात भर जागती रहनेवाली औरतो के

मनोरजन का दायित्व मर्दों का है—पोराट वेश का अभिनय।

लडके और बडे लोग वेश धारण किये आते। वे अकेले और झुण्ड मे आते। अधिकाश लोग पैसे के लिए ही चलते हैं और कुछ लोग महज़ तमाशे के लिए। वेशधारियों की पहचान करना आसान नहीं है।

वेशधारी लोग तिरुवातिरा के दिन सूरज छिपने की प्रतीक्षा करते। फिर प्रच्छन्न वेशधारियो की परेड होती। पजाबी, हस्तरेखा शास्त्री, सन्यासी, साहब और साहिबा आदि कई वेशधारी आते। ढोल-बाजा बजाकर, बाघ का वेश धारण कर, पेट्रोमैक्स के साथ आनेवाले लोग एक एकाकी नाट्य-सघ के सदस्य हैं। प्रहसन, डान्स और गायक सघ के लोग इधर-उधर घूमते होगे।

छोटे लडके 'वागित्ता' वेश म आते। चेहरे पर सफेद धूल लपेटे हाथ मे एक टिन और गले मे एक रस्सी बाँधे एक लडका आगे चलता और उसके पीछे उसकी गर्दन की रस्सी पकडे हाथ म छडी लेकर दूसरा एक छोकरा चलने लगता। उसके चेहरे पर काला रग होता। पीछेवाला लडका जोर से चिल्लाता 'खरीद दो, खरीद दो'। गारे-रग पुते लडके को पीटने की धमकी भी देता रहता। वह बन्दर की तरह उछल-कूद कर 'खरीद दूंगा, खरीद दूंगा' चिल्लाने लगता। तमिलवालो का घटिया मनोरजन पूर्व की घाटियो को पार कर इधर आ पहुँचा था। औरतें और लडके यह सुनकर हँसी से लोट-पोट हो जाते।

अतिराणिप्पाट का मूंछ कणारन तिरुवातिरा का एक स्थायी वेशधारी है। वह हमेशा मुस्लिम का वेश रखेगा—मछली की टोकरी सिर पर रखकर "ताजा मछली " पुकारते हुए मछली बेचनेवाले मुसलमान का वेश। "मै कोलबु से आ रहा," कहकर आनेवाला दाढीवाला बूढा मुसलियार या मालिक हाजियार का वेश वह धारण करता। वह मुस्लिम लहजे मे ही बातचीत करता। घटिया बाते बकता। वेश और बातचीत के अतिरिक्त उसका अभिनय भी होता। आँगन मे एक तौलिया बिछाकर घुटने टेककर हाथ की उँगलियाँ कानो म डालकर 'लायिला यिलल्लो' चिल्लाकर नमाज पढने लगता। (औरतों को हँसाने के लिए मजहब पर व्यग्य ज़ाहिर करनेवाली कुछ हास्य सूचनाएँ और अश्लील गन्ध से युक्त कुछ आख्यान भी नमाज़ के साथ सुनाने लगता।

कणारन की बडी मूंछ के कारण औरते उसे पहचान लेती। माप्पिला के हास्य से भी अधिक उन्हे कणारन का 'पति की मृत्यु पर पत्नी का क्रन्दन' और बकवास का अभिनय प्रिय है।

मुस्लिम की नमाज़ खतम होते ही औरतें कहती, "कणारन, तुम उसे ज़रा दिखा दो। मर्द की मौत पर औरत का रोना।"

अतिरिक्त फीस पेशगी देने पर ही कणारन वह दृश्य दिखाता।

औरतो से प्राप्त चिल्लर को कानो मे रखकर पगडी से सिर और चेहरा ढक

कर, छाती पीट-पीटकर वह पुकार उठता 'हाय ईश्वर, मेरा अब कौन है · "

पडोस के घरो की औरतो ने बाल-बच्चो सहित कन्निप्परपु मे डेरा डाल दिया है। नाटक मडली और नाचनेवाले लोग बडे घरो मे ही जाएँगे। कन्निप्परपु उनकी सूची मे शामिल एक घर है। प्रच्छन्न वेशधारियो को पैसे देने से बचने के लिए कुछ घरो के कजूस लोग घर बन्द कर कन्निप्परपु मे आकर शरण लेंगे। वे मुफ्त मे यह ही सब मनोरजन देख सकेगे, इसलिए उन सबको श्रीधरन की माँ ने चन्दुक्कुनन के केले और कन्द भरपेट खिलाये।

पन्द्रह रुपये की रेजगारी को गोद मे रखकर श्रीधरन की माँ प्रच्छन्न वेश-धारियो की प्रतीक्षा कर बरामदे मे बैठ गयी। पिताजी अन्दर दरवाजा बन्द कर सोने लेट गये। (नाट्य-सघ और गायक-मडल कृष्णन मास्टर को देखने पर अधिक पैसे की अपेक्षा करेंगे।)

एक अच्छी धोती पहनकर गोपालन भैया को बरामदे की एक कुर्सी पर बिठाया है। देखने पर लगेगा कि वह मरीज नही है।

'वागित्ता' (खरीद दो) लडके, साहिब और साहिबा, बाघ वेशधारी, सीता अपहरण नाटक, मत्र के नगल का वेशधारी कणारन आदि सभी प्रच्छन्न वेश-धारियो के कार्यक्रम खतम हुए। आधी रात होनेवाली थी।

अचानक श्रीधरन के मन मे एक विचार उठा। वह कन्निप्परपु मे हौले से उठकर चलने लगा।

बढई माधवन ने कहा था कि वह प्रच्छन्न वेश धारण कर आवेगा। काठ के व्यापारी भास्करन के यहाँ से बाघ के चमडे का एक पुराना टुकडा भीख माँग कर ले जाते हुए केलुक्कुट्टि के भाई नारायणन ने देखा था। शायद बाघ का चमडा बाघ का वेश धारण करने के लिए होगा। जाँच करने के लिए वह माधवन के घर की तरफ चलने लगा।

वहाँ पहुँचने पर माधवन घर के बरामदे मे बैठकर कोई वेश धारण करने की तैयारी मे था।

श्रीधरन को देखने पर माधवन ने ताज्जुब के साथ पूछा, "क्यो माइनर साहब, इधर कैसे ?"

"वह तो कहूँगा ही। क्या तेरा बाघ का खेल खतम हो गया है ?"

"मै तो बाघ-वाघ का वेश नही पहनूँगा। मेरा वेश " माधवन ने कोने की ओर इशारा किया। वहाँ एक काला कपडा रखा था। श्रीधरन ने कपडे को अच्छी तरह देखा। मुस्लिम औरतो का एक घूँघट था।

"मै बीबी का वेश धारण कर घूमकर अभी आया।" माधवन ने हँसते हुए कहा।

एडी से लेकर चोटी तक ढकनेवाला और चेहरे और मुँह पर एक हलका-सा

जाल बुना हुआ वह काला रेशमी बुर्का एक मुस्लिम मालिक ने धोने के लिए धोबी मुन्तु को दिया था। एक मुस्लिम बीबी के बुर्के का वह वेश अतिराणिप्पाट मे नया था। औरतो और मर्दों को वह वेश अच्छा लगा। (बच्चे डर गये।) बुरका धारण कर, एक पुरानी छतरी लेकर चुपचाप भूत की तरह एक प्राणी कन्निप्परपु मे चढ आया था। श्रीधरन ने उस दृश्य का स्मरण किया। उसको औरतो की तरफ से ज्यादा पैसे भी मिले। उस काले शामियाने के अन्दर बढई माधवन छिपा था, यह बात अभी मालूम हुई।

"होशियार!" श्रीधरन ने बढई को बधाई दी।

बुर्के के इस वेश से मोहल्ले-भर के घरो मे जाने के बाद माधवन एक नया वेश धारण कर उन्ही घरो मे जाने की तैयारी कर रहा था।

नया वेश सन्यासी।

माधवन वेश धारण करने के लिए एक पैसा भी खर्च नही करता। (बुर्का केलुक्कुट्टि का उपहार था।) सन्यासी का वेश दाढी नारियल का रेशा। (नारियल की जटाओ को गोबर मे गाडकर, फिर सुखाकर रख दिया था।) एक रुद्राक्ष माला। कमर मे बाँधने के लिए भास्करन मालिक के बाघ की पुरानी त्वचा और थोडी-बहुत राख भी। सन्यासी का कमण्डलु लकडी से माधवन ने ही बनाया था।

मुस्लिम औरत का बुरका दिखाते हुए श्रीधरन ने कहा, "क्या मैं भी इस वेश को धारण कर जरा घूम-फिर कर आऊँ? महज मनोरजन के लिए।"

बढई ने टोक दिया, "यह शैतान वेश कम लोगो ने देखा है। एक बार और इस वेश मे गये तो मार खानी पडेगी।"

बढई ने जो कहा वह सच था।

श्रीधरन ने थोडी देर तक विचार किया।

"अरे माधवन, हम दोनो एक जोडी बनकर प्रच्छन्न वेश धारण कर चलें। मैं सन्यासी—तू शिष्य—क्या?"

माधवन भी राजी हो गया। "जो पैसा मिले वह आधा-आधा"।

"नही, पैसे सारे तू ही ले लेना, मुझे सप्पर सफर सघ की तरह महज एक तमाशा ही दिखाना है।"

श्रीधरन ने शर्ट और धोती वही रख दी। उसने बाघ की खाल कमर मे लपेट ली। रस्सी की जटा, रेशे की दाढी और माला पहन ली। माधवन ने श्रीधरन के चेहरे, छाती, पेट-पीठ और पैरो मे राख पोत दी।

'मेकअप' के बाद वह बुजुर्ग संन्यासी बना। माधवन तब रसोई से वापस आया तो उसके हाथ मे एक मुर्गी के अण्डे का छिलका था।

"अरे माधवन, इसकी क्या जरूरत है?"

"जरूरत है।" माधवन ने सन्यासी की दाढी के अन्दर अण्डे का छिलका छिपा

लिया।

"वह उधर ही रहे।"

श्रीधरन ने मन मे कहा कि बढई ने कोई तरकीब सोची होगी।

शिष्य का वेश शकराचार्य की तरह था। सिर पर एक गेरुआ तौलिया पहन कर कान के पीछे की ओर बाँध लिया था। चेहरे मे सफेद धूल पोत ली थी। कन्धे पर एक थैली थी।

सन्यासी और शिष्य तीन-चार घरो मे चले गये। किसी ने भी उन्हे पहचाना नही। श्रीधरन की हिम्मत बढी। शिष्य ने सन्यासी के कमण्डलु मे गिरे पैसे गिनकर देखे दो आने।

"बुर्काधारी बीबी को अकेले जाने पर इससे भी अधिक चार घरो से मिला था।" माधवन बडबडाया। (उसने अपनी पेट की जेब मे उसे रख लिया।) "बडे घरो मे जाने पर अधिक मिलेगा।" उसने स्वय को सात्वना दी।

धडकते दिल और हिलते पाँवो के साथ श्रीधरन और माधवन सीढियाँ चढ़-कर एक महल मे गये—नायिका के महल का ही रास्ता था।

वहाँ बरामदे मे लटका हुआ एक पैट्रोमैक्स प्रकाश बिखेर रहा था। औरते-बच्चे बरामदे और आँगन मे खडे थे।

"राम-राम—हरे राम "

"हाँ, पुजारी आ रहा है।" किसी ने पुकार कर कहा।

(बडे सन्यासी को पुजारी कहकर पुकारना श्रीधरन को अच्छा नही लगा।)

सन्यासी को देखने के लिए झूलो से चार-पाँच औरते दौड आयी।

बरामदे मे ध्यान से देखने पर श्रीधरन का कलेजा तडप उठा।

प्रच्छन्न वेशधारियो को इनाम देने के लिए नायिका बरामदे की कुर्सी पर बैठी थी।

सन्यासी और पीछे शिष्य भी बरामदे के छोर पर खडे हो गये।

अर्ध-निमीलित आँखो से गौर से देखा

धोती और ब्लाउज ही पोशाक है। तिरुवातिरा का व्रत लिया है। ललाट पर हलदी के टीके का आधा अश नदारद है। व्रत के अनुष्ठान और निद्रा की खुमारी आँखो मे छायी है।

(मन म वह यो गा उठा।)

"छोड तप जाग उठ ! हे निर्मल नारी
देख यह, सती ! मै तेरा श्रीधर !"

"हिमालय मे पाँच सौ साढे आठ वर्ष तक तपस्या करनेवाले मुनि है।" शिष्य ने परिचय कराया।

"सन्यासी का नाम क्या है ?" एक बुढ़िया ने पूछा ।

"कुट्टकुटानन्दन ।" माधवन ने जवाब दिया । औरतें और बच्चे यह सुनकर हँसी से लोट-पोट हो गये ।

नायिका के ओठ जरा खिल उठे ।

शिष्य ने अपना भाषण जारी रखा "एक ही बैठक मे साढे सत्ताइस वर्ष कल्लरिक्कोट्टु के पहाड मे जाकर तपस्या की थी। वहाँ से सीधे इधर ही पधारे हैं । दाढी मे पक्षी ने घोसला बनाया था । लेकिन इन्हे इसका पता नही था ।"

माधवन ने सन्यासी की दाढी के नजदीक मुख फैलाकर 'क्लू-क्ली-क्ली-क्लू-क्लू " की चिडिया की चहचहाहट सुना दी । फिर सन्यासी की दाढ़ी मे टटोल-कर अण्डे का छिलका बाहर निकाल दिया । पक्षी का वह अण्डा वहाँ एकत्रित हुए सब लोगो को, खासकर नायिका को दिखाया ।

सन्यासी जी योगनिद्रा मे है ।

बढई के ममखरेपन से औरते और बच्चे ठट्ठा मारकर हँस पडे ।

नायिका मुँह बन्द कर चिडिया की तरह चहक उठी ।

उस स्वर ने सन्यासी को योगनिद्रा से जगा दिया ।

सन्यासी ने कमण्डलु आगे बढा दिया ।

नायिका ने उसमे पैसे डालने के लिए अपना सोने-सा हाथ पसारा तो एक उँगली का छोर छू गया । नसो मे एक रोमाच की आँधी गुजर गयी—राम-राम—हरे राम !

फाटक उतरने पर माधवन ने श्रीधरन के हाथ के कमण्डलु मे टटोलकर देखा । कमण्डलु खाली था । (नायिका का अमूल्य पुरस्कार एक आना—एक निधि की तरह श्रीधरन ने हाथ मे पकड लिया था ।)

"कहाँ है पैसे ?" माधवन ने पूछा ।

"वह मैंने ले लिये ।"

"कितना मिला ? मुझे जानना चाहिए ।"

"चवन्नी" (झूठ बोला ।)

"देखने दो ।" बढई देखे बिना नही रह सकता ।

"तू अब उसे नही देख । मै पाव रुपया तुझे बाद मे दूँगा ।"

(बढई को फिर शक हुआ । उसका ख्याल था कि आठ आने मिल गये होगे ।)

"अरे यार, जरा दिखा दो न ?"

"दिखाने की मर्जी नही । क्या मेरी बातो पर यकीन नही कर सकते ?"

"क्या वह मुझे दिखाने पर पिघल जाएगा ?"

श्रीधरन ने कुछ नही कहा । आना अपने हाथ मे जोर से पकड लिया । नायिका के स्वर्णिम हाथ से ही वह चवन्नी मिली थी ।

माधवन थोडी देर सोचता खडा रहा। फिर सिर हिलाते हुए बोला "हाँ—समझ गया—समझ गया।"

(वह समझ गया था। बढई माधवन है न ?)

"अरे, क्या समझ गया ?" श्रीधरन ने नाराज होकर सख्त आवाज मे प्रश्न का तीर चलाया।

बढई चुप रहा।

"मैं तेरे साथ आगे चलने को तैयार नही हूँ। तू अकेले वेश धारण कर ठोकर खा—" तीर के पीछे गदा की एक मार भी!

बढई काँपकर खडा हो गया।

'इस प्रकार कहने के लिए मैंने क्या तुमसे कुछ कहा था ?" बढई ने पश्चाताप के साथ पूछा।

श्रीधरन ने फिर कुछ नही बताया।

सन्यासी और शिष्य फिर मौन होकर एक साथ आगे बढे।

माधवन के घर के नजदीक पहुँचने पर श्रीधरन उस ओर मुड गया—छाया की तरह माधवन भी।

बढई के कमरे मे पहुँचकर रेशे की दाढी, रस्सी की जटा, माला और बाघ की खाल निकालकर दूर फेंक दिये। चेहरे, छाती, हाथ-पैर मे पुती राख भीगे कपडो से पोंछ ली और शर्ट और धोती पहनकर (भीतर की हँसी को छिपाते हुए) माधवन से कुछ कहे बिना चला गया।

कन्निप्परपु मे पहुँचने पर वहाँ पैट्रोमैक्स का आलोक और नाच-गान।

नाटक सघ है। नाटक समाप्त होने पर प्रधान अभिनेत्री का विशेष काबुली डान्स हो रहा है।

हारमोनियम बजानेवाले के रूप मे बरामदे मे अर्जी नवीस आण्डी बैठा है। बडा गपिया किट्टुण्णि टूटी-फूटी पेटी को थपथपाते हुए 'पे पे पे ' की स्तुति कर रहा है।

कृत्रिम बाल और स्तन लगाकर सिर पर पीछे की ओर एक रूमाल बाँधकर और चेहरे पर पाउडर पोतकर एक शिखण्डी, हाथ मे एक तबला लिये झुककर पीठ हिलाते हुए, उछल-कूद कर रहा है। वही काबुली डान्स है।

आण्डी हारमोनियम बजा रहा है।

नाटक सघ को एक रुपया देने के साथ ही श्रीधरन की माँ के हाथ मे कुछ नही रहा।

"अब जल्दी दिया बुझाकर लेटना चाहिए।" माँ ने जँभाई ली।

"पतग और प्रच्छन्न वेशधारी एक समान हैं। रोशनी देखते ही आएँगे।"

तभी लडको का शोर सुना—"औषधि बेचनेवाला।"

एक लम्बा पेण्टधारी हाथ मे एक सन्दूक लटकाय आँगन मे पहुँच गया। अब बचाव नही। वह आँगन मे एक पुराना कागज़ बिछाकर सन्दूक की औषधियो की शीशियाँ रखता, फिर 'मान्य महाजन !' कहकर भाषण छेड़ता ।

औषधि बेचनेवाला हाथ मे पेटी लटकाकर सिर झुकाये आँगन से बरामदे मे चढा। फिर वह अन्दर घुस आया।

"अरे यह क्या ? खेल-तमाशा घर के भीतर भी पहुँच गया ?" आराकश वेलु की पत्नी उण्णूलियम्मा ने जोर से पुकार कर कहा।

श्रीधरन की माँ सकपका गयी।

गोपालन भैया कुर्सी से तडप उठा।

उस सदर्भ मे वहाँ श्रीधरन ही था।

"अरे, वह कौन है।" चिल्लाते हुए श्रीधरन भीतर की ओर दौड गया।

"क्या है श्रीधरन ?"

भूली-बिसरी लेकिन सुनी हुई आवाज़। आदमी को ध्यान से देखा।

बडे भाई साहब !

फिटर कुजप्पु बडी देर बाद ही पहुँचा। रात की गाडी मे ही आया था।

9 वापसी

करीब एक साल पहले दक्षिण भारतीय रेलवे कम्पनी मे मज़दूरो की एक हड-ताल हुई थी। उसमे सक्रिय भाग लेने के अपराध मे फिटर कुजप्पु को रेलवे की सेवा से हटा दिया गया। यह समाचार अतिराणिप्पाट के नज़दीक रहनेवाले फायर मैन केलन से कृष्णन मास्टर ने जाना। कुजप्पु के पराक्रम की गवाही देनेवाली कुछ घटनाएँ कृष्णन मास्टर को मालूम थी।

रेलवे की नौकरी मे तमिलनाडु जाने के बाद कुजप्पु का कन्निप्परपु से अधिक नाता न था। साल मे सिर्फ एक-आध बार वह आता बस। कभी चिट्ठी भी नही लिखता। (फिर पैसे भेजने की बात के बारे मे क्या कहना !) कृष्णन मास्टर को तसल्ली हुई। कुजप्पु के लिए एक नौकरी तो है। कही भी रहे, लेकिन सुख से रहे। उसका एक पैसा भी इधर नही चाहिए।

कृष्णन मास्टर की लडकियाँ नही थी। वह दुख उनके मन मे था। लड़कियो को मास्टर वात्सल्य से देखते। उन्हे पुकारकर हँसी-ठिठोली की बाते करते। उनके बिदा होने पर ठण्डी साँस लेने लगते।

कन्निप्परपु मे एक नव-वधू के आने का सपना मास्टर देखने लगे। कुजप्पु की शादी पहले ही करानी थी। लेकिन यह सोचकर चुप रहे कि बिना नौकरीवाले लडके की क्या शादी ! अब तो उसके पास अच्छा वेतन मिलनेवाली नौकरी है।

इस तरह दिन गुजारते समय एक नारियल का बाग खरीदने के उद्देश्य से आठ-नौ मील दक्षिण मे एक गाँव मे जा रहे एक धनी मित्र के साथ कृष्णन मास्टर को जाना पडा। वहाँ एक सम्भ्रान्त व्यक्ति के घर ही उन्होने दोपहर का भोजन किया। नारियल के बाग, चावल के खेत, नारियल के रेशे का व्यवसाय आदि उस कुलीन परिवार मे थे। एक पुराना घराना। गृहस्वामी की बेटी ने ही सारे व्यंजनो का बन्दोबस्त किया।

खूबसूरत और सुशील उस लडकी को देखने पर मास्टर को उसके नाम से एक खास तरह का वात्सल्य हुआ। उसे नजदीक बुलाकर पूछा

"नाम क्या है ?"

"माधवी।"

कृष्णन मास्टर को लगा कि उनके हृदय के एक कोने मे पडे गम की सतह से एक आनन्द का बुलबुला उभर आया है। मास्टर की पहली पत्नी एक बेटी छोड गयी थी। वह सिर्फ छह महीने तक ही जिन्दा रही। उसका नाम भी माधवी था। उन्हे लगा, यह माधवी उसका पुनर्जन्म है।

मालूम हुआ कि माधवी मातृ-विहीना है। मास्टर ने मन मे तय किया कि उसके भविष्य की जिन्दगी कन्निप्परपु मे ही गुजरेगी।

अगले दिन कुजप्पु को एक पत्र लिखा कि छुट्टी लेकर दो-तीन दिनो के लिए इधर आ जाये।

दो हफ्ते के बाद भी कुजप्पु नही आया, न ही कोई चिट्ठी का जवाब दिया।

कृष्णन मास्टर ने मन ही मन सोचा कि अगर मै लडकी देखकर शादी की बात तय करूँ तो कुजप्पु उसके खिलाफ कुछ नही कहेगा।

मास्टर ने शादी की बात को आगे बढाने का निश्चय किया। इस तरह अगले रविवार वह माधवी के घर गये। उनके साथ काठ के गोदाम का मालिक भास्करन भी था।

मास्टर ने अपने आगमन का उद्देश्य गृहस्वामी को सही ढग से बताया। और जोर देखकर कहा कि रेलवे मे कुजप्पु को एक अच्छी नौकरी है।

तभी भास्करन मालिक ने अपनी तरफ से कुछ जोडकर कहा—"और फिर, वर की योग्यता है, चेनक्कोतु कृष्णन मास्टर का बेटा कुजप्पु है न।"

लडकी के पिता ने 'हाँ' कहा। लडकी के मामा, चाचा और भाइयो से परामर्श लेने के बाद जन्मपत्री देखी गई।

"एक हफ्ते के अन्दर हम उधर आकर सूचना देगे।"

कृष्णन मास्टर ने उनका इन्तजार किया।

अगले सप्ताह माधवी का एक भाई, (जो वैद्य विद्यार्थी था) और उसका एक मित्र (मेडिकल रेप्रेजेण्टटिव) कन्निप्परपु आये। उनके चेहरे की मुस्कान और

और होशियारी देखकर कृष्णन फूले न समाये। बात ज़रूर पक्की हो जाएगी।

भाई ने कहा, "हमे इस बात मे एक व्यक्ति की अनुमति की ज़रूरत है। मास्टरजी ज़रा कोशिश करके उसका बन्दोबस्त करने की मेहरबानी करे।"

इस रिश्तेदारी मे बाधा पहुँचानेवाला कौन होगा ? लडकी का मामा है या चाचा ? मास्टर दाढी सहलाते हुए थोडी देर तक सोचते रहे।

"अब किसकी अनुमति की ज़रूरत है ?" मास्टर ने गम्भीर स्वर मे पूछा। मै एक बात कहूँ तो उसकी आनाकानी करनेवाला कोई न होगा, इस तरह का आत्म-विश्वास इस सवाल मे अन्तर्निहित था।

"फिटर कुजप्पु की तमिलभाषी बीवी की सम्मति " वैद्य विद्यार्थी ने अपने भीतर की हँसी को रोकते हुए कहा।

मास्टर को लगा कि आँधी और भूचाल से उनके पैर के नीचे की ज़मीन खिसक गयी है।

वर से सीधे मुलाकात करने के लिए वे दोनो तमिलनाडु मे कुजप्पु के निवास-स्थान गये थे। इसका किस्सा मेडिकल रेप्रज़ेण्टेटिव ने बडे रोचक ढग से कृष्णन मास्टर को कह सुनाया। लडकी के पिता, चाचा और मामा सुप्रसिद्ध चेनक्कोतु घराने के कृष्णन मास्टर के पुत्र के साथ शादी का रिश्ता जुडने मे शान ही समझते थे। लडकी के एक मात्र भाई वैद्य विद्यार्थी ने भी इसके खिलाफ कुछ नही कहा। लेकिन उसने जरा हठ करके कहा कि वर को एक बार देखने के बाद ही विवाह पक्का करना उचित है।

यो लडकी का भाई अपने परम मित्र मेडिकल रेप्रेज़ेण्टेटिव को लेकर तमिल-नाडु के उस शहर म पहुँचे, जहाँ कुजप्पु नौकरी करके रहता है। एक रविवार की छुट्टी के दिन उन्होने रेलवे कालोनी से कुजप्पु के घर का पता लगा लिया। वहाँ के आँगन मे पहुँचते ही उन्होने एक मध्यवयस्क व्यक्ति को एक बच्चा अपनी बाँहो मे लिटाकर लोरी गाते हुए देखा।

मेडिकल रेप्रेज़ेण्टेटिव ने मलयालम मे पूछा, "क्या यह फिटर कुजप्पु का घर नही है ?"

बच्चे को लोरी गाकर सुनानेवाले आदमी ने आगतुक की ओर निगाहे घुमायी। फिर 'हाँ' मे सिर हिलाया।

"हाँ, मैं ही फिटर कुजप्पु हूँ।"

आगन्तुक आँगन मे स्तब्ध होकर खडे रहे।

"आइए। इधर बैठिए।" बरामदे की छत से लटकनेवाले एक कपडे के झूले मे बच्चे को लिटाकर पेशाब से भीगे शर्ट के निचले हिस्से को धोते हुए कुजप्पु ने अपने मेहमानो की अगवानी की।

वैद्य विद्यार्थी शक के साथ खडा रहा।

"जाकर बैठें।" मेडिकल रेप्रेज़ेण्टेटिव ने वैद्य विद्यार्थी मित्र को पीछे से ज़रा नोचते हुए फुसफुसाया।

बरामदे के एक हिस्से के छोटे से कमरे मे मेहमान आ गये।

"आप लोगो का परिचय ?" कुजप्पु ने मुस्कराते एव अपनी मूँछ को सहलाते हुए पूछा।

"हम करिमणश्शेरी से आ रहे है। इधर के बाज़ार से एक भैंस को खरीदने आये हैं " मेडिकल रेप्रज़ेण्टेटिव न ही जवाब दिया।

"वेरी गुड !" कुजप्पु ने सिर हिलाकर कहा।

मेडिकल रेप्रज़ेण्टेटिव ने स्पष्टीकरण दिया कि वे कैसे इधर पहुँच गये। रास्ते मे एक बेवकूफ ने बताया कि रेलवे कालोनी मे मलयाली फिटर कुजप्पु के घर के नज़दीक एक फायरमैन रामस्वामी रहता है और वहाँ एक भैंस है। वहाँ जाकर लौटते समय हमने सोचा कि अपने इलाकेवाले फिट्टर कुजप्पु से ज़रा मुलाकात करे।

"वेरी गुड" कुजप्पु को बडी खुशी हुई। अपनी मूंछ को मरोडते हुए कुजप्पु ने कहा, "इधर सब लोग फिटर कुजप्पु को जानते है।"

(वैद्य विद्यार्थी और मेडिकल रेप्रजेण्टेटिव ने जब फिटर कुजप्पु के घर का पता लगाया तब एक तमिलभाषी ने कहा कि उनका घर फायरमेन रामस्वामी के बगले के नज़दीक ही है। इधर आते समय फायरमैन रामस्वामी के अहाते म भैंस का बाडा देखा।)

"भैंस खरीदी ?"

"नही, उन्होने बेच डाली।"

कुजप्पु ने अन्दर झाँककर ज़ोर से पुकारा, "मँगम्मा, इँगे वा। घर वान्दि-रिक्कुरु पारू—नम्म मलयालन्तु अरुकार " (मॅगम्मा, इधर आओ। देखो कि कौन आये है—हमारे मलयाली बधु है।)

दरवाज़े मे एक शक्ल-सूरत दिखाई दी। सीग विहीन एक भैंस मँगम्मा।

अपने पति के इलाकेवालो का मगम्मा ने भैंस के दूध की काफी, पुट्टु, केले आदि के साथ बडी उदारता से स्वागत-सत्कार किया।

कुजप्पु ने हठ किया कि दोपहर के भोजन के बाद ही जायें। लेकिन वे ठहरे नही। भैंस को खरीदकर शाम की गाडी मे ही वापस जाना है।

वहाँ से उतरने पर वैद्य विद्यार्थी ने सबकी आँखे बचाकर पाँच रुपये का नोट पुरानी साडी के झूले पर बच्चे के निकट पुट्टु, केला और काफी आदि के मेहनताना के तौर पर रख दिया।

मेडिकल रेप्रज़ेण्टेटिव ने कहानी समाप्त की, कि तभी नये मेहमानो के लिए चाय, पकवान आदि के साथ श्रीधरन की माँ रसोईघर से बरामदे मे आ गयी।

"नही, नही। हम चाय पीकर ही आये हैं।" कहकर वैद्य छात्र और मेडिकल रेप्रजेण्टेटिव झट उठ खडे हुए। वे कृष्णन मास्टर को नमस्कार कर जल्दी से उतरकर चले गये।

कृष्णन मास्टर दो दिन तक स्कूल गये बिना चित्त-भ्रम का शिकार होकर कन्निप्परपु मे ही पडे रहे। फिर मानसिक विभ्राति जरा कम होने पर उनकी चिन्ताएँ एक अन्य दिशा मे मुड गयी। वह लडकी मेरी माधवी का ही पुनर्जन्म है। ऐसी हालत मे वह कुजप्पु की बहिन है। बहिन की भाई से शादी कराना जघन्य पाप है। भगवान ने ही बचाया है। इसमे कोई शक नही है।

मास्टर को इससे कुछ तसल्ली मिली।

कृष्णन मास्टर ने फायरमैन केलन से ही कुजप्पु के बारे म सुना था।

रण्णिग के बाद केलन की उस दिन छुट्टी थी। पुराने मित्र कुजप्पु से मिलने की इच्छा हुई। सेवा-निवृत्त होने के बाद कुजप्पु रेलवे कालोनी छोडकर मँगम्मा के मामा के घर मे, जो नाड के पत्तो से ढका एक पुराना घर है, रहने लगा।

केलन ने वहाँ जाने पर आँगन मे वह दृश्य देखा। गोद मे मुन्ने को बिठाकर मँगम्मा हाथ मे एक छडी लेकर बैठी थी। सामने की चटाई मे मिर्च सुखाने के लिए डाली गयी थी। आँगन के दूसरे कोने मे दाहिने हाथ से मूँछ को मरोडते हुए बाँयें हाथ मे एक बडी छडी पकडकर गौरवमय कुजप्पु बैठा था। सामने की चटाई मे पापड सुखाने के लिए पडे थे।

नजदीक जाने पर केलन सकपकाकर खडा हो गया। कुजप्पु के सामने की चटाई पर सूखने के लिए रखे गये पापड नही थे। ये करन्सी नोट थे—पाँच और दस के—ढेर मारे नोट।

"अरे कुजप्पु यह सब क्या है ?" केलन ने आँखें फाडकर पूछा।

"घर के बारिश मे भीगने पर हम लाचार हो गये। पेटी मे रखे नोट भी भीग गये यार—सूखने के लिए डाले है।"

(सेवा से पदच्युत होते समय प्रोविडेट फण्ड, ग्रेच्युटी आदि मे दो हजार रुपये कम्पनी से कुजप्पु को मिले थे। वही रकम चारपाई पर सूख रही है।)

मँगम्मा के हाथ की छडी कौओ को हटाने के लिए थी। अगर कोई पिल्ले का बच्चा इधर फटी आँखो से देखे तो कुजप्पु के हाथ की छडी उसे मारने के लिए काफी थी।

"अरे, सुन तू इन मब बातो को कन्निप्परपु मे जाकर न बताना।" कुजप्पु ने केलन से स्नेहपूर्वक कहा।

केलन ने कन्निप्परपु मे आकर कुजप्पु के नोट सुखाने की कथा कृष्णन मास्टर को सुनायी। यह कहकर कृष्णन मास्टर वटक्कन पाट्टु मे कहे अनुसार, एक आँख से हँसने और एक आँख से रोने लगे।

कुजप्पु अब कन्निप्परंपु मे खाली हाथो वापस नही आया है। उसके हाथ मे एक सन्दूक है। सन्दूक से सिर्फ तीन चीजें कुजप्पु ने बाहर निकाली। यह विमाता के लिए एक जरीदार धोती, गोपालन को एक हरी कमली और श्रीधरन के लिए एक टिन भर मिठाइयाँ थी। (उसका विचार रहा होगा कि श्रीधरन अब भी एक बच्चा ही है।)

कृष्णन मास्टर ने कुजप्पु के कन्निप्परपु मे आने की बात से अवगत होने का बहाना तक नही किया। विमाता ने कोई वैरभाव नही दिखाया। गोपालन ने कुछ नही बताया। श्रीधरन तो कुछ पैसा मिलने की प्रतीक्षा मे ही था।

एक दिन सुबह हमेशा की तरह पति को शक्कर की काफी ला देने पर (शक्कर की काफी कृष्णन माम्टर का प्रिय पेय था।) कृष्णन मास्टर ने कुजप्पु के बारे म पूछा, "उसका प्लान क्या है ?"

पत्नी ने हथेली दिखायी, "मुझे कुछ नही मालूम।"

"अरे, पानी मे रहकर मगर से बैर मोल लेने से किसे लाभ होगा ?"

एक बार कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन से कुजप्पु को सुनाने के लिए यो कहा था। रेल विभाग की हडताल मे भाग लेकर नौकरी से पदच्युत होने की बात का इशारा करके ही वे बोले थे।

लेकिन मास्टर की वह कहावत श्रीधरन के लिए भी लागू थी। उम इलाके के सपादक से श्रीधरन ने हडताल की घोषणा की थी।

उस पर विचार करने पर श्रीधरन के मन मे एक नयी बात उभर आयी। ऐसे भी तो तालाब होगे, जहाँ मगर नही रहते।

तिरुविताकूर के कोल्ल से एक सचित्र साप्ताहिक निकल रहा है। म्युनिसिपल लायब्रेरी से उसके अक वह हमेशा देखता है और बडी तत्परता से पढता भी। वह अच्छे स्तर की एक साहित्यिक पत्रिका है।

तिरुविताकूर मे साधारण जन, साहित्य मे ही बातचीत करते है, लिखते है और चिन्तन करते है। वे असली साहित्य की पहचान कर सकते है। महान कवियो मे कमलासन और परमेश्वर तिरुविताकूर के ही तो है। सिर्फ नारायण को ही मलबार मिला है।

कोल्ल के सचित्र साप्ताहिक को उसने एक कविता भेजने का निर्णय लिया।

नयी कविता की नोटबुक मछली से भरे तालाब की तरह थी। उनमे से एक छोटी-सी मछली—एक प्रेम-कविता—को निकाल कर कोल्ल सचित्र साप्ताहिक के सपादक के नाम प्रेषित किया।

कविता के अगले अक मे प्रकाशित होने की प्रतीक्षा थी। लेकिन उसमे दिखाई नही दी। लेकिन फिर अगले अक मे जरूर प्रकाशित होने की प्रतीक्षा करते समय एक दिन सुबह दुमजिले मकान के अपने कमरे मे बैठकर गणित को कोसते

हुए रगनाथय्यकगर को निवेदन लिखते वक्त नीचे से बाबूजी की पुकार सुनी। सीढियाँ उतरते समय पगडडी से जानेवाले डाकिये की खाकी कमीज का निचला हिस्सा देख लिया।

बरामदे मे पहुँच गया। पिताजी एक खुले हुए पत्र को अपने हाथ मे पकडे खडे थे। (पिताजी के चेहरे पर एक तरह की नफरत थी। पत्र हाथ मे थमाते समय थूकने के भाव मे उन्होने आँखे तरेरकर देखा।)

पिताजी ने कुछ कहने की कोशिश की तभी नाई वेलु अपने कन्धे की पेटी को तौलिये से ढककर आता हुआ नजर आया। (पिताजी हफ्ते मे दो बार दाढ़ी बनवाया करते थे। फिर बाबूजी ने कुछ नही बताया।)

कोल्ल सचित्र साप्ताहिक के कुत्ते के पाखान के रगवाले लिफाफे पर पता तो पूर्णरूप से लिखा गया था

श्री सी० श्रीधरन,
कन्निप्परपु हाउस,
समीप नयी सडक,
अतिराणिप्पाट

पत्र (सी० श्रीधरन की कविता के बारे मे सपादक के अभिनन्दन की सभावना थी।) उलटकर देखा। कोल्ल सचित्र साप्ताहिक के लिए भेजी हुई प्रेम-कविता।

उसके नीचे सपादक की लिखावट मे छोटा वाक्य लिखा था। "कविता बिलकुल रद्दी है। वापस भेज रहे है।" (डी० पी० का सक्षिप्त हस्ताक्षर भी।)

लगा कि पैर खिसककर मल के गड्ढे मे गिर पडा है।

पिताजी की वीभत्स दृष्टि का मतलब समझ गया। कालेज की किताबे न पढकर कविता लिखनेवाले इस छोकरे का पागलपन अब भी दूर नही हुआ है। हे भगवान्! यह छोकरा ऐसी रद्दी रचनाएँ लिख रहा है, जिसकी जरूरत किसी को नही है।

कोल्ल साप्ताहिक मे भजते समय कविता के साथ जरूरी टिकट लिफाफे मे नही रखा था। (कजूसी के कारण नही, बल्कि कविता प्रकाशित होने के यकीन के कारण ही ऐसा किया था।) करुणामय सपादक ने उसकी निमम हत्या कर लाश को कब्र मे बन्द कर अपने खर्च से कोल्ल से इधर भेज दिया है।

10 इब्राहीम कथाकार

श्रीधरन के कॉलेज जाते समय चौकीदार आण्डिक्कुट्टि कुछ खुसुर-फुसुर करता आ रहा था। मूँछ कणारन भी विपरीत दिशा से आ गया।

"आण्डिक्कुट्टि, तुम क्या बकझक करते चलते हो?" कणारन ने पूछा।

"पणिक्कर के स्कूल मे एक बढई मास्टर है न—केशवन, वह साइकल लेकर जा रहा है।" आण्डिक्कुट्टि ने करीब सौ गज दूर साइकल सवार केशवन मास्टर की तरफ इशारा किया।

"उसने तुम्हारा क्या बिगाडा ?" कणारन ने पूछा।

"मैंने उसके बारे मे किसी से कुछ मजाक मे कहा था। वह बात उसके कानो तक पहुँच गयी। 'वर्दी पहनकर नौकरी मे प्रवेश करते ही तुम्हे चौकीदारी से हटा दूगा'—बढई ने ऐसी एक ताकीद दी है।"

"हाँ, उससे जरा सावधान रहो, आण्डिक्कुट्टि।" कणारन ने बडप्पन दिखाते हुए बताया। "बढई पुलिस इन्सपेक्टर के ओहदे पर खाकी पेन्ट, कोट और टोपी पहनकर आवेगा तो हमे सडक पर चलने की उससे अनुमति लेनी होगी—समझ गये न ?"

"हाँ – हैं—आण्डिक्कुट्टि को बुखार आ जाएगा।" आण्डिक्कुट्टि ने जमीन पर थूकते हुए कहा।

दोनो ने विदा ली।

सफेद ट्विल शर्ट, कोट और लिनन धोती पहने नयी सडक का साइकिल सवार केशवन मास्टर खूबसूरत आदमी है, पर बर्ताव मे विदूषक है। शरीर के गठन मे पुलिस-इन्स्पेक्टर बनने की योग्यता है। उसके पाँव जमीन पर नही पडते। 'पुलिस इन्स्पेक्टर' के चनाव मे गया था। नतीजा मालूम नही हुआ। पर, केशवन अभी स सब पुलिस इन्स्पेक्टर का भाव, बर्ताव और अभिनय दिखाने लगा है। किसी से भी कुछ मन-मुटाव होने पर केशवन अपनी साइकिल से उतरकर धमकी देता, "बच्चू, जरा मुझे वर्दी पहनने दो तब मैं दिखा दूँगा।"

केशवन मास्टर की पुलिस-सजावट को देखकर सबसे अधिक बदहवास होनेवाला व्यक्ति स्कूल-मैनेजर चन्दुप्पणिक्कर था। केशवन मास्टर से मन-मुटाव होन पर बात बढ जाएगी। पुलिस इन्स्पेक्टर हो जाने पर वह जरूर बदला लेगा। मैं रात को जब ग्राहको के सामने थैली से कौडियाँ निकालकर ज्योतिष की गणना करूँगा, उस समय यह पुलिस-इन्स्पेक्टर केशवन एकाएक झपटकर कहेगा कि यहाँ चोरी का माल रखने की शिकायत मिली है, तुरन्त जाँच करनी है तो फिर क्या किया जा सकेगा ? अहाते के एक कोने मे कोई सामान छिपाकर रखने के बाद यहाँ चोरी का माल है—कहकर अगर मुझे गिरफ्तार कर हिरासत मे ले लेगा तो मैं भला क्या कर सकूँगा ?

पणिक्कर ने केशवन मास्टर के जन्म-नक्षत्र को तरकीब से समझ लिया। उस दिन रात को केशवन मास्टर के नाम ज्योतिष की गणना की तो शुभ लक्षण ही दिखाई पडा। पुलिस की नौकरी उसे जरूर मिलेगी

केशवन मास्टर की प्रार्थना के बिना ही कजूस मैनेजर चन्दुपणिक्कर ने उसकी

तनख्वाह मे पाँच रुपये की वृद्धि कर दी।

उसी बढई केशवन मास्टर ने चौकीदार आण्डि को नौकरी से हटा देने की धमकी दी थी। चौकीदार आण्डि को ही नही, उस इलाके के कुछ और लोगो को भी केशवन ने वर्दी मे आते ही हमला करने के लिए नोट कर रखा था।

कालेज पहुँचने पर लडके इधर-उधर जमा होकर फुसफुसाते दिखाई पडे। कुमार मेनोक्की से इस बात की वजह जाननी चाही। मेनोक्की ने कहा, "जरा उस दीवार के पास जाकर देख !"

पाखाने की दीवार पर नजरे घुमायी। अन्दर की दीवार पर कोयले से बडे अक्षरो म लिखा हुआ था 'कृष्णनुण्णि मास्टर ने शिशु की हत्या कर दफना दिया है।"

दो दिन पहले नारायणन नपियार ने वह किस्सा श्रीधरन को बडे रहस्यपूर्ण ढग से बताया था। अब इस समाचार का पाखाने के दीवार रूपी अखबार मे मोटे अक्षरो मे विज्ञापन दिया है।

कृष्णनुण्णि नायर उसी कॉलेज मे बॉटनी का अध्यापक है। दुबला-पतला, गोरा और खूबसूरत युवक। घुघराले बालो का मुकुट सिर पर पहन रखा है। हास्य-व्यग्य मे पटु होने के साथ ही स्नेहशील अध्यापक है। छात्रो को पढाने मे बडा होशियार है। छात्रो का अत्यधिक प्रिय शिक्षक है। वह बीच-बीच मे चुटकियाँ लकर छात्रो को हँसाता। ड्राइग मास्टर रागविकटाव कहा करता है कि कृष्णनुण्णि मास्टर की बॉटनी क्लास हँसी-ठहाके की एक प्रयोगशाला है।

ऐसा कृष्णनुण्णि मास्टर एक खतरे मे पड गया। कृष्णनुण्णि की शादी हो चुकी थी। उसकी साली सगीत सीखने के लिए अपनी बहिन के यहाँ रहने लगी। एक साल बीत जाने पर मास्टर की पत्नी ने नही, बल्कि अविवाहिता साली ने ही पहले एक बच्चे को जन्म दिया। मास्टर ने इस नवजात शिशु को गला घोटकर मार डाला और एक तालाब के किनारे दफना दिया। लेकिन सियारो ने शिशु की उस लाश को उखाडकर बाहर निकाल दिया

इस समाचार का उस इलाके मे बडे गुप्त रूप से प्रचार-प्रसार हुआ। यह सुनकर छात्रो को बेहद गम हुआ। फिर भी कृष्णनुण्णि मास्टर से उन्हे किसी तरह की घृणा नही हुई। मास्टर ने उनके दिलो को इतना अधिक प्रभावित जो किया हुआ था।

पाखाने की दीवार पर यह समाचार छात्रो ने नही लिखा था। सबको मालूम है कि किसने लिखा था। वह अटेण्डर मुस्तफा था।

पठान-वशज मुस्तफा बॉटनी प्रयोगशाला का अटेण्डर है। काला-कलूटा और दुबला-पतला एक आदमी, बडी-बडी मूँछे और लाल-लाल आँखोवाला।

मुस्तफा समय और अपनी ड्यूटी का ख्याल किये बिना शराब पीने लगता।

स्कूल से चले जाने पर बदतमीजो की चण्डाल-चौकडी मे ही वह दिखाई देता।

शराब और ताश खेलने की लत उस पर सवार थी ।

बॉटनी क्लास के छात्रो को पढाने के लिए कुछ खास पौधो को इकट्ठा कर लाने के लिए कृष्णनुण्णि मास्टर मुस्तफा को तैनात करता। पहले मुस्तफा ताडी शॉप मे जाता । दो बोतल गटागट पीता । फिर वह उस पौधे का नाम भूल जाता । फिर घीकुवार नामक पौधे के बदले एरण्ड और अढउल के बदले कोई दूसरा फूल लेकर वह बॉटनी क्लास मे जा पहुँचता । कृष्णनुण्णि मास्टर हँसता, साथ ही छात्र भी हँसते ।

पहले कुछ दिनो तक मास्टर क्षमा करता रहा । पर, मुस्तफा के चरित्र मे कोई खास परिवर्तन नजर नही आया। एक दिन मुस्तफा ने ताडी पीकर कृष्णनुण्णि मास्टर को खरी-खोटी सुनायी । कृष्णनुण्णि नायर ने हेडमास्टर से शिकायत की । हेडमास्टर ने अटेण्डर मुस्तफा को ताकीद देकर कहा कि अब यदि एक भी शिकायत तेरे खिलाफ आयी ता तुझे नौकरी मे हटा दिया जायेगा । इसी कारण कृष्णनुण्णि मास्टर उल्लिखित खतरे मे फँस गया। मुस्तफा ने अपना विरोध पाखाने की दीवार पर विसर्जित किया ।

दीवार पर की लिखावट को बॉटनी-छात्र शकरन अडियोडी ग खुरचकर मिटा दिया । लेकिन इतने मे कॉलेज के सभी छात्रो ने इन पक्तियो को कठस्थ कर लिया था ।

श्रीधरन ने इस घटना के बारे मे एक कहानी लिखने का निश्चय किया । उसके लिए 'मान्यता-प्राप्त लाश का गड्ढा' उचित शीर्षक भी ढँढ निकाला ।

शाम को कॉलेज से घर लौटते समय श्रीधरन 'मान्यता प्राप्त लाश का गड्ढा' के सविधान के बारे मे सोच रहा था। वह कहानी मे कृष्णनुण्णि मास्टर को विलेन नही बनाना चाहता था । मास्टर की पत्नी की निस्सहाय अवस्था को ही कथा का केन्द्र-बिन्दु बनाना चाहिए । एक ओर पति, दूसरी ओर बहिन । वह साध्वी फिर क्या करेगी ? सारे अपराधो को सगीत सीखने के लिए आयी हुई बहन के सिर पर ही थोपना चाहिए । इस बात पर सिर खपाते समय 'बैल' दामु सडक की विपरीत दिशा से आता हुआ नजर आया । उसके हाथ मे एक मासिक पत्रिका थी ।

"अरे दामु, यह क्या है ? तू कब से किसी मासिक का पाठक बन बैठा ?" श्रीधरन ने जरा मजाक के लहजे मे ही पूछा ।

दामु ने श्रीधरन की तरफ पत्रिका बढा दी ।

श्रीधरन ने उसे लेकर देखा । मासिक नही, साप्ताहिक है । राजा की सपादकी मे निकलनेवाली मशहूर साप्ताहिक पत्रिका है ।

"तू जरा एक बार इसे पढ ले । इसमे मेरे मालिक के भतीजे की एक कहानी

है।" दामु ने गर्व से सूचना दी।

"तेरे मालिक का भतीजा कौन है?" साप्ताहिक के पृष्ठो को उलटते हुए श्रीधरन ने पूछा।

"उसका नाम इब्राहीम है। पुराने ज़माने मे वह एक दर्ज़ी था। अब मालिक के कपडे की दूकान मे असिस्टेण्ट मैनेजर की हैसियत मे काम कर रहा है। शायद तूने उस लगडे को देखा होगा।"

दामु जिस दूकान मे काम करता है उसमे श्रीधरन ने एक लँगडे को देखा था। तुरन्त उसका स्मरण हो आया।

साप्ताहिक के पृष्ठो को उलटकर देखा। बीच के पृष्ठो मे ही वह प्रकाशित थी।

"लघु कथा—'कर्मफल'
(विरिप्पिल इब्राहीम)"

अरे चालाक!

"साप्ताहिक तू ही ले ले।" दामु ने एक बोझ उतार रखने के भाव मे कहा। "उस यार ने साप्ताहिक की पच्चीस प्रतियाँ पैसे देकर खरीदी। हर मित्र को एक-एक प्रति भेट की। सबके साथ मुझे भी एक प्रति भेट की। उस लँगडे की कहानी पढने के लिए मेरे पास अवकाश नही है।" दामु मुँह मोडकर चला गया। श्रीधरन भी कन्निप्परपु की ओर चला गया।

चाय पीने के बाद घर के कमरे मे बैठकर साप्ताहिक की कहानी 'कर्मफल' बडे ध्यान से पढी। रोचक वार्तालाप और शुद्ध भाषा मे कल्पना वैभव के साथ इस काव्य-शिल्प का प्रणयन किया गया था। यह देखकर श्रीधरन को ताज्जुब हुआ। साथ ही, कुछ ईर्ष्या भी महसूस हुई।

"कथाकार विरिप्पिल इब्राहीम से एक दफा मुलाकात करनी होगी" श्रीधरन ने सोचा। कथा लिखने का मर्म उस कृपाप्राप्त कथाकार से समझना है। अगले दिन 'बैल' दामु को देखा।

"तेरे मालिक के भतीजे इब्राहीम से परिचित होने की मेरी इच्छा है।" श्रीधरन ने अपना आग्रह प्रकट किया।

"ओ, तू भी एक कवि है न? अभी मेरे साथ आ। इब्राहीम को तुझसे इण्ट्रो-ड्यूस करूँगा। उससे मिलने के लिए जाने पर उस लगडे को बडा गर्व महसूस होगा।"

दामु के पीछे-पीछे श्रीधरन कपडे की बडी दूकान के सामने पहुँच गया।

"अब तो अच्छा मौका है।" दामु ने सूचना दी "इब्राहीम का चाचा मालिक कही बाहर गया है।"

कैश काउण्टर के पीछे एक सफेद दाढ़ीवाला बैठा था।

दामु ने कहा, "मैनेजर उस्मान कोया है वह ।"

"इब्राहीम कहाँ है ?"

दामु ने इशारा किया । दूर एक कोने मे कपडो से भरी एक बडी अलमारी के निकट एक नौजवान सिर झुकाकर बैठा था, वह इब्राहीम है ।

इब्राहीम गोद मे एक पुस्तक खोलकर पढ रहा था ।

नजदीक गया ।

दामु ने श्रीधरन का परिचय कराया, "ये है हमारे अनिराणिप्पाट के एक युवा साहित्यकार । नाम है 'श्रीधरन' । इब्राहीम से परिचित होने के लिए आये है ।"

"एक नया उपासक—ठीक है न ?" इब्राहीम सगर्व मुस्कराया । उसने अपनी गोद की पुस्तक को अलमारी मे छिपा दिया ।

"साप्ताहिक की 'कर्मफल' कहानी पढी—श्रेष्ठ कहानी है ।" श्रीधरन ने पहले हार्दिक बधाई दी ।

इब्राहीम ने इस तरह अपने ओठो को जरा टेढा कर सिर हिलाया मानो ऐसी तमाम बधाइयो म उसके कान परिचित है ।

"क्या आप कथाओ का प्रणयन करते है ?" (लिखने की शैली म ही वह बात-चीत करता है ।)

"कभी-कभी कुछ लिख लेता हूँ ।'

"पब्लिश किया है ?"

"एक दो कॉलिज मेगजीन मे प्रकाशित हुई थी ।"

"कई पुस्तके पढनी चाहिए । तभी कथा की रचना कर मकते है ।" कथाकार इब्राहीम ने सलाह दी ।

श्रीधरन ने सिर झुकाकर उसकी बात मानी ।

इब्राहीम को कुछ और उपदेश देन की तमन्ना थी । तभी मालिक और एक-दो ग्राहक वहाँ घुस आय ।

"एक दिन मेरे घर आये तो हम विस्तार से बातचीत करेगे ।" कहकर हड-बडी मे अपने बाये पैर को घसीटता इब्राहीम ग्राहको से पूछताछ करने के लिए उस तरफ चला गया ।

"अब जल्दी चलते बनो ।" बैल दामु न आँखो और हाथ से इशारा करते हुए सावधान किया । (मालिक ने एक भेडिये की तरह सिर ऊपर उठाकर देखा ।)

श्रीधरन ने जान लिया कि इब्राहीम असिस्टेंट मैनेजर कहलाने पर भी दामु की तरह ही एक सेल्समैन है । यह दूसरी बात है कि 'कर्मफल' के अनुग्रहीत गल्प-कार विरिप्पिल इब्राहीम के प्रति पहले जो आदरभाव था वह कम नही हुआ ।

श्रीधरन ने चार दिन तक कडी मेहनत करने के बाद 'मान्यता-प्राप्त लाश

का गड्ढा' के काम को पूरा किया।

इब्राहीम को कहानी सुनाकर उस सिद्धहस्त लेखक की सलाह के मुताबिक श्रीधरन चाहे तो दुबारा इसे लिख सकता है।

अगले दिन रविवार को इब्राहीम की छुट्टी है। उसके घर पर सुविधानुसार बहस हो सकती है।

इब्राहीम के घर के बारे मे दामु ने ज़रूरी सूचना पहले ही दे दी थी। पूपिक्करा मे, समुद्र के किनारे श्मशान का एक बडा अहाता है। उसकी पूर्व दिशा मे बादाम और दो कटहल के पेडो से ढके अहाते मे एक पुराना छप्पर है। उसके एक हिस्से मे एक नयी बैठक भी बनाई गई है।

श्रीधरन दोपहर के भोजन के बाद, 'मान्यता-प्राप्त लाश का गड्ढा' के साथ पूपिक्करा की तरफ निकल पडा। पूपिक्करा की बडी मसजिद के श्मशान के नज़दीक पहुँचने पर एक बादाम और दो कटहल के पेडो को सिर ऊँचा कर खडे हुए देखा। उस छोटे से अहाते मे एक पुराना छप्पर और प्लास्टरहीन दीवारो का एक छोटा-सा कमरा भी दिखाई दिया।

श्रीधरन उधर चला गया। एक मध्य वयस्क मुसलमान औरत आँगन मे एक बकरी के बच्चे को कटहल के हरे पत्ते खिला रही थी।

श्रीधरन ने अदब मे पूछा, "क्या यही इब्राहीम का घर है ?"

औरत न आगतुक को गौर से देखा। उसने सिर का घूँघट जरा ठीक किया। फिर 'हाँ' के अर्थ मे चेहरा हिलाया।

"इब्राहीम है ?"

"इब्राहीम समुद्र के किनारे गया है। अभी आया जाता है। तुम वहाँ बैठो।' उसने बैठक की तरफ इशारा किया।"

(कथाकार मलविसर्जन के लिए ही समुद्र-तट की ओर गया था, वायु-सेवन के लिए नही।)

श्रीधरन बरामदे मे चला गया। बैठक का दरवाज़ा खुल गया था।

श्रीधरन ने कथाकार के कमरे मे उत्सुकतावश नज़रें घुमायी। एक कोने मे एक पुरानी अलमारी-भर पुस्तके थी। कमरे के बीच लिखने की एक मेज । मेज पर, कुर्सी के हाथ के तख्ते पर और ज़मीन पर भी किताबें। कुछ पुस्तकें खुली हुई थी। कागज़ के टुकडो से पृष्ठो पर निशान लगाये गये थे।

इतने अधिक ग्रन्थो को एक ही समय पढ डालनेवाले इब्राहीम की ज्ञानतृष्णा का स्मरण कर श्रीधरन दग रह गया।

इब्राहीम के मनपसद ग्रन्थो को जानने के लिए श्रीधरन ने सरसरी निगाहो से उनकी जाँच की।

'विरुतन शकु', 'शातकुमारी', 'इन्दुलेखा', 'सुकुमार कथामजरी'—ये चार

पुस्तकें मेज पर विश्राम ले रही थी। 'कोमल वल्ली' 'आवल्लात्त नोट्ट (बुरी नज़र), 'बद्रुक मुनीर'—ये तीन किताबें कुर्सी के तख्ते पर मुँहखोले पडी थी। 'किस्मत से लडनेवाले कुछ साहसी' और 'लदन महल के रहस्य' जमीन पर पडी थी।

दो-तीन कागज मेज पर पडे थे, जिन पर कुछ लिखा हुआ था। शायद इब्राहीम की नयी कहानी होगी। श्रीधरन ने कागज़ पर झाँककर देखा। पढने पर मालूम हुआ कि कहानी नही थी। कुछ ऐसी पक्तियाँ और वाक्य थे, जिनका आपस मे कोई सम्बन्ध नही था। कागज के पृष्ठो को उलटकर देखा। सब उसी तरह के है। मालूम हुआ कि कई किताबो से उसने नकल कर रखी है। 'इन्दुलेखा से कुछ पक्तियाँ, 'बुरीनजर' मे बातचीत की कुछ पक्तियाँ। 'कोमलवल्ली' से एक वर्णन। 'विरुतन शकु' से एक छोटा-सा विवरण। इन साहित्यिक मसालो को ही उसने जमा कर दिया है।

एक नये कागज़ पर 'दहेज' मोटे अक्षरो मे लिखा था। (नयी कहानी का शीर्षक होगा।)

श्रीधरन को विरिप्पिल इब्राहीम की कहानी गढ़ने की तरकीब मालूम हो गयी।

इब्राहीम पहले एक दर्ज़ी था। कई किस्म के कपडो के टुकडो को जोडकर एक नयी पोशाक बनाने की कला को इधर भी काम मे लाया गया है। इब्राहीम अकिचन तो नही है—कुछ भावना तो है। पढने से कुछ ज्ञान भी प्राप्त कर लिया है। वह कहानी के नये 'प्लाट' को गढता, उस प्लाट के लिए अपेक्षित शब्द वर्णन, बातचीत आदि घटक हेर-फेर के साथ दूसरे लेखको की पुस्तको से चोरी करता। इन सबको ठीक ढग से जोडने की क्षमता भी उसमे है।

राजा के साप्ताहिक की 'कर्मफल' कहानी दूसरो के कपडो के टुकडो से बुनी हुई एक कमीज़ थी। सपादक-गण 'विरुतन शकु' और 'कोमल वल्ली' के वाक्यो और वर्णनो को याद करनेवाले नही होते।

लगडे इब्राहीम को दूर से आते देखकर अचानक श्रीधरन बैठक से बरामदे मे जाकर खडा हो गया। फिर घर से रवाना होने की मुद्रा मे एक पैर बरामदे मे और दूसरा आँगन मे रखकर खडा रहा।

इब्राहीम ने श्रीधरन को गौर से देखा। एकाएक पहचान नही हुई। पहचानने पर ज़रा मुस्कराया। उसने खुली हुई बैठक की तरफ घबडाकर देखा अपनी करतूतो का रहस्य क्या इस आदमी को मालूम हो गया है?

श्रीधरन ने इब्राहीम के चेहरे की सकपकाहट देखी।

"श्रीधरन को आये ज्यादा देर हो गयी क्या?" इब्राहीम ने अदब के साथ कहा।

"नही, अभी आया। यह जानने पर कि आप यहाँ नही हैं, मैं वापस जाने ही वाला था।"

श्रीधरन ने जान-बूझकर झूठ कहा। बकरी को पत्ते खिलानेवाली वह औरत अहाते के एक कोने मे चली गयी थी।

(सिर्फ वही एकमात्र गवाह थी।)

"श्रीधरन, भेंट-वार्ता का समय तो ।" इब्राहीम ने अपनी घबराहट छिपाते हुए पराजय के लहजे मे कहा। "अभी मुझे अपने एक दोस्त की शादी मे शरीक होने जाना है ।"

"कोई बात नही, मैं फिर आऊँगा।"

इब्राहीम सकपकाया-सा खडा रहा। मेहमान को बैठक मे न्योता देने का हौसला नही था।

"मैं तुरन्त कपडे बदलकर आता हूँ। हम साथ ही चलेंगे।" मेहमान को निमत्रण दिये बगैर इब्राहीम बैठक को बद कर कमरे मे घुस गया। अपनी पोशाक बदली। हाथ मे एक नयी छतरी लिये वह पाँच मिनट के अन्दर बाहर आ गया।

"हम चाय 'मक्कानी' मे पियेंगे "

अतिथि-सत्कार की मर्यादा का स्मरण इब्राहीम को बडी देर बाद ही आया था।

"इब्राहीम, अभी चाय की जरूरत नही।" श्रीधरन ने सस्नेह उस निमत्रण को टाल दिया।

दोनो बाहर पहुँचने के बाद महाश्मशान के पास से अलग हो गये। इब्राहीम दक्षिण और श्रीधरन वायु-सेवन के लिए उत्तर के समुद्र-तट की तरफ चले गए।

बिदा लेते समय इब्राहीम ने सलाह दी, "श्रीधरन, आगे मुझसे मुलाकात करने के लिए आते समय पहले उसकी सूचना दे देना। हमारी दूकान के सेल्समैन दामोदरन से कहना काफी है "

कथाकार इब्राहीम की बात शिरोधार्य कर श्रीधरन चला गया।

इब्राहीम के कमरे के साहित्य-प्रेतो का स्मरण कर हँसते हुए वह चल रहा था।

"फघ्धुम्म्म" एकाएक चौक उठा। उस भयकर आवाज के साथ हलका-सा भूचाल भी आया।

श्रीधरन ने घबराहट के साथ चारो तरफ दृष्टि डाली। सडक के नजदीक के अहाते से ही उस आवाज और उस भूचाल की शुरूआत हुई थी।

एक बडे नारियल के पेड का ऊपरी भाग काटकर गिराने की आवाज थी। ऊपर की तरफ देखा—सिर-कटे नारियल के पेड के छोर पर बैठा एक आदमी कटे पेड के साथ-साथ हिल रहा था। ध्यान से देखने पर उस आकाशविहारी को पह-

चान गया किट्टन मुँशी का पुराना शिष्य तुप्रन !

तुप्रन को लकडहारा बने चार-पाँच साल बीत गये। किट्टन मुशी की सलाह के मुताबिक तुप्रन ने आण्डी के अधीन छह महीने तक एप्रेण्टिस होकर इस पेशे मे प्रशिक्षण पाया था। एक कन्धे पर लिपटी हुई मोटी रस्सी (कभी दूसरे कन्धे पर गोलाकार तार भी) और हाथ मे एक कुल्हाडी लेकर आगे जा रहे तुप्रन को श्रीधरन कभी-कभी रास्ते मे देखा करता था। घर की तरफ झुककर रहनेवाले नारियल को तारो से खीचकर बाँधता, नही तो उन्हे काट डालता। तुप्रन का यही पेशा है। इस पेशे मे तुप्रन से प्रतिस्पर्धा करने के लिए अन्य इलाको मे भी और कोई नही था। आसमान मे इस खतरनाक अभ्यास को प्रकट करने का हौसला रखनेवाले कम लोग है।

यो कुली मजदूर तुप्रन अब लकडी काटनेवाला ठेकेदार है। अब तुप्रन को धन्धे की तलाश मे मारे-मारे नही फिरना पडता। जरूरतमद लोग उसे स्वय ढूँढते चले आते है।

"एक नारियल का पेड घर की तरफ झुक आया है, तुप्रन, उसे काटना है।"

तुप्रन उस जगह जाकर सरसरी निगाह से देखता। पेड की स्थिति उसका घुमाव, आसपास की स्थिति आदि के बारे म मन मे एक तस्वीर खीचता। फिर योजना तैयार करन के विचार मे जीभ को ऊपरी ओठ पर मोडकर ऊपर देखता हुआ बडी देर तक खडा रहना। फिर पारिश्रमिक के बारे मे वह झट से स्पष्ट कहता "दस रुपये होगे।"

जरूरतमद लोग उससे पारिश्रामिक कम करने की बात नही करते।

कब पेड घर के ऊपर गिरेगा इसका अदाज नही लगाया जा सकता। दूसरे लकडहारे को ढूँढकर लाने का वक्त भी नही होता, इसलिए तुरन्त अनुमति देनी होती।

अपने पेशे मे तुप्रन एक विशेषज्ञ है। बडी ऊँचाई से काटी गयी डालो को वह पूर्व निर्धारित जगह पर ही गिराता। घर या अन्य वृक्षो को ज़रा भी चोट पहुँचाये बिना तुप्रन यह काम कर डालता।

सिरे को काटने से हिलने-डुलनेवाला नारियल का पेड और उसके छोर पर पेड के साथ ही साथ आसमान मे हिलनेवाला तुप्रन ! श्रीधरन को यह एक अद्भुत दृश्य लगा। उसे लगा, जैसे सिर-विहीन एक घोडे की गरदन को पकडकर आसमान मे एक राक्षस सवारी कर रहा हो। श्रीधरन समुद्र-तट पर जाकर बडी देर तक वायु-सेवन करता बैठा रहा। घर लौटते-लौटते धुँधलका छा गया था। एकाएक घर के दक्षिण कोने से उसे जोर की बातचीत सुनाई पडी। कान खडे करके सुनने लगा। गोसाई भाषा मे ही बातचीत हो रही थी। 'ठीक है' 'तुम पियो'—'मेहरबानी' 'पीशात्ती' (चाकू) पकडो'

हाँ गोसाईं ही है। कमण्डनु, तिलक, लोहे की छडी और लोटा लेकर कुछ हिन्दुस्तानी आया करते है। कृष्णन मास्टर को उनमे बडी दिलचस्पी है। वे श्रद्धापूर्वक उनकी अगवानी करते। कभी-कभी मेहमानो की तरह एक दिन घर मे उन्हे ठहराते। उन लोगो ने कन्निण्परपु मे डेरा डाला होगा।

श्रीधरन ने हौले से दक्षिण के आँगन की तरफ झाँककर देखा। वहाँ अशोक वृक्ष के नीचे दो आदमी खडे है। उनमें से एक को पहचान लिया—बडे भाई साहब फिट्टर कुजप्पु। ध्यान से देखने पर दूसरे को भी पहचान लिया—पाणन कणारन।

पाणन कणारन विदेश-यात्रा पूरी कर कृष्णन मास्टर से मुलाकात करने आया है। कृष्णन मास्टर हाजी के घर मे ट्यूशन खतम कर अभी तक नही आये है। इस बीच कणारन थोडा सा गाँजा बीडी पीने आँगन के दक्षिण कोने मे चला गया। कटहल के पत्ते के दोने मे अगार और गाँजा तैयार करते समय कुजप्पु उसकी गन्ध सूघकर पाणन के सामने पहुँच गया। फिर दोनो बारी-बारी से गाँजा पीने लगे। पाणन ने कहा कि गाँजा पीते समय सिर्फ हिन्दुस्तानी मे ही बातचीत करनी चाहिए। फिर वातावरण गोसाईमय हो गया। लम्बे अर्से पहले फौज मे रहते हुए कुजप्पु ने जो हिन्दुस्तानी सीखी थी, उन शब्दो को वह याद कर ही रहा था कि उसे उल्टी होने लगी। तभी वह कणारन से बोला, "जरा यह पीशाकत्ति (कतरना) तो पकड।"

11 बरगद के चबूतरे का सन्यासी

गोपालन भैया की बीमारी अधिक नाजुक हालत मे पहुँच गयी। वह खोपडी की नसो मे घुसकर धीरे-धीरे आक्रमण करने लगी।

"श्रीधरन—श्रीधरन— इधर दौड आ—ज़रा यह देख " गोपालन भैया कोई अद्भुत दृश्य दिखा देने के लिए पुकारता। श्रीधरन दौडकर नज़दीक जाता। तब गोपालन भैया अपने हाथ से या उँगली के छोर से कुछ नोचकर धीरे-धीरे उसे खीचकर कहता, "अरे देख, ग्रथिक आ रहा है।"

"गोपालन भैया, कुछ भी तो दिखाई नही देता।" असलियत कहे तो उसे नाराज़गी ही होगी।

"अरे, तेरी दृष्टि क्या इतनी कमज़ोर हो गयी है ? अरे देख ग्रथिक खिचा आ रहा है ।"

जो औषधियाँ गोपालन भैया ने पी थी, उनमे ग्रथिक भी था—रोम के सुफिर से धागे की तरह वह बाहर निकल रही है, ऐसी एक भ्राति ने उसको दबोच लिया है। मस्तिष्क की नसो का यह माया प्रदर्शन थोडी देर के लिए ही ठहरता है। थोडी देर बाद होश आने पर गोपालन भैया अपनी बेवकूफी का ज़िक्र कर पछताता। शरम और दुःख के कारण उसकी आँखें गीली हो जाती। बिस्तर पर लेटे दूर तक

ताकते हुए, अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहानेवाले गोपालन भैया को देखने पर श्रीधरन की आँखो मे भी पानी भर आता ।

"तू 'ज्ञानप्पाना' लेकर जरा पढ" गोपालन भैया अपनी आँखें पोछकर चेहरे पर खुशी जाहिर कहते हुए कहता

"मालिका मुकलेरिय मन्नटे तोलिल मारापपगेट्टुन्नतु भवान ।"

(राजप्रसाद मे विराजमान राजा के कन्धे पर भीख माँगने की झोली ईश्वर ही प्रदान करता है ।)

वैद्य, हकीम, डाक्टर, मान्त्रिक आदि ने अपनी क्षमता के अनुसार इलाज किया । लेकिन गोपालन भैया की हालत ज्यो की त्यो थी ।

उन्ही दिनो बरगद के चबूतरे के सन्यासी की चमत्कारो की बात सब ओर फैल गयी थी ।

राजा कॉलेज के निकट, मन्दिर के तालाब के किनारे, एक बडे बरगद के चबूतरे पर एक सन्यासी आ बैठा है । चबूतरे के कोने मे एक पर्णकुटीर बनाकर ही उसमे वह सन्यासी और शिष्य ठहरे है ।

कॉलिज जाते समय श्रीधरन को सन्यासी कभी-कभी दिख जाता था । लगोटी लगाये एव सारे बदन मे भस्म लेपन किये हुए दुबला-पतला एक व्यक्ति— करीब छह फुट लम्बाई होगी। सिर की जटाएँ लटक रही थी । चेहरे की भौहो मे भी भस्म-लेपन किया गया था । भस्म मे से आँखे अँगारो की तरह चमक रही थी ।

सन्यासी बीमारो का इलाज करता है । किसी भी बीमारी को जड से उखाड फेकने की जडी बूटी, भस्म, गोलियाँ इस सन्यासी के हाथ म है ।

बरगद के चबूतरे के सन्यासी की अद्‌भुत सिद्धियो के बारे मे कई कथाएँ और अफवाहे इलाके-भर मे फैल गयी । मरीज और भक्तजन बरगद के चबूतरे के चारो ओर इकट्ठे होने लगे ।

अमीर परिवारो के लोग भी सन्यासी को बुलाकर ले जाते । सन्यासी घोडा-गाडी मे ही सफर करता । गोलियो एव शुष्क जडी-बूटियो और भस्म मे भरी एक चाँदी की डिबिया और गेरुए कपडो की एक गाँठ सन्यासी के हाथ मे रहती । बाहर जाते समय हरे रग की एक कमली को मोडकर कन्धे पर डालता । जब-कभी शिष्य भी साथ होते । इलाज के लिए फीस नही लेता था । उसके शिष्य कहा करते, "लेकिन आदमियो को अपनी शक्ति-भर दान देना चाहिए । यह दान स्वामीजी द्वारा हरिद्वार मे निर्मित होनेवाले महाकापालिका मन्दिर के लिए खर्च किया जायेगा ।

"बरगद के चबूतरे का सन्यासी जरा छू ले तो गोपालन मुशी की बीमारी दूर हो जाएगी ।" कई मित्रो ने, जिनमे काठ के गोदाम का मालिक भस्करन भी शामिल था, कृष्णन मास्टर को सलाह दी ।

"बाबूजी, चबूतरे के सन्यासी को कल मैंने स्वप्न मे देखा था । सन्यासी ने

मेरा हाथ पकड़कर उठाया और कहा—"चलो।" गोपालन भैया ने पिताजी को ज़रा जोश के साथ बताया।

गोपालन भैया को सन्यासी का दर्शन दिवास्वप्न रहा होगा। लेकिन अपनी बीमारी से छुटकारा पाकर वह उठकर चल सकता है—ऐसा विश्वास गोपालन भैया के मन मे अवश्य था।

एक दिन सन्यासी को लेने के लिए स्वय कृष्णन मास्टर चले गये।

सन्यासी को छीनकर ले जाने की ताकत मे वहाँ पहले ही कई बडे लोग चबूतरे के चारो ओर जमा हो गये थे। उधर पर्णकुटीर के भीतर सन्यासी पूजा कर रहा था। उसी के शिष्यो ने कुछ लोगो को रहस्य की बात बतायी गेरुए कपडे की थैली मे एक अमूल्य शालिग्राम है, उसे हरिद्वार म बनाये जानेवाले महाकापालिक मन्दिर मे प्रतिष्ठित किया जायेगा। उसी शालिग्राम की अब पूजा हो रही है।

पूजा पूरी कर सन्यासी न वहाँ एकत्रित हुए लोगो को सरसरी निगाहो से देखा। फिर उनमे से अभीष्ट एक व्यक्ति की ओर सकेत कर इक्कागाडी की तैयारी करने का आदेश दिया।

शायद कृष्णन मास्टर की योग्यता से अवगत होने के कारण उस दिन सन्यासी ने पहले-पहल मास्टर को ही चुना था। इक्कागाडी तैयार की गयी।

चबूतरे के सन्यासी के आगमन की सूचना पाकर अतिरणिप्पाट और पडोस के लोग कन्निप्परपु मे एकत्रित हो गये। गोपालन भैया अच्छी धोती और कमीज पहनकर चबूतरे के सन्यासी के दर्शन और स्पर्शन की उत्सुकता से प्रतीक्षा करता हुआ लेटा रहा।

सन्यासी और शिष्य कन्निप्परपु मे आ पहुँचे।

सन्यासी एक क्षण भी खोये बिना सीधे मरीज के सामने आया। उसने कमीज उतारने का आदेश दिया। गोपालन मुशी ने कमीज उतारी। फिर धोती को कमर की तरफ हटाते हुए लकडी बने पैर को दिखा दिया।

सन्यासी ने मन्त्र जपकर चाँदी की डिबिया खोलकर कुछ भस्म लेकर मरीज के सिर, छाती और पैर मे लगा दी। फिर सात गोलियाँ उठाकर कृष्णन मास्टर के हाथ म थमा दी। फिर हिन्दुस्तानी मे कुछ फुसफुसाया।

शिष्य ने उसका अनुवाद किया।

"प्रति दिन एक-एक गोली शहद मे पीसकर देनी है।"

बरामदे मे सन्यासी को घेरे हुए लोगो मे से बडा गपीला किट्टुण्णि लोगो के बीच से किसी तरह आगे बढा।

सुबह उठते समय से ही किट्टुण्णि को बहुत तेज सिरदर्द हो गया था। उसे दूर करने के लिए उसको दवा चाहिए।

सन्यासी ने उसे भी सुबह-सुबह दूध मे मिलाकर पीने के लिए कुछ भस्म दे दी।

महाकापालिक मन्दिर-निर्माण की सचित निधि मे कृष्णन मास्टर ने दस रुपये दान दिये। सन्यासी पैसे को नही छूता था। अत शिष्य ने ही वह नोट ले लिया था।

इक्कागाडी मे चढकर सन्यासी और शिष्य तुरन्त चले गये।

गोपालन भैया के चेहरे पर एक अपूर्व आनन्द था। "लगता है कि मेरे पैरो मे कोई रेंग रहा है। नसो मे प्राणो का सचार हो रहा है।" दाहिना पैर उठाने की चेष्टा करते हुए गोपालन भैया ने कहा, "इधर देखिए—मेरे पैर जरा ऊपर उठ रहे है!"

कृष्णन मास्टर और वहाँ इकट्ठे हुए लोगो ने झुककर देखा। पैर तो बिस्तर मे लकडी की तरह वैसे का वैसा ही पडा था। औरो को मालूम हुआ कि मात्र उसका दिमागी प्रलाप है।

"गोली पीनी है—गोली पीने पर दूसरा पैर भी ठीक हो जाएगा।" गोपालन भैया ने जोश के साथ कहा।

पूर्व से चन्दुकुञ्जन जो शहद लाया था वह भी वहाँ सुरक्षित रखा था। श्रीधरन की माँ ने शहद मे गोली पीसकर गोपालन को पीने के लिए दी।

आधे घण्टे के बाद कन्निप्परपु से लोग चले गये।

कृष्णन मास्टर ने डायरी लेकर खोली। वे चबूतरे के सन्यासी के बारे म कुछ लिखना चाहते थे। (मास्टर हर दिन डायरी लिखते।)

गोपालन भैया को लगा कि उसका बाँया पैर भी हवा मे उड रहा है। कैसा आश्चर्य है!

तभी एक चमत्कार घटित हुआ।

कन्निप्परपु मे आधी की तरह कोई हडबडी से आता दिखा।

कौन है? - चबूतरेवाले सन्यासी जी?

कृष्णन मास्टर डायरी दूर फेककर उठ खडे हुए।

"हमारी थैली किधर है? लाओ।" एक सिहगर्जन।

सन्यासी की थैली दिखाई नही पडी!

सन्यासी को फिर कन्निप्परपु मे पधारते देखकर पडोस के लोग झुण्ड के झुण्ड दौड आये।

सन्यासी के कन्निप्परपु से इक्कागाडी मे चढकर जाते समय वह थैली सन्यासी के ही हाथ मे सब लोगो ने देखी थी। फिर अब इधर आकर तलाशने की क्या जरूरत है?

"यह हमारी थैली नही, यह दूसरी है।"

वह तो सन्यासी की थैली नही है। किसी ने उस थैली को कन्निप्परपु से बदल दिया।

"आपकी थैली मे क्या सामान था?" कृष्णन मास्टर ने बडी विनय से पूछा। सन्यासी ने इसके बारे मे कुछ नही कहा।

"बदले मे मिली थैली मे क्या है?"

उसके बारे मे भी सन्यासी ने चुप्पी साध ली।

"अगर मेरी थैली नही देते तो मैं इस मरीज को शाप दूँगा। इसका पूरा शरीर एकदम ठण्डा हो जाएगा "

"हाय-हाय! ऐसा न कीजिएगा।" गोपालन भैया ने जोर से चिल्लाते हुए विनम्र प्रार्थना की।

कृष्णन मास्टर सकपकाकर खडे हो गये।

आम लोगो को एक अच्छा मज़ाक था। सन्यासी की थैली किसी ने बडी चतुराई से उडा दी थी।

"दस गिनने के पूर्व मेरी थैली सामने नही आयी तो मैं इस घर के सभी लोगो को शाप दे दूँगा। ये सब के सब पागल हो जाएँगे।" बडी धमकी के साथ चबूतरावाला सन्यासी गिनती करने लगा एक—दो—तीन

कोई भी थैली लेकर आगे नही बढा।

आम लोगो ने बेसब्री से आपस मे एक-दूसरे को गौर से देखा।

"मैं इस इलाकेवालो को भी शाप दूँगा।" सन्यासी ने सहार-रुद्र की तरह आँखो से चिनगारी बरसाकर जटा से एक बाल का गुच्छा तोडकर उसे जपते हुए कन्निप्परपु के आँगन मे फेक दिया

तभी अन्दर से एक गर्जना सुनाई पडी। लोगो ने आश्चर्यचकित हो उस ओर देखा।

हाथ मे एक 'कतरना' उठाए दाँत किडकिडाता हुआ कुजप्पु बाहर झपट पडा। वह उस सन्यासी को मारने दौडा कि तभी सन्यासी जी प्राण हथेली पर रखकर नौ-दो-ग्यारह हो गये। पीछे से कुजप्पु भी दौडा। सन्यासी इक्कागाडी मे कूदकर चढ गया। उसे लेकर भागनेवाली इक्कागाडी के साथ कुछ दूर कुजप्पु भी दौडा। फिर दौड और पागलपन को समाप्त कर 'कतरना' को कन्धे पर रखकर शान्त भाव से लौट आया, और रेलवे फाटक-घर के भीतर जाकर ताश खेलनेवालो के साथ बैठ गया।

उस दिन जितनी देर तक कृष्णन मास्टर ठट्ठा मारकर हँसते रहे उतना जिन्दगी मे शायद कभी नही हँसे थे। कुजप्पु के पराक्रमो मे यही एक ऐसा पराक्रम था जिसकी मास्टर ने उसे हार्दिक बधाई दी थी।

"झूठा सन्यासी!" कृष्णन मास्टर ने दाँत किडकिडाते हुए कहा, "अपनी

थैली की चोरी करनेवाले की पहचान न कर सकनेवाला बेवकूफ !"

मास्टर का अनुमान था कि कुजप्पु ने ही सन्यासी की थैली की चोरी की होगी, लेकिन उसने किस तरह इसे पार किया था यह श्रीधरन की माँ के कहने पर ही मास्टर को मालूम हुआ। मास्टर फिर एक बार हँसी से लोट-पोट हो गये।

चबूतरे के सन्यासी को कन्निप्परपु मे लाने की बात सुनते ही कुजप्पु अपनी योजना को कार्यान्वित करने लगा था। एक भक्त की तरह चबूतरे के सामने खडे होकर सन्यासी की थैली का रग, वज़न, आकृति आदि का पता लगा लिया। फिर उसे नाई की दूकानो से कुछ चीज़ो को कागज़ मे लाते हुए भी लोगो ने देखा था।

सन्यासी के कन्निप्परपु मे मरीज़ की जाँच करते समय उसको घेरकर खडे होनेवालो के बीच कुजप्पु भी था। सन्यासी के रोगी की जाँच कर भस्म लगाते समय ज़मीन पर रखी हुई थैली को कुजप्पु ने मैजिक कला-विशारद की तरह गायब कर दिया था और उसकी जगह स्वय तैयार की हुई इमिटेशन थैली को, जिसके अन्दर के सामान के बारे मे न कहना ही भला है, वहाँ प्रतिष्ठित कर दिया था। जिस थैली को उसने सन्यासी से पार किया था, उसे कन्निप्परपु के दक्षिण भाग की पाखाने की दीवार मे छिपा दिया था। सन्यासी के चले जाने पर तुरन्त उसे किसी और जगह म रखने के इरादे से ही उसने उसे वहाँ रखा था।

सन्यासी की थैली एक अद्भुत थैली थी। कुजप्पु ने जाकर देखा तो पाखाने की दीवार से वह थैली एक मायाजाल की तरह गायब हो गई थी। वह किधर गयी ? कौन ले गया होगा ? कुजप्पु ने मूछ को मरोडते हुए बडी देर तक सोचा। सन्यासी कन्निप्परपु से उतरने ही वाला था कि म्युनिसिपल का भगी पाखाना साफ करने आया था। वह उस थैली को लुक-छिपकर ले गया होगा। खैर, जो बीत गयी सो बीत गयी।

इस तरह सन्यासी की थैली के भीतर के सामान और उसका अन्तर्धान होना एक बडा रहस्य बन गया।

अगले दिन श्रीधरन ने कालेज जाते समय बरगद के चबूतरे के नज़दीक हमेशा की तरह भीड-भाड नही देखी। सिर्फ तीन-चार जन ही वहाँ खडे थे।

सन्यासी के पर्णकुटीर की तबाही हो गयी थी।

सन्यासी और शिष्य रात को ही वह जगह खाली कर भाग गये थे—सडक के निकट की चाय दूकान के बुज़ुर्ग रामन नायर को बडे गम के साथ यो कहते सुना। सन्यासी के वहाँ आने के बाद रामन नायर के दिन फिर गये थे। लोग अधिक सख्या मे वहाँ आते थे। वहाँ पास मे मात्र रामन नायर की ही दूकान थी।

शाम को कॉलेज से वापस आते समय केलुक्कुट्टि के अनुज नारायणन ने श्रीधरन को रोक लिया

"श्रीधरन भैया, मालूम है ? मोटी कुकुच्चियम्मा के पुत्र लक्ष्मणन भैया की मृत्यु हो गयी।" यह समाचार सुन श्रीधरन स्तब्ध-सा खडा रहा। फिर नारायणन ने उसके कान मे फुसफुसाया, "उसको किसी ने मार डाला है। लाश वर्कशाप के निकट के अहाते के कुएँ मे पानी मे तिर आयी है।"

श्रीधरन उस तरफ दौड गया। लक्ष्मणन के मोटर वर्कशाप की पूर्व दिशा के खाली अहाते के कुएँ के नजदीक बडी भीड थी। श्रीधरन ने भीड मे से कुएँ के नजदीक जाकर झाँककर देखा। लाश ऊपर तिर आयी थी। लक्ष्मणन भैया की नीली कमीज, सिर का गजापन, लेकिन चारो ओर के घुघराले बाल स्पष्ट दिखायी देते थे। शरीर कमर के नीचे नगा है। सफेद पैरों के बीच मछलियाँ क्रीडा कर रही थी।

'रात को ताश खेलकर ढेर सारे रुपये कमानेवाले मेकनिक लक्ष्मणन को उसके साथियो मे से किसी ने मारकर कुएँ मे डाल दिया' ऐसी कुछ अफवाह अतिराणिप्पाट मे फैल गयी।

बेचारी कुकुच्चियम्मा! उसके दो पुत्र दो राहो पर चले गये। वर्कशॉप मैनेजर होकर ऊटी मे गया पुत्र भरतन वहाँ की एक ऐंग्लो इण्डियन लेडी के जाल मे फँसकर उसके हठ से ईसाई बन गया और अब 'मिस्टर ब्रैटन' होकर उससे शादी कर शान से जिन्दगी गुजार रहा है। दूसरे बेटे लक्ष्मणन ने ताश खेलते-खेलते परलोक की टिकट कटा ली! वह भी चल बसा!

12 अण्ट कटाह

"तारुण्य के मणिमन्दिर मे प्रथम बार
किये दर्शन तुम्हारे विग्रह के मैंने!
ताजगी की सुरभि बिखेर रही तेरी-
सुभगता का कर आस्वादन भूल गया मै खुद को।
मन्द हवा के झोको मे मुकुल ज्यो
तुम्हारा मुख हिला—
इक बार निहारा तुमने द्रुत मुझे
कविता का सन्देश ले खडे है
तुम्हारे श्याम नयन अन्तरग मे मेरे।"

नायिका के लिए एक प्रेम-पत्र तैयार करना चाहिए। जिन्दगी मे पहली बार श्रीधरन ऐसा एक नैवेद्य तैयार करने जा रहा है।

प्रकृति सौष्ठव और खामोश वातावरण ढूढकर शाम को समुद्र के किनारे से दक्षिण की तरफ चल पडा।

दहाने मे पहुँच गया। सामने अपने हजार हाथो को फैलाकर नदी को छाती

से लिपटाये हुए समुद्र का दृश्य ।

समुद्र-पक्षियो के क्रीडा-महल की तरह सफेद बालू चारो तरफ फैली हुई थी।

वह किनारे पर औंधी रखी एक नाव के नीचे जाकर बैठ गया।

(नौका की एक पौराणिक प्रणय गध है। हजारो वर्षों पूर्व पाराशर मुनि का प्रणय एक नैया मे ही खिल उठा था।)

जेब से कागज निकाला। वायलट स्याही की कलम ली'' अनन्त सागर को गवाही मे खडा कर प्रथम प्रेम-पत्र का प्रथम शब्द लिख डाला

"जीवितेश्वरी "

फिर कुछ नही सूझा' चारो तरफ गौर से देखा।

पूरब के कोने से धुआँ उठ रहा था

उस सफेद दीवार के घेरे से धुआँ आसमान मे उड रहा है। वहाँ गुजरातियो का श्मशान है शायद। किसी चिता को आग लगायी गयी है।

रेशमी धोती पहने हुए और जनेऊ धारण किये एक पुरोहित एक लोटे मे नदी से पानी ले जा रहा है

पवित्र प्रेम-पत्र का श्रीगणेश करते समय शवदाह का दृश्य क्या एक अच्छा शकुन है? कुछ देर तक उसने इस पर विचार किया।

' मिट्टी, शव तथा जलानेवाली आग अक्षत है ' शुभ शकुन का प्रमाण है कि ये तीनो चीजे भी वहाँ होगी मरहूम गुजराती सेठ का शुक्रिया और उसने पश्चिम की तरफ दृष्टि घुमायी।

दूर समुद्र मे धुआँ उठ रहा है।

धुआँ उडाता हुआ वह जहाज कहाँ जा रहा है ?

मालूम नही।

लहरें अव्यक्त भाषा मे कुछ प्रलाप कर रही हैं। लहरो के गले लगकर मुँह मोडते समय सैकत-तट हजारो पानी के बुलबुलो से अपनी पुलक प्रकट कर रहा है। लहराती हुई मृदु श्वेत शय्या पर रग-बिरगा सन्ध्याकाश रेशम बिछा रहा है। सैकत-तट की छाती पर वीर-तरगें आ रही हैं

इधर नदी की तरफ झुके एक नारियल के पत्ते के छोर को साँझ की धूप सोना पहना रही है। पत्ते का छोर मद पवन मे उसी प्रकार हिल उठता है जिस तरह प्रियतम के प्रथम प्रेम-लेख को छूते ही नायिका की उँगलियाँ फडक उठती हैं।

समुद्र-तट की सडक के मोड से एक घोडागाडी आ रही है।

नीले रग की वह इक्कागाडी काठ के गोदाम के मालिक भास्करन की है। गाडी मे भास्करन और एक अरबी हैं। अरबी ने सफेद मुस्लिम पोशाक के ऊपर एक पत्थर की माला पहनी है। वह मलबार से लकडी खरीदने आया है। भास्करन मालिक की लकडी नदी के किनारे एकत्रित है। अरबी उसे देखने जा रहा है।

वह उन काठो को जहाज पर चढाकर समुद्र-तट से अरब देशो मे ले जायेगा।

भास्करन मालिक की याद आयी।

भास्करन जैसा खूबसूरत व्यक्ति इस इलाके मे दूसरा दिखाई नही देता। कटहल के पके पत्ते की तरह नारगी रग का चेहरा। बायी तरफ की माँग से दाहिनी तरफ सँवार कर रखे गये समृद्ध घुँघराले बाल। सिल्क शर्ट, बायें कन्धे पर इस्त्री किया हुआ एक अँगोछा, सोने की घडी, हाथ की उँगलियो मे सोने की अँगूठियाँ। इत्र की खुशबू

लेकिन उसका स्मरण करने पर मन मे घृणा का भाव ही आ रहा है। कारण उसकी लैंगिक विकृति है।

भास्करण मालिक स्ववर्ग सभोग-प्रिय है। सुन्दर लडको को वह अपने कब्जे मे रखता। चेंगरा के मुस्लिम अमीरो की दूकानो के क्लबो मे ही वह रात बिताता था। उस क्लब मे नाच गान, आतिशबाजी, बिरियाणी की दावत आदि के साथ मर्दों के बीच विवाहोत्सव होता था।

अचानक भास्करन मालिक की साली का स्मरण आया। स्कूल मे पढने के लिए नलिनी अपनी दीदी के यहाँ आकर रहने लगी है। वह लडकी काली दुबली तथा ओठो और गालो पर रोम से भरी मछली की तरह लगती थी

समुद्र मे दूर पर धुआँ और जहाज दिखाई नही पड रहे थे।

चिता का मरहूम शख्स अब भी धुआँ उडा रहा है। नर-माँस की गन्ध सूँघकर समुद्री हवा चारो तरफ घूमने लगी है। मुर्दे का दाह-सस्कार करने के लिए जितने रिश्तेदार आये थे, वे सब श्मशान की दीवार के बाहर रेत मे गोलाकार बैठकर किसी बात पर बहस कर रहे हैं। (शायद ये गुजराती नारियल और काली मिर्च के बाजारभाव पर चर्चा करते होगे।)

सूरज एक सोने के अण्डे की तरह पश्चिम क्षितिज की रेखा को छू रहा है।

वह उस दृश्य को निर्निमेष हो देखता रहा।

वातावरण अन्धकार मे धुँधला बन गया।

सन्ध्या-तारा प्रत्यक्ष हो गया।

नाव के ऊपर की जीवितेश्वरी दिखाई नही देती (हवा ले गयी होगी।) आसमान के तारे अधिक दिखाई दे रहे है चिन्तन प्रकृति के अद्भुत प्रतिभासो की तरफ प्रयाण करते हैं—

दिन की मुर्गी—गोरी मुर्गी
दूर पश्चिम के नुक्कड पर
डाल दिया सोने का अण्डा एक (फिर,
मर गयी आध घण्टे मे ही)
रात की काली मुर्गी—कबरी मुर्गी

आकर, ज्यो सौतेली माँ
दिन के अण्डे के ऊपर हौले-हौले
पख पसारकर सोने बैठी।
अण्डे से बाहर निकलेगी — कल
मुर्गी की लाडली बच्ची इक।
वह बढकर विहायस मे, फिर
देगी सोने का अण्डा इक।
प्रकृति के अण्ड-कडाह मे
होती रहती यह प्रक्रिया सदा।"

13 पाँची

'बैल' दामु घर छोडकर कही चला गया।

पाँची-प्रसव केस के कारण ही दामु अचानक फरार हो गया था। नीद मे लीन अतिराणिप्पाट को हिलानेवाली एक भयकर घटना थी पाँची-प्रसव का मामला।

म्युनिस्पैलिटी मे झाड़ू देनेवाले मजदूरो के मिस्तरी हरिजन मुत्तोरन की नयी बीवी है पाँची। पाँची के प्रथम प्रसव से सबन्धित कुछ समस्याओ ने उस इलाके म इतिहास का सृजन किया।

मुकदमे के लिए आधारभूत तथ्यो को समझने के लिए एक वर्ष पीछे की बातो की जाँच करनी चाहिए।

मुत्तोरन मिस्तरी की उम्र पचपन साल की थी। पहली—सच कहे तो दूसरी —पत्नी चक्की ने अठारह वर्ष की लम्बी प्रतीक्षा के बाद भी बच्चे को जन्म नही दिया था। चक्की के वध्या होने की बात पक्की हो गयी। एक दिन मुत्तोरन ने एक सतान को दुलारने की अपनी ख्वाहिश की सूचना चक्की को भी दी। एक और औरत से शादी करने के सिवा और कोई चारा नही था। चक्की के मन मे भी वह तमन्ना थी। इसलिए उसने 'हाँ' कहा। लेकिन चक्की को यह मालूम नही था कि पति ने औरत को देखने के बाद ही उसकी अनुमति की प्रार्थना की थी।

ककडी के छिलके का रग, आँवले की-सी आँखें, हाथ और पैर मे ताँबई रग के मुलायम रोमो से भरी उन्नीस वर्ष की पाँची एक देहाती लडकी है। स्पष्ट है कि पाँची की त्वचा के रग और खूबसूरती मे कुलीन मुस्लिम खून समाया हुआ है। हरी घास काटकर बाजार मे बेचना ही उसका पेशा है। पोक्कु हाजी की घुडशाल मे घास का गट्ठा पहुँचाकर वापस आते समय ही मुत्तोरन मिस्तरी ने पहले-पहल पाँची को देखा था। उसको देखकर मिस्तरी ललचा गया। उसने उससे शादी करने का निश्चय किया। पाँची ने पहले शादी करने से इन-

कार कर दिया। शहर की शामो के गूढ सुखो को लूटकर आजादी से घूमती वह हरिजन युवती एक बूढे से शादी कर चुपचाप घर मे रहने के लिए उतनी तत्पर नही थी। अपनी खूबसूरती के बाजार-भाव को वह अच्छी तरह जानती थी। मुत्तोरन ने उसका पीछा न छोडा तो पाँची फिर विचार करने लगी मुत्तोरन मिस्तरी मासिक तनख्वाह पानेवाला नौकर है। झोपडी मे नही रहता है। उसका एक छोटा-सा अहाता है और एक छोटा-सा मकान भी। दूसरी बीवी तो बाँझ है। फिर पहली औरत की अनुमति से ही इस शादी की तैयारियाँ हो रही हैं। झगडा करने की नौबत भी नही आएगी। एका दफा उसकी जाँच करूँगी। अगर वहाँ रहना दूभर लगा तो छोडकर आ भी सकती हूँ।

उसने 'हाँ' कह दिया।

शादी सम्पन्न हुई।

मुत्तोरन ने पाँची से एक राजकुमारी की तरह बर्ताव किया। उसके सामने अपने को लायक साबित करने के लिए अपनी वेश-भूषा और आचरण मे भी उसने सुधार किया। वह शर्ट पहने बिना एक पुराना खाली कोट पहनकर ही काम करने जाता था। नया शर्ट सिलाया। पुराना कोट हरिजन चामी को भेट किया। एक नया रेडीमेड खाकी कोट भी खरीदा। एक जोडा चप्पल खरीदकर पैर मे डाली। लेकिन सिर का गजा, चट्टान मे उगनेवाली पीली घास की तरह के रोम और चेहरे की झुर्रियो ने पुकार कर सूचना दी कि मुत्तोरन बूढा है। उसे पाँची की हास्यास्पद हँसी बर्दाश्त करनी पडी।

तडके ही मुत्तोरन मिस्तरी जागकर कोट और चप्पल डाल म्यूनिस्पिल अहाते की तरफ झाडू देनेवालो को ले-चलने के लिए रवाना होता। उसे हमेशा डर रहता कि कही सेनेटरी इन्स्पेक्टर साहब साइकल पर उडकर जाँच करने न आ जाएँ।

फिर दोपहर को भोजन के समय ही मिस्तरी घर मे वापस आता।

पाँची सुबह को आठ-नौ बजे तक चटाई पर लेटती। फिर उठकर खुशबूदार साबुन से नहाती, पीली रेशमी चोली पहनकर, बालो को बाँधकर, आँखो मे काजल लगाकर, माथे पर नीली बिन्दी लगाकर कमरे मे आती तो चक्कीमा काँजी परोसकर उसके सामने रखती।

घर के सभी काम काज चक्की करती। पाँची पखा डुलाती बरामदे की बेंच पर बैठकर समय काटती।

दोपहर को पति के आते समय भी पाँची अकेली हिल-डुलकर बरामदे की बेंच पर ही बैठी होती।

मुत्तोरन बाहर दस आदमियो का मिस्तरी है। लेकिन घर आने पर एक गट्ठा घास का मूल्य भी नयी बीवी के बर्ताव और इशारे से उसको हासिल नही होता था। मिस्तरी ने इस पर अपनी पराजय जाहिर नही की। कर्कश बातें कहने पर

तो वह चिडिया उडकर चली जाती। फिर वह क्या करता ?

पाँची को हर रोज़ कोई-न-कोई पकवान खाने मे चाहिए। रोटी, हलुवा, जलेबी खाने की ख्वाहिश रहती। बीच-बीच मे चाय पीती। अगर चाय नही पीती तो सिर दर्द हो जाता।

मुत्तोरन ने कोई बकझक किये बिना पाँची की सभी इच्छाओ और अनावश्यक बातो का निर्वाह किया।

कुजालि माप्पिला के उस जगह आने पर उसकी पेटी का आधा सामान पाँची उधार मे खरीदती। मुत्तोरन मिस्तरी को मेहनताना मिलने के मौके पर कुजालि फिर आता। उसके सन्दूक मे विनोलिया व्हाइट साबुन, क्यूटी क्यूरा पाउडर, सेन्ट शीशी, हाथी दाँत की कघी—ढेर सारे सामान होते।

कुजालि को अच्छा मुनाफा मिलता।

केले का पत्ता काटने अहाते के कोन मे जब चक्की आयी तो उसने एक गीत सुनकर झाँककर देखा।

गोरा अय्यप्पन पगडडी पर खडा है, चक्की को देखकर मुस्कराता हुआ।

(चक्की मोटी होने पर भी देखने म बदसूरत न थी।)

चक्की ने गोरे अय्यप्पन को पहले-पहल देखा था। नज़दीक से अकेले-अकेले मिलने और बातचीत करने की सुविधा पहले-पहल ही मिली थी।

"केला भगवान को चढाने के लिए नही, बेचने के लिए है।" चक्की ने केले के पत्ते को चीरकर फेकते हुए हँसकर कहा।

"बेचती है तो मै खरीदूँगा।" अय्यप्पन ने कहा।

"सुना है कि अय्यप्पन के पास बहुत पैसे है। क्यो, मै जितना बोलू उतना तुम दे दोगे ?"

"चक्की, यह सब लोगो की झूठी बकवास है। केले का गुच्छा देखने पर लालच आ गया, इसीलिए पूछा था।"

बात चक्की की पकड मे आ गयी। वह चुपचाप खडी रही।

"केले का पत्ता किसके लिए है ? क्या 'अटा' (एक खास रोटी) बनाने के लिए है?"

"क्या 'अटा' खाने की भी इच्छा है ?"

"अय्यप्पन को कई चीजो की इच्छा है।"

"यहाँ आकर थोडी देर बैठने के बाद जाना।" चक्की ने निमन्त्रण दिया।

"चक्किमा का मिस्तरी नही है वहाँ ?"

अय्यप्पन का व्यग्य सुनकर चक्की ठहाका मारकर हँस पडी। वह जानती थी कि मुत्तोरन मिस्तरी और अय्यप्पन के बीच मनमुटाव है।

"मिस्तरी दोपहर को ही आयेगा।"

अय्यप्पन पगडडी चढ़कर दरवाज़े पर पहुँचा। वह आँगन से बरामदे मे पहुच-

कर बेंच पर बैठ गया।

तब खुले हुए बालो से छाती ढककर पाँची ने बाहर की तरफ झाँककर देखा।

चक्की ने पनडब्बा अय्यप्पन के नजदीक लाकर रख दिया। "मैं पान नही खाता।" अय्यप्पन ने जेब से पीले रग का हाथी मार्क सिगरेट निकालकर दिया-सलाई माँगी।

चक्की ने रसोईघर से माचिस लाकर अय्यप्पन के हाथ मे थमा दी। उसने उसकी उँगली पकडकर जरा दबायी और कुछ खुसुरफुसुर की।

चक्की शरमाकर चुपचाप खडी रही। झट उसने पगडडी की तरफ इशारा किया।

अय्यप्पन ने उधर देखा। पगडडी से कीरन पुजारी आ रहा था।

"पुजारी ने यहाँ मुझे देख लिया तो मुसीबत खडी हो जाएगी।" अय्यप्पन जल्दी से उठकर पाँची के कमरे मे गया।

चक्की ने भी उसके पीछे जाकर दरवाजा बन्द कर लिया।

फिर दोनो के बीच रोचक वार्तालाप शुरू हुआ।

थोडी देर बाद अय्यप्पन बिदा लेकर उतरा। फाटक उतरने पर दीवार पर किसी जडी-बूटी की तलाश करने के बहाने पगडडी मे लुके-छिपे कीरन पुजारी को दखा।

पुजारी ने अय्यप्पन की तरफ अर्थ-भरी निगाह डाली। अय्यप्पन बिना झिझक के पुजारी की तरफ अपना चूतड खुजलाते हुए चल पडा। सफेद अय्यप्पन दस वर्ष पहले अपने इलाके से कही चला गया था। अभी-अभी वापस आया था। (उस इलाके मे एक और नौजवान हरिजन अय्यप्पन है। इसीलिए नवागत को सफेद अय्यप्पन के नाम से पुकारते है।)

सफेद अय्यप्पन विदेश जाकर अपार धन-राशि इकट्ठा करके ही वापस आया था। वह गुप्त रूप से सोने के गहनो के लिए पैसा उधार देता था। रेलवे स्टेशन यार्ड मे कोयले की राख लेने का ठेका मोयतु माप्पिला ने ही लिया था। मोयतु माप्पिला सूखी मछली निर्यात करने का एजेंट होकर सिलोन चला गया। सफेद अय्यप्पन ने अब वह ठेका ले लिया है। कई गरीब हरिजन और मुस्लिम स्त्रियाँ अय्यप्पन के नीचे कोयला डालनेवाले मजदूरो की हैसियत से काम करती है।

सफेद अय्यप्पन एक फैशनेबुल आदमी है। सफेद शर्ट, कमर मे एक हरा बेल्ट, रिस्ट वॉच, जेब मे कलम, ओठो पर बिच्छू की पूँछ-सी मूँछ।

सफेद अय्यप्पन अविवाहित है।

अतिराणिप्पाट के दक्षिण-पश्चिम कोने मे कई पेडो से ढका एक पुरातन अहाता और अहाते के कोने मे एक चपा का पेड है, जिसके नीचे एक पुराना चबूतरा भी देख सकते है। 'चेरुमक्कलुटे कावु' (हरिजनो का मन्दिर) के नाम से ही उस

जगह को पुकारा जाता है। कुछ लोग उसे 'पूवरशु कावु' के नाम से भी पुकारते हैं।

वह तो उस इलाके के हरिजनो का मन्दिर है। मन्दिर की प्रतिष्ठा देवी-देवताओ के लिए नही, बल्कि 'तेय्य' की एक कल्पना मात्र है।

साल मे एक बार वहाँ त्योहार मनाया जाता। इलाके के सभी हरिजन और अन्य इलाको के रिश्तेदार भी 'पूवरशु कावु' मे एकत्रित होते। दिन-रात होनेवाले लगातारत्योहारो से अतिराणिप्पाट सिहर उठता। बाजे बजाना, गीत, 'वेलिच्च-पाटु,' 'कोल तुल्लल,' 'तिरा,' 'कुरुतियाट्ट' आदि होते।

मर्द अपने सिर पर नारियल के मृदु पत्तो का मुकुट पहनकर चेहरे पर मुखौटा बाँधकर 'कोल' कूदने लगते। औरते हिल-डुलकर रेंगने और फिर पालथी मारकर बैठी हुई दायी-बायी तरफ डोलती। मर्द शराब पीकर आपस मे झगडते। इस प्रकार वे अपने पुराने बैर का बदला लेते। आपस मे झगडकर आखिर कम से कम एक हरिजन की कुर्बानी होती।

ये सब 'तेय्य' के लिए मनपसन्द बाते है।

कीरन पुजारी पूरवशु कावु का पुरोहित है। वह 'काव' का पुजारी ही नही मान्त्रिक, वैद्य, ज्योतिषी, सामाजिक कानून का सलाहकार के रूप मे हरिजनो के बीच मुखिया है।

कोटुगल्लूर देवी मन्दिर के त्योहार के दिनो मे वह व्रत लेता और कोटुगल्लूर देवी के यहाँ जाकर मिन्नत-प्रार्थना करनेवालो को इकट्ठा करता। कमर मे लाल कपडा बाँधकर, दाहिने हाथ मे तलवार और बायें हाथ मे हल्दी-चूर्ण की थाली लेकर कीरन आगे, और मुर्गों को एक छडी मे लटकाकर 'होय नट होय नटा' का भक्तिपूर्ण नारा लगाते अन्य हरिजन उसके पीछे चलते हुए कोटुगल्लूर की तरफ आगे बढते। उस जुलूस को सभी स्तब्ध खडे देखते रहते।

काला, मोटा और नाटा है कीरन। उनकी नसे मजबूत है। जीवन मे वह एक छिपा बदमाश है। कीरन की कितनी उम्र हुई, इसका निर्णय ॰ही किया जा सकता। खोपडी मे जो खाली हिस्सा है वह पुजारी की तलवार की मार का निशान है या गजा है, कहा नही जा सकता। बाकी जितने बाल हैं उनमे एक भी बाल पका न था। कीरन का मुख्य आहार कच्चा नारियल, चिउडा और ताडी है। मौका पाते ही वह दूसरो के नारियल के पेड पर चढकर कच्चे नारियल की चोरी करता। कभी-कभी मार भी खाता। मारने-पीटने पर भी उसको दर्द नही होता क्योंकि वह काली बिल्ली खाता था। (विश्वास है कि काली बिल्ली का मांस खाने पर शरीर में कोई चोट नहीं लगती।) अतिराणिप्पाट और उसके नज़-दीक की जगहों मे अब एक भी काली बिल्ली दिखाई नही देती। (नाम के लिए एक बाकी है तो वह धोबी मुत्तु है।) सब कीरन के पेट मे जा चुकी हैं।

"अरे, कीरन आ रहा है।" कहकर कुछ रसिक लोग धोबी मुत्तु को डराने-

धमकाने लगे है।

छोटे बच्चे कीरन पुजारी का नाम सुनते ही डर जाते। मुत्तोरन मिस्तरी भी डर जाता क्योंकि कीरन की मान्त्रिक शक्ति से वे लोग वाकिफ हैं। 'तेय्य' शरीर मे घुसने पर कीरन सर्वज्ञ बन जाता।

मांत्रिक शक्ति से उसने एक झूठ को प्रमाणित किया था। इस घटना से ही कीरन मशहूर हो गया है।

हरिजन बस्ती की एक शादी मे एक हरिजन औरत की माला किसी ने चोरी की। रात को सोने के लिए लेटते समय ही चोरी की गयी थी। अगले दिन इस झोपडी मे हल्ला-गुल्ला हो गया। माला खोनेवाली का चीत्कार सुनाई पडा। घर-वाले दौड-धूप करने लगे। मेहमान बेजार हो गये।

किसी ने कहा, कीरन पुजारी देवता वेश मे नाचकर भविष्य बताएगा।

कीरन ने कमरे मे लाल रेशमी कपडा पहन लिया। वह तलवार हिलाते हुए आँगन मे तीन बार इधर-उधर उछला। जोर से चिल्लाकर उसने आज्ञा दी, "भूसा लाओ।"

एक हाँडी भर भूसा सामने पहुँचा।

कीरन पुजारी ने भूसा-मत्र जपते हुए वहाँ के हरिजनो मे हर एक को भूसा देकर आज्ञा दी कि खाओ। फिर आँगन से तीन-चार बार इधर-उधर दौडकर भूसा खानेवाली औरतो के चेहरो की ओर देखा।

पुजारी ने झट एक औरत की ओर सकेत करके गर्जन किया तूने ही चोरी की है।

चोरी की माला तुरन बाहर न निकालने पर खून की उलटी से मर जाने की धमकी भी दी।

उस औरत ने अपराध कबूल किया। उसने चोरी की हुई माला एक केले के नीचे की जमीन से बाहर निकाल कर 'तेय्य' के पैरो पर समर्पित की। "रक्षा करे भगवान !" कहकर वह छाती पीटकर जोर से चिल्लायी।

यह दृश्य देखकर वहाँ उपस्थित सभी जन दाँतो तले उगली दबाकर रह गये। कीरन पुजारी की मत्र शक्ति के बारे मे क्या कहना !

हरिजन स्त्रियो को मत्र जपते हुए भूसा देकर चोरी के रहस्य का पर्दाफाश करनेवाले कीरन की दास्तान सुनकर कन्निप्परपु का कृष्णन मास्टर बडी देर तक हँसता रहा। फिर श्रीधरन से कहा, "वह दवा और मात्रिक बल नही, महज एक मनोविज्ञान की बात है। कैफियत तलब करने पर जिसने चोरी की है वह घबरा जाएगी। डर और बेचैनी के बढ जाने पर मुँह की लार सूख जाएगी। गला सूख जाने पर फिर भूसा नही खाया जा सकेगा। भूसा खाने मे तकलीफ उठानेवाले व्यक्ति को आसानी से पहचाना जा सकता है। कीरन ने इस तरकीब का ही प्रयोग किया था।"

हरिजनो को मनोविज्ञान की बातें मालूम नही है। गहनो की चोरी करनेवाले व्यक्ति की ओर सकेत कर पकडा देनेवाले कीरन पुजारी के मान्त्रिक बल से वे चकित रह गये। उन्हे विश्वास हो गया कि कीरन पुजारी से कुछ भी नही छिपाया जा सकेगा।

इस समाज मे कीरन के मुखिया पद और शक्ति की कुछ भी परवाह न करने-वाला व्यक्ति सफेद अय्यप्पन था। कीरन ने एक बार रिश्वत माँगी थी तो अय्यप्पन ने बहुत स्पष्ट कह दिया था "पुजारी ओझागिरी छोडकर कुछ काम करो। लोहे के मूसल का-सा हाथ जो भगवान ने दे रखा है न? कुदाली चलाओ, तो दिन मे आठ आने मिल ही जायेगे।"

अय्यप्पन के परिहास की बाते कीरन ने अपने मे दबाकर रखी। अमीर होने का गर्व और वाक्-पटुता प्रदर्शित करने का अवसर नही था तब। अय्यप्पन अपनी जाति का एक सदस्य है। उसके घर शादी करने लायक दो बहिनें है। एक बुढिया भी है जिसके पैर गड्ढे मे लटक चुके है। शादी-ब्याह या तेरहवी की रस्म तो करनी ही होगी उसे। तब देखूँगा—जाति से निकाल देने का मौका होगा या नही।

तीन माह तो बीत गये।

मुत्तोरन मिस्तरी की घरवाली पाँची ने गर्भ धारण किया।

मिस्तरी के पाँव जमीन पर न पडते थे। पहले-पहल वह पिता होने जा रहा था।

झाडू देनेवाले मजदूरो और अपने दोस्तो से वह यह बात बार-बार कहता था "मेरी पाँची की तबियत जरा खराब है।"

"क्या है मिस्तरी, उसकी बीमारी?"

ऊपर की दन्त पक्ति से चार दाँत नदारद थे। वह अपना मुँह खोलकर मूर्ख की तरह हँसने लगता "पैदा करने की बीमारी है। उसके पेट मे है।"

एक दिन सेनिटरी इन्स्पेक्टर साहब से कहा, "थोडी देर पहले घर जाना है। पत्नी की तबीयत अच्छी नही।"

"क्या बीमारी है?"

"तीन महीन—" मिस्तरी ने शरम मे नीचे की ओर दृष्टि करते हुए कहा।

नौ बच्चोवाले इन्स्पेक्टर स्वामी के मन की हालत भी कुछ ऐसी थी। उसकी पत्नी ने दसवाँ गर्भ धारण किया था।

बधाई और सहानुभूति मे भेद न करनेवाला एक सकेत और दृष्टि ही इन्स्पेक्टर साहब की प्रतिक्रिया थी।

पाँची को दोहद बढने लगा

एक दिन हलुवा।

दूसरे दिन कमलकद।

फिर चिड़िया का मांस।

मुत्तोरन मिस्तरी ने सारी इच्छाओ की पूर्ति की।

जब पाँची ने कच्चा आम खाने की लालसा व्यक्त की तो देहात मे न मिलने के कारण वह सेलम से लाया गया।

छठे महीने की रस्म भी धूमधाम से सपन्न हुई।

'पूवरशु कावु' के त्योहार के श्रीगणेश होने के अगले दिन रात को पाँची को प्रसव पीडा हुई थी।

इस इलाके की बुढिया औरत और जाति की दाई काली, जो कानी थी, मदद के लिए आ पहुँची।

तोद हिलाता हुआ मुत्तोरन मिस्तरी इधर-उधर दौडने लगा। (उसे देखने पर लगता कि प्रसव-पीडा बूढे मुत्तोरन को ही हो रही है।)

रात भर पाँची दर्द से कराहती और चीत्कार करती रही। सुबह भी वही हालत थी।

"भूत-प्रेत का उपद्रव है। उसे तुरन्त दूर करना चाहिए। कीरन पुजारी को बुलाना चाहिए।" काली ने प्रसूतिका गृह से सिर बाहर निकालकर पुकारते हुए कहा।

पुराने झगडे और मन-मुटाव को बिसारकर मुत्तोरन कीरन पुजारी की झोपडी तक दौडा गया।

कमर मे लाल रेशमी कपडा पहनकर और हाथ मे तलवार लेकर कीरन पुजारी उपस्थित हो गया।

पाँची अन्दर प्रसव-पीडा से रो रही थी।

कीरन काँपने लगा। 'तेय्य' उसके शरीर मे घुस गया।

कीरन तलवार हिलाते हुए आँगन मे तीन बार इधर-उधर दौडा। फिर पश्चिम दिशा मे खडे होकर तलवार से अपनी खोपडी का स्पर्श किया और फिर वह जोर से चिलाने लगा।

प्रसूति-गृह की तरफ देखकर कीरन कुछ फुसफुसाने लगा।

'तेय्य' की देववाणी है।

"हू—हो—होय—इस औरत के गर्भ के लिए तीन आदमी और जिम्मेदार है। 'तेय्य' ने सब कुछ देखा है। जिन्होने अपराध किया उनका नाम बताना होगा। ऐसी हालत मे ही बच्चा बाहर निकलेगा।"

पाँची के गर्भ के जिम्मेदार तीन आदमी और हैं। यही 'तेय्य' ने कहा है। उनका नाम एक-एक कर बताना होगा। (तेय्य इन पर जुर्माना करेगा। फिर 'पूवरशु कावु मे शुद्धि कलश करना होगा।)

'तेय्य' की देववाणी धाय काली ने सुनी। बुढियो ने भी सुनी। प्रसव-पीडा से

तड़पनेवाली पाँची ने सुनी। आँगन मे खड़े सभी लोगो ने भी सुनी।

उत्सव की शुरुआत से ईश्वर जाग उठा है। शरीर मे 'तेय्य' घुसने से ही कीरन यो बताता है। गर्भ के लिए जिम्मेदार तीन व्यक्ति और हैं। मान्त्रिक शक्ति से सब कुछ जाननेवाला कीरन पुजारी ही यो बता रहा है।

"पाँची बताओ।" काली ने पाँची से ज़ोर देकर कहा।

"कीरन पुजारी ऐसा-वैसा थोड़े ही कहेगे।"

सब कुछ जाननेवाली चक्की भी एक कोने मे सिर झुकाये बैठी थी। काली की राय के समर्थन मे उसने जोर से हाँ मे हाँ मिलायी।

कीरन की मांत्रिक शक्ति से पाँची परिचित थी। भूसा देकर चोरी करनेवाली औरत को पकड़ा था? अपने गुप्त कामुको मे तीन लोगो के नाम बताने पर ही बच्चा बाहर निकलेगा।

पाँची दर्द बर्दाश्त नही कर सकी।

कीरन ने तलवार हिलाते हुए गर्जन किया—"फौरन बता—"

पाँची ज़रा काँप उठी।

कराह और चीख के बीच पाँची ने गर्भ के अपराधियो मे पहले व्यक्ति का नाम बताया "कण्णनकुट्टि भैया"

कण्णनकुट्टि उस इलाके का एक हरिजन सेवक था। कुछ महीने पहले उसकी मृत्यु हो गयी।

कीरन पुजारी के चेहरे पर निराशा झलक आयी।

कीरन ने सोचा था कि अपराधियो मे पहला व्यक्ति सफेद अय्यप्पन होगा।

कीरन तलवार को हिलाते तीन बार इधर-उधर दौड़ा। फिर सिर पर तलवार का स्पर्श किया और चिल्लाया "कौन है? बता!" कीरन प्रसूति-गृह की तरफ देखता बड़े ध्यान से खड़ा रहा।

पाँची दर्द न सह सकी। किसी न किसी तरह प्रसव करने से गला तो छूटे।

अच्छे मुहूर्त मे ही कीरन ने कैफियत लेना शुरू किया था।

"चाय की दूकानवाला अप्पूप्पार्यन।"—दूसरा नाम भी बाहर निकला।

(कुमारन की 'भारतमाता टी स्टाल' का नया असिस्टेन्ट था अप्पु। उसका सही नाम प्रसारणी अप्पु था।

लोग हँस पड़े।

कीरन को फिर निराशा हुई। वह अपनी सूची का नाम सुनना चाहता था।

कीरन आँगन मे तीन बार फिर इधर-उधर दौड़ा।

प्रसूति-गृह की तरफ देखकर उसने ठाना कि तीसरा आदमी अय्यप्पन ही होगा। कीरन ने दहाड़कर पूछा

"और कौन है? जल्दी कह!"

"हाय, हाय !" पाँची जोर से चिल्लायी।

अय्यप्पन के नाम के दो अक्षर कहने के लिए हरामजादी पीछे हट रही है। कीरन उसे यो छोडनेवाला नही।

"और कौन है ? बता।" उसने तलवार और जोर से हिलायी।

"हाय---।" पाँची चीत्कार कर उठी।

कीरन उसकी तरफ कान लगाकर खडा हो गया।

"कपडे की दूकान का दामोदरन नपियार "

बैल दामु।

लोग सकपकाकर खडे रहे।

कीरन ने बडी निराशा के साथ खोपडी को तीन बार स्पर्श किया।

नाम तो तीन मिल गये। लेकिन अय्यप्पन फिर भी नही आया।

अय्यप्पन जरूर होगा।

कीरन आँगन मे तीन बार फिर दौडा। प्रसूति-गृह के सामने ऊपर की तरफ ताकता थोडी देर खडा रहा।

अय्यप्पन को बाहर निकाले बिना नही छोडेगा। इस हठ से दहाडकर उसने कहा "हाँ, देखता हूँ—एक आदमी और है जिसने अपराध किया था। सफेद एक आदमी—" (लक्षण भी बता दिया।)

कीरन ने बडी उत्कठा के साथ प्रसूति-गृह की तरफ देखा और सिर घुमाकर खडा हो गया।

आम लोगो ने साँस रोककर उस ओर ध्यान दिया।

तब अन्दर से अय्यप्पन का नाम नही, बल्कि बच्चे की रुलाई ही सुनायी पडी।

क्रोध, निराशा और आत्म-निन्दा की उग्र मूर्ति बनकर कीरन तलवार से अपनी खोपडी पर चोट करने लगा। चेहरे और छाती से खून की धारा बहने लगी। अगर लोग दौडकर उसे नही रोकते तो वह अपनी खोपडी तोडकर वही गिरकर मर जाता।

मुत्तोरन मिस्तरी सब कुछ भूलकर एक गधे की नाई हँस पडा। पिता हो गया है।

कीरन पुजारी विपत्ति मे फँस गया। अपराधियो को जुर्माने की सजा की घोषणा करनी होगी।

जुर्माने की रकम का एक हिस्सा पति को देना होगा, एक हिस्सा 'पूवरशु कावु' मे शुद्धि कलश करने के लिए और बाकी पुरोहित के लिए देना होगा। ऐसी प्रथा है।

जुर्माना अदा करनेवालो मे जाति का सदस्य सिर्फ कण्णनकुट्टि ही है। इन सब की पूर्व सूचना पाकर ही शायद वह पहले ही परलोक चला गया था। बाकी चाय

की दूकान का अप्पु और कपडे की दूकान का दामु है। वे दोनो ऊँची जाति के सदस्य हैं। उनके नाम पर कार्यवाही करने का हक कीरन को नही है।

कीरन पुजारी को तकलीफ नही उठानी पडी।

शंकुण्णि कपाउण्डर और अर्जीनवीस आण्डी मुकद्मो के बिना बडी दिक्कत मे थे। वे दोनो, पुजारी कीरन की तरफ के वकील बने ओर पूवरशु कावु के रक्षक भी। केकडा गोविन्दन को भी इसका सदस्य बनाकर कमेटी का कार्य आरम्भ हुआ।

कम्पाउण्डर और अर्जीनवीस पहले अप्पु से मिले।

प्रसारणी ने स्पष्ट बताया—"जुर्माना पेशगी अदा करने के बाद ही मै पाँची के साथ लेटा था। फिर इस मुकदमे मे जिन्हे जुर्माना अदा करना चाहिए उन लोगो के बारे मे मुझे मालूम है। वे पहले जुर्माना अदा करे।"

कम्पाउण्डर और अर्जीनवीस फौरन वहाँ से चले गये। उन्हे मालूम हुआ कि प्रसारणी किसके बारे मे कह रहा है।

अब कपडे की दूकान के दामोदरन को ही पकडना है।

मेरे विरुद्ध लगा सब आरोप सब लोगो को मालूम है, यह सुनते ही उस रात बैल दामु पेटी-बिस्तर उठा गाडी से कही चला गया। इस तरह कमेटी को एक कानी कौडी भी हासिल नही हुई। बात बडी मुश्किल थी।

तब केकडा गोविन्दन ने सलाह दी, "चेरुमन पुजारी का पारिश्रमिक, पूवरशु कावु के शुद्धि कलश का खर्च, कमेटीवालो का यात्रा खर्च और भत्ता देना ही होगा। ये सब घटनाएँ बूढे मुत्तोरन हरिजन की मूर्खता के कारण हैं। इसलिए मुत्तोरन को तीनो का जुर्माना अदा करना चाहिए। मुत्तोरन से अपने-अपने हक का हिस्सा लेने के बाद बाकी रकम कमेटी को सौंपनी चाहिए।"

अर्जीनवीस आण्डी ने तुरन्त हिसाब लगाकर कहा "उसे कमेटी को एक सौ तीन तीन रुपये सात आने एक पैसा देना होगा।

मुत्तोरन मिस्तरी के हाथ मे पैसे नही थे। पाँची को नौ महीने होने तक मिस्तरी एक-सौ पचास रुपये कर्ज ले चुका था।

"और भी कर्ज लो।" कपाउण्डर ने सलाह दी।

"कौन देगा कर्ज ?"

"मिस्तरी घर और अहाता रेहन रखे तो मै पैसे किसी से भी माँग दूंगा।" कपाउण्डर ने सहयोग का रास्ता सुझाया।

मुत्तोरन मिस्तरी शैतान और समुद्र के बीच मे पड गया। पहले का कर्ज डेढ सौ रुपये, प्रसव के मुकदमे मे जुर्माना एक सौ तीन रुपये सात आने एक पैसा। पाँची के प्रसव के बाद की शुश्रूषा और मुन्ने का नामकरण, दूध पिलाना आदि रस्मो मे एक-सौ रुपये और खर्च करना होगा।

इस प्रकार चार सौ रुपये के लिए घर और अहाते को रेहन रखने का निश्चय किया।

अर्जीनवीस आण्डी ने दस्तावेज़ तैयार किये।

रजिस्ट्री कार्यालय मे जाने पर ही मुत्तोरन मिस्तरी को मालूम हुआ कि इनका रेहनदार सफेद अय्यप्पन है।

पाँची प्रसव-केस का प्रतिकरण सक्षेप मे इस प्रकार था—

मुत्तोरन मिस्तरी बुढापे मे बाप बना।

घर और अहाता चार सौ रुपये के लिए रेहन मे रखा गया।

बैल दामु इलाका छोडकर कही चला गया।

('सप्पर सफर सघ' का एक प्रमुख सदस्य नष्ट हो गया।)

'पूवरशु कावु' का त्योहार सभी वर्षों की अपेक्षा धूमधाम से मनाया गया।

14 वापसी—फिर एक बार

शनिवार।

प्रात काल। श्रोत्र ग्न डाकिये के आगमन की प्रतीक्षा कर पगडडी की तरफ देखता घर के बरामदे मे बैठा था।

नायिका को प्रथम प्रेम-पत्र भेज चुका था। लेकिन एक ग़लती हो गयी थी। जवाब किस तरह भेजना है, इसकी सूचना नही दी थी, यहाँ-वहाँ की चिन्ताओ के चक्र मे यह बात एकदम भूल गया। नायिका अतिराणिप्पाट के पते पर जवाब भेजे तो डाकिया सुबह को आता है—नौ और दस के बीच। अगर नायिका का पत्र पिताजी के हाथ मे पड गया तो।

डाकिये का खाकी परिधान दूर पगडडी पर देखते ही नीचे दौडकर पत्र को हस्तगत करना है

"चेटी भवन्निखिल खेटी कदबवनवाटिषु " कृष्णन मास्टर बरामदे मे बैठकर शकराचार्य की स्तोत्रकृति के पद्य कण्ठस्थ कर रहे थे। अग्रेज़ी शब्दकोश से नये शब्दो को नकल कर पढना, अग्रेज़ी व्याकरण ग्रन्थो से नये मुहावरो, कहावतो और शैलियो को समझना-बूझना, सस्कृत-कीर्तन और श्लोको को कण्ठस्थ करना—ये कृष्णन मास्टर की छुट्टियो के दिनो का मनोरजन है। कभी-कभी वे वैद्यक-शास्त्र-ग्रन्थो से परिचित होने की कोशिश करते। कृष्णन मास्टर को गर्व था कि वे ईडियोमेटिक अग्रेज़ी मे गोरो की तरह बातचीत कर सकते है। एक बार कृष्णन मास्टर का शिष्य इट्टि रारिश्श मेनोन, हाई स्कूल मे प्रवेश लेने गया। हाई स्कूल मे अग्रेज़ी अध्यापक वेंकट राव ने छात्र की जाँच की। अग्रेज़ी किताब से 'टाइगर' वाला पाठ निकाला।

"ह्वाय डिड द टाइगर ईट दि मेन ?" वेंकट राव का सवाल था।

"टु सेटिसफाय इट्स एपोटाइट" इट्टि रारिश्श मेनोन ने जवाब दिया।

लडके का जवाब सुनकर वेंकट राव मुँह खोल देखते रह गये। लडके की पीठ थप-थपाकर बधाई देते हुए बोले," हू वाज़ योर इंग्लिश टीचर ?"

"मिस्टर कृष्णन मास्टर।"

"नो वण्डर।" वेकटराव ने अपनी सफेद पगडी को हिलाते हुए कहा, "आइ हैव हर्ड अबाउट दैट स्कालर।"

कृष्णन मास्टर ने यह बात कई लोगो को बतायी थी। आज सुबह से ही वह सस्कृत-कीर्तन पढने के मूड मे है।

"चेटी भवन्निखिल खेटी कदबवनवाटिषु नाकि पटली "

श्रीधरन पगडडी पर गिद्ध की तरह आँखे लगाये प्रतीक्षा करने लगा।

नायिका को बडी सावधानी से पत्र लिखकर भेजा था।

श्रीधरन के लिए मगलवार एक स्मरणीय दिवस था। जिन्दगी का प्रथम प्रेम-पत्र मगलवार को आधी रात को ही पूरा किया गया था। नायिका का प्रथम दर्शन—उस दर्शन ने सौ-सौ सपनो को हृदय मे खिलाया था। उस स्वप्न तरगिणी से नायिका के पीछे अनजाने मे ही आगे बढने की बात तिरुवातिरा की आधी रात को सन्यासी का प्रच्छन्न वेश धारण कर नायिका की करागुली स्पर्श करने की बात' 'सब कुछ ललित गद्य-काव्य मे लिखा था। अन्त मे दो पक्ति कविता की भी लिखी थी

"इतना अधिक प्यार किया मैने तुझे,
अपराध है तो देवी मेरी क्षमा करे।"

पिछले दिन सुबह वह प्रेम-पत्र राजा कॉलेज के निकट के डाकघर की पेटी मे डालना चाहा। तुरन्त स्मरण आया, खतरा है। नजदीक के डाकघर की मुहर पत्र पर देखने पर क्लास टीचर को शक होगा। नही, इसमे नही डालना चाहिए। डाकपेटी के सामने से हाथ खीचलि या। शाम को कालेज बन्द होने पर चल पडा चार मील दूर कारकुन्नु को। पत्र कारकुन्नु डाकघर की पेटी मे डाल गाडी से वापस आ गया। गाडी मे से ही पश्चिम क्षितिज पर चतुर्थी की चन्द्रलेखा को व्यक्त रूप से देखा। चन्द्रदर्शन पल की याद की

'दिनकर दिवसादौ रात्रिनाथ चन्द्रष्टुर,
सुखजलमृति भीतिर्वित्तकान्ताप्ति रोगा '

हिसाब लगाया रविवार, सोमवार, मगलवार, बुधवार बुधवार भय! नये चाँद को अनदेखा कर पूर्वदिशा मे मुडकर बैठ गया।

नायिका को बृहस्पतिवार को स्कूल मे पत्र मिलेगा। उस दिन नायिका श्रीधरन के प्रेमसदेश का मकरद पीकर मधु स्वप्नो मे सोयेगी। शुक्रवार को जवाब

लिखकर पोस्ट करेगी।

शनिवार को सुबह पत्र डाकिये के हाथ मे होगा। वह कन्निप्परपु मे पधारेगा ···शायद उस मनस्विनी के मन मे शनिवार को जवाब लिखने का विचार आया हो। ऐसी हालत मे मगलवार तक इन्तजार करना पड़ेगा। देवी, ज़िन्दगी-भर तेरा इतजार करते बैठे रहने के लिए ·

"पाटीरगन्धी कुचशाटी कवित्व परिपाटी"···बरामदे से कीर्तन उठ रहा था।

श्रीधरन के मन मे 'मापिल पाट्टु' की दो पक्तियाँ उभर आयी

"बीरान काक्का अत्तर पूशी,
बीबियय्च्चोरु कत्तुण्टु "

(बीरान काक्का, इत्र लगाकर भेजा हुआ बीवी का एक पत्र है)

पगडडी से दो आदमी आ रहे है—श्रीधरन ने ध्यान से देखा।

वे दरवाजे पर पहुँचे।

नायिका के पिता जी और नायिका का ट्यूशन मास्टर।

वे फाटक से कन्निप्परपु मे ही आ रहे है।

बरामदे का कीर्तन बन्द हो गया।

श्रीधरन के अन्तस् मे बिजली कौंध गयी।

घर के बरामदे और नीचे के घर के बीच से झाँककर देखा। नायिका के पिता और ट्यूशन मास्टर अष्टवक्रन उण्णीरि नायर, कृष्णन मास्टर के पास की कुर्सी पर बैठकर कुछ गुप्त बातें कर रहे हैं।

नायिका का पिता कृष्णन मास्टर के हाथ मे जेब से एक पत्र निकाल कर देता है।

कृष्णन मास्टर नाक पर चश्मा रखकर पत्र पढ़ते हैं।

नायिका को प्रेषित प्रणयलेख!

कुजिकुरुबक्काविलम्मा, मुझे बचाओ!

चेनक्कोत्तु घराने की पुरातन देवी कुजिक्कुरुब भगवती की शरण जाने की जरूरत अचानक ही हुई थी।)

श्रीधरन की यह साहित्य सृष्टि भी लौट आयी है। पिताजी के हाथ मे है।

कृष्णन मास्टर के पत्र पढने के बाद नायिका के पिता ने कृष्णन मास्टर से पत्र वापस लेकर अपनी जेब मे रख लिया।

अष्टवक्रन उण्णीरि नायर कुछ फुसफुसा रहा था।

थोडी देर के बाद दोनो विदा लेकर आँगन मे उतर गये। फाटक पर पहुँचने पर अष्टवक्रन ने बदबू से नाक सिकोडते हुए की तरह, बरामदे मे अपराधी की तरफ देखा। श्रीधरन निडर हो खडा रहा।

"श्रीधरन !"

नीचे से पिताजी की गम्भीर पुकार सुनाई पडी।

पिताजी ने मेज पर जो बेंत की छडी रख छोडी थी, उसकी झलक आँखो मे पडी। श्रीधरन को सजा देने के लिए उस बेंत का इस्तेमाल कम ही होता था। पिताजी गरम मिजाज के नही है। लेकिन गुस्से से जब तिलमिलाते हैं तो एक सहारमूर्ति ही बन जाते है। बेंत की मार मे जाँघ और चूतड की खाल से खून बहने पर भी वे नही छोडते। इससे पहले एक-दो बार ऐसा हुआ है।

वह अपमान के मैंने बोझ को ढोता हुआ पिताजी के सामने एक गधे की तरह सिर झुकाकर खडा हो गया।

पिताजी ने श्रीधरन का चेहरा पकड कर ऊपर उठाया।

क्रोध और परिहास पिताजी के चेहरे पर स्फुरित नही हुए, बल्कि मनोरजन भरी एक मुस्कान ही दिखाई पडी।

"अरे लडके, तू इतना बदतमीज कैसे हो गया ! उस लडकी को स्कूल के पते पर प्रेमपत्र भेज दिया ?"

तब रसोई घर से छाती पीटकर रोने की आवाज आयी। श्रीधरन की माँ की आवाज है। उसे मालूम हो गया कि बेटे ने परिवार के मुँह पर कालिख लगा दी है। (ताराजी और दुग्र मे श्रीधरन की माँ छाती पीटकर रोने लगती। हाथ से नही पीटती, भात खाने के लिए जिस पटरे पर बैठते है उससे अपने को मारने पर ही उसे खुशी होती।)

श्रीधरन सकपकाकर खडा हो गया। पिताजी ने उसके अपराध पर नही, उसकी मूर्खता पर ही डाँटा था।

"आगे कभी यह सुनने का मौका आयेगा कि किसी लडकी को तूने पत्र भेजा है ?" पिताजी ने तीखी आवाज मे पूछा।

"नही।" दुनिया की सभी लडकियो को मन-ही-मन कोसते हुए श्रीधरन ने शपथ ली।

"ऊँ—जाओ। इम्तहान निकट है न ? जाकर सबक पढो।"

कैफियत पूरी हुई। मुजरिम को ताकीद देकर छोड दिया गया।

"श्रीधरन ने उस लडकी के नाम एक पत्र भेज दिया तो उसमे उतनी बडी गलती क्या हो गयी ?" छोटे भाई की पैरवी करते हुए गोपालन जोर से चीखा।

पिताजी के चेहरे पर एक नटखट मुस्कान थिरक गयी। उन्होने कुछ कहना चाहा। इतने म एक आदमी फाटक से आता दिखाई दिया।

श्रीधरन ने देखा, मछुआ एरप्पन है। उसके हाथ मे एक बडी मछली लटक रही है।

एरप्पन पुराने जमाने मे कृष्णन मास्टर के साथ स्कूल मे पढा था। (अन्दमान

चात्तप्पन भी उसी दर्जे मे था।) एरप्पन पच्चीसेक मील दूर स्थित मुक्काटी मे स्थायी रूप मे रहने लगा है। वह तो अब समुद्र पर नही जाता। दो हट्टे-कट्टे लडके हैं, वे ही जाते हैं। छोटे बच्चो को खिलाता हुआ एरप्पन घर पर ही रहता।

तीन-चार महीने मे एक बार अपने पुराने सहपाठी कृष्णन मास्टर को देखने के लिए कन्निप्परपु मे मछली लेकर वह आता।

एरप्पन के पूरे चेहरे पर चेचक के निशान हैं। वह काला और छोटे कद का है। नुकीले चेहरेवाले एरप्पन के एक ही आँख है। (उसकी जिन्दा आँख गुंजा की तरह लाल है—दूसरी मुर्दा आँख नमक मे पडे आँवले के समान।) पुराने सहपाठी को देखने पर एरप्पन की बातचीत और हँसी खास ढग की होती। भेंट की मछली को ऊपर उठाए चेहरे को दाहिनी ओर मोडकर 'की क्की क्कीह' करके थोडी देर तक ठिल-ठिलाकर हँसता रहा।

एरप्पन को पहली बार देखने का स्मरण श्रीधरन के मन मे आज भी ताजा है।

जब माँ ने अन्दर लेटे पिताजी से कहा कि एरप्पन[1] आया है, तब श्रीधरन ने सोचा कि कोई भिखारी आया होगा। बरामदे मे झाँककर देखा तो एक बडी मछली को हाथ मे लटकाए खडा एक आदमी ही नजर आया।

पिताजी ने उठकर उसके नजदीक जाकर कुशल-क्षेम पूछी, "क्या है एरप्पन ?" तब वह हाथ की मछली को उठाकर चेहरे को इधर-उधर घुमाता हुआ मुस्काने लगा।

माँ बरामदे मे आकर उसके हाथ से मछली लेकर रसोईघर मे चली गयी।

उसके जाने पर श्रीधरन ने पिताजी से पूछा, "उस भले आदमी को एरप्पन क्यो पुकारते हैं ?"

पिताजी ने बताया कि वह उसका नाम है।

"क्या उसके माँ-बाप को अच्छा नाम नही मिला था ?"

पिताजी ने स्पष्टीकरण दिया। वह उसके माँ-बाप का दिया हुआ नाम नही है। नीच जाति के लोगो को बच्चा होने पर देहात का मुखिया ही नाम देता है। अगर लडका है तो 'एरप्पन', (भिखारी) 'पेरुक्की' (निकम्मा आदमी), 'मकट्टा' (मिट्टी का ढेला), कलप्पा (हल) आदि कोई नाम दिया जाता है। लडकी है तो 'चूल्' (झाडू), 'मुर' (सूप) 'इरलु' (ऊखल) आदि नामो से पुकारा जाता। 'कुदाल' 'कुल्हाडी' 'बसूला' आदि हथियारो के नाम भी हरिजनो को दिये जाते हैं "

सुनकर श्रीधरन को हँसी आयी, साथ ही खीज भी हुई "उस मुखिया के कान पर एक झापड लगना चाहिए।" पिताजी हँसी से लोट-पोट हो गये।

---

1 मलयालम शब्द 'एरप्पन' का अर्थ भिखारी है।

एरप्पन मछुवे का आगमन श्रीधरन को एक त्योहार के समान लगा। उस दिन अच्छी मछली का व्यजन नजीब होने के कारण ही नही, एरप्पन ने अच्छी समुद्री दास्तानें भी बतायी। सब अनुभव की दास्तान थी वे तीन-चार दिन तक लगातार समुद्र मे इधर-उधर चक्कर खाने पर नाव मे सचित पीने का जल खतम हो गया था। जब वह गला सूखकर मरनेवाला था, तब काविलम्मा को पुकारकर रोते हुए मिन्नत-प्रार्थना की। काविलम्मा का दिल पसीज गया। उसने आसमान से स्तनपान कराया। यो बारिश का जल पीकर मृत्यु से अपने बचने की बात वह बडे मनोयोग से सुनाता।

एक लम्बे आकार की हाँगर मछली जाल मे फँसी तो जाल और नाव को ही खीचकर ले गयी। फिर समुद्र के बीच चक्कर खाने की उस घटना को भी वह सुनाता कि कैसे जाल को समुद्र मे छोडकर प्राण लेकर वापस आना पडा।

"तिमिंगल को देखा करते हो ?" श्रीधरन ने जिज्ञासा के साथ पूछा।

"तिमिंगल-विमिगल तो समुद्र मे नही है।" एरप्पन पान खाने के लिए सुपारी काटते हुए सिर हिलाकर बोला। फिर कुछ याद कर पहले कही बात का सशोधन करके उसने बताया, "हाँ मुन्ना, समुद्री हाथी के बारे मे ही कह रहे हो न ? वही तो समुद्र का राजा है—ईमानदार राजा। उसके सिर पर एक नली है। इससे पानी ऊपर छिटकाता है। दूर से ही दिख जाता है।"

क्षणभर चुप रहकर फिर बखान करने लगा—सफेद छतरी लेकर खडे समुद्री राजा को देखने पर नाव के लोग तुरन उठ खडे होकर प्रार्थना करते, 'समुद्र के राजा, हमे बचाइए ' यह सुनकर वह सफेद छाता समेटकर झट डुबकी लगा लेता। लेकिन राजा के बारे मे हँसी-ठिठोली करे तो राजा को मालूम हो जाता। तब नाव के नीचे आकर वह पिचकारी से पानी उछालने लगता। उस समय नाव और मछुवे कहाँ होते—उधर आसमान मे ! एक नारियल के पेड की ऊँचाई मे फुहार की धारा मे लटकते रहते। यह राजा का एक खेल है। मजाक उडानेवालो के लिए दण्ड भी। तब नाव के लोग 'समुद्री राजा, माफी दे दीजिए !' रोते हुए मिन्नत—प्रार्थना करते। यह सुनते ही राजा शान्त हो जाता। वह अपना सफेद छाता समेटकर पानी मे विलीन हो जाता। एकाएक नाव और मछुवे सीधे पानी मे आ गिरते। किसी को भी कोई खतरा नही होता। वह तो ईमानदार है। मछुओ को आसमान मे तिमिंगल के सफेद छाते पर थोडी देर लटकने का अनुभव अवश्य करा देता है।

क्रुद्ध तिमिंगल की अत्युग्र जलधारा मे आसमान मे नाचनेवाली नौकाओ और उनमे प्रार्थना करते हुए मछुवो की तस्वीर श्रीधरन के मन मे नाच उठी।

कृष्णन मास्टर ने एरप्पन से पूछा, "क्या तेरे दूसरे बेटे की शादी हो गयी है ?"

यह सुनकर एरप्पन हँस पडा। फिर दूसरे बेटे चन्तप्पन की बात विस्तार से

बतायी।

चन्तप्पन को एक मुस्लिम लड़की से मोहब्बत हो गयी। धर्म-परिवर्तन कर वह मुसलमान बना, टोपी डाली और सेटताली हो गया। उससे निकाह किया। साल भर बाद उस औरत से उसे नफरत हो गयी। वह तो रंडी थी। सेटताली ने उसको छोड़ दिया। फिर आर्य समाज मे आकर वह हिन्दू बना। विवेकानन्द नाम स्वीकार किया। अब वह अच्छा है। शादी की बात कहने पर चन्तप्पन को—नही, विवेकानन्द को गुस्सा आ जाता है

चन्तप्पन की प्रणय-कथा सुनकर कृष्णन मास्टर हँस पड़े।

"महिला को देखकर मोहित होने पर पुरुष की हालत गधे की तरह हो जाती है ।"

कृष्णन मास्टर हँसते हुए बोले, "मैंने भी एक लड़की से प्यार किया था। वह घटना सुनना चाहोगे ?"

पिताजी के इश्क की कथा सुनने के लिए श्रीधरन कान खड़े कर वही बैठा रहा। श्रीधरन को डर था कि पिताजी उसको उठकर चले जाने का आदेश देंगे। श्रीधरन के न सुनने लायक कोई बात होती तो पिताजी श्रीधरन से कहते कि तू अपने कमरे मे जाकर सबक पढ़, लेकिन उन्होने ऐसा कुछ भी नही कहा। इतना ही नही, श्रीधरन को लगा कि अपने बेटे को सुनाने के वास्ते ही बाबूजी यह कथा कह रहे है।

कृष्णन मास्टर की पुरानी मोहब्बत की दास्तान का सार कुछ इस प्रकार था

कृष्णन मास्टर के टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल मे पढने का जमाना। मोहल्ले के एक पुराने घराने की एक सुन्दर युवती से कृष्णन मास्टर की आँखें चार हुई' उन्होने उमसे शादी करने के इरादे से ऐसा किया था। लेकिन युवती को जरा सन्देह था कि इस दीवाने ने शादी किये बिना ही उसे छोड़ दिया तो । उसे मालूम हो गया था कि उसकी खूबसूरती पर मास्टर लट्टू हो गये है।

वह अनपढ थी।

एक दिन शाम को कृष्णन मास्टर ने ट्रेनिंग स्कूल से वापस आते समय एक अजनबी इन्सान को रास्ते मे इन्तजार करते हुए देखा। मास्टर को देखने पर उसने बड़े अदब से प्रणाम किया। कृष्णन मास्टर की उस प्रिया ने एक गुप्त सदेश के साथ ही उस नौजवान को भेजा था। वह चार मील दूर मामा के घर जा रही है, कल रात वहाँ आने पर सुविधापूर्वक बातचीत हो सकती है। यही सदेश था। इस प्रेम सदेश से कृष्णन मास्टर के रोंगटे खड़े हो गये।

"उससे कहो कि कल मिलेंगे।" मास्टर ने जवाब दिया।

घर जाने के बाद उस पर पुन विचार किया। जरा विवेक का उदय हुआ।

गुप्त-सदेश देनेवाले व्यक्ति के बारे मे स्मरण किया। सफेद हट्टा-कट्टा नौजवान। लम्बे बाल, ललाट पर सिंदूर उसने गुप्त-सदेश उसी युवक के द्वारा दिया था। ऐसी हालत मे इन दोनो के बीच भी गुप्त-सबध जरूर होगा।

मास्टर अगली रात उससे मिलने नही गये। फिर कभी नही गये।

प्रेम करने मे ही नही, पुरुषो को धोखा देने और अपमानित करने मे भी इन महिलाओ को एक खास खुशी महसूस होती है। एक भी महिला पर विश्वास नही करना चाहिए। जो पुरुष प्रेम के जाल मे फँसा कि बस एक गधा बन जाता है। वह असलियत नही जान पाता—कृष्णन मास्टर ने अपनी पुरानी मुहब्बत की दास्तान यो खतम की।

श्रीधरन के लिए यह कोई तत्त्वोपदेश नही था। वर्षों पहले रावुत्तर मौलवी ने जो गीत गाया था, वह उसके कानो मे गूँज रहा था—

"आट्टेयु काट्टेयु नपलाम्—अत
शेल केट्टिय मातरै नपलाम् "

15 कड़ुवा, खट्टा, तीखा और मीठा

प्रकृति के रगमच पर बारिश का नाच शुरू हो गया।

श्रीधरन को बारिश का मौसम पसन्द है। जब पहले-पहल वर्षा होती है तब वह बडी उमग से आँगन मे झूम झूमकर नाच उठता है। बरामदे के सामने जल-बिन्दुओ के नीचे गिरने पर कई आकार के बुदबुदे पैदा होते। उनके पैदा होने, रेंगने और फिर एकाएक फूट जाने अर्थात् सृष्टि-स्थिति-सहार लीलाओ को वह उत्सुकता से देखता। हवा मे पेडो के शिखरो को झूमते और पौधो को नृत्य करते देखकर वह खुश होता। वर्षाऋतु को आधार बनाकर उसने एक कविता भी लिखी है

"स्वच्छ विभा डूब, कारी बदरियो का
क्रीडागन हो गया सारा आकाश।
कल-कल ध्वनि मे 'बीज, खता' 'बीज खता'
गाती चिडियाँ भी उड गयी कही।
रग बदल सारी धरा ने
कपिल कचुक ओढा!
सूखी पत्तियाँ उड जाती—
धूल भरी झंझा के झोके मे।
इन्द्रधनुष की रग-छटा
उदित हुई
शीतल नभ की छाती पर।

चन्द्रमा ने डाल दिया घूँघट
(चाँदनी का सुख हुआ अस्त)
नव वर्षा से आलिंगित मिट्टी की
मदगन्ध पवन मे भर गयी।
वर्षा ऋतु के नर्तन मे
बज उठे मडूक ताल
मेघ गर्जन और ठण्डी पुरवैया को ले साथ
ऋषभ मध्य[1] भी आ गया लो।
मूसलाधार वर्षा से घाट डूबे, रास्ते हुए बन्द।
हरियाली ओढे आ पहुँची
आद्रा[2]-रवि सगम की नव वेला हुई काली
मिर्च की लताएँ फूली फली।
खेत-खेत की मेडे, पगडडियाँ और मिट्टी की दीवारे लाँघ,
बढ आया बाढ का पानी
घरो के आँगन को पार कर।

बारिश मे आँगन की जलधारा मे बहाने के लिए कागज के बहुरगी जहाज देने वाले गोपालन भैया की भी याद आयी। (बेचारा गोपालन भैया! अब जीवित शव है। बारिश के समय आँगन की तरफ देखता हुआ बरामदे मे लेटा है।)

रात को वर्षा-देवता एक बडा ऑरकेस्ट्रा शुरू करता। मेढको का नगाडा, छोटे मेढको का मृदग, झिल्लियो का रव—मूसलाधार वर्षा का शोर भी। युगो के उस पार के ध्वनि-आलोक मे श्रीधरन की आत्मा लीन हो जाती उसमे लीन होकर वह सो जाता।

आज वर्षा ऋतु अपने सभी आकर्षक कार्यक्रमो के साथ जारी है तो भी श्रीधरन उस पर ध्यान दिये बिना घर के बरामदे मे विषाद-भरे मन से मूक बना बैठा है। छोटी-छोटी चिन्ताएँ वर्षा के पानी के बुलबुले की तरह उठती-फूटती रहती हैं।

इण्टरमीडियेट पब्लिक परीक्षा का फल कल अखबार मे प्रकाशित हुआ। श्रीधरन का नम्बर नही था—इम्तहान मे हार गया है।

उस दुष्ट गणित ने ही धोखा दिया होगा।

परीक्षाफल ज्ञात होने पर पिताजी ने डाँटा नही, सान्त्वना भी नही दी—उन्होने कुछ नही कहा—सिर्फ 'हूँ' की आवाज प्रकट की।

---

1. 'ऋषभ मध्य' मानसून की वर्षा जो केरल मे वैशाख महीने मे शुरू होती है।
2 आद्रा मे सूर्य की स्थिति खेती शुरू करने की सूचक है।

पिताजी के मूक भाव मे न जाने क्या-क्या बातें छिपी होगी ?

इण्टरमीडियेट पास होने पर पुत्र को बी० ए० पढाने के लिए मद्रास भेजना है या मगलापुरम्—इस पर पिताजी को माँ से बहस करते हुए श्रीधरन ने सुना था। माँ ने कहा था कि मगलापुरम् अधिक निकट है। मद्रास की बी० ए० डिग्री के लिए अधिक मान्यता होगी। पिताजी ने श्रीधरन से कोई राय नही पूछी। रिज़ल्ट के आने का इन्तज़ार कर रहे थे। नतीजा मालूम हुआ फेल हो गया है।

माँ ने खरी-खोटी सुनायी, "अरे बदतमीज पाठ न पढकर लडकियो को पत्र लिखता बैठा रह। अब फेल होने का ताज पहन रखा है न ?—किसी चपरासी की नौकरी मे चला जा "

सिर्फ गोपालन भैया ने ही तसल्ली दी थी, "श्रीधरन तू दुखी मत हो। कितने लडके फेल हो गये होगे। उनमे तू भी एक है। अब सितम्बर की परीक्षा के लिए रात-दिन पढकर एक कर दे। कविता लिखने का काम फिलहाल टाल दे "

गोपालन भैया की बात हृदय को छू गयी।

(बडा भैया फिटर कुजप्पु तमिलनाडु गया है। दो महीने म एक बार वह अपनी बीबी और मुन्ने को देखने के लिए कोगनाटु लुक-छिपकर जाता। दो दिन ही वहाँ ठहरता। फिर पूँछ दबाकर कन्निप्परपु वापस चला आता।)

बाहर अच्छी बारिश है। ठण्डी हवा बह रही है।

गोपालन भैया की बात अन्तम् म उभर आयी है। लेकिन अब इम्तहान मे बैठने का उत्साह नही है। उसको डर है कि गणित एवरेस्ट की चोटी की तरह है। कभी भी उस पर चढ नही सकेगा। पिताजी के हृदय को पीडा पहुँचाने का दुख था। आखिर सितम्बर की परीक्षा के लिए पढने का निर्णय लिया। क्या करना चाहिए ? शेल्फ की काव्यकृतियो और कहानियो की फाइलो की ओर नज़र गयी। लगा कि सब कुछ कूडा-करकट है। विदेशी वस्त्रो की तरह इन्हे जला देना चाहिए। कई रातो की उपासना और श्रम का नतीजा ही इन पृष्ठो मे छिपा है यह जानकर तकलीफ हुई। दुखी हो पगडडी की ओर देखने पर कुबडे वेलु के नटखट लडके अप्पूट्टि को स्लेट और पुस्तक सिर पर रखे हुए वापस आते देखा। वह पणिक्कर के स्कूल मे ही पढता है। सोचा कि मूसलाधार बारिश के कारण सुबह को ही छुट्टी हो गयी होगी। उस समय उस नटखट लडके ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा कि बढ़ई केशवन मास्टर का निधन हो गया—स्कूल नही लगेगा—महात्मा गाँधी की जय !

यह समाचार सुनते ही वह चौक उठा। सोचा कि लडका बेकार बकवास करता होगा। उसे पुकारकर पूछा, "क्या है अप्पूट्टि ? क्या आज स्कूल नही है ?"

"स्कूल नही है—केशवन मास्टर का निधन हो गया। विषम ज्वर था। स्कूल बन्द है।"

नयी देशीय प्रबुद्धता के प्रतीक महात्मा गाँधी की जय, बन्द,—सत्याग्रह आदि

नारे नयी पीढी को आकर्षित कर रहे है ·

केशवन मास्टर का स्मरण किया। वह अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनता था। फिर भी अच्छा था। पुलिस इन्स्पेक्टर के चुनाव मे गया। नौकरी मिलने के विश्वास पर कई उल्टे कार्य किये। मेढक के गरदन की थैली को फुलाकर धमकी देने-जैसा ही कुछ उसने किया था। विधि की निष्ठुरता ! हार का मज़ा चखाने के बाद भी विधाता तृप्त नही हुआ। विषम ज्वर का शिकार बनाकर उस बेचारे को मार डाला कालर शर्ट पहनकर साइकल चलाते, नयी सडक से जाते हुए उस कोमल युवक की तस्वीर मन से हटती नही—वह अब श्मशान मे मुट्ठी-भर राख बन गया होगा

यो कुछ दार्शनिक विचारो मे मन बह रहा था कि पगडडी से एक काला-कलूटा दुबला इनसान कन्धे पर बैग टाँगे घुटनो तक के पानी मे आता हुआ दिखायी पडा। व्यक्ति को ध्यान से देखा उससे पुराना परिचय है। साप्ताहिक कार्यालय का चपरासी है।

वह फाटक से कन्निप्परपु मे ही आ रहा है।

हृदय के काले मेघो के बीच बिजली चमक उठी।

साप्ताहिक मे मेरी कहानी प्रकाशित हुई होगी।

कथा या लेख साप्ताहिक मे प्रकाशित करने पर उसकी एक प्रति लेखक या कथाकार को मुफ्त भेजी जाती है। यही रीति है।

पुराना राजा 'साप्ताहिक' के सपादक पद से इस्तीफा देकर कही चला गया। एक देशीय नेता ने ही अब साप्ताहिक के सपादक का काम अपने ऊपर ले लिया है।

श्रीधरन ने इस मौके पर एक कहानी 'बिजली' शीर्षक से भेजी थी। कथाकार का नाम एस चेनक्कोत्त था।

सीढियाँ उतरकर नीचे गया।

चपरासी ने साप्ताहिक उसके हाथ मे दिया। डिलिवरी बुक खोलकर हस्ताक्षर करने को कहा।

रैपर मे

श्री चेनक्कोत्त श्रीधरन,
कन्निप्परपु हाउस
अतिराणिप्पाट।

पता तो साफ लिखा है।

डिलिवरी बुक मे हस्ताक्षर किये।

"आपका नाम क्या है ?" चपरासी से आत्मीयता के साथ पूछा।

(साहित्य मे मेरी प्रथम सतति को वह साज-सँभारकर लाया है। कृतज्ञता

और खुशी प्रकट करने मे कठिनाई हुई ।)

उसने हँसते हुए कहा—"चन्तुक्कुट्टि"

धोती बाँधकर डिलिवरी बुक को कन्धे पर रखकर, छाता पकडे ही वह फाटक से चला गया।

रैपर के पन्ने को आघात पहुँचाये बिना ही साप्ताहिक को बाहर निकाला।

हडबडी मे पृष्ठ उलटकर देखा—तेरहवें पृष्ठ पर रचना दिखाई दी।

कहानी 'बिजली'

—एस० चेनक्कोत्तु

लगा कि पृष्ठ की लिपियाँ नाच रही है।

देखते-देखते भावमग्न हो गया। 'बिजली' मे पतगे नाच रहे हैं।

कुछ कथाएँ और कविताएँ इसके पहले कुछ पत्रिकाओ मे प्रकाशित हुई थी। लेकिन शहर के सुप्रसिद्ध साप्ताहिक मे श्रीधरन की यह कहानी पहली बार ही प्रकाशित हुई है।

खुशी छिपा न सका। आत्मगौरव के पख फडफडाने लगे।

गोपालन भैया को दिखाने के लिए नज़दीक गया। गोपालन भैया दवा पीकर खुमारी मे लेटा था। उसे कष्ट नही देना चाहिए।

ऊपर के अपने कमरे मे बैठकर कहानी फिर एक बार पढी। छापे की गलतियाँ होगी। छापनेवाले पत्नी को पन्नी (सुअर) मे तब्दील कर देते है। सीढी के नजदीक पहुँचने पर रसोईघर से चूडियो के टकराने का मृदुल नाद सुनाई पडा। ध्यान दिया। जानु होगी। वह कभी-कभी माँ की मदद करने के लिए आती है।

तभी माँ को रसोईघर से आँगन के बाथरूम की तरफ जाते हुए देखा।

जानु रसोईघर मे अकेली है। मानस मे प्रणय-स्वप्न जाग उठा।

(पडोस की अम्मिणियम्मा की छोटी बहन है जानु। एक हफ्ते के लिए अपनी विवाहिता बहन के साथ रहने के लिए वह दक्षिण के अपने गाँव से आयी है।)

जानु दुबली पतली आम की कोपल की तरह रगवाली सत्रह बरस की लडकी है। वह मिट्टी का घडा लेकर उसमे पानी भरने के लिए कन्निप्परपु के कुएँ पर आती रहती। तब श्रीधरन अपने दुमजिले मकान के कमरे के बरामदे मे बैठकर पढ रहा होता। वह फूलो-भरी लताओ से लिपटी बाड के ऊपर दुमजिले मकान के बरामदे की तरफ देखती। आँखो मे बिजली सी कौधती। मिट्टी के घडे मे पानी भरने पर भी वह वहाँ रुकती। अञ्जलि मे पानी भरकर मुँह मे डालते हुए कुल्ला करने लगती। बरामदे म बैठे कॉलेज कुमार का हृदय प्रणय की आशका से झकझोर उठता।

एक बार एक मधुर मुस्कान की भेंट देने का साहस हुआ। जानु ने शरमाते हुए अपना सिर नीचे झुका लिया। इतना ही हुआ था बस। इससे अधिक कुछ नही

कर सका ।

अब वह रसोईघर मे अकेली है। आदिम इन्सान की ललचाई निगाहो से औरतो से मिलने की आकाक्षा ही भीतर से घूंघट निकालकर बाहर आती है।

दूसरी सृष्टि का मास-गंध का आस्वाद करने के लालच का नशा

साप्ताहिक और 'त्रिजली' को वही जमीन पर डाल वह सीधे रसोईघर की तरफ छिपकर चला गया।

जानु रसोईघर के कोने मे घुटने टेककर पीठ मोडे सिर झुकाए हुए चक्की मे मिर्च पीस रही है। उसकी चूडियाँ झनक-मनक रही हैं।

पीछे छिपकर बैठते हुए उसकी ठोढी को जरा ऊपर उठाया। मिर्च की तरह के उसके ओठो और सफेद दाँतो को चबाकर खाने की कामना से उसके ओठो को जोर से चूम लिया। गुदगुदी की घबराहट से चौंककर उसने अपना हाथ उठाकर रोका। मिर्च मे सना हाथ श्रीधरन की आँखें को छू गया।

आँगन से पगध्वनि सुनी। वह पीछे हट गया।

जिन्दगी मे पहली बार उसको दूसरी सृष्टि-समागम के अनुभव करने का अवसर मिला है। आँखो की जलन और रुलाई ही उसका नतीजा है!

अक्सर विधाता इस तरह की क्रूरता से ही श्रीधरन से बर्ताव करता है।

आँखे मूदकर गलियारे मे घुसने पर किसी चीज पर पैर लगा। 'बिजली' का साप्ताहिक—तुरत उठा लिया। शोर मचाये बिना हौले से सीढियाँ चढ़कर छज्जे पर जा पहुँचा मिर्च, नारियल और शहद का स्वाद तब भी मुंह मे बह रहा था आँखो म अश्रुधारा थी।

16 काँग्रेस वालण्टियर कुजप्पु

नयी देशीय प्रबुद्धता की लहरो ने अतिराणिप्पाट को अधिक स्पर्श नही किया था। आराकश, कलाल, मजदूर लोग सुबह को काम करने जाते। शाम को वे वापस आते। कुछ लोग रात को घर मे चुपचाप रहते। कुछ लोग ताडी शाप मे समय बिताते। एक तो ताडी पीकर घर मे हल्ला-गुल्ला मचानेवाले लोग दिखाई देते। दूसरे लोग ताडी पीने पर या नही पीने पर भी अच्छा सलूक करते।

लेकिन देश मे कुछ नयी हरकते होने लगी। महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन का आह्वान और ब्रिटिश शासन से भारत को मुक्त करने के अन्य कार्यक्रमो ने कुछ लोगो मे जोश पैदा किया था। कुछ लोग उस तरफ आकृष्ट हो गये। तीसरा एक वर्ग था जिसने लडाई को अवज्ञा की निगाहो से ही देखा था।

चेनक्कोत्तु कृष्णन मास्टर की जाति के अधिकाश सुशिक्षित और सभ्य लोग शासन करनेवाले गोरो के वैतालिक थे। उनका विचार था कि सवर्णों की प्रभु-

सत्ता से विदेशी प्रभुसत्ता बेहतर है। नौकरी और ऊँची जाति के लोगो को सबक सिखाने के लिए गोरो के पिट्ठु बनने से ही कामयाबी मिलेगी। इस ख्याल से वे कोट पैण्ट और पगडी पहनकर मिस्टर गाँधी की हँसी उडाते हुए राष्ट्रीय आन्दोलन को गाँधी का पागलपन कह मुखिया बनकर विराजमान रहे। खद्दर पहनना, विदेशी वस्त्रो को जला देना, ताडी शाप और विदेशी सस्थाओ की पिकेटिंग करना— कॉंग्रेस के इन प्रतिशोध कार्यक्रमो ने देश मे नये जागरण की सृष्टि की थी।

कृष्णन मास्टर दोनो ही पक्षो मे शामिल नही थे। ब्रिटिश शासन के प्रति आदर होने की राय एक तरफ, तो महात्मा गाँधी का भक्ति-भाव दूसरी तरफ। दोनो के बीच पडकर मास्टर परेशान हो गये।

जब श्रीधरन कॉलेज का छात्र था तब महात्मा गाँधी और अन्य देशीय नेताओ को गिरफ्तार करने के विरोध मे उसने कॉलेज की क्लास छोडकर हडताल और जुलूस मे जोश के साथ भाग लिया था। यह जानने पर पिताजी के झापड का डर भी था, लेकिन घर पहुँचने पर कृष्णन मास्टर ने कुछ नही कहा। उन्होने इस बात की जिज्ञासा भी नही की। आरम्भ मे, देशीय स्वातन्त्र्य के विचार से भी अधिक श्रीधरन को विरोध प्रकट करने और इकट्ठा होकर मोहल्ले मे हल्ला-गुल्ला मचा-कर चलने का जोश था। धीरे-धीरे वह कॉंग्रेस के आदर्शों से परिचित होने लगा।

गाढे नीले रगवाली पुलिस वॉन मे उतरकर लाठीधारी पुलिस ने कॉंग्रेस सत्याग्रहियो को जिस तरह पागल कुत्तो की तरह मारा, सिर फोडकर खून बहाया —इस दृश्य को अपनी आँखो से देखने पर श्रीधरन ने गोरो को मन-ही-मन पाँचवे शत्रु के रूप मे नोट कर लिया। रेशमी कपडे को छोडकर खद्दर पहन लिया। पिताजी ने विरोध नही किया। चीनी छोड दी। (गोरो ने चीनी को विदेशो से आयात किया था।) जमीन पर चटाई पर लेटने का अभ्यास किया। (जेल जाना पडा तो ?)

इतना होने पर पिताजी ने रोक लगायी, "बस बस, पहले परीक्षा पास करने का प्रयास करो। फिर कॉंग्रेसी बन सकते हो।"

जोश जरा ठण्डा हो गया। सितम्बर की परीक्षा के लिए मन लगाकर पढने लगा।

उस दिन शुक्रवार था।

श्रीधरन ऊपर बैठकर पढ रहा था। कृष्णन मास्टर स्कूल रवाना हो गये। बडे गपिया किट्टुण्णि ने रास्ते से ही यह अद्भुत खबर सुनायी

"कृष्णन मास्टर, अपना कुजप्पु कॉंग्रेसी टोपी और खद्दर की कमीज पहनकर ताडी शाप के सामने पिकेटिंग कर रहा है।"

कृष्णन मास्टर को इस पर भरोसा नही हुआ। मास्टर ने श्रीधरन को पुकार-कर कहा, "तुम जरा जाकर देखो। क्या वह बडा भाई ही है ?"

श्रीधरन खादी की नयी शर्ट पहनकर नयी सड़क के छोर की ताड़ी शाप की तरफ दौड़ गया।

"महात्मा गाँधी की जय !"
"भारत माता की जय !"
"मद्यनिषेध ज़िन्दाबाद !"

. . . . .

जय-जयकार और नारे दूर से ही सुनाई पड रहे थे। ताड़ी शाप के सामने सड़क पर भीड थी। श्रीधरन ने नज़दीक जाकर देखा।

घुटनो तक की एक खादी की धोती, खादी की एक बडी शर्ट और सिर पर गाँधी टोपी पहनकर हाथ मे तिरगा झण्डा पकडे सिर घुमाकर ऊँघने की मुद्रा मे खडे नये कांग्रेसी स्वयसेवक को श्रीधरन ने अच्छी तरह देखा।

"बडा भाई ही है।"

कृष्णन मास्टर ने अभिमान को मन मे रखकर गाल सहलाते हुए सिर हिलाया।

अतिराणिप्पाट मे इससे पहले एक ही सत्याग्रही था। वैक्कम मदिर के सत्याग्रह मे भाग लेने के कारण मार खाकर क्षय-रोग से पीडित हो, प्राण त्यागनेवाला वेलि अप्पुण्णि 'अब एक और देशीय योद्धा आ गया है चेनक्कोत्तु कन्निप्परबिल कृष्णन मास्टर का पुत्र कुजप्पु।

बडी देर तक विचार करने पर भी कुजप्पु के हृदय-परिवर्तन का कारण कृष्णन मास्टर को मालूम नही हुआ। उनके बुरे दिन गुज़र गये होगे। बडे-बडे अपराधी आगे चलकर ऋषी और त्यागी होते सुने है। पुराने ज़माने मे पुलिस की नौकरी करते समय कई निष्ठुर कर्म करनेवालो को बाद मे हृदय-परिवर्तन के कारण महायोगी बनकर श्रेष्ठ शिष्यो का आराध्य होते सुना है। इस तरह की कई बातो को सोचते हुए कृष्णन मास्टर स्कूल की तरफ चले।

बडे भाई साहब का ताडी शाप पिकेटिंग अच्छी तरह देखने के लिए श्रीधरन फिर उधर दौड गया।

यह ऐसा ज़माना था जब कॉंग्रेस मे स्वयसेवक मिलने मे कठिनाई होती थी। खद्दर पहननेवालो को पुलिस पकडकर मारपीट करती थी। उस समय ही फिटर कुजप्पु ताडी शाप पर पिकेटिग करने के लिए तैयार होकर कॉंग्रेस स्वयसेवको के दफ्तर मे चला गया। उसकी प्रार्थना तुरन्त मजूर कर ली गयी। वालटियर को खादी की एक टोपी और पोशाक चाहिए। बुखार से पीडित एक मोटे बुजुर्ग आदमी की शर्ट और टोपी मिली। फिर स्वयसेवक के लिए एक दिन का भत्ता आठ आने है। वह पहले ही अपनी जेब मे डालने के बाद कुजप्पु झण्डा पकडकर, दो-तीन बार जयकार करने के बाद ताडी शाप के सामने खडा हो गया था।

ताडी शाप पर पिकेटिग करनेवालो पर पुलिस ज्यादती नही करती थी।

लेकिन शाप के मालिक ने कांग्रेस स्वयसेवको के खिलाफ परिहास और उपद्रव करने के लिए पुलिस से भी ज्यादा नृशस बदमाशो को तैनात किया था।

स्वयसेवक कुजप्पु ने कच्चे नारियल का पानी लेकर उसे दूर फेंक दिया। फिर झण्डा पकडकर चुपचाप खडा रहा। तब एक आदमी ताडी पीने के लिए ताडी शाप मे आया। श्रीधरन ने आगतुक को पहचाना। समुद्र-तट पर ठेला खीचनेवाला पेरच्चन—बदमाश पेरच्चन!

स्वयसेवक कुंजप्पु ने पीने के लिए आये उस आदमी को रोककर विनम्र विनती की, "भाई, ताडी नही पीनी चाहिए। मद्य जहर है।"

पेरच्चन ने नफरत-भरी निगाहो से कुजप्पु को देखा। फिर चूतड खुजलाते हुए ताडी शाप मे चला गया।

दस मिनट के बाद पेरच्चन भर-पेट पीकर, दो बोतल शराब लिये हुए बाहर आया। शराब की बोतल दोनो बगलो मे दबाये वह डगमगाता हुआ आ रहा था। स्वयसेवक कुजप्पु के सामने खडे होकर उसने गाली बकना शुरू कर दिया। फिर एक लेक्चर झाडा, "अरे तू कौन है?—काँगिरस—काँगिरस, धत् तेरी! (जमीन पर थूक दिया)। गेरुआ कपडा लाठी पर लटकाकर खडा होनेवाला काँगिरस—कहता है, ताडी नही पीनी चाहिए—धत्—अरे, तेरा बाप कौन है?—कान्ति है या चश्मेवाला कृष्णन मास्टर? अरे, बता—बता—"

स्वयसेवक कुजप्पु मत्र जपने की तरह धीरे से फुमफुसाया, "मद्यनिषेध जिन्दाबाद· "

"फ! सूअर " पेरच्चन ने थूका (फिर अश्लील स्वरो की झडी लगा दी।) इससे भी नाराजगी कम न होने के कारण पेरच्चन ने अपनी बगल की मद्य की बोतलें नीचे रख दी। एक बोतल खोलकर सारी ताडी कुजप्पु के सिर, गाँधी टोपी और खद्दर की शर्ट पर उँडेल दी।

फिर ताडी मे नहाये कुजप्पु को देखकर हँस पडा।

कुजप्पु ने जोर से नारा लगाया, "महात्मा गांधी की जय ··!"

कुजप्पु की सहनशक्ति और क्षमा देखकर दर्शक आश्चर्य-स्तब्ध हो गये। कुछ लोगो ने यह राय प्रकट की कि ताडी शापवाला कुजय्यप्पन पेरच्चन को मुफ्त ताडी देकर कांग्रेस स्वयसेवक के खिलाफ गाली बकने की प्रेरणा दे रहा है। कांग्रेस स्वयसेवक पर आक्रमण करने के लिए तैयार होनेवाले पेरच्चन से बदला लेने के लिए समुद्र-तट पर ट्रॉली खीचनेवाला चात्तु और रेलवे-पोर्टर काना गोपालन आगे बढे। तब कांग्रेस नेता कृष्णन नायर ने आगे बढकर हाथ जोडकर कहा, "भाइयो, क्षुब्ध न हो। अहिंसा ही महात्मा गाँधी का उपदेश है। मृत्यु को गले लगाने को ही हमारे स्वयसेवक तैयार होते हैं। अहिंसा-मन्त्र जपते हुए पिकेटिंग करनेवाले स्वयसेवको को उपद्रव करनेवालो के साथ भी इसी नीति पर चलकर व्यवहार करना जरूरी

है।"

पेरच्चन से बदला लेने आये ट्रॉली चालु और पोर्टर गोपालन कांग्रेस नेता के आग्रह पर पीछे हट गये।

पेरच्चन शराब की बोतलो को कन्धे पर रखकर तच्चोलि पाट्टु गाते, लड-खडाता हुआ सडक पर पहुँच गया।

थोडी देर बाद एक दूसरा नौजवान हाथ मे कच्चा नारियल लिये स्वयसेवक कुजप्पु के पास आया। उस नौजवान से परिचित लोगो को बडा ताज्जुब हुआ। पेरच्चन का इकलौता बेटा कुन्जाडी!

पिता कांग्रेस स्वयसेवक को देखकर क्षुब्ध होता है, और बेटा सेवा-भाव से स्वयसेवक को कच्चा नारियल प्रदान करता है! एक ही घर मे दो दल।

कुजप्पु ने कच्चा नारियल पीकर छिलका फेंक दिया।

श्रीधरन बडे भाई की ताडी शाप पिकेटिंग देखता हुआ आधा घण्टा वही खडा रहा। फिर घर वापस आया। एक दोस्त ने कहा था कि 'अलमिनार' पत्र के दफ्तर के साहित्यकार गोपाल पिल्ला से परिचय करायेगा। भोजन के बाद दो बजे पत्र के दफ्तर को रवाना होना है।

सडक पर पहुँचकर देखा कि एक लडका स्वयसेवक कुजप्पु द्वारा पीकर फेंके हुए कच्चे नारियल का छिलका ले जा रहा है। उस छोकरे को पहले कही देखा था। स्मरण किया। शक हुआ कि वह बदमाश पेरच्चन का छोटा लडका है।

सडक के नज़दीक रारिच्चन की चाय की दूकान के नज़दीक की पगडडी से जाने पर चार-पाँच अहातो के उस पार ही पेरच्चन का घर है। श्रीधरन ने उस लडके को, नारियल का छिलका लेकर उस पगडडी से जाते हुए देखा। उसे कुछ शक हुआ। उस लडके का पीछा किया। छोकरा पगडडी से चलकर पेरच्चन के फाटक मे घुस गया। श्रीधरन थोडी देर तक पगडडी पर शकित खडा रहा। फिर हौले से फाटक पर चढकर आँगन म झाँका। एक छोटी छप्पर की झोपडी थी।

उसने आँगन और बरामदे मे किसी को नही देखा। वहाँ चढ़कर देखने की इच्छा हुई। लेकिन घर के लोगो के प्रश्न करने पर तुम कौन हो, क्यो आये, क्या उत्तर देगा, सोचता हुआ खडा रहा।

पेरच्चन के घर एक मिट्टी के बर्तन मे अरुता का पौधा देखकर मन मे विचार उठा। बढई माधवन न कुछ अर्से पहले सलाह दी थी कि अगर बिना किसी कारण के किसी के घर मे घुसना है तो अरुता के पौधे का अन्वेषण करना काफी है। घर के बच्चे को अपस्मार हो गया है। ज़रा अरुता दीजिए। आपके यहाँ हो तो बडा उप-कार होगा। क्षमा माँगने के लहजे मे पूछताछ करनी चाहिए।

उस विचार को आधार बनाकर वह साहस बटोर वहाँ चढ गया।

घर के दक्षिणवाले कमरे मे लोगो को काम मे लगा देखकर हौले से आँगन

के पीछे से जाकर दरवाज़े से उस कमरे मे झांककर देखा।

कमरे मे तीन-चार आदमी हैं। पेरच्चन, पेरच्चन का इकलौता बेटा कुजाडी, ताडी-शाप के आँगन मे पेरच्चन से जबर्दस्ती करने के लिए आगे बढ़नेवाला पोर्टर गोपालन और कच्चा नारियल ले जानेवाला छोटा लडका। पेरच्चन बोतल मे ताडी को कच्चे नारियल मे भरता है। कजाडी उसे लेकर स्वयसेवक के नज़दीक जाने को तैयार हो जाता है। पोटर गोपालन ताडी पीकर सुध-बुध खोने के कारण एक कोने मे लेटा है।

बडे भाई कुजप्पु के कच्चे नारियल पीने के रहस्य से अवगत होने पर श्रीधरन हँसी नही रोक सका। कमरे के लोगो ने उसको नही देखा था। श्रीधरन धीरे से वहाँ से फाटक पारकर पगडडी पर आया। उसे बहुत हँसी आ रही थी। मालूम हुआ कि यह सब गोपालन और कुजप्पु का कुचक्र था।

कुजप्पु को ताडी से नहाने का कारण भी मालूम हुआ। कच्चे नारियल के छिलके से पी गयी ताडी की गन्ध पहचान म न आये इसीलिए ऐसा किया था।

पगडडी से सडक पर पहुँचने पर लोगो की दूसरी बात ने श्रीधरन को और भी हँसा दिया ताडी शाप पिकेटिंग करनेवाला कांग्रेसी स्वयसेवक चक्कर खाकर गिर पडा है। लोग उसे कांग्रेस-कार्यालय मे ले गये है।

'अलमिनार' के साहित्यकार गोपालन पिल्लै की श्रीधरन का मित्र अबूबक्कर बडी तारीफ करता था। गोपालन पिल्लै साहित्य-क्षेत्र के मुनिश्रेष्ठ है। मलयालम साहित्य के बारे मे इतना अधिक ज्ञान और किसी को नही है। अग्रेजी और सस्कृत का अगाध ज्ञान रखनेवाले बुजुर्ग है पिल्लै। लेकिन गोपालन पिल्लै से मिलनेवाले लोग कम है क्योकि पिल्लै 'अलमिनार' कार्यालय छोडकर कही बाहर नही निकलते।

अबूबक्कर के साथ श्रीधरन 'अलमिनार' कार्यालय भवन के दक्षिण कोने के एक कमरे म गया। दीवारो के शेल्फ मे कई मासिक और समाचार पत्रो की जिल्दे रखी थी। अलमारी भर पुस्तके थी। उनके बीच वह आदमी को तत्काल नही पहचान सका। कोई एक मेज के पीछे की कुर्सी पर लेटा था। छोटे कद का एक दुबला-पतला व्यक्ति। वह एक प्रेस मैटर की जाँच कर रहा था। वास्तव मे वह एक पुस्तक-कीट है।

अबूबक्कर ने श्रीधरन का परिचय कराया "एक युवा कवि। कहानियाँ भी लिखते हैं—नाम सी० श्रीधरन।"

गोपालन पिल्लै के चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नही हुई। केवल 'हाँ' कहा। (इस 'हाँ' का अर्थ होगा कि इस ढग के कितने युवा कवि और कथाकार इस देश मे मारे-मारे फिर रहे हैं।)

हाथ का कागज उठाते हुए गोपालन पिल्लै ने धीरे से मीठी आवाज़ मे गाया

"इनियुमेत्र समय कषियण
इननुदिक्कुवान— सत्य जयिक्कुवान···"

(अब भी बीतना है कितना समय सूरज के उदय होने को—सत्य की जीत होने को)

"कितना महत्त्वपूर्ण आशय है। कितना महत्त्वपूर्ण प्रतिपादन है। कविता इस ढग की होनी चाहिए। मैं इन पक्तियो मे कवित्व का यथार्थ बीज देखता हूँ।"

"यह किसकी कविता है" अबूबक्कर ने पूछा।

"यह 'अलमिनार' के साहित्य स्तभ के लिए मिली एक कविता है। इस युवा कवि का नाम पहले नही सुना था एम० मुहम्मद कुजि ।"

फिर असली कविता के लक्षण के बारे मे एक लबा लेक्चर सुनाया। लगा कि शेक्सपयर, भवभूति, वी० सी० बाल कृष्ण पणिक्कर, कीट्स, इटप्पल्लि राघवन पिल्लै और ड्राइडन आदि इस कमरे मे बैठकर गीत गाते है ''

एक घण्टा बीत गया। साहित्यकार गोपाल पिल्लै के कमरे से बाहर निकलते समय श्रीधरन ने अबूबक्कर मे कहा "मित्र, तुमने गोपाल पिल्लै के बारे मे जो बात कही, वह बिलकुल सही है। दस पुस्तकें पढने से जितनी जानकारी प्राप्त होती, उससे कही बढकर एक घण्टे मे ही मुझे हासिल हो गयी

17 केलचेरी का नाग

केलचेरी के कुजिक्केलु मेलान के विनोद, सजधज आदि बिना किसी नियन्त्रण के अधिक शक्ति और विविधता के साथ सम्पन्न होने लगे। हमेशा सुरा, सुन्दरी, दावत और शोर-शराबा!

मेलान की कामक्रीडा मे सुप्रसिद्ध थी 'मुँगेली का खेद्दा'—स्थानीय यूरोपियन बैक के लदन हेड आफिस से बैक की जाँच करने के लिए जो मार्क फेरसन साहब आया था उसका स्वागत करने के लिए ही इस कार्यक्रम की शुरुआत की थी।

मैसूर के खेद्दे (हाथियो को पकडना) के प्रबन्ध की तरह इस कार्यक्रम की तैयारी और प्रशिक्षण कई दिनो पहले से शुरू हो जाते थे। कुन्जिक्केलु मेलान के अगरक्षक लौहपुरुष पोक्कर और चौथे मुख्तार कुन्जाडी के तत्वावधान मे ही सब कुछ सपन्न हुआ था।

सह्याद्रि की तराई के अन्धकारमय जगल मे स्थित मुँगेली कोनाही इस तरह के खेद्दे के लिए चुना गयी थी। मुँगेली नदी की चट्टानो और जलाशयो से भरे एक कोने मे एक ऊँचे वृक्ष के ऊपर उसकी डालो के बीच घास का एक घर बनाया। वहाँ खाने-पीने और विदेशी शराबो का इन्तजाम किया गया। ये सब सामान बडी अलुमिनियम पेटियो मे बर्फ के अन्दर रखकर एक हाथी पर चढाकर यहाँ

पहुँचा दिये गये थे।

कुन्जिक्केलु मेलान मार्क फेरसन साहब को शिकार करने के लिए उस जगल मे ले गया था। प्राकृतिक सौन्दर्य से भरे जगल का कोना, नदी के किनारे के वृक्ष-शिखरो पर की घास की झोपडियाँ और उसके भीतर की सज-धज देखकर साहब चकित रह गये। शराब के साथ हँसी-मज़ाक करते हुए वे वहाँ ठहरे। दोपहर के भोजन के बाद फ्रूट सलाद खाते समय जगल से दहाड की एक आवाज सुनायी दी।

"यह शोर कैसा है?" साहब ने खौफ के साथ पूछा।

"जगली हाथियो को ले चलने की आवाज़ है।" कुन्जिक्केलु मेलान ने हँसते हुए कहा।

दस मिनट के बाद उस नदी-तट पर एक झुण्ड उतरा साहब ने गौर से देखा। उसे अपनी आँखो पर विश्वास नही हुआ। पूर्ण नग्न सात युवतियाँ। उनमे चार तो ग्रामीण थी गौर वर्ण की और तीन काली जगली। बालो और गरदन मे पहनी हुई मालाओ से जगली औरतो को आसानी से पहचाना जा सकता है।

चार ग्रामीण युवतियो के साथ तीन वन-कन्याओ को नदी तट पर छोडकर लौहपुरुष पोक्कर और उसकी चण्डाल चौकडी जगल मे अदृश्य हो गये।

काम के पागलपन से मार्क फेरसन साहब और उसके पीछे कुन्जिक्केलु मलान अक्ष के पेड से नीचे कूद पडे।

मोहल्ले की तरुणियो की सहायता से उन वन-कन्याओ को कब्जे मे करने का कार्यक्रम हुआ। मुँगेली नदी की चट्टानो पर, किनारे की घास पर—वृक्षो के नीचे—जगल के निकुजो मे ये काम-क्रीडाएँ शाम के धुँधलके तक लगातार चलती रही।

मुँगेली खेद्दा समाप्त कर मेलान और उसके साथी केलचेरी मे जब वापस आये तो आधी रात बीत गयी थी। साथियो ने कुन्जिक्केलु मेलान को कार से उठाकर बेडरूम मे ले जाकर शय्या पर पटक दिया था।

साथी बिछुड गये थे। लौहपुरुष पोक्कर ने केलचेरी मे ही सोने का निश्चय किया। मुर्गे की पंख-सी पगडी, शर्ट और बनियान उतारकर, जमीन पर घास की चटाई बिछाकर वह लेट गया। कन्धे का हरा बेल्ट और कुठार तकिये के नीचे रखे।

गरम रात थी। गरम वातावरण। हवा भी चलती नही। गर्मी से नीद हराम थी। पोक्कर को बेहद तकलीफ हुई। उसने कई बातो पर विचार किया। उन विचारो मे भी अस्वस्थता थी।

मुगेली का खेद्दा बहुत ही सफल निकला। कुजाडी मुख्तार ने ही इस योजना का आसूत्रण किया था। उससे ईर्ष्या हुई। एक दिन के इस कार्यक्रम मे तीन हजार रुपये खर्च हुए। केलचेरी का बचा हुआ एक टीला बेचकर जो रकम मिली थी मेलान ने इसके लिए उसकी आहुति की। इससे कुछ प्रयोजन भी सिद्ध हुआ होगा।

मार्क फेरसन साहब ने बैंक से ओवर ड्राफ्ट के तौर पर उसकी मर्जी के अनुसार रकम केलचेरी कुजिक्केलु मेलान को देन की सिफारिश की होगी।

दीवारो के पौधो मे से रजनीगन्धा की खुशबू आ रही थी। पोक्कर मुँगेली खेद्दा के पीछे की कुछ विचित्र घटनाएँ याद किये बिना नही रह सका। उनमे एक जगली इन्सान की तडप सबसे महत्त्वपूर्ण थी। उसने कई आदमियो को मार-पीट कर, गला घोटकर कुठार से मारा था। लेकिन सिर्फ एक दफा ठोकर मारकर एक इन्सान का कत्ल पहले-पहल ही वह कर सका था। मुँगेली खेद्दा के लिए जगली औरतो को पकडने गया था। जगल की एक झोपडी से एक लडकी को पुकारकर बाहर लाने पर उसके पिता को कुछ शक हो गया। वह जगली सडको से पीछे आया। जाने को कहा तो भी उसने उसकी न मानी। बेटी को छोडने का हठ करते हुए उसने उसका पीछा न छोडा। अगर उसको नही छोडता तो वह आक्रमण करता। ऐसी हालत मे पोक्कर ने उसकी नाभि पर जोर से लात मारी। वह गिर पडा। थोडी देर तक तडपा। फिर जीभ निकालकर प्राण छोड दिय। लडकी रोने लगी तो धमकी देकर कहा तेरा चुप रहना ही भला है। नही तो तेरा भी कत्ल हो जाएगा। फिर वह नही रोयी। उसके पिता की लाश खीचकर झुरमुट मे डाल दी। आज मियारो के लिए सुनहला दिन होगा। लडकी को लेकर मुगेली नदी तट पर घुसने के बाद उसे पहले-पहल महसूस हुआ कि उसन पाप किया है लेकिन इस बात से तसल्ली हुई कि उसने हत्या के उद्देश्य से ठोकर नही मारी थी।

इस प्रकार विचारो म लीन होकर रजनीगन्धा की खुशबू का आस्वाद कर पोक्कर सो गया। उसको पता नही लगा कितनी देर तक वह सोता रहा। लगा कि किसी ने कन्धे पर थपथपाकर जगा दिया है। आधी खुमारी के साथ हौले से आँखे खोली। लगा कि ठण्डी मुलायम कोई चीज कन्धे पर चिपकी पडी है। तिरछी आँखो से देखा। कन्धे पर दो रत्न जगमगा रहे थ। साँप—केलचेरी का नाग!

साँप ठण्डी चटाई से रेगकर उसके कन्धे पर चढ बैठा है।

कुठार तकिये के नीचे है जरा भी हिला तो सब कुछ घटित हो जायेगा

पोक्कर आँखे मूँदकर साँस रोककर लाश की तरह लेटा रहा।

दाये हाथ मे बधे यत्र को छूता हुआ नाग हौले से गरदन पर सरक गया। फिर धीरे स हटकर गरदन को लपेटकर बाये कन्धे की तरफ बढने लगा। पोक्कर सब कुछ व्यक्त रूप से जान लेता है। रोम-कूपो मे ठण्डापन है। शरीर की नसे साँप के रूप मे तबदील होकर कलेजे मे लिपट रही है

साँप कन्धे से मुडकर छाती पर आकर लेट गया। वह वही रुक जाता है। क्या वह छाती की रूक्ष गन्ध का पान कर रहा है? क्या घास की तरह रोम-भरी

छाती पर खड़े होकर फन फैलाकर नाचने जा रहा है ? पल-पल युग की तरह बीत रहे है।

जिन्दगी की बीती घटनाएँ एक फिल्म की तरह पोक्कर के मस्तिष्क के पर्दे पर दौड रही हैं। किसी ने कहा था कि मृत्यु के नजदीक के पलो मे मनुष्य के मस्तिष्क मे जिन्दगी की तस्वीरे झिलमिलाती हैं। क्या हृदय की धड़कन मौत के पल की सूचना दे रही है ?

नाग छाती से नीचे की तरफ गया। फिर पोक्कर की तोंद से लिपट गया। पार्श्व भाग से चटाई की तरफ सिर घुमाया तो सर्प का शरीर एक रस्सी की तरह पोक्कर के हाथो, छाती, पेट पर मृत्यु के रोमाच को जगाता हुआ रेंग रहा था। हे प्रभु, क्या इसका कोई अन्त नही है ? पल पुन युगो मे बदलने लगे

साँप की पूँछ पोक्कर की तोंद को सहलाती हुई चली गयी

पोक्कर आँखे बन्दकर लेटा रहा। उस एक तरह की अजीब शाति महसूस हुई। यादे धुँधली हो जाती है।

क्या मै मर गया ?

क्या अन्धकारमय गड्ढे मे कयामत के दिनो का इन्तजार कर लेटा हूँ ?

केलचेरी के मुर्गों ने जोर से बाँग दी। भूलोक के एक नये दिन की तुरही बजी।

पोक्कर मुडकर लेट गया।

सुबह को कन्धे पर दस्तावेजो का बडल लेकर शुप्पु पट्टर के जाते समय लौह-पुरुष फाटक के नजदीक के बरामदे मे लेटा सो रहा था।

"लाश—ताडी पीकर सो रहा है।" पट्टर ने मन मे गाली दी।

18 दो नाटक

एक दिन शाम को श्रीधरन ने म्युनिसिपल पब्लिक लाइब्रेरी से घर लौटने पर रेलवे यार्ड के पीछे से छतरी की छडी बालन की पुकार सुनी। मुडकर देखा।

"तुझें ही देखना है " बालन ने नजदीक आकर कुछ बड़प्पन से कहा।

"अरे, बालन क्या बात है ? सप्पर सफर सघ का नोटिस है क्या ?"

"सघ की तो अब तबाही ही हो गयी है न ? सघ का कार्यक्रम अब तुम्हारा बडा भाई कुन्जप्पु और ठेला गाडीवान पेरच्चन और कुली पोर्टर "

बालन ने अचानक कहना बन्द कर दिया। उसने आँखो से इशारा किया। रेलवे कुली पोर्टर काना गोपालन आ रहा था। वह अपने दोनो हाथो को उठाकर एक पहलवान की शान से आ रहा है।

गोपालन के चले जाने पर बालन ने कहा, "इन बातो के बारे मे फिर बता-

ऊँगा। क्या अर्जीनवीस आण्डि के नाटक के बारे मे तुमने कुछ जाना है ?"

"नही तो"

"तुम इन बातो को जाने बिना गीत और कविता लिखते हुए पुस्तक पढकर चुपचाप रहते हो। सार्वजनिक रूप मे तुम्हारे पिता का अपमान करने की साजिश को भी तुमने नही जाना ?"

"क्या ?"

श्रीधरन को बात समझ मे नही आयी।

बालन ने विस्तार से बताया।

अर्जीनवीस आण्डि ने पैसे इकट्ठा करने के लिए एक प्रीतिभोज करने का निश्चय किया है। उस दिन, रात को एक नाटक का अभिनय भी होगा। सामाजिक सगीत नाटक —नाम है 'अम्मालु परिणय'। नाटक और गीत केकडा गोविन्दन ने लिखे है। पणिक्कर के स्कूल मे रिहर्सल हो रही है। कल रात बालन रिहर्सल देखने गया था।

"अर्जीनवीस आण्डि और उसका साथी नाटक खेले। इसमे क्या नुकसान है ?" श्रीधरन ने निस्सग भाव से कहा।

"अच्छा खयाल है—तुम्हारे बाप का सार्वजनिक रूप मे अपमान करने की बात मजे के साथ तुम भी देखोगे, यही न ?"

जब छतरी की छडी ने नाटक का कथानक बताया तब श्रीधरन को उसकी गभीरता मालूम हुई। 'अम्मालु परिणय दाक्षिणात्यो की हँसी उडानेवाला एक नाटक है। (केकडा गोविन्दन और अर्जीनवीस आण्डि फिर दाक्षिणात्यो के गुट से अलग होकर दूसरे गुट मे शामिल हो गये है।) दाक्षिणात्यो का नेता—उसका नाम परमन था—अपनी दुलारी बेटी अम्मालु को पाँच हजार रुपये और एक ठेला भर नारियल के रेशो की चटाई दहेज मे देकर उस इलाके के मशहूर घराने मे जन्मे बुजुर्ग कणारन मास्टर से शादी कराने और शादी के बाद आनेवाली मुसीबतो और अनमेल विवाह से होनेवाली झझटो का वर्णन ही मुख्य कथ्य है। कन्निप्परपु के कृष्णन मास्टर की प्रतिमूर्ति के रूप मे ही अम्मालु परिणय के वर कण्णन मास्टर को नाटक मे चित्रित किया गया है।

"कण्णन मास्टर की भूमिका अदा करने वाले का नाम तुम्हे मालूम है ?"

"नही तो। कौन है ?"

"वह बेवकूफ बढ़ई माधवन।"

श्रीधरन को एकाएक भरोसा नही हुआ।

काठ के गोदाम का मालिक भास्करन ही आण्डि के नाटक का सरक्षक है। मालिक के कहने पर 'हाँ' कहने के सिवा बढ़ई को और कोई चारा नही था।

श्रीधरन ने नख काटते हुए बडी देर तक सोचा कि कैसे उसका सामना कर

सकते है ?

नाटक के अन्य पात्रो के बारे मे भी बालन न विस्तार से बताया। नायिका अम्मालु की भूमिका बड़ा गपिया किट्टुण्णि ही लेगा। कोरमीना के कोरप्पन ठेकेदार का लेखापाल फलगुनन परम की भूमिका लेगा। चौकीदार आण्डिक्कुट्टि और दर्जी समिक्कुट्टि, मूंछ कणारन आदि और अभिनेता भी होगे। इक्का गाडीवाले अवरानकोया की भूमिका मूंछ कणारन करेगा।

"तुम्हारे पिता कृष्णन मास्टर कितने भले आदमी है। उन सुयोग्य शिक्षक पर कालिख लगाने और लोगो को हँसाने की कोशिश करनेवाले केकडा गोविन्दन के सिर पर मल की बाल्टी उँडेलना ही उचित है। केकडा बिल '1 ही छिपकर रहता। वह बाहर नही आता। अर्जीनवीस आण्डि और उसकी अम्मालुक्कुट्टि को मै छोड़नेवाला थोडे ही हूँ। तुम देख लो।"

"बालन, तुम्हारी क्या योजना है ?"

"उस नाटक को मैं बदबूदार बनाऊँगा।"

उस बदबू की सूचना श्रीधरन को नही हुई।

श्रीधरन के कान मे बालन ने फुसफुसाया "सफेद चन्दु के छिलके के गड्ढे म मैने छह खराब अण्डो को गाड दिया है। जब अगले रविवार को अम्मालुक्कुट्टि रगमच पर आवेगी तब अर्जीनवीस आण्डि और उसके मैनेजर को मालूम होगा।"

"बालन, मै भी तुम्हारे साथ रहूँगा।" श्रीधरन ने जरा जोश के साथ कहा।

"खैर, एक अण्डा तुम भी फेक देना" छतरी की छडी ने सिर हिलाते हुए कहा। फिर कुछ मोच-विचार कर उसने अपनी राय बदल दी "नही, तुम वह काम न करो। तुम तमाशा देखकर ठट्ठा मारकर हँसना।" इस कार्यक्रम मे इस तरह की एक भूमिका मिलने से श्रीधरन को तसल्ली हुई।

"क्या 'काली बिल्ली' को नही बुलाया ?" श्रीधरन ने पूछा।

"काली बिल्ली' एक शादी मे भाग लेने कोयबतूर चला गया है। उसने कहा था कि रविवार से पहले वापस आएगा। उस्ताद से मिलकर यह समाचार बताया था। उस्ताद जरूर आएँगे।"

"ऐसी हालत मे तो यह सप्पर सफर सघ का ही एक कार्यक्रम है।"

"पर, वह सूअर बढई उस गुट मे है। जब वह कृष्णन मास्टर का वेश पहन कर आएगा "

"छतरी की छडी' इस बात पर विचार कर हँसता हुआ कुछ कहे बगैर अलग हो गया।

श्रीधरन अपने घर की तरफ चला। अगले सप्ताह के कार्यक्रम के बारे मे ही वह सोच रहा था।

'बेल' दामु क चले जाने के बाद सप्पर सफर सघ निर्जीव अवस्था मे पहुँच गया था। उस्ताद वासु को भी दिखाई नही देता। सुना है कि उस्ताद चेगरा मर्दों के बीच शादी करानेवाले मुस्लिम पचायत कराय का स्थायी सदस्य बन गया है। सप्पर सफर सघ का कार्यक्रम कुजप्पु-परच्चन-चात्तु-गोपालन कपनी ने अपने ऊपर ले लिया है। उनका अड्डा परच्चन का घर है। ताडी पीकर और ताश खेलकर वे रात काटते है। सप्पर सफर सघ के लिए अब एक डेरा भी नही है। मैकेनिक लक्ष्मणन की अपमृत्यु के बाद मोटी कुकुञ्चियम्मा को उसका भाई कणारन मिस्तरी मुक्कलश्शेरी मे ले गया। उस घर में अब एक सुनार नबी ही रहता है। सप्पर सफर सघ के पुनरुद्धार का अवसर मिलने पर श्रीधरन को खुशी हुई। बढई माधवन के सघ से अलग होने का जरा दुख भी हुआ।

यो इन्तजार की वह रात आ गयी।

रविवार की शाम का छह बजे से नौ बज तक ही पार्टी है। दस बजे से 'अम्मालु परिणय' नाटक का कार्यक्रम है। नाटक की टिकटे पहले ही बिक चुकी थी।

पणिक्कर के स्कूल के विशाल आँगन मे एक ओर बेचो से निर्मित रगमच के तीन हिस्से नारियल के पत्तो मे ढके है। कले के पत्तो और बदनवारो से रगमच सुन्दर ढग स सजा हुआ है। गोपियो के चीरहरण के चित्र का एक स्थायी पर्दा लटका हुआ है। (रेलवे फायरमैन और छुट्टियो म तस्वीर खीचनेवाले कुन्जिरामन न स्कूल की सरस्वती पूजा के कमरे के सामने लटकान के लिए ही इस पर्दे को बनाया था।)

नीचे पहली कतार मे दाहिनी ओर नाटक के सरक्षक भास्करन मालिक और अन्य आदरणीय अतिथियो के बैठने के लिए एक दर्जन कुर्सियाँ डाली गयी है। बायी तरफ चटाई बिछी जगह महिलाओ के लिए सुरक्षित है। पीछे कई बेचे है। बेचो के पीछे बाड तक आम दर्शको के लिए जगह निर्धारित की गयी थी।

ठीक दस बजे श्रीधरन उस जगह हाजिर हो गया। स्कूल का आँगन दर्शको मे खचाखच भरा था।

सामने बीच की सीट पर भास्करन मालिक आसीन है। उनके नजदीक एक अरबी है। भास्करन मालिक के विशेष निमन्त्रण से ही अरबी नाटक देखने आया है। (हृष्ट-पुष्ट वह अरबी सिर पर एक सफेद मस्लिन कपडा डाले चोटी पर एक छोटी-सी गाँठ रखकर हाथ मे मनका लिए बैठा है।) भास्करन मालिक की बायी तरफ चाप्पुण्णि अधिकारी का भतीजा रेलवे ठेकेदार कृष्णन कुट्टि बैठा है। कृष्णन कुट्टि के निकट शकुण्णि कम्पाउण्डर। फिर ताडी शाप का मालिक कुन्जय्यप्पन। विशिष्ट मेहमानो के पीछे की कुर्सियाँ खाली नही थी।

जगह न मिलने के कारण भीड दोनो तरफ जमा हो गयी।

श्रीधरन ने पार्श्व की भीड मे छिपकर सभासदो और सहयोगियो की तरफ

निगाह घुमायी। 'छतरी की छडी,' बालन और उस्ताद वहाँ दिखायी नही दिये।

आण्डि के सगीत के साथ ही कार्यक्रम की शुरुआत हुई। आण्डि हारमोनियम बजाकर गाने लगा। बाजा बजानेवाले और गीत गानेवाले दूसरे कलाकार भी थे। उनमे अधिकाश दूर से निमन्त्रण देकर बुलाये गये नये सगीतज्ञ थे।

अर्जीनवीस आण्डि ने पहले एक कीर्तन गाया

"शभो शिव शभो—
शकर महादेवा "

उस कीर्तन की परिसमाप्ति पर बाड के नजदीक खडे किसी ने चिल्लाकर 'वन्स मोर' कहा। (आण्डि ने अपने कुछ किकरो को 'वन्स मोर' पुकारने के लिए तैयार किया था।)

'शभो शिव शभो ' पुन दुहराया गया। ताली बजानेवालो मे भास्करन मालिक, अरबी और शकुण्णि कपाउण्डर भी है। ताडी शाप का मालिक कुन्जय्यप्पन ऊँघ रहा है।

आण्डि के कार्यक्रम के बाद एक मोटा-ताजा भागवतर आगे बैठ गया। उसने 'तन ना' गाया। चाँदी के गिलास से पानी पीकर 'पनि पनि पनि गाया' फिर एक कीर्तन भी—किसी ने कहते सुना कि वह त्यागराज कीर्तन है।

शायद भागवतर के कीर्तन सुनने का परिणाम होगा, रगमच के सामने बैठी औरतो की गोद मे लेटे बच्चो मे तीन-चार एक साथ गला फाडकर रोने लगे। उस समय पेण्टर रामन पीछे जगह न मिलने के कारण हिलता-डुलता प्रथम कतार मे बैठे भास्करन मालिक के सामने ज़मीन पर जाकर बैठ गया। शराबी रामन को वहाँ से उठाने की किसी ने कोशिश नही की। अगर कोई उसे छू लेता तो वह गाली-गलौज बकता।

तब बढई वेलायुधन मालुक्कुट्टि, चेरियम्मु आदि हरिजन औरतो को स्त्रियो की पक्ति मे बिठाया। दर्शक रगमच के नये गायक कोरुण्णी के गीत सुनकर भाव-विभोर हो गये। उन्होने तालियाँ बजाकर प्रोत्साहन दिया।

विशिष्ट मेहमानो की कुर्सियो पर उस समय दो व्यक्ति आसीन हुए।

श्रीधरन ने ध्यान मे देखा। उसका कलेजा अचानक अनजाने मे ही काँप उठा। वे दोनो उसकी प्रथम प्रेमिका के पिता और ट्यूशन मास्टर अष्टवक्रन उण्णिरि नायर थे।

एक घन्टे तक सगीत का आयोजन हुआ।

फिर पन्द्रह मिनट विश्राम के लिए दिये गये।

तमिल नाट्य-सघ के अनुसार ही कार्यक्रम की शुरुआत हुई थी। मुँह पर सफेद रग पोतकर, सिर पर कागज़ की टोपी पहनकर, लम्बा पेन्ट धारण कर दो लडके रगमच पर आये। (श्रीधरन को मालूम हुआ कि उनमे एक तो कुबडे वेलु

का पुत्र अप्पूट्टि है। दूसरे छोकरे का पता नही लगा।)

'बालको का पार्ट करनेवालो ने रगमच पर इधर-उधर चलते हुए 'मान्य सभासदो को प्रणाम,' नामक एक गीत गाया। आखिर सभासदो की वन्दना कर पीछे हटने पर सभासदो मे 'वन्स मोर' की पुकार गूंज उठी। लडके आगे बढ़कर फिर अभिनयगान और वन्दना करके पीछे हट गये।

लगातार तालियाँ बजाने की गडगडाहट गूंज उठी।

गोपिका चीर हरण का पर्दा नीचे गिराया गया। थोडी देर के बाद पर्दे के पीछे से सुनाई पडा।

"अमालु परिणय—सामाजिक सगीत नाटक—नाटककार यूलिप्परबिल गोविन्दन मास्टर "

(श्रीधरन मन म फुसफुसाया अर्थात् केकडा गोविन्दन।)

गीत श्रीमान मूलिप्परबिल गोविन्दन मास्टर

(केकडा फिर आ रहा है।)

फिर अभिनेताओ की लम्बी सूची सुनायी गई।

श्रीधरन ने उधर ध्यान दिया

"अम्मालु नेल्लिप्पुल्लि किट्टुण्णि (बडा गपिया)

"परमन चक्कर कटो फलगुवन।"

(अरे, बढई माधवन, तू जल्दी आ।)

तब श्रीधरन को किसी ने पीछे से नोचा। चेहरा घुमाकर देखा। बडी मूछ वाला। यह कौन है? अचानक उसे पहचाना नही। हँसते दाँतो को देखने पर मालूम हुआ छतरी की छडी, बालन! मूंछ और पगडी बाँधकर बालन वेश बदलकर खडा है। रगमच पर नही, दर्शको के बीच मे। उसके कपडे के आँचल मे खराब अण्डे है।

"क्या उस्ताद पहुँच गया है?"

बेंच की कतार के एक छोर पर बैठे बूढे की तरफ इशारा करके बालन ने कहा, "बन्दर की टोपी पहने उस आदमी को देखो।"

श्रीधरन ने उस तरफ निगाहे घुमायी। सिर और गाल को टोपी से ढककर, हाथ मे एक छडी टेककर झुककर बैठे 'बुजुर्ग' उस्ताद को देखने पर श्रीधरन हँसी नही रोक सका।

"काली बिल्ली कहाँ है?" कोयबतूर से अभी नही पहुँचा है।"

इतने मे बालन भीड मे ओझल हो गया।

नाटक की शुरुआत हुई।

प्रथम दृश्य परमन का इक्कावाला अबरान कोया (मूंछ कणारन) प्रवेश कर अपने मालिक और घोडे का यशोगान मुस्लिम जुबान मे करने लगता है।

मूँछ कणारन की बातें श्रीधरन को बडी पसन्द आयी।

भास्करन मालिक का अरबी मित्र घोडे की-सी आवाज मे हँस रहा था।

दूसरे दृश्य मे नायिका अम्मालु का वेश बहुत अच्छा लगा। धारीदार दुपट्टे मे ढकी एक काली औरत। टीलो पर खिले फूलो के समान कई आभूषण पहने थे। लेकिन नायिका के मुँह खोलते ही गलतियाँ होने लगी। किट्टुण्णि वार्तालाप को एकदम भूल गया था। रगमच के बाँये कोने मे छिपकर रहनेवाले प्रोम्प्टर की ओर देखकर अब क्या कहना है पूछकर किट्टुण्णि मुँह मोडकर देखने, नाक सिकोडने और प्रोम्प्टर के डायलॉग जोर से बताने का दृश्य सभासदो ने देखा। किट्टुण्णि की झझट देखकर लोग हँस पडे। उनके हाथ किट्टुण्णि भी हँसने लगा।

एक सन्दर्भ मे सुगधियम्माल (दर्जी सामिक्कुट्टि) के प्रश्नोत्तरो को याद किये बिना अम्मालु किट्टुण्णि के नाक मे उँगली रखकर गूँगे की तरह देर तक खडे होने पर रगमच के निदेशक वेलुक्कुट्टि गुमास्ता को बेहद दिक्कत हुई। आखिर उसे पर्दा नीचे गिराने का आदेश देना पडा।

किट्टुण्णि की बेवकूफी के विपरीत था परमन का पार्ट लने वाले फलगुणन का प्रदर्शन। स्क्रिप्ट मे लिखे और प्रोम्प्टर के कहे अनुसार उसके मुँह से बात नही निकलती थी, सन्दर्भ से कोसो दूर रहनेवाली खबरें और हास्य व्यग्य की बाते पर-मन फलगुनन बकने लगा। पर सभासदो म कुछ ऐसे लोग थे, जिन्हे उसको बकवास पसन्द आयी। उन्होने ताली बजाकर 'वन्स मोर' पुकारा।

इस प्रकार दृश्य एक-एक होकर गुजरने लगे। बीच-बीच मे अर्जीनवीस आण्डि के गानालाप और मूँछ कणारन का स्पेशल कामिक भी होता।

विशिष्ट मेहमानो मे चाप्पुण्णि अधिकारी का जामाता और ताडी शाप का मालिक कुन्जय्यपन उठकर चले गये। अरबी ऊँघने लगा। लहरो मे फँसी नाव के मस्तूल की तरह अरबी के मग्लिन कपडे का छोर कई भागो म हिलता-डुलता था। यह एक रोचक दृश्य उपस्थित करता। छठे दृश्य मे बुजुर्ग वर कण्णन मास्टर रग-मच पर आया।

श्रीधरन निर्निमेप आँखो से देखने लगा।

कण्णन मास्टर के रगमच मे आने पर श्रीधरन अनजाने म ही चौक उठा। क्या पिताजी एकाएक वहाँ आये है? छोटे कद का, सोने का रग, गले को ढकनेवाला कोट, टोपी, चश्मा—कृष्णन मास्टर का ही प्रतिबिम्ब है। मेकअप वाले दामोदरन मास्टर की अजीब करामात के फलस्वरूप ही इस प्रकार हुआ है। लेकिन उसके पीछे बढई माधवन और केकडा गोविन्दन की बदतमीजी है। इस पर विचार करते ही श्रीधरन गुस्से से दाँत कटकटाने लगा।

कण्णन मास्टर बाहर जाने की तैयारी मे खडा है। तब परमन के मुख्तार पकजाक्षन (चौकीदार आण्डिक्कुट्टि) ने प्रवेश किया। दोनो के बीच थोडी देर तक

बातचीत हुई। दृश्य यही था।

"हलो मिस्टर पकजाक्षन ! प्लीज़ टेक युअर सीट" कण्णन मास्टर ने अतिथि की अगवानी करके बिठा दिया।

बढ़ई का डायलॉग और अभिनय अच्छा था।

पकजाक्षन आण्डिकुट्टि ने अपनी दाक्षिणात्य शैली मे पूछा, "सर, किधर जा रहे है ?"

कण्णन मास्टर ने अपनी दाढी और ओठ को जरा सहलाते हुए ऊपर की तरफ देखकर कहा, "मार्टिन साहब के बगले पर ट्यूशन ."

एक गोलाकार सफेद चीज मास्टर की नाक की तरफ उडती दिखायी दी ·

चश्मा अलग हो गया।

बढई माधवन ने चेहरे पर हाथ रखा। आँखो को दिखाई नही देता। आँख और गाल से कोई द्रव नीचे बह रहा है। उसे धोकर सूँघा। नाक सिकोड ली।

पकजाक्षन आण्डिक्कुट्टि मुँह फुलाकर खडा रहा।

दर्शकों को मालूम नही हुआ कि क्या हुआ है। तभी श्रीधरन ठट्ठा मारकर हँस पडा—आठो दिशाओ मे गूँजनेवाली हँसी।

अकस्मात् एक और अण्डा हवा मे आगे बढा। वह पकजाक्षन आण्डिक्कुट्टि के सिर पर निशाना चूके बिना फूट गया।

अलहम युलिल्लाह—अरबी सिर पर हाथ रखकर उठ खडा हुआ—उसके साथ भास्करन मालिक भी।

लोग तितर-बितर होने लगे। वहाँ खामोशी छा गयी। असह्य बदबू।

"हाय ! हाय बचाओ "

किसी के गला काटने का-सा चीत्कार सुनाई पडा। उत्तर के कोने से ही सुनाई पडा।

(श्रीधरन को मालूम हुआ कि वह काली बिल्ली का ही चीत्कार है।)

औरते बदहवास होकर बच्चो को लेकर घूमने लगी। बच्चे ज़ोर से रोने लगे। क्या है, कौन है का अन्वेषण कर मर्द दौडने लगे।

'कुट्टायी'-'वासु'-'नारायणी'-'अम्मुक्कुट्टि-'चोयिक्कुट्टि' आदि पुकार कई दिशाओ से सुनाई पडी।

पाखाने की-सी बदबू चारो तरफ फैल गयी। लोग मुँह बन्द कर बाहर की तरफ दौडने लगे।

उस भीड के बीच से बूढा उस्ताद बेंच से उठ खडा हुआ। श्रीधरन ने देखा कि बूढे उस्ताद ने अचानक जलनेवाले पेट्रोमेक्स को लक्ष्य कर एक पत्थर मार दिया है। पेट्रोमेक्स तहस-नहस हो गया। फिर चारो ओर अँधेरा फैल गया

इस प्रकार अँधेरे मे—चीत्कारो मे—पाखाने की बदबू मे 'अम्मालु परिणय'

को खतम होना पडा ।

पणिक्कर के स्कूल मे 'अम्मालु परिणय' का अभिनय होते समय अतिराणि-प्पाट से एक मील दूर कुछ लोग और एक नाटक का अभिनय कर रहे थे। लेकिन यह किसी को मालूम नही था।

इस नाटक का डायरेक्टर एक्स-मिलिटरी—एक्स फिटर—एक्स कांग्रेस स्वय सेवक—कुजप्पु था। अभिनेताओ मे कुजप्पु के अलावा ठेला पेरच्चन, ट्रॉली चात्तु, रेलवे पोर्टर काना गोपालन, भारत माता टी शाप असिस्टेण्ट प्रसारणी अप्पु, पेरच्चन का पुत्र कुजाडी और कलाल नारायण थे।

दृश्य तण्डान केलु का घर का आँगन और बकरी का बाडा—पगडडी—पब्लिक रोड—पेरच्चन का घर—-रसोईघर।

शराबी तडान केलु जाति का महापडित है। उमने उस इलाके की प्रगतिशील और अपनी हँसी उडानेवाली नयी पीढी के खिलाफ अकेले लडने की घोषणा की है। इलाके मे त्योहारो के समय मण्डान को पहले की तरह पैसे नही मिलते। रजस्वला कर्म, कण्ठ मे मगलसूत्र बाँधना आदि पुरानी रस्मो का उल्लघन हो रहा है। मदिरो मे त्योहार नही होते। दाक्षिणात्यो के साथ प्रीति-भोजन के अलावा शादी भी होने लगी है। मण्डान केलु की शिकायते इस तरह थी। लेकिन वह किसे उलाहना दे? केलचेरी मे अब मुखतारो का शासन हो गया है। उन्हे तो तडान से सख्त नफरत है। खासकर चौथे मुखतार कुजाडी को। कुछ साल पहले केलु मेलान के जमाने मे एक अहाता तडान के परिवार के लिए दिया गया था। उस अहाते मे अब कुजाडी ने कब्जा कर लिया है। इस प्रकार ऊचे वर्ग के लोगो ने तडान की उपेक्षा की है। वह किससे फरियाद करता? इसलिए तडान केलु मिलनेवालो को गाली बकता है।

'चार पैरोवाला और आसमान देखनेवाला' कहकर उसने मास्टर की हँसी उडायी। कुजाडी को 'काल-कलूटा' पुकारा। उसने कन्निप्परपु के एक्स फिटर कुजपु को भी लुक-छिपकर एक दफा गाली दी। नारायणन को एक मर्तबा मारने-पीटने की कोशिश की।

पेरच्चन के घर मे रात को शराब पीने और ताश खेलने के लिए आनेवाले कुजप्पु, चात्तु और अप्पु ने मिलकर सोचा कि वे कैसे तडान को मजा चखा सकते है? तब पेरच्चन के बेटे कुजाडी ने सलाह दी कि तडान के चाप्पन की चोरी कर उसे खाना अच्छा है। चाप्पन तण्डान का एक मोटा-ताजा बकरा है।

उस इलाके का मुखिया होने के कारण उसको जो आमदनी मिलती थी वह तो एकदम बद हो गयी। अब उसकी आमदनी का एकमात्र आश्रय वह बकरा है। आसपास के इलाको मे उतना अच्छा बकरा न होने के कारण बकरियो को जोडा रखाने के लिए लोग तडान केलु के चाप्पन का ही मुँह ताकते थे। इस

उत्पादन प्रक्रिया मे तडान अधिक पारिश्रमिक वसूल करता। तडान को सबक सिखाने के लिए उस बकरे की चोरी कर उसे खाना चाहिए। योजना तो अच्छी है। पर, कैसे इस योजना को काम मे ला सकते हैं? वह बकरा खूंखार है। वह किसी पहलवान को भी पछाड सकता है। मालिक केलु और अज-सुन्दरियो से ही वह शात होकर बर्ताव करता। रात को शोरगुल बिना कौन उसे ले जा सकता है? पेरच्चन और चात्तु ने सदेह प्रकट किया।

"उसको मारना चाहिए, मारकर उसे ले जाना चाहिए।" कुजप्पु ने कहा। बकरे के मास के स्वाद की कल्पना करता कुजप्पु मूँछ मरोडता हुआ लार टपकाने लगा।

"कुजप्पु, यह बाये हाथ का खेल तो नही है।" पेरच्चन ने कहा, "तडान के घर से इस माल को कैसे इधर पहुँचा सकेंगे? सडक से लाना नही होगा? बीट पुलिस होगी। उनकी आँखो मे पड जाय तो ?"

ऐसा एक खतरा जरूर है। ट्रोलीचात्तु ने भी स्मरण कराया। चाप्पुण्णि अधिकारी की शिकायत के कारण पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब ने खास बीट पुलिस को सब जगह तैनात किया था।

मुसीबत ही है। फिर भी कुछ न कुछ रास्ता ढूंढ निकालना चाहिए।

बकरे के मास का स्वाद और तडान केलु से दुश्मनी सबके दिल मे कसमसा रही थी।

अचानक प्रसारणी अप्पु के मस्तिष्क मे एक तरकीब सूझ गयी। उसने सबको अपनी योजना से अवगत कराया।

सुनते ही कुजप्पु बकरे की आवाज मे हँस पडा। इस उपाय को बतानेवाले प्रसारणी को बकरे के लिंग को काटकर घी मे भूनकर इनाम दिया जाएगा, यह राय ट्रोली चात्तु ने जाहिर की। हमेशा शकाशील पेरच्चन ने अपनी ठुड्डी पर हाथ रखकर सोचा कि इस कार्यक्रम मे कही कोई खतरा तो नही है।

"चाहे जो भी हो—कल रात को तडान के चाप्पन का काम तमाम कर देना चाहिए।" कुजप्पु और चात्तु ने एक ही स्वर मे कहा। पेरच्चन ने भी 'हाँ' कहा।

इस कार्यक्रम मे सहयोग देने के लिए पोर्टर गोपालन और चाकू सहित कलाल नारायण को भी निमत्रण देने का निश्चय किया गया। पोर्टर गोपालन एक पहलवान है। चाप्पन से कुश्ती लडने के लिए इससे बेहतर आदमी इस इलाके मे नही मिलेगा।

अगले दिन रविवार समय आधी रात।

सभी तैयारियो के साथ कुजप्पु और उसके मित्र पेरच्चन के घर से तडान केलु के घर को रवाना हुए। रास्ते की सडक पर बीट पुलिस शक की निगाह से

देखेगी, इस वजह से दो-दो आदमी अलग होकर गये।

पहले पेरच्चन का पुत्र कुंजाडी और ट्रोली चात्तु गये। कुंजाडी के कन्धे पर एक चटाई और चटाई के भीतर रस्सी भी है। ट्रोली चात्तु के हाथ मे एक मिट्टी का बर्तन है।

उसके पीछे कुंजप्पु और पेरच्चन गये। कुंजप्पु के हाथ मे कागज़ की एक गाँठ है। कपडो से लदी नारियल के तेल से गीली चार मशालें भी हैं। पेरच्चन के हाथ मे एक थैली है। थैली मे एक पुराना कपडा है।

तीसरे बैच मे प्रसारणी अप्पु और कलाल नारायणन है। अप्पु के हाथ मे एक टार्च है। नारायणन ने चाकू अपनी कमीज़ के अन्दर छिपा रखा है।

आखिर पोर्टर गोपालन हाथ को जरा ऊपर उठाते हुए छाती फुलाकर एक पहलवान की तरह हौले-हौले चलने लगा।

ये लोग तडान के घर के सामने की पगडडी पर इकट्ठा हो गये। सीढियाँ चढकर कुंजप्पु ने आँगन मे झाँककर देखा। सब कही खामोशी है। उसने चढने का निर्देश दिया।

आँगन म बकरी की बदबू न उनका स्वागत किया। आँगन के दक्षिणी हिस्से म ही चाप्पन का बाडा है।

पकडने के लिए कुछ लोग आये है इसकी सूप लगने के कारण होगा कि चाप्पन मिमियाने, पैरो से मारन और इधर-उधर टहलने लगा।

"अरे बदमाश चुप रह" कुंजप्पु ने बकरे को गाली दी।

बोरे की थैली, रेशे की रस्सी और चाकू तैयार कर कुंजाडी, पेरच्चन और नारायणन सावधानी के साथ खडे रहे। प्रसारणी ने टार्च की रोशनी की। पहलवान गोपालन ने हाथो को दबाकर उसका पिंजडा खोल दिया। चाप्पन फुर्ती से अपने सीगो को घुमाकर झपट पडा। पेरच्चन बोरे को खोलकर खडा था। बकरे का मुँह उसमे फँस गया। फिर बोरे और सीग को ज़ोर से दबाया। पहलवान गोपालन ने चाप्पन की पीठ पर औंधे गिरकर धृतराष्ट्र की तरह उसका आलिंगन किया। कुंजप्पु ने रस्सी से चाप्पन के पैरो को बाँध दिया। कुंजाडी ने चाप्पन के गले मे तार लटका दिया। सब कुछ फुर्ती से सपन्न हुआ। चाप्पन साँस घुटने के कारण तडपने लगा। इस पराक्रम के बीच नारायणन ने नारियल के गुच्छे को काटने की तरह चाप्पन की गरदन म छुरी भोक दी। खून बहने लगा। ट्रोली चात्तु ने हाथो म मिट्टी की हाँडी पकडकर उसमे खून जमा किया

यो चाप्पन का कत्ल किया गया।

इस कर्म के बाद पहलवान गोपालन पसीने से भीग गया। बकरे का खून शरीर पर छिटक गया था। अपना शर्ट उतारकर बकरे को ढका। सब कुछ खतम होने के बाद पुरानी चटाई मे बकरे को लिटाकर रस्सी से तीन जगहो पर बाँधा।

कुजाडी और गोपालन सामने और नारायणन पेरच्चन पीछे खडे होकर शव को कन्धे पर ढोकर फाटक से उतरे।

पगडडी पर पहुँचते ही कुजप्पु ने मशालो को जला दिया।

बकरे के खून से भरी हाँडी एक हाथ मे और जलनेवाली मशाल दूसरे हाथ मे पकडकर ट्रॉली चात्तु और दाहिनी ओर तडान के आँगन से चुराया हुआ कुदाल पकडकर प्रसारणी अप्पु शव के सामने चले। शव को कन्धे पर ढोकर कुजाडी, गोपालन, पेरच्चन और नारायणन 'हरे राम हरे राम राम-राम' जोर से जपते आगे बढ रहे थे।

उस अज-विलाप यात्रा सघ के सडक से कुछ दूर जाने पर, सामने थोडी दूर पर दो रूप नजर पडे। वे दोनो बीट पुलिस वाले थे।

'हाल्ट' ! कुजप्पु ने साथियो को रोका।

"काला नाग और पुलिस एक समान हैं। वे जोडी होकर ही चलेगे।" अपने यारो से मजाक-भरे लहजे मे फुसफुसाते हुए कुजप्पु हडबडी से आगे बढा। उसने पुलिस के सामने जाकर विनम्र प्रार्थना की—"चेचक से मरे हुए एक आदमी को इधर से चटाई मे बाँधकर ले जा रहे है। आप लोग भयभीत न हो।"

यह सुनने पर पुलिस चौक उठी। उन्होने सिर्फ एक बार ही उधर देखा। फिर मुडकर दूर ताकते खडे हो गये।

सामने मशाल उठाए मरहूम व्यक्ति की उदक क्रिया के लिए इस्तेमाल मे आने वाली मिट्टी की हाँडी और लाश के गड्ढे को खोदने के कुदाल का प्रदर्शन कर 'राम-राम-राम' मत्र जप के साथ, शववाहक सघ चला गया।

उसी समय पणिक्कर के स्कूल के आँगन मे 'अम्मालु परिणय' मे कण्णन मास्टर का वेश प्रत्यक्ष हुआ और खराब अण्डो से उन्हे मार खानी पडी। इसी सदर्भ म श्रीधरन ठट्ठा मारकर हँस पडा।

19 अम्मुक्कुट्टि

श्रीधरन ने सितम्बर की परीक्षा मे बैठने के लिए फीस अदा की। अपनी यात्राएँ टाल दी। रात दिन बैठकर पाठ पढे। सहायता करने के लिए कोई न था। पुराना गणित विशारद मित्र 'चकवा' परीक्षा मे प्रथम श्रेणी मे पास हो गया और अब वह मगलपुरम मे बी० ए० म भर्ती हो गया है। घर से या बाहर से कोई कितनी ही बाते समझाये लेकिन परीक्षा हॉल मे प्रश्न-पत्र के सामने अकेले ही लडना होगा।

इम्तहान मे इस बार जरूर पास होने का आत्मविश्वास दिन-पर-दिन बढ़ने लगा।

लेकिन विधि ने पुन धोखा दिया।

परीक्षा शुरू होने के पाँच दिन पहले बुखार आ गया। उसने उसकी परवाह न की। समझा कि वह सरदी का बुखार होगा। काली मिर्च का काढा पीने लगा। ···पर, बुखार ने छूटने का नाम नही लिया। दूसरे दिन सुबह ही पिताजी पडोस के घर मे रहनेवाले म्युनिसिपल हस्पताल के डाक्टर रामदास को ले आये। डाक्टर ने जाँच करने के बाद मास्टर को गुप्त रूप मे बताया, "उस पर अधिक ध्यान देना होगा। मुझे शक है कि टाइफाइड है।"

बीमारी टाइफाइड मे बदल गयी।

परीक्षा के दिन श्रीधरन बिस्तर मे लेटा इधर-उधर की बकवास कर रहा था। तीन हफ्ते के बाद ही बीमारी से गला छूटा। फिर तबीयत को सुधारने के लिए पोषक आहार, टॉनिक आदि खरीद देने मे पिताजी न कजूसी नही की। चौदह दिन के बाद तबीयत पूरी सुधर गयी।

आगे क्या करना है ?

मार्च-परीक्षा मे बैठना चाहिए। (बैठना है या नही।)

पिताजी ने कुछ नही बताया। लेकिन किसी तरह इन्टर पास होकर बेटे को बी०ए० पढाने का मोह मास्टर के मन मे था।

घोडावाला घोडे को पानी के निकट ला ही सकता है। जल तो घोडे को ही पीना पडता है।

मार्च-परीक्षा के लिए दिसम्बर मे शुल्क अदा करना चाहिए।

दिसम्बर आने पर उस पर विचार किया जा सकता है।

दिनचर्या मे परिवर्तन किया।

शाम को म्युनिसिपल सार्वजनिक ग्रन्थालय मे अखबार और मासिक पढकर थोडा समय बिताता। तीन रुपये जमा करके ग्रन्थालय का सदस्य बना। उपन्यास और कथा-पुस्तको मे उननी रुचि नही थी। दर्शन और सचार साहित्य को चुनता। पाश्चात्य दार्शनिक ग्रन्थ पढने पर अधिकाश बाते मालूम नही हुई। लेकिन नये दृष्टिकोण का रास्ता खुल गया। ग्रन्थालय का सदस्य किताबो के साथ मासिक के पुराने अको को भी ले सकता है। "वाइड वर्ल्ड" मासिक के पुराने अको को नियमित रूप से लिया। अधकारमय अफ्रीका और लाल भारतीयो के मुल्क दक्षिण अमरीका की साहसिक यात्राओ की अनुभव-कथाए बडी तत्परता से पढी। रात को उन अद्भुत मुल्को का सपना देखा।

कुछ शामो मे म्युनिसिपल पार्क मे जा बैठता। पार्क कमेटी का सचिव एक जर्मन साहब था। वह म्युनिसिपल बाग को बर्लिन नगर के किसी खास पार्क के रूप मे बना देने की कोशिश कर रहा था। रग-बिरगे कुसुम, लता-कुज, रगो से पुते जाल, धारा की तरह इधर-उधर छलकने वाले क्रोटन पौधे, हरी घास आदि

की वह बडी कलात्मक रीति से देख रेख करता था। वह चमन आँखों के लिए एक त्योहार ही है।

पार्क के कोने मे बीच-बीच मे अलसेशियन कुत्ते के भौंकने की तरह एक हँसी सुन सकते हैं। वह 'अदालत का कवि' नाम से प्रसिद्ध पप्पु भैया का अट्टहास होता।

पद्मनाभन कचहरी का हेड गुमास्ता है। वह पडित, अविवाहित और हृष्ट-पुष्ट बुजुर्ग है। तोद के ऊपर एक धोती पहनकर, बेल्ट बांधकर, सफेद शर्ट और कोट पहनकर वह साहित्य चर्चा के लिए हमेशा पार्क मे आकर बैठता। पाँच छह श्रोता और उसके पिट्ठू चारो ओर खडे होते। पप्पु भैया सरस कवि भी है। वह साहित्य समीक्षक और कुमारनाशान का हिमायती भी है। वह वल्लत्तोल का विरोधी है। वह वल्लत्तोल कविता की खाल निकालकर दिखाता।

'साहित्यमजरी' के तीसरे भाग मे 'रावण का अन्त पुर गमन' कविता का एक श्लोकार्ध चट्टानो पर छिलका रगडने के स्वर मे जोर से गाता

"वीणा की तन्त्रियो को झकृत करती
सुकुमारी एक अपने कोमल कर से
सान के पत्थर से चन्दन
घिस रही है चलश्रोणी एक।"

"छि, 'चलश्रोणी' याद करते ही उलटी आती है। वह चलश्रोणी महिला गिनोरिया का शिकार होगी ''

सुनकर सभासद हँसकर सिर हिलाते। तब पप्पु भैया गाल फुलाकर आँखें मूँदकर चुप रहता। सभा की हँसी थम जाती तो 'हो हो हो' अट्टहास गूंज उठता। यो पप्पु भैया अलसेशियन कुत्ते के भौंकने की तरह अट्टहास करता।

चलश्रोणी के कपडे को उतारकर नगा करने के बाद 'सिर झुकाकर एक ओर बैठनेवाली सुन्दरी' नायिका को पकडकर ले जाता। महाकवि के आदेशानुसार सिर झुकाकर बैठने के लिए लाचार नायिका के कुछ सरकस खेलो का विनोद प्रदर्शन होता।

सभासद हँसने लगते।

वल्लत्तोल को उस दिन की चुटकी देने के बाद आखिर ठट्ठा मारकर हँसता। फिर वह अपनी जेब से एक नयी कविता या समीक्षात्मक लेख हौले से बाहर निकालता। गर्व से जोर से पढता। कविता का विषय अक्सर दार्शनिक होता। समीक्षा मे इधर-उधर जहरीले काँटे होते। एक बार एक समीक्षात्मक लेख मे कथकलि से सबधित एक विद्वान को 'हस्तप्रयोग विशारद मान्य' का विशेषण दिया था।

लता निकुजों की ओट मे बैठकर श्रीधरन सब कुछ सुनता। अदालत-कवि की

बातो मे कुछ न कुछ रोचक लगता। वल्लत्तोल को इस तरह नीचा दिखाने की आलोचना क्रूर है—श्रीधरन अपने मन मे कहता। क्या कुमारनाशान की कविता मे इस प्रकार की त्रुटियाँ और कमजोरियाँ नही है ?

"द्युतिमान शरीर जरा नग्न शीतातपादि को उसने किया बर्दाश्त।"

इस श्लोक मे 'शी' रसोईघर की सब्जी पर जले हुए तेल मे राई डालने की आवाज की तरह लगता। एक बार चकवा नारायणन नंबियार ने ऐसी राय प्रकट की थी। उसका स्मरण ताजा हो गया।

पप्पु भैया के उद्यान साहित्य की दावत पर माली पोक्कन मिस्तरी और एक ईसाई उपदेशक बिलकुल ध्यान नही देते। पोक्कन मिस्तरी दोनो पैरो मे वातरोग से पीड़ित एक बुजुर्ग है। मिस्तरी एक छिलके मे कुछ तेल लेकर पैरो मे उसे रगड़-कर पहरेदार के घर के बरामदे मे रोनी सूरत के साथ बैठना। उपदेशक तालाब के किनारे 'वाटर टैंक' के नीचे ध्यानमग्न हो बैठता।

कचहरी के दफ्तर के कमरे मे काम करने के बीच कभी-कभी पप्पु भैया आशु-कविता बनाकर अपने यारो को हँसाता। उसकी 'आडिटर कविता' मास्टर पीस है। एक बार दफ्तर मे आडिटर जाँच करने आया। अचानक पप्पु भैया ने हर एक मुंशी के पास जाकर अपनी आशु कविता कान मे फुसफुसायी।

"भादो महीने का कुत्ता और
आडिटर एक समान।
लाल-पेन्सिल को नुकीला कर
इधर उधर लगे करने पलायन।"

आसमान मे बादल देखता तो पप्पु भैया फिर बाहर नही निकलता। उन्हे ठण्डक और बारिश मे विरोध है। उस दिन पार्क की साहित्य सभा नही होती।

उस दिन की शाम बादलो से ढकी हुई थी। शका के साथ ही श्रीधरन ग्रन्थालय से पार्क की तरफ चला था। पार्क मे पहुँचने पर अनुमान के अनुसार पप्पु भैया का कोना सूना था। माली पोक्कन मिस्तरी पैर सहलाते ऊपर देखता बैठा है। (बारिश होने पर बाग को सीचने की क्या जरूरत ?) उपदेशी ईसाई हमेशा की तरह नि शब्द प्रार्थना मे सलग्न होकर वाटर टैंक के नीचे खड़ा है।

श्रीधरन ने घर मे वापस जाने का निश्चय किया। थोड़ी देर के बाद धूल उड़ाती प्रचड हवा बज उठी। बरसात होने लगी। बूंदाबांदी अचानक मूसलाधार वर्षा मे बदल गयी। नयी छतरी लेकर श्रीधरन हड़बड़ी से चला।

रेल के मैदान के पास पहुँचने पर बारिश कुछ थम गयी। तभी प्रचड हवा पश्चिमी दिशा मे बज उठी। रेल के मैदान के एक कोने मे पहुँचने पर पचास गज की दूरी पर एक युवती को देखा। उसके हाथ की छतरी और प्रचड हवा के बीच खींचातानी होने लगी। बायें हाथ से ढेर सारी पुस्तको को छाती से दबाए दाहिने

हाथ की छतरी को बचाने के लिए वह हवा से संघर्ष कर रही थी। वह दुबली-पतली सुकुमारी बायें-दायें और नीचे छतरी पकडती हुई हवा का सामना करने लगी। फिर भी हवा छोडती नही। अचानक छतरी उसके हाथ से खिसक गयी। 'बैलून' की तरह वह आसमान मे उडी। फिर हौले-हौले ज़मीन पर गिरी। हवा फिर उसे छीनकर ले गयी। छतरी औंधे मुँह एक कोने मे गिर पडी। वहाँ से वह फिर उड गयी। उडते-गिरते और फिर उडते हुए वह आखिर कोयले के ढेर पर औंधे मुँह गिर पडी।

श्रीधरन ने आगे बढकर छतरी ली। तार टूटी और कपडा लटकी छतरी गोली के शिकार चमगादड की तरह हो गयी थी।

नीली साडी के छोर से छाती की किताबो को ढककर बारिश से भीगती हुई वह सामने पहुँची। चाँदी के काँटो की तरह ही बारिश की बूँदो से उसकी आँखो और नथ के लाल नग की चमक श्रीधरन के कलेजे मे चुभ गयी।

प्रचण्ड हवा थम गयी। लगता है कि उसकी छतरी को तोडने के एक मात्र कार्यक्रम के साथ ही वह प्रचड हवा बज उठी थी।

छतरीवाली की तरफ निगाह घुमायी। उसने नीले खद्दर की साडी पहनी है। छाती पर ढेर सारी पुस्तको का बोझ है। नथ है, गले मे कोई आभूषण नही। हाथ मे चूडियाँ है और पैरो मे पायल भी। एक देहाती लडकी।

"इसे ले लो।" श्रीधरन ने धीमी आवाज़ मे कहा और अपनी नयी छतरी उसकी तरफ बढा दी।

वह झिझक के साथ खडी हो गयी। उसे ज़रा शक भी हुआ।

"छतरी कल लौटा देना।" श्रीधरन ने कहा।

उसने छतरी पकडकर श्रीधरन के चेहरे की तरफ देखा। फिर कुछ कहे बिना मुडकर चली गयी।

हवा और बारिश थम जाने पर भी आसमान बादलो से ढका हुआ था।

हाथ की छतरी की उत्सुकता से जाँच की। काजू के आम की आकृति मे उसकी सेल्युलायड की मूठ थी। (उस छतरी की नायिका का चेहरा भी काजू के आम जैसा है। आम के ऊपर का निशान भी उसके गालो मे है। रत्न की तरह उसकी आँखो की चमक और नथ का नग भी मन मे चुभ गये।)

छतरी के कपडे के छोर मे लाल धागे से के० ए० ये दो अक्षर कढ़े हुए थे। के० इनीशियल होगा। 'ए' अक्षर से शुरू होनेवाला नाम क्या होगा ?—आनन्द वल्ली—अबुजाक्षी—अम्मिणि' 'इस तरह के नामो का स्मरण किया। देहाती लडकी है। क्या अम्मालु होगी ?"

प्रशिक्षण स्कूल की छात्रा होगी। पुस्तको का ढेर देखने पर ऐसा लगा।

मोहल्ले के कोने मे एक दूकान है। उसके बरामदे मे छतरी की मरम्मत करने-

वाले एक बूढे मुसलमान के नजदीक पहुँचा। वह काना मुसलमान एक छाते को खोलकर उसे बन्दूक की तरह पकडे हुए उसके अन्दर की जाँच कर रहा था।

उस मुसलमान से श्रीधरन वर्षों पूर्व से परिचित था। उसका पूर्व-इतिहास श्रीधरन ने समझा था। दस-पन्द्रह वर्ष पूर्व वह अतिराणिप्पाट मे हमेशा आता था। कई तरह की छडियाँ, कील, हथौडा, स्पावर, तार, काला धागा, सुई आदि सामान एक छोटी-सी थैली मे भरकर अपने पेशे के चिह्न की तरह एक छतरी का कपडा थैली के ऊपर रखकर "पुरानी छतरी की मरम्मत—पुरानी छतरी " पुकारते हुए कन्निप्परपु के नजदीक की पगडडी से जाता।

दो-तीन साल बाद उसने निकाह किया। फिर दहेज की रकम से स्टेशनरी की एक दूकान खोली। चार-पाँच सालो के अन्दर व्यापार मे अच्छी बरकत हुई। चौराहे के निकट की उस दूकान मे सभी सामान भरे हुए थे। सडक से देखनेवालो के लिए यह एक अच्छा दृश्य था। साबुन, दर्पण, थाली, मिठाई की हँडिये, बाल्टी, हरिकेन लैप आदि ही नही क्रमप्टस प्लेट बटन से लेकर धागा तक—सभी सामान वहाँ मौजूद था।

उन दिनो श्रीधरन को एक बिगुल खरीदने की इच्छा हुई। मोहल्ले के कोने के काने की दूकान मे जाकर पता लगाया। मालिक ने स्वय उठकर दीवार पर लगी हुई कार्ड बोर्ड की पेटी से चार इच लम्बा चमकनेवाला एक लोहे का बिगुल निकालकर बजाया 'फई डग।' हलकी-सी गूंज के साथ बिगुल की आवाज सुनाई पडी। अचानक मुंह से बिगुल लेकर छिपाते हुए काने ने पूछा – उस पुलिसवाले को तुमने मुडते हुए देखा है क्या ? यह पुलिस का बिगुल है। पुलिस देखने पर पकड लेगी। काने मालिक ने जितना पैसा माँगा, उसे तुरन्त दे दिया। श्रीधरन ने उस पुलिस-बिगुल को ले लिया।

वह उसकी स्टेशनरी की दूकान का मोहल्ले मे विजय की बिगुल बजाने वाला जमाना था।

कई साल बीत गये। मालिक के अनावश्यक खर्च से या उसकी बदकिस्मती से व्यापार कम होने लगा। सामान भी कम होने लगा। शीशो की अलमारी खाली हो गयी। इस तरह वह दूकान एक दम खाली हो गयी। किराये के लिए मालिक ने उसे दूकान से निकाल दिया और कर्जदारो ने उसकी दूकान के सामान को जब्त कर लिया।

काना मालिक बिना हिचक के अपनी पुरानी छतरियो की धूल पोछकर मोहल्ले के दूसरे कोने की एक दूकान के बरामदे मे बैठकर अपना पुराना पेशा—छतरी की मरम्मत—करने लगा।

वह आज भी वही काम कर रहा है।

के० ए० की फटी छतरी को लेकर श्रीधरन उसी पुराने मालिक के यहाँ खडा

था।

"इस छतरी की जरा मरम्मत करनी है।" पसलियाँ लटकती छतरी को बढ़ाते हुए श्रीधरन ने कहा।

काने ने छतरी को बन्द कर जमीन पर रख दिया। फिर श्रीधरन के चेहरे को देखा।

(कई वर्षों पूर्व की पुलिस बिगुल की पुकार श्रीधरन के अन्तस् मे गूंज उठी।)

क्या उसने सडक या श्रीधरन की तरफ नजरे घुमायी थी ?

उसने छतरी लेकर उसकी जाँच की। हवा ने कपडे को उतारने के अलावा तीन-चार पसलियो को भी तोड डाला था।

"मरम्मत करके यही रखना। मैं कल ले जाऊँगा।

काने ने सिर हिलाया। उसने छतरी मोडकर वहाँ रखी। दीवार के तख्ते के ऊपर अन्य विकलागो के बीच उसे भी रख दिया।

अगले दिन श्रीधरन लाइब्रेरी के लिए कहकर आठ बजे कन्निप्परपु से रवाना हुआ।

सुहावनी सुबह थी।

मोहल्ले के कोने मे पहुँचने पर काने की दूकान खाली देखी। हे प्रभु, क्या उसने धोखा दिया है ? कुछ देर तक उसका इन्तजार किया। आधे घटे के बाद काना आता हुआ दिखाई दिया। सूखे पत्तो के बीच से काजू के आम की तरह की के० ए० की छतरी थैले मे मे झाँककर देख रही थी। तसल्ली हुई।

मरम्मत का पारिश्रमिक चार आना देकर छाता लिया और उसे दुलराते हुए जल्दी से रेलवे यार्ड की तरफ चल पडा। मैदान मे पहुँचकर कोयले के ढेर के पीछे इन्तजार किया।

दस मिनट बाद दूर से उसे आते हुए देखा। श्रीधरन की धडकन बढ गयी।

पिछले दिन की नीली साडी नही है। नारगी रग के बार्डर की खद्दर की साडी है। ब्लाउज नही बदला है। लाल नग जडी नथ और कर्णाभूषण धूप मे चमक रहे हैं। आम्रवृक्ष के कोपल जैसी उसकी त्वचा का रग कुछ अधिक गाढा होकर काजू के फल-सा बन गया है। माथे पर सिन्दूर की बिन्दी चमक रही है।

क्या उसके लाल ओठो मे मधु मुस्कान का सन्देश छिपा हुआ है ? नही—चेहरे पर प्रसन्नता है या उदासी है ? समझ नही सकता।

नजदीक पहुँचने पर के० ए० ने चारों तरफ का मुआइना किया। (और कोई भी नही है। मैदान के मध्य कोयले के किले के नीचे सिर्फ नायक और नायिका ही है।)

हाथ की छतरी को बढ़ाया।

श्रीधरन ने असमंजस मे अपना नया छाता उसके हाथ से ले लिया। काजूँ उसके हाथ मे दिया।

(लम्बी खूबसूरत उँगलियाँ—लाल काँच की चूडियाँ हाथ मे पहनी थी।)

"शुभ नाम ?" श्रीधरन ने शर्माते हुए पूछा।

"अम्मुक्कुट्टि।"

"क्या प्रशिक्षण छात्रा हो ?"

'हाँ।'

"कहाँ रहती हो ?"

कहने मे जरा सकोच हुआ। आखिर बताया।

"उनकी कोई रिश्तेदार हो ?"

"साली हूँ।"

अचानक श्रीधरन की आँखे आशकित हो गयी। पोर्टर केलप्पन और सफेद अय्यप्पन मैदान से इसी ओर आ रहे हैं।

अगर केलप्पन उन्हे देख ले तो ?

फिर कुछ कहे बिना हडबडी से आगे बढा। एक दफा मुडकर देखने का भी हौसला नही हुआ।

छतरी को खोलकर देखा। प्रतीक्षा थी—कृतज्ञता के लिए छोटा-सा कोई रुमाल उसके अन्दर रखा होगा। लेकिन उसके अन्दर कुछ भी नही था।

वह शुक्रिया का एक शब्द भी नही बोली थी।

शायद शुक्रिया अदा करने का सदर्भ न मिलने के कारण ऐसा हुआ होगा।

आगे भी इसी मैदान मे देखने और बातचीत करने का अवसर मिलेगा।

उस दिन शाम को सिर्फ आधा घटा ही उसने लाइब्रेरी मे खर्च किया। मन रेल के मैदान मे घूम रहा था। स्कूल से वापस आने पर अम्मुक्कुट्टि से मिलना चाहिए। सुबह की बातचीत को पूरा करना चाहिए। कुछ न कुछ हास्य-व्यग्य की बातें कहकर उसे हँसाना चाहिए। उस चेहरे पर थिरकती एक मुस्कान मे जो खूबसूरती है, उसे देखने को मन लालायित है।

(क्या हँसते समय उसके गालो मे गड्ढा हो जाता है ?)

पुस्तकालय से उतरने पर घने बादलो से वातावरण अधकारमय दिखाई पडा। पार्क मे जाने का कोई प्रयोजन नहीं है। अदालत के कवि पप्पु भैया की साहित्य सगोष्ठी होने की आज सभावना नहीं है।

पैर अनजाने मे ही रेल के मैदान की तरफ मुड गए।

समझ गया कि रेल कोलोनी के निकट की छोटी सडक से ही अम्मुक्कुट्टि स्कूल जाती है। दोनो दिशाओ मे फूलो से लदे कई पेड थे। लाल रग की मिट्टी की सड़क की तरफ मधुर प्रतीक्षा लेकर धीरे-धीरे चलने लगा।

पम्पिग मशीन से बँधे रेल के कुएँ के नजदीक पहुँचा। सतिवन वृक्ष देखने पर खौफ-सा महसूस हुआ। क्योकि कुएँ के नजदीक के सतिवन वृक्ष का अपना एक इतिहास है। लोग उसे "शैतान सतिवन" ही पुकारते है। रेल कोलोनी का निर्माण करते समय ऊँचे अफसरो के महलो के लिए उस कोने के दूसरे पेडो को काट डाला गया। उस सतिवन को ही यो रखा गया था। कहा जाता है कि उस सतिवन वृक्ष मे लकडहारे की कुल्हाडी की मार पडने पर उसमे से खून निकला था और लकड-हारा वही बेहोश होकर गिर पडा था। उस दिन, रात को कोलोनी-निर्माण का मुखिया खून की उल्टी कर चल बसा। फिर उस सतिवन मे कुल्हाडी मारने से मजदूरो ने मुँह मोड लिया। 'नेटिव्स का अधविश्वास है,' कहकर एक गोरे इजीनियर ने इस पेड को काट डालने का निश्चय किया। फिर कुल्हाडी मारी गयी। खून बहने लगा। इजीनियर की उस दिन खून की उल्टी से मृत्यु हो गयी। रेल के अधिकारियो को घबराहट हुई। फिर किसी को इसे काटने का साहस नही हुआ। सतिवन वही रह गया। सतिवन की डालो से पत्तियाँ गिरकर कुएँ के पानी के मलिन हो जाने पर भी उस शैतान पेड को वहाँ से काटकर अलग करने का आदेश आज तक किसी इजीनियर ने नही दिया।

एक बार एक नाग का, मुँह मे एक रत्न दबाये उस सतिवन वृक्ष पर उडकर पहुँचने का दृश्य उस्ताद वासु के स्वर्गीय रामन दादा ने देखा था।

शताब्दियो पहले लकडहारो ने सतिवन मे जो चोट की थी, उसका निशान दो नागो के फणो की तरह आज भी वहाँ मौजूद है। कुछ भक्त लोग मुर्गी का अण्डा, दूध, मालाएँ आदि लाकर उस नाग सतिवन के नीचे पूजा करते है।

तकिये के गिलाफ-सा निशानो से भरा एक फ्राक पहने सफेद बालो की एक एग्लो इण्डियन महिला उस रास्ते से चली गयी।

रेल के मैदान के कोने मे पहुँचने पर एक अजीब दृश्य दिखाई पडा। एक रेल गाडी का इजिन जमीन पर उलटा पडा था।

मैदान के कोने मे छ फुट की गहराई का एक बडा कुआँ और उसके पार्श्व मे कुछ मशीने दिखाई पडी। रेलगाडी का इन्जिन उठाकर ले जाने का सामान है। कुएँ के मध्य मे निर्मित रेल की पटरी मे इजिन रुक जाएगा। कुएँ के पास की मशीन घुमाने पर कुआँ हौले से पहिये की तरफ घूमता लगेगा फिर उसके साथ ही रेल की पटरी और इन्जिन मुडकर सीधे हो जाएँगे।

श्रीधरन उत्सुकता के साथ वह दृश्य देखने के लिए वहाँ खडा रहा।

लाल रग की साडी पहने एक कठपुतली-सी औरत ग्वालिन पोन्नमा नजदीक से चली गयी। काली और ऊँचे कद के ताड-सी पोन्नमा लाल साडी के आँचल से छाती और कधे को ढककर ऊखल की आकृति की एक बडी टोकरी को सिर पर लाल साडी के टुकडे से ढककर, कुछ सोचती हुई आगे बढ रही है। मिट्टी की हाँडी

मे दूध-दही भरा है। वह तेलुगु भाषी औरत रेल कोलोनी म दूध-दही बेचकर वापस आयी होगी।

मशीन का कुआँ घूम गया। उत्तर दिशा मे मुँह फैलाए इन्जिन दक्षिण की तरफ मुडकर रवाना हो गया। लोहे के दाँतो के बीच एक बार चीखने और तीन-चार मर्तबा खाँसने की आवाज़ आयी।

साठ गज़ की दूरी पर मैदान का वह रास्ता उस रेल को काटकर चला जाता है। कुएँ से जब इन्जिन बढा तो ग्वालिन पोन्नम्मा उस सधि मे पहुँच गयी। लेकिन वह रेल के उस पार न जाकर पटरियो के बीच से सीधे दक्षिण की तरफ चलने लगी।

ड्राइवर ने खतरे को समझकर ब्रेक डाला। इन्जिन जोक की तरह घिसट कर रुक गया।

श्रीधरन ने देखा कि इन्जिन के पीछे रेल की पटरी पर पोन्नम्मा तीन टुकडे होकर तडप रही है। टोकरी एक ओर उलट गयी है। मिट्टी की हाँडी टूक-टूक हो गयी है। दूध और दही खून की धारा की तरह बह रहे है

श्रीधरन ने अपनी आँखे फाडकर देखा और फिर झट आँखे बन्द कर ली।

लगा कि वहाँ खडे होने पर वह चक्कर खाकर गिर पडेगा। किसी तरह रेल को पारकर दूसरी तरफ के रास्ते पर आ पहुँचा। वह अर्ध बेहोशी की हालत मे ही कन्निप्परपु पहुँचा।

20 पोन्नम्मा

श्रीधरन घर के बरामदे की आरामकुर्सी पर थककर लेट गया।

आँखे वन्द करने और खोलने पर सामने वही भयकर दृश्य दिखाई पडता था —सिर मोडकर खिसक आनेवाला रेलगाडी का इन्जिन—रास्ता पार करने की सन्धि मे पहुँची पोन्नम्मा को 'देवी, इधर से इधर से—' का इशारा कर रेल की पटरियो मे चलनेवाले अदृश्य हाथ—खिसककर आगे बढनेवाले यन्त्र-राक्षस के दाँतो मे और फिर इस्पात के पहियो मे फँस कटकर, तडप तडप कर मरने वाली पोन्नम्मा ·मस्तिष्क के पर्दे पर एक मूक चलचित्र की तरह इन दृश्यो का प्रदर्शन होने लगा।

इस अपमृत्यु की तस्वीर से भी बढकर श्रीधरन के दार्शनिक विचारो को उद्दीप्त करनेवाली बात इस मृत्यु का शिकार ग्वालिन पोन्नम्मा का गत इतिहास है।

ग्वालिन पोन्नम्मा इस इलाके की मशहूर विलासिनी थी। ऊँचे कद की सुघड देह। अजन का-सा कालापन और सिंदूर की लालिमा से युक्त एक अजीब रग-

मिश्रण से उस तेलुगु-भाषी कोमलांगी की सृष्टि हुई थी। कमर की खूबसूरती, छाती के उभार की मादकता, अंगो के गठन का सौष्ठव देखने पर ऐसा लगता है कि वह अजंता की दीवारो से सजीव उठ आनेवाली एक नर्तकी है। उसका चलना नितंबो का तालात्मक तैरना है। उसके कटाक्ष प्रेम की तलवार की शस्त्र-शिक्षा है।

शरीर-सौष्ठव मे ही नही रति-क्रीडा की दक्षता मे भी वह अजेय थी।

"पोन्नम्मा दस औरतो की काम-लिप्सा रखती है" एक दफा किट्टन मुंशी ने पोन्नम्मा के बारे मे यह राय प्रकट की थी। पोन्नम्मा वेश्या न थी—पैसे के लिए वह सब की काम पिपासा की पूर्ति करने को तैयार न थी। प्रेम मे उसके अन्दर अहं भावना थी। अच्छे साहसी मर्दो को वह पसन्द करती। उसी प्रकार ऊँचे अफसरो और डाक्टरो के सामने अपनी शस्त्र-शिक्षा का प्रदशन करने के लिए भी तैयार थी।

यो दिन मे दूध, दही की बिक्री और रात को प्रेम के नाटक मे अपने नव यौवन का त्योहार मनाते समय ही उसे कला विशिष्टता दिखाने का अच्छा मौका मिला। चात्तु कम्पाउण्डर की वर्ष गाँठ के समारोह मे यह अपूर्व अवसर मिला था।

कुन्तय्यप्पन और चात्तु कपाउण्डर दो ऐसे आदमी है जो इलाके के लोगो को पानी वेचकर अमीर हो गये है। कुन्तय्यप्पन ताडी की दूकान चलाता है। चात्तु कपाउण्डर एलोपैथिक औषधियो की दूकान चलाता है। दोनो मित्र है और कंजूस-मक्खीचूस भी है। आकृति एव चरित्र मे दोनो मे काफी फर्क है। कुन्तय्यप्पन छोटे कद, सिमटी गर्दन एव छोटा-सा सिरवाला है। भेड-सा लगता है। वह पीला है। छाती और पीठ मे मास की गाँठें उभर आयी है।

चात्तु कपाउण्डर इसके विपरीत काली-कलूटी, दुबली और भूखो मरनेवाली एक बकरी-सा लगता है। वह शर्ट के ऊपर धोती पहनकर हमेशा विरेचन की औषधी पीनेवाले का चेहरा लिये अपनी फार्मेसी के काउण्टर के पीछे सुबह से लेकर रात तक छडी की तरह खडा रहता है।

चात्तु कपाउण्डर पेट-दर्द से पीडित है। इसके अलावा बवासीर से भी वह पीडित है। गुरुवायूरप्पन से कपाउण्डर यही प्रार्थना करता था कि भगवान की कृपा से ठीक तरह से विरेचन मिलने के बाद ही वह मर जाय। (कपाउण्डर हर महीने की अन्तिम तारीख मे गुरुवायूरप्पन के दर्शन करने अपनी हरे रग की शेवरलेट कार मे जाता और दो महीनो की मनौती-प्रार्थना एक सफर मे करने के बाद वह वापस आता।) वह ठोस चीजे नही खा सकता। उसकी गरदन मे कोई बीमारी है—लगता है कैन्सर हो गया है।

चात्तु कपाउण्डर सोलह वर्ष पहले अच्छी तबीयत और सुन्दरता-सम्पन्न कामलोलुप आदमी था। पैत्रिक सम्पत्ति का तीन-चौथाई भाग शराब पीने और औरतो

से रति-क्रीडा करने मे बिगाड दिया। फिर वह बीमारी का शिकार हो गया। कम्पाउण्डर के चरित्र और आकृति मे खास परिवर्तन होने लगा। उसने बाकी पैसो से एक कोकणी डाक्टर के पते पर अग्रेजी औषधालय खोला। उस औषधालय मे धीरे-धीरे बरक्कत होने लगी। उसी प्रकार कपाउण्डर के पेट की गडबडी, कजूसी, ईश्वर-भक्ति और पूजापाठ मे भी वृद्धि होने लगी।

साल मे एक-दो बार एक नस की बीमारी की तरह कपाउण्डर के मस्तिष्क मे पुरानी भोग-लिप्सा का स्मरण उभर आता। ऐसे अवसर पर वह अपने कुछ यारो को न्योता देकर उन्हे एक अच्छा प्रीतिभोज देता। कपाउण्डर अपने मित्रो को बडे मजे से भोजन करते समय वही बैठता। डिनर के साथ रति-क्रीडाओ का भी बदोबस्त होता।

चात्तु कपाउण्डर ने अपनी पचासवी वर्षगाँठ पर अति विचित्र दावत दी। लेकिन फिर इलाके-भर मे उसकी खूब चर्चा हुई।

उस रात को वर्षगाँठ की दावत मे कपाउण्डर ने कुल पन्द्रह आदमियो को निमन्त्रण दिया था—काठ के गोदाम के कालिक भास्करन के अलावा तीन मालिक, तीन डाक्टर (डाक्टर कोकणी भी उसमे शामिल है।) दो क्रिमिनल वकील, दो मेडिकल रिप्रजन्टेटिव, केलचेरी का चौथा मुख्तार कुजाडी, भास्करन मालिक का इक्केवान, हेड कान्स्टेबिल कुमारन, बैंक कैशियर अप्पुण्णि और ताडी शॉप का कुन्नयप्पन शामिल थे।

इनमे सिर्फ भास्करन मालिक ने प्रीतिभोज मे भाग नही लिया था।

फार्मेसी के विशाल मकान के एक कमरे मे ही दावत का आयोजन किया था।

खाने-पीने के बाद चौदह मेहमान दावत के दूसरे कार्यक्रम मे सक्रिय भाग लेने को तैयार हो गये।

तभी ग्वालिन पोन्नम्मा पर्दे के अन्दर से बाहर आयी।

चात्तु कपाउण्डर ने क्षमा माँगते हुए मेहमानो से फर्माया, "मान्य बन्धुओ, इस दावत मे 'भैस के मास' के अलावा कोई 'सामग्री' नही है।"

कम्पाउण्डर ने निश्चय किया था कि भोजन केले के पत्ते मे ही परोसना चाहिए। पन्द्रह केलो के पत्ते एक कोने मे रखे थे। फिर एक शय्या और पोन्नम्मा नाम की एक औरत भी।

बिस्तर पर केले का पत्ता बिछाया गया—'सामग्री' को उसमे लिटा दिया।

नाम के पहले अक्षर के क्रम मे एक-एक मेहमान को बुलाया गया।

कुन्नयप्पन को चौदहवाँ पत्ता ही मिला। काम-क्रीडा के बाद डेढ घटे तक नौका खेने की थकावट को चेहरे पर दिखाये बिना केले के पत्ते मे लेटी पोन्नम्मा ने ज़ोर से चिल्लाकर पूछा, "क्या और किसी के आने की सभावना है?"

पोन्नम्मा का सवाल बाहर होहल्ले मे सुनाई पड जाता था।

पोन्नम्मा बाहरी थी। अत वह अन्य बहरो की तरह जोर से ही बोलती।

भास्करन मालिक का पत्ता बाकी था। यह देखकर कुन्नन ने खुसुर-फुसुर की, पत्ते को यो बाकी रखना ठीक नही—मैं ही पुन एक बार तैयार हूँ।"

पोन्नम्मा तैयार थी।

इस ढग की अजीव औरत पोन्नम्मा सिर से अलग होकर केले के तने-सी जाँघो के कट जाने पर रेल की पटरियो मे छिन्न-भिन्न हो पडी है।

मिट्टी की हाँडी से बहनेवाल। दूध और दही रेल की पटरियो मे अब भी है।

रेल की पटरी का वह दृश्य एक प्रतीकात्मक तस्वीर की तरह श्रीधरन के मस्तिष्क मे चुभ गया। विचार और विकार उस तस्वीर मे रेंगकर खेलते हैं

"हाय ! हाय ! दौड आइए हाय ! हाय "

आराम कुर्सी मे लेटे श्रीधरन के कानो मे वह चीत्कार किसी सुदूर लोक से रेंगकर आयी। देश और काल का बोध नही हुआ। लगा कि धीरे-धीरे वह चीत्कार नजदीक से आ रही है। हौले से आँखे खोली समझ गया कि माँ नीचे के बरामदे मे रो रही है।

श्रीधरन कुर्सी से एकाएक उठ खडा हुआ। वह सीढियाँ उतरकर फुर्ती से पल भर मे बरामदे मे पहुँच गया।

गोपालन भैया के नजदीक आग और धुआँ—बिस्तर मे आग लगी थी। गोपालन भैया उठ नही सकता। वह जमीन पर हाथ-पाँव पटक रहा है। माँ घबराहट से ऊँची आवाज मे रो रही है'

अचानक कोने मे रखे हुए पीकदान पर निगाह पड गयी। भरा हुआ पीकदान उठाकर धुधाती शय्या पर डाल दिया। हलकी-सी आवाज के साथ आग बुझ गयी।

गोपालन भैया आँखें मूँदकर फफक-फफक कर रोया। माँ ने बिस्तर के नीचे से एक नारियल का छिलका बाहर निकाला। गोपालन भैया को जोर से खरी-खोटी सुनाते हुए माँ ने छिलका और लकडी का कोयला दूर आँगन मे फेंक दिये। फिर गोपालन भैया के तकिये के नीचे रखी चार-पाँच बीडियाँ भी उठा ली।

गोपालन भैया फूट-फूटकर रोया।

बिस्तर के जले कपडे और उस पर डाले पीकदान से हवा मे बदबू छा गयी। उधर देख न सका। स्मरण किया कि पीकदान के मल और जल ने ही गोपालन भैया को अग्नि-बाधा और मृत्यु से बचा लिया था।

चीत्कार सुनकर पडोस के लोग दौडे आ रहे थे।

गलती करनेवाले बालक के माफी माँगने के लहजे में गोपालन भैया ने रोते हुए कहा, "मौसी, यह बात किसी से न कहिये।"

गोपालन भैया ने अगारो को शय्या के नीचे रख दिया था। यही उसका अप-

राध था।

गोपालन भैया की बीमारी दयनीय अवस्था मे पहुँच गयी है। धीरे-धीरे गोपालन भैया को भी मालूम हुआ कि इलाज करने से कोई लाभ नही होगा। अन्त मे पाणन कणारन से एक होम कराया गया।

शरीर का अधिकाँश भाग सूख गया था। मस्तिष्क की नसो मे कभी-कभी माया-प्रतिभास होने लगता। रोम-कूप से ग्रथिक का आना बन्द हो गया था। उसके बदले मस्तिष्क और कर्णरन्ध्रो से कुछ जन्तु बाहर आने लगे।—मकडी, बिच्छू आदि विष जन्तु। एक बार गोपालन भैया कान के द्वार से रिस आनेवाली किसी वस्तु को गिराकर उसे नफरत और खौफ से ताक रहा था तभी श्रीधरन ने पूछा, "गोपालन भैया आप क्या देख रहे हैं ?"

"एक बडा मकडा !" गोपालन भैया ने आँखे फाडकर इशारा करते हुए कहा, "वह खोपडी से उतरकर कान मे बाहर झड पडा है।"

"गोपालन भैया के रोग का उपाय यह मकडा होगा। वह तो अब निकल गया है न ? अब जल्दी स्वस्थ हो जाएंगे " श्रीधरन ने उसे तसल्ली देने की चेष्टा की। "अरे, आदमी की हँसी उडा रहा है ? फौरन उधर से हट जा।" गोपालन भैया ने नाराजी जाहिर करते हुए कहा। (इतने मे मस्तिष्क मे पूर्व-बोध लौट आया।)

इस ढग की मानसिक विभ्राति कुछ पल के लिए ही रहती। फिर सारी बातो की याद ताजा हो जाती। उस समय अपनी दुरवस्था पर विचार कर शून्य मे आँखें फाडकर देख रहे गोपालन भैया को देखने पर श्रीधरन की आँखें भर आती। बेचारा ! कैसी जिन्दगी है !

गोपालन भैया बीडी पीने का आदी था। जब से वह बीमार पडा तब से पिता को दिखाए बगैर ही बीडी पीता था। आगे चलकर पिताजी के घर रहते समय भी बीडी पीने लगा। पीठ फेरकर लेटते हुए छिपाकर पीने लगता। पिताजी नही देखने का बहाना करते।

फिर गोपालन भैया हर मिनट बीडी पीने का व्यसनी हो गया। जब डाक्टरो और हकीमो ने ताकीद दी कि बीडी पीने से मस्तिष्क और अधिक खराब होगा तब बाबूजी ने बीडी पीने से मना किया। गोपालन भैया ने उनकी नही सुनी। बीडी भैया को जागरण और उन्मेष देनेवाली मित्र थी। उसे उसने छोडना नही चाहा। पिताजी ने उस पर नियत्रण रखने की सलाह दी। दिन मे छह बीडियाँ देने लगे। आहिस्ता-आहिस्ता कम करते-करते बीडी पीना एकदम छोड देना होगा।

गोपालन भैया ने मजूरी दे दी। लेकिन वह इसे अमल मे न ला सका। गोपालन भैया ने एक दिन पच्चीस बीडियो का एक बण्डल फूंक दिया।

तब पिताजी ने कहा कि गोपालन के पास बीडी नही रखनी चाहिए। बीड़ी

ठीक समय पर देने का कार्य माँ को सौंप दिया।

गोपालन भैया और अधिक बीडियो के लिए मौसी से मिन्नत-प्रार्थना करता। कभी-कभी एक छोटे बच्चे के समान रोता। तब श्रीधरन की माँ का दिल पसीजता, वह एक बीडी दे देती।

पिताजी ने एक दिन आँगन की बीडियो के टुकडो को गिन लिया। बारह टुकडे थे।

माचिस नही है तो कैसे बीडी पी ? माचिस देने मे रोक लगा दी। ठीक समय पर रसोई से अगार देना है। माँ को चेतावनी दी गयी कि छह दफा से अधिक अगारा नही देना चाहिए।

गोपालन भैया झझट मे फँस गया। हाथ मे तो हिसाब से अधिक बीडियाँ है। उन्हे जलाने की कोई सुविधा नही है। पिताजी के आदेश का उल्लघन करने का हौसला मा मे नही था। "गोपालन, तुम अपनी बीमारी से शीघ्र स्वस्थ हो जाओगे। फिर इच्छानुसार बीडी पी सकते हो।" मौसी ने वात्सल्य के साथ सलाह दी।

इस तरह एक दिन अगारो को बाहर फेंके बिना गोपालन ने उसे छिपाकर रखने का निश्चय किया। उसने शैय्या के नीचे ही उसे छिपा रखा। धूम्रपान के बाद एक खुमारी के साथ आँखे मूंद ली।

माँ ने किसी जरूरत के लिए बरामदे म आने पर गोपालन भैया के बिस्तर से आग और धुआँ उभरते देखा। घबराहट से किकर्तव्यविमूढ होकर जोर से चिल्लाने पर ही गोपालन भैया खुमारी से जाग गया था। उस समय श्रीधरन भी घर के बरामदे मे पोन्नम्मा की घटना पर विचार करते-करते नीद मे मग्न था।

21 काला और गोरा

अतिराणिप्पाट की अम्मालु गोरे रग की खूबसूरत प्रौढा है। अम्मालु की बूढी माँ कुंजिक्कालि भी कुछ अर्सा पहले एक प्रादेशिक मेनका थी। उनका परिवार परम्परा से ही बदनाम था। (कुंजिक्कालि लम्बे अर्से तक सुनार की रखैल थी।) चर्चा भी थी कि अम्मालु का भी एक पति है। अम्मालु समुद्र-तट पर गोरो की कपनी मे काम करने के लिए जाती। नारियल के तेल से भरे बालो को गरदन के पीछे बाँध कर, आँखो मे काजल लगाकर, माथे पर सिंदूर की बिन्दी लगाकर कन्धे पर एक टोकरी रख हाथी की तरह झूम-झूम कर चलनेवाली अम्मालु को कोई भी एक बार अवश्य मुडकर देखता। कपनी का गोरा साहब अम्मालु को देखने पर उस पर मोहित हो गया। इसके फलस्वरूप अम्मालु के एक सतान हो गयी। पीली आँखें, ताँबे के रग के बाल और नवजात चूहे के बच्चे का सा रग। अम्मालु के पाँव जमीन पर न पडते थे। उसे गर्व हुआ कि अपना पति एक गोरा

साहब है। इसका एक अच्छा प्रमाण पत्र—सतान भी उसको हासिल हो गयी है।

मुन्नी को उसने मीनाक्षी के नाम से पुकारा। मीनाक्षी के बडे होने पर पुरानी कठपुतली के रग और वेश मे कुछ परिवर्तन होने लगा।

जब मीनाक्षी चौदह वर्ष की हुई, तब से वह अतिराणिप्पाट की अभिनव मेनका के पद पर विराजमान रही।

उस दिन तडके पगडडी पर मीनाक्षी को देखने पर उस्ताद वासु अकस्मात् एक पुराना गीत गाने की साध का रोक न सका। उस्ताद ने कुजाडी के कन्धे पर हाथ रखकर ज़ोर से गाया—

"माँ के लिए सोने का 'काप्पु'[1]—बेटी को स्वर्ण चूडी
बेटी की बिटिया को एक काँच चूडी।
माँ को नथुनियाँ—बिटिया को बालियाँ
बेटी की बिटिया को छोटी-सी बालियाँ।
माँ के पठान है—बेटी के साहब
बेटी की बिटिया के गोरा है साहब।"

कुजाडी ने गीत के ताल मे सीटी बजायी। अचानक उस्ताद को लगा कि गीत के साथ एक नाच की भी ज़रूरत है। रेलवे क्लब के साहब और साहिबा की तरह आपस मे कमर पकडते हुए हौले-हौले कदम रखकर हिल-डुल दोनो नाचने लगे

उस मुहूर्त मे ही एक हाथ मे पुस्तको का ढेर और दूसरे मे एक छतरी लेकर कुमारी नलिनी उस कोने मे पहुँच गयी। उसने गीत और सीटी सुनी। रास्ता रोकर नाचनेवाले नौजवानो को भी देखा।

नलिनी इस तरह चलती थी मानो रास्ते की सभी युवा आँखें उसकी ओर तीर चला रही है। वासु और कुजाडी को देखकर वह सकपकाकर खडी रही। फिर चेहरा फुलाते हुए मुडकर घर की ओर वह वापस चली गयी।

बडी बहन का पति भास्करन मालिक अपने गोदाम मे जाने की तैयारी मे था। नलिनी को स्कूल म गये बिना रोते हुए वापस आते देखकर भास्करन मालिक ने पूछा "अरे, नलिनी तुम स्कूल नही गयी ?"

"मैं इस पगडडी से अकेली नही जाऊँगी।" नलिनी फफक-फफक कर रोने लगी।

"क्या तूने कुछ देख लिया ?"

"दो नटखट छोकरो ने गीत गाते हुए सीटी बजाकर मुझे रोक लिया। मैं · मैं (गद्गद् कठ से वह अपना वाक्य पूरा नही कर सकी।)

---

1 एक तरह की चूडी

"ये छोकरे थे कौन ? तुम्हे मालूम हुआ ?"

"मुझे नही मालूम।" (नलिनी झूठ बोली। वह वासु को जानती है—फर्नीचर शाप मे बढ़ई माधवन से मिलने जो कुंजाडी आता था, उससे भी वह वाकिफ है।)

भास्करन मालिक ने अपने फर्नीचर शाप से बढई माधवन को पुकारकर कहा, "माधवन तू फौरन दौडकर आ। ज़रा देख तो कि ये बदतमीज कौन थे।"

रुखानी को नीचे डालकर बढई माधवन पगडडी की तरफ दौड गया।

नाच-गान बन्द कर उस्ताद और कुंजाडी कुछ भेद भरी बातें करते हुए आगे बढ रहे थे। उस्ताद के साथ कुंजाडी को देखकर बढई ज़रा सकपकाया—(भास्करन मालिक के फर्नीचर वर्कशाप से माधवन जिन चीजो की चोरी करता था उन्हे बेचकर नकद पैसा उसे कुंजाडी ही देता था।)

बढई ने वापस आकर मालिक से कहा, "दोनो को मै समझ गया। पोक्कू हाजी का लेखाकार वासु—फिर सेठ के कोलबिया वर्क्स मे काम करनेवाला बालन भी उस दिन हमारे नाटक मे गडबडी पैदा करनेवाला वही यार—"

भास्करन ने दाँत चबाते हुए अपनी नाराजी प्रकट की।

नलिनी उस दिन इक्कागाडी मे ही स्कूल गयी। (फिर वह हमेशा इक्का-गाडी मे ही स्कूल जाने लगी।)

उस दिन शाम को भास्करन मालिक एक आदमी भेजकर हेड कान्स्टेबिल कुमारन को अपने यहाँ बुलाया। फिर उसने उसे सुबह की घटनाओ को सुनाया।

"उन दुष्टो को मजा चखाऊँगा" कुमारन हेड ने अपनी मूँछ मरोडते हुए कहा।

शहर से कुछ दूर स्थित एक स्टेशन पर कुमारन हेड की ड्यूटी है। इस मुकदमे का अधिकार क्षेत्र कस्बे मे है। कस्बे का हेडकान्स्टेबिल पोक्कन कुमारन हेड का एक पुराना साथी है। भास्करन मालिक ने कस्बे के सर्किल इन्स्पेक्टर के नाम एक शिकायती पत्र लिखाया। उसके बाद कुमारन हेड सीधे कस्बा स्टेशन चला गया।

'छनरी की छडी' बालन की कपनी मे नाइट ड्यूटी थी। रात को अपना काम कर अगले दिन सुबह घर पहुँचने पर दरवाज़े पर एक लाल टोपी उसका इतजार कर रही थी।

"करप्पन का बेटा बालन तू ही है क्या ?" पुलिस कान्स्टेबिल ने पूछा।

बालन ने 'हाँ' के अर्थ मे सिर हिलाया। "जी, क्या बात है ?"

"दरोगा साब ने तुझे स्टेशन पर बुलाया है। मेरे साथ आ—"

बालन को घबराहट हुई। नीद हराम होने से थकावट थी। सुबह को कुछ भी खाया नही था। नहाने के बाद भारत माता से एक 'घोडा बिरियाणी' खाकर दोपहर तक सोने का विचार करके ही वह घर वापस आया था।

शक के साथ खडे बालन का हाथ पुलिसवाले ने पकड लिया। "अरे, तू जल्दी आ।"

फिर पुलिस से कुछ पूछने का हौसला नही हुआ। उसके साथ वह कस्बा पुलिस-स्टेशन चला गया।

एक घटे के बाद ही पुलिस स्टेशन से बालन को छोड दिया गया।

'लॉक अप' मे दो पुलिसवालो ने उसे बेरहमी से मारा-पीटा। वहाँ से गला छूटने पर नाले के पास पेशाब करने बैठा तो खून का ही पेशाब किया। कई दफा पुलिस ने लाठी से उसकी नाभि मे पिटाई की थी। उसे पहले नही मालूम हुआ कि क्यो पुलिस उस पर जबर्दस्ती कर रही है? उसने अदाज लगाया कि अर्जी-नवीस आण्डि के नाटक मे गडबडी करने से ही आण्डि के अभिभावक भास्करन मालिक ने पुलिस को रिश्वत देकर मुझ पर ज्यादती करायी है। "अरे, स्कूल मे जानेवाली अच्छे घरो की लडकियो को देखकर अब कभी अपनी कमर घुमा-फिराकर दिखाएगा?" यो पूछकर ही पुलिस ने उसकी नाभि पर लाठी से बार-बार मारा-पीटा था।

वह सपने मे भी यह बात नही जानता था। लाठी से छाती मे भी मारा-पीटा।

बाहर से किसी को भी यह दिखाई नही पडेगा कि उसको भारी चोट लगी थी। इन लोगो ने उसकी छाती और नाभि की ऐसी दुर्दशा की थी। इन राक्षसो ने मुँह मे कपडा ठूँसकर ही ऐसी नृशस हरकतें की थी।

बालन घर लौट आया। उसका बाप आराकश करप्पन मैसूर के जगल मे काम करने गया था। वह ज्वर का शिकार होकर वापस आया है। वह कमरे के एक छोर मे लेटकर काँपने और बुदबुदाने लगा।

बालन पलग पर लेटकर खाँसने लगा। मुँह मे खून का स्वाद महसूस हुआ।

यो 'बालन नामक बदमाश' को पुलिस ने पकडकर 'पक्चर' बनाकर छोड दिया। लेकिन पहले अभियुक्त पोक्कु हाजी के लेखापाल वासु को पुलिस नही पकड सकी। उस्ताद वासु इस इलाके को छोडकर कही दूर चला गया था।

उस्ताद के लुक-छिपकर फरार होने का कारण दरअसल कुमारी नलिनी के परिहास का मुकदमा नही था। उस समय उसके खिलाफ ऐसा कोई अभियान न था।

अरबी का पैसा हडप लेने के बाद ही उस्ताद वासु गायब हो गया था।

वासु का मालिक पोक्कु हाजी पश्चिम समुद्र के उस पार के कुवैत, सोमाली आदि मुल्को से मलबार तट के व्यापार के लिए आनेवाले अरबियो से निकट सबध रखनेवाले काठ के गोदाम का मालिक है।

खजूर, हीग, सुगधित गोद आदि चीजो, टोकरियो आदि को जहाज मे लादकर

अरबी मलबार के तट पर उतरते। उसके बदले वे इधर से सागवान, शीशम लकडी, लकडी की चीजे, काली मिर्च, चन्दन, चाय, बीडी, सिगार आदि खरीद-कर ले जाते। इसके साथ वे अरबी सोने की तस्करी का बदोबस्त भी करते। खजूरो की बडी गाँठो के अदर अशर्फियो को छिपाकर रखते। कस्टम्स अधिकारियों की आँखो मे धूल झोककर और कुछ सदर्भों मे नौकरो को रिश्वत देकर किनारो पर पहुँचायी जानेवाली ये अशर्फियाँ पोक्कु हाजी जैसे एजेंट गुप्त रूप मे बेचकर रुपया अरबियो को सौपते। इस काले धन को चोरी-छिपे ले जाने मे भी वे कई तरकीबो का प्रयोग करते थे।

गले से पैरो तले तक लटकने वाली कमीज और मुंडे हुए सिर पर टोपी पहनकर चलनेवाले अरबियो को बचपन से ही श्रीधरन खौफ के साथ देखता था। उसे अरबी की दास्तानो के काले भूत समुद्र से चढ आने की प्रतीति होती। वे अकेले या झुड मे समुद्र-तट और कभी मोहल्लो मे मारे-मारे फिरते! कोयले का-सा रग, जोक के जैसे होठ, जरा चिपटी नाक, छ फुट से अधिक ऊँचा कद, हाथी सा मोटा, ताँबे के बर्तन मे पत्थर डालने की-सी कर्कश आवाज! उनमे अधिकांश लोगो का नाम अहमद है।

काले अरबी गुलाम है और गोरे अरबी उनके मालिक!

गोरा अरबी यानी मालिक शेख एक सफेद अगोछा पहनकर, मस्लिन कपडे से ढके सिर पर काली रस्सियो की छोटी-सी टोपी रखकर हाथ मे माला लिये, उडनेवाली आलबस्त्रोस चिडिया की तरह बैठता।

जहाज से सामान उतारने के बाद काले अरबियो को फिर एक-दो महीने तक कोई काम नही होता। वे मोहल्लो मे घूमने-फिरते। एक आदमी एक केले का गुच्छा खरीदकर हाथ मे उठाता। एक एक केला तोडकर हर एक शख्स छिलके सहित खाता। फिर वे हिलते-डुलते आगे बढते। उस्ताद वासु ने एक दफा मुझसे कहा था कि जहाज मे महीनो हिलते-डुलते रहने के कारण ही किनारे पर भी वे हिलते-डुलते है। इस प्रकार हिलने से ही उन्हे सन्तुलन मिलता है। बच्चे और औरते उन्हे देखकर भागकर कही छिप जाते। बच्चो को खौफ है कि ये जगली अरबी उन्हे पकडकर खा जाएँगे। ये लोग इलाको से औरतो को छीनकर जहाज मे छिपाकर अरब ले जाते। उस्ताद का विचार है कि पुराने ज़माने मे ही नही, नौबत आने पर अब भी ये ऐसी ही शरारत करेंगे।

पर, काले अरबियो को लम्बी यात्रा मे रात-दिन लहू-पसीना एक करना पडता। चटाई, पलस्तूर आदि बाँधना, भोजन पकाना इन कालो का काम है। ये लोग समय पडने पर अपने मालिक के लिए प्राण भी न्योछावर करते।

उन काले लोगो के बारे मे किसी शेख से उस्ताद ने एक कहानी सुनी थी।

अरब की दुबाई से मिबर (मलबार) की तरफ जानेवाली एक बडी नौका समुद्र

के मध्य की एक चट्टान पर जरा चढ गयी। नाव वहाँ की बालू मे फँस गयी। बचने का कोई उपाय न था। शेख और उसके गुलाम मकबरा चट्टानो को देखकर दिन गुजारने लगे। यो एक दिन नाव के गुलामो मे से अहमद ने आगे बढकर शेख से बडे अदब से मिन्नत की, "बघला (बडी नाव) अहमद हिलाएगा। बघला के हिलते ही यात्रा शुरू करनी चाहिए। फिर अहमद का इतजार न कीजिए ।"

यह कहते ही अहमद समुद्र मे कूद पडा। वह नाव के नीचे छिप गया।

थोडी देर के बाद नाव जरा हिली और उभर आयी। मजदूरो ने तुरन्त चटाई फैला दी। नाव सागर मे पहुँच गयी।

शेख और काले गुलामो ने मुडकर पत्थर के नजदीक जल मे खून को फैलते देखा। बडी आदम खोर मछलियाँ वहाँ घूम रही थी।

पानी मे डूबने के बाद अहमद ने अपनी सारी शक्ति लगाकर नाव का निचला हिस्सा अपनी पीठ से उठाकर हिला दिया। इस जान तोड कोशिश मे उसको कामयाबी मिली। हालाँकि उस कोशिश मे उसकी रीढ टूट गयी। उसे अपने प्राणो की कुरबानी करनी पडी।

अहमद की दुरवस्था पर विचार करते ही शेख की आँखो से आँसू टपक पडे।

नौजवान अहमद उस नाव का सबसे मजबूत जवान था। उसका भोजन भी अनोखा था। समुद्र की यात्रा मे उसका भोजन मछली मे भुना खजूर था। अहमद एक बार मे बहुत अधिक मात्रा मे खाता। उसके साथी उसे कोसकर कहते, "अरे, खाने-पीने के लिए ही तेरी सृष्टि हुई है।" शेख भी उसे गाली देता। "अरे मूर्ख, क्या ऊँट के समान तेरे दो पेट है? अरे नेवर (मनेबार) पहुँचने के पहले सभी खाद्य वस्तुओ को खाकर तू हम लोगो को भूखो मार देगा?"

अहमद का भोजन उस समय वरदान सिद्ध हुआ। नाव को उठाने की शक्ति उसके भोजन से ही उसे मिली थी। शेख के प्राणो को बचाने के लिए उस काले गुलाम ने बिना झिझक अपने प्राणो को कुर्बान कर दिया।

मोहल्लो मे घूमते अरबियो को देखकर श्रीधरन अहमद की याद करता— अपनी पीठ पर बहुत बडी नाव को ऊपर उठानेवाले और टन की मात्रा मे मछली और खजूर खाकर हृष्ट-पुष्ट बने अहमद के शरीर को श्रीधरन समुद्र की आदमखोर मछलियो द्वारा काट-काटकर खाते देखता।

अरबी मालिक तस्करी के लिए इन गुलामो को ही भेजते। ये अशर्फियो को हलकी रबड की थैली मे बन्द कर मलद्वार मे घुसा लेते। पचास सोने के सिक्को को यो पेट मे घुमाकर रखने की क्षमता रखने वाले लोग भी थे।

कभी-कभी माल को अरब से नाव मे भेजने के बाद मालिक हवाई जहाज मे उड आता। हवाई जहाज के आते समय भी इनमे से कुछ लोग सोने की तस्करी करते थे।

भास्करन मालिक का अरबी मित्र अब्दुल ताह एक बार बम्बई मे एक हाथ मे सन्दूक और दूसरे मे एक टिफिन कैरियर लटकाये हवाई जहाज से उतरा।

कस्टम अधिकारियो ने शक से अरबी को रोक लिया। उन्होने पहले सन्दूक की जाँच की। पेटी के कोने मे और उसके अन्दर ज़ब्त करने लायक कोई सामान नही मिला। फिर टिफिन कैरियर की ओर इशारा करके एक अधिकारी ने पूछा "यह क्या है ?"

"क्या देखने मे मालूम नही होता ? मेरा टिफिन कैरियर।" अरबी ने जवाब दिया।

"खोलकर दिखाना होगा।" अधिकारी ने आदेश दिया।

अरबी ने बर्तन का ऊपरी हिस्सा खोलकर दिखा दिया।

भुना हुआ एक मुर्गा।

पुरानी प्रथा पर यक़ीन करनेवाला अरबी बिस्मिल्लाह पुकारनेवाले मुर्गे का मास ही खाता। होटल मे पकाये मुर्गे के मास पर भरोसा नही किया जा सकता। इसी मे घर से ही तैयार कर साथ लाया।

ठीक तो है।

दूसरी प्लेट मे 'चपाती' को रख दिया था। मास के साथ खाने के लिए तैयार की गयी चपाती।

कस्टम अधिकारी के मस्तिष्क मे एक चमक हुई। मोटी चपाती के भीतर अशर्फियाँ होगी।

नौकर ने काँटे मे चपाती के कई कोनो और मध्य मे गडाकर देखा। दूसरी चपाती की भी जाँच की। फिर भी नौकर ने नही छोडा। उस टिफिन कैरियर की सभी चपातियो की जाँच करने लगा। लेकिन कुछ भी हाथ न लगा।

तीसरे डिब्बे मे प्याज और हरे पत्तो की एक सब्जी थी।

कस्टम अधिकारियो ने बड़ी निराशा के साथ अपनी जाँच की समाप्ति की।

अपने पवित्र भोजन की अनावश्यक जाँच से अपमानित और परेशान करनेवाले कस्टम अधिकारियो के अविवेक पर अरबी ने अपनी नाराज़ी और नफरत जाहिर की। कस्टम की जाँच मे असुविधा और परेशानी होने से कस्टम अधिकारियो ने हमेशा की तरह खेद प्रकट किया। लेकिन उसका कोई मूल्य न था। उन्होने एक अभिवादन देकर अरबी को जाने दिया।

बीस हज़ार रुपये मूल्य के तस्करी स्वर्ण के साथ ही कस्टम के जाल से अब्दुल ताहा बाहर आया। उसका टिफिन कैरियर शुद्ध स्वर्ण से ही बनाया गया था।

बारिश के पहले ही अरबी लोग अपने देशी मालो से भरी बडी नावो के साथ अरब मे रवाना होते। वे वापस जाने के दिनो मे सामनो को जमा करने की जल्दबाजी मे होते। खडाऊँ, रेशे की रस्सियाँ, मूसल, बेत की छडी, बीडी, सिगरेट आदि

सामानो को चुनकर खरीदने के लिए पोक्कु हाजी वासु मुशी को ही भेजा करता।

काले गुलाम लोग रेते मे बैठकर नाव की चटाइयो के नये टुकडो को लेकर सिलाई करते हुए एक साथ गाते।

पोक्कु हाजी के अरबी शेख को अरबी सोना बेचकर जो पैसे मिलते थे, उसे छिपाकर ले जाने के लिए वे सिगरेट टिन का ही इस्तेमाल करते थे। बढ़िया विदेशी सिगरेट टिनो को खरीदकर ऊपर के गोलाकार शीशे का टुकडा ब्लेड से काट लिया जाता। फिर सिगरेटो को हटाकर उसके बदले सौ रुपये के करेन्सी नोटो के ढेर को उनके भीतर रखकर सीसे को पहले की तरह रख दिया जाता। पचास सिगरेटो के एक टिन मे दस हजार रुपये के करेन्सी नोटो को रखा जा सकता है। इन टिनो को खास मार्क कर शिकायती सामानो के बीच असली टिनो मे रख दिया जाता।

पोक्कु हाजी और हाजी के अरबी ग्राहको के बीच छह-सात वर्ष के परिचय से वासु मुशी ने उनके व्यापारो की सभी गुप्त बाते समझ ली थी। उसके साथ ही अरबी सोने की तस्करी की तरकीबे भी उसको मालूम थी।

इस मौसम मे अरबियो के सामानो को खरीदकर तैयार करने की हडबडी मे वासु मुशी न अपनी अक्ल से काम लिया। उसने मार्क किये सिगरेट टिनो मे एक को अलग रख दिया। उसके बदले एक नया टिन वहाँ रख दिया।

अतिराणिप्पाट के नजदीक की पगडडी पर गोरी मीनाक्षी को देखकर कुजाडी की कमर मे हाथ डालकर जिस दिन उसने नाच-गान किया, उसी रात को उस्ताद नदारद हो गया।

पोक्कु हाजी ने उसका पता लगाया। वासु मुशी पिछले दिन घर भी नही गया था। कुमारी नलिनी के मुकदमे के अभियुक्त को पुलिस ने कई जगहो पर खोजा। लेकिन वासु कही भी दिखाई नही पडा।

इस प्रकार कुवैत के एक शेख को अपनी तस्करी के सोने के हिसाब मे दस हजार रुपये और पोक्कु हाजी को एक समर्थ लेखपाल, कुमारी नलिनी के मुकदमे मे पुलिस को प्रथम अभियुक्त और अतिराणिप्पाट के सप्पर सफर सघ को अपने नेता को एक ही दिन मे खोना पडा।

22 रथयात्रा

श्रीधरन 'छतरी की छडी' बालन को देखने के लिए उसके घर गया। बरामदे के एक पलग पर बालन परेशान होकर लेटा था। श्रीधरन को देखते ही उसने चेहरे को जरा टेढा कर दिया। अचानक चेहरे से मुस्कान का मुखोटा नदारद हो गया।

"बालन तुम्हे क्या हुआ यार ?" श्रीधरन ने पलग पर बालन के नजदीक बैठ-

कर उसे एडी से लेकर चोटी तक निहारने के बाद पूछा। इस घटना की पृष्ठभूमि श्रीधरन ने समझ ली है।

"श्रीधरन, पुलिस ने मुझे ले जाकर इस कदर मेरी दुर्गति की " बालन ने अपने ओठो को चबाते हुए छाती को सहलाकर शून्य मे देखते हुए कहा।

पुलिस स्टेशन की मार-पीट के बारे मे बालन ने घर मे कुछ नही बताया था। उसने घरवालो से सिर्फ यही कहा था कि मेरी तबीयत ठीक नही है। वह छाती और नाभि को सहलाते हुए आँसू पीकर चुपचाप बिस्तर पर लेट गया।

अन्दर से कराह सुनाई दी। बालन का पिता करप्पन मलेरिया के ज्वर से कराह रहा था। बेचारा म्युनिसिपल दफ्तर से दी गयी कुनैन की गोलियो को निगल कर काँपता पसीने से तर हो रहा था। बीच-बीच म गरम पानी पीते हुए मैसूर के जगलो को कोस रहा था।

"बालन, तुझ पर पुलिस ने ज्यादती क्यो की थी ?" बडी सहानुभूति मे श्रीधरन ने पूछा।

बालन ने सारी बाते विस्तार से बतायी। पुलिस के पैशाचिक जुल्मो के बारे मे अनुभवी मित्र से सुनने पर श्रीधरन की आँखे गीली हो गयी। बालन का दुबला-पतला कोमल शरीर इस तरह मार-पीटकर तबाह करने का विचार कैसे उन्हे हुआ ?

इन्सान का इन्सान-जैसा
निर्दय शत्रु है ही नही।
मर्दन वैभव इस ढग का
नही है क्रुद्ध जानवरो मे भी।

श्रीधरन के मन मे तभी इस तरह एक विचार उठा। अचानक इसे बालन को सुनाने की इच्छा हुई। लेकिन उसे नही सुनाया क्योकि वह सोचता कि जब मैं दर्द से तडप रहा हूँ तब यह गीत गाने की सोच रहा है।

"बालन, क्या तुम्हे मालूम है कि किसने तुम्हे पुलिस से पिटवाया था ?"

"भास्करन मालिक के सिवा और कौन होगा ? उस दिन पणिक्कर के स्कूल के नाटक मे पत्थरबाजी करने और खराब अण्डो को फेंककर बदबूदार बनाने के लिए ही उसने यह बदला लिया है।" बालन ने सिर हिलाते हुए कहा।

"भास्करन मालिक ने ही ऐसा कराया था। लेकिन नाटक को बदबूदार करने के कारण नही।"

"फिर किस वजह से ?"

"भास्करन मालिक की साली नलिनी की हँसी उडाकर गीत गाने की वजह से ही तुम्हे दण्ड दिया गया है।"

"क्या मैंने ? क्या कहते हो ? उस गपिया नलिनी को मै दुलारने गया था ? "

एक मज़ाक सुनने की तरह बालन दाँत निपोरते हुए हँस पड़ा

"तू हँस ले---बात यही है--- भास्करन मालिक के एक आदमी ने झूठी बात कही थी।"

"किसने कही थी ?"

"बदतमीज़ बढई माधवन ने।"

यह सुनते ही बालन आँखें फाडकर बैठ गया। श्रीधरन ने विस्तार से बताया--"दरअसल उस्ताद वासु और कुजाडी ने ही उस दिन पगडडी पर नाच-गाना किया था। नाच गाना नलिनी को देखकर नही किया था। अम्मालु अम्मा की लडकी वह सफेद जू है न ?---मीनाक्षी---उसीको देखने पर उस्ताद को जोश आया था। नलिनी ने भास्करन मालिक से शिकायत की। मालिक ने उन नटखट युवको का पता लगाने के लिए बढई माधवन को भेजा। माधवन ने अपने नये मित्र और कुजाडी को वहाँ देखा। कुजाडी को बचाने और तुमसे बदला लेने के लिए बढई ने झूठ बनाया। उसने कहा कि उस्ताद के साथ मठ के कोलप्पिया धर्मशाप का बालन था। बदमाशो को एक सबक सिखाने के लिए भास्करन मालिक ने कुमारन हेड कान्स्टेबिल से विनती की। उस्ताद तो दिखाई नही पडा ! उस्ताद का दण्ड भी तुम्हे ही भुगतना पडा !

बालन थोडी देर सकपकाकर चुप रहा। फिर उसने लम्बी साँस छोडी। पूछ लिया "श्रीधरन, तुम्हे यह सब कैसे मालूम हुआ ?"

"कुजाडी ने ही कहा था। कुजाडी ताडी पीने गया तो कलाल माक्कोता से बोला। माक्कोता ने अपनी पत्नी को बताया। अम्मिणी ने कन्निप्परपु म आने पर माँ से कहा। माँ को पिताजी से कहते हुए मैने सुना।

बालन खामोश रहा।

"अब तुम्हे मालूम हुआ कि यह सब बढई माधवन की करतूत है। बढई को ऐसे ही नही छोडना चाहिए। उसे जरूर एक सबक सिखाना है।"

बालन श्रीधरन की बाते सुनकर मुस्काया।

"बालन तुम क्यो हँस रहे हो ?"

"खैर, मैं सोच रहा था" बालन ने अपनी दाढी सहलाते हुए कहा, "हमारे सप्पर सफर सघ की बदकिस्मती तो जरा देखो। पहले सफेद जूँ कुञिरामन चला गया। फिर बैल दामु हमे छोडकर चला गया। मोटी ककुच्चियम्मा हमारा पडाव छोडकर गयी। बढई दलबदलू हो गया। अब उस्ताद वासु भी चला गया। मैं तो इस हालत मे इधर पडा हूँ "

"तुम्हारी तबीयत ठीक हो जायेगी। चिन्ता न करो" तसल्ली देते हुए श्रीधरन ने कहा "तुम मालिश करा लो। फिर चौदह दिन तक मुर्गे का काढा पीना होगा।"

"मालिश-वालिश !" बालन ने आँगन की ओर नजर डालते हुए कहा, "उसके

लिए खर्च करने को पैसे कहाँ हैं ? अगर मैं काम करने न जाऊँ तो परिवार को भूखो रहना पडता है ।"

श्रीधरन कुछ भी कह न सका ।

बालन एकाएक खडा हुआ । उसे ज़रा जोश आया । उसने दृढ स्वर मे कहा, "श्रीधरन, हमारे सघ की तबाही नही होनी चाहिए ।"

"मेरा भी यही आग्रह है ।" श्रीधरन ने कहा ।

"सघ की एक सकटकालीन बैठक बुलानी चाहिए ।"

कौन बैठक-ऐठक बुलाएगा ? सचिव तो वढई माधवन है न ? वह तो दुश्मनो के गुट म शामिल हो गया है । उस्ताद वासु इलाका छोडकर चला गया । केलुक्कुट्टि ने कोरमीना के केलप्पन ठेकेदार के साथ तमिलनाडु मे डेरा डाल दिया । फिर काली बिल्ली धोबी मुत्तु ही है । उस पर भरोसा नही किया जा सकता । बैठक के लिए निमन्त्रण देने पर वह 'हाँ' कहेगा । लेकिन आयेगा नही । उसे रात-दिन अर्जेन्ट काम है । उसने लम्बे अर्से के अन्दर सघ के कार्यक्रम मे शरीक होकर सिर्फ एक ही सेवा की थी । 'अम्मालु परिणय' नाटक पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए 'हाय रे' चिल्लाकर उसने लोगो को भयभीत किया था । लेकिन उसने इलाके भर मे इस बात का प्रचार किया कि उस दिन 'हाय रे' का चीत्कार मैने किया था । छतरी की छडी बालन बाहर जा भी नही सकता । सिर्फ मैं ही एक मात्र सक्रिय कार्यकर्ता हूँ । श्रीधरन ने अन्दाज़ लगाया कि बालन का भी यही विचार होगा ।

"हमे एक नये नेता का चुनाव करना चाहिए ।" छाती को सहलाते हुए बालन ने कहा ।

"सप्पर सफर सघ का नया उस्ताद अब बालन ही है ।" श्रीधरन ने अपना विचार प्रकट किया ।

"श्रीधरन, मैं उठ भी नही सकता । ऐसी हालत मे उसके लिए अयोग्य हूँ ।" बालन ने अपना सिर हिलाते हुए कहा ।

"ऐसी हालत मे हम संघ को भग करें ।" श्रीधरन ने कहा ।

बालन ने थोडी देर तक विचार किया "भग करने की जरूरत नही । आगे श्रीधरन माइनर नही, मेजर ही होगा । सघ का नेतृत्व श्रीधरन को ग्रहण करना होगा ।"

यह बात सुनने पर श्रीधरन को थोडा-सा अभिमान हुआ । हाँ, कुछ आशका भी हुई— विपत्ति के समय सघ को बचाना मेरा फर्ज है ।

अहाते के पौधो को देखते हुए श्रीधरन विचारमग्न हो गया ।

"श्रीधरन, क्या सोच रहे हो ?" बालन ने पूछा ।

"हम एक बात करें । अन्तिम कार्यक्रम के बाद हम सघ को भग कर दें ।" श्रीधरन ने अपनी राय जाहिर की ।

"वह कार्यक्रम क्या है।"

"बढई पर आक्रमण करना ही अगला कार्यक्रम है।"

बालन ने खामोशी साध ली।

श्रीधरन ने सहानुभूति के साथ बालन के चेहरे की ओर देखा। श्रीधरन के पिता कृष्णन मास्टर को सार्वजनिक रूप मे अपमानित करने से रोकने के वास्ते बालन ने ही 'अम्मालु परिणय' मे रुकावट पैदा की थी। दरअसल उस दिन की हरकत के कारण ही उसे पुलिस की मार-पीट बर्दाश्त करनी पडी। आज वह एक जिन्दा लाश बन गया है। बढई ही इसका जिम्मेदार है। जरूर बदला लेना होगा। सप्पर सफर सघ के झडे के नीचे ही वह काम सम्पन्न करना होगा।

"काली बिल्ली' की मदद नही मिलती तो अकेले श्रीधरन को ही वह काम करना पडेगा।" बालन ने चेतावनी दी।

"हाँ, मैं तो तैयार हूँ।" श्रीधरन ने बालन से हाथ मिलाया।

अगले रविवार की आधी रात को सप्पर सफर सघ की अन्तिम बैठक बालन के घर पर करने का निश्चय किया गया। श्रीधरन ने बालन से बिदा ली।

यह गुप्त समाचार सिर्फ एक मात्र अनुपस्थित सदस्य काली बिल्ली धोबी मुत्तु को ही देना है।

श्रीधरन के कन्निप्परपु मे वापस आते समय माँ ने कहा, "उस पट्टर ने तुझे बुलाया था।"

श्रीधरन की माँ ने धर्मराज अय्यगर को ही पट्टर बताया था जो कन्निप्परपु के पडोस मे कोरमीना के कोरप्पन ठेकेदार के नये मकान मे किराये पर ठहरता था। धर्मराज अय्यगर रेलवे ट्राफिक सुपरिन्टेन्डेन्ट दफ्तर का नौकर है। वह त्रिचिनाप्पल्लि से बदली होकर यहाँ आया है। उसके अलावा बूढी माँ और युवती बहन भी परिवार मे थी। धर्मराज अय्यगर अविवाहित है।

कन्निप्परपु के सभी सदस्य उस नये परिवार से परिचित हो गये। उस नौजवान अफसर के प्रति कृष्णन मास्टर के मन मे 'इज्जत' का भाव है। धर्मराज अय्यगर बी० ए० आनर्स प्रथम श्रेणी म पास हुआ था। उच्चारण जरा खराब होने पर भी वह अंग्रेज़ी मे अच्छी तरह बातचीत करता। त्रिचिनाप्पल्लि के गोरे पादरियो के कालेज से ही उसने मुहावरेदार अँग्रेजी सीखी थी। कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन को बताया कि इसी कारण वह अँग्रेजी इतने सुचारु ढग से इस्तेमाल कर सकता है। (इन्टर पास होने पर बी० ए० पढाने के लिए त्रिचिनाप्पल्लि म श्रीधरन को भेजने का ख्याल कृष्णन मास्टर के मन मे था।)

धर्मराज अय्यगर की बहन सरस्वती अम्माल एक खूबसूरत युवती है। सोने का रग, खुला छोडन पर पैरो तक लटकते लम्बे बाल, पूर्ण चन्द्र की तरह प्रशान्त ज्योति बिखेरने वाला चेहरा, शरीर पर कोई आभूषण नही। सरस्वती अम्माल

विधवा है। पन्द्रहवें वर्ष मे उसकी शादी हुई थी। सोलहवें वर्ष मे वह विधवा हो गयी। सरस्वती अम्माल की जिन्दगी की यही दास्तान है।

दफ्तर से आने पर धर्मराजय्यगर पुस्तकें पढता। कोननडॉयल, मेरी कोरेली, रैडर होमगार्ड आदि कथाकारो की कृतियाँ रेलवे इन्स्टिट्यूट लाइब्रेरी से लाता। कुछ पुस्तकें श्रीधरन को भी लाकर देता। यो श्रीधरन की अँग्रेजी उपन्यास पढने की उत्सुकता बढी। श्रीधरन अय्यगर के घर नित्य जाता।

एक दिन अय्यगर ने श्रीधरन से कहा "श्रीधरन, हर दिन मुर्गी के दो अण्डे चाहिए। बहन के बालो मे मलनेवाले एक तेल के लिए।

श्रीधरन ने 'हाँ' के अर्थ मे सिर हिलाया।

कन्निप्परपु मे श्रीधरन की माँ पाँच-छह मुर्गियाँ पालती है। नित्य चार-पाँच अण्डे मिलते। उनमे दो सरस्वती अम्माल के कुन्तलो के तेल के लिए रख देती।

श्रीधरन को विश्वास हो गया कि सरस्वती अम्माल के समृद्ध बालो की बढोतरी और चिकनेपन का कारण उन अण्डो के तेल का प्रयोग है। एक दिन श्रीधरन अपनी पढी हुई किताब रैडर होमगार्ड की 'किग सोलमन्स माइन्ड' वापस करने के लिए गया तो अय्यगर रसोईघर मे था। रसोई से अण्डा भूनने की महक आ रही थी। श्रीधरन ने दरवाजे मे जाकर अन्दर की तरफ झाँककर देखा। टर्किश बाथ टावेल लपेटे, जनेऊ पहने एक अर्धनग्न ब्राह्मण अँगीठी के बर्तन म आमलेट पका रहा था। श्रीधरन को देखने पर धर्मराज जरा हँस पडा। फिर उसने सच्ची बाते खुल्लम-खुल्ला कही। वह मुर्गी का अण्डा खाने के लिए ही खरीदता है। उसे नाश्ते के लिए एक आमलेट अनिवार्य है। सब्जीमडी से एक पट्टर को अण्डे खरीदते देखकर लोग मजाक उडाते इसीलिए वह श्रीधरन से मँगाता है।

एक दिन सरस्वती अम्माल ने भी श्रीधरन से एक प्रार्थना की, "कोञ्च पू कोटुक्कुमा" (जरा फूल दे दो)।

फूल सरस्वती अम्माल के बालो मे गूँथने के लिए नही, बल्कि पूजा करने के लिए थे।

"जरूर लाऊँगा" कहकर वह अपने घर की तरफ चला।

कन्निप्परपु मे श्रीधरन का बगीचा फूलो से भरा था। कई रगो के गुलाब, कई रगो के जासौन, चमेली, मालती आदि खिले हुए थे। वह फूलो को तोडकर केले के पत्ते के दोने मे भरकर सरस्वती अम्माल को हमेशा भेंट करता।

दूसरी मजिल पर सरस्वती अम्माल का पूजा का कमरा है। (कन्निप्परपु के दुमजिले मकान मे खडे होने पर सरस्वती अम्माल पूजा करती दिखाई देती।) धर्मराज के रसोईघर मे आमलेट बनाते समय सरस्वती अम्माल ऊपर के कमरे मे फूलो से ईश्वर की अर्चना करती।

भगवान के चरणो मे अर्पित फूलो को सरस्वती अम्माल बालो मे

गूथत ।

श्रीधरन पहले की तरह म्युनिसिपल पुस्तकालय मे जाने लगा। अब वह रेलवे कम्पाउण्ड के तग रास्ते से नही जाता। सडक और पगडडी से एक मील का चक्कर लगाकर भ्रमण करता। रेलवे यार्ड से जाने पर उस दिन मरी पोन्नम्मा के मास के टुकडे और खून की धारावाले रास्ते को पारकर ही जाना पडेगा। उस जगह पर पहुँचने पर सिर चक्कर खाकर गिरने का डर था। रेलगाडी की मशीन का शोर और खाँसी सुनने पर मस्तिष्क की नसो मे गोलाकार पहिये घूमते से दिखाई पडते। अम्मुक्कुट्टि की याद करने पर नथुनी और काँच की चूडियो की याद ताजा होती। लेकिन इन यादो को पोन्नम्मा का बलिदान एकदम निगल जाता। इन यादो को कुछ पल के लिए ही सही, दूर करने के लिए एक उपाय ढूँढ निकाला है सरस्वती का चेहरा—पूर्णचन्द्र-सा वह चेहरा—शुद्धि, शाति और दिव्य तेज का वह चेहरा—स्त्री तारुण्य के सौन्दर्य को स्वाभाविक रूप मे मन मे अकुरित करता। मोह विकार नही है। सरस्वती अम्माल को देखते और स्मरण करते समय श्रीधरन के मन मे पूर्णमासी के चन्द्रमा को देखने का-सा आनन्द आता। पूर्णिमा तो श्मशान को भी सुन्दर बनाती है।

रविवार की रात आ गयी।

सप्पर सफर सघ की अन्तिम रात! बढई माधवन पर धावा बोलने के लिए निर्धारित एक रात।

बारह बज चुके।

श्रीधरन उठकर बैठ गया। शर्ट पहनकर सिर पर एक तौलिया बाँध लिया। फिर कटार को कमर मे छिपाकर घर के बरामदे मे खडा रहा।

बाहर अच्छी चाँदनी थी। पूनम की रात है।

अहाते के नारियल के झुडो के बीच से चाँदी की-सी ज्योत्स्ना घर के कोनो मे बह रही है। उस कोने से ही श्रीधरन को उतरना था।

अचानक श्रीधरन ने सोचा। बरामदे के दूसरे कोने मे गोपालन भैया जाग उठा ता ।

कुछ दिनो से गोपालन भैया की बीमारी के लिए बडा आश्वासन मिल रहा था। अब मस्तिष्क से हिंस्र जन्तु बाहर नही निकलते थे।

उसके पैर मुर्दे की हालत मे होने पर भी बाकी अग ठीक तरह से काम कर रहे थे। रुचि के साथ भोजन करता। रात को चैन से सोता। चेहरे का तेज भी बढ गया था। उस समय अचानक सरस्वती अम्माल की याद आयी। तरुण, खूबसूरत एव स्वस्थ उस अय्यगर युवती की जिन्दगी ईश्वर की पूजा के लिए ही अर्पित थी अगर सरस्वती अम्माल विधवा नही होती गोपालन भैया एक मरीज नही होता तो ! गोपालन भैया सरस्वती अम्माल से शादी कर कन्निप्परपु मे खुशी के साथ

जिन्दगी गुजार रहा होना पर, यह सब बेसिर-पैर की बातें है। गोपालन भैया और सरस्वती अम्माल की बीमारी एव वैधव्य से छुटकारा पाने पर भी शादी करने के लिए समाज मे प्रचलित जाति-व्यवस्था क्या रुकावट पैदा नही करती ?

दुनिया भर मे आजाद जिन्दगी के रिश्तो को बिगाडने के लिए ईश्वर और इन्सान एक जुट होकर क्रूर विनोद से षड्यन्त्र रचते हैं—सुन्दरी-रत्न सरस्वती अम्माल को वैधव्य से युक्त करनेवाला ईश्वर— कोमल शरीर वाले गोपालन भैया को बीमारी से गिरानेवाला निष्ठुर ईश्वर—निरपराधी बालन को मार-पीटकर जिन्दा लाश बनानेवाला खूंखार इन्सान

श्रीधरन सरस्वती अम्माल को अपनी बडी बहन की तरह प्यार करता है। श्रीधरन की जिन्दगी मे कोई बहन नही है। जब वह सरस्वती अम्माल के लिए रोज कन्निप्परपु से फूलो को तोडने लगता तब एक बहन के लिए सेवा अर्पण करने की खुशी और चरितार्थता का अनुभव करता

श्रीधरन ने एक कोने के पत्थर पर पैर रखा - फिर वह हक्का-बक्का रह गया—चाँदनी उस कोने म टार्च की सी रोशनी बिखेर रही थी । चाँदनी को कोसा ज्योत्स्ना के बारे मे लम्बी कविताएँ रचनेवाले श्रीधरन ने चाँदनी को शाप दिया—अब लगा कि जो चाँद कवियो के प्रियकर है वह प्रेमियो और चोरो के लिए डरावना है। पूनम के चाँद को देखने पर सरस्वती अम्माल के चेहरे का स्मरण आया।

बालन श्रीधरन के इन्तजार मे पल गिन रहा होगा।

दीवार पकडकर सीढियो से हौले से उतरकर बरामदे मे पैर रखा

"श्रीधरन--श्रीधरन—चोर—चोर—!" गोपालन भैया का चीत्कार सुनाई पडा।

बिजली की कौंध की तरह श्रीधरन ठिठक गया।

बीडी पीता गोपालन भैया जागकर बैठा था। तभी उसने दीवार को पकडकर उतरते एक 'चोर' को देखकर जोर से शोर-गुल मचाया था।

वह निर्णायक पल था। अब गोपालन भैया की शरण लेने के सिवा खतरे से बचने का और चारा न था।

"गोपालन भैया डरो मत—यह मैं हूँ।"

"कौन ? तुम ?—श्रीधरन ?"

गोपालन भैया की पुकार सुनकर भीतर से पिताजी की "अरे क्या है गोपाल ?' घबरायी हुई पुकार और दरवाजा खोलने की आवाज सुनाई पडी।

"जल्दी उस पार जाकर छिप जाओ " बीडी का टुकडा आँगन मे फेंककर गोपालन भैया ने सचेत किया।

श्रीधरन रसोईघर के पीछे के आँगन की तरफ दौड गया।

"गोपालन, तुम चिल्लाये क्यो थे ?" बरामदे मे पिताजी पूछ रहे थे।

श्रीधरन रसोईघर की दीवार के निकट से कान खडा कर सुनने की कोशिश कर रहा था। गोपालन भैया क्या कहेगे ?—श्रीधरन का कलेजा जोर से धडकने लगा।

"गोपालन चोर को देखकर ही चीखा था न ? चोर कहाँ है ?" माँ की धीमी आवाज सुनाई पडी। (पिताजी के पीछे माँ भी बरामदे मे पहुँच चुकी थी।)

"मै नीद मे कुछ देखकर डर गया था—" गोपालन भैया का मृदु स्वर सुनाई पडा।

श्रीधरन ने तसल्ली के साथ छाती को सहलाते हुए एक लबी साँस छोडी। ईश्वर ने मुझे बचा लिया।

नही, पूरी तरह नही बच पाया है। अगर घर के बरामदे मे सोये श्रीधरन को पिताजी पुकारे तो ? यह चीत्कार और शोर-शराबा सुनकर भी छोकरा उठा क्यो नही ?

पुकारने पर वह नही सुनेगा। वहाँ जाकर देखने पर बिस्तर पर दिखाई भी नही देगा। श्रीधरन नाजुक स्थिति मे था।

पिताजी सीढियाँ चढकर ऊपर के बरामदे मे आकर श्रीधरन के बिस्तर को खाली देखे फिर ! पिताजी को रात की सैर का भेद मालूम हो जाएगा। श्रीधरन सोच भी नहीं सकता। मार-पीट खाने का तो अधिक खौफ नही है लेकिन पिताजी को गलतफहमी हो जाएगी। कुजप्पु की तरह क्या यह छोकरा भी बदमाश लडको के साथ ताडी पीने और किसी की झोपडी मे घुमने लगा है ? अगर पिताजी के मन मे कोई गलत विचार आ जाय तो उसे दूर करना आसान नही है।

किसी न किसी तरह ऊपर के बरामदे मे पहुँचकर अपने को बचाना है।

कमर मे छिपाये चाकू को लेकर बद रसोईघर के द्वार मे चाकू को घुसाया। निचले हिस्से को छूकर कुडी को ऊपर उठाया।

उस्ताद वासु ने एक बार इस तरकीब को बता दिया था। पहली बार वह इसकी जाँच कर रहा है। परीक्षण मे सफलता हासिल हुई। दरवाजा हौले से खुल गया।

(दरवाजा खोलते समय दरवाजे की चर्रमर्र न सुनाई दे इसके लिए दरवाजे के नीचे थोडा-सा पानी छिडकने की बात भी उस्ताद ने कही थी।)

रसोई से दहलीज मे जाकर बिल्ली की तरह चुपचाप सीढ़ियाँ चढकर कुण्डी हटा सीढी के दरवाजे को खोल वह बरामदे मे पहुँच गया। शर्ट और तौलिया बिस्तर पर फेक जोर से पुकारने लगा, "माँ, माँ सीढ़ी का दरवाजा खोल दो !"

माँ ने आकर दरवाजा खोल दिया।

"गोपालन भैया क्यो चीखे थे ?" श्रीधरन ने आँखे पोछते हुए पूछा।

"गोपालन नीद मे चोरो को देखकर डरने के कारण चीखा था।" माँ ने जवाब दिया।

बरामदे मे जाने पर पिताजी को नही देखा। वे फानूस जलाकर सदेह दूर करने के लिए अहाते का कोना-कोना देख रहे थे। हाथ मे एक छडी भी पकड रखी थी।

पिताजी के इस भोलेपन पर श्रीधरन को हँसी आ गयी। गोपालन भैया भी मुस्कराने लगा।

"तुम लोग यो हँसी-मजाक न करो।" माँ ने जरा बडप्पन दिखाते हुए कहा, "तीन-चार दिन पहले ही अम्मिणि के आँगन मे रखे एक ताँबे के बर्तन की चोरी हुई थी।"

पिताजी को कोई नही मिला। वे फानूस और छडी लेकर बरामदे मे लौट आये।

"श्रीधरन तू आज गोपालन के साथ बरामदे मे लेट जा।" पिताजी ने आदेश दिया।

श्रीधरन ने ऊपर के कमरे मे बिस्तर, तकिया आदि लेकर बरामदे मे गोपालन भैया के नजदीक बिछाया।

फानूस को जरा नीचे कर गोपालन भैया के सिरहाने रख दिया। माँ-बाप ने अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया।

श्रीधरन लेट गया।

खतरा पूरी तरह टला न था। गोपालन भैया मुकदमे की कैफियत तलब करेगा। एक ही तसल्ली है। थोडी देर पहले माफी देकर मुझे गोपालन भैया ने ही बचाया था।

"श्रीधरन!" गोपालन भैया की माधुर्य-भरी आवाज।

"क्या है भैया ?"

"तुम कैसे ऊपर पहुँच गये ?"

चाकू से कुण्डी को हटाकर रसोईघर का दरवाजा खोलकर भीतर घुसने का किस्सा श्रीधरन ने विस्तार से कह सुनाया।

"इस तरह की हरकते तुमने कब सीखी थी ?"

श्रीधरन ने चुप्पी साध ली।

"जरा वह चाकू दिखाओ।

श्रीधरन ने वह चाकू गोपालन भैया को दिया। गोपालन भैया ने उसे अपने पास रख लिया।

"रात की यह सैर शुरू हुए कितना अर्सा हो गया ?"

श्रीधरन ने कुछ भी छिपाकर नही रखा। 'सप्पर सफर संघ' के माइनर के रूप मे शामिल होने की बात बतायी। आखिरी कार्यक्रम के बारे मे चुप्पी साध ली।

"तुम ऊपर से उतर रहे थे न ? मैंने सोचा था कि तुम शिकार के बाद लौट रहे थे ..."

गोपालन भैया के 'शिकार' शब्द के प्रयोग मे बुरा अर्थ स्फुरित हुआ था।

थोडी देर तक खामोशी छा गयी।

"श्रीधरन, क्या तुमने इस बात पर कभी विचार किया कि इन सफरो के कारण तुम्हारी ही जिन्दगी की तबाही होगी ?

"भैया, मैं हमेशा रात को इस तरह बाहर नही निकलता। दो-तीन महीनो मे सिर्फ एक बार ..."

गोपालन भैया जरा कराहने लगा।

शायद गोपालन भैया ने समझा होगा कि सदाचार के विपरीत कुछ करने के लिए ही श्रीधरन इस तरह रात को छिपकर जाता है। पर उसने कुछ नही पूछा। कुछ पूछे बिना गोपालन भैया मे कुछ कहने पर गलतफहमी होगी, इसलिए श्रीधरन चुपचाप रहा।

आँगन और अहाते म चाँदनी छिटकी हुई थी। शौचालय के नजदीक के पौधो का झुरमुट चाँद का अभिवादन कर रहा था।

अचानक श्रीधरन ने 'छतरी की छडी' बालन का स्मरण किया। बेचारा श्रीधरन की प्रतीक्षा मे छाती सहलाते हुए बरामदे के पलग पर लेटा होगा।

"श्रीधरन !" गोपालन भैया ने पुकारा।

गोपालन ने अपराध-बोध से लेटे अनुज को वात्सल्य के साथ फिर पुकारा।

"क्या है भैया !"

"श्रीधरन, पथभ्रष्ट होने और ज़िन्दगी की तबाही के लिए अधिक गलतियाँ करने की जरूरत नही होती। जब कभी एक ही गलती बडी हो जाती है। अविवेकी होकर मैने एक दफा जो गलत काम किया था, उसी के फलस्वरूप मुझे लम्बे अर्से से इतनी अधिक तकलीफे उठानी पड रही हैं। यौवन की शुरुआत मे सनसनीखेज कार्यवाइयाँ करने की तमन्ना होती है। विकारो को बुझाने के लिए किसी भी अग्नि-परीक्षा का सामना करने के लिए नौजवान तैयार होते हैं। नए पख मिलने पर कीडे भी पतग बन जाते हैं। ये पतगे दीपक की तरफ फूल समझकर आगे नही बढते बल्कि एक बार लडने के घमण्ड से वे अग्निज्वाला मे भिडत करते है। फल-स्वरूप जलकर मर जाते है ..."

गोपालन भैया की बाते श्रीधरन ने ध्यान से सुनी। अचानक उसने श्रीधरन के चाकू को अपने हाथ मे लेकर एक सवाल पूछा, "तुमने क्यो यह चाकू अपने हाथ

मे लिया था ?"

श्रीधरन जरा सकपकाया। उस हथियार से वह सब कुछ करता। टूटी पसलियो से अकर्मण्य पड़े 'दुर्दशाग्रस्त 'छतरी की छडी' बालन का दुबला-पतला कोमल शरीर और उसकी दुरवस्था का जिम्मेदार बढ़ई माधवन मानस मे उभर आया। बढ़ई की गरदन मे मैं यह चाकू भोकता—गोपालन भैया को यह कैसे सुनाऊँ।

आखिर श्रीधरन ने कहा, "आत्मरक्षा के लिए।"

"क्या कहा ? आत्मरक्षा के लिए ?" भैया हँस पडा। झट उन्होने एक सवाल पूछ लिया, "क्या तुझे ईश्वर पर विश्वास है ?"

जवाब देने मे श्रीधरन जरा सकपकाया। 'हाँ' या 'नही' कह न सका।

गोपालन भैया ने जवाब देने की प्रेरणा नही दी। उसने शान्त स्वर मे कहा, "श्रीधरन, तुम्हारी आत्मरक्षा का हथियार तुम्हारे ही भीतर है।"

वह थोडी देर तक खामोश रहा।

"ईश्वर है तो वह आकाश के भी पार कही दूर रहता है। तुम्हारे पुकारते ही वह नही आ जाता लेकिन आपदा मे तेरी पुकार को तुरत ही सुन लेनेवाली और तेरी रक्षा के लिए तुरत मार्गदर्शन करनेवाली एक महाशक्ति तेरे ही भीतर है—तेरी अन्तरात्मा। कोई भी कार्य हो, उसे करने के पूर्व तुम अपनी अन्तरात्मा की आवाज सुनो। मैं जो काम करता हूँ क्या वह मेरी जिन्दगी को मलिन तो नही बनाता ? क्या इससे किसी दूसरे को कष्ट तो नही पहुँचता ? अन्तरात्मा को धोखा देने पर पता नही कब तुम्हारी तबाही हो जाए। हालाँकि तुम्हे उसका आभास भी नही होगा। इस प्रपच के सभी प्राणी गतिशील चिन्मय शक्ति के ही अणु है। एक सहजीवी का अहित करने के मनोभाव से तुम जिस अस्त्र को चलाओगे वह लक्ष्य मे लगकर, या न लगने पर भी, घूम-फिर कर कभी तुम्हारी ही छाती से आ टकराएगा। लेकिन तुम्हे इसका बोध नही होगा— उस अज्ञात गतिशील नियामक शक्ति के आगे मानव असहाय है।"

श्रीधरन आश्चर्यस्तब्ध हो गया। क्या गोपालन भैया ही ऐसी बाते कह रहा है ? आठवी कक्षा मे फेल हो जाने के बाद, लकडी का हिसाब लगाने जगलो और टीलो मे सालो तक भटकनेवाला कन्निप्परपु का गोपालन मुशी ही एक दार्शनिक की भाँति ऐसा लेक्चर झाड रहा है ?

फानूस की हल्की रोशनी मे श्रीधरन ने गोपालन भैया को ध्यान से देखा। लगा कि शरीर-भर मे भस्म लेपन करनेवाले एक नये सन्यासी को ही वह सामने देख रहा है। उस चेहरे मे कितनी चमक है ! उन शब्दो मे कितना आकर्षण है ! उनके आशयो मे कितना गाभीर्य है ! बिच्छू, जुगुनू, मकडी आदि निकृष्ट प्राणी जिसके मस्तिष्क से बाहर निकलते रहे उसी के मस्तिष्क से ये दार्शनिक रत्न बाहर निकल रहे है।

गोपालन भैया के निर्देश तथा उनकी दार्शनिक विचारधारा से श्रीधरन के युवा हृदय ने एक नया आलोक भर गया। गोपालन भैया ऐसी बाते कह रहा है जिसे किसी भी पुस्तक मे पढा न था, किसी भी आचार्य के उपदेश मे सुना न था। लम्बे अर्से की बीमारी की सुदीर्घ तपस्या से दबी हुई विरक्ति मे—आत्मध्यान मे —स्वय जो ज्ञान उसने ग्रहण किया था वही इन धर्म-सूक्तों मे मुखर हो उठा है · गोपालन भैया अनजाने मे ही परमहस हो चुका है।

भैया की बातो को पागुर करते हुए श्रीधरन ने आगन के उस पार के बाग की तरफ आँखे फाडकर देखा। ज्योत्स्ना, छायाएँ और गले मिले घास-फूसो से भरे अहाते ने आँखो मे मायामयी तस्वीरे खीच दी--खामोशी को भग करते झुरमुटो मे कोई शोर मचाने लगा। मालूम हुआ कि चिडियो के पख फडफडाने की आवाज है। किसी एक प्राणी को—चूहा होगा—झपटकर एक बडा उल्लू, चाँदनी मे शोर मचाता हुआ उत्तर के अहाते के कटहल के ऊपर उड गया।

श्रीधरन ने कटहल के पेड पर निगाहे घुमायी। वह उल्लू अब चूहे को अपने पैरो के नखो से पकडकर चोच से काट-काट कर खा रहा होगा।

दो बजे का समय हुआ होगा।

कटहल के ऊपर से श्रीधरन का ध्यान 'छतरी की छडी' बालन की तरफ पख पसारकर मुड गया।

बालन 'सप्पर सफर सघ' का आखिरी भोजन तैयार कर प्रतीक्षा कर रहा होगा। वह सोचता होगा कि आखिर श्रीधरन ने भी सघ को छोड दिया है ! इन्सान के इरादो और मोहो को जमाने का व्यग्य एकदम उलट देता है ! श्रीधरन के घर के ऊपर के बरामदे से नीचे पहुँचने के उस मुहूर्त मे गोपालन भैया एक बीडी नही पीता तो !

"श्रीधरन, क्या तुम आजकल कविता नही लिखते ?"

गोपालन भैया के अचानक के इस सवाल ने श्रीधरन को दार्शनिक विचारो स जैसे जगा दिया। उस सवाल का वह जवाब दे न सका। वह हक्का बक्का हो गया। 'क्या तुम ईश्वर पर विश्वास करते हो' की तरह का ही एक और सवाल है यह। 'हाँ' या 'नहीं' कह न सका।

गोपालन भैया के चेहरे पर विषादपूर्ण बडप्पन दिखाई पडा।

"श्रीधरन, तुम्हे नियमित रूप से कविताएँ लिखनी चाहिए—कुछ अर्से बाद तुम मशहूर हो जाओगे—लेकिन वह दिन देखने के लिए गोपालन भैया—इधर नही होगा "

गदगद कण्ठ से गोपालन भैया ने जो बात कही, उसे सुनकर श्रीधरन को दुस्सह वेदना हुई और वह जरा उत्तेजित हो गया। उसके भविष्य के बारे मे इस प्रकार के प्रोत्साहन से भरी आशीष किसी ने भी अब तक नही दी थी। गोपालन भैया के

तपोमय चेहरे से ही सबसे पहले सुनी थी। इस सन्दर्भ मे क्यो इस तरह का विचार प्रकट किया ? श्रीधरन की आँखें गीली हो गयी।

किसी पक्षी का कूजन लगातार गूँज रहा था। शायद कटहल के पेड की चोटी से आ रहा था।

आसमान से बातें करनेवाला वह कटहल अतिराणिप्पाट के पेडो मे बुजुर्ग है। उससे गिरनेवाले कई फलो को श्रीधरन ने खाया था। उसके सूखे पत्तो को वह जलाता। उसके धुएँ की एक खास गन्ध है।

रात को कटहल के ऊपर क्या-क्या घटित होता है ? चूहो की हत्या चिडियो के गीत भी

चाँदनी म गन्धर्व-लोक की तरह उस कटहल का दृश्य विस्मयकारी था।

गोपालन भैया ने शान्ति से ही मृत्यु का आलिगन किया।

अन्तिम समय मे पिताजी, माँ और श्रीधरन उसके नजदीक ही थे। (बडा भाई कुजप्पु तमिलनाडु मे था।)

श्रीधरन ने जो तीर्थजल उसके मुँह म डाला, उसे पीकर झट आँखे खोलकर पिताजी, मौसी और श्रीधरन के चेहरे को बारी-बारी मे देखकर आँखे मूँदकर प्राण छोड दिये।

गोपालन भैया की आखो से दो बूँद आँसू टपके थे। गालो पर लुढक आये थे। उन आँसुओ की ओर इशारा करके पिताजी फफक फफक कर रोये।

"मेरे गोपालन भैया चल बसे " श्रीधरन गला फाडकर चिल्लाया।

(श्रीधरन, ईश्वर तो बहुत दूर है। तुम्हारे बुलाने पर शायद वह सुनेगा नही। पर, तुम्हारी पुकार को आसानी से सुननेवाली एक महाशक्ति तुम्हारे भीतर बसती है। तुम्हारी अन्तरात्मा इस ढग के उपदेश देनेवाले भैया की आवाज आगे नही सुन सकेगा।)

मौसी का चीत्कार सुनकर पडोस के लोग दौडे आये।

यो जीवन और यौवन के स्वप्नो मे सडी हुई रोगशय्या से गोपालन भैया मृत्यु की छाती से लिपट गया।

दो बूँद आँसुओ से जीवन के लिए उदक क्रिया करने के बाद वह भौतिक शरीर निश्चल हो गया। एक नये परमहस का निधन हो गया।

पहले सफेद रेशम मे, फिर गोबर और तिनको के ढेर मे लिटाये उस कोमल विग्रह को श्रीधरन ने आग दे दी थी।

चिता जल रही थी।

आँसुओ के आईने से वह चिताग्नि सारे प्रपच म फैलकर एक उज्ज्वल चित्र भेट कर रही थी

धधकती चिता को निहारते

क्यो दिल भी यो धड़कता ?
लाश जलने की चिता है नही यह
भुवन जीवन का महोत्सव देख
परलोक को लौटनेवाले
मानव की अन्तिम रथयात्रा है यह
सुगढता से उड जानेवाली
अनल ज्वालाएँ, जय-पताकाएँ,
और अनिल-लीला मे उडनेवाला यह धुआँ
दिलाता है याद जन्म मृत्यु स्वप्न की।
मृत्युसैन्धव को खीचकर दौडनेवाला
रत्नरथ तो दूर-दूर जा रहा।
वह छोटा होता
दृष्टि-पथ से हौले-हौले ओझल हो जाता
बिदा लेते समय मनुष्य की बचत
यहाँ ज़रा-सी धूल और राख रह जाती।

23 नया प्रेमलेख

समय आधी रात।

कुजिक्केलु मेलान और मज़दूर वेलन निधि की तलाश मे केलचेरी घराने के महल के तहखाने की खुदाई कर रहे है।

केलचेरी के सभी अहाते और खेत हाथ से निकल गये थे। सिर्फ महल ही बाकी है। किसी को इसे बेचने का हक नही है। बेचने के लिए कोई और सामान न होने के कारण कुजिक्केलु मेलान के सामने बडा आर्थिक सकट आ गया। सुना था कि केलचेरी मे एक पुरानी निधि है। वह कहाँ गाडी गयी थी किसी को ठीक-ठीक पता नही है। मेलान उसका पता लगा रहा है।

घर के मुखियो ने तहखानो मे जो पुरातन वस्तुएँ और देखने लायक सामग्री को रखा था वे सब अदृश्य हो गयी हैं। तहखाना खाली है। मेलान ने अन्दाज़ लगाया कि तहखाना खोदने पर निधि ज़रूर मिलेगी। अकेले खोदकर उसे हस्तगत करना है। और किसी को इसकी सूचना नही मिलनी चाहिए। मित्र तो धोखा दे जाते हैं। जिन लोगो से उधार लिया था वे भी सब इधर दौड आयेंगे। इसलिए वह अकेले इसकी खोज करने लगा था। बेचारा बेहद थक गया है। कुदाल उठाने और खोदने की ताकत अब नही रही। कुछ करने के लिए पहले शराब पी लेनी चाहिए। नही, पी लेगा तो फिर उठ नही सकेगा। स्वास्थ्य वैसे ही ठीक नही

है। बाँयें पैर का पीलिया बढ़ रहा है। एक ही आँख है। शक्ति-क्षय के कारण उसे काला चश्मा छोड़ देना पड़ा। उसने अपने वफादार नौकर केलन को बुलया है। अगर निधि मिलेगी तो एक अच्छी रकम केलन को देने का वादा भी किया है। केलन को मालूम था कि मेलान की बातो पर भरोसा नही किया जा सकता। पर, केलन ने सुना था कि केलचेरी मे निधि है। वह इस ख्याल से ही वहाँ आया है कि मेलान की आँखो मे धूल झोककर निधि मे से कुछ न कुछ वह भी हड़प लेगा।

शराब की बोतल नजदीक रखकर मेलान एक कोने मे बैठ गया। वह नजदीक रहकर केलन के कुदाल का किसी खजाने से टकराने की ध्वनि का इन्तजार कर रहा है।

"केलन ·!"

"क्या है मेलान ?"

"निधि मिलने की बात तू किसी और से तो न कहेगा ?"

"नही मेलान, एक बच्चे से भी नही कहूँगा।"

"अगर तू किसी से कहेगा तो मैं तेरी आँखें निकाल लूंगा। समझे ?"

धमकी सुनकर केलन नाराज हो गया। वह भी मेलान पर भभक पडा, "मेलान, चुप रहिए। इस तरह फुसफुसाने से खजाना ओझल हो जाएगा—बड़ो ने कहा है कि निधि को चुपचाप खोदकर ही उठाना चाहिए।"

मेलान जरा खामोश हो गया।

तहखाना कमर तक खोदा गया। पर मिले सिर्फ मिट्टी के ढेले।

"खजाना पश्चिम के कमरे मे जरूर होगा।" मेलान ने जोर देकर कहा।

केलन पश्चिम के कमरे की खुदाई मे जुट गया।

उस कमरे के कोने से सिर्फ एक यन्त्र ही मिला—एक पुराना यन्त्र। ताँबे का यन्त्र खोलने पर उसके अन्दर ताँबे के पत्र नजर आये। उनमे मन्त्राक्षर और चक्र खीचे गये थे।

मेलान ने अनुमान लगाया कि जहाँ से यन्त्र मिला वहाँ नजदीक ही खजाना गडा होगा।

केलन ने फावडा और कुदाली से कमरे की एक-एक इच जमीन गहराई तक खोद डाली।

कुछ भी हासिल नही हुआ।

"मेलान, निधि तो गायब हो गयी है।"

"अब क्या होगा ?"

"मेलान !"

मेलान ने चुप्पी साध ली।

केलचेरी कुंजिक्केलु मेलान तीन बोतल शराब पी चुका था। वह बेहोश हो

गया। पीलियाग्रस्त बायें पैर को बाहर निकालकर, आधा मुंह खोले ही वह एक ओर जरा मुडकर पडा रहा।

मेलान को उसी हालत मे अकेला छोड, फावडा और कुदाली को एक कोने मे रख, अपने को शाप देता हुआ केलन अपने घर की ओर चल दिया।

केलचेरी नाग हिल गया। हौले से पश्चिम के कमरे मे सरक आया। चबूतरे तक खोद डाली गयी पुरानी मिट्टी की गन्ध सूंघकर ही वह उस कमरे मे आया था। उसने शराब की बोतल को सूंघा।

साँप ने एक बार मेलान को घेर लिया। फिर वह मिट्टी पर सरकने लगा उसने फण उठाया हौले से छपकोवाले फन को चमकाते हुए कमरे भर मे सरसरी निगाहो से देखा और फिर नाचने लगा ।

गरीबो को अन्नदान देकर गोपालन भैया की मृत्यु से सबधित रस्मे पूरी हुई। रिश्तेदार, मित्र और पडोसी वापस चले गय।

श्रीधरन ऊपर के बरामदे की आराम-कुर्सी मे विचारमग्न लेटा हुआ था गोपालन भैया से सम्बन्धित सभी रस्मे पूरी हो गयी। दाने-दाने के लिए मोहताज लोग दावत खाकर चले गये। अहाते के नारियल के नीचे फेके हुए पत्तो को चाटते कुत्ते और अन्न को चुन-चुनकर खानेवाले कौवे भी वहाँ से नदारद हो गये है।

आँगन के दक्षिण भाग मे गोलाकार जगह पर गोबर पुता हुआ बलिपिण्ड चढाने का पत्थर दिखाई देता है। एक-दो दिन मे मृत्यु का वह प्रतीक भी अप्रत्यक्ष हो जाएगा

क्या मृत्यु के साथ मनुष्य का सब कुछ समाप्त हो जाता है? कुछ भी समझ मे नही आता प्रियजनो का स्मरण किया नारायणी चात्तुण्णि आखिर गोपालन भैया भी। ये सब कहा चले गये? प्रपच और काल की अनन्तता मे वे हमेशा के लिए अन्तर्धान हो गये है। उनके पहले भी अनन्त लोग जा चुके हैं। उनका पीछा करते ये भी चले गये कभी भी तो समाप्त होनेवाला नही है यह प्रवाह !

कॉलेज मे पढी हुई एक अँग्रेजी पाठ्य-पुस्तक के एक निबन्ध का आशय मस्तिष्क मे उभर आया। दिवगत दोस्तो की याद को ताजा करने के लिए साल मे एक दिन सुरक्षित रखे। किसने कहा था यह? चार्ल्स लॉंपो, डा० जॉन्सन? किसी ने भी कहा हो वह तो एक श्रद्धाभरी उक्ति है शुरू से ही याद करूँ नारायणी!

तभी साडी पहने एक औरत पगडडी से फाटक पर चढकर कन्निप्परपु मे आयी। ध्यान से देखा। कोरमीना की मीनाक्षीअम्मा!

मीनाक्षीअम्मा अब क्यो कन्निप्परपु मे आ रही है? गोपालन भैया की मृत्यु के दिन, और उसके बाद और एक दिन, वह सभ्रात महिला समवेदना प्रकट करने

के लिए कन्निण्परपु मे आयी थी। गोपालन भैया की मृत्यु के बाद दसवें दिन एक भोज हुआ था। उसमें दो केलो के गुच्छो को उन्होंने भेंट के रूप मे भिजवाया था • अब उनके यहाँ आने का मतलब ?

पिताजी बरामदे की आराम-कुर्सी मे गोपालन भैया के वियोग मे आँसू पीकर लेटे है •

मीनाक्षी अन्दर नही गयी। बरामदे मे खडी होकर पिताजी से कुछ बातचीत करने लगी है। लगा कि व्यर्थ की बातचीत नही है। वह कुछ भावपूर्ण वार्तालाप कर रही है।

करीब पन्द्रह मिनट बाद नीचे से पिताजी की पुकार सुनाई पडी

"श्रीधरन ! "

वह महज़ एक पुकार नही थी, सिंहगर्जन था वह।

सुनते ही सीढियाँ उतरकर बरामदे मे गया।

मीनाक्षी पिता के नज़दीक की एक कुर्सी के निकट स्वाभाविक मधुर मुस्कान के साथ खडी थी।

(मीनाक्षी के गाल मे मुस्कान की एक चिडिया हमेशा छिपी रहती होगी।)

बाबूजी का चेहरा लाल फूल की तरह रक्ताभ हो रहा था। पिताजी ने अपने हाथ मे एक कागज़ पकडा हुआ था।

"क्या तुमने कोरमीना की लडकी के नाम पत्र भेजा था ?"

पिताजी की गरदन, हाथ और कागज़ काँप रहे थे।

यह मै क्या सुन रहा हूँ ? क्या देख रहा हूँ ?

श्रीधरन को लगा कि दम घुट रहा है।

"तू तू तूने तो मुझे अपमानित कर डाला।"

पिताजी की आँखो की क्रोधाग्नि अचानक दुख के प्रलय के रूप मे परिणत हो गयी गालो से आँसू बह पडे थे।

श्रीधरन सकपकाकर खडा रहा। कुछ भी मालूम नही हुआ। निस्सहाय होकर चारो ओर आँखें फाड-फाड कर देखा। बरामदे के पश्चिम कोने मे आँखे जम गयी गोपालन भैया का कोना था। अब खाली है। पिताजी के आँसू और उस खाली जगह को देखने पर श्रीधरन स्वय को नही सम्हाल पाया और फूट-फूट कर रो पडा।

बाबूजी शून्य की तरफ देख रहे थे। श्रीधरन को लज्जा और पश्चाताप हुआ। "विपत्ति के सदर्भ मे तुम्हे अपनी अतरात्मा ही बचाएगी।" गोपालन भैया का उपदेश अन्तरात्मा मे गूँज उठा।

बाबूजी के हाथ मे पत्र लेकर पढा।

अपनी लिखावट का ही पत्र है। मेरे ही वाक्य है। इस पर भरोसा भी नही

होता। क्या मैं सपना देख रहा हूँ?

पत्र को बड़े ध्यान से देखा। मालूम हुआ कि यह नकली है। इस ढंग का नकली पत्र लिखने की क्षमता रखनेवाला एक ही आदमी अर्जीनवीस आण्डि है।

कुछ-एक घटनाएँ श्रीधरन के मन मे प्रतिभासित हुईं। आण्डि के 'अमालु परिणय' नाटक का अभिनय होने के बीच खराब अण्डो की मार हुई थी। उस समय श्रीधरन ठहाका मारकर हँस पडा था। उस दिन इस तरह ठट्ठा मारकर हँसनेवालो को रुलाने के लिए ही आण्डि ने यह तरकीब निकाली थी। उसका निशाना अचूक रहा। पत्र की लिखावट मेरी नही है। कहने पर क्या पिताजी इस पर भरोसा करेंगे?

कोरमीना की मीनाक्षी बेचैन होकर श्रीधरन के चेहरे की ओर आँखे फाडकर देख रही थी।

श्रीधरन के फफक-फफक कर रोने से उसे बेहद अफसोस हुआ। कृष्णन मास्टर के आँसू देखकर वह और अधिक दुखी हो गयी।

श्रीधरन ने पहले नायिका के नाम जो पत्र लिखा था, उस प्रेमपत्र के वाक्यो को उसी तरह नकल किया गया था। तारीख और संबोधन ही बदले थे।

मीनाक्षी ने कृष्णन मास्टर से शिकायत कुछ देर मे की थी। क्योकि कन्निप्परपु मे मृत्यु के बाद की रस्मे खतम नही हुई थी।

"मैंने किसी को भी पत्र नही लिखा था। यह पत्र मैने नही लिखा।" श्रीधरन ने दृढ स्वर मे बताया।

ईमानदार कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन के चेहरे की ओर बडे गम के साथ देखा "श्रीधरन, यह तुम्हारी ही लिखावट है।"

"नही, मेरी लिखावट की नकल की गयी है। उण्णीरि नायर मास्टर ने जिस लडकी की ट्यूशन की थी, उसके नाम मैने जो खत पहले भेजा था उसी की नकल की गयी है। अर्जीनवीस आण्डि ने ही यह हरकत की है। उस दिन उसके नाटक मे हमने जो बाधा उपस्थित की थी, उसके प्रतिशोध मे ही उसने यह पत्र भेजा है। उस पुरानी चिट्ठी का इस्तेमाल करने के लिए उस लडकी के पिता ने अर्जीनवीस आण्डि को अनुमति दे दी होगी।" श्रीधरन ने एक जासूसी विशारद की तरह उस नये प्रेम-लेख की पृष्ठभूमि का पर्दाफाश किया।

लेकिन वह कैसे प्रमाणित कर सकेगा?

"यह पहले भी इस तरह के एक मुकदमे मे फँस गया था।" पिताजी मुद्दई कोरमीना की मीनाक्षी के पक्ष मे कैफियत तलब कर रहे थे।

अचानक श्रीधरन की दृष्टि पत्र के संबोधन पर अटक गयी। 'प्रिय सौधामिनी' ही लिखा था।

आत्मरक्षा का एक नया हथियार मिल गया।

(नये पत्र मे आण्डि ने सिर्फ एक ही शब्द बदलकर लिखा था। वह गलत साबित हुआ। सौदामिनी सौधामिनी हो गयी है।)

श्रीधरन ने मीनाक्षीअम्मा को उस अक्षर की गलती दिखा दी। कॉलेज शिक्षा-प्राप्त—एक युवा साहित्यकार —श्रीधरन क्या एक लडकी का नाम ठीक तरह से नही लिख सकता ?

मीनाक्षीअम्मा की मुस्कान की चिडिया पख फडफडाकर उड गयी। उन्हे सारी स्थिति स्पष्ट हो गयी। वह तो मजिस्ट्रेट की बेटी है न ?

श्रीधरन के चेहरे को देखकर मीनाक्षीअम्मा के चेहरे पर एक शरारती हँसी थिरक गयी। मानो वह कह रही हो कि जो बीत गयी सो मजाक ही समझ लो।

मीनाक्षी ने श्रीधरन के हाथ से उस 'सौदामिनी के पत्र' को लेकर टुकडे-टुकडे कर अहाते की तरफ़ फेंक दिया।

कृष्णन मास्टर के चेहरे पर पश्चाताप की रेखाएँ देख मीनाक्षी ने कहा, "सर, आई बेग योर पार्डन फॉर क्रियटिंग दिस सीन, इन योर प्रेजन्ट स्टेट ऑफ बेरीवुमेण्ट। प्लीज़ फॉरगेट एबाउट इट। दि बॉय इज़ इन्नोसेन्ट। सम बडी हैज प्लेड ए डर्टी ट्रिक "

यह कहती मीनाक्षी श्रीधरन की माँ को देखने के लिए भीतर चली गयी।

श्रीधरन ने एक लम्बी साँस ली। उसने अर्जीनवीस आण्डि का स्मरण किया 'आण्डि महाशय, तू अतिराणिप्पाट मे जन्म लेने के बजाय अगर अमेरिका मे पैदा हुआ होता तो जाली चेक और ड्राफ्ट लिखकर करोडपति बन गया होता।'

तभी फाटक मे एक पगडी दिखायी दी। कौन है वह ? किट्टन मुशी है ?

"हाँ, किट्टन मुशी ही है। सूखकर काँटा हो गया है वह।

किट्टन मुशी को क्या हुआ था ? उसे देखते ही श्रीधरन को हँसी आ गयी। किट्टन मुशी को लोग 'किट्टन मजिस्ट्रेट' ही पुकारते है। उसके इस नये नाम के हासिल होने के पीछे की कथा का स्मरण हो आने पर ही श्रीधरन को यह हँसी आयी थी।

एक दिन सुबह को किट्टन मुशी शहर से कुछ दूर के चेम्मण्णूर के एक दोस्त से मिलने के लिए रवाना हुआ। चेम्मण्णूर पहुँचने के लिए एक नदी पार करनी थी। एक नाव पर चढा। नाव पर और कोई आदमी नही था। घाट पर उतरने ही वाला था कि किट्टन मुशी ने बडे गौरव से मल्लाह से यो कहा, "अरे, अगर कोई तुझसे यह पूछे कि क्या मजिस्ट्रेट नाव मे थे तो यही कहना कि नही थे। सुना ?"

उसकी बातें सुनकर मल्लाह चौक उठा। मुँह पर हाथ रखते हुए परगोटन ने बडे अदब से 'हाँ' कहा।

पारिश्रमिक के बारे मे उसने चुप्पी साध ली।

छाती और हाथो पर कमीज के सोने के बटन चमक रहे थे। सिर पर एक पगडी बँधी थी। आदमी को देखते ही परगोटन ने अदाज लगाया कि वह एक बडा सरकारी अफसर होगा।

यह जानने पर परगोटन को बडा अचभा हुआ कि वे मजिस्ट्रेट है। उमे जरा आत्मगौरव का अनुभव भी हुआ। एक मजिस्ट्रेट उसकी नाव मे अभी-अभी चढे थे। परगोटन चुप नही रह सका। राहगीरो को बुलाकर वह यह समाचार गुप्त रूप से देता रहा मजिस्ट्रेट साहब मेरी नाव पर चढकर उस तरफ तशरीफ ले गये है।

मोहल्लेवालो की जिज्ञासा जग गयी। उनमे अधिकाश लोगो ने किसी मजिस्ट्रेट को अब तक नही देखा था।

"वे किसी मुकदमे के अन्वेषण के लिए आये होगे।" उन्होने आपस मे खुसुर-फुसुर की।

"मजिस्ट्रेट साब' को जरा देख लेने के बाद ही चलेंगे।" कुछ लोग वही ठिठक गये।

किट्टन मुशी के अपने मित्र मे मुलाकात कर घाट पर वापस आने तक गाँव के लोग ललचाई निगाह से बडे अदब के साथ उनका इतजार कर रहे थे।

किट्टन मुशी जरा हक्का-बक्का हो गया।

तभी लोगो के बीच से एक अपस्वर सुनाई पडा, "अरे, यह तो किट्टन मुशी है न ?"

किट्टन मुशी से अधिक परिचित बुजुर्ग कुजुण्णि वैद्य ने पूछा, "अरे किट्टन, तुझे मजिस्ट्रेट की नौकरी कब मिली ?"

किट्टन मुशी ने बगल से सुँघनी की डिबिया लेकर, उमसे चुटकी-भर सुघनी अपनी हथेली पर डाल, अपनी नाक मे सुडक ली। फिर वैद्य से पूछा, "किसने कहा कि मैं मजिस्ट्रेट हूँ ?"

"अरे तू ने ही इस मल्लाह परगोटन से कहा था न कि तू मजिस्ट्रेट है।"

"मैंने इतना ही कहा था कि अगर कोई पूछे कि क्या मजिस्ट्रेट नाव मे थे तो बताना कि वे नही थे।

"हाँ, इसी प्रकार ही बताया था।" परगोटन को भी अपना सिर हिलाकर मानना पडा।"

किट्टन मुशी शान से खडा रहा "हाँ, मैने जो कहा वह तो ठीक है—मजिस्ट्रेट नाव मे नही गये थे।"

किट्टन मुशी ने जरा-सी सुंघनी फिर से नाक मे ठूँस कर सुडक लेने के बाद चेहरे को घुमाया। फिर उसने वैद्य और उस बेवकूफ मल्लाह की ओर नफरत-भरी निगाहों से देखा।

किट्टन मुशी की वाकपटुता के कारण उस दिन तो वह बच गया, लेकिन आम लोगो ने उसे नही छोडा।

'बेंच मजिस्ट्रेट' कहने की तरह वे किट्टन मुशी को 'नाव मजिस्ट्रेट' के नाम से पुकारने लगे।

बरामदे की बेंच पर बैठे किट्टन मुशी को देखने पर श्रीधरन को बडी हमदर्दी हुई। वह दुबला-पतला हो गया है। पगडी हटाने पर मुँडा हुआ सिर ही दिखाई पडा।

वह टाइफाइड बीमारी का शिकार होकर लम्बे अर्से तक घर पर ही था। गोपालन की मृत्यु होने पर अब तक कन्निप्परपु मे इसी वजह से वह आ नही सका था। अब भी वह हौले हौले ही चल सकता था।

गोपालन के अन्तिम क्षण के बारे मे जब कृष्णन मास्टर ने बडे दुख के साथ सुनाया तो मुशी ने एक दार्शनिक की तरह कहा, "मास्टर, गोपालन मुशी एक नित्यरोगी थे। वह मरे नही हैं। उन्हे तो मोक्षप्राप्ति ही हुई है।"

कृष्णन मास्टर ने एक लम्बी साँस छोडकर उस दार्शनिक विचार का समर्थन किया।

"पर—" किट्टन मुशी ने भर्राई आवाज मे कहा, 'हाथी से भिडत होने पर भी जो निडर रहते है, ऐसे नौजवानो को ईश्वर उठा लेता है—आखिर कैसे सहन किया जाय ?"

मास्टर ने पूछा, "तुम किसके बारे म कह रहे हो किट्टन ?"

किट्टन मुशी कुछ कहे बिना आसमान मे ही ताकता रहा। फिर अपने निचले होठ को काटकर सिर हिलाते हुए गद्गद स्वर मे बोला, "मेरा तुप्रन !"

तुप्रन की मृत्यु की खबर किट्टन मुशी ने विस्तार से सुनायी।

किट्टन मुशी के अहाते मे एक ऊँचे नारियल का पेड सूखने लगा था। उसे काटना था। तुप्रन को दूसरे कई कामकाज होने पर भी मुशी से उसकी सूचना पाते ही वह जल्दी से कुल्हाडी और रस्सी लेकर पहुँचा।

नारियल के पेड पर चढकर ऊपर बैठ गया। उसका ऊपरी भाग काटने लगा। नारियल का मध्य भाग एकदम सूख गया था। ऊपरी भाग को काटकर गिराते ही नारियल का पेड मध्य भाग मे टूट गया। झट पेड और तुप्रन एक पत्थर की दीवार पर जा गिरे। तुप्रन का कन्धा और छाती टूक-टूक हो गये। यो तुप्रन वही ढेर हो गया।

ये सारे दृश्य श्रीधरन के मन मे अब भी ताजा है रेलवे-गाडी के इजन से हताहत होनेवाली ग्वालिन पोन्नम्मा के दारुण अत का दृश्य ! अपनी पीठ से नाव को उठाकर आदमखोर मछलियो के लिए आहार बननेवाले रीढ-टूटे अहमद की करुण कथा ! उन दोनो की तरह ही तुप्रन भी पत्थर की दीवार पर औधे मुँह

गिरकर वही ढेर हो गया। कथाकार विरिप्पिल इब्राहीम के घर से वापस आते समय एक बडे नारियल के पेड पर आकाश मे विहार करनेवाले तुप्रन को आखिरी बार देखा था। श्रीधरन को वह घटना भी स्मरण हो आयी।

गुरु और अभिभावक 'मुशी हुजूर' के सामने ही तुप्रन एकाएक ढेर हो गया था। विधि की इस विडबना पर विचार कर कृष्णन मास्टर हँस पडे। छोटे भाई ओतेनन की मृत्यु के बारे मे बडे भाई कोमक्कुरुप्पु ने चाप्पन से जो शब्द कहे थे (वरक्कन पाट्टु से) उसे मास्टर ने गाकर सुनाया

"चाप्पन, तू ही उसे ले चला
उसे मरवा डाला भी तूने ही !"

24 सौभाग्यशाली

"श्रीधरन, यू मस्ट लर्न शार्टहैण्ड—टाइप राइटिंग—इट विल हेल्प यू टू गेट ए गुड जॉब आफ्टरवर्ड्स "

धर्मराजय्यगर की सलाह थी।

इण्टर परीक्षा मे पास होने के बाद कामर्शियल विषयो मे प्रशिक्षण प्राप्त करना भविष्य के लिए अच्छा है। अय्यगर की यह सलाह कृष्णन मास्टर को भी पसन्द आयी।

यो श्रीधरन गोपालकृष्ण कामर्शियल इन्स्टिट्यूट की सायकालीन कक्षा मे भर्ती हो गया।

(कृष्णन मास्टर ने तीस वर्ष पूर्व आशु लिपि की परीक्षा पास की थी। प्रमाण पत्र प्राप्त होते ही उन्हे उत्तर भारत की एक विदेशी कम्पनी मे 150 रुपया मासिक वेतन की एक नौकरी मिली। पर उन्होने उसका तिरस्कार किया, क्योकि परिवार छोडकर जाने के लिए उनका मन नही हुआ। वे दस रुपये तनख्वाह पर एक अध्यापक का पेशा ग्रहण कर अपने इलाके मे ही रहे। यह सब श्रीधरन भली-भाँति जानता था।)

शाम को इन्स्टिट्यूट मे जाकर टाइप राइटर को चलाना, इन्स्ट्रक्टर के डिक्टेशन पर ध्यान देना, लाल लकीरोवाली चिकनी नोट-बुक मे एक नुकीली पेंसिल से आशु लिपि की रेखाएँ खीचना—सभी प्रकार का अभ्यास किया। इण्टर परीक्षा मे फिर एक बार बैठने का निश्चय भी कर रखा था। अनुत्तीर्ण विषयो मे इम्तहान देना ही काफी नही था, तीनो पार्टों मे इम्तहान देना होगा—तभी बी०ए० मे प्रवेश मिल सकेगा।

सभी परीक्षाओ के लिए फीस भर दी गयी।

अँग्रेजी, सस्कृत और मलयालम उसके लिए समस्या न थी। गणित मे

धर्मराजय्यगर से ट्यूशन पायी। फिजिक्स और केमिस्ट्री बाकी रह गये थे •

एक दिन शाम को इन्स्टिट्यूट से टाइपिंग क्लास के बाद नीचे उतर गया। नजदीक के 'महालक्ष्मी विलास' होटल मे काफी पीने गया। काफी पीते समय एक गोरा-चिट्टा युवक मुस्कराते हुए सामने आकर बैठ गया।

"आप मिस्टर चेनक्कोत्तु श्रीधरन हैं न ?" युवक ने पूछा।

"हाँ, पर आपको मैंने नहीं पहचाना।"

उसने हँसते हुए सिर हिलाया। पर, कोई जवाब नही दिया।

तभी गले मे रुद्राक्ष माला पहने काले-कलूटे एक प्रौढ व्यक्ति ने आकर इस युवक से परिचय करा दिया।

"क्या नही जानते ? उपन्यासकार गोविन्द कुरुप—पश्चिम के कायल पुलिक्कल कोतक्कुरुप का भानेज—"

नाम बताने पर श्रीधरन को नायक की पहचान हो गयी। शहर से पन्द्रह मील पूर्व मे स्थित एक मोहल्ले के प्रसिद्ध जमीदार घराने का एकमात्र हकदार और भतीजा है गोविन्द कुरुप। चार दफा एस०एस०एल०सी० मे असफल होने के कारण पढाई छोड दी। अब घर के कार्यकलापो की देखभाल कर रहा है। उसका मामा कोनुक्कुरुप, पक्षाघात से पीडित है। हजारो बोरे चावल की आमदवाले लहलहाते खेत, टीले और हाथी है। गोविन्द कुरुप चाहता तो इन सबकी दखभाल कर आराम की जिन्दगी बिता सकता। शायद जन्मपत्री ऐसी थी कि वह एक उपन्यासकार बनने की महाव्याधि से ग्रस्त हो गया।

गोविन्द कुरुप ने देहात और वहाँ के पुराने भवन को साहित्य प्रवर्तन के लिए प्रतिकूल समझा। दो महीने मे एक बार वह शहर मे साहित्यिक तीर्थयात्रा करता। शहर के बढिया होटल 'महालक्ष्मी विलास' मे एक कमरा किराये पर लेता। वहाँ पाँच दस दिन ठहरता और उपन्यास लिखने लग जाता।

ठहरने की सभी सुख सुविधाएँ और शान्त वातावरण मिल जाता है वहा। बलागुलूच्यादि तेल, आम का अचार आदि वह घर से ले आता। मुख्तार, पिट्टू और अपने साथी कुजन नायर को भी साथ लाता।

शहर मे पहुँचने पर सबसे पहले पुस्तके खरीदने बुक स्टाल पर जाता। सभी उपलब्ध उपन्यास और कहानी सग्रह खरीदकर होटल के कमरे मे रखता। फिर शराब बिकने की जगह जाता। व्हिस्की, ब्राडी, वाइन आदि विदेशी शराबो को खरीदकर, पेटी मे बद कर पुस्तको के नजदीक रख लेता। तीन-चार डिब्बे गोल्ड फ्लेक्स के भी ले आता।

सुबह बलागुलूच्यादि तेल मलकर नहाता। फिर बढ़िया नाश्ता करके थोडी देर तक उपन्यास के लेखन मे लग जाता। फिर माथा पच्ची करता। प्रेरणा मिलने के लिए बीच-बीच मे ब्राडी पीने लगता। सिगरेट पीता। और फिर तीन-

चार पक्तियाँ लिख डालता। जो कुछ वह लिखता उसे औरो को सुनाने की उसकी बडी इच्छा होती। फिर वह नीचे के होटल मे चाय पीने के लिए आनेवाले लोगो मे कुजन नायर के माध्यम से साहित्यकार, अध्यापक या किसी अच्छे पाठक की तलाश करवाता। वहा किसी के भी न मिलने पर कुजन नायर दसवें कमरे मे स्थायी रूप से रहनेवाले विश्वविख्यात हस्तरेखा विशेषज्ञ सी०टी० रामण्णिक्कर को पकड लाता।

सभ्रात मेहमान को पीने के लिए क्या चाहिए? ब्राडी, व्हिस्की, काफी या चाय? खाने के लिए माँस या तरकारी? और विशेष कुछ चाहिए तो बाहर से मँगा देता। मेहमान अपनी मर्जी के अनुसार कह सकता है

इस तरह मेहमान को ठीक तरह खिला-पिलाकर सतृप्त करने के बाद, गोविन्द कुरुप अपना साहित्यिक विभव परोसने लगता। चार पक्तियाँ पढना और फिर पूछता, "कैसा लगता है?"

भोजन पर आये आगन्तुक को शुक्रिया अदा करने का सुअवसर जो मिला है— 'बेहतर', 'बहुत अच्छा।' चन्दुमेनोन का 'इन्दुलेखा' उपन्यास इस नयी साहित्यिक कृति के आगे कार्ड जैसा सारहीन लगता है।

इस प्रकार पश्चिम के कायल पुलिक्कल गोविन्द कुरुप नामक भावी उपन्यास-कार के शहर मे निवास करने के कार्यक्रम के बारे मे श्रीधरन ने कई लोगो से सुना था। लेकिन उस दिन पहली बार ही उसे देखा था। "मिस्टर श्रीधरन, प्लीज मेरे कमरे मे आइए।"

श्रीधरन जानता था कि इस ढग के निमत्रण का मतलब क्या है? गोविन्द कुरुप को साहित्यिक काढा पिलाना होगा। श्रीधरन ने मन मे सोचा कि वह एक अनुभव होगा। इसके अलावा एक घटे तक लगातार कार्मशियल इन्स्टिट्यूट की ठक-ठक की आवाज से कानो मे जो ऊब महसूस हुई थी, साहित्य के स्वर से युक्त कोई भी चीज इस समय तसल्ली ही देगी।

इस प्रकार श्रीधरन गोविन्दकुरुप के साथ होटल के प्रथम नम्बर के कमरे मे जा पहुँचा।

"मिस्टर श्रीधरन, पीने के लिए व्हिस्की?- ब्राण्डी?"

"कुछ भी नही चाहिए। अभी-अभी हमने काफी पी है न?"

"नही, नही—ऐसी बाते छोडो यार। कुछ पीना ही चाहिए। (कुजन, जरा उस छोकरे को पुकारो, सोडा ले आये।)

"नही मिस्टर कुरुप! मैंने आज तक शराब नही पी है।"

"तब तो आज यहाँ से श्रीगणेश हो जाए।"

"मुझे मजबूर न करें।"

"पहली दफा पीते समय सबके मन मे डर, शका और शरम होती है। आप

तो एक साहित्यकार है न ? आपकी लिखी कविताएँ, कहानियाँ मैंने पढी थी। वह 'बिजली' नामक छोटी कहानी भी मैंने पढी थी। उस 'बिजली' ने मेरे मानस मे सचमुच एक बिजली ही पैदा कर दी थी। 'काहूल' मे प्रकाशित आपकी कविता 'बेटे को मारनेवाली शराब' की कुछ पक्तियो को मैंने कठस्थ किया था। सुनोगे ?

"पिनाकु मे आज लौट आनेवाला बाप
अपने मुन्ने को हर ! हर ! हर ! "

उस हर—हर—हर प्रयोग के लिए व्हिस्की और ताडी की एक बातल होनी चाहिए।

"मद्यपान के खिलाफ ही मैंने वह कविता लिखी थी" श्रीधरन ने उन्हे स्मरण कराया।

"क्या वह बात मुझे नही मालूम ? बचपन मे देश से चला गया बेटा जो वर्षों के बाद एक मोटी रकम के साथ घर वापस आता है। उसका पिता तो पक्का शराबी है। वह ताडी की दूकान से कुछ जल्दी ही आन पर क्या देखता है ? पत्नी क कमरे मे एक अजनबी इन्सान लेटा है। उसने न आन दखा न ताव, झट कमर से चाकू निकालता और पत्नी के 'जारज' का काम तमाम कर देता। कविता का कथ्य कुछ इसी तरह का नही था ? "

श्रीधरन को आश्चर्य हुआ, साथ ही गौरव भी महसूस किया। उसकी साहित्य सृष्टि उसन मन मे स्मरण कर रखी है। अब तक अज्ञात एक आराधक का पता लग ही गया।

गोविन्द कुरुप से आत्मीय सबध जैसी अनुभूति हुई।

सेण्डो बनियान पहन एक लडका दो सोडा बोतल लिये भीतर आया।

"अरे, कुजन नायर " गोविन्द कुरुप ने इशारा किया।

कुजन नायर ने दीवार की अलमारी खोली। अलमारी मे कई तरह की शराब की बोतल रखी थी। वही नजदीक मे पुस्तको का ढेर भी था।

"चलो यार, व्हिस्की ही ले लो।" गोविन्द कुरुप ने कहा।

व्हिस्की की बोतल और दो गिलास मेज पर आ गये। फिर कुजन नायर ने अलमारी के कोने से एक पत्ते का दोना उठाकर मेज पर रख दिया।

चिकन फ्राइ।

कुजन नायर ने सोडा बोतल भी खोल दी।

गोविन्दन कुरुप ने व्हिस्की की बोतल खोलकर एक गिलास मे उडेली। बोतल नीचे रखकर उसने पूछा, "सोडा कुछ ज्यादा लोगे ?"

"नहीं, कम ही रहे—"

श्रीधरन ने यह बात सामान्य मर्यादा का ख्याल करके ही कही थी।

यह सुनकर गोविन्द कुरुप हँस पड़ा।

पहले हठ करने पर भी न पीने के दृढ़ निश्चय के साथ बर्ताव किया था। फिर एक बार इस पर विचार किया—एक लखपति, वह भी मेरा आराधक और साहित्य-रसिक! उदारमना एक मेज़बान, खुशी के साथ देने पर कैसे उसका तिरस्कार किया जा सकता है। पिताजी का स्मरण किया। दिवगत गोपालन भैया की याद की। फिर अन्तरात्मा से भी पूछा •

फिर 'नही' के निर्णय पर ही पहुँचा।

"मिस्टर कुरुप, मै नही पीऊँगा। मैने शराब पीने के खिलाफ कविता लिखी थी। मैं खुद अपने आदर्शों को यो कैसे तिलाजलि दे दूं "

गोविन्द कुरुप ने मजाक सुनने के लहजे मे हँसते हुए सिर हिलाया "

"मिस्टर श्रीधरन, कवि और साहित्यकार कई आदर्श और सदुपदेशो को लिखते है। अपनी जिन्दगी मे कितने लोग उसका अनुकरण कर सके है ?

भीमघातक गर्दन काटते समय
राम राम करुण रुदन से
जमीन पर तडपते मुर्गे को देख
क्या नही टूटता इनसान का दिल ?

बढिया मुर्गे का मास दोपहर के भोजन के साथ खाकर डकार मारते हुए दाँतो के बीच मे अटके मास के टुकडो को एक माचिस की तीली से हटाकर हँसते हुए ही महाकवि ने वह 'कुक्कुट विलाप' श्लोक लिखा होगा।

विदेशी बटलर कत्ल कर
खाल हटाकर नगा कर
हा! मसाले मे पके हुए मुर्गे को
देख किसका जी नही ललचाता ?

गले तक सोडा डालकर व्हिस्की का गिलास श्रीधरन के हाथ मे दिया। गोविन्दकुरुप की हँसी मे श्रीधरन भी शामिल हो गया।

थोडी देर बाद गोविन्द कुरुप ने कुजन नायर की ओर देखकर कुछ इशारा किया।

कुजन नायर ने अलमारी से एक बडी किताब निकाली और गोविन्द कुरुप के हाथ मे थमा दी।

अच्छे चिकने कागज की किताब। पुस्तक के बाहर लाल अक्षरो मे लिखा गया था

'नन्दिनी' (नया उपन्यास)। लेखक पी० के० पी० गोविन्द कुरुप।

"मिस्टर कुरुप, इस नये उपन्यास को लिख रहे है ?" श्रीधरन ने व्हिस्की की चुस्की लेते हुए गिलास मेज पर रखकर एक अद्भुत रस का प्रदर्शन करते

हुए पूछा।

कुजन नायर ने ही उसका जवाब दिया, "हाँ, कुरुप जी की पहली कृति है यह।"

"नन्दिनी—नाम तो अच्छा ही है।" श्रीधरन ने बधाई देते हुए कहा।

"इस उपन्यास को 'नन्दिनी' नाम देने का कारण आपको मालूम है ?" गोविन्द कुरुप ने गोल्ड फ्लेक सिगरेट का डिब्बा श्रीधरन की ओर बढाते हुए पूछा।

श्रीधरन ने एक सिगरेट लेकर अपने ओठो मे लगा ली। गोविन्द कुरुप ने माचिस की सलाई रगडकर सिगरेट सुलगायी।

"इस नाम के पीछे शायद आपके पुराने इश्क की दास्तान छिपी होगी !" श्रीधरन ने धुआँ छोडते हुए कहा।

"नही। मैं अपने उपन्यास मे अपने प्रेम-व्यापार की नकल नही करता। मेरा 'नन्दिनी' उपन्यास कल्पना की जारज सतान है।"

कल्पना की जारज सतान ! यह व्याख्या श्रीधरन को बडी पसद आयी।

"एक ऐतिहासिक सत्य ने ही मुझे यह नाम देने को मजबूर किया था।" गोविन्द कुरुप ने बडे अहभाव के साथ कहा।

"क्या कहा ऐतिहासिक सत्य ?" चिकनफ्राइ का पख अलग कर उसे चबाते हुए श्रीधरन ने पूछा।

"कुन्दलता—इन्दुलेखा—चन्दुमेनोन—इतिहास-प्रसिद्ध इन शब्दो का केन्द्र-बिन्दु क्या है ?—न्द—चन्दुमेनोन की इन्दुलेखा—उसी तरह भविष्य मे भी और कुछ रचनाएँ प्रकाशित होगी।

"गोविन्द कुरुप की नन्दिनी—" कुजन नायर ने घोषणा की।

(कुजन नायर शराब नही पीता। बीच-बीच मे पान खाता है। मुलायम पान, बेहतर तबाकू, सुगध मूलिका से तैयार किया गया सुपारी का मसाला आदि को रखकर वह चाँदी का पानदान अपने साथ लाता है।)

कुजन नायर एक पान उठाकर अपने नाखून से खरोचने लगा।

"कुजन नायर की पान मे एक खास रुचि है।" गोविन्द कुरुप ने हँसते हुए कहा।

"वह क्या ?" श्रीधरन ने पूछा।

"कुजन ही बतायेगा।"

"यह रागी पान है।" कुजन नायर ने पान को उठाकर सिर हिलाते हुए बताया।

"क्या कहा, रागी पान ? क्या ऐसा भी कोई पान है ?"

"रागी मे रखा गया पान—" नायर ने स्पष्टीकरण दिया।

"रागी मे डालकर सुरक्षित रखें तो पान खराब नही होगा। उसे एक खास

सुगध भी मिलेगी।"

एक नयी जानकारी हासिल हुई।

कुजन नायर 'रागी पान' चबाते हुए गोविन्द कुरुप की, फिर इन्दुलेखा और चन्दुमेनोन की बडाई करने लगा "कुन्दलता—इन्दुलेखा—चन्दुमेनोन।"

"नन्दिनी—गोविन्द कुरुप" कुजन नायर ने मत्र जप किया।

"अब हम उपन्यास शुरू करे।" गोविद कुरुप ने बडे अहभाव से कहा।

"हाँ—सुनेगे।"

"प्रथम अध्याय का आरभ दिन के वर्णन से है।"

"कर्मसाक्षी धर्मरश्मि बिखेरनेवाले निर्मल दिवस मे " यह वर्णन इस तरह चलता है। दो पृष्ठ तक यही वर्णन था।

बीच-बीच मे व्हिस्की की चुस्की लेते हुए श्रीधरन ने ध्यान से सुना। तीसरे पृष्ठ मे कथा शुरू हो रही थी।

"अप्पुण्णि नायर दूर स्थित ससुराल को दिन ढलने के पूर्व ही रवाना हुआ "

वहाँ तक ही पहुँचा था।

"कैसा लगा ?" मेजबान न पूछा।

लगा कि कह दूं कि काढे का चूर्ण है। पर, कैसे यहाँ कहना ? गोविन्द कुरुप कितने ही खेतो, मकानो और हाथियो का मालिक है। एक करोडपति जमीदार। उसने जो व्हिस्की और चिकन फ्राइ दिया था 'उसे खानेवाले' मुँह से काढे के चूर्ण को स्वीकार न करने से जरा तकलीफ महसूस हुई। सत्य कहन का सिद्धान्त भी रुकावट ही पैदा करता है।

'आपदि कि कर्तव्यम् ?' बहुत पहले सुना हुआ एक सस्कृत श्लोक याद आया। वर्षों पहले पुत्तन हाईस्कूल के नये शिक्षक ने क्लास मे जो सारोपदेश सुनाया था उसकी भी याद ताजा हो आयी।

"सत्य ब्रूयात् प्रिय ब्रुयात्
न ब्रूयात् सत्यमप्रिय·· "

अप्रिय सत्य नही कहना चाहिए।

काढे का चूर्ण एक अप्रिय सत्य है।

फिर क्या करूँ ? कि कर्तव्यम् ? व्हाट टु डु ?

"बताइए श्रीधरन, मेरा उपन्यास आपको कैसा लगा ?"

गोविन्द कुरुप छोडनेवाला न था। गिलास मे फिर व्हिस्की लेकर 'नन्दिनी' पर बधाई सुनने के लिए मन आतुर हो उठा था।

"मिस्टर कुरुप, मैंने अभी उपन्यास की शुरुआत की कुछ पक्तियाँ ही सुनी थी। पढने के बाद ही अपनी राय जाहिर कर सकूँगा।"

"आपने जितनी सुनी उसके बारे मे आपकी राय क्या है ?"

"कुरुप जी, उस दिन का वर्णन तो कुछ अधिक लम्बा हो गया है न ?"

गोविन्द कुरुप शेष व्हिस्की एक ही घूँट मे पी गया और गिलास को मेज़ पर ज़ोर से पटककर ठहाका मारकर हँस पड़ा।

"हाँ, ऐसी आलोचनाएँ होने दो।"

कुजन नायर ने कुछ और व्हिस्की गोविन्द कुरुप के गिलास मे डाल दी।

"मिस्टर श्रीधरन, आपने एक बात पर ध्यान नही दिया। उसके प्रारभ मे एक जगह 'मेषवासर' (चैत का दिन) लिखा गया था। चैतमास के दिनो का समय ज़्यादा होता है।

"मेषादौ पकलेरीटु

रात्रोन्नत्र कुरन्निटु—यही प्रमाण है।" (चैत मे दिन का वक्त जितना अधिक होगा, रात का समय उतना ही कम होगा।) यह कुजन नायर की दलील थी।

"ऐसी बात है तो ठीक है।" श्रीधरन ने स्वीकार किया।

"और कुछ विकलता देखी ?" कुन्नन नायर ने पूछा।

" दूर की ससुराल को दिन ढलने के पूर्व ही रवाना हुआ।' इस प्रयोग के बारे मे आपकी क्या दलील है ?"

श्रीधरन ने बाहर की ओर आँखे फाडकर देखा। धुँधलका छा गया था। सूर्यास्त हुए काफी समय बीत चुका था। तभी मच्चाई का बोध हुआ।

"आप चुप क्यो हो गये ?" कुजन नायर ने पूछा।

"प्रयोग तो ठीक ही हुआ है।" कहते हुए श्रीधरन उठ खडा हुआ।

"बडी देर हो गई मिस्टर कुरुप · फिर और कभी आपसे मुलाकात करूँगा।

"ज़रूर आइए। ज़रूर आना चाहिए। आपके साथ लम्बी साहित्यिक चर्चा करने के एक अवसर की मैं प्रतीक्षा करूँगा।"

"थैंक्यू मिस्टर कुरुप, एण्ड थैंक्यू यू स्पेशली फॉर योर सुपर्ब ट्रीस्ट—" मुहावरेदार अँग्रेजी मे श्रीधरन ने धन्यवाद दिया। फिर मुडकर खडे हुए कुजननायर से एक सदेह का निवारण करना चाहा।

"पान को खराब होने से बचाने के लिए आपने एक चीज़ के बारे मे बताया था, क्या वह शारिबा है ?"

"शारिबा नही, रागी है।" ऊपर की ओर देखकर मुंह से थूक को ज़रा बाहर निकालते हुए कुजन नायर ने बताया।

"ठीक है रागी—अँग्रेजी मे भी 'रागी' ही कहेगा। यह विधि माँ को बतानी चाहिए। पान रागी मे रखने से खराब नही होगा—बीटल लीव्ज़ टु बी प्रिज़र्व्ड इन रागी "

सीढी उतरकर नीचे पहुँचा। फिर सडक की ओर मुड गया।

"एकाएक घर की याद आयी। देर से आने पर पिताजी नजदीक बुलाकर पूछेंगे "श्रीधरन, अब तक तू कहाँ था ?'

"क्या बताऊँगा ?"

पिताजी के नजदीक जाने पर शराब की बदबू निकलेगी। तब वे शक से मुँह पकडकर सूंघेंगे तो ? श्रीधरन ने शराब पी है। जघन्य अपराध करने पर पिताजी पीटेंगे नही। वे कुछ कहे बगैर सिर ऊपर उठाकर आँसू बहायेंगे—ये आँसू सल्फ्यूरिक एसिड की तरह श्रीधरन के हृदय को जला देंगे। माँ वैसी न होगी। रसोईघर मे भोजन करते समय जिस पटरे पर बैठते है उसे उठाकर अपनी छाती पीटने लगेगी। फिर गला फाडकर रोकर कहेगी "लडका शराब पीने लगा है। हाय दैया अब मै क्या करूँ ?"

गडबड ही है। कैसे इन सबका मुकाबला करूँ ? चापलूसी करके मुझे शराब पिलानेवाले जमींदार गोविन्द कुरुप को कोसा। उसकी एक 'नन्दिनी'—कर्मसाक्षि धर्मरश्मि बिखेरनेवाला दिन भी—मिट्टी का ढेला! ब्लडी फूल लगा कि शीघ्र वहाँ जाकर सीढ़ियाँ चढकर जोर से गाली बकने लग जाऊँ 'अरे, महावत उपन्यासकार कुरुप, तुम ने जो-जो लिखा है वह हाथी के मल के सिवा कुछ नही है।' लेकिन अब जल्दी घर पहुँचना होगा। आगे स्थिति आने पर उस सच्चाई को स्पष्ट करूँगा। हाँ, यह श्रीधरन बताएगा। ईमानदार चेन्नक्कोत्तु कृष्णन मास्टर का बेटा है श्रीधरन। पश्चिमी कायल पुलिक्कल गोविन्द कुरुप को यह मालूम नही है

रास्ते की एक दूकान मे खडा रहा। पाव आने का लहसुन खरीदा। मुंह मे डालकर चबा लिया। शराब की बदबू दूर हो जाय तो अच्छा है। यो लहसुन को खाकर चलते समय एक गीत गाने की मशा हुई—

'खुशबूदार गुलाब का फूल
तू मुरझाये बगैर सूख जा
तू बगैर मुरझाये सूख जा।"

कन्निप्परपु के सामने की पगडडी पर पहुँचते ही पैर कांपने लगे। तीन-चार सीढियाँ चढकर झाँककर देखा। क्या बरामदे म दो बत्तियाँ जलाकर रखी हैं ? हमेशा की तरह बरामदे की आरामकुर्सी मे पिताजी को नही देखा। जरा तसल्ली हुई। आँगन मे एक आदमी खडा था—बाबूजी न थे

साहस बटोरते हुए फाटक से आँगन मे पहुँचा।

"हाँ! श्रीधरन तो आ गया है " हाथ मे एक कागज फैलाते हुए बडा गपिया किट्टुण्णि खडा था।

"किट्टुण्णि, अरे तुम क्यो रोते हो ?"

"एक तार आया है—कोलब (श्रीलका) से होगा—जरा पढिए।"

किट्टुण्णि का ख्याल यह है कि तार तभी भेजा जाता है जब किसी की मृत्यु हो जाय।

श्रीधरन ने दीपक के निकट जाकर तार का सदेश पढा। कोलबो से ही था।

"सीरियसली इल। युवर प्रेजेन्स रिक्वायर्ड अरजेन्टली। स्टार्ट इमीडियेटली। सेण्डिग टु हण्ड्रेड—पगन।"

किट्टुण्णि के कोलबो (श्रीलका) के मामा का तार है। तार का समाचार सुनाया सख्त बीमारी है—किट्टुण्णि को झट पहुँचना चाहिए। फौरन रवाना होना चाहिए। दो सौ रुपये भेजे हैं लगा कि तार की सूचना मिलने पर किट्टुण्णि की दायी आँख से आँसू और बायी आँख से हँसी निकल रही है।

किट्टुण्णि का पगन मामा अठारह साल पहले कलाल बनकर कोलबो गया था। उसने अपनी कोशिश से ढेर सारे रुपये जमा किये। धीरे-धीरे वह एक आबकारी ठेकेदार के रूप मे तबदील हो गया। अब चार-पाँच ताडी की दुकाने हैं। एक सिंघल औरत से शादी की थी, पर कोई औलाद नही है।

किट्टुण्णि कोलबो जाने की लम्बे अर्से से चाह कर रहा था। पर, कोलबो का मामा अनुमति नही दे रहा था।

अब तो वहाँ जाने को अनुरोध और पैसे आ पहुँचे है। उसका भाग्य खुल गया है।

"मेरे कोलबो पहुँचने के पहले मामा मर जाय तो ?" किट्टुण्णि ने अपना शक जाहिर किया।

"किट्टुण्णि मरेगा, नही-नही।" श्रीधरन ने दृढता से कहा, "कल ही गाडी से चले जाओ। वहाँ जाने के बाद मामा की ताडी की दूकान, जायदाद फिर वह सिंघल औरत को भी हथिया लेना। समझे"

यह सुनकर किट्टुण्णि गधे की तरह हस पडा। तार माँगकर उसने अपनी कमर मे खोसा और कुछ कहे बगैर चला गया।

"माँ, बाबू जी कहाँ गये ?" श्रीधरन ने पूछा।

माँ ने रसोईघर से कहा, "तुम्हे नही मालूम ?" और फिर जोर से बोली, "शाम को मूलिप्परबिल गोविदन मास्टर की मृत्यु हो गयी है। बाबू जी उधर ही गये हैं।"

केकडा गोविन्दन चल बसा!

श्रीधरन ठट्ठा मारकर हँस पडा।

मौत की बात सुनकर नही हँसा था। केकडा की मृत्यु के क्षण पर विचार करके ही हँस पडा था। जिन्दा रहते हुए उस इन्सान ने हर किसी के साथ दुर्व्यवहार ही किया था। मरते समय उसने बस, एक पुण्य कार्य किया। श्रीधरन के पहले-पहल शराब पीकर आने के मुहूर्त मे ही उसकी मृत्यु हुई है।—केकडा। तुझे

ज़रूर स्वर्ग मिलेगा। (हँसी) खाने के लिए कई स्वर्ण मछलियोबाले तालाब के किनारे की गुफा मे भगवान तुझे एक जगह देगा (हँसता है) तूने ज़िन्दगी मे एक ही पुण्य किया—उसके फलस्वरूप। समझे ''(हँसता है।)

"अरे, तू क्यो शराबियो की तरह बकझक कर हँस रहा है?" माँ ने रसोईघर से ज़ोर से पूछा।

यह सुनने पर श्रीधरन फिर ठट्ठा मारकर हँस पडा।

25 नशे मे

अगले दिन सुबह जब श्रीधरन जागा तो उसे अपने शरीर मे एक अजीब आलस्य और खोपडी मे सफेद धुएँ की तरह एक धुँधलापन महसूस हुआ। थोडी देर बाद मालूम हुआ कि गोविन्द कुरुप की ह्विस्की की करामात है।

नीचे के बरामदे मे पिताजी किसी से ज़ोर से बातचीत कर रहे थे।

"आप लोगो को मालूम है कि मूलिप्परबिल गोविन्दन ने अपनी मृत्यु तक मुझसे वैर-भाव से ही बर्ताव किया था लेकिन मुझे उससे कोई वैर या घृणा नही है। मैं जानता हूँ कि दूसरो की नुक्ताचीनी करना ही उसका पेशा था। वह तो मन की एक बीमारी है। गोविन्दन की मृत्यु का समाचार पाकर सबसे पहले मैं ही वहाँ गया था। लोगो को समझाकर वहाँ से जल्दी वापस नही आगया था, गोविन्दन को म्युनिसिपल श्मशान मे ले जाते समय भी मै साथ गया था। उसकी चिता मे आग लगाते वक्त तक मैं वही था। शवदाह के बाद कल यहाँ वापस आने पर आधी रात बीत गयी थी

"पिताजी, केकडा गोविन्दन के जलकर राख होने तक आपने वहाँ इतज़ार किया। अच्छा ही किया।" श्रीधरन बिस्तर पर ही अपने आपसे बोल रहा था। वह अकेले ही हँस पडा "

"श्रीधरन "

पडोस के घर के बरामदे से धर्मराज अय्यगर की पुकार थी। पाँच दिन पहले सरस्वती अम्माल ने कहा था कि अब चार दिनो के लिए फूलो की ज़रूरत नही है। समझ गया था कि वह रजस्वला होगी।

बिस्तर से उठकर, नीचे जाकर मुँह धोया। बाग से कुछ फूलो को तोडकर केले के दोनो मे रख दिया। माँ से छह अण्डे लेकर एक पुरानी फूलो की टोकरी मे रखे। फिर अय्यगर के घर की तरफ चला।

अय्यगर ने बरामदे से ही अण्डे की टोकरी ले ली "गो अपस्टेयर्स श्रीधरन, सरस्वती इज़ वेटिंग फॉर योर फलावर्स टु ऑफर पूजा" कहते हुए पट्टर रसोईघर की तरफ चले गये।

सरस्वती अम्माल ऊपर सीढ़ी के नजदीक इन्तजार कर रही थी। ऋतु-स्नान के बाद शुद्धि और खूबसूरती के कारण बगीची की तरह शोभायमान सरस्वती अम्माल को देखकर श्रीधरन की आँखें भ्रमर बन गयी· भीतर मे एक गूँज हुई। एक ठण्डी साँस खीचकर ही फूलो को उसके दोनो हाथो मे दे दिया था।

फूलो का दोना लेती हुई सरस्वती अम्माल अचानक मुँह सिकोडकर श्रीधरन की ओर जुगुप्सा भाव से देखती वही सकपकाती खडी रही।

श्रीधरन हक्का-बक्का रह गया।

श्रीधरन समझ गया कि शराब की गन्ध ने ही सरस्वती अम्माल के मन मे नफरत पैदा की है। ठण्डी साँस के साथ ही वह बदबू बाहर निकल गयी थी। बारह घण्टे के बाद भी ह्विस्की की बदबू गले से हल्के-फुलके रूप मे निकल रही थी। शायद सरस्वती अम्माल की लम्बी नाक की घ्राण शक्ति ही हो कि वह बात ताड गयी। गोविन्द कुरुप की ह्विस्की के कमिश्मे के बारे मे फिर क्या कहना है ! भाग्य मे पिताजी और चालाकी से माँ मे मद्यपान का रहस्य छिपा रहा आया था। पर, एक भद्र महिला की नाक के सामने उसका भेद खुल गया।

सरस्वती अम्माल ने कुछ नही कहा। हालाकि उसके मौन भाव और उसकी जुगुप्सा-भरी नजर ने एक लानत-मलामत महाकाव्य के भाष्य की रचना कर डाली थी।

साँस रोककर झट सीढी से उतरकर नीचे पहुँच गया। रसोईघर से आमलेट भूनने की महक आ रही थी।

चार दिन बीत गये।

वह रविवार था। सुबह को म्युनिसिपल ग्रन्थालय मे बैठकर 'वाइडवर्ल्ड' मासिक पढा। बाहर आते-आते बारह बज गये थे। 'महालक्ष्मी विलास' होटल के सामने पहुँचने पर भावी उपन्यासकार गोविन्द कुरूप का समरण हो आया।

क्या वह उपन्यास को पूरा लिखकर चला गया ? उस दिन की घटना के बाद उधर नही गया था। जरा उसका पता लगाने की इच्छा हुई।

सीढी चढकर पहले नम्बर के कमरे के सामने गया। एक बार झाँककर देखा। लगा कि भीतर एक ट्यूटोरियल क्लास चल रही है।

दीवार के नजदीक एक मेज के पीछे बैठकर कुजन नायर उपन्यास पढ रहा था। कुर्सी, पलग और जमीन की चटाई पर कई पोजो मे बैठे चार-पाँच आदमियो का ध्यान उस ओर लगा हुआ था। शायद वे ध्यान देने का ढोग कर रहे थे। भविष्य का नॉवलिस्ट पश्चिम का कायल पुलिक्कल गोविन्द कुरुप ताडी पीकर उन्मत्त होनेवाले जगली जानवर की तरह मेज पर सिर रखकर लेटा हुआ था।

बीडी और सिगरेट के टुकडे जमीन पर बिखरे पडे थे।

श्रोतागण अर्ध बेहोशी की हालत मे थे। कुछ लोग आँखे खोले बिना, बीच-

बीच में 'हाँ-हाँ' कह रहे थे। कुछ-एक 'वाह वाह !' कह उठते थे।

कुजन नायर 'नन्दिनी' के 'दिन' का वर्णन दुहराने लगा।

मेजबान बेहोशी की हालत मे हैं। सभी सदस्य अजनबी है ! फिर यहाँ मैं क्यो खडा होऊँ ? श्रीधरन शकालु बना खडा रहा। 'कर्मसाक्षी धर्मरश्मि बिखरने-वाले निर्मल वासर मे नाचनेवाली कुजन नायर की आँखो ने श्रीधरन पर ध्यान नही दिया।

कमरे से अटैच बाथरूम को देखने पर वहाँ जाने की इच्छा हुई। उसका दर-वाजा खोला। अन्दर पैर रखने पर दीवार पर लगे बेसिन का दृश्य देखा। बेसिन मे पान सुपारी के थूक पर किसी ने उलटी करदी थी। रूक्ष गन्ध नाक मे घुस गयी।

सिर्फ एक बार ही देखा। नाक-मुँह दबाकर चेहरे को झट मोड लिया। लगा कि उसे भी उलटी हो जायेगी। वह झट सिर और छाती को सहलाते हुए पढने के कमरे मे गया।

"कौन है ? अरे श्रीधरनजी ! आइए पधारिए · ·।" गले की रूद्राक्षमाला पकडकर उसे जरा सहलाते हुए कुजन नायर ने श्रीधरन की अगवानी की।

एक खाली कुर्सी पर श्रीधरन बैठ गया। कितनी अधिक कोशिश करने पर भी वाशबेसिन की उलटी का दृश्य मस्तिष्क मे उभरकर आ ही गया। शराब की उलटी की बदबू भी नाक से हटती न थी।

"श्रीधरन, यहाँ की सारी चीजे खतम हो गयी है, फिर भी तुम्हे खाली हाथ कैसे लौटा सकूँगा "

कुजन नायर ने दीवारवाली अलमारी को देखा।

ऊपरी भाग मे स्टार्स से चिन्हित विदेशी शराब की बोतलें सेवा से निवृत्त सिपाहियो की तरह दिखाई दे रही थी। सब की सब खाली हो चुकी थी। कुजन नायर ने एक कोने मे छिपी एक सफेद बोतल बाहर निकाली। देहाती शराब थी। उसने उसे एक गिलास मे उडेलकर श्रीधरन के हाथ मे थमा दी।

उबकाई दूर करने के लिए जहर पीने को भी श्रीधरन तैयार था। शराब मे सोडा या पानी मिलाने का ख्याल न रहा। पूरी की पूरी गटागट पी गया।

"आदमी तो बडा होशियार है।" कुजन नायर ने राय प्रकट की।

सभासदो मे दो-एक ने आँखें फाडकर श्रीधरन की तरफ देखा। हलकी प्रतीक्षा के साथ कुजन को भी निहारा।

"छिपकली के पेशाब के समान एक बूँद ही बोतल मे है।" कुजन नायर फुस-फुसाया। खाली गिलास और बोतल अलमारी मे रख दिये। पढाई जारी रखी।

"अप्पुण्णि नायर दूर की ससुराल को दिन ढलने के पूर्व ही निकल पडा "

श्रीधरन ने सिर हिलाया। इतना उसने पहले भी सुन रखा था। फिर क्या

घटित हुआ ?

कुजन नायर ने पढ़ना बन्द कर दिया। "इतना लिखा था।" फिर गले की रुद्राक्षमाला सहलाते हुए सवाल पूछा, "यह प्रयोग कैसा लगा ?"

किसी ने भी जवाब नही दिया। शराब नही तो बहस का भी भला कोई प्रयोजन ? एक-एक होकर सभी धीरे से उठकर खिसक गये। सिर्फ श्रीधरन ही वहाँ बैठा रहा।

भावी नॉवलिस्ट गोविन्द कुरुप भी तब योग-निद्रा मे था।

बेचारा अप्पुण्णि नायर ! श्रीधरन ने स्मरण किया। दूर की ससुराल मे कई दिन-रात गुजर गये। वह वहाँ से एक कदम भी आगे नही जा सका ! क्योकि नॉवलिस्ट गोविन्द कुरुप को आज तक अवकाश ही नही मिला। आराधको की इतनी अधिक भीड-भाड जो थी।

"कितने दिन यहाँ ठहरेगे ?" श्रीधरन ने अन्वेषण किया।

"कल सुबह हम चले जाएँगे।" कुजन नायर ने औपन्यासिक कृति सदूक मे रखी। "आज रवाना होने का विचार था। नही जा सके। 'नन्दिनी' सुनने की आकांक्षा से कई आराधक इधर आ गये। फिर हम क्या करते ? कैसे हम उन्हे निराश लौटाते ?"

"वह तो एहसान-फरामोश होना होगा।" श्रीधरन ने कहा।

वहाँ उपस्थित महाशयो मे अधिकाश उपन्यास सुनने के लिए नही, बल्कि 'महालक्ष्मी विलास' के प्रथम कमरे मे जाकर मुफत शराब पीने की साध से ही आये थे। यह बात कुजन नायर भी जानता था, लेकिन दोनो ने यह बात आपस मे नही कही।

श्रीधरन उठ खडा हुआ।

"मिस्टर गोविन्द कुरुप के जाग जाने पर मैं इधर आऊँगा। मेरे यहाँ आने का समाचार बताने की मेहरबानी करे। अच्छा फिर मिलेगे—"

"श्रीधरन को जरूर आना चाहिए।" चेनक्कोत्त श्रीधरन की साहित्यिक रचनाओ के बारे मे गोविन्द कुरुप हर रोज कहा करते थे।

"वेरि गुड !" कुजन नायर ने पान की तश्तरी सामने रख दी। उसने एक पान उठाकर सूँघा।

रागी पान होगा। बीटल लीव्ज प्रिजर्व्ड इन रागी

'महालक्ष्मी विलास होटल' मे उतरा। अब कहाँ जाना है ? थोडी देर तक सोचा। इस तरह घर नही जा सकूँगा। म्युनिसिपल पार्क मे जा बैठना चाहिए।

सीधे पार्क की तरफ चल दिया।

पार्क के नजदीक के तालाव से मुस्लिम मजदूर ताँबे के बर्तन मे पानी भरकर उसे फिर पीपो मे भर रहे थे। दूसरे एक कोने मे, कौवे नहा रहे थे। बाग सुन-

सान था ।

पहरेदार के कमरे मे कोई लेटा हुआ था । माली पोक्कन मिस्तरी ही होगे ।

फूलो के पौधे सिर झुकाकर बिना हिले-डुले खडे है । शायद ये सोते होगे । पौधे दोपहर को ही सोते हैं ।

सूर्यमुखी-फूले नही समाते है । वे रात को ही सोते है ।

अदालती कवि पप्पु भैया के कोने मे एक आवारा कुत्ता चैन से सो रहा था । पप्पु भैया की सुप्रसिद्ध कविता 'ऑडिटर' का स्मरण कर हँसी आ गयी ।

"भादो महीने का कुत्ता " निशागन्धी के झुण्ड के बीच से एक गोधिक चल रही है । वह मुनि शाप से अभिशप्त एक कन्या थी । पुराने जमाने मे एक युवती शरीर मे तेल लगाकर एक तौलिया पहनकर नहाने के लिए नदी-तट पर जा रही थी । उस समय एक मुनि ने उस खूबसूरत युवती को देखा । मुनि की आँखें चार हो गयी । लेकिन युवती ने मुनि की बाते नही मानी । तपस्वी ने जबर्दस्ती उसके वस्त्र उतार दिये । बेचारी नग्न देह लिये वन मे भाग गयी । उस समय कामाध मुनि ने उसे शाप दे दिया । वह एक गोधिक हो गयी ! 'किसने मुझे यह कहानी सुनायी थी ? हाँ दिवगत चात्तुण्णि ने ही तो ।"

निशागधी एक अभिसारिका है । वह दिन भर सोती है । साँझ होते ही सज-धजकर सुगन्ध लगाकर लोगो को आकृष्ट करती है ।

निशागधी के नजदीक से अशोक वृक्ष के फूलने-फलने का दृश्य कितना सुहावना है । कन्निप्परपु के बाग मे एक अशोक वृक्ष के पौधे को लगाना चाहिए ।

अशोक की छाया मे बैठकर उद्यान की शोभा निरख सकते हैं जाती और मालती आपस मे इस निकुज मे गले मिलते हैं ।

गेट को पारकर कौन आ रहा है ? उपदेशी है । वह वाटर टैंक के नीचे से प्रार्थना करने आया है । दोपहर को वाटर टैंक के नीचे ठण्डापन रहता होगा । अरे, उपदेशी तुम प्रार्थना करो । ईसा मसीह की प्रार्थना करो—स्वर्ग मिलेगा ।

झुलसानेवाली इस दोपहर को, पार्क मे कितने आदमी है ? एक, पहरेदार के कमरे के बरामदे मे वातरोग से पीडित अपने पैरो को मोडकर लेटनेवाला माली पोक्कन मिस्तरी । दो, वाटर टैंक के नीचे हाथ जोडकर, सिर झुकाये हुए, ईसा मसीह की प्रार्थना करनेवाला उपदेशी । तीन, जाती के पेड और मालती की लताओ के मजुल निकुज की शीतल छाया मे विश्राम लेनेवाला महाकवि चेनक्कोत्तु श्रीधरन

श्रीधरन, तूने पी है । अच्छी देहाती शराब पी है । शराब सच ही बोलती है । जी हाँ, लिकर ऑलवेज स्पीक्स दी ट्रुथ । अपराध को प्रमाणित करने के लिए पुलिस अधिकारियो को परेशान होने की जरूरत नही है । अपराधियो को शराब पिलानी चाहिए । मद्य भीतर घुसना तो सत्य ही बाहर निकलता । लिकर गोज इन एण्ड आउट कम्स दि ट्रुथ •

अरे, शराब तेरा भी एक व्यक्तित्व है। चोरी, व्यभिचार आदि पापो को रगे हाथो नही पकडा जाय, तो फिर उन्हें छिपाया जा सकता है। पर शराब, तू ऐसी नही है। शब्दो से, बदबू से, बर्ताव से नही तो उलटी से, तू अपनी शक्ति और ऐश्वर्य को बाहर प्रकट किये बिना नही रहती ।

तभी गोविन्द कुरुप के होटल-बाथरूम के वाश वेसिन के मद्य की उलटी का स्मरण हो आता। उसका भी बदबूदार मलिनता का अपना व्यक्तित्व है।

माइनर अपराध क्या-क्या है ? झूठ, व्यभिचार, मद्यपान — क्या शराब पीना एक अपराध है ? इज ड्रिंकिंग ए क्राइम ? नही मालूम — इज इट टु बी पनिश्ड ? डोण्ट नो——क्राइम एण्ड पनिश्मेण्ट ? हू रोट इट ?—दि ग्रेट दोस्तोविस्की —ह्विस्की—ह्विस्की—ह ह ह !

नदी मे नहाने के बाद आनेवाले मन्द पवन के चुम्बन का ठण्डा आश्लेष— कितनी खुशी है ! एक गीत गाने की माध होती है। बचपन मे, ओनम के दिनो मे, इलजिपोयिल के जगलो मे साथियो के साथ फूल तोडने के लिए जाने पर सुने हुए एक गीत का स्मरण हो आया

छोटे ओनम की रात को—
छोटे ओनम की रात को—
चेरियम्मु युवती के
दोनो स्तन देखे नही
बाबूजी रोते हैं
माताजी रोती हैं—
मामा का लडका तो
    रोता है फफक-फफक
बडे ओनम के आगामी दिन—
तडके मे देखते है
दोनो स्तन, आँगन की
इमली की डाली पर।
बाबू जी हँसते है
माता जी हँसती हैं
मामा का बेटा तो
झट कूद पकड लेता है

सडक पर क्यो हल्ला-गुल्ला हो रहा है ? पार्क के कोने मे जाकर देखा। सडक से एक इक्कावान खाली गाडी खीचता हुआ आगे बढ रहा था। तीन-चार आदमी उस दृश्य को देखकर हँस रहे थे ।

पहले वह तमाशा मालूम नही हुआ। तब एक युवक ने उत्सुकतावश पूछा,

"अभी यहाँ क्या हुआ था ?"

श्रीधरन ने उनकी बातचीत पर ध्यान दिया।

"इक्कागाडी मे चढ़ने पर पैसा नही देगा तो वे कैसे चढाएँगे ?"

"किसके बारे मे कह रहे हैं ?"

"वहाँ खडा है मशहूर कुजिक्केलु मेलान —

श्रीधरन ने देखा। मैली शर्ट और धोती पहने एक व्यक्ति। हाथ ऊपर उठाकर एक पत्थर की प्रतिमा की तरह कुजिक्केलु मेलान सडक पर खडा था।

"इक्केवालो को देने के लिए क्या मेलान के हाथ मे पैसे नही हैं ?"

"जो पैसा मिलता है वह शराब की दूकान मे दे देता है। फिर इक्के मे चढ़ने के लिए पैसे कहाँ से बचेंगे ?"

"इक्के मे चढने का विचार छोडना ही होगा।"

"हाँ, लेकिन वह कैसे सम्भव होगा ?" बारह लाइट की कार मे उडनेवाला मेलान पैदल कैसे चल सकता है। पीलपा भी है। फिर कैसे वह चलेगा ?"

ठट्ठा मार हँसने की आवाज गूँज उठी।

मेलान अकड के साथ तब भी खडा था। बाये पीलपा पैर को ढककर एक पुरानी धोती पहन रखी थी। चेचक के धब्बो से भरे चेहरे मे मुर्दा आँख को ढकनेवाला चश्मा कहाँ गया ?

मेलान थोडी देर उधेडबुन मे खडा रहा। फिर पीलपा को धीरे-धीरे रखकर चलने लगा। पार्क के कोने से उत्तर की ओर चला गया।

मेलान के चले पाने पर उस कोने मे खडे एक आदमी ने कहा, "समुद्र की तरह विशाल घराने को पीनेवाला मद्य-पिशाच ही जा रहा है।"

श्रीधरन ने उस राय को प्रकट करनेवाले आदमी की ओर दृष्टि डाली। दाहिनी ओर चोटी और बाये कन्धे पर तौलिया डाले एक बुजुर्ग था।

उस बुजुर्ग की बातें श्रीधरन के मस्तिष्क मे तीर की तरह चुभ गयी। 'समुद्र की तरह विस्तृत घराने को पीनेवाला मद्य-पिशाच !'

27 वनवास

इण्टर के इम्तहान का नतीजा मालूम हुआ।

श्रीधरन तीसरी बार फेल हो गया है। (बाद मे मालूम हुआ कि अबकी बार फिजिक्स ने ही धोखा दिया था।)

मन को बेधनेवाली निराशा और आत्मनिन्दा की कटुता अब नही थी। लगता है, हार के काँटो की धार उतनी तेज नही रही।

पर, श्रीधरन के दिल को गहराई से चोट करने की एक घटना अगले दिन ही

हुई। 'छतरी की छडी' बालन का निधन।

बालन अपने शरीर के बाकी खून को बाहर पप करने के बाद चल बसा।

इम्तहान मे फेल होने के बाद फिर बैठने और शायद पास हो जाने की क्षमता अब भी है। लेकिन कितनी भी कोशिश क्यो न करें, स्वर्गस्थ बालन को इस दुनिया मे वापस नही लाया जा सकता। अज्ञात अनन्तता की ओर मनुष्य-कोटि के महा-प्रयाण मे बालन भी ओझल हो गया

जब बाबूजी को मालूम हुआ कि श्रीधरन फिर फेल हो गया है तब उन्होंने कुछ नही कहा। श्रीधरन ने बडी लगन मे अध्ययन कार्य किया था—यह बात बाबूजी को मालूम थी। पट्टर की ट्यूशन भी लगायी थी। दुर्भाग्य से ही हार गया। मास्टर को भय था कि परीक्षा म फेल होने की निराशा मे श्रीधरन कुछ-न-कुछ कर बैठेगा। इसलिए श्रीधरन को पास बुलाकर यो समझाया

"जन्मपत्री के अनुमार, तुम्हारा ममय बुरा है। उण्णिप्पणिक्कर से मैंने तुम्हारी जन्मपत्री की जाँच करायी थी। उसने कहा था कि इस बार परीक्षा मे पास होना मुश्किल होगा। इसलिए तुम्हे घबराने की कोई जरूरत नही है—"

ज्योतिषी पर पिताजी के विश्वास ने श्रीधरन को बचाया। अगर उण्णिप्प-णिक्कर के वचन के विरुद्ध श्रीधरन परीक्षा मे पास हो जाता तो कृष्णन मास्टर जरूर घबराते। कृष्णन मास्टर को ज्योतिष मे इतना अधिक भरोसा है।

"बाबूजी, क्या मै कुछ दिन के लिए इलजिपोयिल मे जाकर रहूँ ?" श्रीधरन ने पिता की अनुमति माँगी तो उन्होंने कोई विरोध प्रकट नही किया।

मन की शान्ति के लिए कही कुछ दिन रहने की श्रीधरन की इच्छा थी। उसके लिए अनुकूल जगह इलजिपोयिल ही थी।

अतिराणिप्पाट से अचानक चल देने की प्रेरणा देनेवाली बातो मे परीक्षा मे फेल हो जाने की शर्म से सरस्वती अम्माल से मिलने की विमुखता भी एक वजह थी।

सरस्वती अम्माल और श्रीधरन मे एक तरह का गुरु-शिष्य सम्बन्ध हो गया था।

भावी नॉवलिस्ट गोविन्द कुरुप ने जो ह्विस्की भेट की थी उसकी बदबू श्रीधरन के मुँह से सरस्वती अम्माल की नाक मे घुस गयी थी। उस दिन से थोडे दिनो के लिए श्रीधरन उस अय्यगर महिला की आँखें बचाकर दिन काट रहा था। पूजा के फूलो को तोडकर दोने मे भरकर बरामदे मे रखने के बाद वह चुपचाप गायब हो जाता। वह धर्मराज अय्यगर के ट्यूशन के लिए भी नही जाता। वह बातें बना देता कि उसने सब कुछ स्वय पढ-समझ लिया है।

यो एक दो हफ्ते बीत गये।

एक दिन फूलो की टोकरी ले जाने के समय अय्यगर नहाने के लिए तैयार

होकर बरामदे मे खडे थे। श्रीधरन को देखने पर उन्होने बहन को पुकारा। 'सरस्वती, श्रीधरन वान्दिरिक्कु' (सरस्वती, श्रीधरन आया है।)

सीढियो के निकट से सरस्वती अम्माल की पदचाप सुनी। श्रीधरन का दिल अचानक काँप उठा।

सरस्वती अम्माल दरवाजे पर खडी थी।

"श्रीधरन, सरस्वती सेज शी वाट्स टु लर्न मलयालम। यू मस्ट टीच हर टु रीड एण्ड राइट मलयालम "

गुरु अय्यगर का आदेश—अपनी बहन को मलयालम सिखाने का!

श्रीधरन ने सरस्वती अम्माल के चेहरे की तरफ उत्सुकता से देखा। सरस्वती अम्माल के चेहरे पर मुस्कान थिरक रही थी।

श्रीधरन का हृदय खुशी के मारे धडकने लगा।

(ऐसी हालत से उस पवित्र विधवा को उस दिन मुझ से जो घृणा हुई थी वह अब विलुप्त हो गयी है। बहन को मलयालम सिखाने के लिए अय्यगर ने अपने आप नही कहा होगा। उसने जरूर कहलाया होगा)

"हाँ, मैं तैयार हूँ।" श्रीधरन ने उसकी बात मान ली। फिर बेवकूफ की तरह हँसते हुए कहा, "आइ वाण्ट टु लर्न तमिल—दिस विल बी ए गुड अपॉरचु-निटी "

"वेरि गुड!" अय्यगर ने अपने मुंह की चाँदी की पतीली-से बडे दाँतो को बाहर निकालते हुए कहा, "देन बोथ ऑफ यू केन गिव म्यूच्वल लेसन्स।"

इस प्रकार मलयालम पढने मे सरस्वती अम्माल श्रीधरन की शिष्या बन गयी— इधर तमिल पढने मे श्रीधरन सरस्वती अम्माल का शिष्य बन गया।

उस तमिलवाली से 'ष' और 'ना' का ठीक तरह से उच्चारण कराने मे कुछ कठिनाई महसूस हुई। कुछ विकृत वाक्यो को बनाकर सरस्वती अम्माल की जीभ और गले मे एक लुब्रिकेशन बना दिया।

सरस्वती अम्माल का तमिल-शिक्षण दार्शनिक बातो से भरा था। 'तिरुक्कुरल' और 'पुरनारुरु' आदि से वह उद्धरण प्रस्तुत करती।

श्रीधरन को तमिल की दो पक्तियाँ मालूम थी। कुछ दिनो पहले देहात के कोने से रावुत्तर मौलवी ने 'आट्टेयु काट्टेयु नपलाम् अन्त "नामक एक गीत गाया था। वह गाकर अपने तमिल ज्ञान को सरस्वती अम्माल के सामने प्रकट करना चाहा। पर, श्रीधरन को लगा कि उस पद्य की आखिरी पक्ति कुछ खतरनाक है।

श्रीधरन पहले-पहल ही एक युवती से यो निकट का बर्ताव कर रहा था।

एक बार श्रीधरन ने 'ई' नामक तमिल लिपि को गलती से 'ऊ' लिख डाला तो सरस्वती अम्माल ने पेन्सिल से श्रीधरन के अँगूठे को जरा दबा दिया। गुरु का दण्ड! उस मृदुल दण्ड ने श्रीधरन के हृदय मे नयी गुदगुदी पैदा कर दी।

उसने प्रार्थना की कि सरस्वती अम्माल पेन्सिल से उगली दबाने की जगह बेंत से पीठ पर मारती तो कितना अच्छा होता !

मलयालम मे पेन्सिल से नकल करने के लिए सरस्वती ने कुछ लिखा । अँगुलियाँ पतली अग्निज्वाला-सी कागज़ पर हिल रही थी। लगा कि छूने पर जल जाएगा। उस चेहरे मे पूर्ण-चन्द्र की तरह प्रशान्त ज्योति छिटक रही थी · उस पुण्य लावण्य मे नयन-पूजा कर वह निर्वृति पा रहा था

इस प्रकार सरस्वती अम्माल के सान्निध्य को हृदय मे दिव्य ज्योति के रूप मे प्रकट होने के दिनो मे ही श्रीधरन वनवास के लिए इलजिपोयिल रवाना हुआ। इलजिपोयिल के आकार-विस्तार मे समय कई ज्यादतियाँ कर चुका था। पुराने जमाने मे दो टीलो के बीच फैला हुआ वह कृषक-साम्राज्य आज तबाही की हालत मे था। पूर्व दिशा के खेत दूसरो के अधिकार मे थे। विदेशी पक्षी पहले जिस झील मे आकर विहार करते थे, उसे पाट दिया गया था और वहाँ चावल की खेती की शुरुआत की गयी थी।

छठे खेत के ऊपर के जगल का एक हिस्सा काजू के बाग मे परिवर्तित हो गया था।

इलजिपोयिल घराने की जमीन सिर्फ चार खेतो मे सीमित रह गयी थी।

जिस चरागाह मे गाय-बैल पागुर करते थे, वह भी दिखायी नही दिया। उस जगह अब घास-फूस बढ रहा था।

लेकिन आँगन के मौलसिरी पहले की ही तरह अब भी पुष्प-वृष्टि करते हुए वही खडे थे।

दोपहर को श्रीधरन छठे खेत की ओर घूमने निकला।

छठे खेत के उस पार नये काजू का बाग है। बाग की सीमा मे उसके मालिक ने काँटेदार बाड से रास्ता रोक लिया था।

चन्दोमन के कोने की तरफ निगाहे घुमायी। चन्दोमन और तिरुमाला की दास्तान स्मृति मे नाच उठी।

प्रेम की दास्तान कभी पुरानी नही होती। (पुरानी होने पर भी प्रेम-कथाएँ सुनने पर ताज़ी ही लगती है। किसने ऐसा विचार प्रकट किया था ? लगता है, जर्मन कवि हेरिचुहीन का ऐसा कथन था।) नये बाँसो के झुरमुट ने उस कोने को ढक लिया है। करुणामयी प्रकृति ने अपने हरे रेशम से युक्त एक पडाल चन्दोमन के गड्ढे के ऊपर लगा दिया था।

बाँस के जगल से एक मधुर कूजन सुनाई दिया। शायद मैनाओ का प्रेम-गीत होगा।

बाडी के नज़दीक की सूखी घास पर एक हरकत महसूस हुई। एक साँप सरक रहा था—बडा काला नाग। वह चन्दोमन के कोने के बाँस के जगलो मे ही सरकते

हुए चला जा रहा था। शायद वही उसका बिल होगा। चन्दोमन और काला नाग एक ही छत के नीचे निवास कर रहे हैं। उण्णिक्कुट्टि भी साथ होगा। मुस्लिम दगे मे शरणार्थिनी होकर इलजिप्पोयिल रहनेवाली अम्मालु अम्मा का लाडला लडका उण्णिक्कुट्टि। अब तो काला नाग उण्णिक्कुट्टि का खिलौना बन गया होगा।

बाडी के नजदीक के कुछ पौधो मे फूल खिले थे। एक मधुमक्खी फूल से शहद सचित कर रही थी। श्रीधरन उत्सुकता से देखता रहा। मक्खियो का मधुशोषण देखने मे आनन्द आता है। एक मधुमक्खी अपने शरीर से दस गुना अधिक शहद हर रोज कमाती है। आधा किलो शहद सचित करने के लिए फूलो और शहद के छत्तो मे सैंतीस हजार बार उडती है—इस हिसाब की याद मन मे ताजा रहने का क्या कारण है। वह एक रोचक बात है। रोचक बात कभी नही भुलायी जाती। दुखद बातो को भूलने की चेष्टा करनी चाहिए। लेकिन 'छतरी की छडी' बालन की मृत्यु की घटना भूलने की कितनी ही कोशिश करने पर भी वह भूल नही पाता। पुलिस की मार से ही बालन चल बसा था, ऐसा विचार आते ही छाती मे साँप डसने की-सी पीडा महसूस होती है।

तभी आम के बगीचे से कल-कल नाद सुन पडा। वह चिडियो की चहचहाहट नही थी।

श्रीधरन ने बाड के नजदीक से छिपकर देखा एक बडे आम के पेड के पत्तो के झुरमुट से एक यक्षी प्रकट हुई! एक मोटी मध्य वयस्क मुस्लिम महिला! वह पर्दे को अपने सिर पर डालकर कुछ न कुछ बकते हुए बाग से पूर्व दिशा की ओर चली गयी।

हरे पत्तो के शामियाने मे उसका गन्धर्व विश्राम करता होगा।

दोपहर को काजू के बाग मे ठण्डी छायाओ की दौड-धूप होती है। आम्र-वृक्ष से सूखे पत्ते झडकर जमीन पर प्रेमी-प्रेमिकाओ के लिए अच्छी सेज बिछा देते हैं। प्रेमियो के गुप्त मिलन के लिए यह जगह काफी अनुकूल है।

इस खोल से वह हल्का धुआँ उड रहा है। शायद गन्धर्व बैठकर चैन से धूम्र-पान करता होगा। उसे एक दफा देखना चाहिए। लेकिन क्यो? बस यो ही सिर्फ एक बार देखने के लिए भर। शायद परिचय नही होगा। नयी पीढी का प्रतिनिधि जो होगा।

बडी देर तक इतजार करने पर भी वह बाहर आता नजर नही आया। फिर मालूम हुआ कि काजू की झाडियो की ओट से वह उत्तर दिशा की ओर बढ़कर उस पार जगल मे अप्रत्यक्ष हो गया है।

वह तो गन्धर्व ही है।

"टगन-ठगठन-ठगठन" गिरिजाघर से घण्टी बजने की-सी आवाज सुनायी दी। गर्दन उठाकर देखा छठे खेत के दक्षिण पूर्वी कोने मे अकेले खडे नारियल के ऊँचे

छोर से ही वह घण्टानाद सुनाई दे रहा है। काले रेशमी फीते-सा एक मस्सा। एक फुट लम्बी लटकती पूंछ। देखने पर मालूम हुआ—'कौआ काका' था।

लम्बे अर्से पहले अप्पु ने कहा था, 'कौवे काका' को देखने पर शोरगुल मचाना चाहिए। 'कौवा काका' क्यो अपमानित हुआ, इस सम्बन्ध मे एक कहानी भी उसने कही थी।

अन्तर्जन अपने पति के शाप से ही एक काली चिडिया के रूप मे बदल गयी थी। शाप देने का कारण यह था कि अन्तर्जन (नपूदिरि की औरत) का एक हरिजन युवक के साथ सह-शयन करने का दृश्य नपूदिरि ने अपनी आँखो से देख लिया था। (अप्पु की कहानियो मे इस दुनिया की सभी चिडियाँ शापग्रस्त मानवियाँ ही हैं।)

पर, अब अप्पु को देखने पर जोर से पुकार कर उसका मजाक उडाना है क्योकि अब वह अपने मोहल्ले को छोडकर वयनाटु मे रहता है। अप्पु के पिता बैल-गाडीवान शराबी तय्यन को मरे दो साल हो गये। उस वयनाटु मे एक जगली हाथी ने कुचलकर मार डाला था। पिता की मृत्यु के बाद अप्पु ने अपना घर और अहाता एक मुसलमान को बेच डाला और स्वय वयनाटु मे चला गया। पिता ने जिस औरत को रखैल बनाया था उस विधवा चेट्टिच्चि के यहाँ वह अपने दिन गुजार रहा है।

पूंछ पसारकर विश्राम करने वाले 'कौआ काका' के नारियल की खूबी की झट याद आ गयी। श्रीधरन ने ही उस नारियल के पौधे को लगाया था। दादाजी ने विरुवातिरा के शुभ सन्दर्भ मे छठे खेत के एक गड्ढे मे छोटे मुन्ने के हाथ से द्वीप के नारियल का पौधा लगाया था। उस पेड के फलने के पूर्व दादाजी चल बसे। नारियल के गुच्छो मे कई फल थे। उन्हे देखने पर श्रीधरन को बेहद खुशी हुई। श्रीधरन ने निश्चय किया कि घण्टी बजाकर उस नारियल पर अपना ध्यान आकृष्ट करने वाले 'कौआ काका' की प्रशसा मे एक गीत की रचना करनी होगी।

छठे खेत की पश्चिम सीमा की पुरानी दीवार और वहाँ की बाड की तबाही हो गयी थी। दीवार को लाँघकर चारो ओर का मुआइना किया। पुराने जगल का मध्य भाग उसी प्रकार खडा था। जाती और जामुन अब भी खडे है। जाती का एक फल तोडकर खाया। पर, वैसा स्वाद नही लगा।

श्रीधरन अकेले ही जगल मे घूमने लगा। चट्टानो के सफेद पत्थर दोपहर की धूप से रत्न-प्रभा का प्रसार करने लगे थे। इस प्रकार चलते-चलते टीले की ओर एक तराई मे पहुँच गया। एक कोने से एक बाँस ने दृष्टि को रोक लिया। लम्बे वर्षों के बाद भी वह दुबला-पतला बाँस एक मार्गदर्शक की तरह वही खडा है—अप्पु के अहाते मे इधर से ही जाया जा सकता है।

तभी नारायणी की याद आ गयी।

सब लोग नारायणी को छोडकर चले गये है। वह अहाते के एक कोने मे नित्यकन्यका होकर लेटी है। अमरूद के फलो को हडप लेनेवाले चमगादड को दूर भगाने के लिए अब उसको पहरा देने की जरूरत नही है। वह अहाता अब दूसरो का हो गया है।

नारायणी की कब्र को देखने की इच्छा को वह सवरण नही कर सका।

नजदीक की चट्टान के निकट लटकते कुछ फलो के गुच्छो को देखा। तुरई नारायणी को अत्यन्त प्रिय था। तुरई के फलो को तोड उन्हे एक बडे पत्ते के दोने मे रख लिया।

चट्टानों और कटीले पौधो से भरी जगहो से आगे बढा। एक तग पगडडी के सामने पहुँच गया। कटीले पौधो, घास, छुई-मुई आदि के भर जाने की वजह से पगडडी का मुंह बन्द हो गया था। लम्बे अर्से से लोग इधर मे नही गये होगे। उधर पैर रखने मे डर महसूस हुआ। लेकिन मन ने फुसफुसाया नारायणी की कब्र को जरूर देखना है। थोडी देर के बाद इस तग पगडडी मे उतरने का निश्चय किया।

दीवार की कटीली डालियो को हटाकर पत्थर और गड्ढो से भरी राह से दस-बीस फुट दूर जाने पर दीवार के एक हिस्से की छोटी गुफा के सामने वह पहुँचा। श्रीधरन मे अचानक उस गुफा मे एक राक्षस को बैठे देखा। वह एकदम सिहर उठा। पर, श्रीधरन को देखते ही वह राक्षस झट उठकर पगडडी के नीचे की तरफ दौड गया।

श्रीधरन हक्का-बक्का रह गया। काला-कलूटा अर्धनग्न एक आदमी ही वहाँ से खिसक गया था।

उस गुफा मे पत्थरो का एक चूल्हा, चूल्हे के ऊपर तांबे का एक बडा बर्तन और तांबे के बर्तन मे लगी हुई एक बडी नली देखने पर बात पकड मे आयी — नकली शराब बनाने का कारोबार है।

उस मोटे आदमी ने अजनबी इन्सान को देखने पर समझा होगा कि एक्साइज का कोई नौकर है। छुपकर मद्य को कब्जे मे करने के लिए ही आया होगा। इसी-लिए वह उधर से भाग गया था।

श्रीधरन हँस पडा। फिर उस पर विचार करने पर कुछ डर-सा महसूस हुआ। अगर उस राक्षस को मालूम हो जाता कि अजनबी व्यक्ति अकेला ही है तो एक बडा सकट खडा हो जाता। अगर वह मेरा कत्ल कर लाश वही छोड देता तो भला किसे पता चलता? अचानक घबराहट होने के कारण ही उस बेवकूफ ने वहाँ मे भाग जाने की बात सोची होगी। श्रीधरन का यह सौभाग्य ही था।

श्रीधरन को लगा कि अब वहाँ खडा होना उचित नही है। नुकीले पत्थर, कांटे और गड्ढो की परवाह किये बिना हडबडी मे नीचे उतर गया। अन्त में, वह

अप्पु के पुराने अहाते के कोने मे जा पहुँचा।

अप्पु के घर के बरामदे मे एक मुसलियार कोई किताब पढ रहा था। फाटक के नजदीक के जासौन के पौधे की जगह नारियलो का ढेर दिखाई पडा। मौलसिरी के पेड से झडे फूल नीचे ज़मीन पर बिखरे पडे थे।

श्रीधरन शकित-सा खडा रहा। क्या उस अहाते मे जाना है? अहाते के दक्षिण कोने मे ही नारायणी की कब्र है। नारायणी को किस जगह दफनाया गया था, उसे देखने के लिए ही इधर आया था। पर, बूढे मुसलियार से वह कैसे यह बात कहे? फिर भी वापस जाने की इच्छा नही हुई।

आखिर उस अहाते के भीतर घुस ही गया। उसने तुरई के फल से भरे दोने को कमीज़ के अन्दर छिपा रखा था।

मुसलियार ने किताब रख दी। उसने नाक का चश्मा माथे पर चढ़ाकर आँगन की तरफ आँखे फाडकर देखा।

"मुसलियार, मुझे नही जानते क्या? मैं इलजिगोयिल मामा के घर आया था " श्रीधरन ने हँसते हुए कहा।

मुसलियार को आगन्तुक की पहचान हुई।

"तुझे बचपन मे देखा था। अब तो तू इतना बडा हो गया! आ इधर आ, ज़रा बैठ तेरा नाम क्या था?"

"श्रीधरन।"

"हाँ—चीतरन—चीतरन"

"तू इधर क्यो आया है?"

"इस अहाते के अमरूद खाने की इच्छा हुई। पहले जब अप्पु इधर रहता था तब अमरूद खाने आया करता था। इसी की याद कर इधर आ गया।"

मुसलियार मसूडे दिखाकर हँस पडा।

"अमरूद मे अब फल कम ही लगते है—फल लगते ही चमगादड इन्हे खा लेता है—तू ज़रा जाकर देख—पेड मे जो कुछ है तोडकर खाले ।"

श्रीधरन दक्षिण के अहाते मे जाकर खडा हो गया।

नारायणी की कब्र बिलकुल लुप्त हो गयी थी। उस जगह को पाट कर वहाँ मूँग बोयी गई थी। मूँग के किसी मोड के अन्दर ही नारायणी लेटी होगी।

मूंग के फूलो से क्या नारायणी ही हँस रही है?

अमरूद के पेड पर नज़र डाली। उसकी एक डाल पर एक स्वर्ण-गोल के रूप मे एक फल लटक रहा था (क्या वह नारायणी की कब्र की तरफ ही लटक रहा है!)

कमीज़ के अन्दर से तुरई फल का दोना लेकर उस कब्र पर समर्पित किया··· अनजाने मे ही आँखे गीली हो आयी।

निज-निज कर्मों के चक्कर मे पड
फिरते रहते जीव करोडो सीमाहीन
बीच-बचाव की गति मे आपस मे
मिलनेवाले अणुगण है हम ।

27 जमाने का व्यग्य

"अरे, रुक जा—अरे, रुक जा "

रिक्शेवाला नही रुका। वह अपनी गाडी लेकर अचानक चला गया।

वह आदमी और कोई नही था। केलचेरी मेलान ही था। रिक्शे का भाडा उस दिन भी उधार ही था।

कुजिक्केलु मेलान घमण्ड से वहाँ खडा रहा। हाँ, यहाँ तो और रिक्शेवाले हैं न ?

लेकिन उस वर्ग मे कोई भी उस रास्ते पर नही आया। जहाज का पुराना मालिक मेलान उस कोने मे है—रिक्शेवाले ने अपने सहजीवियो को इसकी चेतावनी दे दी थी।

मेलान का लक्ष्य नजदीक की शराब की दूकान था।

तभी बुजुर्ग कुजुण्णि नायर आता हुआ दिखाई दिया। वह मेलान को देखकर बडे अदब से खडा हो गया।

"छह आने दे दो।" मेलान ने खुसुरफुसुर की।

कजुण्णि ने जेब से एक रुपया लेकर बडे अदब के साथ दिया। मेलान ने रुपया अपनी जेब मे डाला। "ऊँ—जाओ—हाँ एक बात ! वहाँ किसी रिक्शेवाले को देखो तो इधर भेज देना। सुना ?"

वह 'हाँ' कहकर धीरे-धीरे चला गया।

पहले मेलान एक जहाज का मालिक था। वही आज छह आने की भीख माँग रहा है। छह आने यानी एक गिलास शराब का पैसा—हाय भगवान ! यह तेरी कैसी माया है ! कुजुण्णि नायर ने अपनी आँखें ऊपर की ओर उठायी। वह अपने आप फुसफुसाया।

"अरे, रुक जा।"

रिक्शेवाले ने अदब के साथ रिक्शागाडी रोक दी। मेलान ने गाडी मे फुर्ती से चढकर आज्ञा दी "शराब की दूकान की तरफ।"

हुक्म के अनुसार रिक्शेवाले ने मेलान को शराब की दूकान तक पहुँचा दिया। मेलान नीचे उतरकर शराबखाने की तरफ चल पडा। "मजूरी का हिसाब रखना।" मेलान रिक्शेवाले से बताना नही भूला।

रिक्शेवाला हँसता हुआ वहाँ से चला गया।

उस बूढे नायर ने रिक्शे का मेहनताना आठ आने पेशगी दिये थे। नही तो इस गाडी में चढने की किस्मत मेलान को कैसे मिलती?

"एक गिलास" मेलान ने आर्डर दिया। "एक अण्डा भी ले आ।"

कुट्टुगॉन ने हाँडी से एक गिलास भरकर मेलान के हाथ मे थमा दिया। फिर एक कटोरे मे उबला हुआ अण्डा भी वहाँ रख दिया।

मेलान ने तुरन्त गिलास खाली कर दिया। फिर अण्डा खाते हुए वहीं बैठ गया।

कुट्टुगॉन ने और एक आधा गिलास हाँडी से लेकर मेलान के हाथ मे थमाने के बाद कहा, "यह मेरी ओर से। इसे पीकर जल्दी यहाँ से उतर जाना।"

कुट्टुगॉन की बात सुनकर मेलान नाराज हो गया वह कहता है कि मेरी तरफ से पीलो और चलते बनो! मेलान के अभिमान को भारी चोट लगी। एक पल उसने उस पर विचार किया। शराब पीकर ओठो को पोछते हुए कुट्टुगॉन की ओर आँखें तरेरकर देखा, "अरे, केलचेरी कुञ्जिक्केलु मेलान को तेरी फ्री की जरूरत नही है। समझा!" एक रुपये का सिक्का कुट्टुगान के सामने फेंककर शान से छाती फुलाते हुए वह जल्दी-जल्दी चलने की कोशिश करने लगा।

शराबखाने के मालिक कुट्टुगॉन ने लाचार होकर ही मेलान से ऐसी बातें कही थी। अपने व्यापार पर जाँच आने की बात थी। नकद पैसा देकर आधा या एक गिलास पीने के बाद मेलान फिर वही बैठता। वहाँ पीने के लिए आनेवाले अन्य ग्राहक मेलान को देखकर आधा गिलास खरीद देते। अगर वे उस पर आनाकानी करते तो मेलान आदेश देता, "अरे, मेरे लिए एक का आर्डर दो!" केलचेरी घराने की महिमा पर विचार कर अधिकाश लोग मेलान को हताश नही करते। मेलान इस तरह एक लालची प्रेत की तरह वही बैठता। अगर शराबखाने मे मेलान बैठा होता तो ग्राहक उधर मुडकर भी नही देखते। यो कुट्टुगॉन के व्यापार मे आँच आने लगी। कुट्टुगॉन मन मे कोसता, पर केलचेरी मेलान से उठकर चले जाने को कहने के लिए उसकी जीभ नही हिलती। आज उसने खुल्लम-खुल्ला कह दिया मेरी तरफ से यह पी लो और चलते बनो।

मेलान रिक्शे की प्रतीक्षा मे सडक के नजदीक खडा रहा। तभी किट्टन मुंशी वहाँ आ पहुँचा। वह सुंघनी खरीदने आया था। पर दुर्भाग्य से मेलान के सामने ही पड गया।

"छह आने दो" मेलान ने हाथ पसारा।

"मेलान, अभी हाथ मे छह आने नही हैं।"

"जेब मे साढे तीन आने तो होगे?"

"जेब मे कुल साढे तीन आने ही हैं।" किट्टन मुंशी ने रोनी सूरत से कहा।

"नही चाहिए—जाओ "

किट्टन मुशी को मालूम था कि आधे गिलास से कम पैसा वह स्वीकार नही करता। उसे केलचेरी घराने की शान पर भी तो ध्यान रखना है। कभी-कभी मेलान भी कुछ दार्शनिक विचार प्रकट करता।

छाती के पके बालो को सहलाते हुए मेलान वही खडा रहा। कोई अमीर जरूर आना होगा। मुझे तो सब लोग जानते है।

"उग्रव्रतन मुनि वमिक्कुमोरुरिल " दोपहर को इलजिपोयिल के छठे खेत के नजदीक के जगल के एक कोने मे एक वृक्ष की डाल पर बैठकर श्रीधरन कुमार नाशान के 'कुयिल' (कोयल) के श्लोको को कठस्थ कर रहा था। तब मन अकारण ही अतिराणिप्पाट मे भ्रमण करने लगा और सरस्वती अम्माल तक जा पहुँचा।

क्या सरस्वती अम्माल मेरे बारे मे सोचती होगी ? उस ब्राह्मण विधवा के मनोभाव के बारे मे कुछ भी अन्दाज नही लगा सकता। उसके मलयालम गुरु बनने मे नही, बल्कि उसके विनीत शिष्य बनकर व्यवहार करने मे ही गहरे आनन्द का अनुभव हुआ है। व्रत मे बैठी एक सन्यासिनी का चेला बनने मे खास खुशी महसूस होती है। सरस्वती अम्माल के सौन्दर्य, विशुद्धि और विचित्र स्वभाव मे से किसन मुझे आकृष्ट किया था ? शायद इन सभी की खूबियाँ होगी। उस दिन ह्विस्की की बदबू मेरे मुँह से निकलने पर उसने जो नजर फेकी थी वह क्षुब्ध काली माता की थी, लेकिन फिर उसके बारे म उसने न तो मुझसे कुछ पूछा, न कुछ कहा। इस घटना के बारे मे उसने हल्की सूचना तक नही दी। उसके बाद जब उसने पहले-पहल मुझे देखा तो वह मुस्करायी थी। अपूर्व ही थी वह मुस्कान ! उसने मेरे परीक्षा मे फेल हो जाने की बात अपने बडे भाई से जान ली होगी। लेकिन वह मुझसे इस सम्बन्ध मे कुछ नही कहती, कुछ नही पूछती। उसका चरित्र उसी तरह था। सरस्वती अम्माल का स्मरण आने पर बुरे विचार मन मे नही उठते। अम्माल को वह एक महिला ही नही, एक शक्ति के रूप मे भी देखता है। उस देवी के सामने अपना बलिदान देने की इच्छा होती है

काँच के दरवाजे के बरामदेवाले एक खूबसूरत बगले के सामने ही रिक्शा वाला वेलु कुजिक्केलु मेलान को उतारकर चला गया था। तब तक साँझ की धुँध छा गयी थी।

वेलु ने बडी चालाकी से ही वह काम लिया था। "मेलान, जरा उतरकर खडे रहो। जरा दीपक जलाने दो। मोमबत्ती और माचिस नीचे की सदूकची मे है।" वेलु अदब से कहा।

शराब पीकर बेहोशी की हालत मे होने पर भी मेलान अपना पीलपा उठाये सडक पर खडा रहा। तभी अवसर देख वेलु गाडी लेकर वहाँ से खिसक गया।

बेचारा वेलु। उस दिन दोपहर को दुर्भाग्य से मेलान के जाल मे फँस गया।

पहले उसने मुड़कर भागने की चेष्टा की। फिर अचानक मेलान की रेशमी कमीज़ की जेब मे दस रुपये का नोट सिर उठाये देखा। पैसा हाथ आने पर मेलान कजूसी के बिना मेहनताना देता है। महीने की पाँचवी तारीख थी। रिसीवर से (केलचेरी रिसीवर के शासन मे थी) मेलान को प्रति मास एक-सौ रुपये एलाउन्स मिलता है। वेलु को प्रसन्नता हुई कि एलाउन्स मिलने का समय है। मेलान को रिक्शे मे चढाया। उसका लक्ष्य नज़दीक की शराब की दूकान ही था। रास्ते मे एक स्टेशनरी दूकान के निकट पहुँचने पर मेलान ने वेलु से कहा, "अरे, एक पैकेट गोल्ड फ्लेक ले लो। चिल्लर हो तो दे दना—"

वेलु ने अपने हाथ से दस आने देकर गोल्ड फ्लेक सिगरेट खरीदी और उसे मेलान के हाथ मे थमा दिया।

शराबखाने मे पहुँचने पर मेलान ने गाडी से उतरकर कहा, "तुम मत जाओ। यही खडे रहो।" वेलु भी यही चाहता था। पन्द्रह मिनट बीत गये। शराब पीने के बाद ओठ पोछकर मेलान वापस आकर रिक्शे म बैठ गया।

"अब कहाँ चलना है ?" वेलु ने पूछा।

"मून्निलजिकल।" मेलान ने सिगरेट का कश छोडते हुए हुक्म दिया।

मून्निलजिकल शराबखाने से भी आखिर वापिस आ गया।

"अब अटक्का मोहल्ले म "

वेलु मन मे फुसफुसाया कि मेलान को क्या एक ही शराबखाने से पीना काफी न था। पर, यह तो मेलान का व्यसन था। हर शराबखाने म जाते समय उसको नया जोश मिलता। वेलु को भी इस बात की खुशी थी कि अधिक दूर जाने पर उसको अधिक किराया नसीब होगा।

अटक्का मोहल्ले के मदिरालय से भी वापस आगया। फिर कूनमुक्कु की ओर जाने का आदेश दिया गया।

कूनमुक्कु के मदिरालय से उतरने पर भीतर गाली बकने की आवाज़ सुनाई दी—"भिखारी! शराब का पैसा पूरा चुकाये बिना ही उतरकर चला जाता है ।"

मेलान वडे गौरव-भाव से रिक्शे मे जाकर बैठ गया। तब वेलु ने नग्न सत्य समझ लिया। मेलान की कमीज़ की जेब खाली है! उसने फिर नही पूछा कि किधर जाना है ? रिक्शे का भाडा तो हमेशा की तरह नही मिलेगा। इसके अलावा सिगरेट के दस आने भी हाथ से निकल गये। परिवार को आज भूखो रहना पडेगा। उस बगले के सामने पहुँचने पर वेलु ने अकल से काम लिया। मेलान को मोहल्ले मे मारा-मारा फिरने को छोडते हुए उसने अपना रास्ता नाप लिया। उसे उस दिन के भोजन का पैसा कमाने के लिए अब और दौडधूप करनी होगी।

क्या वेलु ने जानबूझकर ही उस बगले के सामने मेलान को उतार दिया था ?

बारह साल पहले कुजिक्केलु मेलान ने भूलोक रंभा ककडी कल्याणी को उसी महल मे रखा था।

मेलान ने अर्धबेहोशी की हालत मे उस महल की तरफ निगाहे घुमायी। झट उसके अन्दर एक नीली रोशनी की चमक हुई।

कल्याणी का सोने का-सा शरीर, ताड के गुच्छे-से बाल और मधु मुस्कान मेलान की खोपडी मे सुन्दर स्वप्न की तरह रँग आये।

अब वहाँ एक गुजराती मुस्लिम सेठ रहता है। भीतर से ग्रामोफोन पर गीत गूँज रहा था

"तुम ने मुझ को प्रेम सिखाया—
तुमने मुझको "

पहले कुजिक्केलु मेलान ने प्रणय-कलह का प्रदर्शन करनेवाली ककडी कल्याणी के सामने एक सौ रुपये का हरा नोट मेज की बत्ती की ज्वाला मे दिखाकर उसे गोल्ड फ्लेक सिगरेट से सुलगा दिया था। क्या मेलान के मन मे इसकी याद अब भी ताजा है? कौन जाने?

मेलान ने जेब से सोने के रग का गोल्ड फ्लेक सिगरेट पैकेट बाहर निकाला। देखा, खाली था। उसे दूर नाले मे फेक दिया। फिर बगले के पत्थर की सीढी पर पीलपा रख थोडी देर तक विचार किया। फिर हौसले के साथ सीढियाँ चढा। बन्द दरवाज़े को उसने बार-बार खटखटाया।

एक भारी भरकम देहवाले मुसलमान ने आकर दरवाजे से देखा। हल्के अँधेरे मे आदमी को नही पहचाना गया।

"कौन है वहाँ?"

"यह मैं मैं मैं हूँ—केलचेरी का कुजिक्केलु मेलान।"

सुनकर मुसलमान एकदम चौक उठा।

"मेलान को अब क्या चाहिए?"

"मुझे उस कमरे मे बैठना है।"

"किस कमरे मे?"

"मेरी कल्याणी के कमरे मे—"

"अरे वीरान, कौन है वह?" अन्दर से सेठ ने पुकारकर पूछा।

"एक शराबी है, मालिक।"

"उस शैतान को दो थप्पड लगाकर भगा दो।"

वीरान असमजस मे पड गया। कुजिक्केलु मेलान को उस हालत मे देखने पर वीरान को हमदर्दी हुई। मेलान की धोती कमर से खिसकने लगी थी। सिर बोझ से छाती पर लटकने लगा था। फिर भी मेलान अपनी शान-शौकत को नही छोड सका था।

"अरे, दरवाजा खोलो" मेलान ने दरवाजे को पीटते हुए कहा।

महल के भीतर से एक ग्रॉमोफोन पर वही गीत चल रहा था

"तुमने मुझ को प्रेम सिखाया—तुमने मुझ को · "

बीरान फिर भी सकपकाकर खडा रहा। केलचेरी घराने का बीरान पर एहसान था। कुजिक्केलु मेलान के अगरक्षक लौहपुरुष पोक्कर का बहनोई है बीरान। (लौहपुरुष पोक्कर अब पक्षाघात से पडा हुआ है। दाहिना हिस्सा पूर्णरूप से सुन्न हो गया था।) केलचेरी के यहाँ से पोक्कर द्वारा चोरी से लाये गये सामान को बीरान ही गुप्त रूप से बेचता था। केलचेरी की एक बडी कडाही बीरान के घर मे अब भी पडी है। पहले केलचेरी मे हर साल सपन्न होनेवाली दावतो मे आम लोगो के भोजन की सब्जियो को सचित करनेवाली दो बडी नावो को काटकर काठ के मूल्य पर बेचते समय बीरान ने ही उसे खरीदा था।

"अरे, जल्दी दरवाजा खोलो !" मेलान गरज उठा।

बीरान हौले से दरवाजा खोलकर बाहर आया। मेलान को धोती पहनाकर उसका हाथ पकडकर वह कान मे फुसफुसाया

"मेलान, अब जाओ जिस कमरे मे ककडी 'कल्याणी' पहले सोती थी उस कमरे मे अब सेठानी ही सोती हैं "

"अरे हरामजादे, मुझे आज्ञा देनेवाला तू कौन है ?" मेलान ने हाथ को झिडककर महल मे घुसने की कोशिश की। बीरान ने फिर आव देखा न ताव, मेलान को उठाकर सडक के एक कोने म लकडी के गट्ठे की तरह पटक दिया।

"किणी—कीणीग—किणी—कीणीग घण्टी बजाती हुई एक इक्कागाडी तेजी से आयी। गाडीवान ने फौरन घोडे की लगाम खीच ली। गाडी जरा हिली-डुली और ऊपर उठी। सफेद घोडा मुंह फैलाकर पैरो को उठाकर नाचा।

इक्का-गाडी के सामने एक इन्सान बिना कपडे-लत्ते के लेटा था।

"किस हरामी को इधर लिटा दिया है ?" चोयी शाप देते हुए नीचे उतरा।

"कल्याणी, कल्याणी—मेरी दुलारी ।"

श्रीधरन एक आम्रवृक्ष की डाल पर बैठकर 'तिरुक्कुरल' का पारायण कर रहा था। दोपहर का समय था।

गेरुआ कपडे से सिर ढके कोई दूर से आता दिखायी दिया। श्रीधरन ने 'तिरुक्कुरल' पढना बन्द कर उस आकृति को ध्यान से देखा। वह पुरुष है या महिला ? ठीक से पहचान न सका। श्रीधरन के बैठनेवाले आम के पेड की तरफ ही चला आ रहा था वह। शुभ्र अग्निशिखा की तरह आलोकित एक गोलाकार चेहरा। घुटनो तक लटकनेवाला गेरुआ कपडा पहना हुआ था। कुम्हडे की कली-सा पैर का निचला भाग बाहर दिखाई देता था। एक हाथ मे कमडलु, दूसरे मे बेंत की

लाठी। उस आकृति के आम के पेड के नीचे पहुँचने पर श्रीधरन के मन मे आश्चर्य, प्रसन्नता और भय का समूहनृत्य होने लगा—सरस्वती अम्माल ! सरस्वती अम्माल एक योगिनी बन गयी है। लुक-छिपकर खिसक आये शिष्य को ढूँढती हुई जगल के आम के पेड के नीचे आ पहुँची है।

उसने पेड के नीचे से श्रीधरन को देखा—उन आँखो से आग की चिनगारियाँ निकल रही थी। वह चेहरा दुर्गा के भयकर चेहरे मे परिवर्तित हो गया था।

बेत की छडी उठाकर उसने श्रीधरन से आम की डाल से नीचे उतरने के लिए संकेत किया।

श्रीधरन उसका आदेश मानता हुआ नीचे उतरा।

"देवी मुझे सजा दो—मुझे दण्ड दो।" श्रीधरन प्रार्थना कर अपनी कमीज को उतारकर सरस्वती योगिनी के सामने पीछे मुडकर घुटने टेककर खडा हो गया।

"ठे ठे ठे " पीठ पर जबर्दस्त बेत की मार पडी। मार खाने पर शिष्य खुशी से नाच उठा। छडी की मार जोर से कमर और जाघो पर भी पडी थी। आनन्द के उन्माद का आरोहण ! खाल उधड रही है लगा, प्राणरक्त का सचार हो रहा है वह सचार से रोमाचित हो किसी प्रलय मे डूब रहा है

श्रीधरन जाग उठा। आँखे खोली। चारो ओर अँधेरा ! आम्रवृक्ष कहाँ है ? सरस्वती योगिनी और उसकी बेत की छडी कहाँ है ?

इलंजिपोयिल के घर के दक्षिण कोने मे, पलग के ऊपर एक चटाई पर ही वह लेटा हुआ है। आधी रात बीत गयी होगी। किसी चिडिया की आवाज सुनाई दे रही है। चौथे खेत के आँवले के पेड के ऊपर से आयी होगी •

अगले दिन दोपहर के बाद, श्रीधरन अनिराणिप्पाट लौट गया। एक महीने का वनवास पूरा हो गया था।

कान्निप्परपु मे पहुँचा। दस मिनट धीरज और शान्त मन से बैठा रहा। फिर अय्यगर के घर की तरफ निकल गया।

"अरे, तू किधर हडबडी मे जा रहा है?" माँ न पूछा।

"अय्यगर मास्टर को देखने के लिए।"

(सरस्वती अम्माल का पूर्णिमा के चाँद-सा चेहरा हृदय मे उदित हुआ।)

"वहाँ कोई नही है- पट्टर का त्रिचिनापल्लि मे तबादला हो गया। पट्टर माँ और बहन घर छोडकर आज की रेलगाडी से चले गये है "

उस फाटक की तरफ अनजाने मे ही मुड गया। मकान बन्द पडा था। उस ओर कुछ क्षणो तक देखता हुआ वही खडा रहा—

"आप जा सकते यहाँ से अब
भवन यह शोकार्द्र नही
मुनि ने छोड दिया इसको।"

28 परलोक से

अस्वस्थता, उत्साह, विषाद की चुप्पी, छोटी-सी विजय और स्वप्न-संकल्पो के दबाव मे श्रीधरन के दिन बीत रहे थे। जिन्दगी तो समय की नदी मे नौका-विहार है। सफर के अन्त तक—या फिर नाव के डूबने तक लगातार कुछ न कुछ करना पडता है। नाव की गति कभी धीमी होती, कभी भँवर मे फँसकर घूमती। कभी हवा और लहरो मे फँसकर नीचे डूबती, कभी ऊपर उठकर हिलती-डुलती बहाव के विपरीत भी थोडी दूर तक आगे बढा जा सकता है, लेकिन यह नाव एक पल भी निश्चल नही रह सकती।

टकण लिपि की उच्च परीक्षा पास होना छोटी-सी विजयो मे एक है। एक मिनट मे बिना गलती के पैंतालीस शब्द टाइप करने की क्षमता प्रभावित करने-वाला एक प्रमाण-पत्र उसने हासिल किया।

अतिराणिप्पाट मे कोई साथी न था। किताबे ही अब उसकी मित्र थी। नगर निगम पुस्तकालय से किताबे लाकर वह आधी रात तक पढता। ढेर सारी क्लासिक कृतियाँ और सचार साहित्य ग्रन्थ पढ डाले। मनोविज्ञान की किताबो मे रुचि हो गयी। तभी हवलॉक एलिस का 'साइकालॉजी ऑफ सेक्स' हाथ लग गया। उसका पहला खण्ड एक सप्ताह मे पढ डाला। नोट्स लिये। दो-तीन खण्ड ग्रन्थमाला मे दिखाई नही पडे। लाइब्रेरियन ने कहा कि वह किताब बाहर गयी है। पर, उसका चौथा खण्ड वही था। उसे ले आया।

रात को पढने के लिए बैठ गया। हवलॉक एलिस खोला। पहला अध्याय पढने पर कुछ चकित हुआ। पृष्ठ उलट डाले। दक्षिण अफ्रीका की गन्ना-खेती से सब-धित बाते ही उन पर लिखी हुई थी।

समझ गया कि लाइब्रेरियन के बारे मे जो शिकायते सुनी जाती थी उनमे सच्चाई है। नया लाइब्रेरियन एक मुसलमान युवक है। वह नौजवान हवलॉक एलिस के मनोविज्ञान की खोज के लिए सर्वथा योग्य एक होमोसेक्चुअल (समलिंग कामी) था। लाइब्रेरियन के पिट्ठू खूबसूरत लडके रात को पुस्तकालय बन्द होने पर वहाँ आते। वे मासिक की अच्छी तस्वीरो, पुस्तको के रोचक भागो के पृष्ठो, कभी-कभी पूरी किताबो की चोरी करके चले जाते। कथानायक अपने दुलारे लडको की चोरी को अनदेखी करता। के० सुकुमारन की 'वह भयानक नजर' नामक पुस्तक 'मच्छर और पीलपा' मे बदल जाने की बात एक सदस्य ने हाल ही मे लाइब्रेरियन के सामने आक्षेपपूर्वक कही थी। श्रीधरन इस घटना का गवाह था।

गन्ना-खेती मे रुचि न होने के कारण पुस्तक वही रख दी।। कुछ न कुछ पढने

के लिए शेल्फ मे ढूंढने पर शैले का एक काव्य-सग्रह दिखाई पडा। उसे लिया। पुस्तक खोलते ही 'लव' शीर्षक की एक प्रेम-कविता पर निगाह पडी। उसने उस प्रेम-कविता की मिठास का ठीक तरह से रस लिया। इन पक्तियो को उसने कठस्थ भी कर लिया

"आई केन गिव नाट व्हाट मेन काल लव
बट विल्ट दाउ एक्सेप्ट नाट
द वारशिप द हर्ट लिफ्ट्स एबव
एण्ड द हेवन्स रिजेक्ट नाट
द डिजाइर ऑफ द मोथ फॉर द स्टार
ऑफ द नाइट फॉर द मारो
द डिवोशन टु समथिंग आफर
फ्राम द स्फेयर ऑफ अवर सारो"

अगले दिन शुक्रवार था। हेवलॉक एलिस की गन्ना-खेती को साथ ले दोपहर बाद श्रीधरन नगर निगम पुस्तकालय की ओर गया।

पगडडी से सडक की तरफ जो पत्थर की सीढियाँ थी उनके सामने की दिशा से एक लडके को आते देखा। उसने नीले रग की कमीज और फटा हुआ पाजामा पहन रखा था। दस-बारह वर्ष का रहा होगा। उसका चेहरा देखने पर कोई पुरानी स्मृति आँखो मे चमक उठी और फिर ओझल भी हो गयी।

वह लडका पत्थर की सीढी पर ही खडा रहा।

'मै आपके ही घर आ रहा था ।" श्रीधरन के चेहरे की तरफ दयनीय दृष्टि से निहारते हुए उस लडके ने कहा।

उसका चेहरा काजू के आकार जैसा था।

"मेरे घर ?"

"हाँ—कन्निप्परपु "

"क्यो ?"

"आपसे मिलने के लिए।"

"तुम कहाँ से आ रहे हो ?"

उसने एक मोहल्ले का नाम बताया।

(जो मन मे सोचा था, वही हुआ।)

"तुम्हारा नाम क्या है ?"

"उण्णि"

"उण्णि, कहो क्या काम है।"

उण्णि ने पाजामे की जेब से एक नोट-बुक बाहर निकाल कर श्रीधरन के हाथ मे थमा दी।

"अम्मुक्कुट्टि दीदी ने इसे आपको सौंपने के लिए मुझ से कहा था।"

श्रीधरन ने नोट-बुक देखी। चर्खे पर सूत कातती औरत की तस्वीर छपी एक पुरानी कापी। खोलकर देखा। कविताएँ थी। पृष्ठ उलट डाले। (सोचा, कोई चिट्ठी अन्दर रखी होगी—निराशा हुई) लिखावट की जाँच की। जरा बायी ओर घुमा कर लिखे हुए छोटे अक्षर। भूरी स्याही से ही लिखा था। कुछ पक्तियो के नीचे मोटी लकीरें खीची गई थी। कविताओ का शीर्षक नही दिया था। कुछ पक्तियाँ अधूरी थी। वहाँ नक्षत्र-चिह्न लगा दिया गया था।

समझ गया—अम्मुक्कुट्टि एक कवयित्री है। शायद कविताओ की गलतियाँ सुधारने के लिए इस लडके को भेजा होगा। तीन साल पहले कोयले के ढेर के नजदीक आमने-सामने खडे होकर हमने कुछ बातें की थी। फिर कभी मुलाकात नही हुई। रेलगाडी के इजिन से मरी ग्वालिनी की लाश ने रास्ता रोक लिया। रोज के कटाक्ष विक्षेप के बिना, मुस्कान के आलोक और सदेश की मद पवन के बिना, वह प्रेम वल्लरी रेल-यार्ड के कोयले के ढेर मे मुरझाकर मिट्टी मे मिल गयी थी। वही प्रेम-बेल अकस्मात् कविताओ के जल मे सीची जाने पर पल्लवित हो गयी है। वह प्रशिक्षण पूरा कर किसी सहायता-प्राप्त स्कूल की अध्यापिका होकर दिन बिताती होगी।

"उण्णिक्कुट्टि की अम्मु दीदी अब किस स्कूल म काम करती है?"

उस लडके का चेहरा एकदम मुरझा गया। आँखे गीली हो आयी

"अम्मुक्कुट्टि दीदी की मृत्यु हो गयी "

मृ त्यु हो गयी!

आरे की दाँतो की तरह ये पाँच अक्षर कलेजे मे चुभ गये।

आँखो मे धुँधलका छा रहा था। पैर काँपने लगे थे किसी-न-किसी तरह सीढियाँ चढकर तार की बाड के नजदीक जाकर उसे पकडे हुए खडा हो गया। पीछे उण्णि भी चला आया।

अम्मुक्कुट्टि के अतिम दिनो की कहानी न सुनना ही शायद ठीक होगा। पर, उण्णि ने विस्तार से सारी बाते सुना दी। लगा, उसे सुनाने मे उसे चरितार्थता का अनुभव हुआ।

राजयक्ष्मा से ही उसकी मृत्यु हो गयी थी। मृत्यु के तीन दिन पहले कविताएँ पेटी से निकालकर उसने अपने छोटे भाई के हाथ मे दी थी अगर मेरी मृत्यु हो जाय तो तुझे ये अतिराणिप्पाट के कन्निप्परपु के कवि के हाथो मे सौप आना है।

उण्णि ने तब सख्ती से जवाब दिया था "मै हर्गिज नही दूँगा।"

"उण्णि, इस तरह हठ क्यो करता है?"

अम्मुक्कुट्टि दीदी की मौत नही होगी—इसी वजह से—

अम्मुक्कुट्टि ने धोखा दिया मेरी अम्मुक्कुट्टि दीदी चल बसी ·

उण्णि फूट-फूट कर रोया···

श्रीधरन प्रेत की तरह नगर निगम पुस्तकालय की तरफ चला। रेल के यार्ड से होकर ही गया। कोयले के ढेर के नजदीक पहुँचा पर रोमाच की गर्मी से शरीर से पसीना छूटने लगा। क्या कोयले का वह ढेर एक साथ जल रहा है ?

पुस्तकालय मे जाकर हेवलॉक एलिस की गन्ना-खेती की किताब लौटा दी और चुपचाप उतर आया।

एकान्त मे बैठकर एक-एक कर सारी कविताएँ पढ़नी है। म्यूनिसिपल पार्क की तरफ दृष्टि डाली। पार्क मे रोज से अधिक लोग थे। (वाटर टैंक के नीचे से नियमित रूप से आनेवाला प्रचारक, मोहल्ले के एक मोड से बाइबिल खोलते हुए चार-पाँच पापी इन्सानो को भाषण देता हुआ दिखाई दिया।)

अदालत के कवि पप्पु भैया की साहित्य-सभा से हो-हल्ला और वाहवाही का शोर उठ रहा था।

वह सीधे समुद्र-तट की ओर चल पडा। दक्षिण की ओर समुद्र-तट के नजदीक एक महल के रेतीले प्राँगण मे वह बैठ गया।

सुनसान वातावरण। लहरें सागर की ठण्डी साँसो मे बदल गयी है। समुद्र मे दूर एक मछली पकडनेवाली नाव आगे बढ रही है। जाल बिछाते समय वह नौका पखवाली पतग-सी लगती है ·

पूर्व मे चारो तरफ दीवारो से ढके कोने की तरफ दृष्टि दौडायी गुजरातियो का पुराना श्मशान है। उसकी दीवारो का गोरा रग भूरे बदसूरत रग मे बदल गया है। एक ओर गन्दगी ने दीवारो पर कुछ भद्दे चित्रो को रच डाला है। किसी ने लकडी के कोयले से दीवार के कोने मे मैथुन के लिए तैयार खडे नगे आदमी और नगी औरत का चित्र खीच दिया था।

जन्म और मृत्यु की याद दिलाते दीवारो के चित्र !

श्मशान सुनसान है। लाशो को खानवाले श्मशान से भी अधिक सुनसान श्मशान खौफनाक लगा।

उसने कविताओ की नोटबुक खोलकर गोद मे रख ली।

प्रथम पृष्ठ के एक कोने मे जरा तेल लग गया था। उसके बालो से ही वह लग गया होगा।

पढने लगा

1

प्रेमी मधुप ! कब की खिली हूँ
छोटे लताकुज मे मैं !
जब थी कली तभी से
सुन तुम्हारे गान

रीझ-रीझ खिली हूँ मैं
तुम्हारे ही ध्यान मे डूबी मुझे—
क्या अब भी न देख पाये तुम ?
अकिचनता की काली छाया मे खडी
सूखी डाली पर खिली हूँ मैं
दबग मूर्ख समाज की
नीतियो की मर्यादा मुझे
दबाती रहती नित्य
मैं हूँ एक अवर्ण कुसुम,
इस कोने मे पडी
करती रुदन।

2

कल रात कैसा अद्भुत
सुन्दर सपना देखा मैंने
प्राणेश्वर की बाट जोहती निराश
अधखुले द्वार पर टिकाये पैर
बिताते-बिताते आधी रात
चाँदनी की बाढ मे डूबी
विपिन-भूमि के सामने
महातरुओ के बीचो-बीच
देखा मैंने एक तालाब कमलो से भरा।
जाग उठी मैं—कहाँ नाथ ?
कहाँ गया वह तालाब ?
मेरे हृदय को शीतल कर
हो गया वह सपना भी ओझल
कमलिनी के तट पर कोई
मरकत का शाद्वल मनोहर।
उसी क्षण लगा मेरी आँखो को—
पेड के पीछे खडा कोई
कचन छत्र लिये हाथ मे
मुझ कामिनी को बुला रहा है।
मुझे ढूँढते मेरे स्वप्न के प्रिय
मनोहर आ गये हैं।
अपने देवता का मै

किन शब्दो से करूँ सत्कार ?
अपने देवता का मैं
क्या अर्पण कर करूँ स्वागत ?

अपना आश्रम छोड चाँदनी मे
उतर पडी मै मन्द-मन्द ।
पल्लव के तट की हरी
घास पर चलने लगी पग बढाते ।
पीछे से सहमे-से आकर
मीचेंगे मेरी आँखें मेरे नाथ,
मरे सामने आ खडे हो रोकेंगे मुझे मेरे प्रियतम
आ गया है मुहूर्त वह पास —
(मनौतियाँ मेरे हृदय की)
कदम पर कदम रख
बन अतीत कातर मैं
देखती नीचे की ओर
बढी, स्वप्न के माया-पथ मे ।
परिक्रमा की मैं। एक बार
उस तालाब की,
पर नही आये मेरे प्रिय
रोकने-टोकने मुझे
पीडित मैंने मुंह उठा देखा चारो ओर,
पर न दिखे मेरे नाथ,
न दिखे मेरे मदन
खिन्न मेरी आँखो को दिखा
उस तालाब मे उसी क्षण
सिहरता खडा मनोहर
कचन छत्र का मण्डल एक ।
उतरी मैं तालाब मे
उतार कपडे सारे
छत्र-मण्डल को लक्ष्य कर
कुछ दूर तैरते-तैरते

वह स्वर्ण छतरी

घुल गयी तालाब को
छाती पर नीली
सौ-सौ तरगें देख---
लगी हँसने !
निन्दित मैं लौट पडी तैरती
कौन-सी है माया यह सब ?

किनारे पर पहुँच ढूंढी मैने
अपनी साडी और फटी चोली।
अपने कपडो का एक टुकडा भी
न दिखा वहाँ कही।
अपने को कोसती मैं खडी रही
एक चदन की छाया मे।
उस पेड के पीछे से मैने
सुना यह मर्मर स्वर---
आँखे मूँदकर खडी रह
इस वेला मे पावन हे कन्या, मैं
आ रहा हूँ देने के लिए वसन
प्रिये ! तेरे पास।
(प्राणनाथ ! तुम्हारी आज्ञा पालन करनी है न मुझे ?)
निर्मल प्रम-सागर की
ऊर्मि का-सा आलिगन •

3

प्रत्याशा प्यारी कर देती
फिर और
इन नयनो को उन्निद्र।
काश कि
मेरी झोपडी के द्वार पर आ
एक बार, सिर्फ एक बार---
मेरी पूजाएँ ले लेते तुम
काश कि तुम आते
अधजले इस दिये को
फूंक जाने के लिए सही।
ओस भरी घास पर भींगे

तुम्हारे सुन्दर चरणो को
नमन मुद्रा मे बैठ
प्राणनाथ ! हे युवा गायक !
अपने बालो से पोछ-पोछ चूम-चूम
चाहती आत्म-निर्वृत होना
हृदय मेरा अधीर।

4

अकेली हाय !
प्रेम की मूक मैंने
तारा-बाट जोहती
बितायी रातें अनेक।
तुम नही आये
मेरा लेने उपहार।
आज लो, यह मैं
सपना बन
चली आ रही हूँ तुम्हे ढूंढ
निगूढ रागिनी हा पीछ
ढूंढ सूरज को चलती
मूक-सध्या-सी विमूढ हूँ मै।
किन्तु देव !
तुम्हारे प्रेम की हल्की सी छाया पर भी
प्राणो की बलि देने की प्रतीक्षा म बैठी हूँ
अर्पित करूँ अपना प्रेम
हे प्रभु !
तुम्हारे श्रीचरणो मे सुन्दर
साथ प्राणो के अपने
ले लो स्वामी ! कोई एक—
स्नेह-हीन दीपक-सा जलना चाहता है।

5

हे करुणामय !
चारो ओर घना है अन्धकार
बन्द झोपडी मे बैठी हूँ मैं अकेली
सडक-किनारे के आम से, लो
आधी रात कोयल भी उड गयी

मेरे साथ ही वह एकान्त भी जिसमे
सारी दुनिया जम गई है
ऊँघती-ऊँघती '
मेरी करुणाक्रान्त भावनाएँ मानो
प्रतिध्वनित हो रही हो अन्धकार मे।
पूजनीय प्रिय, तुम्हारी प्रतीक्षा मे मैंने
इतनी रात काट ली।
तुम नही आओ, नही ही आओगे—
नीहार सिंचित दूब के बिछे
पथ मे मन्द-मन्द।
तुम नही आओगे, नही ही आओगे
नारियल के पत्तो के बने द्वार पर
खटखटाकर पुकारने के लिए मेरा नाम
तुम नही आओगे, नही ही आओगे—
मेरे जूड़े की मल्लिकाओ की सारी
सुगधी ही रिस गई।
नही, तुम मुझे पुकारोगे नही 'प्रिये' !
प्रेम से आर्द्र मेरी सवेदनाएँ है व्यामोह,
मेरे मूक प्रणय की आशाएँ है व्यर्थ,
यह मै जान चुकी हूँ।
फिर भी, हे देव !
किसी न किसी दिन तुम्हारा प्रेम
मेरी झोपडी को बना देगा स्वर्णमहल
उस दिन आँसुओ से धोकर पूरे
पद-चिह्न तुम्हारे कहूँगी मैं—
"धन्य हुई मैं आज,
सफल हुआ जीवन,
भोर के सोनिल तारे से भी वह
हो गया ऊँचा।"
हे नाथ ! चूम लो यह जीवन-लौ
ताकि निराशा न छू पाए उसे।···

सूरज समुद्र मे डूब चुका है। चाँद पश्चिम के क्षितिज मे साफ दिखाई दे रहा है। आसमान मे बहनेवाले लाल रग में पचमी का चाँद भी अलौकिक कालिमा मे बदल रहा है।

गले के दमकते नग को उतारकर आसमान ने छूरे पत्थरों से जडा बाघ-नख का तमगा पहन लिया है।

शाम मे कितनी खूबसूरती है!

(जा रही सन्ध्या देखी अँधेरे को गले लगाये
इन अनेक द्युतियों को दिया किसी निश्चर ने!)

शाम का सौन्दर्य सिर्फ आसमान मे ही रहता है। नीचे धरती पर जहाँ देखो, वहाँ अज्ञात भय की परछाइयाँ ही दिखाई देती हैं श्मशान के कोने से नदी मे लटके नारियल के पेड का सूखा हुआ छोर शाम की खुमारी मे एक बडी मकडी मे बदल जाता है। नारियल की परछाईं नदी के पानी मे सरकते हुए नाग मे बदल जाती है

नोट-बुक की आखिरी कविता धुँधली रोशनी मे ही पढ़ी थी। लगा, भूरे शब्दो को एक उज्ज्वल हरा रग मिल गया है—

अस्त हुए धीरे-धीरे
मेरा विवेक और हेमन्त की रात।
चाँद हुआ ओझल,
ओझल हुए प्रेम मे अन्धे मेरे सपने
मेरी निराशा की उसाँसें लग
इस घृत-दीप की लौ बढ गयी।
मेरे हृदय के घुलकर बहे आँसू—
टपक-टपक भीग कर
प्रेम की अर्चना के लिए सजाये
धूम-पात्र का अगूर भी बुझ गया!
यथार्थ! तेरा आलोक मेरे—
द्वार पर आ उडाता है हँसी मेरी
मैं थी कीडा, मगर तप कर
बनी तितली मैं।

वैसी मैं नये दिन
शिखा के अचल का कर परस
पख जलकर जाऊँ मर।
तुषार मे जमे जगत से
लेती मैं विदा अन्तिम।

रेशमी अन्धकार ओढकर वातावरण बेहोश होकर लेट रहा है।
क्षितिज से नीचे उतरनेवाला चाँद समुद्र को चाँदी का कटक भेंट करता है।
आसमान सागर के लिए मोतियो का छाता पकडे खडा है।

करोड़ों तारों के झिलमिलाते अनन्त आसमान को देखते हुए श्रीधरन रात को तराई में लेट गया···

भद्रे, तू सीप की तरह
इन मोतियों को समर्पित कर मुझको
शुद्धानुराग को छिपाकर
चली गयी मृत्यु के माया-भवन में !
हा ! वर लिया तूने मुझे
चितावह्नि साक्षी बनाकर,
(इस धरती पर मुझे तू धोखा न देगी
बिचरनेवाली सुन्दरी नहीं है तू !)
कोई कामुक मृत्यु दीवार के उस पार
छूता नहीं तेरे मानस को अब भी।
इस माया प्रपंच में मेरी
रही तू ही मेरी नित्यप्रणयिनी
निरखता मैं आज तेरी नासामणि को
आसमान में झलमलाते हर नक्षत्र में भी
जगमगाते मोतियों को भीतर छिपा
रत्नाकर-सा तेरे मानस को देखता
काल और दूरी से परे
आत्मा के गृह में हम दोनों ही रहते।
सौर मण्डल के भी उस पार
हजारों करोड़ युगों के उस पार
शब्द प्रकाश शून्य अद्भुत—
स्तब्धता में यों बैठकर
हम खुशी मनाये तेरे
प्रेम के नित्य निस्वन के साथ ही
मैं इस समुद्री हवा में निर्मल तेरे
प्राणों को लगा रहा हूँ छाती से।

29 समस्याएँ

"अरे रामन, उसके लिए मुझे क्या करना होगा ?"

"मास्टर, चिरुता को बुलवाकर जरा पूछ लीजिए। मास्टर के पूछने पर वह सच कहे बिना नहीं रहेगी। उस व्यक्ति का जरूर पता लगाना है···"

कृष्णन मास्टर आँखें मूंद गंजे सिर को अपनी हथेली से सहलाते हुए ध्यान-मग्न हो गये। (मानो उण्णिप्पणिक्कर ज्योतिष की बाते कहने जा रहे हो।)

एक विकट समस्या ही है

उस इलाके की कई जटिल समस्याओ का परिहार ढूंढने लोग कृष्णन मास्टर की शरण मे ही आते। पिता और पुत्र के बीच की अनबन, पति-पत्नी के बीच का झगडा, सास और बहू के बीच का फसाद, भाइयो के बीच धक्का-मुक्की, पुराना वैर, विश्वासघात आदि विवादो को सुलझाने के लिए लोग कन्निप्परपु मे पहुँचते। कृष्णन मास्टर सचाई, सदाचार-बोध और शान्ति के प्रतीक हैं। कृष्णन मास्टर के निर्णय के आगे फिर कोई अपील नही रह जाती।

तीन-चार महीने बाद कृष्णन मास्टर ने तबाही के कगार तक पहुँचे एक दम्पती के रिश्ते को अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से बचाया था। कलाल नारायणन की बेटी मातु की शादी साईकल दूकानवाले रारिच्चन से हुई थी। रारिच्चन हृष्ट-पुष्ट और खूबसूरत युवक है। वह कभी-कभी शराब पी लेता है। शराब पीकर अपनी बीवी को पीटता है। और किसी को मारने-पीटने मे उसे खुशी नही होती। पत्नी को पीटे बिना उसे चैन नही मिलता। एक-दो तमाचे देने पर वह सतुष्ट नही होता। उसे अच्छी तरह मारना-पीटना चाहिए, इसके लिए वह कोई न कोई कारण ढूँढ लेता। अन्य मौको पर एक स्नेही पति की तरह ही वह बर्ताव करता।

अपने पति की मार-पीट बर्दाश्त के बाहर हो जाने पर मातु अपने पिता के घर लुक-छिपकर आ पहुँची। नारायणन ने अपनी बेटी और रारिच्चन का सबध-विच्छेद करने का निर्णय लिया है। एक निर्धारित दिन को रात मे रारिच्चन अपने एक-दो बदमाश मित्रो के साथ शराब के नशे मे चूर होकर एक इक्कागाडी मे ससुराल आ पहुँचा। वह विवाह-सबध तोडने नही आया था बल्कि मातु को जबर्दस्ती ले-चलने के लिए ही आया था।

नारायणन झट कन्निप्परपु मे दौडा आया। मास्टर को अपने दु ख की बात बतायी। "मास्टरजी, जल्दी ही आप मेरे साथ वहाँ चलिए। आपके आने पर ही हम बच पायेंगे।"

कृष्णन मास्टर हक्का-बक्का रह गये। सीधे नारायण के घर पहुँचे।

वहाँ धक्का-मुक्की, खीचातानी और मार-पीट का शोर और हाहाकार गूंज रहा था। कृष्णन मास्टर को देखते ही रारिच्चन शर्मिन्दा हो, भागकर अहाते के एक कोने मे जाकर छिप गया। उसके साथी असमजस मे पड गये।

मास्टर किसी से भी कुछ कहे बिना 'आओ बेटी!' कह मातु को बुलाकर कन्निप्परपु मे ले गये।

अगले दिन एक आदमी भेजकर रारिच्चन को बुलाया गया।

रारिच्चन कृष्णन मास्टर का पुराना छात्र है। मास्टर के बेंत की सजा गुरु-

भक्ति के साथ उसके दिल मे ताजा थी।

"अब तुम शराब पीकर इसे पीटोगे ?"

"नहीं जी ··"

"मेरे पैर छूकर कसम खाओ।"

रारिच्चन ने गुरुदेव के पैरो को छूकर कसम खायी।

"बेटी, अब तुम रारिच्चन के साथ जाओ।" मास्टर ने मातु के सिर पर हाथ रखकर उसे आशीर्वाद दिया।

इस प्रकार उस दापत्य को नया जीवन मिला। रारिच्चन कभी-कभी अब भी पी लेता है। मातु को कभी पीटता भी। पर, शराब पीकर वापस आने पर मातु को हाथ नही लगाता। कृष्णन मास्टर ने भी इतना ही सोचा था।

मर्द का जब-कभी शराब पी लेना तो गलत नही है। फिर दापत्य के रिश्तो को मजबूत बनाने के लिए कभी-कभी औरत को पीटना भी अच्छा है—मास्टर हँसी मे ऐसा कहते।

अब कृष्णन मास्टर के सामने समस्या कुछ अधिक जटिल है। पेन्टर रामन की बेटी चिरुता गर्भवती थी। मर्दों के देखने या न देखने पर भी उन्हे खरी-खोटी सुनानेवाली सच्चरित्रा चिरुता पर ही यह बला आ गयी है।

शराब के लक्षण की तरह गर्भ का लक्षण भी फौरन बाहर दिखाई देता है। चिरुता को असहनीय मिचली और कै होने पर एक दफा उसकी सौतेली माँ—रामन की दूसरी बीवी—कुजिप्पेण्णु ने अहाते के एक कोने मे केले के नीचे से उसको पकड कर जाँच की। चिरुता ने चुप्पी साध ली। 'अरी, कौन है वह? बता।' चिरुता गुमसुम रही। कुजिप्पेण्णु ने अपने पति को यह बात बतायी। रामन ने चिरुता को बुलाकर पूछा। चिरुता चुप रही। छडी से उसको बेरहमी से मारा-पीटा। चिरुता गले मे तिनका फँस जानेवाली बतख की तरह सिर हिलाती रही पर, बताया कुछ नही।

आखिर रामन को लोहा मानना ही पडा।

चिरुता के पैर भारी होने के अपमान से भी अधिक उसके जिम्मेदार व्यक्ति को जानने की इच्छा रामन के मन मे मजबूत हो गयी थी। चिरुता उकडूँ बैठकर इस तरह ताकती कि वह मरने पर भी किसी को नही बतायेगी।

इस तरह आखिर कृष्णन मास्टर की शरण लेनी पडी।

दरअसल रामन का कृष्णन मास्टर से कोई निकट सम्बन्ध नही था। कृष्णन मास्टर से ही नही अतिराणिप्पाट के दूसरे लोगो से भी रामन का कोई सपर्क नही है। रामन सुबह उठकर पेण्टरो के एक कोने मे खडा होकर हाजिरी देता। जरूरतमन्द लोग उसे ले जाते। काम करने के बाद जो मजदूरी मिलती, उसे लिये वह ताडी शाप मे घुसता। वहाँ से वह आधी रात के बाद ही घर पहुँचता। कभी कोई

काम नही मिलता तो रामन अपना ब्रुश लेकर एक खास जगह पर बारह बजे तक इन्तजार करता। फिर प्रतीक्षा करने से कोई फायदा नही होता। वह घर लौटने के बजाय नदी के किनारे चला जाता। वहाँ से बाँसी से मछली पकड़ता। बाँसी और धागे को अपने पास सदैव रखा करता। पर तम्बाकू का एक टुकड़ा दाँतो तले हमेशा दबाये रखता। अगर तम्बाकू नही मिलती तो नारियल की एक जड लेकर उसे ही चबाने लगता। कभी-कभी केकडो को पकडने जाता। नारियल के पत्ते की खाल के छोर पर किसी खाद्य सामग्री को बाँधकर पानी मे डालता और केकडो को निमन्त्रण देता। उसे नदी से बडे केकडे मिलते। पकडे हुए केकडे और मछलियाँ बेचकर जितना पैसा मिलता, सबका सब वह ताड़ी की दूकान को भेंट करता। यो मोहल्ले के मोड, दूसरो की दीवारे नदी-तट, ताड़ी की दूकाने आदि से दिन काटनेवाले रामन को अतिराणिप्पाट के लोग नही जानते थे। वही रामन अब चिरुता की समस्या को लेकर मास्टर का मुँह ताक रहा था। मास्टर पर जोर दे रहा था कि चिरुता को वही बुलाकर मास्टर जी उससे पूछताछ करे।

कृष्णन मास्टर अपना सिर सहला रहे थे कि तभी एक आदमी फाटक से आता दिखाई दिया। पैर की उँगली तक धोती और बाये कन्धे पर एक तौलिया डाले मुँह मे तीन-चार दाँतो के साथ मुस्कराते हुए आँगन मे आनेवाले लम्बे कद के इस आदमी को देखने पर कृष्णन मास्टर ने नाक-भौं सिकोडी एक बला और आ रही है।

इस तरफ आता वह आदमी और कोई न था। नारदन कुण्टु था।

कुटु अवकाश-प्राप्त कलाल है। उसकी उम्र अस्सी वर्ष की होने पर भी उसकी खाल मे कोई शिकन न थी। रीढ मे भी कोई गडबडी न थी। उसके सिर का गजा-पन वार्निश की तरह चमकता था।

कुण्टु के आठ लडके थे। उन्हे नारियल पर चढने का जिम्मा सौंपकर वह घर मे चुपचाप बैठता। उसकी आदत है—झगड़ा कराना और लोगो के कान भरना। इधर-उधर से सुनी-सुनायी बातें और छोटे बच्चो और नौकरानियो से भेद-भरी बातें लेकर वह मुलिप्परबिल गोविन्दन मास्टर के पास बैठता। कुण्टु के लाये सामानो को केकडा अपने बिल मे सुरक्षित रखता। केकडा गोविन्दन की मृत्यु के बाद कुण्टु बिना डेरे के इधर-उधर घूमता-फिरता।

अतिराणिप्पाट और उसके समीप रहनेवालो को कुण्टु बिलकुल नही सुहाता था। क्योकि चुगलखोर के अतिरिक्त वह अपशकुनी भी था। कुण्टु की जीभ के मध्य मे एक काला धब्बा है—साँप के जहर की थैली की तरह वह किसी वस्तु को देखकर मुँह से कुछ बताता तो निशाना ठीक जगह पर लगता। कुण्टु को दूर से आते देखकर माताएँ बच्चो को कहती, 'अरे बच्चो, जल्दी अन्दर भाग जाओ। एक बन्दूकधारी आ रहा है।'

श्रीधरन की माँ को उसे देखकर भय और जुगुप्सा होती। उसकी धारणा है कि कुण्टु के आने पर कोई अनर्थ हो जाएगा। उसका यही अनुभव था। एक बार घर के दाहिनी ओर एक टोकरी मे कुछ मुर्गे एक जुट होकर शोर मचा रहे थे तभी बन्दूकधारी आ गया। कुण्टु बरामदे मे कान उठाकर खडा हो गया "उस पार कौन छुरी रगड रहा है ?"

अगले दिन से मुर्गी के बच्चे ऊँघने लगे। एक-एक होकर मरने भी लगे। तीन दिन बाद नौ बच्चो मे से सिर्फ दो ही बचे। इनमे से एक चील उडा ले गयी।

कुण्टु से कृष्णन मास्टर भी डरते थे। कुण्टु की बुरी नजर का प्रतीक सुपारी का एक पेड कन्निप्परपु मे अब भी है। सुपारी के पेड का मोटा तना देखकर कुण्टु ने कहा था, "हाथी-जैसा सुपारी का पेड।"

सुपारी का पेड हाथी जैसा तो बन गया, लेकिन अब तक उसमे कोई सुपारी न हुई।

'उर्वशी शाप उसका' की कहावत के अनुसार कुण्टु की बुरी नजर को एक बार किसी कार्यसिद्धि मे लगाने की बात आराकश वेलु ने कही थी। आठ-नौ वर्ष पुरानी बात है। कुटकु मे कुट्टायी वेलु का सहयोगी बनकर चिराई का काम करने-वाला समय था वह। एक लकडी के पौन हिस्से की चिराई हो चुकी थी। उसमें किसी तरह काठ का एक टुकडा लटक गया। कितनी ही कोशिश करने पर भी उसे अलग नही कर सका। तब कुण्टु नारियल के गुच्छो को छेदने के लिए वहाँ गया। कुट्टायी को अचानक एक तरकीब सूझ गयी कुण्टु से एक गोली लगवाकर देख लें।

"कुण्टु मामा, जरा ये फँस गया है"—कुट्टायी ने निस्सहाय भाव से इशारा कर बताया।

कुण्टु ने उसे देखा "अरे, हरामजादे दरवाजा खोल!" फिर एक ठोकर—काठ के दो टुकडे हो गये!

एक बार कृष्णन मास्टर से बातचीत करते समय कुण्टु ने मास्टर की स्वर्णरग-सी विशाल पीठ को बडे प्रेम-आदर से सहलाया। वह कुछ कहने ही वाला था। तभी "अरे, गोली मत मार।" ठीक मुहूर्त मे ही मास्टर ने रोक दिया। गोली छूटे बिना कुण्टु के मुँह मे ही धुआँ हो गयी!

उसके बाद कुण्टु कन्निप्परपु मे आते समय बडे ध्यान से ही बातचीत करता। बातचीत मे वह उपमा-अलकारो का प्रयोग नही करता।

कुण्टु को मालूम था कि आम-लोग भय और घृणा से ही उसे देखते है। काली जीभ की बैटरी की शक्ति कम होने के कारण भी ऐसा होगा, वह अब पहले की तरह अधिक गोलियाँ नही मारता। अपनी जीभ मे जो जहर लगा था उसे वह फिलहाल प्रदूषण मे इस्तेमाल कर रहा था।

पेण्टर रामन की बेटी चिरुता क 'गर्भ' के रहस्य की गाँठ खोलने के मुहूर्त मे ही नारदमुनि कुण्टु इधर आ पहुँचा था। उस समाचार का एक अश भी वह सुन ले तो देशभर मे बदबू फैलाता घूमे कि पेण्टर रामन की बेटी चिरुता ने एक अवैध सन्तान को जन्म दिया है

रामन मुँह फैलाकर बैठ गया। कुण्टु बरामदे मे चढकर वहाँ की बेंच पर जा बैठा। मोटे ओठ को फैलाकर जँभाई लेते हुए एक कोने मे बैठे रामन को आँखें फाड-कर देखता हुआ वह फिर मास्टर की ओर मुड गया।

"अर्जीनवीस आण्डि को खोजने गया था।"

(वह दूसरी किसी बात के लिए गया था तो मैं इधर चला आया। यह सूचित करने के लिए ही वह भूमिका थी।)

"फिर क्या आण्डि नही मिला" ? मास्टर ने पूछा।

"मिला। लेकिन उसने कहा कि दो दिन के लिए उसके पास समय नही है। भारत-माता कुमारन के रजिस्ट्री करने के दस्तावेज़ तैयार कर रहा था "

"कुमारन को किस दस्तावेज़ की रजिस्ट्री करनी है।"

"क्या मास्टर ने नही सुना ?" कुण्टु उधर बैठ गया। "स्वर्गीय कुबडे वेलु का घर और अहाता कुमारन खरीदनेवाला है।"

"बहुत अच्छा !" मास्टर ने कुमारन को बधाई दी। कुण्टु को यह अच्छा नही लगा। "माप्पिला बाज़ार मे फेकी हुई हड्डी और खाल को लेकर खिलौने तैयार कर बेचनेवाले कण्णन का बेटा अब तो बडा मालिक हो गया है न ? महल बनाने जा रहा है !" कुण्टु ने दाहिने हाथ के घुटनो के नीचे के निशान के नज़दीक के फोडे को तोडते हुए ज़रा हँसी की मुद्रा मे कहा।

"तब वेलु की पत्नी कुट्टिप्पेण्णु और उसका बेटा अप्पुट्टि कहाँ जाएँगे ?" मास्टर ने पूछा।

"वह तो दूसरी बात है।" कुण्टु ने हाथ को खुजाते हुए कहा।

"ठेकेदार केलुक्कुट्टि उस शैतान लडके को तमिलनाडु म धन्धा करने के लिए ले गया। वह उस काली माँ को भी मजदूरो के लिए काँजी तैयार करने के लिए ले जाएगा "

"वे वहाँ सकुशल रहे !" मास्टर ने आशीर्वाद दिया।

कुण्टु ने चेहरा सिकोड लिया।

"अब उस केलुक्कुट्टि की क्या हालत है ? एक दिन उसे रेलवे स्टेशन से आते हुए देखा था। इक्के-गाडी मे रेशमी कमीज़, धारीदार धोती, हाथ मे सोने की घडी —फिर कहना ही क्या — पहले पत्थर तोडकर मिट्टी मे घिसटनेवाला लडका ।"

"कुण्टु, क्यो तुम ऐसी बाते कह रहे हो ?" मास्टर ने दाढी के पके बालो को सहलाते हुए कहा, "केलुक्कुट्टि हमारे इलाके से जाने के बाद आज अच्छी हालत मे

पहुँच गया है। हमारे इस इलाके मे कोई बरकत नही होती। यहाँ से जानेवाले लोग अच्छी हालत मे पहुँच गये हैं। कुटकु मे गये उस कुट्टायी की हालत ही देखो। अब कुटकु मे उसका अपना कॉफी का बाग, एक अच्छा मकान है और सुअरो के झुंड है। यह सूचना हाल ही मे वहाँ जाकर लौटे कोरप्पन ठेकेदार के मुंशी फाल्गुन ने दी थी। उस दिन कुट्टायी अपने मोहल्ले को छोडकर नही गया होता तो रात को शराब पीकर गाली-गलौज का नगमा गाकर अतिराणिप्पाट से चला जाता—"

"मोहल्ला छोडकर जाने मात्र से कोई फायदा नही होगा। माथे की लिखावट भी अच्छी होनी चाहिए।" कुण्टु ने गजे सिर को सहलाते हुए कहा, "कोलबु मे गये उस किट्टुण्णि की हालत ही ज़रा देखो "

"कोलबो के मामा की ताडी की दूकान और जायदाद की देखभाल के लिए किट्टुण्णि को तार भेजकर बुलाया नही था क्या ?

"बात तो ऐसी ही थी। मृत्यु के पहले पगन ने भतीजे किट्टुण्णि को तार भेजकर बुलवाया। किट्टुण्णि को कोलबो पहुँचे दो दिन हुए थे। बस इतने मे पगन की मृत्यु हो गयी। फिर एक हफ्ते के बाद किट्टुण्णि की भी "

'अरे, किट्टुण्णि को क्या हुआ था ?" मास्टर ने उत्कठा के साथ पूछा।

उसने इशारा किया कि किट्टुण्णि का किस्सा खतम हो गया है।

कृष्णन मास्टर अचानक इस बात पर यकीन नही कर सके।

"मर गया, मास्टरजी, वह मर गया," कुण्टु ने बीच म ही टोक दिया। "उसकी स्वाभाविक मौत नही थी। उसका कत्ल किया गया था। पगन की औरत के एक तमिलभाषी प्रेमी ने उसे मरवा डाला। किट्टुण्णि के भैया परगोटन को कोलबो म एक मित्र न एक गुप्त पत्र लिखकर इसकी सूचना दी थी "

दखो कैसा लगता है ? कोलबो मे मामा की ताडी की दूकान और जायदाद के लिए ललचाकर जानेवाले उस गरिया छोकरे की गर्दन को एक छुरी ही हासिल हुई कुण्टु ने गर्दन छूकर दिखायी।

यह कहानी सुनकर कृष्णन मास्टर सिहर उठे।

कुण्टु ने सिर उठाकर देखा पगडडी से मूँछ कणारन जा रहा था। कुण्टु ने कणारन को ताली बजाकर पुकारा। कणारन ने ज़रा मुडकर देखा।

"कणारन, मैंने कल तुमसे जो कहा था, उसे गाँठ मे बाँध लेना। भूलना मत। अरे सुना। इस अमावस को जाकर उसकी व्यवस्था करो।"

कणारन कुछ कहे बगैर सिर हिलाता हुआ आगे बढ गया।

"इस देश मे एक ऐसा उत्पात भी है।" कुण्टु ने कोसते हुए कहा।

"कुण्टु, क्या बात है ?" मास्टर ने पूछा।

"कणारन का बाप पलनि पुजारी वेलु हर कही जाकर लोगो को डराने-धमकाने लगा है· "

"क्या कहा ? पुजारी वेलु आठ साल पहले लटककर नहीं मर गया था ?"

"हाँ, उसी महापापी की करतूत है।" कुण्टु ने आँखें फाड़कर बताया। "अब वह अतिराणिप्पाट मे रात को घूमने-फिरने लगा है। पिछले शुक्रवार को मेरे सामने खड़ा होकर ज़रा डराया ··मैं 'कावु' का उत्सव देखकर आधी रात लौट रहा था। हल्की-सी चाँदनी थी। काठ के गोदाम के मालिक भास्करन के घर के सामने की पगडंडी की ओर मुड़ने पर एक आकृति वहाँ खड़ी थी। उसकी दाढ़ी और जटाएँ थी और कँधे पर मोर पंख की बहगी भी। मैंने उसके चेहरे की ओर देखा गर्दन झुकी हुई थी। जीभ तो आधा गज बाहर लटक रही थी! लटककर मरनेवाला पुजारी! एक ही नज़र देख सका। अचानक धुएँ की तरह अप्रत्यक्ष हो गया · कल मैंने कणारन को बताया, "कणारन, तुम्हारा पुजारी बाप मारा-मारा फिरने लगा है। उससे तुम्हारे और इस इलाके का अनर्थ हो सकता है। पेरूर या तिरुनेल्ली में जाकर पिंड रखकर पिता की सद्‌गति का द्वार खोल दो।" मैंने कणारन को यही बातें याद करायी थी।

लटककर मर जानेवाले पुजारी का प्रेत—इस इलाके की एक और समस्या है। कृष्णन मास्टर उकड़ूं बैठकर अपने गंजे सिर को सहलाने लगे।

तब भी रामन आधा मुँह खोले एक कोने मे चुपचाप बैठा था।

कुण्टु ने रामन की तरफ आँखे तरेरकर देखा। "अरे, तू क्यो मुँह खोलकर चुपचाप यो डाक-पेटी की तरह एक कोने मे उकड़ूं बैठा है।"

रामन का मुँह कुछ अधिक खुल गया।

30 पिता का निधन

बाहर के नियन्त्रण की धमकी के बिना स्वेच्छापूर्वक ज़िन्दगी गुज़ारने की इच्छा पहले कभी-कभी मन को अस्वस्थ बनाती थी। हालाँकि जिस आज़ादी की कामना की थी, एकाएक प्राप्त होते ही श्रीधरन को नया भय महसूस हुआ। अकेलेपन की लाचारी के बोध ने उसे घेर लिया। नये कर्तव्यो के अनुष्ठान और यौवन की इच्छाओ मे ताल-मेल न ला सकने की विवशता थी। आज्ञा देनेवाला और स्वय करनेवाला होने पर एक तरह का निष्क्रिय मनोभाव जागृत हुआ सलाह देने, प्रोत्साहन देने और रोकने के अधिकारी और महान व्यक्ति का अभाव

कन्निप्परपु के कृष्णन मास्टर का देहान्त अचानक ही हुआ था।

बगीचे के एक आम के पौधे को सुबह पानी देते समय वह एक बार खाँसे। फिर खाँसी बढ गयी, बेकाबू हो गयी। छाती सहलाते—खाँसते हुए अपने कमरे के पलग पर लेटकर उन्होने अन्तिम साँस छोड दी।

पिताजी ने पहले एक बार जो कहा था, उसकी याद अब ताजा हो आयी . "ईश्वर की सृष्टि पर इन्सान धूल-मिट्टी की सृष्टि भी नही कर सका है। ईश्वर के सर्जित मिट्टी के एक कण को भी आदमी विनष्ट नही कर सका है। वह ऐसा कर भी नही सकेगा। ईश्वर की सृष्टि मे जो कुछ है, इन्सान उससे ही कुछ खेल खेलने लगता—उसी खेल को हम जिन्दगी के नाम से पुकारते है।'

यो पिताजी का भौतिक शरीर पचभूतो मे ही समा गया है। दार्शनिक स्तर पर हम ऐसा समाधान कर सकते हैं, लेकिन एक सच्चाई फन फैलाये खडी है। कन्निप्परपु के कृष्णन मास्टर का निधन हो गया। श्रीधरन के पिता इस दुनिया से हमेशा के लिए चले गए हैं। बाबू जी को अब वह कभी नही देख सकेगा। कोट, टोपी, चश्मा, ललाट मे चन्दन का टीका, हाथ मे छतरी, पैर मे चप्पल पहनकर सफेद नाटे कद के उस मान्य व्यक्ति को सिर ऊँचा कर कन्निप्परपु के फाटक से उतरकर आते हुए अब कोई नही देख सकेगा। वह पार्थिव शरीर पिछले हफ्ते नगर निगम के श्मशान मे राख हो गया है वे अपने जीवन मे बडे ईमानदार थे—यह अब अतिराणिप्पाट की दन्त-कथा हो गयी है।

एकाएक बीते हुए समय की स्मृतियाँ सामने उभर आयी।

—श्रीधरन एक लगोटी पहनकर कन्निप्परपु के दक्षिण आँगन की रेत मे अकेले खेल रहा है। आँगन के मोड पर लाल रग के फूल खिले है। उस समय अम्मालु अम्मा नारियल के कच्चे छिलके से एक बैल बनाकर उसके एक सीग मे रस्सी बाँध देती है।

"श्रीधरन ।" तभी बरामदे मे पिताजी पुकारते हैं। पिताजी की पुकार अच्छी नही लगी। बहुत देर तक दौडने से बैल बिलकुल थक गया है। उसे चारा और जल देना है। उसी समय बाबू जी पुकार रहे हैं—श्रीधरन चुप रहा आता है।

"श्रीधरन, अरे बेटा !"—फिर पुकारने लगते हैं।

झट मन मे विचार उठता पिताजी मिठायी लाये होगे।

"अरे कण्डप्पन, कही मत जाना। यही चुपचाप रहना— अरे, सुना—मैं अभी आता हूँ।" वह बैल की पीठ पर थपकी देता है। उसके कान मे कुछ फुसफुसाकर तसल्ली भी देता। पिताजी कोट और टोपी उतारे बिना बरामदे मे ही खडे हुए है। हाथ मे कोई दोना दिखाई नही पड़ता। निराशा से बाबूजी के चेहरे की तरफ देखता है।

पिताजी मुस्कराते हुए बरामदे के एक कोने मे इशारा करते हैं।

पानी के भरे एक बडे कटोरे मे एक बतख तैर रही होती है।

लाल फूल के रग की चोच, सफेद कपडे के रग की गर्दन, पखो को फैलाए कटोरे के जल मे तैरनेवाली बतख देखकर श्रीधरन को बडा अचरज होता है।

बेटे के चेहरे के अद्भुत आह्लाद का रस लेने के बहाने पिताजी अपनी दाढ़ी सहलाते हुए मुस्कराते हुए देखते रहते हैं।

रेशमी लगोटी पहने बीते बचपन की स्मृतियाँ जमाने के कोहरे मे ओझल हो गयी हैं।

लेकिन कटोरे के पानी मे तैरकर नाचनेवाली रगबिरगी बतख और मुस्कानभरी पिताजी की वह दृष्टि मन मे आज भी पैठी हुई है।

ओनम का जमाना

रात को कन्निपरप्पु के पुराने घर के बरामदे की चटाई पर पालथी मारकर दीपक की रोशनी मे वह चौथी कक्षा के 'श्रीकृष्ण चरित' मणिप्रवाह श्लोको को दोहरा रहा था—

'आया शकटासुर छद्मवेश मे
अपने हो तैयार मुकुन्द गात्र मे।"

"डणुग-घुण्ड् डणुग-घुँ-घुँ-घुँ "

एक अद्भुत नाद ने कानो को जगाया। शकटासुर को वही झपटने के लिए छोडकर उत्सुकता से सिर उठाकर देखा।

"डणुग-घुण्डू-डणुग-घुँ-घुँ-घुँ "

यह मोहक स्वर कानो के लिए अत्यन्त प्रिय लगा।

अहाते मे, दीवार के कोने से वह आ रहा है। क्या वह किसी पक्षी का गीत है? किसकी झकार है?

चिडिया इस तरह ताल-क्रम मे लगातार नही चहचहाती। फिर मैं यह क्या सुन रहा हूँ?

"डगुँग-ठणंग-ठणुँग-घुँ घुँ-घुँ

उस केले के बीच से एक काली आकृति निकल रही है। क्या वह शकटासुर है?

वह आकृति आँगन मे पहुँच गयी। ओह, काला कोट और टोपी पहने पिताजी! छाती पर किसी चीज को ढक रखा है।

पिताजी ने मुस्कराते हुए श्रीधरन के सामने आँगन मे खडे होकर एक अचरज प्रकट किया। उन्होने ओणम धनुष को बजा दिया।

कृष्णन मास्टर ने बाजार से ही यह धनुप खरीदा था। श्रीधरन को हैरान करने के लिए उन्होने इसे केलो के बीच एक बार बजाकर सुनाया था।

ओणम धनुप नाम के देहाती बाजे को श्रीधरन पहली बार देख रहा है। बेंत की छडी और नारियल के पत्ते की खाल से बनाये गये इस बाजे के मधुर स्वर ने श्रीधरन को चकित कर दिया।

उस दिन, रात को माँ ने भोजन करने को कहा तो श्रीधरन ने आनाकानी की। ओणम धनुष को बजाता वह घण्टो बैठा रहा। उसे एक तौलिये से ढककर सिर-हाने रखकर ही उस दिन सोया था

फिर कई ओणम गुज़र गये। बचपन और कौमार्य बीत गये। अहाते के केलो के बीच से ओडत्तप्पन की तरह पिताजी का टोपी और चश्मा पहनकर सिर घुमाते हुए आँगन मे आना जल्दी से ओणम धनुष बजाने का वह दृश्य मन मे अब भी ताजा है। उसका मन्त्र-मधुर क्वाण अब भी कानो मे गूँज रहा है—पुत्र वात्सल्य के नए गीत की तरह

चेटी भवन्निखिलखेटीकदबवन. .
वाटीषु नाकि पटली
कोटीरचारुतरकोटी मणिकिरण—
कोटी करबित पदा
पाटीरगन्धिकुचशाटी कवित्वपरि—
पाटीमगाधिपसुता
घोटीकुलादधिक घाटीमुदार मुख
वीटीरसेन तनुताम्

सुबह बिस्तर पर खुमारी मे लेटा हुआ नीचे मे आता, भक्ति-रस से ओतप्रोत, दवी-स्तोत्र अब नही सुनेगा। सुन-सुनकर कठस्थ हो गया वह मधुर कीर्तन अब एक सपना मात्र रह गया है।

पश्चाताप के साथ ही उसे याद करना है।

—कुछ शामो मे वह अकेला समुद्र-तट पर बैठकर जिदगी की चिन्तना मे लीन हो समय काटता था। पिताजी रात को आठ बजे से पहले ही घर वापस आने का आदेश देते। देर से घर पहुँचने पर दिल जोर से धडकने लगता। पिताजी बरामदे की आराम-कुर्सी पर बैठकर पढते होगे। (अंग्रेजी व्याकरण, मुहावरे और सस्कृत श्लोक ही उनके प्रिय विषय थे।) मेज़ के दीपक की रोशनी म चश्मे का काँच बीच-बीच मे झिलमिलाता।

चोर की तरह सिर झुकाकर लुक छिपकर बरामद मे चढते श्रीधरन को वे चश्मे से आँखे फाडे हुए देखत। उनकी वह दृष्टि मौन दण्ड देती थी।

अब वह वही दृष्टि देखने के लिए ललचा रहा है। रात को, कन्निप्परपु का फाटक चढने पर बरामदे के कोने की आराम-कुर्सी की तरफ कुछ याद किये बिना धड़कते दिल से देखने लगता चश्मे के काँच की झिलमिलाहट नही थी। वहाँ सिर्फ शून्यता थी।

खाली कुर्सी देखने पर उसकी आँखे भर आती थी।

पिताजी कभी-कभी खरी-खोटी सुनाते, मारते-पीटते या दण्ड देते, तब उसने

क्या पिताजी को कोसा न था ? बाबूजी के बाद स्वेच्छापूर्वक घूमने-फिरने का विचार क्या मन मे छिपाकर नही रखा था ? क्या ऐसा विचार न था ? अपनी अन्तरात्मा से ही पूछे उस अपराध-बोध के जागते समय के दर्द को महसूस करे।

कॉलेज मे सीनियर इण्टरमीडियेट पढ़ने के दिन थे वे। एक इतवार की सुबह पिताजी ने पास बुलाकर कहा "श्रीधरन, तुम जल्दी नहाकर तैयार हो जाओ। एक जगह जाना होगा। तुम भी साथ चलोगे।"

'कहाँ,' 'क्यो'—कुछ नही पूछा। उनसे इस तरह कुछ नही पूछता था वह। उनकी बात मान लेता। बस इतना ही।

तौलिया और साबुनदानी लेकर कुएँ के करीब गुसलखाने मे जाते समय माँ से पूछा, "पिताजी मुझे कहाँ ले जा रहे हैं ?"

माँ ने कहा, "तबादला होकर एक जिला मुनसिफ आये है। वे बाबूजी के पुराने शिष्य है। उनसे मिलने जा रहे हैं।"

"इसके लिए मैं उनके साथ क्यो जाऊँ ?"

"मैं क्या जानू ? तुझे मजिस्ट्रेट से जरा मिलाना होगा—शायद नौकरी के लिए।" माँ ने गर्व से कहा।

चल पडा पिताजी के साथ। रास्ते मे उन्होने सलाह दी, "हम मुनसिफ के पास जा रहे है। वहाँ जाने पर अनुशासन से पेश आना। वैसे कुजिरामन मेरा पुराना छात्र है। लेकिन वह अब एक ऊँचे ओहदे पर है। याद रखो, जवाब देते समय 'जी' मिलाकर ही बोलना। बैठने के लिए कहने पर भी नही बैठना। समझे। वहाँ खडे होते समय नाखून मत काटना। मुनसिफ के अँग्रेजी मे कुछ पूछने पर घबराहट से आँखे फाडकर चुपचाप नही रहना। व्याकरण की गलती होने पर भी कोई परवाह नही—अच्छे उच्चारण के साथ झट जवाब देना। अगर सवाल नही समझा तो बडे अदब से इतना ही कहना "आइ बेग योर पार्डन सर!"

अजीब झझट मे फँस गया वह।

यो बाबूजी और श्रीधरन कुजिरामन मुनसिफ के घर पहुँच गये।

नौकर ने अन्दर से झाँककर पूछा, "आप कौन है ? उनसे क्या कहना है ?"

पिताजी ने एक कागज के टुकडे पर नाम लिखकर उसके हाथ मे थमा दिया।

नौकर ने वापस आकर कहा, "भीतर आने को कहा है।"

मुनसिफ एक कपडे की कुर्सी पर लेटा 'हिन्दू' अखबार पढ रहा था। धोती और कमीज़ पहने एक दुबला-पतला मध्यवयस्क युवक।

कृष्णन मास्टर को देखते ही उस पुराने शिष्य ने खडे होकर प्रणाम किया।

"यू सिट डाउन, सिट डाउन" मास्टर ने इशारा करके कहा। फिर वे नज़दीक की एक कुर्सी पर बैठ गये।

मुनसिफ ने अपनी खाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए अदब से कहा, "मास्टर जी, इधर बैठिए।"

मास्टर को जरा शका हुई। फिर "आल राइट" कहकर मुनसिफ की आराम कुर्सी पर आसीन हो गये। उन्होने श्रीधरन की ओर अर्थपूर्ण ढग से इस तरह देखा मानो कहना चाहते हो कि गुरुभक्ति इनसे सीख लो।

मुनसिफ दूसरी कुर्सी पर बैठ गया।

"दिस इज माइ सन। ही इज़ स्टडीइग इन सीनियर इण्टरमीडियेट"—बेटे का मुनसिफ से परिचय कराया। (मुनसिफ-जैसे शिष्य पर अभिमान था तो इण्टर-मीडियेट मे पढते होनहार बेटे पर भी गर्व था। ऐसा भाव परिचय कराते समय अभिव्यक्त हुआ था।)

"नाम क्या है ?" मुनसिफ ने श्रीधरन की तरफ देखकर बडे सौम्य भाव से मलयालम मे पूछा।

"श्रीधरन, सर" (शक हुआ कि "सर" पहले जोडना था या बाद मे।)

मास्टर और पुराने शिष्य ने लम्बी बातचीत की। उन्होने कई पुरानी बातें भी याद की।

"नाव लेट मी हियर, यू से अलक्जाण्डर" मास्टर ने चेहरे पर बनावटी बडप्पन प्रकट करते हुए पुराने शिष्य को आदेश दिया।

सुनकर मुनसिफ आँखे मीचकर बडी देर तक हँसता रहा।

"सर, वेन्नेवर आई कम एक्रॉस अलक्जाण्डर, योर वाशरमेन एपियर्स बिफोर मी।"

सुनकर कृष्णन मास्टर ठट्ठा मारकर हँस पडे।

श्रीधरन को उनके हँसने का कारण मालूम नही हुआ।

पर्दे लटकते दरवाज़े के ऊपर दीवार पर लगे फोटो पर श्रीधरन की निगाह गयी। चोटी को एक हिस्से मे बाँधकर, कान मे कुण्डल पहन काला-कलूटा, दुबला एक अर्धनग्न बूढा सिहासन-जैसी एक भव्य कुर्सी पर बैठा आँखे फाडकर देख रहा था। मुनसिफ के बाबूजी होगे, श्रीधरन ने अन्दाज़ लगाया।

"श्रीधरन, नाव यू गो आउट एण्ड हेव ए लुक एट द ब्यूटिफुल फ्लावर गार्डन", पिताजी ने श्रीधरन की ओर देखकर कहा।

श्रीधरन बाहर की तरफ चला गया। लगा, पिताजी को अपने मुनसिफ शिष्य से कुछ गुप्त बातचीत करनी है—शायद बेटे के बारे मे ही।

श्रीधरन बाग मे गुलाब के फूलो के रग और सौन्दर्य को देखता रहा।

मुनसिफ के घर से लौटने पर रास्ते मे पिताजी ने कहा, "श्रीधरन, कुंजिरामन सिर्फ बी० ए० है। अदालत मे एक मुशी की हैसियत से भर्ती हुआ। अपनी बुद्धि, लगन और सेवा से उसने उच्च अधिकारी गोरो का मन लुभा लिया और एक ऊँचे

ओहदे पर पहुँच गया। भाग्य मे हुआ तो तुम्हें भी·· "

पिताजी ने अपने वाक्य की पूर्ति नही की।

श्रीधरन ने मन मे उसे पूरा कर लिया "श्रीधरन मुनसिफ" (लगा कि बीच मे या अन्त मे बी० ए० जोड़ना चाहिए।)

"धूप मे मत चलो। छतरी की छाया मे आ जाओ।" पीछे चलते बेटे को पास आने का इशारा करते हुए कृष्णन मास्टर ने कहा।

यो कुछ दूर आगे बढ़ने के बाद श्रीधरन ने पूछा, "पिताजी, आप और मुनसिफ अलक्जाण्डर की बात कहकर क्यो हँस पड़े थे?

"वह एक पुरानी घटना है।" बाबूजी ने हँसते हुए बताया, "कुंजिरामन मुनसिफ मेरी कक्षा का एक होनहार लड़का था। लेकिन उसका अँग्रेजी उच्चारण खराब था।" "अलक्जाण्डर सेलकर्क" नाम की अँग्रेजी कविता के अलक्जाण्डर को 'अलस्काण्डर' कहकर ही कुंजिरामन उच्चारण करता। कितनी बार पढ़ाने पर भी उसके मुँह से अलस्काण्डर ही निकलता। आखिर मैंने एक तरकीब बनायी, 'अलकुकार' धोबी का स्मरण कर उच्चारण करने को कहा। 'अलकु-जाण्डर' कुंजिरामन ने ठीक किया। उस बात को याद दिलाकर ही मुनसिफ ने कहा था अलक्जाण्डर के कारण ही मास्टर का धोबी सामने हाजिर हो जाता है "

यो शिष्य अलक्जाण्डर कुंजिरामन मुनसिफ हो गया—एक लम्बी प्रतीक्षा के बाद। समझे बेटा!

श्रीधरन कुछ भी नही हुआ—इन्टर परीक्षा भी वह पूरी न कर सका।

उस विचार ने पिताजी के मन पर जो विषाद का बोझ रख छोडा था उसे बाहर प्रकट किये बिना मन-ही-मन दबाये वे चुपचाप चल बसे।

श्रीधरन का सिर्फ 'कन्निप्परपु के कृष्णन मास्टर के बेटे' नाम से ही पता है।

दूसरी एक घटना

कॉलेज मे पढ़ते समय ही यह घटना हुई थी। अतिराणिप्पाट के बढ़ई वेलायुधन की बड़ी बीवी मालुक्कुट्टि हिस्टीरिया रोग से परेशान थी। घर मे एक औरत-चेरियम्मु ही थी। वेलायुधन, रेलवे के ठेकेदार कृष्णन कुट्टि के नये मकान के पूजा-कर्म मे भाग लेने गया था। रस्म खतम होने के बाद ही वह घर वापस आ पाया।

उस बीच बढ़ई की पत्नी चेरियम्मु ने कन्निप्परपु मे आकर विनती की, "मालुक्कुट्टि दीदी रोग से तड़प रही है उनसे जाकर कहने के लिए वहाँ कोई नही है "

कृष्णन मास्टर ने श्रीधरन को पुकारा। श्रीधरन ऊपर की मंजिल के कमरे मे पढ़ रहा था। आठ बजे होंगे।

"बेटा, वेलायुधन बढ़ई की बीवी हिस्टीरिया का शिकार होकर तड़प रही है। वह ठेकेदार कृष्णनकुट्टि के घर पूजा-कर्म के लिए गया हुआ है। तुम जल्दी

वहाँ जाकर बढ़ई को समाचार दो। बेचारी औरत···"

पूजाकर्म करनेवाले उस नये घर पर—कृष्णनकुट्टि के घर पर—जाने में श्रीधरन को थोडा वैमनस्य है। पर, पिताजी का आदेश था। तिस पर उस बेचारी औरत की दुरवस्था।

अतिराणिप्पाट से दो मील दूर रेलवे की पटरियो के नजदीक ही ठेकेदार कृष्णनकुट्टि का ऊँचा मकान था। कृष्णनकुट्टि के ससुर तोदवाले चाप्पुण्णि अधिकारी के तत्वावधान मे पूजाकर्म धूम-धाम से हो रहा था। उस घर के लिए काम करनेवाले बढइयों मे हर-एक को साधारण दान-दक्षिणा के अलावा चाँदी की एक-एक गज की छडी भी भेंट की गयी थी। यह भेट देते समय ही श्रीधरन वहाँ पहुँचा था। उसने फाटक पर इन्तजार किया। थोडी देर बाद भीड के बीच वेलायुधन बढई को पुकारकर उसे समाचार बताया।

चाँदी के गज की छडी को कन्धे पर रखकर बढई हिस्टीरिया के वैद्य पणिक्कर के घर की तरफ दौडा गया। श्रीधरन अतिराणिप्पाट वापस आ गया।

सडक से कन्निप्परपु की पगडडी पर अँधेरे मे एक आदमी चुपचाप खडा था।

"श्रीधरन !"

"बाबूजी !"

वे श्रीधरन के लौट आने का इन्तजार करते खडे थे।

"मुझे मालूम था कि कोई टॉर्च या रोशनी के बिना ही तुम पगडडियो से जाओगे। तुम्हारे जाने के बाद मेरे ध्यान मे यह बात आयी। सुबह मैंने इस पगडडी पर कोई जीव सरकता हुआ देखा था। जरा सावधान रहा करो " पिताजी ने टार्च से रोशनी की।

पिताजी श्रीधरन के आगे-आगे चलने लगे। वे झुककर मार्ग को बडे ध्यान से देखते हुए धीरे-धीरे कन्निप्परपु पहुँच गये।

इस तरह की छोटी घटनाएँ अब स्मृतियो मे जलती हुई क्यो दिखाई देती है ? अब जिन्दगी के अज्ञात अँधेरेमे सकटो के आ पडने पर रोशनी करनेवाला कौन है ?

तब ढेर सारी पुस्तको को ढोकर एक आदमी को फाटक मे आते देखा। ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि म्युनिसिपल बिल कलक्टर है। नया आदमी है—पुराने शकुण्णि मेनोन के बदले आया एक मुस्लिम युवक।

उसे याद आया कि आकृति, पोशाक, आचरण और चरित्र मे भी शकुण्णि मेनोन कृष्णन मास्टर का ही प्रतिरूप था। वह भी आज इस दुनिया मे नही है। वह भला आदमी फाँसी लगाकर मर गया।

म्युनिसिपल दफ्तर के एक सहयोगी के आर्थिक सकट मे पडने पर शकुण्णि मेनोन ने उस पर भरोसा कर लगान का पैसा देकर उसकी मदद की थी। उस मित्र

ने उसे धोखा दिया। पैसे की चोरी, विश्वासघात आदि इलजाम लगाकर शकुण्णि मेलोन के खिलाफ मुकदमा दायर किया गया नौकरी से हाथ भी धोना पडेगा और जेलखाने मे सडना भी होगा — यह सोचकर उसने छह फुट की रस्सी से अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली।

श्रीधरन ने उस नोटिस पर निगाह घुमायी।

'कन्निप्परपु के खपरैल मकान' के लिए लगान की विज्ञप्ति 'श्री चेनक्कोतु कृष्णन को।

चेनक्कोतु कृष्णन मास्टर म्युनिसिपल लगान के कागज़ मे आज भी जिन्दा हैं।

31 अतिराणिप्पाट अलविदा !

श्रीधरन अतिराणिप्पाट के दक्षिण मोड के समल के पेड पर कौवो को फूलो का मधु-पान करते देखता खडा रहा। कल आखिरीबार पिताजी का बलिपिण्ड खानेवाला एक कौवा ही पख फैलाकर सेमल की डालियो पर नाचता हुआ मधुपान कर रहा है। कृष्णन मास्टर के शुद्धि स्नान की रस्म अगले दिन है।

आदमियो की तरह पेडो मे भी कुछ विशिष्ट पेड होते है। इस प्रकार का व्यक्तित्व प्रदर्शित करनेवाला एक पेड है—दीर्घायु सेमल का पेड। सेमल की डालियाँ कलात्मक है और भी उनकी एक विशिष्टता है। ऊँचाई और लम्बाई मे उसकी डाले नही जाती। प्राय धरती के समानान्तर ही फैल जाती है। एक नर्तक की हस्तमुद्रा की तरह, उसकी जिन्दगी वर्ण वैविध्यपूर्ण है। सेमल हर ऋतु मे वेश बदलकर नया रूप धारण करता है। पहली बारिश के बाद पूरी तरह कोपलें फूटती हैं। उसके मुलायम पत्ते शरत् काल की हवा मे नाचने लगते है। हेमत मे पत्ते झडकर मोती के थालो की तरह पगडडियो के साथ बडे फूलो को प्रदर्शित करते है। सर्दी और कोहरे से ढके शिशिर की सुबहो मे सेमल की नगी पकी डालियो पर कौवे बैठते है। मोतियो के थालो से शहद पीने का वह दृश्य अत्यधिक मनमोहक होता है। दो महीने बाद वसन्त ऋतु आने पर शिशिर के मरकत-जैसे फल फूट कर लटकते दिखाई देते है। गर्मी के मौसम मे ये फूल सूखकर वातावरण मे रुई की मुस्कान बिखेरते हैं

'मगेये ॐ ' एक दयनीय रुदन पर ध्यान गया, पश्चिम के अहाते से आवाज आ रही है। कट्टाप्पु के पुराने चबूतरे के कोने से - साँप के मुँह मे फसनेवाले मेढक का प्राण रुदन है कुट्टाप्पु के अभिशप्त घर का चबूतरा और अहाता बरसो बीत जाने पर भी उसी तरह खडा है। जमीन और आसपास का अहाता घास से ढक गया है। कुट्टाप्पु को अहाते की ओर आये महीनो बीत गये। उसको क्या हुआ

है ? क्या वह भी राजयक्ष्मा से अस्वस्थ है या उसकी मौत हो गयी है ?

'मइया' ''मेढक के चीत्कार कम होने लगा है। साँप मेढक को आधा निगल गया होगा •

कुट्टाप्पु के अहाते के कोने मे घास के बीच कुछ पौधों मे फूल खिले हैं।

"पुथु—कू पुथु—कू—पुथुकू " नाले की उत्तर दिशा मे आराकश वेलु के घर के आँगन से ही शोरगुल और कुछ पीटने की आवाज़ सुनाई पड रही है। थोडी देर बाद बात मालूम हुई। वेलु के बेटे दामोदरन की पत्नी माणिक्य को दस महीने का पेट लिये चलते देखा था। माणिक्य ने एक बच्चे को जन्म दिया है। एक बडी छडी से जमीन पर पीटने और लोगो के शोरगुल की आवाज सुनी थी। लडका हुआ है। शोरगुल इसी की सूचना है। लडकी पैदा होती तो पुकार नही होती। ऐसी दशा मे ज़मीन को सिर्फ तीन बार पीटना ही काफी होता।

इस प्रकार आराकश वेलु अब दादा हो गया है। झगडालू उण्णूलियम्मा दादी बन गयी है।

उण्णूलियम्मा ने सात बच्चो को जन्म दिया था। उनमे सिर्फ दो ही बच्चो ने कुमारावस्था को पार किया था—बालन और दामोदरन। इनमे से भी बालन इलाका छोडकर चला गया। उसका कोई पता नही लगा। दामोदरन गोरो के बैंक का चपरासी है। उसकी खाकी पोशाक और हरे रग की साइकिल है। अतिराणिप्पाट मे सिर्फ दामोदरन को ही यह सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

तभी किसी को कन्निप्परपु के फाटक से आते देखा। उस पर ध्यान दिया। शकुण्णि कपाउण्डर है। मोटे और छोटे कद के शकुण्णि की वेशभूषा मे पहले से कोई परिवर्तन नही आया है। तोद और कमीज़ के साथ एक धोती पहनकर दोनो हाथो को ज़रा ऊपर उठाते हुए हिलता डुलता ही वह आँगन मे आ पहुँचा। लेकिन कपाउण्डर के भरे फूले चेहरे का रग ज़रा बदल गया है। दोनो गालो पर और आँखो की पलको के नीचे कुछ कालिमा छा गयी है।

शकुण्णि कपाउण्डर ने कल पिताजी की आखिरी रस्म से सम्बन्धित दावत मे सिर्फ भाग ही नही लिया था, तोद के ऊपर तौलिया बाँधकर दावत म परोसने मे मदद भी की थी। उसके यहाँ आने का क्या उद्देश्य होगा ?

आँगन मे आकर कपाउण्डर की बडे आदर के साथ अगवानी की और उसे बरामदे में बैठने का निमन्त्रण दिया।

कम्पाउण्डर आरामकुर्सी पर बैठ गया।

"श्रीधरन यहाँ तुम्हरा बडा भाई है न ?' नाक और मूँछ को सिकोडते हुए कपाउण्डर ने पूछा।

"बडे भाई यहाँ नही है। सुबह कही बाहर चले गये थे।"

(पिताजी की मृत्यु की सूचना का तार मिलने पर उस दिन कुजप्पु तमिल-

नाडु से रवाना नही हो सका था। गाडी नही मिली थी। तीसरे दिन ही वह कन्नि-प्परपु पहुँचा था।)

"कृष्णन मास्टर की अन्तिम क्रिया के उपलक्ष्य मे एक अच्छी दावत दी, अच्छा ही हुआ।" कपाउण्डर ने श्रीधरन को बधाई दी।

"पिताजी के लिए आगे कुछ भी नही करना होगा।" श्रीधरन ने बड़े दुःख से कहा।

कपाउण्डर थोडी देर तक चुप रहा। फिर कुछ गम्भीर बात कहने की मुद्रा मे श्रीधरन को इशारे से नजदीक बैठने को कहा।

"क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे बडे भाई की क्या योजना है?" कपाउण्डर ने दो तीन बार अपनी नाक और मूँछ को सहलाया।

"मुझे कुछ भी नही मालूम।"

"घराने की सपत्ति का बँटवारा कर अपना हिस्सा लेकर तमिल औरत और बच्चे के साथ पिनाक जाने का उसका विचार है समझे?"

श्रीधरन चुप रहा आया।

"घराने की सम्पत्ति के नाम पर आप लोगो के पास क्या रखा है? सिवा इस अहाते और घर के। यह बेचने पर तुम और माँ कहाँ जाओगे? इसलिए तुम्हे हरगिज मजूरी नही देनी चाहिए—"

श्रीधरन ने सोचा, शकुण्णि कपाउण्डर ने अब तक कोई भी कार्य अच्छे उद्देश्य से नही किया था। फिर मुझे यो उपदेश देने का मतलब?

"तुम चुप क्यो हो?"

श्रीधरन फिर भी चुप रहा। कपाउण्डर ने अपनी सलाह जारी रखी "अगर कुजप्पु बँटवारा करने का हठ करे तो यह घर और अहाता किसी के नाम गिरवी रखकर कुजप्पु के हिस्से को चुकाकर उसको बाहर निकालना ही ठीक है। समझ गये?"

श्रीधरन समझ गया था। कपाउण्डर की बुद्धि कन्निप्परपु को पहले गिरवी रखकर फिर मौका देखकर उसे छीन लेने की है। उसकी यही योजना है।

"तुम्ह सलाह देने के लिए और कोई नही है। लेकिन मैं तुम्हारी मदद करूँगा। मैं कृष्णन मास्टर का ध्यान करके ही यह बात कह रहा हूँ, समझे?"

श्रीधरन मुस्कराया। फिर शान्ति से जवाब दिया, "कपाउण्डर, आप अन्यथा न समझें। मेरी ओर से वकालत के लिए किसी की जरूरत नही है। अपना काम मुझे ही दखने दो।"

कपाउण्डर का चेहरा एकदम काली हाँडी की तरह फक हो गया। उसने श्रीधरन की ओर आँखें तरेरकर देखा "अरे, तू इतना बडा हो गया है?" उसकी नजरो मे जैसे धमकी भरी हुई थी।

"मैं अपनी बातों को सोचने-समझने लायक बन गया हूँ। कपाउण्डर, अब इतना ही कहना बहुत है· " दृढ स्वर मे श्रीधरन ने कहा।

कपाउण्डर ने आराम कुर्सी से उठने हुए तथा तिरछी भौहे कर श्रीधरन की ओर देखकर मन्त्र-जाप किया, "माँ बेटे को यहाँ से निकलना होगा"।

"पिताजी तो हमेशा के लिए यहाँ से चले गये हैं। फिर यहाँ से उतरकर चले जाने मे माँ-बेटे को क्यो अफसोस होगा ?"

श्रीधरन की बातें सुनकर कपाउण्डर घृणा भरे लहजे मे ओठो को सिकोड-कर हँस पडा "हाँ—हाँ। हम देखेंगे।"

दोनो हाथो और तोद को हिलाते हुए कपाउण्डर चला गया।

कल श्रीधरन पिताजी की डायरियाँ लेकर पढ रहा था।

कृष्णन मास्टर हर रोज डायरी लिखते थे। नगण्य घटना भी डायरी मे वे लिखते। सालो से यह नियम चला आ रहा था। मृत्यु के एक दिन पहले भी उन्होने डायरी लिखी थी। अग्रेज़ी मे ही डायरी लिखते। पुराने मित्रो से मिलने, बारिश होने एव कुट्टिमालु के रजस्वला होने की बात भी डायरी मे लिखते। जूते की मरम्मत करने की बात भी डायरी मे लिखी गई थी। डायरी के अन्तिम पृष्ठ मे श्रीधरन से सबधित एक बात थी "गेव श्रीधरन फोर आनाज़ फॉर हेयर कट"

तभी कुजप्पु को सामने कर शकुण्णि कपाउण्डर और उसके पीछे अर्जीनवीस आण्डि कन्निप्पुरपु मे आते दिखाई दिये।

डायरी वही रख दी।

अर्जीनवीस आण्डि को उनके साथ देखने पर श्रीधरन को बात पकडने मे देर नही लगी।

बडा भाई सिर झुकाये अन्दर घुस गया। कपाउण्डर को बरामदे मे चढने मे ज़रा हिचकिचाहट हुई। आण्डि ने कन्निप्परपु के नारियल के पेडो के ऊपरी हिस्से की तरफ निगाहे घुमायी।

"कपाउण्डर, इधर बैठिए।"—बरामदे की कुर्सी की ओर इशारा करते हुए श्रीधरन ने कहा।

कपाउण्डर बरामदे म चढकर कुर्सी पर तोद लटकाकर बैठ गया।

"आण्डि यो खडे क्यो हो गये ?" बरामदे की बेंच पर इशारा करते हुए श्रीधरन ने दस्तावेज का स्वागत किया।

"नही बेटा—मै इधर ही खडा रहूँगा।" आण्डि ने मुस्कराते हुए कहा। (उसके मुँह मे दाँत नही थे) आण्डि के यो कहने का कारण श्रीधरन को मालूम है। आण्डि पुट्ठो के बल बैठ नही सकता। वह बवासीर के रोग से परेशान है। उसकी धोती मे पुट्ठो के स्थान पर गदे खून का धब्बा एक सिक्के की आकृति के बराबर दिखाई दिया।

कपाउण्डर ने अन्दर झाँककर पुकारा, "कुजप्पु, अरे कुंजप्पु इधर आओ। बरामदे मे आकर बैठो। "

बडा भाई असमजस मे बाहर आया। बरामदे के खम्भे के पास उकडूँ बैठकर उसने एक बीडी सुलगायी।

कपाउण्डर ने काम की बात शुरू करते हुए कहा, "श्रीधरन तुम क्या सोचते हो ?"

(वह मूँछ और नाक हिलाने लगा।)

"कपाउण्डर के पूछने का मतलब मैं नही समझ सका," श्रीधरन ने कहा।

"कल मैने जो बात बतायी थी, वही। कुजप्पु घराने की जायजाद का बँटवारा करके उसका हिस्सा शीघ्र चाहता है।" कुजप्पु की वकालत लेकर ही कपाउण्डर अब बातचीत कर रहा था। "बँटवारा तो करना ही है। हाँ, तुरन्त इसे करना होगा।" श्रीधरन ने बडप्पन सा दिखाते हुए कहा।

कपाउण्डर ने जवाब की प्रतीक्षा नही की। मारकर गिराने के लिए पत्थर और बाँधने के लिए रस्सी लेकर ही वह आया था। अब ये सब बेकार हो गये।

(अर्जीनवीस आण्डि चेहरा सिकोडकर चुपचाप खडा था। बवासीर की जलन से या पाणिक्कर के स्कूल मे 'अम्मालु परिणय' नाटक के अभिनय के बीच मिले खराब अण्ड की बदबू की याद करके ही शायद वह यो चुपचाप खडा होगा।)

थोडी देर की खामोशी के बाद कपाउण्डर ने तोद सहलाते हुए पूछा, "ठीक है। तुम्हारी तरफ से पूछताछ करनेवाला कौन है ?"

"इसमे और पूछताछ की क्या जरूरत ? घराने की सम्पत्ति का बँटवारा करना है। बस इतनी-सी ही बात है।"

"ठीक है।" कपाउण्डर ने तीन उँगलियो को ज़रा आगे उठाकर कहा, "घर और अहाते को तीन हिस्सो मे बाँटा जाएगा। मास्टर की पत्नी और दो सन्तानो के लिए क्या तुम सहमत हो ?"

"कानून के अनुसार वही ठीक है।"

"अच्छा।"

कपाउण्डर ने आण्डि को बुलाकर उससे नापने के लिए बाँस की एक छडी लाने को कहा।

"नापने की जरूरत क्या है ?" श्रीधरन ने बात काटकर पूछा।

"घर का एक तिहाई हिस्सा और अहाते का एक तिहाई हिस्सा नापकर कुजुप्पु का हक तय करना है।"

"आपके आदमी को घर और अहाते का टुकडा चाहिए या पैसे ?" श्रीधरन ने गौरव के साथ पूछा।

कपाउण्डर ने जरा सोच-विचार किया। उसने मूँछ और नाक हिलाते हुए कहा, "पैसे चाहिए। क्या तुम्हारे हाथ मे देने के लिए पैसे हैं ?"

"अभी तो नही हैं।"

"फिर यह घर और अहाता गिरवी रखना होगा। अरे, कल मैंने वही बात तुमसे नहीं कही थी ?" कपाउण्डर ने विजय भाव मे अपनी तोद को जरा सहलाया।

"पैसे मिलने के लिए और भी उपाय हैं।"

"और क्या उपाय ?"

"घर और अहाते को बेचना होगा।"

कपाउण्डर अपने काले चेहरे को थामकर कुछ सोचने लगा।

श्रीधरन ने दुख के साथ कन्निप्परपु के बाडे की ओर एक नज़र डाली। एक छोटी काँटेदार डाली को अपनी चोच मे लेकर एक कौवा उत्तर के अहाते के कटहल वृक्ष के ऊपर उड गया।

बाबूजी के बलिपिंड को निगलनेवाला कौवा ही बाड से उस डाली के टुकडे को चोच मे लेकर उडा था। वह कटहल के ऊपर नया घोसला बना रहा है। इधर भी एक घराने की तबाही हो रही है।

"क्या कुजप्पु को कुछ कहना है ?" कपाउण्डर के प्रश्न ने श्रीधरन को जैसे जगा दिया।

कुजप्पु के कहने के लिए कुछ नही था।

यो उस दिन बात पूरी हो गयी। कन्निप्परपु और घर बेचने का निर्णय लिया गया।

अर्जीनवीस आण्डि कन्निप्परपु के कई पेड-पौधो का हिसाब लगाते हुए बगीचे मे घूमने लगा। श्रीधरन भी उसके निकट खडा होगया। हिसाब की जाँच करने के लिए नही, बल्कि सूची तैयार करने के ढग को समझने के लिए ही वह वहाँ खडा था।

नारियलो का हिसाब लगाया जा रहा था। नारियलो को उम्र और अवस्था के अनुसार अलग-अलग सूची मे रखा गया।

फिर और पेडो का भी हिसाब लगाया गया। फलदार वृक्षो की ही गिनती होती है। कन्निप्परपु मे अमरूद का एक बडा पेड था। (श्रीधरन बचपन मे अमरूद तोडकर खाता था। वह उसकी डाल पर घोडे की सवारी करता था।) वह पेड नष्ट हो गया। उसकी जगह एक अमरूद का छोटा-सा पौधा पल रहा था। हल्के से पीले रग के पत्ते कलात्मक ढग से शोभायमान थे। उसकी डालियाँ अभी नही आयी थी। लेकिन आण्डि उसके लिए झाडू का मूल्य देने को भी तैयार न था।

गुलाब, नारगी का पौधा—इनके लिए इस सूची मे कोई स्थान नही है। अशोक

पारिजात और जासौन का भी कोई मूल्य नही है।

बाग के जासौन के पौधे मे नीले रग के तीन अडउल खिले थे। नारगी के पौधे मे भी कई कलियाँ उग आयी थी।

कुएँ के किनारे की बाड मे पली लताओ मे फूलो के गुच्छे भर आए थे। (नारगी के बीज और 'मणि' पुष्पो का एक ही रग है—पद्मराग के पत्थर का रग।)

कन्निप्परपु का कल का मालिक इन फूलो के पौधो को जड से उखाड फेंककर जमीन खोदकर गड्ढे मे नारियल या सुपारी का पौधा लगाएगा। बाड मे करेले की लता को बढ़ाएगा। इन बातो का ख्याल कर श्रीधरन का मन मसोसने लगा। हर रोज सुबह और शाम अपने हाथ से पानी देकर बडे प्यार से पाले गये पौधे। वह उनमे कोपलें आने और फूलने-फलने के सौंदर्य को कितनी उत्सुकता से देखा करता था।

अचानक उसे अग्रेजी कवि वर्ड्सवर्थ की एक कविता की कुछ पक्तियाँ याद आयी, जिनका तात्पर्य है

"शान्तिदायक रात और आह्लादकारी
दिवा काल भी
मातृभूमि की मिट्टी मे उगनेवाले सत्यजाल भी
जगाते प्रेम मुझमे प्रकृति पर।
इसके सब कुछ को मैं प्यार करता हूँ
पृथ्वी के आँसू और आनन्द
काफी है मेरा अतस् भरने को"

अर्जीनवीस आण्डि अहाते के आम के पेडो का हिसाब लगा रहा था। उसने कुछेक पीले पत्तोवाले एक आम के पेड की जाँच की। उसे सूची मे रखने या छोडने का विचार वह कर रहा था।

श्रीधरन की आँखो से एक बूंद आँसू उस आम के पौधे के नीचे टपक पडा। पर आण्डि ने उसे नही देखा। मृत्यु से कुछ देर पहले पिताजी ने उसे सींचा था।

कन्निप्परपु और उसका खपरैल का मकान एक हजार एक सौ रुपये मे बेचने का प्रबन्ध पूरा हुआ।

दस्तावेज तैयार करने के लिए निर्धारित तिथि के एक दिन पहले दोपहर को शकुण्णि कपाउण्डर और अर्जीनवीस आण्डि कन्निप्परपु मे आ पहुचे।

श्रीधरन ने समझा कि कल की रजिस्ट्री करने के बारे मे बातचीत करने के लिए ही आये होगे।

कुजप्पु भैया अन्दर कमरे मे सो रहे थे।

कपाउण्डर बरामदे की आराम कुर्सी मे बैठ गया।

"कल रजिस्ट्री करने के बाद समय नही मिलेगा—वह काम हम अभी निबटा दें।" कपाउण्डर तोद को सहलाते हुए बोला।

श्रीधरन को बात का पता नही चला। दस्तावेज लिखा जा चुका है। फिर और क्या बाकी है? श्रीधरन ने कपाउण्डर के चेहरे की ओर देखा।

"घर के सामान का बँटवारा करना चाहिए।" कपाउण्डर ने अपनी नाक-मूंछ को जोर से हिलाया। श्रीधरन ने अपनी नादानी की वजह से उस पर विचार नही किया था। बस, यो ही हँस पडा।

"कुजप्पु, अरे कुजप्पु!" कपाउण्डर ने अन्दर झाँककर जोर से बुलाया। "तू इधर बैठ।"

अर्जीनवीस आण्डि एक पेन्सिल पकडकर खडा था।

बडा भाई कुजप्पु आँखे मलते हुए बरामदे मे आया। हमेशा की तरह बरामदे के छोर के खभे के निकट उकडूँ बैठकर उसने एक बीडी सुलगायी।

श्रीधरन का विचार था कि घर के सामान की जरूरत उसे नही है। सब कुछ बडा भाई ही ले ले। फिर उन्हे बाँट देने की जरूरत ही क्या है? लेकिन अचानक उसे लगा कि सब कुछ कपाउण्डर और अर्जीनवीस आण्डि छीन लेंगे। भैया को कुछ भी नही मिलेगा। ऐसा हरगिज नही होगा। अपने हिस्से के सामान को अतिराणिप्पाट के गरीब लोगो मे बाँटना चाहिए

कपाउण्डर ने आण्डि को देखकर इशारा किया। आण्डि ने भीतर जाकर पलग, कुर्सियाँ, पेटियाँ आदि सभी सामान की सूची तैयार की। उसके बाद छोटे सामान को ले जाकर वह बरामदे मे रखने लगा। ओखली और चक्की उस सूची मे शामिल न थे। हिलनेवाली सभी चीजो को ले आया। खुरचनी, ताँबे के बर्तन, कटोरा, पीकदान, रस्सी कुछ भी नही छोडा।

श्रीधरन को दुख, बेचैनी और शर्म-सी महसूस हुई, लेकिन सब कुछ मन मे ही रखा।

आण्डि ने सारे सामान का मूल्य निर्धारित किया। हर-एक को गिनकर आखिर तीन हिस्सो मे बाँट दिया।

बडा भाई कुजप्पु घुटनो के बीच चेहरा झुकाकर चुपचाप बैठा रहा।

वे जैसे मर्जी आए, करे। श्रीधरन ने अपने मन मे कहा। सबके लिए हिसाब लगाना चाहिए। नदी मे फेकने पर भी तोलकर ही फेंकना चाहिए। अचानक पिताजी की सुनायी एक कहानी की याद आयी।

काबा मे गये पेरुमाल के बारे मे एक दन्त-कथा है। चेरमान पेरुमाल की पत्नी को कोविलकस के मुख्तार से प्रेम हो गया। चरित्रवान राजभक्त मुख्तार ने अपने को उसकी काम-पिपासा का शिकार बनने से अलग रखा। पेरुमाल की पत्नी की कामाग्नि प्रतिकार मे बदल गयी। वह नारियल के छिलके से अपने स्तनो को चोट

पहुँचाकर खून बहाते हुए अपने पति के सामने रोती हुई खडी हो गयी।

"यह क्या है ?" राजा ने घबराकर पूछा।

"अपने मुख्तार से ही पूछ लें।"

क्रोध से अँधे होकर राजा ने मुख्तार को बुलवाया। उन्होने उससे पूछताछ किये बगैर मृत्युदण्ड की घोषणा की। अपने आदेश को क्रियान्वित करने के लिए मन्त्री को हुक्म दिया।

जल्लाद ने अपराधी का गला काटने के लिए उसे नदी किनारे की एक चट्टान पर खडा कर दिया।

"क्या तुम्हारी कोई अन्तिम इच्छा है ?" मन्त्री ने पूछा।

"मेरा आज तक का पूरा वेतन यही ले आना।" मुख्तार ने अपना आग्रह व्यक्त किया।

वेतन अनाज के हिसाब मे था। मुख्तार ने वेतन के हिसाब मे प्राप्त चावल को चट्टान पर ढेर बनाने की इच्छा प्रकट की। फिर वह उसे नापने लगा। नापने के बाद वह उसे नदी मे फेकने लगा। इस प्रकार नापकर फेंकते समय मुख्तार ने वहाँ एकत्रित हुए लोगो को बताया, 'नदी मे फेंकने पर भी नापकर ही फेकना चाहिए।"

फिर जल्लाद की तलवार के आगे गर्दन रखने से पहले उसने राजमहल की तरफ देखकर कहा, "औरतो के इशारो पर नाचनेवाले पेरुमाल आप काबा मसजिद मे जाकर टोपी पहने।"

इस प्रकार औरत की बात पर भरोसा कर निरपराधी मुख्तार को तलवार के घाट उतारने के प्रायश्चित म चेरमान पेरुमाल केरल से जहाज़ के रास्त काबा जाकर सिर का मुंडन कराने के बाद सुन्नत करवा टोपी पहनकर मुस्लिम हो गय

आण्डि इस समय भी घर के सामान को तीन भागो मे बाँटने म लगा हुआ था। कपाउण्डर तोद को सहलाते हुए जब कभी अपनी स्वीकृति देता जाता था।

श्रीधरन की माँ अर्ध-बेहोशी की हालत मे कमरे की जमीन पर उस जगह पडी थी, जहाँ पहले पिताजी की लाश क सामने एक दीपक जलाकर रखा गया था।

बडा भाई कुजप्पु पीठ झुकाए पैरो के बीच सिर छिपाकर गर्भस्थ शिशु की तरह बैठा था।

कन्निप्परपु के घर के सामान का बँटवारा हो रहा था। पडोस के कुछ लोग आँगन और बाड के नजदीक खडे रहे। वे खुसुर-पुसुर भी करने लगते। पर, जोर से अपनी राय प्रकट नही करते। कपाउण्डर और आण्डि के तत्वावधान मे होने-वाले बँटवारे मे हस्तक्षेप करने का उन्हे कोई हक नही था। कृष्णन मास्टर चल बसे। माँ और बेटा कल घर छोडकर चले जाएँगे। कुजप्पु भी वापस जाएगा। इस इलाके मे कल कपाउण्डर और आण्डि ही होगे। उनके विरुद्ध कुछ कहना ठीक नही,

ऐसा मनोभाव ही अधिकाश दर्शको मे था ।

"भिखमगा । रसोईघर की हँडियो और बर्तनो का बँटवारा करता है । वह वह भी एक तमिल हरामजादी औरत को देने के लिए ! शैतान ! पापी · उस भले मनुष्य के शरीर की मिट्टी अभी सूखी भी नही है । इतने मे बेचारी माँ और बेटे को घर से निकाल देने की सोच रहा है । कौन कहता है कि भले मास्टर का बेटा है यह बदमाश ? थू, धिक लानत है ।"

आतिशबाजी के विस्फोट की तरह के ये शब्द कन्निप्परपु मे गूंज उठे । कुट्टाप्पु के अहाते से ही सुनाई पडे थे ये शब्द । आराकश वेलु की पत्नी झगडालू उण्णूलियम्मा ! मोटी और ऊँचे कद की उस माँ ने पके बालो को खोलकर छोड दिया है । हाथ मे एक बसूला है । वह माणिक्य के नहाने के पानी में किसी औषधि के पत्तो को तोडने के लिए ही वह कट्टाप्पु के अहाते मे आई थी । पत्ते तोडती जाती और कुजप्पु पर गालियो की बौछार भी करती जाती

श्रीधरन को ध्यान आया, रसोईघर के सामान को बाँटने के बाद ? अब पुस्तको का नम्बर है । पर, ये पुस्तकें तो मेरी हैं । लेकिन पिताजी ने उसके लिए पैसे दिये थे । वह कृष्णन मास्टर की सम्पत्ति हैं । अगर अर्जीनवीस आण्डि और कपाउण्डर इनका बँटवारा करने को कहेगे तो मैं क्या कहूँगा ?

"यह महापापी बाद मे याद करेगा । सब कुछ पेट के चूल्हे मे डालने के बाद वह हरामजादी तमिल औरत इसे झाड़ मारकर निकाल देगी । यह महापापी सडक पर सडकर मरेगा ।" उण्णूलि अम्मा के शाप की बाते आतिशबाजी की तरह फूटने लगी ।

अर्जीनवीस आण्डि बाँटने का काम छोडकर एकाएक पाखाने की तरफ दौड गया । उण्णूलियम्मा ने आण्डि को दौडते हुए देखा ।

"यह शैतान दौड रहा है—अब मल का भी बँटवारा करना होगा । अरे, आण्डि मायिग्रेट (मजिस्ट्रेट) पाखाना तीन हिस्सो मे बाँट लो । उनमे निचले का भाग इस नासमिटे कुजप्पु को दे दो ।"

आधे घट तक पाखाने मे रहने के बाद ही आण्डि वापस आया ।

घर के सामान का बँटवारा करने के बाद सतुष्ट होकर आण्डि ने जेब से सिगार का एक टुकडा लेकर कुजप्पु के हाथ की माचिस से सिगार सुलगाया । फिर कुजप्पु से उसने कुछ खुसुर-पुसुर की ।

"आण्डि क्या सब कुछ निबट गया है ?" श्रीधरन ने पूछा ।

आण्डि ने अपने हाथो से इशारा किया कि सब कुछ हो गया है ।

किताबे बच गयी । सम्पत्ति की सूची मे गुलाब, चमेली आदि के लिए घास ही मूल्य है । घर के सामानो के बीच मे शेक्सपियर, कालिदास, कुमारनाशन और शकराचार्य की कृतियो के लिए चूल्हे के पत्थर का भी मूल्य नही था ।

आण्डि ने बरामदे मे लटकता भस्म का तख्ता नही देखा था। उसकी ओर इशारा करके श्रीधरन ने पूछा, "आण्डि गुमाश्ता, यह कैसे बाँटोगे ?"

आण्डि मसूड़े दिखाकर बेवकूफ-सा हँस पडा।

'पिताजी की जो भस्म है वह माँ और मेरे लिए रहे। इसका तख्ता बड़े भाई ले लें।" श्रीधरन ने जोर से कहा, "भैया, चुपचाप क्यो बैठे हैं ?"

पैरो के घुटनो के भीतर से कुजप्पु ने होले से अपना चेहरा ऊपर उठाया। बरामदे के भस्म के तख्ते पर और फिर श्रीधरन के चेहरे पर उसने निगाह डाली। दोनो की आँखें आपस मे उलझ गयी।

बड़े भाई की लाल आँखें गीली होने लगी। निचले ओठ को काटकर वे अपने विकारो को दबाने लगे। श्रीधरन ने ध्यान मे देखा।

एकाएक सिसकते भैया ने अपने हाथो मे चेहरा ढक लिया ·

बडा भाई क्यो रोने लगा ?

क्या उसने भस्म के तख्ते से पिताजी का हाथ उठते देखा था ?

छोटे भाई की आँखो मे पिताजी की आँखो की झलक देखी है ? चाहे जो भी हो, श्रीधरन क्या पिताजी का खून नही है ?

"कपाउण्डर, किमी का भी बँटवारा न करो—मुझे कुछ नही चाहिए। अहाता और घर कुछ नही चाहिए --मैं अपना रास्ता नाप लूंगा " कुजप्पु ने आँगन की ओर देखते हुए रुँधे गले से कहा।

झट शकुण्णि कपाउण्डर कुर्सी से उठ खडा हुआ, "क्या कहा ? सब कुछ रजिस्ट्री दफ्तर के अन्दर पहुँचाने के बाद यह नालायक क्या बक रहा है ? अरे, तुझे कुछ नही चाहिए तो न सही—तू इधर चुपचाप बैठ "

कुजप्पु ने फिर अपना सिर घुटनो मे दबा लिया। उसने चुप्पी साध ली। बीच-बीच मे वह फूट-फूट कर रोता रहा।

श्रीधरन कुछ नही बोला।

कुजप्पु मे—इन्सान का छिपा हुआ सात्विक भाव जाग उठा था। वह क्षणिक था इसलिए झट बुझ भी गया।

बडा भाई कुजप्पु विद्रोह-भाव रखनेवाला आदमी नही था। मनोरजन के तौर पर कुछ शरारतें करता हुआ वह अपने बडप्पन को प्रदर्शित करता रहता। एक बन्दर की तरह—ऐसे बन्दर जिसके गले मे शकुण्णि कपाउण्डर और आण्डि ने एक रस्सी बाँधकर उसे सख्ती से पकड लिया था उस रस्सी को तोडकर बाहर उछलने-कूदने की क्षमता उसमे नही थी।

रजिस्ट्री ऑफिस मे दोपहर बारह बजे हस्ताक्षर कर अपने हिस्से का पैसा लेने के बाद, कुजप्पु किसी से कुछ कहे बिना एक घटे बाद मेल गाडी से चला गया। वह तमिल भाषी पत्नी और अपने एक बेटे को लेकर पिनाँग (श्रीलका) के लिए तैयारी

करके ही गया था।

दस्तावेज लिखने का पारिश्रमिक कमीशन आदि का हिसाब लगाते हुए आण्डि ने उसका इन्तजार किया। रात तक कुजप्पु की छाया तक नही दिखाई दी यों आण्डि सब कुछ खोये इन्सान की तरह शून्य मे ताककर बैठ रहा।

दलाल का मेहनताना, कमीशन फीस आदि के अतिरक्त मुफ्त एक मोटी रकम हड़प लेने के ख्याल से बैठे शकुण्णि कपाउण्डर को भी मालूम हुआ कि कुजप्पु चालाक आँखो मे धूल झोककर चला गया है।

कुजप्पु को पकडने के लिए तमिलनाडु जाने की बात कपाउण्डर ने एक बार सोची। फिर सोचा, उधर न जाना ही भला है। वह अपनी बीबी और सतान के साथ जहाज पर चढकर मुलक छोडकर चला गया होगा।

यो कन्निप्परपु के बँटवारे के पारिश्रमिक के तौर पर अतिराणिप्पाट के शकुण्णि एण्ड आण्डि अट्ओर्णी कम्पनी को कुजप्पु के हिस्से मे मिले हाँडी-ताँबे के बर्तन और पीकदान से सतुष्ट होना पडा।

श्रीधरन रवाना हो रहा था। हाथ मे एक छोटी सी चमडे की थैली थी। उसे खोलकर उसने चीजो की दोबारा जाँच की

एक चश्मा—पिताजी का पुराना चश्मा। सत्य और भलाई को देखनेवाली आँखो के लिए उसका काँच गवाह था।

एक पख। मोहल्ले के ही अर्जी लिखनेवाले हाशिम मुशी ने उसे भेट मे दिया था।

(हाशिम मुशी आज समुद्रतट के पास कब्रिस्तान की कब्र मे है। मोहल्ले मे, दूकान के बीच, मुशी के कमरे के दरवाजे के पास एक नया बोर्ड लटक रहा था

"श्री ज्योतिषालय
ज्योतिषी पनच्चिक्काट्टु कुट्टन पणिक्कर"

उसने जो पख भेट किया था वह श्रीधरन की जिन्दगी के पेशे का चिह्न हो गया।

एक नोट-बुक। अम्मुकुट्टि की कविता की नोट-बुक। श्रीधरन को प्यार करनेवाली एक बेचारी लडकी के पवित्र हाथो के स्पर्श से युक्त कागज।

श्रीधरन की अपनी कविताओ की हस्तलिपि की प्रतियाँ। एक गट्ठर कागज।

इस तरह पिताजी का पुराना चश्मा, हाशिम मुशी का पख, अम्मुकुट्टि की कविता की नोट-बुक और अपनी कविताओ की हस्तलिखित प्रतियाँ—सबको चमड़े के एक थैले मे रखकर वह विधवा माँ के साथ कन्निप्परपु के फाटक से निकला।

सूखे पत्तो, फूलो, बाड से गिरनेवाले काँटो और सफेद रेतवाली पगडडी से सिर उठाए वे आगे बढे।

माँ को लेकर पहले इलजिपोयिल मे ·

फिर माँ को इलजिपोयिल मे छोडकर अकेले बम्बई की ओर·· फिर फिर और बडी दुनिया की ओर

●

खण्ड : चार

मर्मर एक

दस हज़ार गैलन की शक्तिवाले उस दीर्घकाय पेट्रोल टैंक की तरफ श्रीधरन ने फिर एक बार निगाहे घुमायी।

इन पेट्रोल टैंको के कारण ही दूर-दूर तक दौडनेवाले हज़ारो वाहनो की तस्वीर मन मे उभर आती है।

अतिराणिप्पाट की स्मृतियाँ भी गैलन के हिसाब मे हैं। तीन-चार दशाब्दियों पीछे विकार शक्ति के साथ मन को ले चलनवाली हज़ारो यादे।

विधवा माँ को लेकर कन्निप्परपु के फाटक से उतरकर, अतिराणिप्पाट से विदा लेकर तीन दशाब्दियाँ बीत गयी। फिर कभी उधर मुडकर नही देखा—जानबूझकर। दृढ प्रतिज्ञा के साथ कह सकता है—वह इधर नही आया।

तीन-चार दशाब्दियो के पूर्व के अतिराणिप्पाट की मौत हो गयी है। सामने जो देख रहा है वह एक नयी दुनिया है।

पिताजी कहा करते थे, यह दुनिया एक महा-श्मशान है। हम पीढियो से दिवगत और मिट्टी मे समाये हुए आदमियो के ऊपर ही बसते हैं। हमारे बाद पीछे की पीढी हमारे ऊपर अपनी दुनिया की नीव डालेगी श्मशान के ऊपर श्मशान!

क्या श्मशान को खडा करने के लिए ही इस दुनिया मे इन्सान पैदा होता है?

श्रीधरन होने से अतिराणिप्पाट के नज़दीक से आगे बढा। जगह के सम्बन्ध मे कोई पता न लगा। पुराना कोना ढक गया है। नाले और पगडडियाँ पाट दिए गये हैं। उन्हे अहातो के साथ मिलाकर नये मडल बना दिये गये हैं।

'मणि' पुष्पो के रग जैसे ही मनोहर फूलो को प्रदर्शित करते हुए नये किस्म के पौधे बाड के नज़दीक सिर उठाकर खडे हैं। वह एक विदेशी मेहमान 'शीमकोन्ना' है। खूबसूरती के लिए नही, बल्कि हरे पत्तो के उर्वरण के लिए ही इन विदेशी पौधो का पालन होता है। खैर

हरे और लाल रगो मे पुते दरवाज़ोवाले एक घर से रेडियो-सगीत सुनाई दे रहा है। लगता है कि वह किसी मुसलमान का घर है (पहले अतिराणिप्पाट मे एक भी मुस्लिम घर नही था।)

यहाँ के पूर्वज आराकश कुट्टायी के रात के गीतो और अपूर्व ग्रामाफोन गीतो

को सुनकर आनन्दित होते थे। पीकदान नाली की तरह सिर धुमाकर 'मालिक के स्वर' का ध्यान देनेवाले ग्रामाफोन-पेटी के कुत्ते की तस्वीर उन दिनो आज के पिकासो के शान्तिदूत कबूतर की तरह मशहूर थी।

पहले के घरो और रास्तो के मूल स्थान की पहचान करने के लिए आँखें मूंद-कर थोडी देर तक सोचना पड रहा है •

एक पुराना घर दिखाई पडा, जिसके निचले भाग मे ही खपरेल डाल दिया है। वह आशकश वेलु का घर होगा। उम अहाते की दक्षिण दिशा के पुराने नाले का कोई पता नही। सिमेण्ट लगे पत्थर की एक दीवार वही खडी हुई होगी—वही नज़-दीक के अहाते की सीमारेखा है।

वह वेलु मूप्पर के आँगन की तरफ मुडा।

गोबर से लिपा हुआ आँगन—मोडो पर हल्के लाल रग की मिट्टी डाली गयी है। आँगन के कोने के एक जासौन के पौधे मे ढेरो फूल खिले है उस घर और अहाते म कोई बडा परिवर्तन नही आया है।

बरामदे की एक कुर्सी मे आँगन की तरफ आँखे फाडकर देखनेवाला अर्धनग्न बूढा क्या वेलू मूप्पर ही है ? बडे ताज्जुब की बात है ! वेलू अब भी जिन्दा है !

बरामदे मे लटके एक हिडोले के नज़दीक वह बूढा इतनी ही दूर बैठा है कि झूला हिला सके।

हिडोले को देखने पर इगरसोल की कविता का आशय मन मे जाग उठा

हर हिंडोला हिलते वक्त दिल के भीतर
पूछ रहा था—किधर से ?
हर चिता धधकते हुए
खोज रही है—कहाँ है ?

हौले से आंगन की तरफ आगे बढा। वेलू मुखिया ने आँखे फाडकर देखा। श्रीधरन परिचय भाव से मुस्कराया।

वेलु मूप्पर के चेहरे पर कोई परिवर्तन दिखाई नही पडा। वह शायद पहचान नही सका होगा। पहचानता भी कैसे ? क्या पैंतीस वर्ष पूर्व देखा नही था ?

अभी भी आँखे फाड फाडकर उसी प्रकार देख रहा था।

"क्या आपको मेरी याद नही है ?" श्रीधरन ने बडे अदब से पूछा।

बूढा कुर्सी से ज़रा हिल गया।

"बेटी, बेटी—देखो कौन बाहर आया है ? ज़रा जाकर देख" बाहर की तरफ आँखे फाडकर देखते हुए बूढे ने पुकारकर कहा।

तब दर्द भरी एक सच्चाई का पता लगा—वेलु मूप्पर अब अन्धा है।

साडी पहने एक युवती ने दरवाज़े पर खडे होकर बडे गौर से देखा "दादा, मुझे नही मालूम। कोई नया आदमी है।" कहते हुए वह दरवाज़े मे खडी होकर

आँखें फाड़े देखने लगी।

श्रीधरन सकपकाकर खड़ा रहा।

"मैं-मैं यहाँ बहुत पहले कन्निप्परपु मे रहनेवाले कृष्णन मास्टर का बेटा हूँ।" श्रीधरन ने गदगद कण्ठ से अपना परिचय दिया।

बूढ़ा अपनी मुर्दा आँखो के उस पार की पुरानी यादो की थैली को तलाशने लगा।

"कृष्णन मास्टर का बेटा—कौन-कौन—श्रीधरन बेटा ?"

"हाँ—श्रीधरन ही हूँ "

"अरे मेरे बेटे, इधर आ आ आ। इधर बरामदे मे आकर बैठ। तुझे यहाँ से गये कितने साल बीत गये। बेटी वह चटाई जरा इधर ले आना "

युवती ने एक चटाई लेकर बरामदे मे बिछायी। मुँह खोलकर खड़े एक बाघ की तस्वीर उस नयी चटाई मे है। बाघ के मुँह पर ही बैठ गया।

"बेटे, मुझे दिखाई नही देता। चार-पाँच सालो से मैं अँधेरे मे हूँ। तू जरा इधर आकर बैठ—मैं जरा तुझे देखू "

वेलु मूप्पर ने दोनो हाथो से हवा मे टटोला। श्रीधरन ने अदब से अपना चेहरा कुर्सी के नजदीक कर दिया।

वेलु मूप्पर के हाथ श्रीधरन के उभरते गालो, दाढ़ी की हड्डियो, ओठ के ऊपर की मूँछ और लम्बे ललाट पर और समृद्ध बालो मे वात्सल्यपूर्वक आगे बढ़े।

वेलु मूप्पर प्रसन्न दीख पड़ा। फिर थोड़ी देर कुछ सोच-विचारने के बाद उसने ठण्डी सास खीची।

उसके नयन-दर्पण मे प्रतिफलित होनेवाले दृश्य क्या-क्या होगे ?

"अरे बेटे, मैं एक पापी हूँ।" प्रकाशहीन नेत्रो को फाड़ते हुए वेलु मूप्पर अपनी जिन्दगी की दास्तान कहने लगा।

उण्णुलियम्मा ने सात सन्तानो को जन्म दिया था। सातो लड़के थे। दो बच्चो के अलावा बाकी सब बचपन मे ही चल बसे। बड़ा लड़का बालन घर छोड़कर कही चला गया। अब वह कही जीवित भी है या नही, कौन जाने। फिर एक दामोदरन था। आठवें दर्जे तक उसने पढ़ा था। उसको गोरो के बैंक मे चपरासी की नौकरी मिली। शादी की। एक मुन्ना हुआ वेलुक्कुट्टि। जब वेलुक्कुट्टि छह महीने का था, तब दामोटरन की अकाल-मृत्यु एक साईकिल दुर्घटना मे हो गयी। बैंक वालो ने एक अच्छी रकम दामोदरन की विधवा और बेटे को भेट की थी। वेलुक्कुट्टि पढ़कर दसवी कक्षा पास हो गया। उसको पिताजी के पुराने बैंक मे एक क्लर्क की नौकरी मिली। तब नानी उण्णुलियम्मा वेलुक्कुट्टि की शादी देखने का मोह सवरण नही कर सकी।

उसके मामा की बेटी थी। यो अठारह का होने पर वेलुक्कुट्टि ने मामा की बेटी

शारदा से विवाह कर लिया। लगा जैसे, उण्णुलियम्मा यह ब्याह देखने को ही जीवित थी। एक महीने के बाद उण्णुलियम्मा की मृत्यु हो गयी। शारदा ने एक बच्ची को जन्म दिया और स्वयं प्रसव में ही चल बसी। बालिका सुभद्रा पलने लगी। सुभद्रा दो वर्ष की थी कि वेलुक्कुट्टि की मृत्यु एक साँप के डँसने से हो गयी। वेलुक्कुट्टि ने पाँच हजार रुपये का जीवन बीमा कराया था। इस रकम से वेलु मूप्पर लकड़ी का व्यापार करने लग गया था। तभी उसकी दर्शन शक्ति नष्ट हो गयी। आखों के इलाज के लिए पैसा पानी की तरह बहाया। आखिर लकड़ी का कारोबार भी बन्द करना पड़ा। उत्तर से आया कजबु नाम का एक बुनकर रोजी-रोटी के लिए इधर ही रहता है। पिछले साल ही उसने सुभद्रा से व्याह रचाया है। दो हफ्ते पहले सुभद्रा ने एक लड़की को जन्म दिया। वही लड़की बिन्दु इस हिंडोले में सो रही है। चौथी पीढ़ी को हिंडोले में हिलाते हुए परदादा वेलु मूप्पर बरामदे में बैठा था।

वंश-परम्परा में लड़के न थे। वेलु मूप्पर की मृत्यु के साथ उस वंश वृक्ष की कड़ी टूट जाएगी। नब्बे के आसपास के बूढ़े वेलु मूप्पर की मनोव्यथा का यही कारण है।

कुम्हड़ा-सा सिर, बिखरी हुई चाँदी या सफेद रोम भरा चेहरा, तम्बाकू-जैसी त्वचा वाले वेलु मूप्पन को देखने पर श्रीधरन के मन में हठात् एक और रूप का स्मरण हो आया। कन्निप्परपु के पश्चिम के अहाते में कुट्टाप्पु का चबूतरा उठने के पहले—गुफा के नजदीक की झोंपड़ी में पेट तक लटकी हुई पकी दाढ़ी के साथ उन्नीसवीं सदी का आखिरी बुजुर्ग बैठा था। वह दाढ़ीवाला बुजुर्ग भी मिट्टी में समा गया। इधर और एक इन्सान बैठा है जिसने नब्बे वर्ष की जिन्दगी को देखा और भोगा है। कल या परसों पनमूट्टु घराने के नाम के साथ उसका भी अन्तिम संस्कार कर दिया जाएगा।

हिंडोले में लेटी बिन्दु जागकर रोने लग गयी।

रूखे-सूखे बालोंवाली एक माँ बरामदे में आयी। वह झूले से मुन्नी को ले गयी। वह बिन्दु की परनानी—दामोदरन की विधवा माणिक्य थी।

वेलु मूप्पर पुराने ख्वाबों से अचानक चौंक उठा।

"सुना था कि तू किसी पुराने मुलक में था। तू अब कहाँ है?"

"अब दिल्ली में हूँ।" श्रीधरन ने अदब से जवाब दिया।

"वह कहाँ है?"

"बहुत ही दूर उत्तर दिशा में।"

"क्या काशी से भी दूर है?"

"हाँ, बहुत दूर।"

"क्या गोसाइयों का देश है?"

(श्रीधरन भी गोसाइयो के वेश मे है। वेलु मूप्पर यो सोचता होगा।)

"हाँ, वहाँ गोसाई भी होगे। हिन्दुस्तानीवालो का मुल्क है। भारत की राजधानी।"

"तू वहाँ क्या करता है ?"

श्रीधरन जरा सकपकाया। उससे क्या कहना है ?

कुछ कहने पर भी क्या उसे मालूम होगा ? कहने की जरूरत ही क्या है ? झूठ कहने को भी मन नही चाहता

एक बात सूझ गयी। झूठ बोलना और बातें छिपाना अलग-अलग है

(श्रीधरन अब एम० पी० है—सयद सदस्य।)

अप्रिय न लगनेवाली सच्चाई वेलु मूप्पर के सामने प्रस्तुत की "वहाँ तो खास कोई पेशा नही है "

मर्मर दो

हाँ, एम० पी० है।

भारत की चालीस करोड जनता मे दिल्ली की उच्चतम सभा ससद के लिए चुने गये पाँच सौ सदस्यो मे एक है। पाच लाख नागरिको मे चुना गया जन-प्रतिनिधि है प्रधानमन्त्री की तरह ने हक प्राप्त न होने पर भी प्रधानमन्त्री से भी सवाल करने का अधिकार रखनेवाला एक एम० पी०। (ससद मे एम० पी० प्रधानमन्त्री से कैफियत तलब कर सकता है। पर मन्त्री के सवालो का जवाब देने को एम० पी० मजबूर नही है।)

एम० पी० के ऊपर दो ही है—ईश्वर और स्पीकर।

ये सब बाते बिना किसी घमण्ड के श्रीधरन ने सोची थी। वेलु मूप्पर का मजाक उडाने के लिए एम० पी० का पास जेब मे छिपाकर नही रखा था। दर-असल नब्बे वर्ष के उस सामान्य बुजुर्ग के सामने एक छोटे लडके की तरह ही अपने को माना। मुझे तो ख्याति और इज्जत मिली होगी। पर, नब्बे वर्ष की उम्र मैं यो ही नही पा सकता। वह इस इलाके के पानी, राख, हरे पत्तो को ग्रहण कर इस वातावरण के अधेरे उजाले, गर्मी, शब्द और गन्ध मे पले एक मनुष्य-वृक्ष के सामने है। (बहुत पहले के कन्निप्परपु के उत्तरी दिशा के कटहल की तरह।)

इस बडे पेड से निसृत मर्मर स्वर सार्थक ही है। उसके वे शब्द अनुभव-ज्ञान के अमूल्य मत्र होगे

काँच का मुकुट पहने, बहुत ऊचे ससद भवन के गर्भगृह की एक हरी कुशन सीट पर गर्व से बैठने से भी अधिक अभिमान और ज्ञान इस मान्य बुजुर्ग के पैरो तले—ककडी और धान की बालियोवाले बरामदे के नीचे एक घास की चटाई पर

पालथी मारकर बैठते समय महसूस होता है ।

"पोइण्ट ऑफ ऑर्डर" से डरने की जरूरत नही । सवाल पूछने के लिए रूल और धारा का उदाहरण देने की आवश्यकता नही । समय के नियत्रण के लिए घटी की टन-टन का ध्यान नही करना होगा •

"कोई काम काज के बिना कैसे गुज़र-बसर करता होगा ?" कुर्सी से एक सवाल उठा ।

(श्रीधरन गोसाई है । ऐसा एक शक उसके भीतर रहा होगा ।)

"अर्जी टाइप करता हूँ ।" झट बचने की एक तरकीब मिली ।

"हाँ, हाँ, वह तो ठीक है । तूने पहले टाइप करना सीखा था न ! पास भी हुआ था !" वेलु मुप्पर ने सिर हिलाते हुए उसे ठीक माना ।

(बात तो सच है । बबई मे पहले गुज़र-बसर करने के लिए टाइपिस्ट का पेशा ही तो करता था वह ।)

"तेरी माँ तो अभी जिन्दा है न ?"

"नही तो । माँ की मृत्यु ग्यारह साल पहले हो गयी थी ।"

यह सुनकर वेलु मूप्पर ने सहानुभूति से साथ सिर हिलाया "तेरी माँ कुट्टिमालु इस इलाके वालो को बडी छत्र-छाया थी । उसके हाथ का हमने जो चावल का पानी पिया था, उसे कभी न भूलेगे "

(अतिराणिप्पाट के लोग दान-दक्षिणा देनेवाली माँ का 'चावल के पानी' से ही उसका स्मरण करते रहे हैं)

"क्या तेरी शादी हो गयी है ?"

"हो गयी ।"

"कितनी सतानें हैं ?"

"चार ।"

"लडके कितने है ?"

'दो लडके और दो लडकियाँ ।"

वेलु मूप्पर ने मुस्कराकर खुशी ज़ाहिर की ।

"बेटी " दरवाजे की तरफ चेहरा मोडते हुए पुकारा, "ज़रा कॉफी तैयार कर ला ।"

"मुझे अब कॉफी नही चाहिए ।"

"क्या बात है ? क्या गरीबो की कॉफी न पियेगा ?"

"मुझे यही भोजन करना है, इसलिए अब कॉफी की ज़रूरत नही ।" श्रीधरन ने बताया ।

स्नेहपूर्वक आतिथ्य माँगते देखकर वेलु मूप्पर का बूढा चेहरा खिल उठा ।

वह परिवार सपन्न नही था । पर गरीब भी नही । एक बार का भोजन दे

जरूर दे सकते थे। शाम तक इस घर में ही बैठूंगा। कई बातें जाननी हैं। ससद में पूछे जानेवाले सवालो से भी प्रमुख सवाल पूछना है। जीवित मर्मस्पर्शी सवाल।

"जरूर, अपने भोजन का सहभागी तुझे भी बनाऊँगा।' वेलु मूप्पर ने हँसते हुए कहा।

"वही काफी है। मैं मेहमान तो हूँ नही। पहले कितनी बार इसी घर से उण्णूलिअम्मा के हाथ से मैंने भात खाया था "

वेलु मूप्पर की निर्जीव आँखें खुली। उसने एक ठण्डी साँस छोडी।

"मेरी उण्णूलि ··उसके जाने पर मेरे अन्दर की रोशनी बुझ ही गयी " कहता हुआ वह श्वेत सिर हिलाने लगा। शब्दो मे सिहरन हुई। फिर कुर्सी को हाथ मे छूते हुए वेलु मूप्पर विषाद के कारण देर तक चुप रहा आया। चौदह साल पहले हमेशा के लिए बिछुडकर चली गयी अपनी पत्नी के लिए नब्बे वर्ष का बुजुर्ग स्मरण-पूजा कर रहा था।

श्रीधरन भी मोटी और ऊँचे कदवाली उस माँ के बारे मे सोच रहा था। लम्बे-लम्बे बालो को वह जब कभी खुला छोड देती थी तो कभी बाँध लेती थी। एक तौलिया से छाती ढककर बाहर आ जाती और सबके लिए तैयार होकर चलने का उसका भाव कभी नही भुलाया जा सकता। 'झगडालू उण्णूलि' उपनाम पा जाने पर भी दरअसल वह भोली-भाली और सात्विक प्रकृति की थी। उसका हृदय मृदु था। अनीति और जुल्म देखने पर वह तीखी आलोचना करने से नही चूकती थी। उस समय वह आदमी और सदर्भ को भी नही देखती थी। एक ओर उसकी जीभ अपनी बातो की नौको से छेदने लगती और दूसरी ओर मुलायम करने लगती थी।

अतिराणिप्पाट की उस वीर महिला को आखिरी बार देखने की याद मन मे ताजा हो गयी।

शकुण्णि कपाउण्डर और अर्जीनवीस आण्डि बडे भाई कुजप्पु की वकालत लेकर कन्निपरपु के घर के सामान का बँटवारा करने की उधेडबुन मे थे। पडोस-वाले यह सब देख जब हँस रहे थे तब परिवार के सम्बन्धो मे बिखराव पैदा करने-वाली इस नृशसता के खिलाफ केवल उण्णूलि ने ही आवाज उठायी थी "यह महापापी इसका अनुभव करेगा यह पापी सडक पर सड-सडकर मरेगा" का जो शाप उस माँ ने दिया था, वह कुछ निर्मम कहा जा सकता था।

उण्णूलि के शाप का फल न होने पर भी बडे भाई कुजप्पु की जिन्दगी का अन्त दयनीय था। अपनी तमिल बीबी और मुन्ने को लेकर वह जहाज पर चढ़ गया। जहाज मे मुन्ना बीमार हो गया। वह उलटी करते-करते चल बसा। लाश को समुद्र मे ही फेंक देना पडा। आखिर पिनाग (श्रीलका) पहुँच गये। छह महीने के बाद आबहवा के कारण या दुर्दशाग्रस्त होने के कारण कुजप्पु भी बीमारी का

शिकार हो गया। आखिर वापस भारत आने का निश्चय किया। बचा हुआ सब कुछ जहाजवालो को देकर भिखारियो की तरह ही वह तमिलनाडु मे वापस आया था। फिर दो साल के बाद गरीबी और बीमारी से पीड़ित होकर तमिलनाडु मे ही उसकी मृत्यु हो गयी।

बड़े भाई कुजप्पु की मृत्यु का समाचार चार महीने बाद श्रीधरन को मिल सका था।

"प्रिय श्रीधरन,

मैं रोग शय्या पर हूँ। तुझे एक बार देखने की इच्छा है।

तेरा बडा भाई

(हस्ताक्षर)

बड़े भाई की विकृत लिखावट का पत्र और एक अज्ञातनामा मलयाली का खत एक साथ ही श्रीधरन को मिले थे। अज्ञातनामा के पत्र मे लिखा था कि कल रात को मिस्टर फिटर कुजप्पु की मृत्यु हो गयी। यह सूचना हम बड़े दुख के साथ दे रहे है। लेकिन दोनो पत्र चार महीने बाद ही श्रीधरन को प्राप्त हुए थे।

उन दिनो श्रीधरन उत्तर भारत मे था। आर्ष भारत की आत्मा का अन्वेषण करके हिमालय के तपोवनो, गगा-जमुना के किनारो और कई पुण्य मन्दिरो के वातावरण मे अलक्ष्य होकर घूम रहा था।

बडे भाई की मृत्यु होने के दिन वह कहाँ था—यह जानने की इच्छा से डायरी खोलकर देखी। बडा अचरज हुआ उस दिन रात को मै प्रेतलोक मे था। हाँ, प्रेत लोक मे ही!

ज़िन्दगी मे यह अनुभव कभी नही भूल सकता।

बनारस की एक धर्मशाला मे कमरा लेकर ठहरा था। एक सप्ताह बिताने की इच्छा से ही कमरा लिया था। उस दिन साँझ के बाद धर्मशाला से बाहर निकला। एक भैया की दूकान से पूरी, भाजी ली और गरम दूध पी लिया, और फिर टहलने के लिए नदी तट की तरफ चला गया।

गगा-तट के मदिरो से पूजा का वाद्य सगीत, घटानाद और कीर्तन गूँज रहा था। चलते-फिरते हरिश्चन्द्र-घाट पहुँचा।

हरिश्चन्द्र घाट दुनिया का सबसे भीड भरा एक श्मशान है। सत्य का पालन करनेवाले पुराण-प्रसिद्ध राजा हरिश्चन्द्र के नाम पर जगत्-विख्यात है यह पुण्य-भूमि। काशी से तीन-चार मील दूर तक की, हिन्दुओ की लाशे गगा-तट के हरिश्चन्द्र घाट पर पहुँचती हैं। लकडी खरीदने और पुण्यघाट का भाडा देने का पैसा न होने पर कुछेक गरीब पार्थिव देह के पैरो और गर्दन मे बडा-सा पत्थर बाँधकर गगा के बीच ले जाकर डुबो देते हैं।

हरिश्चन्द्र घाट की श्मशान भूमि एक खलिहान के विस्तार मे ही है। इस

कारण चिताएँ पास-पास ही जलाकर शव-दाह करना पड़ता है।

उस समय वहाँ कई कोनो से पाँच चिताएँ एक साथ धू-धू कर जल रही थी। लम्बे कद का एक व्यक्ति हाथ मे लम्बी लकडी से चिताओ की लाशो को कभी कभी हिलाता। श्वेत कपडो से ढकी हुई कई लाशे प्रतीक्षा-सूची मे होने के कारण एक ओर रखी हुई थी।

वह उस 'अध्यात्म विद्यालय' की तरफ देखकर खडा हो गया।

श्मशान से नदी की ओर की सीढ़ियो के नजदीक खडी की गयी दीवार के एक कोने मे बैठकर वह श्मशान मे अग्नि और वायु के नृत्य को देखता रहा।

चिता मे जलनेवाली लाशें और एक कोन म एकत्र की गई वे अर्थियाँ कल तक इन्सान ही तो थी—खाते-पीते, सोते-जागते और शादी करके सतानो को पैदा कर सुख और दुख का अनुभव करते इन्सान। स्नेह-प्रेम के बदले मे दर्द पानेवाले लोग भी उनमे होगे! जिन्दगी का आनन्द लूटनेवाले युवक और युवती, विरले बुजुर्ग, कन्या, विधवा, गर्भिणी भोले-भोले, धोखेबाज, पण्डित, मूर्ख —ऐसे कितने ही उनमे होगे। इन सबो पर एक ही लेबल चिपकाकर परलोक के पार्सलो की तरह इन्हे एक ओर एकत्रित किया गया था।

गगा की तरफ देखा। वहाँ भभकती चिताओ के उज्ज्वल प्रतिबिम्ब पड रहे थे। लगता था कि मृत्यु को प्रज्ज्वलित दीपो की भेट चढायी गयी है।

नदी की ठण्डी वायु बज रही थी। बरामदे मे लेटे-लेटे कई बाते मन मे आयी-गयी। पौराणिक काल से लेकर आज तक कितनी करोड लाशे इस श्मशान मे जलकर राख हो गयी होगी! और अब कितनी करोड आनेवाली है! एक तरह की खुमारी से आँखे बन्द हो गयी। न जाने कब नीद आ गई।

आँखे खोलने पर वातावरण के बारे मे झट कोई बोध नही हुआ। स्मरण किया कि काशी के हरिश्चन्द्र-घाट श्मशान की दीवार के नजदीक के बरामदे मे लेटा हुआ हूँ।

समय के बारे मे कुछ नही कह सकता। शायद दस बजे होगे—हो सकता, बारह बज गये हो—सुबह भी होगी

एक ओर पडी लाशो की सख्या कुछ कम हो गयी है। चारो चूल्हे जोर से जल रहे थे। लेकिन जलानेवाले कोई नही दिखाई पडे।

ध्यान से देखने पर एक भैया दीख पडा। वह बेचारा जी-तोड कोशिश करने के कारण थककर सो रहा है— लाशो के ढेर के नजदीक ही। वहाँ एक फानूस भी चमक रहा था

किसी प्यासे की, पानी पीने की-सी आवाज आती है। समझ गया कि गगा की लहरें श्मशान से टकराकर आवाज पैदा कर रही हैं।

ठहरने की धर्मशाला तो दो-तीन मील दूर पर है। रात को अकेले चलना

खतरनाक है। यहाँ तो लाशें इन्सान का उपद्रव नही करेंगी। रास्ते मे जरूर शैतान होगे—इन्सान रूपी शैतान। गेरुआ कपडा न पहननेवाले को देखने पर वे यो ही नही छोड देते। जब तक उनको मार न डालें, तब तक उन्हे यह बात कैसे मालूम हो कि आगतुक की जेब मे सिर्फ छह आने ही थे। गगा के अगाध हृदय मे एक और लाश थी बरामदे मे ही आँखें खोलकर लेट गया। कितनी देर तक वहाँ ठहरेगा, कोई पता नही है।

पल युगो की तरह लगते हैं।

लेटकर ऊपर की तरफ देखा

स्वच्छ आकाश—करोडो नक्षत्रो के साथ टिमटिमानेवाला विशाल नीलाकाश।

सृष्टि के अनन्त विस्तार का अदाज लगाने पर अलघ्य ऊँचाई की माया की सतहो पर क्या-क्या घट रहा है?

पराशक्ति के बडे वर्कशाप की ओर निगाहे फैलाकर लेटकर सोचने लगा।

करोडो नक्षत्र। वे आसमान मे एक ही सतह मे नही रहते। ऊँचे ऊँचे-ऊँचे अनेक सतहो मे अनन्तता मे फैले अद्भुत कर्मक्षेत्र है। वहाँ की दूरी? आधुनिक ज्योतिषशास्त्र की रोशनी म मै उसे जरा नाप लूँ—काल और दूरी के साथ यो ही एक खेल खेलूँ। समय तो कट जायेगा।

एक सेकेण्ड मे एक लाख सतासी हजार से भी अधिक मील यात्रा करनेवाली प्रकाशरश्मि को हम मापक मान ले। उस रश्मि को चन्द्रगोल मे पहुँचने के लिए एक सेकेण्ड से जरा अधिक समय ही चाहिए। फिर पाँच घण्टो मे वह सौरमण्डल को पार कर सकती है। सौरमण्डल के उस पार पहले के नक्षत्र-वितान के सबसे नीचे के नक्षत्र मे पहुँचने के लिए चार सालो की जरूरत है। उस नक्षत्र प्रात के एक छोर से दूसरे छोर मे पहुँचने के लिए अस्सी हजार वर्ष तक यात्रा करनी होगी। फिर एक शून्य मडल। उसके पार—बीस लाख वर्ष पहले—आन्द्रेमिदा नाम का नक्षत्र-देश। आन्द्रेमिदा के उस पार करोडो नक्षत्र-जाल। उनमे सबसे बडे, एक-एक पेटी मे करोडो नक्षत्र—प्रकाशित होनेवाले दस हजार हेर्कुलिस नाम के नक्षत्र-साम्राज्य! वे नक्षत्र साम्राज्य तीस करोड प्रकाश वर्ष के उस पार! यही नही, उसके भी उस पार है सिर चक्कर खा रहा है।

मैं जिस नक्षत्र की रश्मियाँ देख रहा हूँ, वे अठारह हजार से एक लाख चौरासी हजार वर्ष पहले ही भूमि पर पहुँच गयी थी। बाह्याकाश मे एक गोरे दाग की तरह दिखाई देने वाली आकाश-गगा दस हजार करोड तारो के प्रकाश पुज की द्योतक है। आकाश गगा से धरती की दूरी? पचास हजार प्रकाश वर्ष!

मैं जिन तारो को देख रहा हूँ उनमे से कई लाखो-करोडो वर्ष पूर्व बुझ गये होगे। दस हजार, लाखो-करोडो वर्षों के पूर्व रूप लेनेवाली नक्षत्रो की राशियो को धरती पर पहुँचने के लिए लाखो-करोडो वर्ष लेने होगे। यानी मैं जिन नक्षत्रो

को देख रहा हूँ उनमे अधिकाश आज नही हैं। एक के बाद एक रूपाकार होते रहने वाले तारो को मैं नही देख पाता। जो अब नही है उसे मैं देखता हूँ। जो है उसे भी देखता हूँ। आर्ष भारत के दार्शनिक क्या इसी को माया प्रपच नही कहते ? •

चिता से कुछ विस्फोट की-सी आवाज सुनी। खोपडी जलकर टूटी होगी ! गर्भिणी का फूला पेट बच्चे सहित जल रहा होगा

एक-एक पल युगो की तरह लग रहा है काल स्तब्ध हो गया है क्या ? कुछ भी तो नही मालूम होता लेकिन जिन्दगी की कुछ घटनाओ को याद कर सकता हूँ। आपस के सबंध के बिना कुछ सपनो की तरह ये मन मे रेंग रही हैं।

(उस समय हज़ारो मील दूर पर तमिलनाडु के एक शहर के कोने मे बडा भाई कुजप्पु भौतिक शरीर को छोडकर प्रेत-लोक का प्रयाण-आरभ कर चुका था।)

युग-युग-युग

प्रार्थना की कि ये चिताएँ न बुझें।

—लाशो की मशालो की रोशनी ही इधर आश्वास दे रही हैं। ये बुझ जाती तो अँधेरा रेंग आता। करोडो आत्माओ से मिला-जुला अन्धकार

आसमान की अगाधता मे पुन निगाहे फैलायी। इन नक्षत्रो के हिलने की दूरी करोडो मील की होगी आइन्स्टीन की फोर्थ डायमेन्शन थियोरी ठीक तरह समझ सका ऐहिक पारत्रिक समरेखाएँ आपस मे टकरा रही है अनन्तता के साथ उसका अपना निकट सन्बन्ध बना हुआ है। प्रेतलोक मे विहार कर रहा है

गगा माई की जय • "

दूर मे एक आवाज़ सुनी। इन्सान का ही शब्द है ! हाँ ! इन्सान का शब्द कितना मीठा है !

ब्रह्ममुहूर्त मे गगा को जगाने के लिए पडो का आगमन हुआ है। फूलो से सजे कुभो को लेकर "गगा माई की जय" की पुकारो के साथ ••

दीवार के बरामदे से हौले से उठकर गगा मे उतर चेहरे पर पानी छिटककर सीधा धर्मशाला की तरफ चला •

"मेरी उण्णूलि—मेरी उण्णूलि—ठीक तो है—उसके मुँह मे काँटे थे—लेकिन, उसके हृदय मे एक शहद का छत्ता भी था "

वेलु मूप्पर के उण्णूलि-मत्र ने श्रीधरन को काशी से वेलु मूप्पर के बरामदे मे पहुँचा दिया।

मर्मर तीन

"लगता है कि कन्निप्परपु के घर की सपत्ति का बँटवारा कल ही हुआ था।"

बेलु मूप्पर ने सिर हिलाते हुए कहा।

श्रीधरन भी याद कर रहा था। चौंतीस साल पहले के बँटवारे के समय की याद उसके मन में आज भी ताजा है।

"उस बदमाश शकुण्णि कपाउण्डर और अर्जिनवीस आण्डि ने ही कुजप्पु को अपने इशारे पर नचाया था।"

वेलु मूप्पर यों कहकर श्रीधरन के मन की बातें प्रतिफलित कर रहा था।

"फिर वे अब कहाँ है ?" वेलु मूप्पर ने हाथ और सिर हिलाकर स्वय पूछा, "शकुण्णि को क्या गति मिली ?" सभी देहातियों ने उससे घृणा की। आँखों में धूल झोंकने के लिए उसे कोई आदमी नही मिलता था। जब पति सरक्षण करने की हालत मे नही रहा, तो उसकी बीबी मैथिली भी किसी मर्द के पीछे चली गयी। अपनी बीबी को छीन लेनेवाले बदमाश से बदला लेने की क्षमता न होने के कारण कपाउण्डर अपनी मूछ और तोंद को सहलाते हुए चुपचाप रहा। आखिर उसको रेलवे फाटक-घर के नजदीक कुत्ते की मौत मरना पडा। किसीने मुडकर देखा तक नही।"

श्रीधरन ने सब कुछ सुना पर, कुछ भी नही कहा।

"आखिर आण्डि की क्या दशा हुई ? क्षयरोग का शिकार होकर खाँसते-खाँसते खून की उलटी कर वह भी चल बसा "

अर्जीनवीस आण्डि के अन्तिम पलों के बारे मे सुनने पर श्रीधरन को उस पर जरा हमदर्दी ही हुई। कपाउण्डर की तरह आण्डि उतना अधिक बदमाश नही था। शकुण्णि कपाउण्डर लोगों पर पीछे से झपटकर चोट पहुँचानेवाला एक भेडिया था पर, आण्डि अपनी आजीविका चलाने के लिए कुछ तरकीबें निकाल लेता। वह कपाउण्डर की तरह कोई पेशा किये बिना दूसरों का खून पीनेवाला व्यक्ति नही था। आण्डि शिकार को पकडने के लिए सामर्थ्य रखनेवाला एक सियार था—उसके अलावा कई झूठे दस्तावेजों को बनाने और कई रागों मे गाने की सामर्थ्य रखनेवाला कलाकार भी था। उस कलाकार के दयनीय निधन की याद आने पर श्रीधरन सहानुभूति किये बिना नही रह सका।

अर्जीनवीस आण्डि के बारे मे सोचने पर पाणिक्कर के स्कूल मे अभिनीत 'अम्मालु परिणय' नाटक मन के पर्दे को हटाकर बाहर आता दिखाई पडा। कृष्णन मास्टर का वेश पहनकर रंगमंच पर आनेवाले बढई माधवन की भी याद आ गयी।

"वह माधवन बढई अब कहाँ है ?"

वेलु मूप्पर ने थोडी देर तक सोचा।

"कौन माधवन बढई ? फलगुनन मालिक के यहाँ काम करनेवाला माधवन बढई न ?"

(समझ गया कि कोरप्पन ठेकेदार का मुंशी फलगुनन फिर एक मालिक हो गया है और यों अतिराणिप्पाट में दूसरा एक बढ़ई आ गया है।)

"मैं भास्करन मालिक की फर्नीचर दूकान में काम करनेवाले बढ़ई माधवन के बारे में ही पूछ रहा हूँ।" श्रीधरन ने स्पष्टीकरण दिया।

"ओह ! वह चालाक माधवन है न ?" वेलु मूप्पर ने स्वयं हँसते हुए उसका किस्सा सुनाया।

काठ के गोदाम के मालिक भास्करन के 'फर्नीचर शॉप' का सामान अतिराणिप्पाट के दूसरे एक कोने में मायाजाल की तरह अप्रत्यक्ष हो जाने की बात भास्करन को मालूम न थी। फर्नीचर निर्माण में नुकसान होने से भास्करन मालिक ने उसे बन्द कर दिया। बढ़ई माधवन को बर्खास्त कर दिया गया। माधवन एक महीने तक चुप रहा। फिर कुंजिरामन मालिक को हिस्सेदार बनाकर 'नेशनल फर्नीचर वर्क्स' नाम से एक दूकान खोलकर दक्षिण से आठ-दस बढ़ईयों को भी ले आया। उसने अचानक एक बड़ी फर्नीचर दूकान खोली। नये मॉडल की बेंत की कुर्सियाँ, दर्पण लगी अलमारी, मेज़, पलंग आदि कई गृहोपकरण बनाने लगा। यों धीरे-धीरे पुराना बढ़ई माधवन एक नया माधवन मालिक हो गया। एक साल के बाद उसने एक फर्नीचर की इनामी योजना आरंभ की। पर्ची आने पर फिर पैसा नहीं अदा करना होगा। पहली पर्ची पाणन अप्पु को ही निकली थी। तीन रुपये अदा करनेवाले पाणन अप्पु को साठ रुपये मूल्य का एक बड़ा पलंग हासिल हुआ। वह पलंग दो मुस्लिमों के सिरों पर ढोते हुए अतिराणिप्पाट की प्रदक्षिणा के बाद ही, अन्त में माधवन मालिक ने पाणन की झोपड़ी में पहुँचाया था। मासिक इनामी योजना के अलावा एक साप्ताहिक इनामी योजना की भी शुरूआत की। अनेक भागों से लोग माधवन की फर्नीचर इनामी योजना में शामिल होने लगे। छह महीने तक इस प्रकार कारोबार और इनामी योजना ठीक तरह से चलती रही। फिर इनाम की अंतिम तिथि से एक दिन पूर्व फर्नीचर दूकान नहीं खुली। माधवन मालिक और कामगारों का कोई पता ही न लगा। ग्राहकों ने दो दिन तक इन्तजार किया। फिर दूकान खोली गयी। उसके अन्दर दो-तीन काठ के टुकड़े, चार-पाँच चटाई के टुकड़े और दो तीन कीलों के अलावा कुछ दिखाई नहीं पड़ा।

"क्या माधवन बढ़ई को फिर किसी ने देखा था ?" श्रीधरन ने पूछा।

"फिर कैसे वह पकड़ में आता ?" वेलु मूप्पर ने हाथ हिलाते हुए कहा, "वह उस जगह चला गया था जहाँ से उसे कोई भी नहीं पकड़ सकता था।"

"क्या कहा ? हाय, दुख की बात है !" श्रीधरन ने सहानुभूति के साथ कहा। श्रीधरन ने समझा था कि उसने आत्महत्या कर ली होगी।

"वह चालाक बढ़ई माधवन फौज में भर्ती हो गया।" वेलु मूप्पर स्पष्ट करते हुए हँसने लगा।

खाकी यूनिफॉर्म पहने हाथो मे बन्दूक लिये बढई माधवन का कल्पित चित्र सामने उभरते ही श्रीधरन हँस पडा।

उस समय एक नवयुवक उधर आ गया। खाकी रग का पेण्ट, सफेद कमीज पहने एक सफेद दुबला-पतला व्यक्ति। हाथ मे कागज की एक छोटा-सा बडल था। वेलु मूप्पर को पदचाप से मालूम हुआ कि कोई अभी आया है। "कौन है ?"

"मैं हूँ कुजिरामन।"

"ऊँ" फिर कुछ नही बताया।

कुजिरामन अन्दर घुस गया। पाँच मिनट के बाद वह फिर बाहर आया।

"दादाजी क्या मै जाऊँ ?"

"ऊँ" वेलु मूप्पर ने गौरव भाव से कहा।

कुजिरामन ने श्रीधरन की तरफ निगाहे घुमायी—नायलोन बुशर्ट, रेशमी धोती पहनकर चटाई पर पालथी मारकर बैठनेवाले यह सज्जन किधर से पधारे है ? उसकी नजर का मतलब यही था।

कुजिरामन चला गया।

(श्रीधरन को मालूम हुआ कि कुजिरामन के हाथ की घडी स्मग्लिग की है।)

"क्या वह चला गया ?" वेलु मूप्पर ने श्रीधरन से पूछा।

"गया। था कौन ?"

"नटखट लडका। उसके इधर आने पर बैल के माँस की बदबू आयी होगी।" वेलु मुखिया अपनी नाक को सिकोडते हुए बोला।

"कौन था वह नौजवान ?"

"अपनी सुभद्रा का मामा है। आठवी कक्षा तक पढा है। उसका पेशा तो मालूम हो गया ? वह कम्पनी के साहब के बगले का रसोइया है। बैल और सुअर का माँस पकाने का पेशा है। उमे छूने पर नहाना चाहिए। हड्डी चाटने वाला "

वेलु मुखिया बिलकुल पुराणपथी था। उसका विचार था कि पुरुष को दूसरो के यहाँ रसोइये का काम नही करना चाहिए। खासकर बैल और सुअर का माँस पकाना निकृष्ट काम है। सुभद्रा का मामा है। नही तो साब के इस छोकरे को वह अन्दर घुसने नही देता।

"क्या रसोइया का काम करना बुरा है ?" श्रीधरन ने पूछा। "किसी काम के बिना यो घूमने से ही अच्छा है कोई न कोई काम करना।"

श्रीधरन की बातो का कोई असर नही हुआ। उसने पूछा कि पेट मे चूहे कूदते वक्त क्या कोई मल खाने लगता है ?

श्रीधरन ने अपने पिताजी के उपदेश का स्मरण किया "कोई भी काम अदना नही है। इन्सान का पेशा चाहे कोई भी हो, उसका अपना महत्व है। भगी के काम का भी ! कोई पेशा किये बिना जो चुप रहता है उसीको नीच कहना चाहिए।

राह खर्च निकालने के लिए बगाल की खाडी की चिलचिलाती धूप मे काम करने की बात भी श्रीधरन के स्मृति-पटल पर उतर आयी।

गाडी मे यात्रा करते हुए कई जगहो पर उतरा था। आर्य भारत की आत्मा की खोज करनेवाली प्रथम यात्रा थी वह। काशी से यात्रा शुरू की, कलकत्ता जाने का इरादा था। यो बर्दवान पहुँच गया। बटुवे मे पाँच-छह आने ही थे। बर्दवान मे कलकत्ता तक की ट्रेन-यात्रा के लिए पैसा नही था। कलकत्ता मे पहुँचने पर कई पत्रिकाओ से पारिश्रमिक मिल जाता।

बर्दवान से कलकत्ता तक साठ मील पैदल यात्रा करने का निश्चय किया। एक बैग को लटकाया और चल दिया। आधे आने के भुने चने लेकर खा लिये और ऊपर से ठण्डा पानी बस। दोपहर को मन्द पवन के झोको मे एक पेड की छाया मे सो गया। यो शाम को किसी गाँव मे आ पहुँचा।

"क्या इधर कही धर्मशाला है?" सडक से जानेवाले एक बगाली युवक से पूछा।

पेण्ट, शर्ट और शूज़ पहन हाथ मे एक बैग लिये, यात्रा करनेवाले इस अजनबी के अँग्रेजी सवाल का जवाब उस बगाली ने बग भाषा म ही दिया। शायद शक्ल-सूरत देखकर उसने मुझे एक बगाली की समझा होगा।

"मै बग भाषा नही जानता—क्या इधर नजदीक कोई धर्मशाला है? मेहरबानी करके बताइए।" श्रीधरन ने पुन अँग्रेजी मे ही निवेदन किया।

उस बगाली युवक ने श्रीधरन को एडी से लेकर चोटी तक निहारा। "एक फर्लांग दूर पर एक टी० बी० है।" इस बार उसने भी अँग्रेजी मे उत्तर दिया।

"टी० बी० मे रहने के लिए क्या भाडा नही देना पडेगा?"

"हाँ, देना तो होगा।"

"मेरे पास पैसे नही है। मुझे यही जानना था कि क्या इधर कोई धर्मशाला है?"

"आप कहाँ जा रहे है?"

"कलकत्ता।"

"क्या पैदल ही जा रहे है?"

"हाँ"

"कोई नौकरी तलाश करने के लिए ही कलकत्ता जा रहे है?"

"नही, फिर भी इस समय कुछ पैसे की जरूरत है ताकि मै कलकत्ता जा सकूँ। इसके लिए कोई भी काम करने को मै तैयार हूँ।"

"आप क्या काम करना जानते है?"

"स्टेनोग्राफर, क्लर्क, टाइपिस्ट का काम कर सकता हूँ। चपरासी का काम भी कर सकूँगा। जरूरत पडे तो घर का काम-काज भी कर सकता हूँ, दो-तीन दिनो के

लिए ही।"

"इस तरह दो-तीन दिनो के लिए क्लर्क या चपरासी का काम मिलना मुश्किल है। हाँ, मजदूरी करने के लिए आदमियो की जरूरत है।"

"मजदूर का काम करने के लिए भी तैयार हूँ।" श्रीधरन शान के साथ बोला।

यह सुनकर वह बगाली स्वय हँसने लगा। परिहास था या सिर्फ अनुकपा ?

वह थोडी देर तक कुछ सोचता रहा। "मैं कोशिश करूँगा। आ आ मेरे साथ।"

वह बग बाबू श्रीधरन को एक फर्लांग दूर स्थित टी० बी० मे ही ले गया था।

टी० बी० के बरामदे मे पाइप पीता तोदवाला एक बगाली बाबू बैठा था।

श्रीधरन को ले चलनेवाले युवक और उस महाशय के बीच बगाली मे कुछ बातचीत हुई।

बगाली बाबू ने श्रीधरन को गौर से देखा। फिर अँग्रेजी मे कहा, "मैं तुम्हे एक नौकरी दूँगा। जमीन नापने का काम है। तुम्हे जजीर पकडकर उनकी मदद करनी होगी। दिन म दो रुपये पारिश्रमिक मिलेगा। तुम्हे मजूर है ?"

बगला युवक ने टी० बी० बाबू का परिचय दिया "सर्वे के अधिकारी है। आसपास के झुरमुटो की पैमाइश करने आये है।"

"तैयार।" श्रीधरन ने अपनी स्वीकृति प्रकट की।

"ऐसी बात है तो तुम आज मेरे साथ ही रहो। कल सुबह सात बजे काम के लिए हाजिर होना है।"

"थैंक यू सर।"

रात बिताने के लिए मुफ्त एक जगह तो मिल ही गयी। कलकत्ता के मार्ग व्यय दिलानेवाले एक छोटे से काम का आश्वासन भी मिला।

श्रीधरन चैन के साथ लेट गया। अगले दिन सुबह डेढ मील दूर की झाडियो की तरफ पैमाइश करनेवालो के साथ रवाना हुआ।

मजदूर उतरे। श्रीधरन ने नापने की जजीर पकड ली। कडी धूप मे पत्थरो, काँटो और साँपो से भरी जगहो से चलने लगा। मार्क करने की जगहो मे पत्थर और लकडी रोप दिये। पसीने से तर हो गया इसलिए बहुत अधिक पानी पी गया।

एक जगह फिसलकर गिर जाने से कुछ चोट भी लग गयी। लेकिन ईमानदारी से काम करने की खुशी भी हुई

शाम को काम पूरा कर टी० बी० मे वापस आया। सर्वे बाबू ने पैकेट से पाँच रुपये का नोट श्रीधरन की तरफ बढाया।

दिन का मेहनताना दो रुपये है, फिर पाँच रुपये क्यो ? मुझे किसी का भी अहसान नही चाहिए—श्रीधरन पैसे लिये बगैर शकित-सा खडा रहा।

"तुम्हारा वेजेज !" बगाली बाबू ने पाँच रुपये का नोट श्रीधरन की तरफ फिर बढ़ा दिया।

"दिन का पारिश्रमिक है न ? बाकी देने के लिए मेरे पास पैसे नही हैं।"

सर्वेयर बाबू हँस पडा "मेहनताना का निश्चय करनेवाला मैं ही हूँ। इसे एक दिन के या दो दिन के वेतन के रूप मे जैसा चाहो मान सकते हो। कल सुबह तुम कलकत्ता रवाना हो सकते हो—"

श्रीधरन ने फिर कुछ नही कहा। मेहनत का पारिश्रमिक लेकर जेब मे डाल लिया।

"अब तुम नौकर नही बल्कि मेहमान हो।" बगाली बाबू ने हँसते हुए श्रीधरन का हाथ पकडकर नज़दीक बिठाया।

उस दिन रात को उस बगाली बाबू के साथ ही भोजन किया था।

सर्वेयर घोष साहब साहित्य का रसिक था। भोजन करने के बाद वह कविता गाने लगा। रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कविताएँ मौलिक बग भाषा मे सबसे पहले घोष बाबू के कण्ठ से ही मैंने सुनी थी।

अगले दिन एक बैलगाडी मे चढकर नजदीक के रेलवे स्टेशन पर पहुँच गया। वहाँ से कलकत्ता जानेवाली गाडी मे चढा। बटुवे मे एक रुपये के साथ ही हावडा स्टेशन पहुँच गया था

"यद्यपि वह बढई माधवन लोगो को धोखा देकर गया है तो भी मैं एक बात मे उसको पसन्द करता हूँ।" वेलु मूप्पर की इस आवाज़ ने श्रीधरन को कलकत्ता से वेलु मूप्पर के बरामदे मे पहुँचा दिया।

"बढई माधवन ने क्या अच्छा काम किया था ?"

वेलु मूप्पर कुछ विचार कर हँसते हुए बोला, "इस इलाके के सबसे कजूस व्यक्ति भास्करन मालिक को धोखा देने मे एक बढई माधवन ही समर्थ हुआ था। इसी वजह से मुझे वह अच्छा लगा।"

"क्या भास्करन मालिक अब भी है ?" श्रीधरन ने पूछा। (भास्करन मालिक का स्मरण होने पर, उसके साथ घोडागाडी मे सफर करनेवाले सिर पर सफेद पखोवाला ऊँचे कद का हृष्ट-पुष्ट अरबी भी स्मृति मे उभर आया।)

"भास्करन मालिक को मरे अठारह साल बीत गये।" वेलु मूप्पर ने उँगली से हिसाब लगाकर बताया।

मर्मर चार

श्रीधरन को पहले ही मालूम था कि सुन्दर और सुचारु ढग से पोशाके पहनने-वाला शौकीन भास्करन मालिक अमीर और विकृत लैंगिक स्वभाववाला व्यक्ति

है। 'छतरी की छडी' बालन की मृत्यु के पीछे भास्करन मालिक के गुप्त योगदान की सच्ची बात भी श्रीधरन के मन मे अकित थी। चाहे गलतफहमी से हो, चाहे बढ़ई माधव के प्रोत्साहन से हो, चाहे किसी भी ढग से क्यो न हो, भास्करन मालिक को एक घातक के रूप मे ही श्रीधरन स्मरण कर सकता है।

भास्करन मालिक की मृत्यु के सम्बन्ध मे वेलु मूप्पन ने जो कहा उसे जरा ताज्जुब के साथ ही श्रीधरन ने सुना था। भास्करन मालिक की तरह लैंगिक आसक्ति रखनेवाले एक मुस्लिम मालिक ने उस खूबसूरत नायर लडके को छीनन की कोशिश की जिसको भास्करन मालिक ने अपने कब्जे मे रखा था। चेगरा की एक दूकान की छत पर चलते क्लब मे दोनो मालिको की गरमागरम बहसें हुई। उस दिन रात को भास्करन मालिक घर नही पहुँचा। रास्ते मे मुस्लिम मालिक के एक बदमाश सेवक ने भास्करन को छुरा भोककर मार डाला। पुलिम ने मुकदमा दायर कर दिया। पर अदालत ने प्रमाण न होने की वजह से मुजरिम को छोड दिया। मुद्दालह को पीछे से मदद करने के लिए कई अमीर मुस्लिम मालिक तैयार थे। मारे गये भास्करन के पक्ष मे कोई नही था। क्योकि वह बिलकुल स्वार्थी था। वह अपनी बीबी को एक नौकरानी की तरह ही मानता था। बाहर देखने मे अमीर था लेकिन घर मे दिन के खर्च के सिर्फ बारह आने पत्नी के हाथ मे थमा-कर एक पैसा भी अधिक खर्च न करने के लिए कहता। भास्करन मालिक के गोदाम के दफ्तर मे दो मुँशी काम करते थे। मालिक की मेज़ पर एक रिवॉलविग पखा था। गर्मी से मुँशी पसीने से तर हो जाते लेकिन वह पखे की हवा को अपने सामन ही रखता। एक भी पैसा किसी को भीख नही देता। उमका ख्याल था कि भिख-मगे तो भगवान से अभिशप्त होते हैं। ऐसे लोगो को कुछ देना ता ईश्वर की इच्छा का विरोध करना है। लेकिन अपनी विकृत लैंगिक वासना की पूर्ति करने के लिए वह कितना भी पैसा खर्च करने के लिए तैयार था। आखिर वह ज़िन्दगी से कैसे हाथ धो बैठा? एक नाले के किनारे किसी ने छुरा मारकर उसकी इहलीला समाप्त कर दी।

भास्करन मालिक की मृत्यु पर श्रीधरन को गम नही हुआ, खुशी भी नही हुई। हर आदमी का जीवन-यापन का ढग अपना अलग ही होता है। अधिक विचार करे तो हम सभी ता स्वार्थी है। स्वार्थ और त्याग एक ही सिक्के के दो पहलू है। एक व्यक्ति का जो जीवनदर्शन है वह दूसरो को स्वीकार नही होगा। सब लोग अपनी मन की सतृप्ति को लक्ष्य कर जीवन-यापन करते है। स्वार्थी और कजूस कहकर हम जिन लोगो की अवज्ञा करते हैं वे हमसे भी अधिक सतृप्ति और सुख का अनुभव करनेवाले हैं। तृप्ति और आनन्द महज सापेक्षिक भाव है।

स्वार्थी भास्करन मालिक के बारे मे सुनने पर सत्रह वर्ष पहले मध्य अफ्रीका के डम्मानी की याद ताज़ा हो गयी। डम्मानी न्यासालैंड का एक अमीर भारतीय

व्यापारी था। वह सिंधी था। ब्लाण्टियर मे उसकी कपडे की एक बडी दूकान थी। न्यासालैण्ड के कई शहरो और गाँवो मे उसकी कई शाखाएँ थी।

उस पूजीपति के सम्बन्ध मे कई कहानियाँ सुनी थी। पहले सोचा कि ये दन्त-कथाएँ हैं। एक दिन दोपहर को उस व्यक्ति को सडक पर सम्मुख देख लिया। एक दुबला-पतला और पाँच फुट लम्बे कद का आदमी। एक पुरानी धोती और कमीज पहने था। हाथ मे एक मैला-सा झोला लटका रखा था। शायद सब्जी-मण्डी से लौट रहा था। दोपहर के बाद मार्केट से सूखी-सडी बची-खुची तर-कारियाँ कम पैसे मे मिलती उन्हे खरीदकर वह डम्मानी घर लौट रहा था।

अतिराणिप्पाट का भास्करन मालिक दिन के खर्च का पैसा --बारह आना ही सही—पत्नी के हाथ मे सौपता था लेकिन ब्लाण्टियर के डम्मानी को तो अपनी बीवी पर उतना भरोसा ही नही था। खराब गेहूँ और नाले मे फेंक देने के लायक तरकारियाँ वह अकेला ही बाजार जाकर खरीद लाता •

थोक व्यापार की उसकी दूकान मे कपडे की गाँठो पर लगे जितने भी कागज आते थे, उनमे एक टुकडा भी डम्मानी व्यर्थ नही जाने देता था। सप्ताह मे एक बार इन कागजो को उठाकर स्वय मोहल्ले मे ले जाकर बेच आता।

भारतीय व्यापारियो से बातचीत करने के लिए डम्मानी शाम को चार बजे ही जाता था। शाम की चाय वह इस तरह दूसरे की दूकान पर पी लेता। वह अपने मन मे हिसाब लगाता कि चाय के मूल्य के रूप मे तीन पैसे का मुनाफा आज मिला है। कपडे के व्यापार से हर रोज एक सौ अशर्फियो का मुनाफा मिलने पर भी इस तरह के खराब अण्डे और सडी तरकारियाँ खरीदकर, पुराने कागजो को बेचकर और मुफ्त की चाय पीकर जो पैसा वह बचाता, उसी से उसे बहुत सतृप्ति और खुशी मिलती थी।

डम्मानी का एक ही पुत्र था। लोगो ने समझा था कि उसी सन्तान के लिए वह इतनी अधिक तकलीफ झेलकर पैसे इकट्ठे कर रहा है। लेकिन एक दिन एक मोटर-दुर्घटना मे वह बालक चल बसा। इससे डम्मानी के चरित्र मे कोई परिवर्तन नही आया। वह और भी निकृष्ट कजूसी का काम करने के लिए तैयार हो गया।

इस ढग का था डम्मानी का आत्मसन्तोष।

(चार-पाँच साल पहले ही डम्मानी की मृत्यु हो गयी। उसका मोटा बैक बेलेन्स और सम्पत्ति मृत्युकर के रूप मे सरकार के खजाने म चली गयी)

क्या डम्मानी की जिन्दगी एक पराजय थी ? उस बुजुर्ग ने अपनी जिन्दगी के लक्ष्य की पूर्ति करने की सतृप्ति के साथ ही अन्तिम साँसे छोडी थी।

डम्मानी का स्मरण करने पर ब्लाटिण्यर के दूसरे एक विचित्र व्यक्ति मि० सोमन की याद ताजा हो आयी। छह फुट लम्बा, मोटा-ताजा ऊँचे कद का व्यक्ति। काला-कलूटा, लाल-लाल आँखे, उग्र स्वभाव। उसकी आँखें देख बदमाशो

को भी पसीना आ जाता। इस तरह की आज्ञा-शक्ति थी उस गम्भीर व्यक्ति मे।

सोमन मलयाली था। इतना साहसी कि पच्चीस वर्ष पहले हाथ मे कुछ फुटकर लेकर ही अफ्रीका मे जहाज से उतरा था। जी-तोड मेहनत और कार्य-कुशलता से वह कुछ ही वर्षों मे प्लाण्टियर का मुखिया हो गया। अब उसके अपने चाय के बाग हैं। सरकार द्वारा नीलाम मे बेचा जानेवाला तबाकू खरीदकर उसका वह थोक व्यापार करता है। न्यासा झील के किनारे एक बडा बगला है। चिडियो का शिकार करने के लिए उसका अपना एक बगीचा है। लेकिन वह समाज मे अकेला है। उसने समाज से नफरत की थी या समाज ने उसकी अवहेलना की थी, इसका कोई पता नही है। इस जगह के भारतीय व्यापारियो ने उसको छोड दिया (ईर्ष्या से छोडा होगा) गोरे लोगो ने हृदय से उसकी अवज्ञा की। (काला इन्सान होने के नाते की होगी।)

अफ्रीका के उस शहर के कुछ मलयालियो ने भी उस व्यक्ति से निकट सम्बन्ध नही रखना चाहा।

देशवासी हब्शी भी उससे दूर रहते थे।

सोमन ने किसी की परवाह किये बिना अपनी इच्छानुसार शान से जिन्दगी गुज़ारी। मि० सोमन का मेहमान बनकर न्यासा झील के किनारे के उनके बगले म एक रात बीताने की और उस अकेले इन्सान के मुंह से उसके दर्शन की व्याख्या सुनने की बात को भी श्रीधरन नही भूल पाया था।

थोडी-थोडी गर्मी और हल्की चाँदनी की एक रात। झील की छोटी-छोटी लहरे चाँदनी का घूंघट पहनकर नाच रही थी। सफेद बालु तट पर ताड-वृक्षो की काली छायाएँ पक्तिबद्ध हो रही थी। बगले के पीछे से कोई पैशाचिक स्वर उठ रहा था। न्यासा झील के हिप्पो (दरियाई घोडा) की आवाजे थी। यह उन जानवरो की रति-क्रीडा का मौसम है।

बगले के बरामदे की बेंत की कुर्सी पर बैठकर दोनो ह्विस्की पी रहे थे। अफ्रीका के सम्बन्ध मे थोडी-बहुत बाते सुनाने के बाद सोमन ने अपना विषय बदल दिया।

"मि० श्रीधरन, यहाँ के लोगो से, विशेषकर मलयालियो से, आपने मेरे बारे मे कई बातें सुनी होगी "

(बात तो ठीक है, फिर सोमन की अपनी निजी जिन्दगी की भेदभरी बातें। सोमन ने दस वर्ष पहले एक खूबसूरत विधवा से शादी की थी। उस विधवा की तब सात-आठ वर्ष की एक लडकी थी। नौ साल यो ही बीत गये। माँ की चमक-दमक जरा पीली हो गयी तो उसने उसको छोड दिया। (उसे आजीवन अपेक्षित आर्थिक सहायता देने का प्रबन्ध कर दिया गया था।) उसके बाद सोलह-सत्रह की उस यौवन-सम्पन्न लडकी को ही स्वीकार कर लिया। गोरो का खून छलकाती वह

लड़की दिन मे सोमन को 'डैडी, डैडी' पुकारकर आइस्क्रीम खाती। रात को वही नाइट गाउन पहनकर डैडी के माथ लेटती भी।)

ह्विस्की की चुस्की लेते हुए सोमन ने जारी रखा

"मैंने दूसरो का पैसा छीना नही है। दूसरों की बीवी नही छीनी है। जबर्दस्ती से एक भी औरत का उपभोग मैंने नहीं किया है। समाज की सलाह या सहयोग से मैं इस हालत मे नही पहुँचा हूँ। मैंने मेहनत कर जो पैसा कमाया, उससे मैं अपनी इच्छा के अनुसार जिन्दगी गुजार रहा हूँ। मैंने समाज का क्या अपराध किया है? वे क्यो मुझसे नफरत करते हैं? मैंने किसी का भी मुँह नही ताका है। मेरी सम्पत्ति और क्षमता के विनाश हो जाने पर, दूसरो की मदद के बगैर जिन्दा न रहने का अवसर आने पर ?"

मिस्टर सोमन ने एक पेग ह्विस्की और ले ली। गिलास को मेज़ पर ज़ोर से पटकते हुए कन्धे से रिवॉल्वर खीचकर बाहर निकाली। "सब कुछ बेचने पर भी मैं इसको नही छोड़ूँगा। दूसरो का मोहताज होने के उस अन्तिम अवसर पर यह मेरी रक्षा करेगी। मेरी लाश के निकट यह भी बनी रहेगी "

"पत्राचार और आपस मे प्रेम होने के बाद ही क्या तुम्हारी शादी हुई है?"

चेयर से आये सवाल ने श्रीधरन को जगा दिया।

श्रीधरन की शादी क्या 'लव मेरेज' थी, यही वेलु मूप्पर पूछ रहा है। (इस सवाल के साथ उसके चेहरे पर मुस्कान थिरक गयी थी।)

श्रीधरन समझ गया।

नायिका को स्कूल मे पत्र भेजा था, उस पत्र को लेकर पिताजी का कैफियत तलब करना आदि पुरानी घटनाओ को छेड रहा है बूढे का यह सवाल और यह मुस्कान!

कन्निप्परपु के श्रीधरन का स्कूल की एक लड़की को प्रेम-पत्र भेजने, तथा लड़की के पिता और ट्यूशन मास्टर का कृष्णन मास्टर के यहाँ आकर गाली बकने की बात की चर्चा अतिराणिप्पाट मे फैल गयी थी। नारदन कुण्टु की जीभ को तेज़ करने के लिए अच्छी सामग्री मिली थी। कुण्टु ने ही इस रोचक खबर को अति-राणिप्पाट के उस पार प्रचारित किया था।

"यो प्रेम-वेम से शादी नही हुई है।" श्रीधरन ने सच्ची बात कही।

लेकिन नायिका को भेजे प्रेम-पत्र की तड़पन और आवेग का रहस्य वेलु मूप्पर को मालूम न था। बारह साल बाद श्रीधरन ने नायिका की सहपाठिनी के भाई से उसके बारे मे जाना था।

श्रीधरन ने डाक से जो प्रेम-पत्र भेजा था वह नायिका की कक्षा अध्यापिका के हाथ मे डाकिये ने दे दिया। क्लास टीचर एक वृद्धा बेचुलर थी। उसने नायिका को बुलाकर पत्र सौंप दिया। नायिका ने पत्र खोला। प्रेम-पत्र! जिन्दगी मे पहली

बार ही यह एक पत्र मिला था। (अभिमान, आह्लाद और उसके साथ ही अज्ञात भय और घबराहट महसूस हुई थी) भोली-भाली उस लडकी ने उस अमूल्य निधि को दूसरो के न देखने की इच्छा से खादी के ब्लाउज मे छिपाने की कोशिश की

क्लास की बूढी अध्यापिका की हिरणी-जैसी आँखे उस ओर टिकी हुई थी। उसे शक हुआ। नायिका को पास बुलाकर पत्र हठपूर्वक वापस लिया। उसने पढ़ा —लव लैटर!

वृद्धा कुमारी ने नायिका के ट्यूशन मास्टर अष्टवक्रन उण्णीरि नायर के हाथ मे पत्र को आगे की कार्यवाई के लिए सौप दिया

श्रीधरन के प्रथम प्रेम-पत्र का उलटफेर इसी प्रकार था। नायिका ने फिर शिक्षा समाप्त की। उसकी शादी हुई। वह माँ बनी। फिर नानी बनी! वह मलाया मे कही अपने पति के साथ रहती है। (मगल कामनाएँ!)

अगर उस दिन ऐसा घटित नही होता तो?

श्रीधरन के उस प्रेम-पत्र को नायिका द्वारा अपने ब्लाउज के नीचे छाती मे छिपाने के उस निर्णायक क्षण मे वृद्धा कुमारी उस क्लास टीचर की आँखे कही और होती तो?

जमाने के व्यग्य ने ही उस कौवे की दृष्टि को नायिका की छाती की तरफ मोड दिया था न?

जिन्दगी सयोगो के तान और मोह के बाने से बुना हुआ एक घूंघट है न?

मर्मर पाँच

उस प्रेम-पत्र के बारे मे इलाके भर मे अफवाहे फैलानेवाले नारदन कुण्टु के बारे मे वेलु मूप्पर से फिर पूछा।

वेलु मूप्पर ने सब कुछ विस्तार से बताया।

बुढापे ने नारदन कुण्टु के स्वास्थ्य को हानि नही पहुँचायी थी। मुँह से अवश्य ही दो-तीन दाँत निकल गये थे, बस। वह अच्छी तरह खा-पी सकता था। उसके आठो लडके बिना किसी तकलीफ के पिता की देख-भाल करते थे। छोटे बच्चो को दुलारते हुए वह घर मे खा-पीकर रह सकता था, लेकिन उसे घर मे चुपचाप पडे रहना नही सुहाता था। सुबह को काँजी पीकर, एक सफेद धोती ओढकर कन्धे पर एक अगोछा डालकर बाहर फिरता रहता। उसने अपने कमक्षेत्र को अतिराणिप्पाट से दूर के मोहल्ले मे भी फैलाया था।

कही कोई दावत या शादी हुई तो वह औरो से पूछकर उसका पता लगा लेता और सीधे वहाँ चला जाता। साफ पोशाक पहनकर बिना झिझक के वहाँ चढ़ जानेवाले मेहमान की अगवानी गृहस्वामी तो करेगा ही। उसको पहली पक्ति मे

जगह मिलती। शादी की दावत है तो कोई दिक्कत ही नही। वर पक्ष के लोग समझेंगे कि वधु के घरवालो द्वारा न्योता देकर आनेवाला मेहमान होगा। वधू-पक्ष के लोग भी ऐसा ही समझ लेंगे।

लेकिन एक दावत मे कुण्टु को हाथो-हाथ पकड लिया गया। रामुण्णि मास्टर की बेटी की शादी मे जानबूझ कर काली-जबान कुण्टु को निमन्त्रण नही दिया गया था। (वर-पक्ष के लोग दूर स्थित मुक्कलशेरिवाले थे।) भोजन परोसते समय कुण्टु शान से प्रथम पक्ति मे पत्ते के सामने बैठा था। रामुण्णि मास्टर आपे से बाहर हो गया। वह मान मर्यादा का ख्याल किये बिना कुण्टु के नज़दीक गया "ए, तुमको किसने निमन्त्रण दिया है ? जल्दी जगह खाली करो !"

कुण्टु ने वही बैठे-बैठे गौरव से जवाब दिया "तुमने मुझे निमत्रण नही दिया तो क्या यह मेरी गलती है ?"

साँप के मुँह के ज़हर की तरह की कुण्टु की काली जीभ चल पडी थी। महीने मे कम से कम एक बार वह इस जहर को बाहर निकले बिना नही रह सकता था।

यो ज़हर के आधिक्य के सदर्भ मे ही उसकी मृत्यु हो गयी थी।

एक दिन सुबह कुण्टु कॉजी पीकर पोशाक पहन बाहर जाने को तैयार हो खडा था। कुण्टु के सबसे छोटे बेटे अय्यपुट्टी के छह महीने के शिशु को बरामदे की एक चटाई पर लिटाया हुआ था। बिना कपडे-लत्तो का वह शिशु ऊपर की तरफ तीर की नाई पेशाब करने लगा। यह देख कुण्टु से नही रहा गया। यो ही उसकी जीभ मे चिनगारी फूट निकली।

"मर जा साले, दिन मे ही आतिशबाजी कर रहा है।" गोली थी सो छूट गयी।

'ठप्प—' पीछे से गर्दन पर एक मुक्का पडा। मुडकर देखा।

अय्यपुट्टी !

(अपने प्यारे मुन्ने के काम को देखकर जब बाप ने गोली छोडी तो नज़दीक खडा अय्यपुट्टी उसे सहन नही कर सका। झट उसकी गरदन पर एक झापड जड दिया। अपने अविवेक पर तुरत ही वह पछताया।)

बच्चा तब तक गला फाडकर रोने लगा था

कुण्टु उस दिन बाहर नही गया। उसी वेश मे कमरे मे घुसकर चटाई पर लेट गया। तीन दिन तक नही उठा। चौथे दिन वह चल बसा।

कुण्टु को क्या हुआ ?

पश्चाताप और आत्मनिन्दा की मूर्च्छा मे क्या आदमी की मृत्यु हो जाती है ?

कुण्टु मामा की मृत्यु के कारण पर वेलु मूप्पर की राय इस प्रकार है "विष-चिकित्सक काटनेवाले साँप से ही ज़हर निकाल लेते है न ? यदि साँप का ज़हर

निकल जाता तो काट लिये व्यक्ति का जहर भी उतर जाता। काटनेवाला साँप वही पड़ा-पड़ा मर जाता। इसी तरह कुण्टु मामा ने कुछ विचार किये बगैर अपने ही पोते को जरा काट लिया था। बच्चे की रुलाई थम गयी। साथ ही, कुण्टु मामा की मृत्यु हो गयी।' "

वेलु मूप्पर की बातों का क्या कोई अर्थ है ?

अपने ही पोते को कोसने से जो मनोवेदना हुई और अपने ही पुत्र की मार खाने से जो भारी अपमान हो गया—इन दोनों ने बूढ़े को बहुत परेशान कर दिया होगा। वह अपनी प्रत्याह्वयन शक्ति से खुद को शाप देकर मर गया होगा ?

जीभ में जहर रखनेवाले नारदन कुण्टु की कहानी पूरी हुई, तभी देह में चुम्बकीय शक्ति रखनेवाला एक और इन्सान श्रीधरन के स्मृतिप्रवाह में बह आया।

खारतूम से शेलाल की—सूडान से मिस्र की—यात्रा करते समय ही उस व्यक्ति को देखा था। वाडीहल्फ से शेलाल की तरफ नील नदी में जहाज़ की यात्रा के बीच ही उससे भेंट हुई थी।

'एस०एस० तीब्स' नील जहाज़ के प्रथम श्रेणी केबिन के दो बर्थों में निचला बर्थ श्रीधरन के नाम और ऊपर का बर्थ मि० सेल के नाम पर रिमर्व था।

यह सेल कौन है ? अरबी है या एशियाई ?—श्रीधरन को संदेह था।

सदूकों के साथ केबिन में आनेवाले सहयात्री को श्रीधरन ने ध्यान से देखा। गोरा साहब है। दृढ मांस-पेशियोंवाला दुबला-पतला ऊँचे कद का प्रौढ व्यक्ति (अब स्मरण करने पर लगता है कि नारदन कुण्टु का ही अंग्रेजी प्रतिरूप है।) उससे परिचित हुआ। सूयस नहर के नज़दीक के ब्रिटिश फौजी अड्डे फैदिल का एक अफसर है। एक महीने की छुट्टी में सूडान की एक मनोरंजक यात्रा के बाद वह अपने अड्डे की तरफ वापस जा रहा है। उसका नाम है मि० सेल।

शेलाल पहुँचने के लिए जहाज़ में दो दिन का सफर करना है। मि० सेल अपने ऊपर की बर्थ पर लेटकर किताब पढ़ते हुए ही समय बिता रहा था। उसने ढेर सारे जासूसी उपन्यास पढ डाले थे।

श्रीधरन ने नील के किनारे की तरफ देखकर ही समय काट लिया। लगा कि किसी दूसरे लोक का विचित्र स्थल है वह। आस-पास के वातावरण में न तो घास दिखाई देती थी, न कोई पेड़-पौधा। जहाँ देखो वहाँ ऊसर ही ऊसर। कभी-कभी काला टीला दिखाई दे जाता। कुछ टीलों की तराई में कुछ-एक झोंपड़ियाँ दिखाई दे जाती। रेगिस्तान के नीरस जनपद थे वे।

जासूसी उपन्यास पढने में तल्लीन सेल कई बार बीच में अपनी ऊपर की बर्थ से उतरा। नीचे सुरक्षित अपने बड़े संदूक को खोला। फिर जाँच करने के बाद

उसे बन्द किया और फिर ऊपर बर्थ पर चला गया।

इस प्रकार दो-तीन बार वह नीचे और ऊपर आता-जाता रहा।

श्रीधरन यह सब बडे ध्यान से देख रहा था। उसकी जिज्ञासा जाग उठी। यह आदमी क्या कर रहा है ? एक दफा जब वह नीचे पेटी की जाँच कर रहा था तभी श्रीधरन ने लुक-छिपकर देख लिया। पेटी मे रखी टाइमपीस मे वह समय देख रहा था।

क्या इस आदमी को एक रिस्टवाच खरीदने मे आपत्ति है ? एक टाइमपीस पेटी मे बन्द कर यो समय देखने के लिए उतरने-चढने और झांकने की क्या जरूरत है ? समय जानने के लिए अपने सहयात्री भारतीय से पूछना भी काफी था। अपनी अमूल्य टाइमपीस के समय पर ही क्या इस गोरे को विश्वास है ?

थोडी देर विचार करने पर श्रीधरन को उस अँग्रेज के आचरण पर अचम्भा नही हुआ। पुराण-पन्थी अँग्रेजो का स्वभाव ही ऐसा होता है। अपरिचित लोगो से, खासकर दूसरे वर्ग के लोगो से, थोडा-सा 'ऑब्लिगेशन' भी वे नही माँगते। वे इसी तरह अपनी शान को बनाये रखते है। यह बात तो समझी जा सकती है, लेकिन समय जानने के लिए सुविधानुसार एक घडी खरीदकर हाथ मे बाँधने के बजाय एक पुरानी टाइमपीस अपने सदूक मे रखने का रहस्य बहुत विचार करने पर भी उसे मालूम नही हो सका। अवसर मिलते ही उससे पूछने की इच्छा हुई।

जहाज के डाइनिंग सैलून से भोजन कर केबिन मे लौटते समय मि० सेल से खुल्लम-खुल्ला ही पूछ लिया, "माफ कीजिए मि० सेल, एक बात पूछ लेने दीजिए। आपको सदूक मे रखी हुई एक टाइमपीस से बार-बार समय देखते हुए मैंने देखा है। क्या आप एक रिस्टवॉच का इस्तेमाल नही कर सकते ? अधिक सुविधा-जनक होगा न ?"

मि० सेल अपने गन्दे दाँतो को दिखाता मुस्कराया। फिर वह दबी जबान मे बोला, "पता नही मेरी बातो पर आप विश्वास करेंगे या नही। मेरा शरीर तो चुबकीय शक्ति रखनेवाला है। अगर मैं घडी हाथ मे बाँध लूं तो वह फिर नही चलेगी इसीलिए मैंने टाइमपीस खरीदकर एक पेटी मे रखी है "

शरीर मे चुबक शक्ति रखनेवाला इन्सान ! श्रीधरन इस पर यकीन नही कर सका।

इस तथ्य को प्रमाणित करने की उत्कट इच्छा से श्रीधरन ने अपनी रिस्ट-वॉच उतारकर उस गोरे के साथ मे बाँधने की कोशिश की तो उसने रोक दिया

"नही मिस्टर, तुम क्यो अपनी घडी को खराब करते हो। मैं दिखा दूंगा ."

उसने अपनी बडी पेटी खोलकर (खोलने पर टाइमपीस का समय एक बार देखा) एक कोने से एक कुतुबनुमा बाहर निकाल लिया। मि० सेल के कर-स्पर्श होते ही कुतुबनुमे की सुई घबडाकर इधर-उधर दौडने लगी। चुबकीय इन्सान

ही है ।

काली जबानवाले नारदन कुण्टु की मृत्यु हो गयी । अतिराणिप्पाट का कुण्टु अज्ञात कारण से मर गया । पन्द्रह बर्ष पहले सूडान के जहाज पर उस चुबकीय इन्सान मि० सेल से मिला था वह । मि० सेल क्या अब भी जिन्दा है या खुद शोक से मर गया है ?

वेलु मूप्पर ने कुछ विचार कर चुप्पी साध ली । वेलु मूप्पर के ओठो पर एक नटखट मुस्कान थिरक रही थी । स्कूल मे पढनेवाली लडकी को पत्र लिखकर इलाके मे दुर्गन्ध फैलानेवाला छोकरा ही इधर बैठा है । बूढे की हँसी का कारण वही होगा ।

एक दूसरी बात का विचार आते ही श्रीधरन के ओठो पर भी मुस्काहट छा गयी ।

मन मे कहा वेलु मूप्पर, उस शरारती चिट्ठी से भी रोचक एक करतूत श्रीधरन कुट्टि ने की थी लेकिन वह आपको मालूम नही है। आप उसे कभी नही जान सकते । यौवन की शुरुआत मे इस अतिराणिप्पाट मे श्रीधरन ने एक लडकी को चूम लिया था । जानु नाम की उस लडकी को भी आप जानते हैं ।

आपने कहा कि ताडी लेने के लिए जिन दाक्षिणात्यो ने अतिराणिप्पाट मे डेरा डाल दिया था, उनमे अधिकाश लोग मद्य-निषेध का कानून जारी रखने के कारण अपने पुश्तैनी पेशो के बगैर अपने ही इलाको मे चले गये। कुछ लोग इधर ही रहे आये । लेकिन फिर वे भी इधर-उधर चले गये (उनमे जानु भी थी ।)

वह अब कहाँ होगी ?

मैं क्या जानूं ?

बचपन मे सबसे पहले ध्यान से देखनेवाला सूर्योदय और यौवन की शुरुआत मे पहले-पहल चुम्बन ली जानेवाली लडकी का चेहरा जिन्दगी मे कभी नही भूलेगा।

उन पवित्र तस्वीरो मे धब्बा लगानेवाले विचारो को मै क्यो निमन्त्रण दे रहा हूँ ?

वह दूसरे की बीवी हो गयी होगी ।

वह माँ हो गयी होगी नानी हो गयी होगी—

सभव है कि प्रेमजाल मे फँसकर किसी मर्द के पीछे लुक-छिपकर भाग गयी होगी । हो सकता है, प्रेम नैराश्य से आत्महत्या कर ली हो ।

वह विधवा हो गयी होगी अथवा बूढी कुमारी की तरह जीवन-यापन कर रही होगी·

हो सकता है, मरकर मिट्टी मे समा गयी होगी···

नारी की जिन्दगी फूलो की बेल है । वह बेल पलकर, थककर, कई पौधो मे

फैलकर लहलहाते हुए फूलती-फलती आखिरी पत्तो के झडने पर कहाँ गिरकर मिट्टी मे समा जाती है, यह कौन कह सकता है?

अगर वह जिन्दा होती तो!

मुँह की पहली पक्ति के एक-दो दाँत तबाह होकर गाल चिपटकर, सिर के बाल पककर, जरा झुककर खडी होती।

उसको क्या देखना?

शहद मे डुबाया हुआ मिर्च-सा ओठ, सुन्दर दाँत, प्रणय की गुदगुदी से तडपकर नाचनेवाली चूडियो से भरे हाथ—उसी तरह हृदय मे क्रीडा करते रहे।

(आम्रवृक्ष की कोपलो-सी देहवाली—सोलह वर्ष की दुलारी जानु, तुमको एक फ्लाइग किस!)

मर्मर छ

अतिराणिप्पाट का निवासी न होने पर भी इस इलाके के लोगो के मनपसन्द व्यक्ति किट्टन मुशी की मृत्यु हुए इक्कीस बरस बीत गये है। वेलु मूप्पर से इस बात का पता चला।

पैतालीस वर्ष की उम्र तक कोई पेशा किये बगैर किट्टन मुशी ने रेशमी कमीज, सुंघनी की डिबिया, हल्के से विनोद और मसखरी के साथ अविवाहित रहकर मान्य महाजनो की छाया मे दिन बिताये। फिर एकाएक मुशी मे कुछ परिवर्तन हुए। वह एक मुहब्बत मे फँस गया। नायिका दो छोटे बच्चो की एक विधवा माँ और हिन्दी की अध्यापिका थी। रेडिमेड सन्तानोवाली उस हिन्दी अध्यापिका से उसने शादी कर ली। (शादी करनी पडी।) हिन्दी अध्यापिका अपने पति मे कुछ बाह्य परिवर्तन लायी। किट्टन मुशी ने रेशमी कपडा छोड दिया। वह खादी पहिनने लगा—खादी का कुरता, खादी की धोती, और एक गेरुए रग का खादी का शाल भी।

हिन्दी अध्यापिका ने तीन साल के अन्दर चार लडकियो को जन्म दिया। (एक प्रसव मे दो सन्ताने थी।)

दूसरे विश्वयुद्ध के समय किट्टन मुशी को बडा मुनाफा हुआ। वह उस समय मिलिटरी टिम्बर सप्लाई का ठेकेदार था। लम्बे-मोटे किसी भी पेड के लिए अच्छी माँग थी। सागवान, शीशम आदि अच्छी लकडी के लिए सोने का मूल्य मिलता था। उस दौरान किट्टन मुशी को 'पप्पया ठेकेदार' यह एक नया नाम हासिल हुआ। कहते है, उसने मिलिटरी को सप्लाई की गयी लकडी के दोनो हिस्सो मे शीशम के टुकडो को बडी सावधानी से चिपकाकर एक मोटे पप्पया पेड को शीशम के रूप मे बेचकर उसका मूल्य हासिल किया था।

टिम्बर सप्लाई के अलावा वह ताड के फलो के बीजो को भी सचित किया

करता। अहातों और जगलों मे नीचे गिरकर सडनेवाले ताड के फलो के बीजों को लडके इकट्ठा करके एक बोरे मे भरकर ठेकेदार मालिक के टिम्बर डिपो मे ले जाते। वह एक बीज का एक पैसा दे देता, भले ही वह सियार के पाखाने का बीज क्यो न हो। किट्टन मुशी ताड के बीजो को पेटी मे भरकर मिलिटरी डिपो को निर्यात करता।

(ताड का बीज मिलिटरी पोशाको मे बटन लगाने के लिए काम आता था।)

इन व्यापारो के अलावा कुछ-न-कुछ समाज-सेवा भी वह किया करता।

'मिस्र विवाह प्रचार सभा' के खजाची के तौर पर किट्टन मुशी को चुना गया।

इस प्रकार पैंतालीस बरस तक की निष्क्रिय और निष्प्रभ जिन्दगी चार-पाँच सालो मे एकदम बदल गयी।

एक दिन किट्टन मुशी ने अपने परम मित्रो को प्रीति-भोज के लिए घर पर निमन्त्रण दिया।

दूसरो का भात और चाय कबूल कर चलनेवाले मुशी ने अब तक किसी को भी एक चाय तक नही पिलायी थी। ऐसे मुशी ने जब दावत का इन्तजाम किया तो मित्रो को भी ताज्जुब हुआ। कुछ लोगो का अनुमान था कि शायद मिलिटरी ठेको से अच्छी रकम हासिल हुई होगी। किट्टन मुशी को भली-भाँति जाननेवाले मित्रो को शक था कि घर मे न्योता देकर नारगी का एक गिलास पानी पिलाकर वह सबको वापस कर देगा।

पर, मित्रो के शक और भय निराधार निकले। एक अच्छी दावत की ही व्यवस्था की गयी थी। 'ओलेन' 'कालन', 'अवील', 'एरिशेरि', 'पुलिशेरि', पूवन केला, बडा-पापड, दूध-खीर और जाने क्या-क्या

मेहमानो ने किट्टन मुशी को मन-ही-मन हार्दिक बधाई देते हुए खूब छका।

दावत के बाद अतिथि जब विश्राम करने बैठे तो एक गोल्ड फ्लेक सिगरेट पीते हुए रामुण्णि मास्टर ने पूछा, "किट्टन मुशी, दावत तो बहुत अच्छी थी। शुक्रिया और बधाई। पर, एक सन्देह बाकी है। क्या हमें इतना बढिया भोजन देने के पीछे कोई खास वजह तो नही है? "

"मास्टर, इसका एक खास कारण है।' किट्टन मुशी ने डिबिया से चुटकी भर सुँघनी लेकर उसे नाक मे सुटकने के बाद मेहमानो को सुनाने के लिए जरा मजाक-भरे लहजे मे फर्माया

"मेरी बूढी माँ बीमारी से शय्याग्रस्त थी। मैंने कोरुप्पणिक्कर के पास जाकर उपचार कराया। 'हालत अच्छी नही है, कुछ अधिक ध्यान देना चाहिए।' पाणिक्कर का कहना था। एक उपाय भी बताया,'भूखे गरीबो को अन्नदान'। अब वही हुआ—माँ की बीमारी दूर होने के लिए अब आप लोगो को मिलकर प्रार्थना करनी

चाहिए ''

एक दिन मिलिटरी ठेकेदार मिस्टर पी० पी० कृष्णन की मद्रास के एक होटल के कमरे मे सोते वक्त मृत्यु हो गयी। हृदयगति रुक जाने से ही मृत्यु हुई थी। एक नये ठेके के लिए टेण्डर देने के लिए किट्टन मुशी पिछले दिन मद्रास गया था।

इस तरह अपूर्व सिद्धि रखनेवाला एक रसिक काल की यवनिका मे अप्रत्यक्ष हो गया ''

भीतर से शिशु की रुलाई सुनाई पडी।

श्रीधरन स्मरण कर रहा था माणिक्य के प्रथम प्रसव की सूचना ज़मीन पर नारियल के मोटे डण्ठल को पटककर चिल्लाते हुए पुकारने की-सी आवाज़—चौंतीस साल के उस पार से आ रही है। अब तो उस सन्तान के शिशु की रुलाई कानो मे गूजती है।

ज़माने की तुरही की पुकार

उसी समय श्रीधरन ने एक विचित्र वेशधारी को फाटक से आते हुए देखा। आगन मे पहुँच गया था वह। ललाट पर भस्म की तीन लकीरे और उनके बीच चन्दन का बडा तिलक (तिलक मे सिन्दूर का टीका भी) लगाये, दाहिने हाथ मे सुब्रह्मण्य स्वामी की छोटी तस्वीरवाला भस्म का थाल, बगल मे कपडे की एक थैली और मयूरपखो की छडी कॉख मे दबाये गेरुआ कपडे पहने एक युवक था। उसने सुब्रह्मण्य का थाल बरामदे के छोर पर रख दिया। मयूरपखो की छडी भी उसके नज़दीक लिटा दी, फिर थैली से एक शख लेकर फूंकने लगा

'फभूहूहू फभूहूहू फभूहूहू ' दिशाओ को गुँजाते हुए तीन ध्वनियाँ।

वेलु मूप्पर कुर्सी से झटपट उठा और शखनाद की ओर चेहरे का मोडते हुए श्रद्धा-भाव से अजलिबद्ध होकर खडा हो गया। फिर अन्दर की ओर मुँह कर ज़ोर से कहा, "बेटी, स्वामी को कुछ दे दो' "

श्रीधरन ने स्वामी की ओर ध्यान से देखा। सफेद मोटा युवक। वह स्वय अपनी आँखे घुमा रहा था—नशे मे डूबी हुई-सी आखे।

वह इस तरह से आँख की पुतली क्यो हिला रहा है ?

माणिक्य बाहर आयी। उसके सिर मे थोडे से ही बाल रह गये थे। पाँच पैसे का सिक्का सुब्रह्मण्य स्वामी के थाल मे डाल दिया। फिर उसने अपनी हथेली को फैलाया। स्वामी ने थाल से कुछ भस्म उसकी हथेली पर रख दी। माणिक्य ने भक्ति के साथ भस्म ललाट मे लगायी। फिर वह रसोईघर मे चली गयी।

स्वामी आँखो की पुतलियो को घुमाते हुए मयूरपखो को कॉख मे दबाकर थाल उठाकर कुछ कहे बगैर मुडकर चला गया।

"वह रामन छोकरा चला गया ?" वेलु मूप्पर ने धीमी आवाज़ मे बताया।

"कौन रामन ?" (श्रीधरन ने आश्चर्य से देखा।)

"सुब्रह्मण्य स्वामी की तस्वीर लेकर चलनेवाला वह छोकरा !" वेलु मूप्पर ने स्पष्टीकरण दिया।

"हाँ गया।" मयूरपख को ओझल होते देखकर श्रीधरन ने कहा।

वेलु मूप्पर का 'स्वामी' कैसे झट 'रामन छोकरा' मे बदल गया, यह समझ मे नही आया।

"जानते हो वह कौन है ?" वेलु मूप्पर ने चेहरे को टेढा करते हुए पूछा।

"समझा नही। क्या अतिराणिप्पाट वाला है ?"

"हाँ, अतिराणिप्पाट मे ही उसका जन्म हुआ था। अब वह दूर कही रहता है। महीने मे एक बार सुब्रह्मण्य स्वामी को लेकर इधर आता है।"

"किसका बेटा वह है ?" अतिराणिप्पाट के कुछ पुराने व्यक्तियो का स्मरण कर श्रीधरन ने अन्वेषण किया।

"वह जारज सन्तान है ?"

श्रीधरन को कुछ नही मालूम हुआ।

"श्रीधरन बेटे, तुम्हे उस शराबी पेण्टर रामन और उसकी बेटी चिरुता की याद नही है क्या ?

(चिरुता ! पतिव्रता का बहाना कर घूमती-फिरती सुअर-जैसे चेहरेवाली चिरुता !)

"उस चिरुता का बेटा है। जारज सन्तान है। वह हरिजन सफेद अय्यप्पन का बीज है। यह बात इस इलाकेवालो को अच्छी तरह मालूम है। पर, क्या वह बाहर किसी से कह सकता है ? आखिर वस्तु का नाम बताया गया। चिरुता का प्रसव और उससे सम्बन्धित रस्मे की गयी। वह बालक को लिये मारी-मारी फिरने लगी थी। अभी पाँच-छह साल पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी थी। अब अकेला रामन सुब्रह्मण्य स्वामी की तस्वीर लेकर शख फूंककर भीख माँग रहा है "

श्रीधरन ने सोचा थोडी देर पहले फाटक उतरकर जाता गेरुआ कपडे पहने वह युवक हरिजन सफेद अय्यप्पन का प्रतिरूप ही है !

पहले सफेद अय्यप्पन कोयलो की राख का ठेकेदार था। अब उसका बेटा प्लनि आण्डवन (सुब्रह्मण्य स्वामी) के एजेन्ट का वेश पहनकर अतिराणिप्पाट मे घूम रहा है !

"क्या वह गूंगा है ? क्यो वह बिलकुल मूक रहा आया ?" श्रीधरन ने सदेह प्रकट किया।

"वह गूंगा तो नही है " वेलु मूप्पर ने सिर हिलाया। "वह मौन व्रतधारी है—झूठा पुजारी है। जो पैसा मिलता उससे गाँजा खरीदकर पीता है। हमेशा गाँजा पीकर आँखें तरेरकर चलता "

"ऐसी हालत मे उस गाँजा पीनेवाले झूठे पुजारी को आपने पैसे क्यो दिये

थे ?" श्रीधरन ने पूछा।

"वह दूसरी बात है।" वेलु मूप्पर ने भक्ति-स्फुरित गौरव स्वर मे बतायाँ, "उसके साथ पलनि सुब्रह्मण्य स्वामी है न। क्या स्वामी को यो गाली बककर भगाया जा सकता है ?"

वेलु मूप्पर के दर्शन एव आस्था पर विचार कर श्रीधरन अपने आप हँस पडा।

"भोजन तैयार है।" माणिक्य ने दरवाज़े मे आकर सूचना दी।

डिनर रेडी!

बरामदे मे वेलु मूप्पर के नजदीक घास की चटाई पर श्रीधरन भोजन करने बैठ गया।

अहाते के केले के पौधे मे काटकर लाये हुए मुलायम पत्ते मे द्रोणपुष्पी के फूल-सा भात परोस दिया गया।

भोजन के लिए आशा मे भी अधिक सब्जियाँ आने लगी। श्रीधरन को जरा अचरज हुआ।

वटक्कन पाट्टु मे कहे अनुसार माणिक्य

"सब्जियाँ सोने-सी चार परोस गयी

बारिश के पानी-सा घी भी डाल गयी।"

(बोतल का शुद्ध घी, लगता है वेलु मूप्पर के रोज़ का आहार ही है।)

दाल का एक व्यजन, कटहल के बीच और मुनगे की एक सब्जी, कदमूल की गाढी सब्जी, अलावा इसके भुनी मछली, पापड, मट्ठा आदि ढेर सारी खाद्य सामग्री।

चटाई पर पालथी मारकर भोजन करते समय श्रीधरन को दिल्ली मे प्राय हर रोज़ होनेवाले प्रीति-भोज का स्मरण हो आया। विदेशी दूतावासो की दावते। मत्रियो उद्योगपतियो, सरकारी ठेकेदारो, अमीरो के महलो की दावते। दरअसल ये प्रीति-भोज भूख मिटाने के लिए नही, मेज़बान के बडप्पन को प्रदर्शित करने के प्रबन्ध मात्र है। बडे होटलो के डिनरो मे विशिष्ट खाद्यो से मनोरजन का कार्यक्रम ही चलता। बेचारे मेहमान को 'एटिक्वेट' के आदर्श मे दबना पडता। वह जी भरकर नही चबा सकता। छककर खाने से सतृप्ति की जय-जयकार रूपी डकार नही निकाल सकता। क्योकि यह सभ्यता के विपरीत है। ऊँची आवाज़ मे बातचीत भी नही कर सकते। पेट के ऊपर नैपकिन का कवच बाँधकर, काँटा-छुरी, चम्मच आदि हथियारो को उठाकर प्लेट की चीज़ो का एक-एक कर वध करना पडता है।

इधर वेलु मूप्पर के बरामदे मे बैठकर मोहल्ले की सब्जियो और भात को मिलाकर खाते समय विशिष्ट भोज्यो मे निर्वाण प्राप्त करनेवाली भूख को श्रीधरन महसूस करने लगा।

वेलु मूप्पर के खाने का ढग उत्सुकता से देखा। पत्तो मे परोसी सब्जियो को माणिक्य पहले बताती, तब बुजुर्ग एक-एक चीज को टटोलते हुए उसे मुँह मे डालकर 'वाक्य रसात्मक काव्यम्' का उच्चारण करने के समान चबाते हुए सिर हिलाकर आँखें घुमाते हुए खूब मज़ा लेकर खाता। नब्बे वर्ष का होने पर भी वेलु मूप्पर का पेट और मुँह सही सलामत थे। अच्छे भोजन के कारण ही वह अपने स्वास्थ्य को बनाये रखता।

भोजन कर चुका। नीचे के बरामदे के छोर पर रखे हुए लोटे से हाथ धोये।

श्रीधरन एक सिगरेट पीने के लिए अहाते मे चला गया। (वेलु मूप्पर के सामने बैठकर धूम्रपान करने मे सकोच हुआ।) सिगरेट पीने के बाद बरामदे मे वापस आने पर देखा वेलु मूप्पर पान की तश्तरी सामने रखकर छोटे से ऊखल मे सुपारी डालकर कूट रहा था।

"भोजन बढ़िया था। इतने व्यजनो की जरूरत न थी।" श्रीधरन ने अपना धन्यवाद सक्षेप मे इन शब्दो मे प्रकट किया।

"बेटे, तेरे लिए कुछ नही बनाया था। ये सब यहाँ हमेशा होते है।" वेलु मूप्पर अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बननेवाला न था।

"अक्सर कहा जाता है कि खा पीकर घराने की तबाही हो गयी—पर उसमे ज़रा भी सच्चाई नही है। खाने-पीने से किसी भी घराने की तबाही नही हुई है।"

सुपारी को ऊखल मे कूटते हुए वेलु मूप्पर ने फिर अपनी बाते जारी रखी—"लेकिन हम लोगो का खास स्वभाव है। बिना खाये-पीये दिन बिताते हैं। जो कुछ है बच्चो के कल के लिए रख लेते है। ये छोटे बच्चे जब बडे होते है तब ये भी अपने बच्चो के लिए पेट काटकर दिन काटते है। इस तरह जान-बूझकर कजूस बनकर दिन बिताते है। ये कठिनाइयाँ पीढियो तक चली जाती—अच्छा खाने-पीने और ओढने की किस्मत उन्हे हर्गिज़ नही मिलती। पट्टर के पान खाने की कहानी की तरह "

श्रीधरन को जरा मज़ा आया "पट्टर के पान खाने का किस्सा क्या है?"

वेलु मूप्पर ने तश्तरी मे टटोला। एक पान उठाकर मुँह की तरफ ले जाकर सूँघकर उसकी शुद्धि की जाँच की। फिर उसके दोनो छोरो को तोडा। उसके डठल को हटाते हुए उसने कहानी सुनायी

एक पट्टर ने कुछ पान खरीदे। सुबह-सुबह पान खाने के लिए जब पानो का पैकेट खोला तो देखा कि उसमे नीचे का पान थोडा सडा हुआ था। उस दिन उसे खा डाला। अगले दिन पान खाने बैठे तो निचले का एक और पान ज़रा पका हुआ दिखाई पडा। उस दिन उसे खाने का निश्चय किया। हर रोज यही हालत रही कि उसको सडे, सूखे और पके पान ही खाने पडे। पट्टर को मालूम नही था कि गाँठ का आखिरी पान ही पहले खराब होता। इसे पट्टर का नसीब ही समझना

चाहिए कि एक गाँठ ताजा पान खरीदने पर भी उसे महीने भर सड़े पान ही खाने पड़े

यह कहानी भी उस दिन की दावत की ही तरह रोचक थी।

मर्मर सात

भोजन के लिए मट्ठा भरकर रखी एक चित्रित चीनी तश्तरी पर श्रीधरन का ध्यान आकृष्ट हुआ। ज्ञात हुआ कि वह एक पुराना चीनी फलदान है—एक अद्भुत कलावस्तु। उसकी प्राचीन महिमा और कला-मूल्य जाने बिना वेलु मूप्पर के घरवालो ने उसे रसोईघर की एक तश्तरी बना दिया था।

यह पुराना चाइना आर्टपीस यहाँ कैसे आ पहुँचा ? वेलु मूप्पर से ही पूछूँगा।

"यहाँ भोजन मे मट्ठे भरी वह तश्तरी देखने मे सुन्दर थी वह आप को कहाँ से मिली थी ?"

वेलु मूप्पर ने अपनी मृत आँखो को हिलाकर थोडी देर सोचा।

"क्या तू उस तश्तरी के बारे मे कह रहा है जिसमे फण फैलाये नाग बना हुआ है ?"

"हाँ, उसी बर्तन के बारे मे।"

"वह उसे तो बहुत पहले मेरे स्वर्गीय बेटे दामोदरन ने एक मुस्लिम से एक रुपया देकर खरीदा था। केलचेरी के भण्डार से कोई उसकी चोरी कर लाया था ।"

अनुमान सही निकला।

शताब्दियो पूर्व चीन के एक अज्ञात कलाकार ने उस कौतुक वस्तु का निर्माण किया था। जहाज पर चढ़कर वह केरल मे पहुँची थी। फिर वह केलचेरी के भण्डार मे आ पहुँची। लम्बे अर्से तक वही रही अब तो वह तश्तरी वेलु मूप्पर के रसोईघर मे मट्ठा भरने के बर्तन का काम दे रही है उस कलावस्तु के भाग्य मे यही लिखा होगा।

"केलचेरी मे पहले कितनी विचित्र चीजे थी !" वेलु मूप्पर पिछले जमाने की ओर अपने मन की आँखो से देख रहा था "बेटा, मैंने अपनी आँखो से देखा था—केलचेरी के पश्चिम के कमरे के सामने लटकती सोने की ककडी और धान की बालियाँ ."

वेलु मूप्पर ने अपना वर्णन जारी रखा "सात समुद्र पारकर यहाँ पहुँचे फानूस और रसमणी छत मे लटक रहे थे। भण्डार मे सोने की चक्की, मरकत रत्न का पानदान, माणिक्य की सुपारी आदि भी थे। लुक-छिपकर-चोरी मे सब कई राहो से गायब हो गये। रसमणी की जगह अब बर्रों का छत्ता है। फानूस की जगह

मकड़ियो का जाल। भण्डार मे चूहे और बिच्छू हैं।'' और कुजिक्केलु मेलान मिट्टी के भीतर ''

कुजिक्केलु मेलान के अन्तिम दिन के बारे मे वेलु मूप्पर ने विस्तार से कह सुनाया

''पीलपा और काना होकर मान्य लोगो से भीख माँगते चलने लगा था वह। फिर आदमी और समय को देखे बिना वह सभी लोगो से पैसे माँगता सडक पर मारा-मारा फिरने लगा। फटे-पुराने मैले चिथडे पहने छह सालो तक भीख माँग-कर जिन्दगी बितायी थी उसने। जीवन के अतिम दिनो मे तो उठकर चलना भी उसको दूभर हो गया।

केलचेरी घराना तो अब भी है। सुना था कि उसे कोई बेच नही सकता। मेलान का स्वास्थ्य ही बिगड गया था। पर, उसकी बुद्धि तीव्र थी। घराने मे अपने हक को बेचने मे उसको कौन रोक सकता था ? अपने हक को खरीदनेवाले की वह खोज मे था। शहर के एक अमीर मालिक की आँखें केलचेरी अहाते पर लगी थी। उसके हक को लिखित रूप मे ले लें तो जायदाद को कब्जे मे करने के लिए कुजिमेलान की मृत्यु तक इतजार करना पडेगा। अमीर ने सोचा कि मेलान गड्ढे मे पाँव पसारे बैठा है। जोखिम उठाने को वह तैयार हो गया।

उस अमीर को मेलान का स्वभाव अच्छी तरह मालूम था। अपनी सपत्ति को बेच डालने की बात कहकर कई लोगो से मेलान ने पेशगी रकम वसूल की थी। लेकिन उसने किसी को भी लिखित रूप मे कुछ नही दिया था। इसलिए जब मेलान ने पेशगी के लिए कहा तो उसने एक पैसा भी नही दिया। सभी दस्तावेजो को तैयार कर आगामी दिन रजिस्ट्री फीस से दस्तावेजो को रजिस्टर कराते समय पूरी रकम अदा करने का वादा करके उसको वापस भेज दिया गया।

किसी तरह रात काटने के ख्याल से, गर्दन को गीला करने के लिए एक बूंद शराब न मिलने की लाचारी से मेलान रात को केलचेरी लौट रहा था। फाटक के सामने की पगडण्डी पर पहुँचा। भीतर नही गया। एक चीत्कार के साथ मुडकर दौड लगा दी। नज़दीक ही धाय पारु के घर की ओर ही दौड गया था वह। बरामदे मे चढा, फिर वहाँ गिर पडा 'और फिर वही ढेर हो गया।

यो पहले जहाजो का व्यापार कर मशहूर होनेवाले केलचेरी घराने के कुजिक्केलु मेलान ने बीस सालो तक मोहल्ले मे भीख माँगकर दर-दर फिरने के बाद आखिर एक पारु धाय की भाडे की झोपडी के बरामदे मे अपनी जीवन-लीला समाप्त कर ली।

केलचेरी फाटक से केलु बदहवास होकर क्यो भागा था ?

'साँप', 'साँप' पुकारकर ही मेलान पारु की झोंपडी की ओर भागा था।

अपने हक को दूसरे एक मजहब के व्यक्ति को बेचकर केलचेरी घराने मे चढ़

आनेवाले मेलान की फाटक मे चिनगारियाँ बरसानेवाली आँखो से फण फैलाये पूँछ के बल खडे एक नाग ने ही अगवानी की थी। घराने की तबाही करने वाले धोखेबाज़ के सामने नाग ने फूत्कार किया था।

केलचेरी के नाग को मेलान ने पहले-पहल ही देखा था। एक आदमी की ऊँचाई मे फण फैलाकर खड़े उसके उग्र फुफकार ने मेलान के प्राणो के पौन भाग को तभी उडा दिया था। फिर उसे विचार करने पर जो भय हुआ, उससे उसके बाकी प्राण भी चल दिये

कुजिक्केलु मेलान।

बारह बत्तियो की प्रकाशधारा मे बिगुल बजाकर मशाल उठानेवाली फौज़ की तरह मेलान की मोटरकार जब आगे बढती थी तब सडक से लोग अपने को बचाने अनजाने ही दूर तक हट जाते थे 'बरसो के बाद उसी सडक से फटा-पुराना चीनी रेशम का कुर्ता और मैली-फटी मांचेस्टर धोती पहनकर, पीलपा सरकाते हुए एक आँख को चमकाकर पैसे की याचना करके घूमनेवाले मेलान से बचने के लिए लोग मुख मोडकर हट जाते।

"ऑल द वर्ल्ड इज़ ए स्टेज़ एण्ड आल द मैन एण्ड वीमेन मियरली प्लेयर्स।"

सारा जगत् ही है इक रगमच इसमे
पुरुष-नारी तो मात्र अभिनेता है।

शेक्सपियर महाकवि ने लिखा था। पर, करोडपति और भिखारी के रूप म उसी ज़िन्दगी की वेदी पर एक ही इन्सान को यो अभिनय करना पडा। शेक्सपियर न भी इस तरह की बात का अन्दाज़ नही लगाया होगा।

"अब एक दूसरी दास्तान"—वेलु मुखिया ने फिर पान खाने की तैयारी मे पान को टटोलते हुए कहा

"सुना है कि केलचेरी के पुराने फाटक के बरामदे मे चिथडो को बिछाकर रात को सोने के लिए एक भिखारी आ गया है। जानते हो वह कौन है ? केलचेरी केलु मेलान का बहनोई कुट्टप्पन—बैंक मालिक रामन काइक लौता बेटा—कुजिक्केलु बहनोई की परम्परा को बनाये रखने के लिए उस फाटक के बरामदे मे रह रहा है

श्रीधरन ने अतिराणिप्पाट मे आते समय मार्ग मे शहर की गली मे एक इन्सान रूपी गिद्ध को देखा था।

"देखो, गोरी औरत से शादी करनेवाला वह कुट्टपन ही जा रहा है।"—किसी ने जब ऐसी बात कही थी तो पुरानी स्मृतियो के साथ उस इन्सान को पुन झाँक-कर देखा था। गिद्ध की-सी आँखे, गिद्ध की नाक और गिद्ध के पजे, सिरवाले एक इन्सान का पुतला वातरोग-ग्रस्त पैरो को जमीन पर रखकर काँपते हाथो को हवा मे लहराते हुए धीरे-धीरे बढ रहा था।

ज़िन्दगी की वेदी पर दोहरा वेश धारण करनेवाला एक और अभिनेता!

एक-एक घटना की याद आ रही है

बैंकर रामन एक मशहूर घराने का आदमी था। वह नामी व्यवसायी था। वह कानून का पंडित, आदर्शवादी और समाज सुधारक ही नहीं एक अखबार का मालिक और अंग्रेजो का वैतालिक भी था।

मधुमेह और अंधा पुत्र-वात्सल्य—ये रामन की दो बीमारियाँ थी। रामन ने अपने लड़को को अधिक दुलार और प्यार किया। उसे पूरा भरोसा था कि उसकी औलाद उससे भी अधिक होनहार है। उसकी इस मनोवृत्ति ने पुत्रो के काले कारनामो को छिपा दिया। बेटो की फिजूलखर्ची और धूर्तता मे रामन ने महिमा के दर्शन किये थे।

रामन मितव्ययी था। न तो वह शराब पीता था, न ही बीडी-सिगरेट। सदाचार के विरुद्ध कोई काम वह नही करता, लेकिन उसके बेटे—खासकर दोनो बडे पुत्र नशीली चीजो का इस्तेमाल करते थे।

रामन अपनी बातो का पक्का हिमायती था। वह तिल को काटकर भी हिसाब बताता। एक दफा एक सभ्रात व्यक्ति के हिसाब मे रामन एक पैसे के लिए अड गया तो उस मान्य व्यक्ति ने पूछा, "मिस्टर रामन, आप इस प्रकार एक पैसे के लिए हठ कर रहे हैं। आपका बेटा कुट्टिरामन पैसे पानी की तरह बहा रहा है। लेकिन आप इस पर आँखें मूंद लेते हैं। यह कैसी मर्यादा है?"

उस सभ्रात व्यक्ति की बातें रामन को अच्छी नही लगीं। जरा गौरव के साथ झट उसने करारा जवाब दिया, "कुट्टिरामन का बाप अमीर है, इसलिए वह अपनी मर्जी के अनुसार सब कुछ कर सकता है, जबकि मेरी हालत ऐसी नही है"

रामन के ज्येष्ठ पुत्र कुट्टप्पन का ब्याह सम्पन्न हुआ। वधू केलचेरी कुजिक्केलु मेलान की एक मात्र बहिन माधवी थी। बैण्ड-बाजो के साथ ही शादी का वह जुलूस शहर की गलियो से निकला था। रात को सगीत का भी आयोजन हुआ। रगीन आतिशबाजियाँ भी हुईं।

कुट्टप्पन की शादी हुए तीन महीने बीत गये। वह उच्च शिक्षा हासिल करने विदेश रवाना हुआ। रामन और परिवार के सदस्य, रिश्तेदार और उस इलाके के मुखियो ने मिलकर रेलवे स्टेशन से कुट्टप्पन को विदा किया।

यूरोप मे दो वर्ष की पढाई पूरी करने के पहले ही उसने वहाँ एक गोरी महिला से शादी कर ली। उसने अपने बाबूजी को पत्र लिखकर यह सूचना भी दी।

बैंकर रामन ने अपने अखबार मे उसे एक प्रमुख समाचार के रूप मे प्रकाशित किया। वह गोरी महिला से शादी करनेवाला साहसी था न!

बेटे को एक गोरी रूपसी की भी देखभाल करनी है—इस कारण रामन प्रति मास उसे मोटी रकम भेजने लगा।

कुट्टप्पन गोरी बीवी के सग भारत वापस लौट आया। भारत में जहाज से

उतरने के बाद रेलगाड़ी से वे रेलवे स्टेशन पहुँच गये। वहाँ दंपती की अगवानी के लिए मिस्टर रामन के अलावा कई रिश्तेदार, मुखिया और मित्र हाजिर थे। फूलो की मालाओ और पुष्प गुच्छो से वे दंपती लद गये।

रामन ने गोरी बहू से हाथ मिलाया, "हाउ डु यू डू ?"

कुछ अर्से बाद गोरी बीवी ने एक लडके को जन्म दिया। यो बैंकर रामन एक गोरे बच्चे का दादा हो गया। ग्रांड पा।

तीन साल बीत गये।

गोरी साहिबा कुट्टप्पन से मनमुटाव होने के कारण बेटे को लेकर इंग्लैंड वापस चली गयी।

कुट्टप्पन को इस पर विशेष चिन्ता नही हुई। वह साढ़े सात बरस तक परित्यकता अपनी प्रथम पत्नी माधवी को पुन ले आया और मजे के साथ दांपत्य जीवन बिताने लगा।

रामन ने कुट्टप्पन को बधाई देकर कहा : "माइ गुड बाय।"

दूसरा बेटा कुट्टिरामन एक यूरोपियन बैंक का खजाची बन गया। रामन ने अपनी सभी जायदाद की जमानत पर पुत्र को अग्रेजो के बैंक मे नौकरी दिला दी थी। एक साल बीतने पर कुट्टिरामन ने उसी बैंक मे अधिक वेतनवाली एक कमीशन ब्रोकर की नौकरी हासिल की। सोने के आभूषणो को रेहन रखकर बैंक से मोटी रकम कर्ज देने के लिए ग्राहको को तैयार करने का काम कुट्टिरामन का था। यह एक ऐसी योजना थी जिससे बैंक को बडी आमदनी की आशा थी। शहर के कई भागो से सोने के आभूषण बैंक मे आने लगे। स्थानीय लोगो के सोने के आभूषणो का रहस्य गोरे बैंक अधिकारियो को मालूम न था। इस दिशा मे उनका एकमात्र सलाहकार ब्रोकर कुट्टिरामन था। कुट्टिरामन का प्रभाव, होशियारी और कर्तव्य-निष्ठा पर गोरो को पूरा भरोसा था। बडे जमीदारो, मुखियो को बैंक के ग्राहक बनाने मे कुट्टिरामन को पूरी सफलता मिली। इस तरह लाखो का लेन-देन हुआ। रेहन की रकम ज्यो-ज्यो बढ़ती त्यो-त्यो कुट्टिरामन का कमीशन भी बढ़ता।

हालांकि अपनी नाक के नीचे कुट्टिरामन जो धोखाबाजी कर रहा था उसे समझने-बूझने मे बैंक-अधिकारी बुरी तरह हार गये। कुट्टिरामन के पीछे एक गूढ दल था। लगातार गबन होने की राशि आठ साल मे दस लाख रुपये से अधिक हो गयी। कुट्टिरामन और उसके साथियो ने समझा कि बस इतनी ही जरूरत है। वे चोरी की गयी रकम वापस चुका देने मे असमर्थ थे। फिर भी किसी न किसी तरह रकम को वापस चुका देने का खयाल करने लगे। होशियार कुट्टिरामन ने एक कार्यक्रम की शुरुआत की। जर्मनी मे जाकर वहाँ के कुछ मित्रो की मदद से भारत के करेन्सी नोटो को बनाने की एक योजना बनायी। छपे हुए जाली नोटो को नये मोटर-टायरो मे बद कर भारत मे आयात करने का उसका ख्याल था।

मित्रो ने उसको सलाह दी कि बैंक के दस लाख रुपये के अतिरिक्त दस लाख रुपये और कमाने है।

कुट्टिरामन ने विदेश पर्यटन के लिए बैंक से तीन महीने की छुट्टी ले ली।

रेलवे स्टेशन से रामन, रामन के परिवार के सदस्य, रिश्तेदार, मुखिया आदि ने धूमधाम से उसे विदा किया।

अगर दो महीने का अतिरिक्त समय मिलता तो कुट्टिरामन का कार्यक्रम सफल हो गया होता, लेकिन दुर्भाग्य से वह धोखा खा गया।

कुट्टिरामन के विदेश रवाना होने के तुरन्त बाद बैंक मे जाँच-पडताल हुई। शुद्ध सोने के रूप मे सेफ मे रखी हुई चीजो का भेद खुल गया। अधिकाश नकली थी। हाथी के झालर के लिए ढाई लाख रुपये नकद दिये गये थे।

लदन मे जहाज से उतरने पर कुट्टिरामन की अगवानी के लिए पुलिस तैनात थी।

कुट्टिरामन को गिरफ्तार कर भारत लाया गया। उसके हाथो मे लोहे की हथकडियाँ पहना दी गयी—यूनिफार्म पहने अपने साथियो के साथ। जब 'लन्दन कुट्टिरामन' स्टेशन पर उतरा तब उसको अगवानी करने के लिए स्टेशन पर एक कुत्ता भी नही था।

उस दिन कुट्टिरामन टाउन पुलिस-स्टेशन के लॉकअप रूम मे ही सोया था।

कुट्टिरामन पर मुकद्दमा दायर किया गया। धोखाधडी, पैसे की चोरी, आदि कई चार्ज हुए। बैंक से चोरी की गयी रकम कुल पन्द्रह लाख रुपये थी।

मुकद्दमा शुरू होते ही बैंकर रामन का स्वास्थ्य बिगड गया। बेचारा बिस्तर से भी नही उठ सकता था।

(शासन करनेवाले गोरो की एक सस्था से वहाँ एक नौकर होकर, पन्द्रह लाख रुपये हडप लेनेवाला भारतीय और कौन होगा? नही मालम कि रामन ने अपने पुत्र की अक्लमदी पर गर्व महसूस किया था या नही।)

आखिर मुकद्दमे का फैसला सुना दिया गया। कुट्टिरामन को ढाई वर्ष की सख्त कारावास की सजा मिली। तूफान मे कागज की झोपडी की तरह रामन के बैंक की तबाही हो गयी। कुट्टिरामन ने नौकरी के लिए जिन जायदादो को जमानत पर रखा था उनको जब्त कर नीलाम मे बेच दिया गया।। सौभाग्य से यह सब देखे बगैर 'कुट्टिरामन के अमीर पिता' के रूप मे उस मान्य बुजुर्ग ने हमेशा के लिए अपनी आँखें मूँद ली थी।

पिताजी के पैसे खर्च कर सूट-टाई पहनकर लच और डिनर के साथ यूरोपियन ढग से जीवन-यापन करनेवाले कुट्टप्पन को बडी झझटे उठानी पडी।

कुट्टप्पन ने माधवी को पुन छोड दिया। (अफवाह थी कि माधवी कुट्टप्पन को छोडकर चली गयी थी) वह गाँव के घराने के मकान मे अकेला रहने लगा।

ह्विस्की और ब्राँडी पीने के लिए पैसे नहीं। मोहल्ले की शरण ली। धोती पहनी। कोई आमदनी न थी तो अहाते के पेडो को काटकर बेचने लगा। पेड न रहे तो घर के लकडी के सामानो पर हाथ रखा। भण्डारा बेच डाला। अलमारी भी बेच दी। पेटियाँ, कुर्सियाँ और पलग भी बेच डाले। कुछ दिनो के लिए ताडी पीकर दिन काटे। फिर उसे लगा कि घर के लिए दरवाजो की जरूरत ही क्या है? घर मे तो कुछ है ही नही। दरवाजो को अलग कर दिया गया। आखिर उन्हे भी बेच दिया। उसके बाद छत पर लेटने का विचार हुआ। पर, छत पर इतने अधिक शहतीरो की क्या जरूरत है? खपरैल हटाकर शहतीरो को अलग कर दिया गया और उन्हें भी बेच डाला गया। दस दिन चैन से बिताये। आखिर सभी चीजो के हट जाने पर दीवार ही बाकी रही। उस मकान मे जमीन पर लेटने लगा। पैरो मे वातरोग का आक्रमण हुआ ·बारिश के दिनो मे उसे वहाँ से भागकर कही और आश्रय लेना पडा

कुट्टप्पन शहर मे पहुँच गया। उसने नया धधा शुरू किया। उसके लिए प्रशिक्षण की जरूरत थी। वह पेशा भीख माँगने के सिवा और कुछ नही था।

गजे सिर को उठाकर आँखे खोलकर, किसी को पकडने की मुद्रा मे हाथो को हिलाकर, वातरोग की शिकार टाँगो को फैलाकर गलियो मे घूमते समय यह गिद्ध दृष्टि पुराने परिचित लोगो को पहचानेगी मिस्टर गोपी! मिस्टर जॉर्ज! मिस्टर कुजिक्कण्णन!

पैसा माँगने के लिए बुला रहा है।

कुट्टप्पन को, काँपते हाथ हवा मे लेते हुए दाता के नजदीक पहुँचने मे थोडी देर लगती। इतने मे मिस्टर गोपी, मिस्टर जॉर्ज और मिस्टर कुजिक्कण्णन भी वहाँ से नदारद हो गये होते।

जिस सडक से दुल्हिन माधवी को साथ लेकर बैण्ड-बाजो के साथ जुलूस निकाला गया था और मोटरकारो के पीछे गोरी बीवी के साथ श्रीविलास बगले मे जिस सडक मे गया था उसी सडक की गलियो मे गर्दन फैलाकर काँपते हाथो से, वातरोग से ग्रस्त टाँगो को हौले-हौले घसीटते हुए कुट्टप्पन भीख के लिए हाथ पसार रहा था··

"कुट्टप्पन यहाँ माँगकर दर-दर ठोकरें खा रहा था और उसकी गोरी बीवी अपने मुल्क के एक गोरे से लवमेरिज कर आनन्द ले रही थी।"

वेलु मूप्पर की बातें कुट्टप्पन की भीख माँगनेवाली गलियो से श्रीधरन को इग्लैण्ड उडा ले गयी। यूरोप का स्मरण हो आया। स्विटजरलैण्ड—इण्टरलेकन शहर के 'एलमर होटल' की याद ताजा हो आयी। शादी है या नित्य-वियोग? अपनी जिन्दगी का वह निर्णायक पल एम्मा याद आ गयी

मर्मर : आठ

भूरे रग का कोट, लाल नाइट कोट और टाई पहनकर एक भारतीय अटैची हाथ मे लटकाकर श्रीधरन इण्टरलेकन के 'एलमर होटल' के रिसेप्शन रूम मे घुस गया।

स्वागत कक्ष मे ऊँची कुर्सी पर बैठी चश्मा पहने एक मोटी बुढिया ने विदेशी मेहमान को उत्सुकता से देखा।

"आई वान्ट एकॉमोडेशन प्लीज़" श्रीधरन ने कहा।

"येस मोस्यू •" चश्मेवाली ने उत्सुकता से निहारने के बाद हॉल के छोर पर तलाश कर एक लडकी को इशारे से बुलाया।

"साउथ अमेरिकन ? चश्मेवाली ने मुस्कराते हुए पूछा।

"नो-नो", श्रीधरन ने इकार कर दिया और कहा, "इण्डियन।"

(वह अमेरिकन को छोडती नहीं। अमेरिकन इण्डियन आर रेड इण्डियन—यही पूछती रही।)

"नो मेडम, रियल इण्डियन—हिन्दू।"

हिन्दू सुनने पर उस औरत ने अपना सिर इस अर्थ मे हिलाया मानो उसे सब कुछ मालूम हो गया हो "योर पासपोर्ट प्लीज़।"

इतने मे सेविका नज़दीक आ पहुँची। चश्मेवाली ने उससे जर्मन भाषा मे कुछ कहा।

सेविका ने श्रीधरन के हाथ से अटैची ले ली।

श्रीधरन ने कोट के अन्दर की जेब से अपना पासपोर्ट बाहर निकाला।

घने सुनहरे केश, आँवले की-पी आँखोवाली सेविका वही खडी थी।

भारतीय रिपब्लिक के नये पासपोर्ट के काले बाहरी पृष्ठ पर सुनहली स्याही मे मुद्रित अशोक स्तभ को वह लडकी आँखें फाडकर देखने लगी।

चश्मेवाली ने पासपोर्ट लिया। उसने इस तथ्य की जाँच की कि आगन्तुक के स्विस विसा और उसमे अकित ठहरने की अवधि तो ठीक है। फिर उसी तरह एक मोटी किताब सामने रख दी। होटल रजिस्टर था वह।

मेहमान के विदेशी नागरिक होने के नाते उसमे अधिक खानापूर्ति करनी थी।

सेविका लडकी की निगाहें श्रीधरन के चेहरे पर ही अटकी थी। हाव-भाव से उसके दिल के उद्‌भ्रांत विचारो की झलक मिलती थी।

क्या इस काले इन्सान को देखकर वह डर गयी थी?

रजिस्टर की खानापूर्ति करने के बीच श्रीधरन ने उसकी तरफ निगाहें घुमायी। लगा कि भभकनेवाला वह चेहरा उसने पहले भी कही देखा था • नही, यह

हो ही नहीं सकता। उत्तरी स्विटजरलैण्ड की इस लडकी से पहले कभी कही भी मिलने की सम्भावना नही बनती'' कुछ देर बाद ध्यान आया—फिल्म मे इस चेहरे को देखा है 'अभिनेत्री ग्रेहागारबा ''

क्या यह खूबसूरत लडकी ग्रेहागारबा की बहिन होगी ?

रजिस्टर की खानापूर्ति की।

लडकी एक प्रतिमा की तरह खडी थी।

चश्मेवाली ने जर्मन भाषा मे उससे जोर से कुछ कहा। शायद खरीखोटी सुनायी होगी।

किसी ख्वाब से चौंक उठने की तरह उस लडकी ने मेहमान की ओर निहार-कर मीठी बोली मे कहा • प्लीज कम विद मी ''"

वह अटैची को लटकाकर जरा हटकर खडी हो गयी। फिर उसने मेहमान से आगे चलने का इशारा किया।

दोनो चल दिये।

उसने ऊपर की सीढियो की ओर सकेत किया।

कालीन बिछी हुई सीढियाँ चढी।

पहली मजिल का आठवाँ कमरा ही अतिथि के लिए दिया गया था।

उसने दरवाजा खोला। फिर अटैची को स्टेण्ड के ऊपर रख दिया। फिर कुछ कहे और किये बगैर वह सकपकाकर खडी रही।

उस सेविका का व्यवहार श्रीधरन को अच्छा न लगा। उसके चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान भी नही थी। यूरोपियन होटल की सेविकाएँ मेहमानो से हमेशा हँसकर आदरभाव से ही आचरण करती हैं। उसे तो इज्जत की कमी नही थी। लगता है, वह कुछ सीनियर है—लेकिन खुशमिजाज नही है !

"यू इण्डियन ?" आँवले की-सी आँखें फैलाकर जरा डरती हुई-सी उसने पूछा।

(कम से कम उसको कुछ कहने का साहस तो हुआ।)

"मिस, आइ एम इण्डियन", श्रीधरन ने जरा गौरव से कहा।

"कमिंग फ्रॉम इण्डिया ?" वह फिर गौर से देखने लगी। खुले हुए चेहरे से—काले मुलायम बालो से ''काली पुतलियाँ चमकती आँखो से—छोटी नाक और सफेद दाँतों से—इण्डियन !

फिर एक सपने से जागनेवाली की तरह उसने कहा, "ओह, आइ-म दि चेंबर मेड।" (मैं कमरे की सेविका हूँ।)

"वेरि गुड—व्हाट शैल आइ कॉल यू चेंबर मेड ?"

"माइ नेम इज एम्मा।"

"वेरि गुड !"

"डिनर इज़ येट एट डाउन इन दि डाईनिंग हॉल—"

सोच-विचारकर बीच-बीच मे रुककर ही वह बातचीत करती।

"वेरि गुड !"

वह अदब से सिर झुकाकर कमरे से बाहर चली गयी।

कभी नही मुस्कानेवाली सेविका पोशाकें बदलकर विश्राम लेने के लिए दरवाज़े के नज़दीक रखी हुई सिंहासननुमा कुशलकुर्सी पर बैठ गयी।

काँच के दरवाज़ो से हिमगिरियो का उत्तुग शिखर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। आल्प्स पर्वत। दूर पर बांगर नालप, लाटर ब्रन्नन पहाड और ओयगर, मोछ आदि पहाडो की चोटियाँ भी चमक रही थी। उनके बीच मे कही है, जगफ्रा —सोलह हजार फुट ऊँचा हिममुकुट, जिसे देखने श्रीधरन आया है।

वातावरण के पल-पल परिवर्तित भावो के अनुसार ये हिमश्रेणियाँ भी कभी नज़दीक तो कभी दूर दिखाई देती हैं। कोहरा और बादलो के हिमस्तम्भो से टकराकर गिरते समय उनमे से उठनेवाले सफेद धुएँ की तरह का धूलि-समूह वातावरण से दूर रहनेवाले हिमगिरि समूह मे कई तरह के चित्रो को प्रदर्शित करता। समुद्र मे खडे जहाज, अपूर्ण महलो, घर बनाने के लिए आसमान के आँगन मे इकट्ठा किये चूने के ढेर भी वहाँ दिखाई दिये। साँझ के सूर्य की लाल किरणे किसी पहाड के ऊपर नज़र आनेवाले बादल की पर्तों मे चमक-दमक करती। लगता कि बर्फ से ढकी चोटियो पर आग लगी है। पहाड के गाल पर एक बडे हिम का पत्थर झिलमिलाता दिखाई दे रहा था··

आज दिन अधिक सुहावना है। हे प्रभु, कल भी इसी तरह का एक दिन मिल जाय। क्योकि बारिश और बादलो से ढका हुआ दिन रहा तो जगफ्रा की यात्रा निराशाजनक होगी। हिमगिरि-गाडी मे बैठकर दोनो ओर के हिम से ढके खेतो की खूबसूरती और हिम पिरामिडो के गाभीर्य और अधोलोक के माया-विलासो का भी आस्वादन करने का अवसर नही मिलेगा कोहरा, बारिश, और हिमरेणुओ की पीली यवनिका से प्रपच को ढक देने का दृश्य देखकर ही हताश होकर लौटना पडेगा। पैसठ फ्राक और एक दिन यो बेकार हो जाएँगे।

फिर वह हिमगिरियो की ओर देखने लगा। थोडी देर पहले हिमगिरि के ऊपर जो भभकनेवाली कल्पित आग देखी थी, वह अब एकदम बुझ गयी। उस हिम की चट्टान एक आँसू की तरह वहाँ दिखाई दी। क्या वह पीछे की ओर खिसक रहा है ? शायद हिम-स्तभ से टूटकर गिरनेवाली एक मोटी पर्त होगी ··

आठ बजे भोजन की बात की याद आयी। कपडे बदलकर नीचे के डाइनिंग सैलून की तरफ चला।

एलमर होटल मे उस दिन मेहमान कम होने के नाते या देर से भोजन करने की वजह से भोजनालय मे तब चार-पाँच आदमी ही थे।

एक खाली मेज के पीछे जाकर वह बैठ गया।

बेयरर ने भोजन परोसने के प्रारभ के तौर पर मेज पर जर्मन भाषा मे छपा हुआ एक बडा मीनुकार्ड रख दिया।

तब सुन्दर पोशाक मे सजी-धजी एक सुन्दरी श्रीधरन के मेज की विपरीत दिशा मे बैठ गयी।

आग की ज्वाला-सी चोटी और आँवले-सी आँखवाली—एम्मा!

वह अपनी ड्यूटी पूरी कर सेविका का यूनिफार्म बदलकर सभ्य पोशाक मे आयी थी।

"मे आई हेल्प यू?"

जर्मन भाषा के मीनु की ओर विस्फारित आँखो से देख रहे भारतीय मेहमान के हाथ से उसने मीनु कार्ड लेकर विनम्र भाव से कहा, "थैंक यू"

वह कार्ड मे देखे बगैर बेयरर से कुछ बोली।

बेयरर वापस चला गया। "क्या एम्मा आप भी डिनर के लिए आयी हैं?" श्रीधरन ने अँग्रेजी मे पूछा।

"नही, मैं यहाँ मेहमानो के साथ बैठकर नही खा सकती! मै आपका भोजन करना देखने आयी हूँ।" वह मुस्करायी। उसके चेहरे पर पहली बार मुस्कान थिरकते हुए देखी। (उसकी दत पक्तियाँ सुन्दर होने पर भी उसका रग आकर्षक नही लगा। भुने हुए चिल्लिम का हल्का-पीला रग।)

बेयरर एक बडी ट्रे मे भोजन लेकर आया।

देखने पर श्रीधरन को अचरज हुआ। एक थाली मे चपाती भी थी।

"क्या यहाँ चपाती मिलती हैं?" श्रीधरन ने पूछा।

"यह भारतीय पकवान मैंने बनाया था।" उसने आत्मीयता से कहा।

"वेरि गुड।"

श्रीधरन ने अपने मन मे कहा, "अरी, जर्मन लडकी, भारतीय भोजन नाम का कुछ है ही नही! पजाबी सिर्फ रोटी ही खाते हैं। बगाली और केरलीय भात खाते हैं। मध्य भारतीय रोटी और भात खाते है। भारतीय पकवान भी भिन्न-भिन्न है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के लोगो के आहार की चीजो को समझने के लिए तुझे दो साल के प्रशिक्षण की जरूरत होगी!"

भारतीयो की चपाती के अलावा बढिया यूरोपियन चीजें भी थी। 'किण्यर' (मछली का अडा), 'आस्परागस' आदि स्पेशल भोज्य भी थे। वह एक-एक कर परोसती रही। भोजन के बाद उठ खडी हुई।

"घूमने नही जायेंगे?" उसने पूछा। भोजन के बाद श्रीधरन टहलने जाता था। लगा कि उसको यह बात मालूम थी।

"हाँ, टहलने जाता हूँ" श्रीधरन ने एक सिगरेट सुलगाते हुए कहा।

"मे आई कम विथ यू ?"

मैंने कुछ नही कहा। इण्टरलेकन की सड़कें, गलियाँ, पार्क और झील जानने वाला एक गाइड साथ रहे तो अच्छा ही है।

बेरनिस आल्प्स की तराई मे तून, ब्रयन्स आदि झीलो के बीच रहनेवाला इण्टरलेकन शहर यूरोप का एक सुख्यात केन्द्र है। वह तो पर्यटको का स्वर्ग है। वहाँ तब मोहल्ले हमेशा दर्शको से खचाखच भरे रहते। इण्टरलेकन के मकानो में आधा होटल था। दूकानों में कौतुक वस्तुएँ बिकती थी। पहाड़ के ऊपर के पेड़, लोहे और पत्थर मे तराशी हुई विचित्र वस्तुएँ दर्शको का ध्यान आकर्षित कर रही थी। इसके अलावा स्विच वॉच, कुक्कू क्लॉक, बेनाकुलेर्स आदि उपकरणो की प्रदर्शनशालाएँ इधर-उधर दिखाई दे जाती थी।

गलियो के शोरगुल से अलग होकर, शान्त और चैन से यात्रा करने के लिए श्रीधरन को वह आर नदी के तट पर ही ले गयी।

इण्टरलेकन मे इस ऋतु का सूर्योदय दस बजे होता है।

विचित्र आकृति के लकडी के पुलो से सजी हुई आर नदी। उस पार पाइन वृक्ष के टीले थे। दूर पर कोहरे से आच्छादित मायिक प्रदर्शन!

वह भारत के बारे मे कुछ-न-कुछ सोच रही थी। उसे विश्वास था कि भारत अब भी सन्यासी और महाराजाओ का देश है।

उसका ख्याल था कि लोग हाथी पर चढकर ही गलियो मे यात्रा करते होगे। रामायण और कालिदास के ज़माने का भारत ही उसकी दृष्टि मे भारत था।

श्रीधरन उसके सवालों का सही जबाब देता। कभी-कभी कुछ दार्शनिक बातें भी करता। श्रीधरन का भाषण उसको उपनिषद् सूत्रो की तरह लगता।

तभी अन्धकार और ठण्डी हवा ने वातावरण को अस्तव्यस्त कर दिया· बर्फ गिरने की शुरुआत थी। हम जल्दी ही होटल मे वापस आ गये।

उस दिन भयकर सर्दी थी। वहाँ आबहवा हमेशा बदलती रहती है।

इण्टरलेकन मे हिमपात नही होगा। अगले दिन मालूम हुआ कि पहाडी इलाको और बरनियन आल्प्स गिरि की तराइयो मे भयकर हिमपात हुआ था।

अगले दिन धुंधला मौसम था। इस कारण जगफा के दर्शन नही कर सका।

ब्रेकफास्ट के बाद कैमरा बगल मे कर अकेले इण्टरलेकन के वातावरण मे घूमता फिरा। शाम को वातावरण स्वच्छ हो गया। सूरज ने दर्शन दिये।

भोजन के लिए बैठा तो वह भी उपस्थित हो गयी। बेयरर एक बडे ट्रे मे भोजन ले आया। भोजन के बाद टहलने निकला तो उसने निवेदन किया, "मे आई कम विथ यू ?"

उस दिन ब्रयन्स झील के किनारे पर ही गया था।

झील के कोने मे ऐपल और पीयर वृक्ष भरे हुए थे—सबके सब फले-फूले हुए।

उनकी खुशबू से भरी पगडडियो से भारत के पुराणो की कहानियाँ कहता हुआ श्रीधरन और अद्भुत भावविकारो से उन्हे ध्यान से सुनती हुई वह—दोनो घूमते रहे।

पहाडो पर चढने के लिए अनुकूल आबहवा नही थी। तीसरा दिन भी ऐसे ही बीत गया। दिन मे पहाडो की तराइयों मे घूमने लगा। आर नदी का पुल पार किया। टीलो की तराई मे नुकीली छतो से बने लकडी के घर और रग-बिरगे बाग भी देखे। उन झोपडियो मे औरतें कपडो पर बहुरगी चित्र बुन रही थी।

दूर से पहाड इधर उधर राँगा की परत से द्वार को पीटता हुआ-सा दिखाई देता है।

चौथे दिन भी निराशा ही हाथ लगी थी।

उस दिन भोजन के बाद शहर के पार्क की तरफ गये थे। सडक के दोनो भागो मे छोटे प्लाउन वृक्ष पूरे तौर पर लहलहाते देखकर केरल के जगलो का स्मरण ताजा हो गया। ऊँचाई पर खडे हुए सीडार वृक्षो को देखते ही सुपारी के पेडो की याद आ गयी।

रग बदलते फूलो से लदे मग्नोलिया वृक्ष वातावरण मे रेशमी साडी पकडे हुए खडे थे। उनके बीच सफेद फूलो से वैवाहिक घूँघट ओढकर शरम के साथ खडी पेयन वृक्षो की पक्तियाँ भी थी।

एम्मा जर्मन है। जन्मस्थान बासल है। उसका बाप हाँगकाग का एक बडा होटल-मालिक है। एम्मा उसकी इकलौती बेटी है। बचपन मे ही माँ की मृत्यु हो गयी थी। पिताजी ने फिर शादी नही की। स्कूल शिक्षा के बाद पिताजी ने एम्मा को स्विटजरलैण्ड के मोन्त्रु के कुलीनरी (रसोई-शिक्षा) कालेज मे भर्ती कराया। वहाँ उसने पाँच वर्ष अध्ययन किया। दुनिया के सभी भोज्य पकाने की कला मे वह पारगत हो गयी। अब डिप्लोमा लेने के लिए किसी एक बडे होटल मे एक वर्ष का अप्रन्टिस कोर्स पूरा करना है। अप्रन्टिस कोर्स के लिए एलमर होटल मे आयी है। कमरे मे झाडू देना, बर्तन माँजना, रसोइया का काम करना, सामानो को इकट्ठा करना, परोसना, मेहमानो की सेवा करना, मीनु तैयार करना, रिसेप्शन काउण्टर और कैश काउण्टर पर काम करना, मैनेजर के प्रतिनिधि के तौर पर काम करना इस ढग के एक बडे होटल से सम्बन्धित सभी विषयो मे प्रायोगिक प्रशिक्षण प्राप्त करना जरूरी है। उसको इधर भर्ती हुए तीन महीने हो गये। चार दिनो से चेंबर मेड की ड्यूटी है।

आर नदी के किनारे पार्क की पगडडी से चलते समय श्रीधरन के सवालो के जवाब मे ही उसने ये ढेर सारी बातें कही थीं। आशय को अभिव्यक्त करते समय अँग्रेजी शब्दो मे गलती होने की आशका से जर्मन उच्चारण से हौले-हौले बीच-बीच मे रुककर ही वह बातचीत करती। विदेशी भोजन पकाने की तरह अँग्रेजी मे बात-

चीत भी वह सीख रही थी।

लेकिन कुछ ऐसी भी बातें थी जिन्हें बिना पूछे ही उसने बताया था।

एम्मा के पिताजी दार्शनिक भारत के उपासक है। भारत के सम्बन्ध मे खासकर वेद, इतिहास, उपनिषद्, सस्कृत नाटक आदि से सम्बन्धित जर्मन भाषा की अनेक पुस्तके उसके घर के पुस्तकालय मे हैं। बचपन से ही उसको इन ग्रन्थो मे रुचि रही आयी। उसके साथ पिताजी की प्रेरणा भी थी। ऋषि-मुनि और हिरणो से भरे तपोवनो ने उसके मानस मे मायिक दृश्यो की सृष्टि की थी। 'दुनिया के सभी ग्रन्थो के विनाश होने पर भी, हे ईश्वर, शाकुन्तल का विनाश न हो।' की प्रार्थना करनेवाले जर्मन महाकवि का उसने मन-ही-मन अभिनन्दन किया। एक स्वप्नलोक की तरह भारत ने उसके हृदय को छू लिया था। वह जर्मनी और स्विटजरलैण्ड छोडकर बाहर नही गयी। भारत को देखा न था। इतना ही नही, एक भारतीय को भी उसने पहले-पहल देखा है।

(भस्म के रग के वेश मे, गले की सिंदूर रेखा, मृगचर्म के भीतर उस जर्मन लडकी ने एक भारतीय सन्यासी के ही दर्शन किये होगे।)

पाँचवाँ दिन उन्मेषजनक वातावरण मे ही बीत गया। जगफ्रा हिम महल देखने के लिए सुबह ही निकल पडा।

लाटर ब्रन्नन माउण्टन रेलवे-स्टेशन की तरफ की मामूली गाडी पकडने के लिए इण्टरलेकन ओस्ट स्टेशन मे एक टैक्सी का आदेश दिया।

तभी देखा, हाथ मे एक टोकरी लटकाए वह सेविका दौडी आ रही है।

उसने टोकरी को श्रीधरन की तरफ बढ़ा दिया।

"एम्मा, यह क्या है?"

"दिस इज समथिग फॉर यू टु ईट देयर " उसने दूर के पहाडो के ऊपर की तरफ सकेत किया।

"वेल, आइ एम विथ जगफ्रा।"

श्रीधरन की बाते सुनकर वह पीले दाँतो को दिखाती मुस्करायी।

(जर्मन भाषा मे जगफ्रा का अर्थ छोटी कन्या है।)

उस घास की टोकरी मे कई पकवान, फल और अन्य खाद्य वस्तुएँ थी।

उस टोकरी को उसने टैक्सी मे रख लिया।

"थैंक यू।"

मर्मर नौ

पहाड की तराइयो, हिम झरनो, हिम से ढके खेतो, गुफाओ को पारकर 'वेटेरहोण' 'फियेषद होण' आदि बरनियन आल्प्स गिरिश्रृगो के बीच से, मोड

पहाड के मध्य से सोलह हज़ार फुट ऊँचाई पर खड़े जगफ्रा हिमपीठ पर—यूरोप की छत पर—हौले से चढ़ती हुई विद्युतगाडी की वह रेलयात्रा जगफ्रा सदर्शन का एक अविस्मरणीय अनुभव है।

रास्ते मे हिमप्रदेशो के खरगोश की जाति का मरमोट् नाम के जतु को बर्फ मे बिल बनाते देखा। हिम से ढके खेतो मे पोलार कुत्तो को और कुत्तो द्वारा खीची जाती बिना पहिये की हल-गाडियो को भी देखा। सोलह हज़ार फुट ऊँचाई पर हिम के झझावात मे पख फडफडाकर नाचनेवाले 'चफ' नामक पहाडी कौवो को भी देखा।

दुनिया की सबसे ऊँचाई पर स्थित रेलवे स्टेशन 'जगफ्रोजोच्चि' के प्लेटफार्म के बरामदे मे बैठकर आल्प्स के आसमान की ओर निगाहे डाली। स्टेशन से तीन-सौ छियालीस फुट ऊँचाई पर जगफ्रा और मोछ पहाडी की दो चोटियो के बीच प्रकृति के हिम से ढके बरामदे मे इलेक्ट्रिक लिफ्ट मे चढकर पहुँच गया।

चावल के चूरे की तरह वहाँ बर्फ ढकी हुई थी। वहाँ के हिम पर हौले से चला। यूरोप की छत के मूर्धन्य बिन्दु से स्विस झण्डा फहरा रहा था। उस झण्डे के नीचे के पासवाले स्थान तक जाने के बाद झट वापस आ गया। स्टेशन के नीचे की ओर एक विशाल भण्डार का निर्माण किया गया था। वहाँ उतर गया। वहाँ हिम के पत्थरो से बनाये हुए हिममहल देखे।

भण्डार की गर्मी शून्य से पन्द्रह डिग्री कम है। थोडी देर के बाद बेहद सर्दी से कान नाक मे खून निकलकर जम जाने का भय था। चिन्तित हो वहाँ से तुरन्त ऊपर की तरफ बढ गया। फिर स्टेशन पर ही शरण ली। दुनिया की सबसे ऊँचाई पर स्थित स्टेशन के प्रतीक्षालय मे बैठकर एम्मा के पकवान की उस छोटी-सी टोकरी को खोला -- रोटियाँ, केक, सेन्डविचेज़, फल अधिकाश पकवान जीभ के लिए नये थे। नाम भी नही मालूम उनका। केक और आप्पिल मिलाकर जो रोटी बनायी थी सिर्फ उसे ही पहचान पाया। एक बोतल मे शराब भी थी।

यूरोप की छत पर बैठकर ये पकवान मजे से खाये। एम्मा को हृदय से धन्यवाद दिया

जगफ्रा पर्यटन के बाद शाम को होटल मे वापस आने पर रिसेप्शन रूम की चश्मेवाली ने एक खुशखबरी सुनायी "होटल के नये मेहमान बनकर एक भारतीय दपती आये हुए है। वे कमरा न० नौ मे ही ठहरे हैं।"

भारतीय हैं सुनने पर प्रसन्नता हुई। सीधे कमरा न० नौ मे उनसे मिलने चला गया।

भारतीय नही, सिलोन के थे। कोलबो के एक बडे रेलवे-अधिकारी मि० एरबट और उनकी पत्नी। वे पवित्र वर्ष के त्यौहार के उपलक्ष्य मे रोम गये।

उसके बाद मच्च यूरोप के पर्यटन के लिए निकल पड़े। भारतीय न होने पर भी भारत के पड़ोसी देश के एलबर्ट दंपती से यूरोप मे मिलने पर खुशी हुई।

उस दिन, रात के भोजन के लिए बैठते समय बातचीत का विषय रामायण की कहानी था—सीता-अपहरण। रामायण की लका श्रीलका है, सुनकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। राक्षसो का देश श्रीलका।

(शायद वह समझती होगी कि एलबर्ट दपती राक्षसो के वर्ग मे से हैं।)

हवा और बूंदाबांदी होने से उस दिन टहलने नही गया।

अगले दिन लाटर ब्रन्नन के नजदीक के ट्रमल बाच की नर्तकी को देखने निकल पडा।

ट्रमल बाच पहाड की गोद का एक अद्भुत जल-प्रपात है। इस नर्तकी ने जल-प्रपात को पहाड के गर्भ मे कई स्थानो पर मोडकर इधर उधर रगीन विद्युत-बत्तियाँ छिपा रखी थी। कई रगो की रोशनी प्रपातो के मर्मस्थलो मे पडती। उससे वह जलधारा एक रत्न-विभूषिता नर्तकी या खून की उलटी करनेवाली पिशाचिनी या फिर सफेद कपडे पहने एक पक्षी के रूप मे विविध दृश्यो मे नाचते हुए दिखाई देती। जल-प्रपात की आवाज आर्केस्ट्रा की तरह, गर्जन की तरह या फिर बिलाप की तरह कानो मे गूंजती रहती।

उस दिन भोजन के लिए बैठते समय उससे कहा, "मै कल जा रहा हूँ।"

वह निश्चेष्ट-सी हो गयी जैसे उस पर कही से बिजली आ गिरी हो।

"यू गोइग ?" उसने लम्बी साँस छोडकर बडी देर के बाद पूछा।

"हाँ, मैं जा रहा हूँ, वापस जेनेवा को। फिर पेरिस, लदन, लदन से फिर भारत की तरफ।"

उसने श्रीधरन के यात्रा कार्यक्रम पर ध्यान दिया था या नही ?

"यू गोइग ?" उसने फिर स्वप्न से जाग उठने की तरह पूछा।

"यस, आइ हेव टु गो।"

लगता था कि श्रीधरन की बाते उसके कानो मे घुसी ही नही।

"यू गोइग ? " एक यन्त्र की तरह वह ये शब्द दुहराने लगी।

"होटल का मेरा बिल तैयार रखने को कहना है।"

उसने कुछ नही कहा।

"क्या तबीयत ठीक नही है ?"

"मेरा सिर चकरा रहा है ··मै—मैं—मुझे जाने दो।"

वह उठकर बाहर चली गयी।

श्रीधरन अकेला नदी-तट पर टहलने लगा।

बर्फ से ढके पहाडो की तरफ देखा। थोडी देर इधर-उधर घूमा-फिरा। बर्फीली हवा चलते ही जल्दी होटल मे वापस आ गया।

इण्टरलेकन की आखिरी रात थी।

आठ नबर के कमरे मे श्रीधरन ने अज्ञात विषाद के साथ घण्टो बिताये ·· उस जर्मन लडकी के आचरण ने ही श्रीधरन को अस्वस्थ किया था। वह तो एक नया अनुभव था।

बाहर बर्फ पड रही थी। श्रीधरन विचारमग्न था—

मुझे इण्टरलेक आये छह दिन हो गये। कुछ शामो को टहलते वक्त, भोजन की मेज पर बैठते वक्त उस जर्मन लडकी का सान्निध्य मिला था। कई विषयो के बारे मे चर्चा हुई थी। लेकिन हिरण की खाल का थैला लटकाकर कमरे मे प्रवेश करने के क्षण से इस क्षण तक उसकी कल्पना मैंने एक प्रेमिका के रूप मे नहीं की थी। इन छह दिनो के भीतर उसके साथ मैंने कोई चपलता भी नही दिखाई थी। दिखाने का विचार ही नहीं हुआ था।

लगता है, भारतीय युवक का काला रंग उस जर्मन लडकी को बेहद पसंद आया था। एक बार उसने पूछा भी क्या सभी भारतीय इस प्रकार 'सनबर्ण्ट' धूप से झुलसे हुए रग के होते है ? उसने 'ब्लैक' या 'डार्क' शब्द का प्रयोग नही किया था। सनबर्ण्ट शब्द का ही इस्तेमाल किया था। उसके और भी कई भोले-भाले सवाल श्रीधरन को तग कर रहे थे। उनमे एक यही था—चमडी का।

चमडी के गोरे रग से यूरोपियन को पहचाना जा सकता है। पीले रग से चीनी को भी। काफ्फिरी तो काले रग के होते हैं। पर, भारतीयो को पहचाननेवाला रग क्या है ?

यूरोपियन से अधिक एपिल की खाल के रग के तो पजाबी होते है। चीनियो की तरह के पीले रग के असामी और बगाली है। खुद श्रीधरन से अधिक काला केरली ही है·

यह तथ्य इस जर्मन युवती को मैं कैसे समझाऊँ ?

इसलिए एक बडे दार्शनिक की तरह, एक उपनिषद् वाक्य का आविष्कार करने की तरह उससे कहा, "सृष्टिकर्ता ने मानव के उन सभी रगो को देकर सिर्फ भारतीयो को ही अनुग्रहीत किया था।"

केवल चमडी के रग की बात ही नही, आचार-विचार, विश्वास और अनुष्ठान, भाषा और भोजन, वेश और आचरण मे भी भिन्न-भिन्न जनसमूह हिमालय की तराई से लेकर कन्याकुमारी तक विस्तृत भू-भाग मे रहते हैं। यह सच्चाई उसे कैसे विस्तार से बताऊँ ?

एम्मा, सोलहो आने भारतीय कहना परब्रह्म की तरह एक सकल्प मात्र है। भारत मे चमडी के वर्ण की समस्या नही, चमडी के मोटेपन की समस्या है। लगा कि कह दूँ, हाथी की चमडी पहने एक व्यक्ति ही हिन्दुओ का परब्रह्म है, लेकिन नही बताया।

श्रीधरन मे भारतीय परब्रह्म को ही उस जर्मन लडकी ने देखा था। आराधना भाव जैसा-ही कुछ उसके मन मे था। पर, इस जर्मन लड़की से मेरे प्रणय-शुष्क मनोभाव का कारण क्या है ?

श्रीधरन फिर चिन्तन करने लगा

यूरोप के सभ्य नगरो मे तीन-चार महीने घूम-फिरने के बाद ही इण्टरलेक मे पहुँचा था। एक साधु होकर उन देशो की सैर नही की थी। क्लाण्टा के सोमन के जीवन-दर्शन का स्मरण कर कहूँ तो, किसी को कोई दोष दिये बिना, दूसरो के माल की चोरी किये बिना, जबर्दस्ती किसी के सुख को छीनने की कोशिश किये बिना, अपने श्रम के पैसे से एक अनुभव के लिए सब कुछ किया था। लेकिन इण्टरलेक की इस जर्मन लड़की के सामने इस तरह सन्यास क्यो ग्रहण किया था ? भारतीयो का आत्मीय भाव 'अहं ब्रह्मास्मि' का 'ईगो' क्या इस लडकी के सामने प्रदर्शन करने की अन्त प्रेरणा ही इसका कारण थी ? क्या प्रथम दर्शन मे ही उसको एक छोटी बहन—दूसरी एक नारायणी—समझ बैठा था ? मेरा यह बर्ताव आगे चलकर उसको एक शिष्या—मेरे हर कहे हुए पर भरोसा करनेवाली एक विनीत शिष्या—बनाने मे सहायक हुआ होगा।

अगले दिन सुबह सात बजे उठा।

डाइनिंग हॉल मे जाकर नाश्ता किया।

सुबह जेनेवा लौट जाने के लिए होटल छोड देना है। इसलिए बिल तैयार करने की बात पिछले दिन रात को ही होटल मैनेजर से कह दी थी।

एम्मा वहाँ दिखाई नही दी।

कमरे मे जाकर सूटकेस लेकर नीचे उतरा। चश्मेवाली के काउण्टर के नज़दीक जाकर बिल चुकता किया। बिल की रकम देखने पर उसे अचम्भा हुआ। क्या एलमर होटल का खर्च इतना कम है ?

फिर देखा। एम्मा वहाँ भी दिखाई नही दी। पता लगाने पर चश्मेवाली ने बताया कि वह ड्यूटी पर नही है।

बिल की रकम चुका देने के बाद चश्मेवाली से विदा ली। फिर एक टैक्सी के लिए आदेश दिया। सूटकेस लेकर आगे बढ़ने की कोशिश की तो एक सेविका ने हाँफते हुए आकर बताया, कमरा न० नौ के भारतीय दम्पती ने मोस्यू से थोडी देर प्रतीक्षा करने के लिए कहा है। मोस्यू को बिदा देने वे रेलवे-स्टेशन आ रहे हैं।

ओ, सीलोन दम्पती मि० एलबर्ट और पत्नी। उनसे कल रात भेंट हुई थी—

सिलोन दम्पती के आने की प्रतीक्षा नही की। बैग लटकाकर दरवाजे की तरफ चल पडा।

एलमर होटल के मकान का प्रवेश सड़क के नजदीक से है। सड़क से एक लम्बी दहलीज। दहलीज के छोर पर चार दराजोवाला एक दरवाजा स्वागत-कक्ष

की तरफ जाता है। स्वागत-कक्ष के दोनों तरफ ऊपर जाने की सीढ़ियाँ हैं। कमरे के बीच, दरवाज़े के सामने ऊँचे से मच पर चश्मेवाली बैठती है।

दरवाज़ा खोला। दहलीज़ पर पैर रखा। अकस्मात् दरवाज़ा फिर एक बार खुल गया। अग्निशिखा-सी चोटीवाली एम्मा!

एक हाथ से हिरन की खाल के बैग को छीनकर, दूसरा हाथ श्रीधरन की छाती की तरफ फैला फूट-फूटकर रोते हुए उसने कहा, "डोण्ट गो "

वह एक चीत्कार था—विनती थी—एक हुक्म था ·!

उसकी आँखो से, ओले की तरह आँसू टपक रहे थे ·

एक बार देखा ··

ज़िन्दगी का एक निर्णायक पल है—

पूरी ज़िन्दगी आँख की भौहो मे प्रतिफलित हो रही है।

सिर उठाया। दो मार्ग थे—दहलीज़ के सामने स्टेशन रोड ओस्ट स्टेशन-जेनेवा-पेरिस-लदन फिर बम्बई-केरल। दरवाज़े के पीछे एलमर होटल ··बासल · हाँगकाँग ?

जगमगा हिमगिरि और सहयात्री—नुकीली छतों से भरे गिरिजाघर और स्वर्ण-शिखरो से सजे मन्दिर एपिल बाग, काली मिर्चों के बाग पाइन वृक्षो के जगल, नारियल के बाग आर नदी और भारत पुषा भी।

अग्निज्वाल-केशी पीली आँखोवाली पत्नी—ताँबे के रग के बाल और त्वचा निकली चिल्लिम के रग के बच्चे भी—

सारी तस्वीर याद करने पर मन मे सिहरन महसूस हुई। अग्निज्वाल-केशी को हृदय मे स्थान नहीं देना है।

फिर भी मन चचल हो रहा है।

पिताजी के शब्द मस्तिष्क मे गूँज उठे "धोखेबाज़ होकर जीने से एक घातक होकर मरना कहीं अच्छा है।"

अब भी वह बात स्मृति मे छायी है। भूरे रग का सूट और केवड़े के फूल के रग की टाई भी पहनी थी···

केवड़े के फूल पर रेंगनेवाले स्वर्णनाग की तरह छाती से वह हाथ धीरे से हटा दिया और दूसरे हाथ से मृगचर्म की अटैची भी ले ली·

दरवाज़े पर टैक्सी हॉर्न दे रही थी—वापसी यात्रा का शंखनाद—जेनेवा-पेरिस-लदन। फिर भारत—केरल।

(तब चार हज़ार मील दूर फ्रेंच माही मे काली-घुंघराली अलकों और काली-कजरारी आँखोवाली एक मलयाली लड़की नज़दीक के श्रीकृष्ण मन्दिर की तरफ ताककर, अपने भावी पति का सपना देख रही थी।)

दरवाज़े की हलकी-सी आवाज़।

दरवाज़ा खुल गया   मिसेज़ एलबर्ट ।

दरवाज़ा फिर हिल उठा   मिस्टर एलबर्ट ।

"वेरी सॉरी, मिस्टर श्रीधरन ! वी बर ए बिट लेट •" मिस्टर एलबर्ट ने गर्दन की काली टाई की गाँठ को ठीक करते हुए क्षमा माँगी ।

श्रीधरन ने मन मे कहा, "नही, मिस्टर एलबर्ट, आप तो ठीक समय पर ही आ पहुँचे हैं ।"

सीलोन दम्पती और भारतीय युवक दहलीज़ से सडक की ओर पहुँचकर टैक्सी मे चढ़ गये

"इण्टर लेकन ओस्ट" श्रीधरन ने ड्राइवर से कहा ।

टैक्सी चल दी । एलमर होटल के दरवाज़े पर खडी होटल की उस सेविका पर सिलोन दम्पती ने ध्यान नही दिया था ।

श्रीधरन ने पीछे झाँककर देखा ।

अग्निज्वाला-सी अलकावलियाँ । गालो पर दो हिम के टुकडे ! भीगी आँखो-वाली निश्चल वह दृष्टि

"आर्य ! अन्यथा समझ
इस अधीर को छोडिए मत,
आपकी यह अकिंचन शिष्या
इन चरणो की सेवा कर नित्य
धन्य हो जाएगी ।"

••

गाडी इण्टरलेकन ओस्ट स्टेशन से रवाना हुई । सीलोन दम्पती ने बाइ-बाइ कहकर बिदाई दी ।

"वी विल मीट इन कोलबो," मिस्टर एलबर्ट ने पुकारकर कहा ।

"वी विल मीट इन केरला," दरवाज़े के बाहर सिर कर प्रत्युत्तर मे श्रीधरन ने आवाज़ दी ।

गाडी दूर पहुँचने पर सिलोन दम्पती ने रूमाल हिलाकर यात्रा के लिए शुभ-कामना की ।

ये रूमाल इण्टरलेकन की यादो को पोछ लेते तो !••

बाहर की तरफ देखता रहा । उसे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि एक पल के लिए ही सही, दुनिया के सबसे अधिक अहसान-फरामोश व्यक्ति की भूमिका उसने कैसे निबाह ली ?

फिर विचारो का प्रवाह एकाएक चचल हो उठा ।

—मैं आजाद हूँ । भारत मे लौट जाने की कोई जरूरत नही है । भारत से रवाना होने पर मैंने अपना दिल किसी के लिए भी गिरवी नही रख छोड़ा था ।

यूरोप मे ही जिन्दगी गुजारे तो कैसा होगा ?

बाहर तून झील का मनोहर दृश्य। अब भी इण्टरलेक की सीमा मे ही था वह। तून स्टेशन पर उतरा, एलमर स्टेशन वापस जाऊँ तो ? धत् ! वे सीलोन दम्पती देखेंगे तो !

अचानक लगा कि इण्टरलेकन एक महाश्मशान है। बारह साल पहले काशी के हरिश्चन्द्र घाट का दृश्य मन मे रँग गया वे बर्फीले पहाड सफेद कपडो से ढके लाशो के ढेर की तरह और अग्निज्वाला-सी वह केशराशि धधकनेवाली चिता की तरह दिखाई पडी—उस चिता मे मैं भी जिन्दा जल जाता—पर, बच गया।

'नो' स्पष्ट कह देने की दृढता जिन्दगी की विजय के लिए वही है सबसे जरूरी हथियार !

इस नीति को प्रकट करनेवाले सिल्ह का स्मरण किया जेनेवा मे उससे भेंट हुई थी। जर्मन हेर सिल्ह—दूसरो का मुँह ताककर जिन्दगी गुजारनेवाला बुजुर्ग सिल्ह ! हमेशा हाथ मे दो छतरियाँ लिये रोनी सूरतवाला सिल्ह ! (बारिश मे अचानक फँस गये परिचितो की सहायता करने के लिए ही उसके हाथ की वह दूसरी छतरी होती।) सिल्ह पहले अमीर था। विरासत मे प्राप्त धन को जो लोग माँगते, उन्हे उधार देकर, तकलीफ मे पडे हुए दोस्तो की सहायता कर, आखिर वह इस हालत मे पहुँच गया था। स्पष्ट रूप से 'नही' कहने का हौसला जब हो गया तब तक सिल्ह गरीब हो चुका था।

उसी मन स्थिति ने श्रीधरन को बचाया था।

एलमर होटल के उस दरवाजे के नजदीक अगर उस मुहूर्त म उसने मन को काबू मे न रखा होता तो दूसरी दिशा की तरफ ही फिसलना था।

उसने स्मरण किया केरल से इधर पहुँचे चौदह मास बीत चुके है

रात की अन्तिम घडियो मे--हल्का धुँधलका, सर्दी और कोहरा ढके वातावरण मे नाले के छोर की सागवान मशीन का ताल और लय देता हुआ नाच विस्तृत खेत के पीछे बडी सुपारी के बाग म तडके की स्वर्णिम किरणें छा जाते समय मन्दिर मे हजारो दीपको के जलने का-सा दर्शन पुराना भगवती कावु, सूखे तुलसी के पौधे के रग के पत्थर का दीपक, शताब्दियो से मर्मर रव करनेवाला बरगद का पेड, टूटा-फूटा चबूतरा, चबूतरे पर पोटली को अपने सिरहाने रखकर लेटनेवाला गेरुआ-वस्त्रधारी सन्यासी, पास के अहाते मे घास चरनेवाली गाय, झडते पत्तो के सेमल-वृक्ष की डाल पर विश्राम करनेवाली चील, मोहल्ले का मध्याह्न दृश्य मन्दिर के तालाब से नहाकर गीले बालो को पीछे की तरफ फैलाकर पगडडियो से धीरे-धीरे चलनेवाली अल्पवसना देहाती लडकी •

नारियल के मयूरपखो के बीच से दिखाई देता सिन्दूरी सध्याकाश बाँस के झुण्डो की ओट से धीरे से उठनेवाला तिरुवातिरा का चाँद ''बचपन से ही मन मे

समाये हुए इन केरलीय चित्रों को, क्या जगफा हिमश्रृंग भुला सकते हैं ?…उन्हें आर नदी में बहाया जा सकता है ? …ब्रयन्स मे डुबाया जा सकता है ?

गाडी तून से स्विस राजधानी बेन की तरफ आगे बढ़ रही थी…

छह महीने के भारत पर्यटन के बाद वापस जाते समय केरल की सीमा के एक बडे स्टेशन के प्लेटफार्म पर जब एक पुकार सुनी थी "वेल्लं-वेल्ल।" (पानी, पानी) तो मन प्रफुल्लित हो गया था। (द्रविड भाषा के शब्दो मे मलयालम की शुद्ध सपत्ति है 'वेलु') प्यास न होने पर भी पानी पिया था। मलयालम की मिट्टी के पानी का वह माधुर्य !

(गाडी बेन से माण्ट्रयू स्टेशन पहुँच गयी' माण्ट्रयू मे कही एक कुलिन्यरि कॉलिज है।) फिर वह झील के किनारे से प्रेम का गला घोंट देनेवाले श्रीधरन को लेकर जेनेवा की तरफ बढने लगी।

यूरोप के पर्यटन से वापस आये एक साल बीत गया एक दिन डाक पहुँचने पर स्विस का टिकट लगा एक नीले रग का लिफाफा देखा। पत्र का पता देखने पर अचरज हुआ सिर्फ तीन पक्तियाँ—

मिस्टर श्रीधरन
(गाँव के डाकघर का नाम)
भारत

लिफाफा खोला। मोटे कागज पर सिर्फ एक ही पंक्ति 'स्टिल रिमेम्बरिंग यू—एम्मा' (अब भी स्मरण कर रही हूँ—एम्मा)

जवाब नही भेजा।

इस भारतीय युवक को प्रेम-घातक के रूप मे हमेशा याद करना ही भला है।

फिर एक साल बीत गया।

जिन्दगी मे सौम्य और शुद्ध एक नये अध्याय को शुरू करते समय फ्रेंच माही के श्रीकृष्ण मन्दिर के नजदीक भावी पति का स्वप्न देखकर दिन काटती काले घुंघराले बाल और काली कजरारी आँखोवाली एक अपरिचित मलयाली लडकी को वधू के रूप मे स्वीकार करनेवाले पुण्य दिन पिछली रात भावी जीवन के लिए अनावश्यक कई चिट्ठियो को आग मे हवन कर दिया। उनके बीच स्विस का वह एक पक्तिवाला पत्र भी था। मोटे-सफेद उस कागज को जलते समय अग्नि-ज्वाल-सी उस केशी को आखिरी बार देखा ·

जिन्दगी एक विचित्र गली है। आपस मे मिलने से भी अधिक अलग हो जाने, पीछे हटने की भीड-भाड ही इस गली मे होती है·

"श्रीधरन कुट्टि क्या उठकर चला गया ?" वेलु मूप्पर के सवाल मे श्रीधरन

को जमा किया।

"मैं इधर ही हूँ" पलको को जरा हिलाते हुए श्रीधरन ने जवाब दिया।

"बेटा, अचानक मेरी आँखें लग गयी थी। दोपहर को भोजन के बाद जरा सो लेता हूँ • "

श्रीधरन जब यूरोप की सैर कर रहा था, तब वेलु मूप्पर कुर्सी पर बैठा-बैठा ऊँघ रहा था।

"वेलु मूप्पर, अन्दर जाकर सो जाइए। तीन बज गये। अब मैं भी चलूं " श्रीधरन ने घडी देखते हुए कहा।

मर्मर दस

अब वेलु मूप्पर से विदा लेनी है।

इस घर का मजेदार और स्वादिष्ट भोजन भर पेट खाया, वेलु मूप्पर से जी-भर कथाएँ भी सुनी। कितना भी मूल्य देने पर ये और कही से भी उपलब्ध नही होगी।

लगा कि वेलु मूप्पर को कुछ न कुछ भेंट किये बगैर इधर से चले जाना उचित नही होगा। क्या पैसे देने पर वे स्वीकार करेंगे? ये लोग भोजन के लिए पैसे पाने के सदैव विरोधी हैं। "पनमूट्टु का घराना ऊँचा घराना तो नही है, लेकिन वह दाने-दाने के लिए मोहताज भी नही। जो भूखा इधर आता उसको एक कौर अन्न देने मे अब तक कोई तकलीफ नही हुई।" बातचीत के बीच वेलु मूप्पर ने सार्थक ढग से स्मरण कराया था।

भात परोसने के बाद जिस चीनी तश्तरी मे मट्ठा डालकर रखा था, उस पर श्रीधरन का मन ललचाया हुआ था। उस चीनी-तश्तरी का वैशिष्ठ्य घरवाले नही जानते थे। समझ भी नही सकेंगे। कल या परसो वह कलावस्तु नीचे गिरकर टूट जाये तो कूडे मे फेंक दी जाएगी। उस हर टुकडे का मूल्य मिलता पर, यो बेच-कर पैसा कमाने का मेरा इरादा नही है, उसे लेने की ही तमन्ना है। अफ्रीका, मिस्र, इटली, स्विटजरलैड आदि यूरोपियन मुल्को से मैंने जितनी कलावस्तुओ को जमा किया था, उनमे इस चाइनीज बाँस को प्रथम स्थान मिलता

श्रीधरन चटाई से उठ बैठा।

फिर जरा खँखारकर आवाज निकाली "क्या मैं वेलु मूप्पर से कुछ माँगूं?"

बुजुर्ग ने आँखें फैलाकर गर्दन हिलायी, "क्या है बेटा?"

"क्या अपनी वह चीनी तश्तरी आप मुझे देंगे?"

बूढा थोडी देर तक सोचता रहा। फिर मुस्कराया, "वह पुरानी चीज तुझे चाहिए तो ले ले।"

"मुफ्त नही चाहिए। मूल्य दूँगा· " श्रीधरन ने सकोच के साथ कहा।

"पैसा-वैसा नही चाहिए, बेटा। अगर तुझको उससे प्यार हो गया तो ले जा मुझे खुशी ही होगी "

"मेरे कहने का मतलब यह नही है ·" फिर कुछ कहे बिना श्रीधरन सकपकाने लगा।

"उस तश्तरी को रसोईघर मे रखे रहने के कारण ही आज तक उसका कोई ग्राहक नही बना। अगर कोई ज़रूरतमन्द उसे देख लेता तो वह किसी भी मूल्य पर उसे खरीद लेता "

"इस तश्तरी की क्या विशेषता है ?"

"चीनी एण्टीक की विशेषता को मैं कैसे वेलु मूप्पर को समझाऊँ ?

"अगर यह दिल्ली या बम्बई पहुँच जाए और किसी अमेरिकी साहब की आँखो मे दिखाई पड जाये तो वह अच्छी रकम देकर इसको खरीद लेगा क्योकि इस ढग की वस्तु अब नही मिलती।"

वेलु मूप्पर अच्छा हास्य-व्यग्य सुनने की तरह हँस पडा।

"अगर तू इसे गोसाइयो के देश मे बेचकर पैमा कमा सकना है तो अपनी योग्यता दिखाना। पर, मुझे कुछ नही चाहिए ·मैंने कहा था न कि मेरे बेटे दामोदरन ने उसे एक मुस्लिम से एक रुपया देकर खरीदा था। बैंक के साहब को क्रिसमस की भेट देने के लिए ही उसे रख लिया था। तभी एक साइकिल दुर्घटना मे वह चल बसा। फिर वह तश्तरी भण्डार के एक कोने मे पडी रही। तीन-चार महीने पहले ही माणिक्य ने उसे बाहर निकाला था "

वेलु मूप्पर ने अन्दर की तरफ झांककर पुकारा, "बेटी "

"क्या है बाबूजी ?" माणिक्य ने पूछा।

"उस नागफणीवाली चीनी तश्तरी को धो-मांजकर इधर ला।"

"बाबूजी, वह क्यो ?"

"हमारे बेटे श्रीधरन की नजर उस चीनी तश्तरी पर लगी है। यह उसे ले जाना चाहता है।"

(भीतर से हँसी—औरतो की दबी मज़ाक भरी हँसी)

तश्तरी को धो-मांजने के बाद माणिक्य ने उसे पोछकर बरामदे की घास की चटाई पर—बाघ के चेहरे पर ही—रख दिया।

भारतीय बाघ के मुँह पर चीनी तश्तरी—अच्छा दृश्य है !

वेलु मूप्पर ने जँभाई ली।

"वेलु मूप्पर, ज़रा इधर हाथ फैलाइए !"

"क्या है बेटे, क्या मुझे कुछ देना है ?" वेलु मूप्पर ने हाथ हिलाये बगैर पूछा।

"आप मुझे अब पुरानी चीज़ो को खरीदनेवाला ही समझ लीजिए।" श्रीधरन ने अदब से कहा, "इस तश्तरी के लिए छोटी-सी एक रकम वेलु मूप्पर को मुझसे ग्रहण करनी चाहिए। नही तो मुझे इसकी ज़रूरत नही "

वेलु मूप्पर ने थोडी देर सोचा।

"तुझे कुछ देने का हठ है तो एक रुपया दे दे "

"एक रुपया—या दो रुपये—कितना भी हो, मैं जो भी दूं उसे स्वीकार करना होगा· ·"

वेलु मूप्पर ने हाथ फैलाया।

श्रीधरन ने अपना बटुआ खोलकर सौ रुपये का एक नया नोट मोडकर वेलु मूप्पर के हाथ में थमा दिया।

(बूढे ने समझा होगा कि दस रुपये का नोट ही मिला है।)

वेलु मूप्पर ने वह नोट धोती के आँचल मे बाँध लिया।

"इस तश्तरी को लपेटने के लिए एक पुराना कागज़ देने की कृपा करेंगे "

माणिक्य रसोईघर से एक कागज़ का टुकडा ले लायी। दूकान से नमक मिर्च लाया हुआ कागज़ है। दो महीने पहले का एक मलयालम अखबार। अखबार पर सरसरी दृष्टि डालने पर एक कोने मे अपना नाम देखा। ससद के प्रश्नोत्तर ! लोक-सभा मे श्रीधरन एम० पी० का पूछा हुआ सवाल था—"केरल से अमरीका को कितने मेढको के पैरो का निर्यात किया गया ? उनसे कितने डालर का लाभ हुआ ?"

(सम्बद्ध मन्त्री का जवाब भी था)

मेढको के निर्यात के सम्बन्ध मे श्रीधरन ने ससद मे जो सवाल पूछा था, उसकी प्रेरणा अतिराणिप्पाट की यादें थी। बचपन मे कन्निप्परपु के बरसात के मौसम की रातो मे, नालो में मेढको का सगीत नीद के लिए नया उन्मेष प्रदान करता था। ज़माने का इतना बडा परिवर्तन ! ये मेढक गायक बर्फ की कमीज़ पहनकर जहाज़ पर अमेरिका मे जाकर डॉलर में बदलकर वापस आ रहे हैं।

"अब मै जाऊँ।" श्रीधरन ने विदा ली।

"बेटे, अब तुझसे कब भेंट होगी ?" वेलु मूप्पर ने श्रीधरन का हाथ पकडकर दूसरे हाथ से श्रीधरन की पीठ सहलाते हुए भर्राई आवाज़ में कहा, "गड्ढे मे पाँव रखे हुए ही तेरा इन्तजार करूँगा "

श्रीधरन को भी कुछ दुख-सा हुआ।

फिर इधर आने पर शायद बरामदे की यह कुर्सी और नज़दीक का हिंडोला दिखाई नही देंगे।

"वेलु मूप्पर, दीर्घकाल तक रहेगे आप—मैं आपसे मिलने ज़रूर इधर आऊँगा।" श्रीधरन ने अपने विकार को दबाते हुए बडे विनय-भाव से शुभकामना

प्रकट की।

"मेरा बेटा सकुशल रहे।" वेलु मूप्पर ने श्रीवरन के सिर पर हाथ रखकर आशीष दी।

चीनी तश्तरी को अखबार में लपेटकर उसे कन्धे पर टाँग, पत्थरों की दीवारों और बाड़ से ढके घरों के नजदीक की तंग पगडंडियों को पारकर वह सड़क की तरफ बढ़ गया।

एक अहाते में एक ओर एक नये किस्म के पौधों को पलते देखा। देहाती लोगों ने इसे 'कम्यूनिस्ट पौधा' नाम दिया था। हरे पत्तों और छिपकली के सफेद अण्डों-सा फल देनेवाले इस पौधे को साम्यवादी नाम देने के पीछे यही कारण रहा होगा कि किसी भी देश या प्रदेश की मिट्टी में, किसी भी जलवायु में, किसी भी परिस्थिति में वह पौधा जड़ें पकड़ लेता है।

मिस्टर 'शीमकोन्ना' की तरह यह 'कामरेड अप्पा' भी अतिराणिप्पाट के लिए विदेशी है।

सड़क पर पहुँच गया।

अनाज पीसनेवाली मिलें, मोटर-वर्कशाप आदि के होहल्ले से भरी सड़क के नजदीक एक नया रेस्टॉरेण्ट। लाल बोतल के एक बड़े चित्र के साथ एक बड़ा अलुमिनियम बोर्ड रेस्टॉरेण्ट के दरवाजे पर लटक रहा था कोकाकोला का विज्ञापन था।

लगता है, पहले का 'भारत माता' होटल यही था। भारत माता भी अब विलीन हो गयी। अब इधर की दूकान पर टाइकण्ट, प्रान्स पुलावर और कोकाकोला ही बिकते हैं।

कोकाकोला का पुराने अतिराणिप्पाट में अवतरण होने से अचरज नहीं हुआ। मिस्र के पीले रेगिस्तान के एक कोने में अकेली खड़ी एक बड़ी स्फिंग्स प्रतिमा के सामने—एक पौधा या घास का एक तिनका भी नहीं उगता था। तब प्यास से पीड़ित दर्शकों को अपने मोहपाश में खींचता एक बड़ा बोर्ड सोलह साल पहले देखा था। यह विज्ञापन भी उस दृश्य की याद दिलाता है।

टाइट पैण्ट, काली-मकड़ियों की तस्वीरों की छपी हुई टेरलिन शर्ट पहनकर, माथे पर पक्षी के घोंसले की तरह बालों की लटों को रखे एक लड़का किसी नयी अमरीकी 'रॉक एण्ड रॉल' ट्यून में सीटी बजाकर सिर हिलाता हुआ विपरीत दिशा से आ रहा था। (शायद वह कोकाकोला पीने के लिए आ रहा होगा।) श्रीवरन को देखकर लड़का वहीं ठिठक गया। सीटी बजाना बन्द कर दिया। पैण्ट की जेब में हाथ डालकर ज़रा सिर झुकाकर ओठों को हिलाते हुए देखा—हू इज़ दिस गाइ? अरे यह कौन है?

मकड़ी की कमीज़वाला छोकरा यदि मुझसे कुछ पूछता तो मैं पट जवाब देता "अतिराणिप्पाट की नयी पीढ़ी के पहरेदार, अतिक्रमण कर यहाँ प्रवेश करने के लिए क्षमा करो। मैं तो पुरानी कौतुक वस्तुओं को ढूंढ़ते हुए चलता-फिरता एक विदेशी हूँ।"

• ••